

ययर क्रियम वेश्यायम् वृत्य

श्रेष्यम्बर्धान्यम् अवस्य स्थान्यः अवस्य स्थान्यम् स्थान्यम्

द्यापते जुन्दन मुग्र प्रस्थाया।

21782

(21782)

शे'या'नश'मदे'न्य'यशुन्'ग्री'न्धन्'ग्रम्

55.4

२२ कः ने'न्य'के'न्यम्'कुन्या प्राया ने अक्रिय्या के त्या प्राया के त्या प्राया के त्या के त्

च्या निया क्षेत्रा त्रा क्षेत्रा क्षेत्र क्षेत्रा क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत

"तुन्दिन्द्रस्थात्र्याद्वर्गायत्वेत्र्येत् ग्रील्यं बुक्षय्येत् स्वर्णः श्रीक्ष्यायः स्वर्णः श्रीक्ष्यायः स्वर्णः श्रीक्ष्यायः स्वर्णः श्रीक्ष्यः स्वर्णः श्रीक्षः स्वर्णः स्वर्णः स्वरं स्वर्णः स्वरं स्वर्णः स्वरं स्वरं

त्यत्तवात्र्याञ्च वित्वत्यत्वे वित्वत्यत्वे देन्त्यत्व क्यात्व क्यात्य क्यात्व क्यात्य क्यात्य क्यात्व क्यात्य क्यात्य क्यात्य क्यात्य क्यात्य क्यात्य क्यात्

श्चिर्णदेशाम् इत्याच्याचे विद्याचे विद

इद्रान्म्यात्रवात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रवाद्यात्रव बिरः त्रवः भवा सः प्रवादा विवाद राज्य । वाक्षः विवादा विवादा विवादा विवादा विवादा विवादा विवादा विवादा विवादा व <u> ने'मृत्रे'कुल'र्घर'पद्यत्'ययारर'यर्थर्'गुर्याययागृर्धेग्'यसुर्यासुर्या।</u> **इ**थागुण्येयतत्र्यास्य क्षात्राच्यात् न्दराह्तायारनायाराधित। ज्ञान्धित्युः त्रन्नाम्यरापाने द्वेरारा रत्ने न्त्र कुन्न्त्य द्वा देवा देवा देवा वा वा वेन् कुरे वा वा वा वेन् वे श्चिन्'रा'ने त्। वॅन्'त्'य ५५'पादी'त्ये 'क'ने'त्व'दी'ने'ळेल'वाळालादी विवा मानव्यन्त्र्यायाः इसवाधियाधीयायायेत्। स्रवयाचे राष्ट्रसाधिवायाधीयायायेत्। स्रवयाचे राष्ट्रसाधिवाया **इ**न्-छ्न'स'न्न'। बहुब्-हेव्ययं देव्या-सन्द्रार्थे भेवाया। हेव्या-हुन्-ह्निन् **দ্**ৰ'ৰ্ল্জন'ন। স্থানন্'নেইন্'ৰ'নভমঞ্জিন'নম। ८६ँ८ प्राचेत्। ने'न्ग्वर ग्रेष्ठेंदें इयश हे। न्धेर व्≪नेय सेर न्सर्म्»न्म। «नेपानेराष्ट्रेन्म्»। «जुलानवशाम्सरायिके ME>| 《세월라'메드드'자디티》| 《新드리'링'티'우'다리'년》| 《년'향략 इश्रात्र हिर्≫। «अष्यान्यत्र, येचा क्षेत्र≫। «अध्युम्भ। «अध्य

प्रवित्रः। 《ह्पान्यम् प्रवित्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्त्रः व्याप्तः व्यापतः वयापतः व्यापतः व्या

गुवैशपा

《शेयारश्चादे इयावर 》वे तुषार पषा पर्छ ख्यादे यह पा हुं '''''''
बार्च र परे भूत ' ज्ञापा श्व व की इं स्या पे केव में विषा भिव ' वित्त में ति पा स्व स्था ''
गुव ' हुं ' ने ते ' श्रृव ' ज्ञापा श्व व पा ति पा ति

ष्ठ्याष्ठ्ययव्यव्यं (1452 मॅ—1507मॅ) विश्वयत्विः स्वान् १८५ गुः स्वान्यः स्वान् १८५ गुः स्वान् १८५ गुः स्वान् १८५ गुः स्वान्

ন্ধিন্দ্রমা (1042 ম — 1123 ম) ই মানু কাইণা দু হ'ং "" <u>शुर्चे द'र्स्डर'नदेशे वेषा भेद'य ५५२'। यगद पर्दर'री पश्चपदेशें वा</u> **८६**ঀয়য়ঢ়য়ৢয়ৼঢ়য়ড়ৢ৾৳য়য়ৢয়য়ৢয়য়ৢঢ়ৼয়য়ৢঢ়ড়য় त्रु'ळे'ग्रन्दॅरलॅ'कुराधेन्'र्ह्वे प्रचरन्,'न्नरप्रचर्ने। न्देरद्रुत्र्व इनित्रिश्वास्य मुर्देश्वरास्त्रित्र द्वारास्त्रित्र स्त्रास्त्र स्त्रास्त्र स्त्रास्त्र स्त्रास्त्र स्त्रास्त्र **৻ৼৣ৾৶৶ড়ৢ৾৻ঀয়৻য়য়৸ঀয়য়ৼৄয়৻ড়ৢঀ৾৻৸ড়৸৸ৼৄ৾৾৴৻য়ৢয়য়ৢ৻৸ৼ৾৻৴৻য়ৼয়৻৻৻৻** पराक्षेत्र-तुराक्टेवित् त्रं नहर्वात शुर्वाचेत् किष् पृत्युर्वे व्यक्षेष् प्रता व्यक्षेत्र ने श्चित्रपाध्यन्देरा प्रयायस्य श्चित्रयस्य स्वयायस्य स्वयाप्य स्वर्धाः । । विन्दिरोबराक्त्रानुबर्श्वीक्षेत्राविन्द्रवादित्वहिन्देवेक्षेत्रासुन्द्राधानः """ शुन। «नेपाचेन ध्वायंते» वरानु वैयापते वियान यापते गृत्य कुन्। या प्रश्नेया व ब्रेल्ट्र स्ट्राप्ट कें संख्या स्व विकास स्व सं ग्री साम्यान्त्र **८८.८८.५३८.६५५४५६८.४०। अट्य ध्यक्ता अस्य द्ये श्राप्त स्ट्रा** तर्ने तर् के क्षान्य ने या प्राप्त का विकास क्षा के त्या कुत्र कुत्र कुत्र के विकास किया विकास

प्रश्च क्षापराचन्त्रम् व्यक्ष्यम् विराधन्त्रम् व्यक्ष्यस्य व्यक्ष्यस्य व्यक्षस्य व्यक्षस्य विराधन्त्रम् विष्ठ क्षाप्त्रच्यात्रम् विराधन्य विराधन्य विराधन्य व्यक्षस्य विराधन्य विराधन्य

द्री क त्या की स्वया की स्वया

न्ये स्ति वृत्त्वय न्या विष्या ह्या ह्या हित्या हत्य । शित्युत्त स्ति विष्या हत्य । शित्युत्त स्ति विष्या विषय ह्या । स्ति व्यवस्त्र स्ति विषय ह्या । स्ति व्यवस्त्र स्ति विषय ह्या । स्ति व्यवस्त्र स्ति विषय ह्या । स्ति व्यवस्ति ह्या । स्ति विषय स

धेव'द्रतर्दरदेशपर:5'यम्र'र्वेशय'दे। 展立され रात्रा कुराक्तियाय संयाने यात्रा कुराक्ष्या श्रुवा राता विवाधियाया **ন**্ধ *ভূকান্ত্রনাম র্ল্ডবান্ত্রীকারী নাম বাদ্দ নিস্তি বাদ*ের্দ্রনি নিজু বাদিন স্ক্রানানি নোমা '''' पहेबाबब"तहेवा हेबाबिकुवा पहलाक्षेत्रा वर्धेन्टा तहाय"न्ट "तक्रेण पांची हुण्य "नेरावदि र्रं कांग्रीय प्राप्ति पाने द्राय रा वश्चाय प्राप्ति पाने प्राप्ति प्राप्ति पाने प्राप्ति पाने प्राप्ति प्रा ळें है। बराबरावाद इंचायरा नेपादी यात्र आया देवा यहा व राहेना तर्नेन'य'र्वेश्येन'वैन'। न्मे कते'व्नव्यव्यविष्यः कन्'ग्रन्'र्सुं ना<u>न</u>ेख पत्रेश्वरात्र्वायरायर्षराष्ट्रपार्थर्। र्ये यर्ष्टें व्रश्चें राष्ट्रीयराय्ये कुरायर्-प्राप्तेम्यान्तिः कुर्द्धवाया कुर्यान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य र्राश्चिर्क्षणबाह्नेन्दायायावीन् ग्रायान्ना ह्रिययाखन्निन् सन बात्रव्यक्षक्रित्रहेरा। क्ष्यांनेवाकेत्रविरस्यांन्यक्ष्यवाद्यान्य पर्वत्रप्रम मैक्षाम् वर्षायकृषा पर्वे राष्ट्रीत् याह्य की म्बेत् अध्या में हैं। য়৾৾৾ਫ਼ৼ৾৽ঢ়৾৾৾ৼ৾৻য়৾ঢ়ৼ৾ঀ৾৽য়ৼ৾ঀয়৾ঀৢঢ়৾ঢ়ৼৼ৾ৼ৾ৼ৾ড়ৼৼঢ়৾৾৽ৼ कते'अर्ग्'वयायह्रम्'नरर्'्रेशयत्रम् तर्ने'व्'न्ये'क'तर्नेते'व्ये'न्यन्य **গ্র**'মন'নব্র'শ্র'মর'ষ্ট্রন'নন্তু**ন'ম**র।

₹यापार्थाक्ष्यपाद्वेषाधिद्रायय। नेत्राक्ष्यख्रण्यक्षियद्वात्व्यः देषापादिःभव्रंखुष्यपादिःकुव्यंकुष्यक्षित्वं व्यापाद्वेषाः विद्वेषाः न्ये क तदिर नेर देते पर वेर नरा के न वेर पर वेर । राते'पर'वेर'। रो'केब'ग्री'पर'वेर'र्स्रणयार्धर'र्प'सद्यन् चेर्राक्षे'र्वेतरे' परः भेरः ग्रेट्रियहरः दश्वु 'र्ग्' ग्रुखं भेरः परः रु' यञ्जदः प्रंथेद। वेश्यः পূ'ৰ্মধ্বন'ন্ট্ৰ'ব্ৰ'গ্ৰীৰ'ৰ্জ্ঞ'শ্বিশ্'ন্তুমৰ্ক' 1949 শৈননেন্ত্ৰ'''' ন্ধ্রব'ব'ব্ব'। 1955 ঐব'অহ'ন্ধ্রুব'নব'র্'ন্ধুব। 1925 वॅराञ्च रद्धिरेथे वेरावश्चरपं रूप। श्वरपं व्यापेश्च वेरिपा त्रेतिः**श्चॅपः**ष्र्वः छेत्। वॅत्रः धिष्। **७** त्रेः ऋत्यः पृष्वः चेत्रः पः त्रेः तेत्। 1931 व्यतः **ऍ**ॱऍऍसऐ'चेरप'विषापीयारेधेव'कीयीयोर पश्चरादयातुव'ठेव'र्लूर''''' Bx5'4x5'4841 1951 ऑर-५५ अद्युद्ध सेर-च-विग्-५--ह्यापायव्यायाचा विकाशीका न्दीय दिये यो वे र पश्चर वरा न्दीय वें ते खेता *ॸॖॖॖॖॖॖॸ*ॱक़ॖॖॕ*ॸॸॖॖॱ*य़*ॸॱॸॖॱॻॹॗॖॖॖॖॺॱय़ॱढ़ॸऀॱॿऀॱख़ॱऄग़ॱॸॸ*ॾऀॱख़ॾऀॱय़*ॿढ़ऄॺॱ*ॱॱॱॱ **बि**रःळेग्' गेकुबसर्नेर्'र्स्पेद'घराश्रद्ग्'ग्रुग्र उद्'विग्'रेर्। 1959

गशुअ'ना

《अगुरत्युव》र्वेश्वारवार्यर्गेत्र्वेत्व्वर्यः विद्यत्युत्रः विद्यत्यः विद्यत्यत्यः विद्यत्यः विद्यत्यः विद्यत्यः विद्यत्यः विद्यत्यः विद्यत्यः विद्यत्यः विद्यत्यः विद्यत्

पान्ना सन्पानुनाम् नहारवाया यहे तुनान्नान् मानवास्य **ৡ৾ব'ৠ৸ঝ৸ৣ৸৸৸** ছৼ৻৻ৼ৸ৢৠ৸ঝ৸ৣ৸৸৸৸ঽৠ৸৸ৢঌ৸৸ पर्वे अरामसङ्ग्रीर'श्रापर्द्धमः पत् व'न्रः। हं व'र्प'श्रापर्शः क्षेत्र'र्प्यन् स्व **ब्रन् ५व'सुब'हुअर्ह्हें ग्रांसभीव'या न्याय क्या हे' व्याय ग्राह्य प्रन्** रे। इंश्रुष्ण वर्षी यहं वर्षे न् रेग् यां में ख्रु चरार श्रेयाच सन् हेन या नरा ह्र वारा न्रा के से वारा वे न रेटा की बादी यादा में में मान हें ना पान हैं दें रात्वत्विष्विष्वि इत्या वह्याय निर्मात्यान व्यापायक्वारायान्तर विष् ×૮.9ૈ૮. વિશ્વશ્રા શૈતાનું દ્વા તેટારા તેવાલા લોક્ષ્યો ક્યાં કોડો લોકો પ્રાંત્રે પે. पः न्रः बहु अवा । भेषाया बहु अवाया अवस्य हु न् अवाया स्वाया तर् वा स्व न्नः र्वेग्'स्तार्द्रेन्त्रः संस्थात्ताः स्थिन्'यः के'म्नः पात्रे न ५८। नेवबातहेन हे व्यक्ति स्वा व्यवस्थान व्यवस्थान के प्राचीत व्यवस्थान के प्राचीत व्यवस्थान के प्राचीत विकास के प्राचीत क यद्यर क्रेश्रपञ्चेयश्रव्यायरायाः कुराःस्त्राप्ते पाने यागुरायते । छुन् **इंश्विर्धरायः याविगाधेव।**

सन्त्। हिंगाग्रीया हेन्यान्या हिंगाग्रीया हिंगान्या हिंगाया हिंगान्या हिंगान्या हिंगान्या हिंगान्या हिंगान्या हिंगाया हिंगान्या हिंगाया हिंगाय हिंगाय हिंगाया हिंगाया हिंगाया हिंगाय हिंग

 पतियाग्वरायेर्पाकुत्रात्।।

1962 ऍर अं मॅरिकुल ऍर चाइ लु प्रायित गुर् में या ग्रार दिन् देः स्मार विकास मार्थ में स्मार्थ हैं के स्मार विकास मार्थ में स्मार हैं के स्मार हैं के सिर्ट में से में स्मार हैं के सिर्ट में सिर में सिर्ट में सिर में सिर्ट में सिर में सिर में सिर में सिर में सिर में सिर में सि

ন্শ্ন'ক্ৰণ

对 策气, 立美之	(1)
₹ &' ₽ ₹ Ð' &' £	項表了(3)
8ব'র্জন'গ্রীন্'ন	। 'तहेग्'हे <i>ब्</i> 'घदे'यहं र 'य।
555	য়ৢৼয়ঀ৽ৼয়ৢ৽য়ড়য়য়৽য়৽
শ্ৰীপ্ৰথ	ଝ ୁମ୍'ପଞ୍ଜ'ସ୍ଥି'ପମ୍ପ୍ର'ପ'ସ୍ପଜ'ସ୍ଥିବ'ସ୍ପିମ୍ବ'ଡ଼ଶଶ'ଶ୍ୱ'
	মন্ত্রীশা(21)
শগুর:বা	<u> ব্</u> যু'ই'ঠেন' মন্তব্'ব (29)
对 集山, 图上, 岁, =	ਸ਼ <u>ੑ</u> ਖ਼ੑਸ਼ਫ਼ੑਸ਼ਫ਼ੑਫ਼ੑਫ਼ੑਫ਼
55.到	ন্ত্ৰ'ব্'ব্-'ৰ্প'ব্ৰহ্প'ব্ · · · · · · · · (50)
শ্রীশ'ঘা	শ্বীবামাপ্তমাস্ত্রদমানা(59)
শ্যুঝ'শ্।	ব্নন:ব্ন:শ্ব্ৰথ:বণ্:ৰ্ব:ঘা · · · · · (93)
মন্ত্ৰ'ম্য	প্রথাই শৃষ্টা খ্রী প্রাণি প্রিন্যানা · · · · · · · (9 9)
일'지	ব্দপ্তাপ্ত বিবশ্ব।(116)
2 al.11	দ্র ন্দ'ম'ঐ'ন্র'ন্কম'ন। · · · · · · (131)
মন্ত্ৰ'মা	ब र्याञ्चेन्'र्'र'वा'यञ्चेंबन्याप्(139)
지희기'의	<i>মন্তব্</i> শে <u>ন্</u> ন ঝিঝঝ কর্পা ধর্ মঙ্গুর্থ শ্নন্ন
	ন্তুম' ম্ম'ষ্ট্র'ম'অগ্রম'মব্রম'ট্রিস্ন্ম' • • • • • (187)
	য়৽য়৽ঀঽ৾ৠয়৽য়য়৽৻ড়য়য়৸৸৻৴য়৽য়৸ঢ়ঢ়৽৻ৼ৻ঀ
	সুন'অঅ'রি'মেন্ট্র'রি'ক্টান্সনা ······(193)
	পৃষ্টি'প'ট্রব'ম'ক্ত'মন্নদ'শী'ঈ্শা · · · · · · (203)

শ্ব্যুক্তীসুঁক্ • • • • • • • • • • • • • • • • • • •
শ্বিদাহানু বা শ্বীব শ্বী
ব্যাপ্তরিস্ক্রাইলে
স্তুন বের ব্যাব্যব্দেশে বিশিক্ষা(250)
অ্লেস্ট্ৰ্ন্স্ব্
षुग्'रॅंड्'अ़ते'पु'बॅद्यायळॅंट्'चते'ब्रॅंड् ·····(265)
স ্পান্ন ব্লুল <u>প্ৰবাহন কাৰীৰ সূত্ৰি</u> পাথান সূত্ৰ বাবি
র্মন'মান'র্বা'স্ত্র'ই'ই'ই'র'ন্বি'র্মন'র্ম্প'র্মা • • • (270)
ন্যান্ত্র-'বা'ন্ন-'প্রন্থা'বার 'র্ম্না ······(275)
য়'ঀৢ'৲য়'য়'য়ৼয়ৼয়'য়৾ঽ 'য়৾ য়য়
শ্বাপ্তাই স্ক্রিশ শ্ভীপ্তা · · · · · · · · (286)
ष्ट्रेत्र'च'त्रुण'गु'त्र'हेय'रु'पचित्र'मते'भूत्। ·····(297)
ন্থম'ন্ম'মন্ত্র'ন্ম'মন্থম্মন্ শ্নিম্ ••••••(302)
র বর বর্ণ বর বর্ণ বর সুন্ ···· (314)
দ <u>্র</u> ী'শ্লুর'ন্থান্দ'ব্দ'বাই'শ্লুর' •••••• (320)
রম'ব'ল্লি'ব'র্ন'ট্রাস্ক্রমা ····· (322)
도국·본도·청국·덕·ᆨ도·저도의·다크·취국] ·····(353)
५ अ'प' ज्ञुग्थ'सु'प' ५ ८' अह्य'पवे' क्रॅन (363)
बान्य: ह्यतः प्रथापः प्रतः व्यव्यः प्रवे : भूतः (365)
スページ・イス・ダープログージャー・スページ・ボス ・・・ (369)
ব' ^ৼ 'বঁব'স্কুল'মন্তুল'মনি'শ্লীন · · · · · · · · (376)
되지'¾'푹'훋'ᄙ'다'해',쪾'끊'원'제 ······(387)

দ্বিব স্থিঅ'বঅ'ব' ব্দ'অল্অ'বাই শ্লিম্ ····· (399)
মথান্ত্র'ব্র'ব্র'ব্র'র্ম্বা(415)
👸 ন'নব্দ'ন্ন'ব্দ'ব্দিথ'ন্নীন্(430)
<mark>টি'</mark> টিঅ'ক্সঅ'ব্যাত্মউন্'উন'ঐ'ইন'অঝ'সুশ্বাথ'নঞ্
ষ্ট্রম'ষ্ট্রম'মবি'র্মুম ····· (442)
ଝ 'ጙିମ'୍ୟळे न'ଖ୍ ଷ'ጟ ଁ'-'ବୃଷ'म'न୍ ମ 'ବୃଷ' ଭଣ୍'ଶ୍ରି' [‡] ୟ'
শ্(451)
৲ য়
কৃ ষ্'র্ন'ব্লি'র্ন'ব্রামান
য়ঀ [৽] ৼ৾ঀ ^{৽ঀ} ৾৽ৼৼ৽ৼ৽য়৽৽ৼয়৽য়য়৽য়য়৽
র্মিশ্য(531)
ጞ ላ'ቒ도'ኇ፞፟'ቔ፞፞ጜ፞፞ጞ፝ጞ፞፞፞፞፞፞
য়
ম'নি'ন্'ইর্স্ন(565)
শৃখ্যা-রেনি-র্নি-র্নি-র
ভ্ ন'অগ্ন'গ্রীঙ্গন ·····(597)
মুব্ স্থ্য ব্যাধন স্থা । (612)
ন্যান্যাস্থ্যাস্থ্যান্ত্রাস্থ্যান্ত্রা
শঙ্গবাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্বাদ্
মই·স্থ্য-ভার্মন্ ·····(667)
ন্দ্রামান্ত্রান্ত্রামান্ত্রা(672)
[ন'নর্ব্রম্ম'র্ক্তব্যস্ত্রম্ম'র্মার্ম্বর্মার্মার্মার্মার্মার্মার্মার্মার্মার্মা

	ଞ୍ ଷ'ୟ-'ସ୍ତିକ୍ଲିୟ ·····(678)
	দ র্স্ স্বি'শ্ব্র্রা(694)
	দ্নন্দ্ৰস্তুন্দ্ৰেন্স্ৰ্প্ট্ৰীন্ · · · · · (701)
	শ্পর ইন স্বাদ্দ নিশ্বাম ঝ নেন্তর খ্রী স্থানা • • • • • • • • • • • • • • • • • •
	দক্তি ⁻ ইন্'ইন্'ইন্'র্বাঝ'র্কন্ঝ'র'র্ম্ন
	8 5 漫名・新木 ・・・・・・・・・・・(718)
	নঅ'ইন্ম'নান্ত্ৰা'্অবি'র্ম্না ·····(724)
	ጙ ላ'ቒና'ጚቔ፞፞፞፞፞ጞ'ኯቒጚ'፞፞፞፞፞፞፞ዄ፞፞፞፞፞ጞ፞፞፞፞፞፞፞፞፞፞ቚጚ
	ইন'মান' সুনা(753)
	ग नैव:र्नेव:ह्यग्य:हेवे:ध्रग्य:यु:न्न:श्रेन:कॅ:वे:७:ग्रुन:
	ভ্ব'ঝ'ন্শৃন্'ষ্বি'শ্ল্না ·····(760)
	শ্ রের সংঘরি র'ঝ'র্মঝ'ম'ঝ্রেণ'শী'র্ম'শ্বিম'শ্বিম
	শৃত্যুদ্ধ'শৃত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্
	왕 훈 '씨씨도 '추경' 취지(773)
	ন্রশ'ন্তুন্'ষ্ট্'অবি'শ্লুন্ ·····(779)
	ন্ম-প্ৰথ-নাইৰাৰ-ট্ৰাঙ্গনা · · · · · · (790)
	<u> </u>
	৸ঀৢ৴ ৻৸৻৻৸৻য়ৢ৻৻৸৻৸৻৸৻৸৻৸৻য়৻য়৻৸৻৸৻য়৻য়৻৸৻৸৻য়৻য়৻৸৻য়৻য়৻৸৻য়৻য়য়৻৸য়৻য়য়য়য়য়য়
	新木
	ପ୍ରଞ୍ଜିମ୍ୟଶ୍ୟାଞ୍ଜ୍ରୀନ୍ୟପଞ୍ଜିମ୍ୟ'ନ୍ୟୁନ୍ୟ'ନ୍ୟୁୟ'
	지왕독'덕친'취지](802)
78171	ন্রন্ধ স্তু ক্রেন বৃত্তী ন্র্বান ক্রিন ক্রেন ক্রিন ক্র

副遊与「司董与」

र्स्याञ्चिते स्वायाया नेवा स्वाय स्वायम्त्रा स्वायम् ब'ब्रॅ'गु'रु। <u>ᡨᠬᡦᡭᡃᠵᠮᢅᢦᡙᡟ᠍ᢩᡦᠳᢒᠵᡃᠺᡏᡃᠬᡲᡎᢌᠮ</u>᠄ᠬᢍᡃᢐᢩᠵᡃᠵᠴᠵᠮᢅ᠈᠍᠁**᠁** । हवा अन्दे न यह वै बार्चे हो बे न वे N' अ ज त' ५ ग ' २ प' २ य त' ५ य | **ब्रैं ग**्रां मा अर्थ अराज्ञ का खुन् में का तमन्त्रा परी का का नृत्व का नृत्व का नृत्व का नृत्व का नृत्व का नृत् त्युर्ध् ग्वात्त्रक्षंस्याक्ष्रकार्ध्वराम्युद्धाः गुवात्वाद्धिराङ्ग्वायने पर्ने पर्नात्रकार् নপ্রথার। धुन्। तु स्वाके तर्रे र र्षे तायस्त्। यात्रत्यक्यात्रें प्रतिन्यतायम्ब के ता *बिया* गुन्न क्षेत्रका मञ्ज्ञासन्तर त्रापनि । वित्र सुन्न क्षित्र सुन्न स्ति सुन् ग्हेर्त्रत्र्वेद्रास्यत्र्य्त्र्र्व्त्वःक्ष्यत्र्वर्त्त्र्व्यत्र्वेत्र्यत्र्वेत्र्यत्र्व् र्सेन्स्स्रियान्न्य्स्रिक्ष्यान्यः म्राहेन्द्र्यान्यः म्राहेन्द्र्यान्यः स्त्रित्रं म्राहेन्द्र्या स्था गुरुप्यययप्यथा । श्रेन्'स्व'क्के प्रें या क्रुव'क्क्ष्यय हर सं'न् येव'पर मत्राक्षे छन्या क्रुन् क्रून् अन्यान्यन् छिते न्याया ग्रीन पार्ति र महुन दं अत्यत्रतः मर्वेत् व्यवस्य व्यवस्य दे त्रव्यत्र त्रव्यत् प्रत्य त्रव्य ।

इयावर भिर्त त्य्र्वा या स्वाह्म या व्यापत त्य्र्या व्यापत त्य्र्या व्यापत क्ष्र व्यापत क्ष्य व्यापत क्ष्र व्यापत क्ष्

इय'वर'शै'के'नईंद्र

<u>ঀ৾৽৸ৼ৾য়৾৾ঀ৾৽য়ৼয়৾ড়য়৾য়ঀ৽৻ঀ৾ৼৼৼৼয়ৼয়৾য়য়য়ৠঢ়য়৾৽৽৽৽৽</u> त्रिंद्राचा अद्यतः नृत्यों के का नृत्रे वा वा वा सुत्या वा कुं के ना ने का माना स्वाहित स्वाह য়য়৾৾৾৽ঀয়ৠৢড়৾৽ড়ৼয়৻য়৻৴ৼ৽য়য়ৢ৾ঀৢঀ৾ৠয়ঀ৾৽য়৻য়৻য়৻ৼয়ৢ৾ঀ৻য়৻ৠ৻৽য়ৢ৾ঀ र्द्यायम्बेन्'स्त्रे'लेब्'र्यग्'न्म्'स्व'र। यन् कंबाक्षात्र विश्वस्यान्त म्ययाउन्'यात्रेव'पिद्र'न्द्र'यार्चन'पर्यापेन'रस्पायाने'रूराडीनानु' "" बिनःबयःद्रवाञ्चनःपदेः यतुन् । **३** 'न् वेद्रापदेः नेः क्षिन् 'तुः ग्रुन्वा यवार्ते द्र''' **'''** इंट्यानपुरिष्टुट्रानाभवार्येषाप्टेर्वेश्वान्ट्राम् वेश्वानीतिक्षामी त्रेष् हेर् क्रेंश्य हर् से बि'यरु प्रमु ये सक्षिय प्रे ति कुता यह न क्षेत्र """" यह्र्नेत्रियां में ब्रायक्यां में ब्रायह्यां प्रिया में अत्यादेवं स्वयादह्यां हेवं क्रीं सूर वेद प्रदासे वें बेर्पा राम अश्चात परि क्ष्य से प्राप्त धिन्य वाप्तरत्त्रहेशाशुन्त बुत्तवस्थाशकी नेपायवेत्यवेतः त्पाय नहें वापाय व्ययार्हे ग्राम्पार स्रेयार् 'कु यारे 'क्यायार मा प्रवासी राया मॅन्यात्राञ्चलामुक्षव्यवराष्ट्रिव्यवाद्यम् वित्रेत्राच्यात्राच्यवराष्ट्रेत्र्याः ब्रम्त्याक्षित्वव्याप्येत्।पतिः वैद्वत्याक्षे हु ग्रायस्व प्राप्य वि

चिर्-छ्याः सक्ष्वाः सृष्ट्वा या यक्षेत् 'क्कं के 'बिर्-श्वा या द्वा 'पा या द्वा ''''' ''' **र्**ग्रस्कुः त्रव्या स्व्या व्यवेत् स्वत्ते कुंदिं इसवाकुं इ प्रस्पात्य व्यव्हात् क्ष्रियात्तः बक्षक् क्ष्रित् पार्च आधी राष्ट्रत्यात शुराव राष्ट्रत्य ति सु र्येत् प्राप्त वित्य के " **अ**तिष्ठ्या प्रतिवासित्रम् वर्षा चुन कुन कुन कुन कि सर्वे व प्रश्लव कि स्वाप्त कि स्वाप्त कि स्वाप्त कि स्वाप्त कि स स्व'र्क्षर'क्षेत्रहेन्व'रा'अञ्चर'र्ना'अश्कुत'तुरुप। न्वर्राह्रन्य'र्थ' **᠀**ᡭ੶ᠬᢍᡚᡃᢆᡢᢋᠲ᠄ᡱᢋᡃ᠋ᠵᠬᢍᡃᢆᡥ᠂ᡎᢌᠬ᠊᠕ᢊᠺ᠄ᢠᢅᢩᠲ᠂ᡚᡃᢆᡷᠬᡃ ᢍᢩᠼᡆᢌᢇ᠊ᡚᢌᠬᢢᢩ᠂ᠬ **र्**षद्रप्रविदिश्ये वेशकुष्पिनेपानक्षेत्रकर्मात्रसम्बद्धाः षवरक्षेत्रम् वेदायर्ग्य वादार्द्रम् स्वायत्त्रम् न् स्वार्यः न् मृत्याः स्वार्यः न् मृत्याः स्वार्यः न् मृत्याः स्वार्यः स्वरः स् **ह**रा इसरा चन्'रानः श्लुतान। सञ्चित्'राहे ता राषारा परि'र्धेद' हद'रासुरा मानुग्राभार्द्रेण्यामसारमानुमानीयम् नियमसानुस्रानुमानुस्रानुमान **भे ग**र'त्रग्'गुब्'ग्रे:र्सें र'र'र्र' र्र' द्राय'वे्र'गुब्'ग्रेज्र र'व्'ग्रुव'यळवंद'ग्रें)हें ग''' क्षुःद्यर्श्वरम् इतिन्द्रं हे नेग्'यदे लखल्ख्यर्नुं पञ्चर्यानेन् न्वया र्राहेग्यायवर्षेत्य। **めらってれたがって、おすれいるがなったです。** न् गतःपर्यात्तनः असेनः अत्राष्ट्रतः अर्थाय हृदः श्रीः न् गतः नः श्रीः गर्तुं गः तुः '''' र्सेंब्र'सबारह्यसम्बद्धिर मृत्यायायाने गृष्ट्रीस गुर्से व्याना सुव्यान्तात्रा प्राप्ता मिविते बतुन् पाञ्च न ग्रा इवरा उन् नर्य र ज्ञानिय प्राप्त प्राप्त है सि से र " नेति छैर गहार रवा अर्ने के पह ग ने यन् र जुन के रवितिः 型ペンコ **५ वॅट्य १ वं वच ८ ५ व १ हे ते ब्रुट वे व पाय है व व पाय है व द द व व** <u>बूर्रायां चवर्या कर् । हे साक्षुरा प्राया हो पा है साम हे या ही के क्राया कर वा जरा जरा जरा हो पा</u>

व्र-दिन्'रा'तेश्रव्राताश्चित्राम् हेर्न् मुन् श्चित्रिन् स्राम् NI यहिन' पड़े में नु सारा न राग 'हु' के न ' राज घ्रवाराक्त्र'त्रो'कर'मर' य। **तुन्त्र्न् युन्यदित्रेययाक्त्र्यायम् विन्यक्तायायाक्रियायायात्र्र्मन्या** कॅरान्ड्य-ग्रित्र रियन्न-न्यम् स्वा निर्देत्र द्वायायश्रेषुः ૡૹ૽ૼૢૣૻૢૢૢૢૢૢૢૢૹ૽૽ૢૢૹ૽ૣ૾ૢૺૡૻૹૣઌૢૢૢૢૢૢૢઌૣ૽૽ૡ૾ૺૹ૾૽ઌ૱ૹઌૡ૽ૡૹ૽ૼઌૣઌૣૹ૽૽ૢૹ૽૱૱ૢૢઌ૽ૺ૾ૻૺ૾૿ ग्राम् स्थान्ये स्थाने पर्रेद्र'त्युषात्रक्षेत्र'तुःयुर'धषार्रार्'त्र'त्रेत्राचात्रवृद्धाचतिःगुराकुवा''''" য়৾য়য়৽৻৴৸৻ৼয়য়য়৾ৠৢয়ৢঀ৽ঀ৾৽ঀয়য়৻য়৻য়ৢ৴৽ঢ়৾৽৻য়য়৽য়ৼয়য়য়ড়৴৻৴ৼ৾৽৽৽ वृत्रकाशुः ह्या प्रति प्रम्या से प्राधित मेरि प्रमान के व्यापा स ८५'ऄॖऄॱॸॗ**ॻ**ॺॱॺॿय़ॱॸ्ॻॱऄय़ॱॻॖॆॺॱ ॺढ़ॺॱॻॺढ़ॺॱॺढ़ॺॱॺढ़ॎय़ॎॺॿय़ॱॸ्ॻॖ**ॺ** बेन्'सदीम्बर्स्सनीतीर्भून'ब्'बेन्'बेन्'ब्'न्ग्रसींश्रदाबेन्'न्'दर्धुं वा ĦŢᡃয়য়ৠৢ৾ঢ়ৼৼ৾৻৻ৼ৾য়ৢ৻য়য়ৼ৻৻য়ৡয়৻য়য়৾ৠ৽৻য়ৢৼৢঢ়ঢ়ঢ়৾ঀ৾**ঀ৾ৼৢঢ়৻৸** য়য়য়'ড়ঀ'য়৾য়'য়ৢয়'য়য়য়য়'ঀ৾ৼ৾৸য়ৼঢ়'য়ৼ৾ঀ'ঀ<u>৾</u>৾য়ৢয়য়য়ৢ**৾৸ৼ৾ঢ়** हुत्र रोबराग्री न् यत्र न् यापदेश्य स्याप्तुः र्वेद्र पदाद्र बाब्रायरायानुः सूत्र । ''' बैन'प'न्न'तर्जे'तळग्'न्नत'न्न'तर्ग्'पत्रे'र्ज्ञेन'यअक्रॅन'केन'। **म्न'यय** बे'दनरविरम्बु'द्रषुवायान्स्य दर्नेन्'न् गुर्म् पङ्करन्यायार्थव्य **हे'न्यॉन्'या** ૡૺૹૺૹ૽ૺૺૢૼ૾ૡૹૢૡઌૻૻૹ૽૽૽૽ૢૼ૽ૼૺઽૺૣઌૹઌૻઌૺૺ૾ૡૢૺ૾૱૱૽૽ૢ૾ૺૡૢ૾ૺ૾ૡ૾ઌ<u>ૼૹ૿ૡ૾૽૾૽૽૽ૢૼૡૻ૽ૺૡૹ૿ૻ૿</u> यम्प्रवाप्यतिष्यस्यात्र्यप्रस्थात्र्यम् । प्रमानवितिष्ठस्य Àब्'सबर् हैव'पबाँ हे दे'युबाग्चि'युबा के शु: स'पवि'या न् पदार्पे न् नः'''''**'''** बादातर त्र्रीं श्चेन पतिन पुरत् पत्रिक्ष प्राप्त प्राप्ति प्राप्ति

व्यात् वेत् प्रति प्रति प्रति एक्ष्य प्रवास्य व्याप्ति । 型でに मुकायव ब्राहे प्राप्ता प्रमुप्ता प्रस्ति व्राप्ता हवा प्रवि द्ध्व मुक्ता स्वापा प्र न्द्रश्येतिः इयाया सम्मारु न्युं न्युं नि केन्येन्य म्युं नि स्याति म्युं नि स्याति म्युं नि स्याति म्युं नि स्याति स्यात षे ने श्रष्टि चुन र्ह्य र ग्रीश्वर त्या थ्रिये पार्टि र व र र शुन् 数ロロネロギガ त्रेष्ठ्रपरःवर्दर्भतिःश्चन्य। त्रुत्याः क्षेत्ररःवित्ररःश्चरःवेष्यः कुर्वाङ्ग्रवादा गुवान मान्यावेटाने मध्या कर्षा कर्षा माना हिंदा हु वा हिवा सामित न्वत्रेययात्र्यंन्यहे भूग् शुर्शेष्ट्यानन्द्र्य অবিবা **७८**'स्राबेर्यस्त्रेव्राक्तर्यस्य स्त्राच्याच्यात्र्यस्य स्त्राच्यात्र्यस्य स्त्राच्यात्र्यस्य स्त्राच्यात्र्यस्य ষ্ট্র'নৃইম্**র্মন্ট্র**'র্ছম্মার্ম্যতন্'র্দ্ माहब्त्यायवापितेकंत्'वावापवा देग'दा'त्रेयराशु'अद्विद'त्य'त्रेयरा'ग्दिन'द्रस'र्देन'ग्नरत्यक्षे,'येन'क्रून'दान'वि मग्रॅन्'रेन्'रेन्'र्गग्येन्'रु'न्रानरेन्न्'स्राम्भु'ग्रुअरद्यायेन्'रु''' रम्ज्यायक्षेश्वरास्त्र्केत्रास्त्र्केत्रा यम्या मुक्षाकुषिम्'यम्य प्रमुष्यमुक्षात्रम् रहेग्'या तुष्य मुक्षान्यस्य हिन् नीय ह्ने पाता पहें ब्रव्या विन्ने न्ना नीयन्य मुखन्न हिन् ख्रा रेवरान् यतः इवराईरात कन्यन्न प्रत्यं वित्रवेन प्रति र युरायराणाण स्रा कु का कु वि स्थान स्वा त्वा कु स्वा वि स्व रोगरा कव् इयदाया नर-१२८ मे सूयाप ५८५ यहुव् पाने सुर पङ्गव दर्षा ह्य **र**म्प्त इंस्प्य स्थिति न्ये तहेग हे दश्चिष्ट्रन प्रान्त पश्च विन न्य कुलनते न में न ल पान न हुन है न सूत्र प्राधित हैन जेल पर सहि। """ बर्ने र ब के गुरुष र र खुरा गुरुष था हु । यह यह वे बे बाह्य दे यह गु यक्ष

हुन् ऑं न होन् यात है गाने न यदि अहं न या

न्नम् ब्रेन्न्निन्नम् नहुनन्न

क्षत्राह्मी पर्मान्य व्याप्त व्यापत व्यापत

नेति कें क्रेश्वरात्रम्य इत्या वित्तत्त्त्वीत्यस्य मृत्यापत्यस्य हिम्स्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य वित्रस्य व

क्तुव्यापतः । क्रिंते श्रीराधेवा ने राम दे स्थान धेर् पुरादे । दे राम विदान वर्षा शुप्त पारा [A८-Bॖिअ'क्रे)क्चु' न्८-राग्वि'मञ्जाउन्'रेव'र्से'ळे'नु'ञ' सराज्ञुन'पदि' ब्रॅन: ब्रेन्टेंब, मृत्रीय क्षेत्र, मृत्रीय क्षेत्र, ब्रेन्टेंब, क्षेत्र, क् पन्न दिन प्रभुष्य सूर्या पर्नि व (८ त्या सूर्य ने प्रस्व शंक्ष प्रमान पर्वे पर्वे प्रमान स्वाप के प्रमान स्वाप के प क्षें ब्रु पर-५ ग्रापित इंद्य-५-एव्द्रपक्षिय्। प्रताक्षेत्र हं र देर क्षु हिनः " ने' इयरा'ग्री'व र'व'ष्ट्रर गय'र्घे र यह यागरे' न्नु'य'हे' सु' चतिःश्चॅन्यः इ तेः अने 'यान्'र्म्यान् सर्यां ग्रेंचेग्' श्वॅंचें प्रेंदे स्हितानु''''' R59"22 कं रें दिन्दा यथ। दिन्दा रा देव वा वें विदाय हैन वदा *रैब*'र्य'केते'|वर-'ष्ठेअ'८**र्देन्'ॲब**'चन्'बे'**नेब'पब्यग्न**रप**ं**वेग्'केव*र-*तुःहिन्' बर्षेद'ग्रें स्तार्'न्यस्पर्द्राचीपक्षेद्र'नगुर'ननर'विर'ग्र हेस न्'सृ'शु जुद्र'द्र'रार या जुद्राक्षे'य क्रुन्'रा'क्रंद्रा'ग्रुन्'वे द'र्पन् ঘ'নুৰ' है। सक्षळं पॅ'नर्प्यर:रूक्षंतु व्रारका गुन्नर्पातु रॅंचेन्याया विव्युतुः वृत् परत्नेत्वस्रेत्वस्रेत्वस्राध्या हेन्द्रत्नेत्वस्यात्त्वात्त्वहेन्द्रत्नेत् **ब्रिव**'पत्र। जॅन'त्रे सन्देरी'न्त्रु साव'सेव'पें'केरी'त्रे कृव'सर्वे 'याप्पन्त्रापदि' নইঅ'ড়য়'৸৴য়য়৾৸য়ৢৢ৾৸'য়৸য়ৼ৸৸৸ঢ়৾য়৸য়য়৸৸য়য় ষ্ট্র-ব गुन्केराष्ट्रप्रर्प्तरव्ययाविषात्रिरः मुः अळे सुः प्रति न् प्रश्रद्धराः । **ढ़ॕॳग़ॱॺॾॣॖ**८.पश्चितप्तःच्ट्रत्युःचङ्ग्रह्गेन्चक्षित्यः Ħ TI

ने'वर्षा झु'रे' आव् 'रे' रूर्टा रूर्रा रिर रे' विषा स्र्रेन् 'केष रूर्वा रूपा रूप

मुद्यायान्य राज्य व्यादेराने वाले राज्य प्राप्त न्य राज्य विश्व इंबाहिन्द्रवायान्या द्वराष्ट्री विनया हुनः तुः हैन् छन्। नर्दर्भ। हैन् क्रन्य विश्वकाश्चर भया रु क्रिया वृद् वितः सम् र प्या विश्व द्राया निया निया निर्देश पा निरा चडरायते'र्द्र-व्याद्ध्र-विवा'यर्वा'ताञ्चर् ठे रे'त्व व्यारात्त्व'रा'सरा''' चन्न'त्यं चक्के' नया न् कॅम्का राध्येव' क्रेका पाचुमा केंद्रा न्युन् चा स्वरूप あて、おこれ、動か、ちて、日下、西口、利当ないて れん、かりまり、可り、不口か、「ちいい」 तिविद्यार्ययायार्न्,तार्ट्यक्याचर्वियाप्यात्वेत्रावेत् तित्तात्याताः शुःः न्मंनितिर्दर्भार्या यहन्। सुर्हे से दूर्र्स्यरप्रान्द्या द्वी स्याधर म्र हे न देव में बेवा न बार कारा न वा कर के ने में में में में कर के न व व व न मा गुरुद्द्वित्त्वराद्यात्र्वराष्ट्रम्थाः वित्तात्र्वरात्र लामकायिक्षात्रमातक्ष्रां प्रमानिमानिमानिमानि त्रिं इत्राचीव दाव सामि देवा वारी विद्रावी ने इत्राच ताय वर्षण मुन्तुर राष्ट्रभगवार्ष्यन्न्व। यन्वन्यस्यस्यस्यन्त्रवार्विग्यन्तर त्तुगानेता यान्याक्षणान्त्री मून्योने इवकाकुर्वे । भ्रे.पःबर्स्स्ट्रेव्ययम्बन्धभ्रेतःपश्चरतायायबद्धरःनदेरस्याः """ शितारवादा वे के विचेता खेरा विचा तार्य व हवा विचा तार्य व शेष्वद्रपार्विषायन्यात्रुषात्रेत्र। यनस्य सद्रो देवाने कु ह्यते कॅशन्स्व कंर केंपाप्पन् व यायेवाया कवा की नें वानु वातु यावा रामाने तुः" <u>ष्ट्र</u>प:इबराव्यायाञ्चं प्रायुक्षपाईव(त्युक्ष'न्न:क्रॅनश्रप'पा<u>न</u>्नेन'ने'त्यों ''''

क्षु'ग्र-'म्प्लुग्राचेन। षडिग्'द'रे'अदेंद'न् गतःतअदेग्'देग्'बैद'गन् मह् ग्रान्ग्'मॅन्'व्यह् ग्राहे। ग्राह्मरव्रत्रहे इयस्यी हेर क्षुण्यायन्दर्भात्रस्थन्।यस्यत्वाप्ययः। हेरवर्ष्वरश्चेत्रवायस्यस्यः विग्पत्रें प्रते: र्वर्, केश गुर्न् । र्वेश श्रुवापा गुर्न् प्रते छे। <u>देशप्रसाद्धरापिते खुणावसायहराष्ट्रे।</u> कराकराष्ट्रिया खुणासर्थरापिते द **ॐ**२ॅंश'र्में'पर'तरुष ॐ२ॅंश'र्में'पर'तरुष'त्तेर'पते'रर'द्रश'रश'कुर'रा' सवतायन्दात्वस्य सर्वे रत्या विराधेत्तर्ति वृत्रे। स्राध्य देवादा नुरर्वित्र ने वे व्रुं रह्म के प्रमानु र प्रिंदर द्या व्यवस्था के देव **श**ुष्ठु व बार दे बारा भव। शुक्कु व व्यायतः त में ते रहे व वा न न न वा श्री की न हुँ न । माभगक्षाकृत्यतम् स्वतं सके स्वतं मिन्नि ने प्रवासुमा स्वासे पर्वत न्न्यहत्यन्त्रिम्न्द्रवाम्यवयद्गन्न्यक्रके। वेपञ्चन्त्राप्तव **इंश्वर्धतः हे पर्वर्शेपण्यातः देवाधेय।** मिन ह्यशहे पर्वन बर्देव'न् गतःत्यार्देग्'बेब्'ग्न-उन्द्व्यत्वग्यमेरन्त्। म्बिब्रक्ष्यम् म्चः यास्यक्ष्यप्रदेशक्षेत्रे व्यायक्ष्यप्रदेश्वया द्वेन'मॅह्नेन'र्राची द्वन्य स्थान स् শব্দে শুরুদ প্রবাশ শ্রী কর্ল দেশ নথ প্রশ্রী পরি প্রবা 四万"ロス"万"章" मईव्यर्ग्यान्व्यत्व म्यान्यान्यान्येष्याचीव्यन्यान्या मिन्किकेसप्तिसुन्द्रित्यां भूवावन्द्रिन्त्र मिन्द्रानेस्तर्त्ता

श्रुवायम् द्वायद्वा श्रुवाया श्रुवाया स्वाया स्व रेब'न्र'गुन्धे'न्न् ने'क्वश्रम्'लार्ज्ञंनतेः न्न्'तु'हे'न्ड्न'ग्रेह्यान्र **त्रा**क्षेप्रम् तुप्रतुष्यक्षिक्षक्षात्रम् तुप्रम् क्ष्रम् क्ष्रम् अस्य व्या गुद्यासुन् अंदाः अभिन् पानिन् क्षेत्रां ने क्षाया ने स्यापा क्षेत्रां मिता स्त्रापाने दि सामा व्यादन्याक्षेत्रकेन्य्रविष्यात्राक्षेत्रस्याक्षेत्रस्य । यद्या <u>न्राह्म व्यापत्रेयपत्रिक्यक्षिप्राध्यक्षक्षक्ष्यः व्याप्तात्र्यः स्वाप्ताः स्वापताः स्व</u> **७व**'क्कीक'खराबार्यान्यान्यं श्रेसन्बरहूर्याः श्रान्याञ्चर्यातीः ।।।। सत्वाविष्ट्राचिष्ठे व्याप्ते विष्ट्राचिष्ठेवा व्याप्ते । व्यास्या स्थापनः स्थापनः स्थापनः स्थापनः स्थापनः स्थापन **प**तिःक्याद्यरः गृह्युरः पार्थेन् प्यारः ततु गृष्याः वृत्र् नुः तर्ते हो र । रे.वु 'दा'र्स'शु'ॲद' हेर। गुडेग'द'रे.हु ग्रह्मश्रह्माकेद'इवरा'ग्रीह्मानु हा **हे दिस् बेर-पर्वः छे। गुत्र-र श**कुर-स-त्यन्नेप-र हं अ'वेण-वेष-र तुत्र-गरिग'न'रेट्रॅबस्र उन्क्रेह्र्य'न्न्प्रायागुन्'ह्रें पर्रार्ट्र इयराग्रम् ग्रेंयाच न न प्राप्त मुन्त । मुर्चेग वर्षे इया हर जु पासु केद'इबबर्देश। रर'रे'इबब्ध्य'नेदे'चड्डद'र'ञ्चेल'र'न्र'र्सुट'रा'रादा राधिन ने र व का तहत (यातापा पति न किए। ने हे का र का छून पा यान है ने व्यवित्यान् अत्रात्रा के अ क्षेत्र में वी वी वी वि ग्राय प्रया यही स्था यहा रबाकुरापादीहण्याताकोदेरावकेरास्त्रीयम् ने इयदा त्रग्रही ग्रुन्मं प्रस्तित्वा नेवान्मं द्वा व्या द्वा व्या द्वा व्या द्वा व्या द्वा व्या द्वा व्या व्या व्या व्या व्या व ८इ.८५.के.प्रतिथे थे.कु.कु.कु. **৫৯ বিশ্রুবির্ত্ত প্রান্দ নক্ষাবার্ক্তর প্রান্তির বিশ্রু প্রাণ্ডির প্রান্তির প্রাণ্ডির প্রান্তির প্রান্তি**

८ इंग्रिन्त्व। भेरा देशक्रा प्राहेग्रे व्यास्य । हे नर्जु ब की हुन नु सु का के नर्जु व का मला के ख़ु न हे । बन्ने भून । ইম্ব্রা देश'ग्रॉल'प'प,प,प'र्प | व्रायदे'पर्दुब'र्भव'र्पे'ळे'ख्र-र,८८०'पर्दे'राहरा **ॼ**ॺॱइयराज्ञेषाग्रुन्'यर्न्'रा'पङ्खा ३ेरायार्थेष्ययपदि'इयापर'घर'रा'''' मस्यानीयात्रात्रिपाद्मार्थययाः स्वत्ति। मृत्र्पाद्मार्थाद्मार्थयः हिना हे व्यव् """" यम्या कुरा की प्रमुद्रापान् स्पाया या विमा। है से वुर्रे सर्पा या से प्रमुद्रा हे[']श्च'अ'शुत'र्वेन'र्मेन'अ'क्षराश्चिरशुन्'रन'रन'रेन'क्अ'वर'ग्ड्नरापरा <u>५७%, अपक्ष, की वर्षा के स्थान करा है वर्षे प्राची प्राचाल करा है वर्षे प्राची प्राची</u> द। न्दें पर्दर्भित्र विष्ये हो हिन् ग्रीय ग्राम्पन्य प्राप्त द्वारा द्वा न'नक्षेत्रप्रन्त्। अदिन्त्राधित्रभ्रत्यस्त्र्गतुत्यद्वरःश्वरःधर्मस्त्रा शु'गह्यर'दिर'। ग्वर'षर'सेु'त्रम्'यमत्र्र्प'श्चरम्प्रात्रात्रात्रात्रात्र्र् मति:श्विराह्यम्बाचा छे पाळे व में या हे पाई व में व हो हो पार पा में महार न्द्रित्राश्चीत्रवुद्राष्ट्रत्रान्द्राच्याहे। इत्राप्ताचरापान्द्रावर्द्र य'इयसम्बद्धान्दुर्'न्यस्यविद्यम्स्यान्यन्न्यः

न्रह्में पर्व्यक्ष्यं विष्यं तह व्याप्ता प्रकार हो। रह्म क्ष्यं क्ष्यं प्रकार विषयं विषयं

यदः दशकुदः प्रश्नाधुन्। यदं श्रान् श्रान् श्राम् श्राप्ताः य कृषाः । हैः यदं **द** रेब'र्घक्षेत्रगरा <u>ह</u>ेन'ग्रेब'न्न'र्घन्न्गृत'स्व'न्न्न'र्घ**क्ष** ग्नश्राम्याः स्वराव्यवात्र्याः स्वरात्र्याः स्वराप्ताः स्वरापताः स् बर्दर्भवर्भ्युगवद्यां श्रुग्या व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र व्याप्त्र यदिन्यप्यं व्रत्वेत्रत्य युन्य श्री यव्यवे यह न् रहेन्य श्रीत्राचा **८**ष्ट्रिय:पद्य। गुब की सहव गूप प्राप्त व स्ति। प्राप्त हिन से। देव व से सुबा दे वाकी वर्यं वर्ष्या वर्षा मार्थे मार्थे वर्षा मार्थे वर्षा मार्थे वर्षा मार्थे वर्षा मार्थे वर्षा मार्थे मा वगार्यायहर्षिय। पर्रार् ग्रार्थायहर्ष्द्रियायायहे दावहर्षे दा **ळन्यात्यवायवा यन्याऱ्यायातेवराक्याक्याक्यात्र्यात्याः** पाळेद्रांच्यान्वेत्वाने। अन्यान्यस्य व्याप्यस्य स्याप्यस्य स्याप्यस्य **豊村というがた。」がより** होन्'रिने राळें प्राती अळेन्' क्ष्या हें हे ह्यू क् इयय ५८। ५५'८ तुषाप्रीत या इयषा ग्रेषाप्र ५८ ते प्रवेदाचा ८ ने नया नेराष्ट्र वारा मुक्ता सुरके वा स्वारा प्राप्त । प्राप्त वा सामा वा साम वा सामा वा साम वा ग्रीकाग्राम् स्रिया यस म्हित पर्यक्षा अस्य स्थान स यन्यायायविवायग्वायव्यक्षे इत्रिक्तियायायायाविवा 「可然なけ、日下、日下、日下」これる!

<u>ই'নর্ব্রাঞ্ট'লম'ব্রু।</u> ট্রিন'র্মমান'র্ত্রান্'র্ন'বাম'ন্ন'র্ব্র'দ্র **तुः धनः तर्देः त्। ग्यनः नृष्यं येतः प्याय प्रायम् । प्रायमः । प् र्र** दे**ग्यदे।** र्सुरुषुर्धंग्यक्षित्र्वंग्येकेन्रॅसंविग्रानिव्रं रेग'स्य राहेट'अधिरेह्नअहं श्रुवादेग'नेग'नेतु इतात्र्र्हेट **34.图上.**以1 राधिन्यानुस्रह्यासुः पतुनः प्रयास्य वारानुसः नृनः स्व'रा'विवा कुवा प्रवरानुः न्दरायक्रॅरप्र्रिं हेद्यहलप्राता हैद्रप्रह्म न्द्रिं विद्राती <u> इंग्रज्ज बद्दः राञ्चे वे शञ्च प्रतास्त्र वा स्ताने स्तर् जार् व</u> तन्तान्त्रः। वैव्कनस्यवस्यस्यस्यस्यः विद्वा बर'नर'द्युर'वरा'गृतुत्र'द्यु'नर'तद्येव'त्रश्रक्षे'नर'द्युर हे। य संद ह्म-र्स हे ज्ञा शु न र्राया द सार्थ त न त प्रता न न साम धारा ने र द न र न्द्रंग्या सम्वर्षे मुद्राधाना महार देवारा विना विद्रारा स्वरा विषा'क्षेक्ष्यत्य'ने'व'ऋर' हॅ'त्रुकाक्चित्रं वाका**र्वर-'ये**' व्यंकुक्ष**ण्यते' गर्ने द**' ''' '**''** ग्वद्रार्ग्नाम् मेदागुर्दे सुराधित्रहेव्द्रार् द्रित्रा हिव्दार् देव श्रशत्यक्षित्रं कुरी नित्रं प्रतिकेष्टिन विवायालु विवायक्ष वित्रं क्षित्रं क्ष गर्ने व'ने वार्खर केंद्रावीं न्नः यह न 'गन्' शुक्र' र ग्री वार्य वार्य वार्य या वार्युः नदेखे। ५५'यॅग'ठव'क्रेके'ने'याके'तु'विषाचीय। पर्नदक्केंस्या'तुः हुन् र्में हें 'युवापानव' तर्ने व'पाने 'र्में वापान निप्ता होते होते' **क्षेत्रावतर्राक्षत्राचीशर्वश्रियां देवां चेरा स्था । वेराव्या वेश्वराय वार्या** इन्यम्य। ग्रेंब्क्रियम्भेनयाशुक्तपन्नः। हेन्य्यन् कुरायन्य

म्बर् केन में श्रम् हिन में हैं श्रम् हिन में न स्मन हैं। ने। যাইব' नवेषश्रद्भवश्रीपुन्तः <u>नि</u>ष्रित्रात्मेष्ठ्रास्यार्थेन् ।अनः ष्रीतः क्षेत्रः आ ॅ इंश्रं द्वरायाचेनरायायाम् द्वर्ने तहे न्या निरः श्रुनः हो क 5'ইব'নথা म अक्षित्रकेत्रिक्षणम् अन् चेरके निर्देशका निर्देशका পথ্য ব্ৰা सम्मा द्रांत्रवास्याचेतवाराः न्ता श्रीहिन्द्रात्वरात्रद्रवाराचेन् मस्यम् वार्म् वार्म् वार्म वार यतर वे गर्दे प्रते यद त्र हर कि ते प्रता कर निष्य के प्रता के प्रता के प्रता के प्रता के प्रता के प्रता के प्र पत्रेश्वां स्टा विषायाययश्वरा या से विषय से स्वाप्य स् *वेब*'रा'अ'द्युर' त्रेर'दिर'८,तुग्'रा'स| शे'र्ळर'रे'क्रश्राचीराश्रीसुर-द्युरा ष्ट्रन्त्रं हे. श्रे श्राद्धन, ये श्रेयो, पाचन, तपु हैयो, च थे र.। म्राचेर र्राप्त्रम्। ने'वर्षाह्र य्रश्यिष्य प्रम्पत्रिक्ष्त्रा स्ट्रिप्ति स्टर् **बै'गुड्'ग्रैड'**ई श्र्डायाबै'याबे्डाय**हॅन्'यद्यग्**रु-'बे<mark>'</mark>बडंड्'याबे'या बिराज्ञ वर्षा । वर्षेत्र ने यह हैरा वृद्ध राये सम्बद्ध रायर है तर्षेत्र या स गुवापार कवशासा ।

क्रत्तिन, ब्रंश्चामूच, क्र्यंच्याच्यात्म, क्रांच्याच्यात्म, क्रांच्याच्यात्म, क्रांच्याच्यात्म, क्रांच्याच्यात्म, व्याच्यात्म, व्याच्य

विषा'र्यन्'रा'नेश्रा'श्रा'स्'र्सेशेन्'वेत्रित्रेन्'न्वव्यय्यत्रेत्रेन् ज्वत्यकुन्द् ''''''' न्द्रग्या हे में प्रदेशप्रवास्त्र प्राप्त वाही ने दे है वाहिया हाता र ना प्रवास **बुैअर्विरापक्षिरविद्यानस्यात्राक्ष्यः हेर्यर् वेष्यर्गरस्यात्रे वर्यारः विः षत्रं वेत्रं प्रतार्वेत्रं वेत्।** ज्ञुवाबूरः प्रताक्षेत्रं प्रत्वेत्रं ते स्तुत्रात् মঝান্দ্ৰ ট্রিমার্মির শেব্যব্যব্যক্তি নম্দ্র মধ্য না শ্বন্দ্র বাব বি ব্যব্দ। ५'यद'म्'यव'तेव'तेर'नवारुद्दंतेर। जुताक्षेकुद्दंतायावेवाग्वात्वववा द्रषावित्।वत्।वेत्रः गुशुक्षः स्वितः कुत्यः तुः पर्वः गुरु। लु'तकण'वेर'गर' त्यत्थै वेश्वय्वय्वयः मृत्येश्वयः व्याप्याप्यः वित्रः वेश्वरः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः <u>प्रिंदे प्रः क्षेत्र इत्रत्रा ग्रीका है का ह्या द्वाद का की त्यापान जुका धारा गाविका गुका द्वा</u> ध्रम् नेतराद्राम् वि'तरुराहे। यत्य में द्वारीत वेशस्य स्पर्ध स्वराष्ट्री র্মান্ট্রন নার্ট্রন্থ। बेरः पशुरुष। श्रेतुः मृशं पाया वामा क्रांता रूप्। कुष्याराम्यानेद्राप्तुः चैद्राप्तराचुन्। यद्यान्। अवार्न्। हेरोन्। योवा **छ**र-छ-प्राय-पुत्र र्ष्ट्र-प्रयान्त्रत्। न्द्य-राम्चन् न्त्र्य न्त्र्या षरः ध्रायः न्रः तुरः चरः ने प्रयः श्रुवः प्रयः । प्रयः श्रुवः मृ वेवा श्रुवः व रः वरः नितः क्षेष्रवादात्व विकाश्चना या विना ननः श्रूका हैं है रोनः नी র্মানহামারা म वैश्वान मात्रत्वाची प्रस्ति स्वान देन में के बादा हा महिन तह हर व यदिखें। श्रेयार्यायर्न्द्रम्यारीन्त्रीम् प्रायापित्रिष्मित्रास्त्रम् श्रीतार्से हे रोट् गे वार्क्ट में क्षे दबार्च र श्रेतापवास र पव 5 41 F 5 1

ण्नाः स्वार्यं त्रां त्रां

म् न्यायाप्तरायाण्याप्तर्थं यस्त्। शुक्रस्याचार्त्तः यस्त्रा । स्ति। प्रत्यायाप्तरायाण्याप्तर्थं यस्त्रायाप्तरायाण्याप्तर्थं यस्त्रायाप्तरायाण्याप्तर्थं यस्त्रायाप्तरायाण्याप्ति। यस्ति। यस्त

म्तः स्वयः क्रियः कृतः त्रां त्रां त्रां त्रां व्याः स्वयः क्रियः व्याः व्या

<u> ने 'व साञ्च नका ने वा वो के श्रुम कं न गम जुन श्रु सामम एव नमम सुमा """</u> व्या विषयनेवानपाकुतायहन्यं ह्यायरापितारहे। गुरासूना हेरी <u> हुं व राशुः छेन तार्यन व याध्य रान्तन त्यं रान्ति हो । हुः यं तत्रु वा वोर्ता हुं वा</u> *षर* यत् छे**व यह्ता हे** ५६ र क्षेत्र प्रश्च महाया माना है वा साम मला सुप्राक्षेत्र तर्दे वाराया प्रत्य क्षेत्र केत् 'से प्राक्षेत्र क्षेत्र क् में मञ्जूरावाचर केवापवाणुरायवाया धुर्। वाजुबा सवबाव भरापवा *ଷ୍ଟ୍ରି*' ଶୁଟ୍'ୟ'**ନ**୍ଦି' ୟାଗ୍ର'ଟି'ଟି'ୟଷ'ଶି'ନିଁଟ' ଘ'ୱିଶ୍'ୟଷ| **ちいれずりて影響** ॲंन्: ततुत्र्नाः सं ने सं सं देश्य हमा स्वाप्तः विवा सुनः **यस**ा हते । बैर'ल'ईंब'ए'र्ग्राचेर। ५'ळॅ८'इबरागुराळरामरात्रींचेरवरा **ୖ**ଘ୍ୟାର୍ୟ୍ୟ ବ୍ୟବ୍ୟ ପ୍ରୟାପ ନ' ପଞ୍ଜିମ୍ୟ ପଞ୍ଜିୟ ନ' ନାମ୍ମ ବ୍ୟକ୍ୟ ସଂସ୍ଥିୟ ଅଟେ '''''''' बे' इयरा ग्रैस'र्मे स'र।' **न ग**र ने' बेर' शेवरा न गर पा विगा हु मा परा। म ५ प्रश्नेष्य देवा श्वापा स्थापा स्यापा स्थापा स्यापा स्थापा स् हि। अय्यायातुः विषाक्षेत्रायाः व र्ष्याक्षेत्रायाः व र्षा শৃ উন্থ नेन्'बैन'श्रैन क्षेट्र: ये ' हर' क्रण व्यायव्यये ' ह' व्यर्ग व' श्रीट्' त्यु ग व्य है। ष्कृत्राग्वायाव्येरःत्रयः प्रः व्याप्यः त्रयः के से प्रः व्याप्यः प्रः प्रः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्यः व्याप्य [मः ५ मः ६८: ५ मरः पर्द्याप्यस्य स्थः ५ मः स्थः ५ मः महे वः स्या *ब्रु'प'इब्रज्ञ'त्नर्गां सु'त्रियान्यां ह्रेग्'प'हुन्'नते* ह्रे। ধ্যমান্ত্র স্থ বার্

भ्रम् न्यात्रात्म विद्यात्म स्वार्यात्म स्वार्य स

୩ଵ଼ିଷ୍ୟା କୃଷ୍ୟକ୍ଷୟ ଶ୍ରିୟକ୍ଷ୍ୟ ପ୍ରମ୍ୟୁଷ୍ୟ ଜ୍ୟଷ୍ୟ ଖ୍ୟୁ କବିଷ୍ୟ ସ

विन्नितरेर्त्वाव्यं व्याप्तरास्य नित्रवा क्षेत्रावन्वर्त्तेवा वासेर्त्र दृत्या मन्यः क्ष्वायः वासः प्रमः विष्यं न्यः तम्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषय ब्राक्षीच्याम्बद्धार्याञ्चेद्राक्षीप्याच्याप्याप्याच्या क्र.प्रामिन'न्रमानिकाश्यां मित्रा ने द्वारा हिन्तर स्था गुव्यादात्रदावीतुः तदिवाष्ट्रियार्वेशे सेव्युक्तेपात्रा प्रदेशाया । विद्राप्तर हुःलाष्टुः न्राःल वे विवेशवान्य स्वावे । स्वति शिष्ट्री स्वि संस्वे स्वान्या महेरारी न्रः छ्रः ग्रेवः पर्ते ग्राधेन् परा। व्याप्ता स्वाराय स्वरः पर्तः **बॅ** र इबराञ्चन'लुबाबेन'पर घॅन'लास सुतानुबात धॅव'नु'कुन्'**ठेन** ने' नरक्षरतितुः ब्रुन् महाअक्षक्के क्षेत्र स्वाहिन् क्षाति नराक्ष वेशम् वर्षे द्वरापति । षवेदार्श्वराग्वर्भवार्थे। स्वाः मुखारह्या हैष दानी मुस्तिरह्या न्द्रिंबेयनशुर्याद्यार्भेरयार्थे । देवयापनभी प्रेन्यार्थेरया इयराष्ट्रया ने क्ष्मा मेर्चे र इयरा गुन्ना पर कथा पना छूटा कें न ग्रन कुवंस्राच्चवयाचेन्द्रुं खुव वित्रहेव्द्रुं विषयागुवाचीरा सुराव वा छे त्रेष्ववाष्ट्रीकाचेरूपाय। अ.प्रि.प्रप्ताचे प्वविकान्ये के विकास स्टास्ता हे। <mark>विन्</mark>याञ्चन्देन् ग्रीकाञ्चन् जुले तहन् वेन्य स्वरापिकेयका प्रविन् देन्'ग्रीस'ळव्यान्नेन्'चेर'व्या प्रते'व्या में'न्य'यारे स'सेर'स'सेर'**वेय**' संज्ञुना द्वना दारा वित्रा द्वना स्वर्भ स्वर्भ । स्वर्भ स्वर्भ । . अ.चेशच्चा ग्वन्द्रययाचेत्।यमः मृत्याचेत्। ह्येत्।अद्भार्यया न्रॅरेनेबाग्रेन्'नेन'व्या नेन्'वातु'ग्रुवायार्वेन्न्यन्तु'वाग्रुन्निते मिर। न्युरविराधवाद्येन् नृत्याक्षात्वत्री नृत्युव्यायकाद्येन्

नुषाक्ष नेते म्यंन द्वे हिते द्वे तामक्षर्यम् त्या म्याह्म स्वा क्षा रायाम्बारायदिः से र गवा यके र वारा मुंदा दव। यवा न या से द मुंदा दिन कि ्रान्य प्रमाणका स्वरासेरा मा<u>रास</u>्या। द्वार्म स्वरापि द्वारा स्वरापि द्वारा स्वरापि द्वारा स्वरापि द्वारा स्वरापि षर्गाञ्चात्म रेर्पा श्चार्रा विराम्या विराम्या हैशमुः पंतरोरः परोरः नेगः स्रेते रतापः ने से पः हुरः परा। न्नः मैं रापिते वी तेवरा दुनः गुवायके वाद हें न्नान्नः । अप्तुः न्नाका वेप त्मंभूग्यापन्दैराने सूरानुदार दहार वहें व्यवेदा हुय। देदा व्यवहार व्यव रन्पान्ना अव्यव्याः वे व्यष्ट्रन्धः न्यवः त्युवः नुः वे त्रित्वः यत्न वें द्वापार मुव्यत्ति प्राप्त । का वे त्या यत्न वें द्वापा व्याप्त । बैदः क्रम्य। दे दुष्यं दिवा हे ब्रायदे मा नुस्य द्ये त्या वि यदवा यदवा र्ह्रित न्त्रार्थे क्षं ब्रिस्ट्र्र्व नेस्न्ते देत् अञ्चत् साञ्चर । स्राध्य बै'तानेशन्दाकुतायळंद्र'चल् ग्रापति'ळे। बै'ज्र्ग'वद'गुद्र'देर्'ग्री'वता त्रह्वान् ग्राव्या द्वाराधिव है। हिराहे र प्रन् जुला रिते ह्वान् र्रेंट वया अप्तुन्त्य वेति वयात ईयान् ग्रास्य प्राप्त स्थान **लट्शः इवरा ग्रीशः भ्रेगः लटा रृष्ट्वा धुगः छ्टः अ शूटः।** नता तहरा द्वरा सु देग्*षाचेरःपानेपानेवापरा*ततुग्[ः]हे। बैंगॉर्इन्देशेन्दंश्तन्देश्तन्देश्तन्देश्तन् <u> দেশের। দেশে শুল র্জ ব্লুক শুর্জ নরদ দীবার্মার্শ দেশ্র ব্রেকা</u> कॅं क्वें किंग के त्या सुरा। सर्गाय सुराके ने राय पर दे। दासरा वहां की भवाश्चित्रवामान्दिनेत। कृषान्त्रेवाश्चरःवासयानेवाश्चित्रेता रम्भवाववारागुवागुवाज्ञयाववारस्य पासुमा। मारायहेवावेदीया

ने'वरार वें' तर्रे 'ख़र्चयापें व्यापें वें' विशेषा व्यापाय वर्षा ही व्यापे वें वित्रभ्रतात्ते से सूर्व कुत् सुत्र वेत्र वेत्र वेत्र क्षेत्र त्र त्र सूर्व त्र म् मृत्र व्यापा **ढ़ऀज़ॱ**ॲॸॱय़ॱॸ॓ऻ ढ़ॸॱय़॔ॴऄ॔ॱढ़ॺॱॻॖॹॱय़ऄऀॱड़ॺॱऄॗॖॸॱढ़ऄय़ॱॸॖॖॱऄॱढ़ऄॕॖॱॻॖॹॱ ब्रामन् पुःन्रेन् ने द्राप्य-प्राप्य-य-रा-पुःर्रा-पायान् य-राम् ने या वयान्ग्रःबासायीयाञ्चे गुरु। वग्यायस्य स्राप्तिसार्ग्यस्य र्ळ' ५ गार ज्ञुब' व्यञ्च ५ 'बॅर 'ब्रॅंस' खें ५ 'ए' भेव' य' २ ६ गा' चेर या खुर'। ५ 'ब का देन्'रून्'ने|पन्'रा'ग्'रावि'ग्रुन्'राज्ञन्'ख'नेर ग्न्द्'खन्'र्यं ग्यरःदर्थ''" नहिन्हे। अ.पि.न्नाअ देश गर्से मुक्त परिना हेन हे तिर्ह्म न्गतः प्रमेशस्यता वे द्विया वळे वा द्ववरा न्म। हुन्य स्थापा वे ता से वा रतः कुतायद्वाभुः ग्नेग्रापराव्याद्वेयराष्ट्रीधाने कुरायन् पाद्वयरार्वेदा है। अ.प्. १८ - स्थाने स्थान क्षु विराधाताक्षा करान् ग्रायमाक्की ग्रायन क्षेत्राच करा गहिग नदिः द्वं द्वं त्वन् न्यं न्यत्व्य। अव्यन्नविक्वं न्यु व्यन्ति हे दि पवीश्र्व विश्वेशतात्त्रकृतः। कर्त्यर्थातातावीव्यक्षान्त्रवीत्राचा र.लट.च ध्याञ्च व.च श्रियाना क्रें ट.ट.ज व व राज्य । व्याच्या अप्याञ्च त्या रतःकुलाशस्त्रं श्रुः तेशिषरः वृत्यस्ते वश्यान् श्रुर्वार्यन् श्रुर्वे तश्रेतान

म्या स्वाद्धर्वा स्वाद्धर्वा

सर्वे रव्यान् यम्यक्ष्यं व्याक्ष्यं व्याक्षयं व्यावे व्याक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्ययं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्ययं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्षयं व्यावक्ययं व्यावक्ययं व्यावक्ययं व्यावक्ययं व्यावक्ययं व्यावक्ययं व्यावक्ययं व्यावक्ययं व्यावक्ययं

नेते ळेळा याते। स्पारं त्यां के स्पारं त्यां त्यां के स्पारं त्यां त्यां

क्षात्म् न्यात्म्याः व्याप्तः स्वयः स्ययः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वय

श्रास्त्रीते व्यागुन्त् स्वाया सहित्त्र स्वाया सहित्य स्वाया स्वाया स्वाया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया स्वया

्रित्राम्बर्'त्रा हर्-द्रिण्ड्यायात् स्वर्यात सुर्-द्रित्या स्वर्यात सुर्-द्रित्या स्वर्यात सुर्-द्रित्या स्वर्यात सुर-द्रित्या स्वर्यात सुर-द्रित्या स्वर्यात सुर-द्रित्या स्वर्यात स्वर्या स्वर्यात स

नेति के क्रंश व्याप्त प्रमाण कर्ता स्वाप स्वी प्रमाण स्वाप स्वाप

ग्रुक्षया न्ग्रांनं र्वतः नहन्या

यदः र शक्षदः प्रश्चे प्रवृत्व । हे प्रवृत्व व श्वे व श व व श्वे व श

য়য়ৢ ५८ तेर तस्येष्य तस्य वाराध्येत्र वार्य हि तहंद्र समुः ५८ तेर तम्ब्रीत प्रति के तर विद्यापि के विष्य है कि त्राविष्य है कि त्राविष्य है कि त्राविष्य है कि त्राविष्य

ऍर्इं रिन्द् छेन्। मुंपडुन सन्। प्रवादान्यसन्नुः ऍन्। न्दंन् नुष्यात्रञ्चर गराष्ट्रिर। अलार्टरायायश्चरवा सुरायायश्चरत्य व्याधिर विवाधिर है। व्यापाने गर्ने राया प्राप्ता प्राप्ता वर्षा यम्भीताने सरमा जुला यह न हिन साम् प्राप्त থৰ'বেশব'ন স্থান'ব্ৰা त्रः ब्रेश्वा । विन्द्रत्यश्राह्म प्वन्त्राच। नेन् वाञ्चन विष्या वर्षे वा त्यं न्रेन्यं त्रः हेरः अत्ययुत् देन्यः त कुत्यद्यात कुत्यं त तुन्यं त ते अ ब्रीत्र्यं यत् व्यव्यात् हो। अ हिते प्रवास्य यात्रा यात्रा हें सन्त से र द वित तत्त्वारात्वाचनेवाक्ष्रवाद्या सन्दर्भाष्ट्रवाके व्यावदाया मेना देना बैन:बैन:प्रेक्ष:ग्रैकार्ग्रुकार्ट्र:पदिन्द्रन्द्रकाला सदिःसम्प्राधकेन्।पदिन्द्राधाःस्र न्रक्षाव्याम् अवस्या हे स्राप्ता हुन वया हारा से निहास ता के ने प्रकृष्णव्या तु न न ने का श्रुन प्रवास्त्र न पा का भीना का की न प्राप्त मैन्धित्रुग्'राप्ट्राह्र्'र्ह्र्यायाश्रद्धारह्य्'नेर। हे ह्यस्रद्द्द्द् नेन्'अञ्चन्'मशुअगारु शर्थे।।

ने'न्यान्याकायायाकायाने वाही ने'र्चयाक्षीः हुणायायाकेत्।
नवाकायाणान्यात्रेत्राचार्थात्रेत्राच्याः व्याप्ते स्वर्णान्याः व्यापते स्वर्णान्याः व्यापते स्वर्णान्याः व्यापते स्वर्णान्याः स्वर्याः स्वर्णान्याः स्वर्याः स्वर्ण

ने'क्राह'त'ॐश्वर'ग्वेश्वर्ग्याय। ग्राय'युर्वायर्ग्यहर्ग् है। देन्'क्रवराग्चियायर्न्'क्रायाय। अ'यामग्'देन'ग्वेग्यर्न्'क्षेत्रान्'हेव्

मदिलयानरप्रा क्रिलकरात्रहरागराजायगरिः र्जूनवारी झ्यका मान्यन् अर्धे हेर्डर त्रुष हर्पर रुद्र र र त्रुष चडर:चडर:घुरु:वैर:वॉर्ट्रःबळ्ळे'यराव्राचिर:ह्'रवा:वैद्यातु:हु:ठवा:य:''' ब्रुन्'ग्रीपयान् व्रेयायां कृषाया । स्यानु'यसुती हण्या विन्यिया के याग्रन ব্রীরার্ট্বা ইব ব্রিন্সেরি'বার্র'ব্রার্ডির্বার্টারের্টা। ব্রিন্স্রে म्डेबाह्यग्नर-'न्यातःक्वम्बादादे'अहुःधेव'चरात्रत्म् दु'ठ्या'अ'ङ्गन् **श**्वा श्वा प्रते अह भेव प्रक्षित क्षेत्र द राक्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र का क्षा का स्वाप के स्तु **ढ़्रिं**-'ग्रैराधायान्' अष्ठते ह गरायार्घे द'पनः येग् चुनः द। नः यानद यों हुनः रनः गियतुवानुः क्षेत्रयाव्याने स्नि नित्रा न्यापरुदायस्यावयानेनः यन्धिः वेग्।स्पान्नः यक्तः व्यवनः संस्त्र। अत्ययनः न्तुः गृङेग्।संस बेयबारबेट्याया देन्'इयबायवॅट्यवॅट्योग्टर्'न्यायेग्'डेरेर्' *बिर्'नब्र्'रद्व्यारात्यर्'ष्यर्'ख्यायान्य*्य्र्र्र्यक्षेत्र्यत्य्र्त्र्यात्यः ऍन्'न्यॉपन्'न्याक्ष्यप्य देखेयकान्द्रित्त्रित्राच्येन् व्या ब्रन्'हैराबी'तस्न्'दा'ने'सेयसां हैराकें राता भिन्नामार तत्व वी सर्घनाया र्नाकाकात्रात्रात्रिः हिन्द्रात्रा छित्राच्या व्याप्त्रात्रात्र्यास्य स्त्रात्रा **ॼ**ज़॔ॼऀॱतॖॱॺय़ॖॱऄॣॕॖॖॖॖॖॖॖॖॖज़ॣॱॕॸॱढ़ॸॖॖज़ॱॾ॓ॸॱॸढ़ऀॱॻॖज़ॺॱय़ॱॿ॓ज़ॱय़ॕॱॿॗॖॸॱढ़ॸॖज़

देन्'इवरान्स्यापरंन्'नेश्वरानु'तुन्यत्वराष्ट्रिव्'याव गर्डन्' रून्नेग्वयान्स्यापरं हेन्द्रान्यत्वरा नेन्द्र्यान्येवर्'यान्द्रेग्वर्'र्यान्द्रेग्वर्'र्यान्द्रेग्वर्'र्यान्द्र अन्य।

अ

षष्ठ्र'ग्रर'प्रर'तृ'खुर्रार्ग्'भेर्'ग्रुअ'त्त्रुत्र'नेर। श्रेर'्रां अ'नेत्र्र **विग**ॅर्ररप। ऍर्दि'गॸअनेॱइयरापनेद'द'व'वे' यसु'याद्वैद'व'क्षेरप्पर'हे' नरतिवा विद्यासम्बाधिक विद्या विद्य র্মানহর্ণমন্ত্র ह्यर्पालेगार्दराचरातत्वा अयार नाताववा अवि दुरान् धेवापया ह्या वरिष्वतानुः त्या वें कारा प्रचार वार हिंद् ग्रेंचा वीर वें प्रचें प्रचे के वा वाहर का विस् **८**राञ्च'अ'रूर'मैबान्दर'पदे'म्बान्देशञ्चन्'हेद'गुबाञ्चन्'सुवा व्यवस श्चीपॅर-इन्ज है। ह्य'अ'रेब'मॅ'ळे। यनग'नेन'अ'श्चन'गबु*अ*'ॲन'स'**स'** ष्पषु 'न्र'ष्य' वे राषा र्रे 'चुर्या पति' ध्याया शे ब्रिया यह सार पार प् ग्र 'या र राषा''' है। बै'तळवापते'ब्रून'हिराक्षेट्रंगवाग्रीक्षं'ववाक्ष्य'यांपरापहरा। ने বে'মর'শ্রব'মুর্খনিং স্ট্রমার্মর'মর। প্রাথম্বর্মুর'রূর'রূ <u> नहरसम्भागवा। नन्ग्वीससहितः ह्वासस्य वर्गन्यस्य प्राप्तः नुप्तान्य।</u> **নদ্ৰা'ন্বার্র'দ্'অ'অ'ট্রনঝারঝা এটি'ন'র্মান্যমান্ত্রির'ন'মে শ্বা।** *नै स*'त'यष्टु'यद्दीत'ष्ठेत'रा'वेग्'ग्व८'रा-स्व'वेस'वु'रा'सुरा'त*रा'दुरा''* ''''' व्विन्'ता'धाता'श्रेश्रश्या'र्रा'हे'तद्र'च हरः गृह्यत्। रहायाप्रशेता वेयारवाक्त्रयावर्वन्भुग्ववेववर्वस्यव्या अप्तुप्रम्थवेदाष्ट्रवार्ये वैयायह्न वया ने हमायने वादा कर के विवास सम्बाधिक वर्ष म्बज्जान्राम् हेन्। प्रमानिकान्य स्वाप्तानिका सन् 'दर्'ताक्षेत्'सत्तर देशक्षेत्र' गहु अव वा गुर्श र गुस्।'या क्के 'दर्गताक्षेत्र''" श्चन्यन् त्रवराञ्चन ग्राह्य वाद्या हर्षे ग्राह्म वाद्यान राम् REAL

त्त्वताक्ष्रेत्तत्वत्। परान्त्वताष्ट्रेत्तत्वताक्ष्रेयाञ्चतान्त्तः सर वरान्कात्वतार्ष्ट्रात्वता वर्त्रन्त्रात्रात्रा नदग्'खेग्'नकु'तन्तर्ह्रन्'तन्तर्वायनुन्हे। खरान्ग्'भेन्'न्युअतन्तरा बेर्चा हुँ न्'श्रवाया बुन्चिया विहिन्'कुष्प न साने'श्राम हण्या खुराच विषा ब्रेन् महान्याद्या नेति ळे हा अया ब्राप्त ह प्रशासन्य मुन्या । र्से:क्षे:पश्चेंपशक्के:प'विषाणिन्'घ'ने'मत्रे:ध्यगतुः'पक्षरःपह स'पश्च। विनः ङ्करत्र त्रावर हुर है। श्रु अपने व में के में अपने व व पर पने व पर पत्वा । यस। अष्ठु भैन पुणवर प्रांचाय प्रांचा स्वा विराय सुग साथ। ন্ন'য়বি'৻ব্যাব্রা দুন'মার্মার্বন'র্রানার্মার্রানার্ট্রন্ত্রা ब्रॅन्'ग्रेन'ग्रैक्'र्नेष्याय'भेव। न'यनेव'य'भेन'तनुष्'यस। बहु श्रूपानु प्वतिविष्टु देशे द के राष्ट्री प्राप्त । प्राप्त स्वतः प्राप्त प्राप्त स्वतः व्या देश द्वारा द्वै 'भे 'न्न' सर र त्रे अ विस्था देश देश देश ॅर-'ने|न्तुनशाह'ख-'। छ्रान'व'ह्य'अ'हु'ख-'प'पॅव' ५व'कु' बर्ळे छ्रान'ड्याब''' षर्ने बह्न वराष्ट्र ने बर्ग विमार्थेर् या देवा विस्तार्थेर पा सईता <u>दिन्'र्वेन्त्राय'वेप'तरुग'य'ने'न्'त्र्य'चैन'त्रय। नेन्'ग्रेश्यस्त्र'य्रदे'</u> র্মান্যমন্ত্রনার্বা নেমেরন্ত্রাস্থ্রমন্ত্রন্ত্রনার্মনেরব্যুমন্তর্ব্যুমন্তর্ব্যুমন্তর্ব্যুমন্তর্ব্যুমন্তর্ব্যু बिन्पर्यरम् श्रेंपर्तुः चुन्दर्वन् प्रस्वत् नुष्पत्र स्वरम् चुर्यायन् स्वर्या ৾৾ਫ਼ৼ৾৻য়ৼ৾৻য়ৼঀ৾৻য়ৼঀ৾৻য়ৼৼ৻য়ড়৻ড়ৼ৾৻ৼৼ৻য়ড়য়ড়৻য়ড়ৼ৻য়ঢ়ড়ৼ৽য়*ড়*ঀৼ৽৽ শৃত্তদ্বা

ॉॅंन्-रन्'बीश्रबक्के'च'न् रब'न्चन्'धुव्'सुच'न्**न**'। न्'ब्रिब'स

स्न्त्रक्षेट्राच्याय्यात्वर्द्र्यात्वर्ष्य्याः व्याप्त्वर्व्याः व्याप्त्वर्व्यः व्याप्त्वर्व्यः व्याप्त्वर्व्यः व्याप्त्वर्व्यः व्याप्त्यः व्याप्तः व्ययः व्याप्तः व्याप्यः व्याप्तः व्याप्यः व्य

सर्वारायहर्षे ।)

सर्वारायहर्षे स्वताव्याव्याव्याव्याव्याव्याय्याः । (हि.जिस्च्रेन्य्याः चिर्म्याः चिर्म्यः चिर्मः चिर्म्यः चिर्मः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्मः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्म्यः चिर्मः चिर

देते'तुरु।द्दरिख्याञ्च'द 'स'द। असुते'ह गरादे'यद्द'विग्'सुद्द' য়ৢয়৻ঀ। য়৻ঀৢ৻৻ঀৢ৻ড়৻য়৻য়য়য়ৢয়য়য়৸৻৻য়৸ৼৢৼ৻য়ৣ৻য়য়ৢ৻য়৻ঢ়ৢ৻৻ बन्द्रा शुक्ष कुर्से स्वन्द्र द्वार स्वा वर्षे वर्षे प्रवास वर्षे वर्षे स्वराप्त देन स्वराप्त स्वराप्त स्वराप्त <u> ५ ग र वे इवब कब दिर पदिषयपर के ब्रेन्स्य वे पर्ग पर्ग ५५ </u> यन्ग्रां क्रिंकिरतर्वे ब्रांचे रावते गृहसन् ये है प्रविव होन् स्वाव ब्रिन्सं कृष्य सन् के स्वाधिकायान् गरिन्य यसु के दिन्दन्। न् मृत्य स्वा ह्मंत्र'स्वाक्कीयर'देर। अप्तु'त्र'अपने पानिकारी करियान अपने ब्रेन्द्रायम्पर्यत्रे पर्वेग् ने मुँब्रिने केट हिन्दार्य प्रम्परी तुष्रा हु। देन्'रम्'ने'ग्रॅंज्'वें'हेश्य्य'पुरि'ग्रॅंज्'<u>'हेन्'प'</u>नेव्'क्'पह्-रु:हेन्'प्या रत्व द ह 'बर में पह ग्राय प्रत्याय विरापर। विग्या प्रा 551

द्र'ठव'ष्यप्'प्त्'र्रंथ'विषा'षेद्र'चर'व्णा'च'चडुष्'क्वेदेरदमेव'रा''''**'''** यहिरानरातरिष्याद्वयाद्वराने हिराहें वायाव्यात्। रामावाह केंत्राया **ভব্'অ'न्न'ন্থান**'নে <u>न</u>ेश'रा'अन्'र्य'न দৃণ্থ'র্মন্'র্মেম। শ্বন'গ্রহা म्र्रिन्थरः पर्वेषापय। हः गुव्दर्भ म्रायदिः स् म्राप्तिः स् म्राप्तिः स् *অ*প্র'নক্তুব'ব'শ্'ব'মের্ব্র্ব্র্ণম্বাশ্'ব'মেক্ট্রমার্ **डियम**हेमबापदे ष्ट्रियश्रार्देग्राद्धाः पुतिन्तुः इवस्पन्ता। वदस्यार्थेष् वश्याद्धाः व ने ने निर्माय में निष्ट्री ह्यु स्तु जा यदि य सहित्वया अया वा वा वा विदेश **৾**৾৶৽ঀ৾৾ঢ়৾৾৴য়৽৻ঽয়৾ঌ৽য়ৼ৾৾ৼ৾ঀ৽৾৻য়ৢঀ৽ৡয়৽ৼৼ৾৾৾য়ৼঢ়য়৾য়ঢ়য়৽য়ঀৼ৽৽৽৽৽ ष्याययायने वावयावी यने वाक्ष्यान् गतः ५ ग्यायम् वाले यक्ष्या NA! मन। लातुरे हिंदा राईन धुररेन ५८। सन्तर् रें सेवा सेवा पा षर्वरःहै। जःभवाराःक्षरः नगतः वया नेतः संखायवान् सुगारादेनः सं *बिना'नो डे त्य'नें चा*ङ्ग्यानक्षुंब्रहे छ*न*्य्या न्नन्छेब्रस्य न्यायायाय कर् हैना सु ज्ञायन् में दायर्कना नाजुवा मिन्दे धारा वे द्विय यहे सारा गुद्र वी सा वेशन्त मुताय सन्यात् केश्वा राष्ट्र केश्वा विश्वा व हुला बुँव। हैं 'दव 'संबाद बादिते हुन बाह्य दाया तार्देव हुट हो 'दत्न' **ऍअन्टा न्टार्याक्षातुःन्टाकानेग्नेत्रान्येयञ्चन्छः यटान्यन्**यम् इत्य। तृत्व्यवुः वित्यवेरपः प्रयाया । न्तृत्यिते यसुः त्र तः त्रश्यतः प्रते प्रवा । स्वा स्वा । प्रविषा श्रुतः स्वा । ह्रेट्'में शिक्ष हुँय। र्मानेष्ठुन्यसाङ्गा पर्योदेरसाङ्गा सरसमे छेरेर

र्दः व। मुत्रामञ्जून्यदे क्षेत्रं वे तिने ति स्वायां नायते प्रायुन्य विष्

*ब्रैन*ॱळेंअ'न्न'ग्निपाय'नन् र'न'्देअ'नु'अ'र्खुन'म'गुन्'ग्रेअ'र्घेय''''''' मय। यायावारे सें परेवाचेरातुरित्रां स्टानेर। यायावारे परेवारेवारी परेवारे नंभवन्त्रकरम् वाराचेत्। नेति स्वाराणीयावीन गुनामा गुनामीयावा वशानसँगया है। **ब्रॅबर्न्स्यवृत्तीःसुन्द्रकेव्हर्न् ग्रॉब्स्यस्यक्रं व्राध्यः** श्चेरः छे अ ने प्रायम् अवस्य वार्या निया श्वेर प्रायम हिना क्षेत्र प्रायम हिना क्षेत्र प्रायम हिना क्षेत्र प्रायम वि श्चेरः त्यान्य रातर्ने वास्तेनः से राजायाः । स्वापाः स्यवायः वारे संग्रेगायान् पायाः से **यम्परमार्थे ता वित्रे पुरुष्ति । यहामार्थि वा विवार्थिमा वित्रे ।** শেশব। बॅन्। नेपशन्नार्मार्सिन्द्वित्तुपर्वतानेपन्यमुखान्बन्दिन्द्वितानीय। ने'न्यार्थें रन्पव्यन्'युव्यक्ष्येत्राचे स्पार्थातात्रात्र स्या व्याप्तराधे सामग्री देन्त्यातुत्वक्रे सुन्दातुर्वेत्वक्रे सुर्वे । दार्यक्रिके सुन्द्रवारा सेरा **ब्रेन्'ग्रिम्'क्रैर'दर्ज्ञल'नश्चल'दर्ने स्युन्'दर्न**' ग्रुन्'च'भेव। ५'सन्'बद्दे' नुःवार्वन्।यरः भवारने होन् वारमाने द्वेत् वारम् प्राप्ता वार्षाता カロタ'と でして ロス'のる

ने'दश्यस्ता'श्रे' द्रश्यां श्रेश्या' म्यून्'न्, मृह्म्' प्रति मृत्यां स्वार्थं स्वर्था श्रेश्या स्वर्थं म्यून्यं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्थं श्रेश्या स्वर्थं स्वर्थं श्रेश्या स्वर्थं स्वर्थं श्रेश्या स्वर्थं स्वर्थं श्रेश्या स्वर्थं स्वर्यं स्वर्थं स्वर्यं स्वर्थं स्वर्यं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्यं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्थं स्वर्यं स्वर्थं स्वर्यं स्वर्यं स्वर्थं स्वर्यं स्वर्यं

बन्धंत्तर्र्तुं चुन्पंत्। श्रायश्वर्त्तं र्न्त्वे व्याप्त्रं चुन्तं व्याप्त्रं व्याप्त्यं व्याप्त्रं व्याप्त्यं व्याप्त्

क्टेन[्]क्षं न्यपदेन्दन्वयान्ययाक्षं यदः यं **ग्रॅन**्विन्प्रद्वापदेः । । । । भ्रमशत्यात् । अप्तितीः नार्धनाः संस्थान्यः स्टिन् स्टिन् नित्रः स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् स्टिन् <u> चेन्पार्चेरावरा वेरानुरावेदाचीराया पर्चन्पर। अपयाया विन्दे ज्ञारा</u> *ឝঽ*৾ঀৢয়৾৾ৢৢৢৢ৾৾ৢঀৼ৾ড়ঢ়৻য়য়ৢঀৼয়ৢয়ৼৣ৾য়ৢ৾য়ৢঢ়য়য়ৼঢ়ৼড়য়ৼঢ়ঢ়ঢ়ৼ৽৽৽ मरा अवि मरायापाया मिंदा र्केंदि में बादे पर देवि मार्जे पर्दे र क्रम वय। विराने ये सूर् हर ने हेर में यर पर रे र यप दि रे र या ने र यूरा मत्व'द्युत्ता ध्रायप्येक्षेपन न्याने व्याद्युत्ता म्बन्यान छेव'वे अत्र्र्धेरः चर्या अव्यन्दर्भात्र्र्न्य म् कुलापाद्र् **८**हुग्'रात्मप्रॅनःश्रुअपनेते'ळे| ५५,४% जुन्ना जुन्नता तुन्दा निर्मा मङ्गरत्रार्थेग्'रक्षें'च'विषाक्ष्यत्षेत्रेन्'तु'हुन्चाय। वें'कुराइवराविष पर-देशपर्या नर-केन् के रेश्वर सुद्धि वर्ग तगर तरे र मतुग्य। न्युयाप्रस्योधिष्यद्रान्तिस्विष्यम् नाया नेतातस्व रेर्डअप्रमुर्द्रप्रिव्यय। ने इस्रविण्यन श्रेन् भ्रेगविश्वराज्य। **ने**'नरताबनकार्नेगांश्चेन्'नु'र्सं रापानुवा वापवावरावे'विवास्रराते।

स्वात्त्रं स्वात्त्रं

श्रान्तः है। श्रान्तः स्वान्तः स्वानः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्तः स्व

स्तार हो र ता ने का कर ते कर

₹८१८म् द्राप्तेत्राष्ट्रेत्राद्रित्राचे के व्यवस्थान्य देश्वरः वास्त्राच्या **ष**न्धरत्तुन्धन्नराषेन्द्रेशयम्। सन्तःरेलागुन्धन् धेन्वेर। **ने**'बैंड्'कुंबंबेन्'न्यष्टिन्'रन्'बें'स्यान्न स्पेत्'चुंबंध्या । ने'बैंड्'सुन्'न बर र्यं हु शर्थित हो । हित् छै प्रवेद छै खर पा हु शबेत। र र र त् हु स वसमिवानेन। दें बाब्वेन प्रमायने मासुना निवासिव मान् क्षरम्द्रमान्यपुरावय। धेयोने न्यायायुरा वें कुराद्यस्त्रस्त्र **धर्मा भैनोने छन् गर्डमान्ने गरावया। इस्यान् गराहेन छेळा याने बे**न्थ्नः केवः संप्रमः बेगः व्यन्पारात तुन् विः नेः उद्यानेः हेनः व्यन्तः तुनः गुड्यन्। ब्रून्यंन् वेरापंदि वार्षेत्। धिनेदे ने तद्भान्त। इता A र्वे र पाया देशपराया पर कुरारी के ग्राप्त व श्राप्त । अपने से के ये प *बेचा* व्यवस्थान स्थान मञ्जूष्याव्या इत्यात् श्रुरायाने वतानु में सार्व्याक्षे केन संग्रहा। कर वैया में हैन है। इत्यत है रप दे हुए व्यापेय सं स्त्रिं ने स्वर्धां के त्रां में क्षां में क्

न् वर्षास्त्रावर्षः स्वर्षः स्वर्णान् वर्षः स्वर्णः वर्षः स्वर्णः स्व

ने'न्यान्याङ्गार्येन्यां स्थार्येन्यां विष्यान्येन्यं विष्यान्यान्यात्यं विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्य

तुन् यन्य वी आस्त्र संस्थेर या न्वें सहिराय या न्तर यस श्रेरपदे न्यन् द्वां कुषा ठव र वं द्वां द्वां मेन न व्याना व्याप्त वो ने वं न न पठवापापत्रुरहे। यरायरायुरवार्त्वुराम्त्रूरा<u>र</u>् 3'3"55 यहताप्रेर्यार्ग्युदायुव्यक्षियाः हेर्प्ता व्यायिक्षेत्रे हेर्प्तायक्ष पास्ता रेरपार्व्यापदेखं सुरात्याया यस्यां इर्पारसू ८ या गुर्थः। यह सम् हिंद्रां स्त्रा हिंद्रां वे अर्थे सु अर्थे स्था प्रत्रे यम्बरी र्'त्र्वराग्न्वं राचेराधे में सुर्यात्र्वा वायात्र्वा ने लेर मियोदार मेर बदार में ये बर वे अधिया विर HX'@'@3'H31 क्रैर'य'विषा'तु'यञ्चित्र'यय। वण'यतुव'वर्षासुव'र्दर'पीवर'तु'धेव तिव्या व्याप्तिष्य त्रुण्त्राण्यात्रं स्त्राप्त्रं स्त्राप्त्रं स् पर्या न्'र्यारीराच'तावर्द्वादिन्'व्यापर्यास्या'च'तिन्त्राचुर्या व्यं अति विषय व्यक्ता न्ये राम्म व्याप्त व्याप्त त्र्या प्रवास्त्र विष्याय व्याप्त हेंग्'वर्ष: न्वव्देश्त्रं प्रंन्देयप्रन्ष्व्राप्त्व्ष्व्राप्त्राय्व्या स्थान्तः। वरापास्याः स्यानुपापास्याप्ताः स्थापारः व्यापारः ब्र-स्थानश्र-। र.इ.द्याल्र-नश्र-ताल। क्रे.यतस्थाल्र-वियानव। द्वारीरान्त्रित्रित्र्रार्वानवता। त्रेन्त्र्नावाराष्ट्र यम् छेत् ता छेत् पा ने पह महिष्य हिन् पहेत्र छेत्र इता तर्षे मान्य पहेत व्यक्षेत्रच्या स्तारी मन्द्रच्या र्वरात्रकुं बेर्प्तिकित्विववाविव। पर्वायवार हा वद्रवार प्रा



ह्याद्वर। देरप्रायुर्प्परेखुर्युक्याव्या ह्यायप्राप्त्राच **র অঅামনে মেখ্রীর ট্রিরি ই ভি অআনান নু ক আন ই র আ** इयशक्रीवित्वस्यंत्र। धुमाविष्युग्यहत्र्वंगक्रीयनेव्याप्यन्त्। मेथार्यं महमका वका यहा सें हु कामका विश्व या विश्व विश्व या केव सें प्रवाशी अञ्चा हिपाया में चिर्त्र प्रत्या युक्त मुक्त हिन यह ने अर् **डे**ग'ने'केन'ल। तहास्रागडेग'गुन'खन'चर'अ'खुक्ष'चरित्रेरप'गुन'नेस ব্যুপ্তর্ভর্মেন্থান্বরার। ইংব্রহাত্তর্'র্মুব্'র্মান্র্মেন্। ও্রোথা मयराउन्'र मुधीग्'गैकाकी यहिंन'यरा हु'ईन'हु'कॅन'र हुन् नेरी हेराया ळर:क्रूप:केव:रॅं'वेवाचुप:ब्रें। देप:यर:पार्वेवागुप:पूप:पूप:व्याःच्या:सुपा:प्र द्यतः प्रकृत् विषा दुः श्रेत्र स्रोते । स्राप्य प्रम्ता स्राप्य । स्राप्य देश्वे न्या ऍदि'नहरूरन'नेप्र'य'रे'नुन्यान्य्र्प्, हुं बुद्धाः इयवार्षे वारा'न्न्द्र''' ''' न्'लॅते'लॅ'वेष्वयात् बुवैष्'बेषावे वर्षेन्'न्'नर्रेष। न्'र्षे लवा.रि.व्हेंन् व्यवहार केंद्र केंद्र कार्य करत हें विश्व विश्व कर विश्व कर विश्व कर विश्व कर विश्व कर विश्व कर विष्याने स्या हर् उत् क्षेत्र व्या क्षेत्र या या या स्वत् वा वे स्वित्। প্রথা पदिः सतुद्राद्रायाः स्वाप्तादे विष्यादाः स्वाप्तादे विष्यादाः विष्यादाः विष्यादाः विष्यादाः विष्यादाः विष्यादाः र्मिष्राम् र्मिष्ठारम् इत्रास्त्रम् व्यास्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य विद्यास्य बिने याचे रापाया वावें वापा इयवावा रेषि वापा प्वारायिक विवास वापा है । विवातुःकगः वर्षेनः प्रवेनः प्रवा ध्रयः प्रवानवान् वर्षाः व्यवानवाने व्यवनवाने व्यवनवाने व्यवनवाने व त्रै अन् दुन ध्रायत्रै सुन नु तह् मृ चे र विन यें मृ रूपा । 八代

ज्ञॅनवार्राच्यारेक्विन् प्रतार्थे वायार्थेन्य। म्ह्यक्विन् प्रतायिन्या विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य रेति अर्जे व्यापर दित हे अर्ज शाविया विस्ता के पा के व्यापित स्वाया के प्रा तह्रवाया है श्रुर-तुः प्र्याते वात्रत्य स्त्र रहित्यय। म्ह्राया हिरायुग् क्रेप्ट्रिंगर्वाय रातुयायायात्रीयय। ज्ञानयाया विराखेतीर्यया नीयायात्रीर हिरायाय। रशियानयम्बद्धार्प्रस्याते। देग्यतः संस्मिन्यस्य हिद्या त्युर्प्तते से त्यानु पहुन् कर्से व प्ता ता चुर्प्तते सव तु हैं 'के व सं दे' दं अत्यत्यत्वाव्य। प्रायाः द्वाराष्ट्रवादा ने त्याय हु पहि प्राय्य । विष्यात्रात्र हु वेष् प्रविषये यहँ त्या पर्देय। ने यत् क्षेत्र छे यहँ वे व नेभिन्यस्यगुन्यत्रेष्यस्य न्यान्यस्य स्व म्बासम्मारितेसुर्ग्ना इन्तर्भा वन्तर्भायत्व वीकियतः द्रग्'ठा'इयरा'गुर्'र्रार्य्य्र्र्ग्'त्र्यं'र्य्य्र्र् ध्यादर्भः मु ने रता अप ह र व र वे व र या। वित् क्षेत्र र के व से र के व से र वे व ইন্মন্ব্ৰ্ব্ব্ৰ্য্নাম। ইন্স্পূৰ্ব্স্ট্ৰ্ব্ত্ৰ্য্মন্ব্ট্ৰ্ব্ত্ৰ্য্মন্ব্ৰ্ইন্ दराप्रियात्याप्रिया गुर्ति। यान्त्यादीन स्वा

नैर्म्म् वार्यान्तिः ह्वं वार्यान्तिः देन्द्रेत्वावात् वाष्ट्रात् । स्वा तर्चे रपातन्ति तद्वावेषा चुन्तिः देवायव। स्वाचित् व्यावर्चे रपा चुन्त सुन्दि स्वाप्ति । स्वाप्तावां वास्ति हेव्यं व्याप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वा स्यान्त्राक्ष्यां स्वयं स्वयं

बळ्याशुरावे पासु प्रवासियात्र स्थापि सर्

न्नःम् व्यान्नःवन्यःन्

क्ष्मित्रं वेषा चुन्त्व अयम् । स्यान्य विषय् व्याप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स

ঀঢ়ৢ৾৾৽ঀয়য়য়ঀঀ৾ঀয়য়য়য়ৢয়৾৾৽ঢ়ঢ়৾য়য়ঢ়ঢ়য়৾ঀ৾য়য়য়য়ৢ৽ न्राचित्रः तर्वाश्चित्रः केव्यः द्वारावात् ।
न्रित्तुव्यक्षः स्वर्णाः स्वर्णाः स्वरं विद्वाराः स्वरं विद्वाराः स्वरं विद्वाराः स्वरं য়৾য়য়ড়ড়য়ৢ৾ঀ৾ৼয়য়ড়য়ৢ৾য়৽৴ৼঢ়৾ঀড়য়ঢ়৾ৼয়ড়ঢ়ৼ ロス:スグd.dol.l वरायरके तर्देरवाप सम्बन्ध समित्र सम्बन्ध सम्बन्ध समित्र समित्य समित्र स कॅब'वेर्'भेव'रा'र्र'| इयारा'यर्षे 'रेब'र्र' वर्रसर रेव'रा'दे'में खुता विना'न्ना'र्धन्। रूपा'विना'ग्रुम्'नेश'हे। ने'इससानें'म्न'न्म'रूपा'तु'सु**स** वय। मुद्राचुरळे सव मंग्राय दे निर्म में निर्मा विना र र से त तुन प्रया ५'८'क्रेब'ब्रुव'चते'क्रॅब'वेग'ग्रे५'ध्यंब'धव। हुँ५'ग्रैबंदते'तुःब्रॅव' इयरार्श्वेररा दर्श्वेर्'ग्रेशयर्घ'नेर्श्नरम् सरपरि तयार् नेर्द्राप्तिषा <u> ইব'ন'বীব'টিঝ। দৰামন্ত্র'ক্টর'ক্ষমনাষ্ট্র-টিঝ'বায়দৰানঝ। দরি'</u> ८६५,त्रांश्चराक्षेत्रच्यां क्षेत्रक्ष्यक्षेत्रच्याः *षर*ॱग*ॅव् व*ॱश्रेरः उ*षा* ५८.५५ 'दा' षर छे र न 'वेग' ५५ गु ' । क्र्याम्य **५व'रट'वेव'ग्रेड्यंनेव'व्युट्यंद्र्यं अर्थःयंद्र्यं अर्थःयंद्र्यं अर्थःयंद्र्यं अर्थःयंद्र्यं यद्र्यःयंद्र** व। ह्या अर्र म् क्ष्रं न् मृत्र विवासामा न या क्र वा वा ना क्षा क्षेत्र हो त्या या विवा वित्युत्यः प्रहेश्यः विवात्ववात् देरस्य स्था श्वतः प्रमान्त्व विवा मुद्रानियाम्बर्धाः।

८*षा*गुर-व्रावश्युर-पङ्ग्रद्याः कृरन् चंद-र्द्र-र्द्युर-तु-र्देरकाव्यः..."

इन्। यरुन्। श्रेश्वर्षः श्रेन्राय्। याद्यत्। स्यायः वर्षे। तर्ने अन् में ब धेव है। ज्ञा अन् भ्रा तर्ने ब की मलु ग्रा। अनः क्रेंन के करा द्यानितितुन् विवादायत्ववाराचेता देवानाचारा द्वाराचायात द्वाराचायात *ब्रैस्परी रामह राज्ञामझरवामा* विगाधेतामकाश्रहतामते हुँग्या यूज्रा.... <u> गुैश'र्</u>र-प्रुय। सॅ'ज़ुश'इयश'कुश'पर'पन्र-'प्रय। हे'र्सश्युप' विवा रदेश्यअष्ट्रायानहराम्य। श्राक्षित्रीयरातुः श्राक्षात्रायस्य। रेन्र ह्यन्दर्यस्ति ह्यन् हे द्राया प्रमा के स्या है द्राय है ने **क्षेग'र्स'के'वेग'**सम्बद्धाः स्पिराच'सब्बेंदरी र क्रेंब'चरे हें रा वेग'वि' घुरामरा मु'यरी'वायवरा रते'न्याळ्यां व्यापकेव'र्घ'तरी' संप हिंदाक्रिया दे स्मूचाक्या प्रसंशित्यो भेषा वृद्यास्त्रस्थाय वृद्य यम्बाक्ष विपानक्षेत्रवाद्यं विपायम् । भ्रायास्य । स्रायास्य । स्रायास्य । पर्वाष्ट्रेर्याश्चरवा न्यर-न्याप्याप्याच्याप्या रातारवार्याचे अञ्च प्रवासवावना मञ्जाविता हन्य केवारी सेव। ये न'ल'वग'नत्व'ग्रेक'रूप'चं हुन्। न'यह'न्न'येरन'नयग्रन्युनिरे য়ৢয়[৻]ড়ৢয়৾৻৸য়৾৾৻ড়য়৾৻য়৾য়৾৾য়৾ৼয়য়ৢ৾য়য়৾য়৾ঢ়৾ঀৢয়য়৻ঢ়ৼৢ৾৽৻ৼ৾ৢ৻ৼঢ়৻য়য়ৢঢ়<mark>৽৽</mark> खन्या ग्रीयानः स्पर्धाय स्थाप स् おけばれないとうないとかしには」 様々「「つっまり」は「している」 हें। विगानगत विन्तान्ता। इविति विवानगा हिन् वाहिन्वा द्रत्यापत्थाकृष्ण्याकृष्णिकृष्ण्याकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिकृष्णिक्षिष्णिक्षिष्णिकृष्ण

त्र्वाचित्रः तुः द्रायायः श्रे त्राय्यं द्रायायः द्रायायः विष्यद्रायः विषयः विष्यद्रायः विषयः विषयः

Rहेन् हेद'गुद्र'ष्ठिच हेट्'। देन् राहुन' ने तेव वा कर दा इववाया देन 'पद ष्ट्रग्'नरूत्र'वेर्'पिते'पिते'पिते'प्रत्याहे'पर्वुव'वर्ष्यरप'रम्'न्म्'कुत्र'''''' बर्द्धद्रायात्रेवराज्वराज्वराज्ञेवराद्धनात् द्रतादिन्यहून्। यहून्। यहून्। यह्य **कुत्राच द्वराधि शक्काय ळव्याय राज्य व्यायह्य पालिया है रा** 551 विवयः कुतः दुरः चर् प्रतिदयः परि र र व वायव तायन् पान्रः। NAI ष्ठिनवार ग्रेज्य मेर ह्यें पा विना ग्रुप्त मारे रत्य । ध्यार् या रहे दा तु नुप्त म्रांचायम्य। यन्नान्तिम्भेष्यानुः तुनार्हेष्याध्यम् वास्यान् हो। *चे र*-पदि:तुन्:बेन्:बृ*वेक्:ग्रैक्:बेन्:बेन्:बेन्:हेन्:हे:दे:बरा*दुन:बन्:बॅक्:" राविषाह्वे राह्यराष्ट्री यदात्राह्य अत्र अंदर्ग रिया तर्शराधिव परा बर्ळन् हे ब्रायने त्यार पान वर्षा की राज्या रेति हे रावेंगा ने रापाय। *ढ़ॎॺॱॺज़*ॻॖॸॱॺक़ॕॸ्ॱक़ॆॿॱढ़ॸऀॸऀॸॸॻॱॻऻॿॹॱय़क़ॱक़ॆॿॱॿॗॱॸॕॴॹॗॻॱॹॗॻॱय़ॱॱॱॱ विषाधिव'दतर्। स्र'खरि'रागत'श्चरा'र्ने रागशुररावया। बर्हेर्'हे**र**' चु अकु रात्र ह्युन'य'र्से वृ शन्य पात्र वृ शक्ति के 'वृ'कु श्वय राय स्त्र दे। 2.3.4 मल्याप्यसम्भाति स्वानी हेद्देष्ट्यायायात्र्यात्र् रेक्षेगुक्षन्परायदेर्भेक्ष्मकेरागुन् बेन्-ने-पाने वाग्री वाग्रीन्-केन-प्रतुषा-पाने वाग्री है 'ययकी दें द' यहाद 'य' य तुन' द में दख हे 'हान य' नेद हु द के अप दिन हु द उत्। क्रेप्यापात हुत्यावेत्या क्षित्वे भेवा न्यायात वर्षे रहाः ষ্ট্ৰবৃ:দূৰেৰ্ন্ত্ৰ'নব্যত্তৰান্ত্ৰীৰাবৃত্তৰে। একাইনেই-উআইবাট্টৰাব্যান্ত্ৰীৰ ब्रायळेव्'सॅ'*व्यापायाया* ह्या नेत् इयदायागुवानु दात्र हा पा विषा

त्याग्रनः कृष्या विद्या विद्

ने'न्यागुन्यस्तर्भे'विन'र्द्रस्यया धुग्याक्षे'यन्थे'विग तृत् ने'क्ययायर्भेयया मन्याक्ययान्ये'कुयायेन्'नेर्याया ने'क्ययग्रीवन'न्यान्नेयायीन्'नु'र्द्रस्ययविन'न्नकुन'यस्या

श्चु'क्षे'यन्'य। श्रुवाक्चिंत्रताय'निष्वेषाव'विषाव'रे। नेन्'क्येय'हें'त्यचेत्र ने'भैद'द'देन'ग्री'स'हें'दे'देन'दर वे'दें र'वन'भैन'ग्री स ঘ'ঐব'ব বা न्वेर्वे व्यव्यक्तं न्या हिर्द्या हिर्दा हिर्द्या हिर्दा हिर्द्या हिर्दा बर्पा हो रत्या हो नया दिन्य है नया दिन्य है नया है दिरमार्स् श्रुःर्त्रुण् कीदार्थन् भेरामाया स्तरामा दितासा महण्यादात द्वार्थे स् है। विन्तर्भेर्द्राचकेवार्याविषाञ्चार्श्वेषायीदारम्बेन्प्रसम्बन्धार्मम्ब चर्या समानिविषान्य नम् ने भु कि सम्भु नि सर्हे रामा हुन प्यानमा से स **ଛ**'द'ग्रेच्'श्रु'श्रुंग्'रेद'८,7ुग'द'स। अर्घेद'अञ्चग',7ु'ञ्च रःबेद'प*दे*' द्वार प्रने प्रथम के अधि हाय प्रते प्रमा के ति दे ते क्ष्र प्राप्त कर कर के क ने'त्रवावाबादवाद राष्ट्रवाखवाद तुवा ने'त्वादवाहुदायायवा ध्राय सदी'व'न्यता'वू'रे'पति'न्देंशश्चेत। श्च'श्चरवरप'र्से'वूं'वेशश्चाता मतुन्यानेरमाने नामान्यान नामान्यान मन्त्रे मेन्यामा मन्त्रे मेन्यामा मन्त्रे मान्यान मन्त्रे म बेन्'स'अ'खुब्'नेन्'न'विष्'नक्ष्यहे। हिन्'ष्-'वर्ष्यव। न्श्रम्यास्य। यन्नान्रस्याक्ष्र्न्'क्रीक्षेत्र्येन्टेलेन्यायन्यहे। विना कृद्दाः वैद्र'तुः क्षेत्रत्राम् त्रापदान् अपदिः क्षेत्रावृष् वृः दुः देन्द्रापः शवादाः **"** <u> বর্মার। র্মর্শনরার মধ্যে দেশ স্থান গ্রিম্বার্মির পরি র্মার্মির করে।</u> न्श्रम्यान्तुः दृतिः देवा कम् याया त्रभुम्याया पहें दाहे न्द्रम् व्यापा मन्त्रातियापाविषाञ्चर। सुप्तर्ने त्रेयासञ्जीव्यविषाचेरायन् नेरियंषा ब्र्यान्त्रा करक्ष्ण्यक्षयायरायतुर्वात्रेष्ट्रे अववयायश्चिष्यायय। <u>न्र देव व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याहम व्याह्म व्याहम व</u>



है। ह्म'यदै'व्यान'यादरारु'र्नेग'ग्रार्-गैद'तरुग'नेरपरार्गपरहे। <u> द्रिन् मैबान्देश्यहतात्रूदे में इन्ति नुवासवा नबाग्रन्दिन् मेहु द्रुवा</u> **৻ৼ৾৻৻ৼ৾৽য়৾৽ড়৴৾৽য়৾৸ৣ৾৴৽য়য়৾য়য়৾য়য়য়৾৸ড়৴৽য়ৼ৾৽য়ৼ৾৽য়ৼ৾৽য়য়৸য়৸** बिट्र'नेश्राट'स्र'याद्दर'यहत्य'चित्र'स्त्रुव्य'स्त्रुव्य'स्त्र्या बिट्र'वीवेट्र' यतर्वसुत् केद्र् स्वादा है। इत्र स्विर विद्याया सम्भाष्ट्र प्राचित्र वित्र वित्र वित्र वित्र क्षेत्र क्षेत ষ্ট্রিব্রেম। মু'ব্রাট্রাব্রান্ট্রাব্রিব্রাট্রিন্র্রেমট্রাট্রাট্রালা মুরাউ **८**८. शिषाङ्ग्रेश्वर्यप्रत्यान्यः पञ्चत्रात्र्येत्रः श्रे याङ्ग्रेश्वर्यं श्रेयाः श्रेयाः स्व **ब्रैन**'स्ग'न्र स्रेते'ग्र'गर्नेग'गे'गर्नेररा। ब्र'र-्र'अग'ळॅंडा'स्वराप्तेष्ठे' ्र पं अं चुनः प्रतः राष्ट्राप्ताते 'प' विषा चुरा द राष्ट्रं 'हेंता' क्षण 'गे तर्ण पाता तर्ने *बै*ॱॾ॒*र*ॱॻॖऀॱनेॱगॱऄढ़ॱय़*ॸ*ॱढ़तुष ॹॱय़ॱॹॱय़ॱज़ॱॸढ़ॺऻ न्नु अदे वता वया है से बे बारा परे व दें र । ब र प र र र र धिव'ख्रव'त्रळेता'डेव'व शुर्य। नेराख्य' पर्वताव्या श्रुपें र ह्या है। ह्म अन्दर्भ छे न्न्य विषय स्रिन्य का की की के वार्ष के विष्य प्राप्त वारा वा खुबान्यां भेन् वहारायन् तर्वता हैं में बार्क वायहार स्वाया है। संतर्भारयाम्। पालेगाम्यग्राहेषात्रेयामानु । विवार्च के प्रेवाच देखा सामा त्या देवा है वा स्ति के देवा देवा स्ति के देवा स्ति के देवा स्ति के देवा से वा स् न्र्सन्द्रित्रहर्त्त्वर्वेद्र। हिन्धिर्यभैन्त्रिक्ष्याः बदंद'इबबाज्जबानर'वृषापव। तत्व'नर'क्ररवतर'खबारग'भेर' न्युअत्तर्वतान्ने तत्रन्। क्रिं म्याक्ष्यान्युअत्त्र्वे दिन्। यन्त्रं क्रिं

मृंशहेरळ्याव्यत्याव्यत्य्वयाः प्राप्ताव्यत्यः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थाः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थानः

ग्वेतामा देगा द्वेन स्त्रात्त स्त्रात्त

देर:ङ्गं:इग्'नेखर:प'सु'यर्द्र'गुद्र'याचर्र्द्र'क्र्रंबराद्यरापदा **ङ्गं** म्या ने में हिते वहा विता हे र परिवा हे न परिवा हो । पर् प्रदेश सम्बद्ध मिवे या छै। यह मिवे वा मान्या हे वा नहा नामा तर वा वा के वा छै। यह के वा के वा मिवा के वा मिवा के वा मिवा के व न्देग्'र्वेदा प्रतान्दिग्'स्'कर्र्'रुश्वरा प्रताहुग्'श्वे'के'रावेग्'रु ह्यन्य। देते वर्त्रस्य दे हुन्य हे हुर्द्र याद्या हु सदी नहिस्य विन् बेर्या विषाद्वन्। देराञ्च यायवेश्याय स्त्रिं केन्द्रत्याय। दर्षे यायवेरवाववाववाद्यान्यावेरावेरावेरावेषायत्वाके। व्रुप्तेर्पद्यवागुर गृहैनक्षर्त्वाः मुःतव्यायस्याय्याः मेन्द्रव्यः । वनः हर्यायः वसः वस्र दें है र हैं व पहिन्य विनय है या है या है र तत्वाप्यवा अ:इन्:रु:ने:खन्यक्रीव्यवः हेंगःन्नः ह्युनःवयः हेन्-न्नेवः क्ष्रयादाया नहिं न वार्याना भ्राया क्षेत्रा होता ने व वान न वारे में न पर मा हाना हे वा र्'सेषा सेब्रायक्षाच्या चरवासेब्रारीयवेश्वराद्धरराया हिन्'हुब्'हेक्ष'के'न्बॅरक्ष'च'त्र'च्रिन्यच्रित्र'व्यवर। हुब्'क्रच'हेत्र' मर्द्रि हेन्द्रियाचन्द्र। यह केन्द्रुर्द्रायात्रवार्याम्बद्धा

ष्ठ्रण'रु'सेर्राचेष्ण'यर्द्र'य्य। स्त्याचेत्रेत्र्यः स्त्याचेत्रं प्रम्ययादे । इत्या'र्याचेत्र्यादे अत्रिक्ष्यः स्त्याचेत्रं प्रम्यक्ष्यः है।

नेतिः सं नः भेनः ह्रां 'वेनः सं राष्ट्री' तर्ने नः परायन् तुन्या है। या या यान इस्रान्तः ग्राम्यसारग् ग्राम्याराषु 'लुसायस्। न्न'यदे'व्यावया <u>रात्रान्तुरुषार्वरत्वराञ्चेतायान्त्राप्ठव्यरान्तार्वेरावेवायन्या</u> भरत्र्वेष्व्षप्यायुन्यं प्राप्ता श्चित्य देवेषा यहत्वा व्याकुष्यं स्ट्र त्रवायात्रम् विन्तु जे वायकुष ने ष्वित्रह्य से स्वारे विवासित इस्योग प्रियः विद्रा विद्यस्या गुरा हैरा वृह्य स्यापा ने वृहे संख **शे**रःपःळेवःसं प्रयाग्न् सदारम् लुद्यापत्। क्विं पृर्श्वेद्यारेरःपः र्मेन् सं <u>बाह्य अप्तरापात्रान्त्रान्त्रान् वात्रान् वात्रान् यात्रान्याञ्च</u> *ড়য়৽*য়ৢঢ়৽৾৾৾৾ড়য়৽ঢ়৾য়ৢ৾৽য়ৢঀ৽য়৽ঢ়৽ঢ়৽ঢ়ৼঢ়৾৽ঢ়য়ঢ়৻য়৾৽ৼ৾৽য়য়৽য়ঢ়৽ नते.तुर्श्वेन इववानहुनव। नायपानकृषामळेवार्य रनाग्वेवापव। ॕॗॎॖॕॸॖॱख़ॺॺॖॱक़॓ॺॱॻॕॱॼॕॸॱॿ॓ॸॱ**ऻ**ॗॕॕॕॕॕॕॕॗॸॱॸॸॴॺॻॱढ़ॸऀॱढ़ॺॹख़ॺॿॖ**ॱ** सद्दिः ह ग्रद्धं व व राष्ट्र छव व व र र ते छे महिग् खरा ग्रिया गरिग्। ता **新**下村| बरबाकु:नदे:ब्रन्बबारवा:ब्रन्**ःमबाबेरःबब्धरःव।** नेरःब**ह्यःनहरः** पश्राप्तावाच द्रवाय्य प्रतिहत्य द्वितः। विषयित्वः प्रतिकेषा वर्षः विष् [तर भै'प'न हैन राज्य। वित्'तायमु केदार्थ प्रेन् चेरप' पने द्रापर त्तुग्'ग्रुट्य'द्य'र'याबैर'बहु'केद'रु'चन्ग्य। र'याचाकु'चते' न्नवयारनान्तरान्रत्यात्वाच्या ने ने क्षित्यीयाच्या न

पतिःह्रव्याः स्वाः स्वाः व्याः स्वाः स्वः स्वाः स्वः स्वः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स

प्रस्कृत्ता क्रिंक्रण्य-ए-र-पिक्षक्ष्र्रात्व्यात्व्याः स्वर्याव्याः स्वर्याः स्वर्यः स्व

ने'नर'ल'नन्न'ह्रं यंत्रेन्'ने'ने'ने'हे'कुरानेन्'लन्यं वुर्यया।
ने'नर'ल'के'तके'ने'कुरानेन्द्रें यंत्रें विद्याया।
ने'नर'ल'के'तके'ने ह्रिन्'र्स्ट्रें व्यक्तिं राम्'कें सेन्'प्रकें येन्'प्रकें रामें कें रामें

सदतःत्रञ्जुतःद्रवाधावरःहेन्'वादेन्'रादे'श्रातन्न्'र्यारं'वेन्'र्यन्'रा'नेः" म। बर्ध्यवत्रिंद्रव्यक्षेत्र्यस्त्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन्द्रिन् दर्भूग'रा'र्बुद'नदेखनशात्र। प्र'र्बुग्याकुरेखेलाख स्तर्दिः सुः तुः विवाई वयः विवानहान ह्यार्थः विवानहे वयः प्राया क्केन्द्रस्यायस्य प्रमा अस्त्राह्म व्याप्त्रम्य स्वर्थात्रस्य स्वर्थात्रस्य स्वर्थात्रस्य स्वर्थात्रस्य स्वर्थात्रस्य तत्व व्यापरावरी सपावया विवाया या या या या परावरी हैं स देवा बाबुद्रवा ने : क्ष्र्रा चुराय**ा भद्रा स्**त्रा हुँ वा वा कुरी है : क्षा विवास हा स सुन्कीशनन्या स्यवहन्या न्यात्रात्रिक्षात्रिवा हे परा नेवा न्युत्र। ह्यान्यविनायक्षेन्य। नेप्यप्तिन्रं स्याप्त्यप्त्राप्त्राप् **इ.इ.जपार् अंपार्ट्या ग्रीर्या ने क्षेत्र छयाया सर छर ग्रीर डे.** ৾ঀঀ[৻]৻৻ৼৢ৾*ঀ*৻ৼয়৾৾৾ यातरान्डेग्यांनेराननेगामातरीतरानगाञ्चनाताञ्चनाह्या न्द्रन्याभवाकी न्द्राचय। सुन्याम्यस्यापन्द्रन्याम्द्र पर्न्तु 'लुरुपर्स | ५'सर्व'क्र्र्प्नेर्य्यत्रे 'प्रप्रं बेर् | प्रस्या हैं प्रा यहर्यहर्या भेत्। इन्यायदेश्वायर वेशस्य या मुग्न अया विना न्वं सर्धित प्रसंह व स्वेव (सन् प्रवेव खुन् के न्वं संख्ये स्व खुन्स) शुःगश्च अर्यः विगान हे गया है। यन शुअक देश सम्बाध सम्बाध यहिंद्वत्य। यहाकेद्विंद्वत्यकेष्यप्रेयव्यत्यद्वित्र

बुकानुकानबुद्दराया ज्ञासर्गिकान्यान्यहर्ग्यदेशुकायात्र लगरा सॅन्'लु रापत्र। दरा तर्ने'त्र द्वे'लि'न' दुरा दे द्वा हुन्'कुने' **ॸॸऀज़ॱय़ॱॸॸॱऄढ़ॱढ़ॱॸॱॷॕॱॸढ़ॺॱॸॖढ़ॱय़ॹॺॱॾऀढ़ॱय़ॱढ़ऀज़ॱॸ॒ॱख़ॖज़ॱय़ॱऄढ़ॱॱ** र्देर् गहुरुया रे 'तुषायर्ग'नैबादरे 'दर्' हुर मैकार्रे गहा दबाहु गहा पश्चारे ग्रामर ग्रॅंट पर खु 'बेराक्ष्य' पश्चार खार वा প্রথম मलकानहरानहरानधेत। रास्त्रकेतिनेनाकुराकी र्वे व्यवहार ह्रवाराज्य वारायां प्रतावार त्वाराया देवाने त्या के द्रारा वाराया हुः भेर्। यर वापर शुःग शु व्यक्ति पुरत्य रापति र रेर देर इवका प्रश्नुगः ष्ट्रे'यमु'ग्रेन्'प्रस्याप्येव'द। देन्'ग्रैस'द्वे'क्वं'ग्रेज्वेस्यस्ववस्यप्य बेन्'ल। म'र्नेर'र्वेर्यायान'बेन्'र्ने। ने'ल्लेर्र्वेन्यार्केरादर्नेन्या धैव'द्। ग्रियन्ग्'वे'न्ग्रयम्रह्ग्'यस। तर्देरे'स'इयसस्य <u>५८ हे इयराहे यसर् क्र</u>ेंसर्डन केंग्रन्बेंड हेर्स् । नेप्तिन क्षेत्र'त्र'य्राचा श्रम्या ह्या वा कुत्या निवास त्या स्वाय हुना साम **इन् अन्याविवान्नित्रम्यः अवस्तित्रम्यः अन्यान्यः विवास्य विवास व** गृह्य आने प्यान्य स्वयं प्रमान्य स्वयं प्रमान

न्द्रायात्त्रम् अविक्रियास्यास्यविष्य्यत्र्वात्याः विषयाः विष्याः विषयः विषयः

क्षेत्राचे चार्यात्रीय

यश्चा विश्वापायात्वर्गः श्वेयापायाः स्वाप्त्यः स्वाप्त्यः स्वाप्त्यः स्वाप्त्यः स्वाप्त्यः स्वाप्त्यः स्वाप्तः स्वापतः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वापतः स्

पहलामित्रं स्वारान् स्वार्धन विद्यामा विद्यामा स्वार्धन स्वार्य स्वार्धन स्वार्धन स्वार्धन स्वार्धन स्वार्धन स

क्री इतार्य र र्सेयपाइवयक्ति एकी ने प्रनारित्रों तार्या र र र গ্ৰহ यभेग'रा'वे'वेव। क्षेप्रने'हेंब'त्य'रर'ग्वराह्य'श्रुंत्य'ग्रुर'। うべき क्षंत्रवायविग् वे दें ररः व्ववायश्यान्त्रुयः यय। ५'यर विन'ररः वैद्यार्थर वा N'ज्ञर'₹र'कुग'गहरल। ह्रदश'मलॉदर'गहरुंकोनेर'र'रर'गहेग' र्मे त्यात में ब'न् वे बाबुन प्रवा । अंदार्म प्रमानु सामानि सामानि सामानि सामानि सामानि सामानि सामानि सामानि सा वर्तरेशयरम्ब्युःवितर्वरेग्परत्तुग् **दव**'ग्व'कु'শ্ৰ'ম। परायश्चरतापान्तवाचेरायाया यायावारे वरायान्यान्यां क्रिया हुँ न राक्षे त्र दुन् केन 'में 'के बेना' ततु न' रा' ने। शत खर केन 'न न ने सूर **৸৴**ড়৴৻৸য়৸ৼ৾৾য়ৢ৸ৠ৻৸য়৸ৼৢ৾৾ঀ৾৴৻য়ৢ৶৶৸৾য়৸য়৾৻ **५८। य**र्षितरायभेगाः द्वायस्य स्वरायरायम् । ह्म पर्वम् क्षेप्रविष्प्रदेशेस्य । यप्तिष्यस्य यापर यापर बर्चुरावत् पत्वर्षेग्रहुर्वेरःपर्रर्दिनेत्रांग्रवर्द्वायः ने नुश्राम स्वाह्म स्वर्गमा निष्ठी परिष्य परास्तुष न्राधे यमैग्रायने इवरादिर हेग्यदिर व्यापे जेवपार दर्ग न्रायर स्थानियाचेरान्ययाक्रयाच्या नेतिके न्नाययाच्याच्या न्यग्'ह्रच'रुव्यन्'र्ये बाय विन्द्री ही'व्र-गुव्'र ग्रान्यव। **অ**শ্বার্থ ढ़ॕॖॴॱॖॺॴॱॖॸ॓ॱॳॴज़ॸॱॺॴॕॴय़ॱॺॱॾ॓ॸॱग़ॖॺॱॿॖॴॱऄॗॱढ़ॾऀॸॱॴ*ॶॴ*ज़ॸॱऄॱ रेवराञ्चन तर्वान निवास स्वासन स्वासन । स्वासन स

न्नःत्यन्यःशुःख्याःम्।

ने नुस्र गर्दर में बेस सून केंद्र में पने सकेंग ने न पर सें केंद्र र हुन्परा धराकी वियान सान्यत् हिन्यन यान्य निवाकिया कर **मॅराप**न्नेर्प्यानुरुष। रप्रदानियेर्प्यतस्य विद्यान्य विद्या মইল্ম্ম্মে ই ক্রেম্বিল্ল্মা शहरार्था वर् त्रहेस्रापाष्ट्रेस्य वट्स्क्रेस्य प्रते ज्ञान्य स्थित । प्रत ইবার্ণাইবাবার। मङ्गिराराधिवापरा। ५'लव'न्यन'मञ्जूर'ग्वन'देन'रोसरापानुन'हे। **ब्रिंन्'अन्तर्'र्ध्व'के'ऑन्'न्युर्य। ब्रु'यदिश्र्यय्वार्यक्री'व्ययः हेन्** यञ्चनसम्बद्धाः न्यरः प्रत्यसम्बद्धः प्रतिसम्बद्धः प्रतिसम्बद्धाः प्रतिसम्य नैश्चन्दरः दुः देः तस्द्राया श्वायत् अयया हुन् ग्रैशश्चेतुःसन्। स्याक्षांन्यक्षांन्यक्षांन्यक्षांन्यः षश्च श्रापति प्राप्त प्राप्त विश्व प्राप्त विश्व विश् ङ्ग'नज्ञन। अ'द्रशन्तुन्'वेरनहेंद'न्य। न्'सुरन्'ने'न्'न्न्त्र नातानवायायस्व मृत्राचना सुन्द विनानस्त ने नुत्राध्या हुव वता म्रायं प्रिनः नया मु न न व या मु न या परि कें या र ने इव या ये व या र व "" **ळॅळान**हान-वित्यहन्य स्थानस्थान स्थान स्था स्थान स्था विवायत्यित्र्वेष्यात्री केषीय् के वेषायत्रत्व विवायत्त्रिया विवायत्त्रिया

रीयश्वार्थियहर्। दर्यापर'न्नु'यरर'र्न्नुद श्चेरापानुदान्य। बहुःकेन्द्विन्'रून्'रे'विग्'यार्रे'हैग्'दर्श्वं'विग्'या विताशे इसप्रित्वस्यान्तित्वस्यान्तित्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्तित्तात्तित्तात्तित्तात्तित्तात्तित्तात्तित्तात्तित्तात हिन्य। ने'र्सेन्यप'न्न'न्यन'न्न'न्ययान्य'हेन्याहान्य। नेर ৪মবাক্টীর্যনে বিদ্যাব্রামাই বাবা এমান্টীরান্তর কুর'র'র মানান্তর কর क्रण्याप्ता कराविभेवेरातेराकुत्पु गव्दावस्येयस्य ग्रेंपिहरा **ठ** व्यवस्थान्य व्यवस्थान्य शुक्त प्रति है | द्वारी हुर हुँ वृ **र्मर**े व्यर्त्त्रर्गी र्मर संस्थित राष्ट्ररामय। ध्यामी व्याप्तरान् **८४** प्रस्तिता के संक्षिता स्थान स् इस्रातुःद्यत्रान्वद्रम् स्ट्राक्ट्र्रान्वद्रम् स्रात्नव्रतः द्याः हेन् स्रात्र्याः ब्रान्यन्य्यायायम्न्यय। ज्ञायतीवायवयायमु केन्द्रिन्न्यनः मुत्रात्रार्व्हेन्'यदे'न्यन्'र्वेद्वेद्वेद्वेद्वेद्वातुःन्न मन्त्रान् द्वारायवात्रात्या ने द्वारान्यार्भेन्यन् वास्त्री हें ने संन्त **ध**बंदी देन्। हिन्दराया धन्यहिन में व ने वेबन्दरेन् नन्यायानुः स **ब्रॅ**न्'ग्*शु*न्यायबेन्याययाययायय्यायय्याययः <u> इश्चित्र प्राप्त क्रियाच्या व्यापा व्य</u> म्बाबन्द्राचे प्रत्याची अन्य प्रत्या । प्रत्याचा प्रत्याची अन्य प्रत्याची । री-राजावीं वर् में पर्वे वापति इस्य ह्रेव प्येव व्या क्रिया प्रेस प्र हे'कुर'व्यक्षे'ग्वर'प'भेव'वय। ग्र-'व्रर'केंग्येन्'परे'ये'खेग्'

ব্র্বাণ্ণে নের্বান্ড ট্রের্বা ইবানমাইনানমান্ধ্রমান নিউ। এমান্ত্রীকা ळॅगराञ्चयायदेग्'राञ्चया येवराग्यायरायायस्त्रवर्'त्रयार्यराज्जरा ळॅग्याय:देयानदेय**्रे**वागुर्न्ध्रस्त्वा वळव्यायाद्वःविरःत**ञ्**र पर्या ब्रह्मपर'यन'ङ्ग'अ'र्छे द'व्या न'र्छेन'रन'श्वयस'न्न'श्चेतु**दै** तर्भिः श्चॅन्त्राययम् **श्चेत्रा ने वर्षान्यन् न्नियान्यसम्याद्धेर्यन् श्चेर** न्युत्याव्यायापराययाप्रयाचा विवयायवराष्ट्रेय्प्रया नेतर त्राप्ते क्राप्ताया म्यान्य विष्युप्त है। स्राप्तेष मार्थिय मार्थिय विषय इन्'विन'तर्न्'र'न्र'। ज्ञन'ज्ञ'र्'र्स्रान्यस्रात्नेन्रीन्रस्राते। য়৸ৼয়ৢ৽৸ঀ৾৽৻য়য়৻৻ঀৼঢ়ৢয়ড়ৢ৽ঀয়৸ঀ৾য়ৼয়য়৸য়ৡ৻৸ঀয়য়য়ৢঀ৸ ব্যাস্থ্রব্যল্লে ন্মান্ত্র্যানান্ত্রব্যানার্ভ্রান্ত্রব্যান্ত্রব্যান্ত্রব্যানার্ভ্রান্ত্রব্যানার্ভ্রান্ত্রব্যান্ত্যব্যান্ত্রব্যান্তব্যব্যান্ত্রব্যব্যান্ত্রব্যান্ত্রব্যান্ত্রব্যান্ত্রব্যবিদ্ধন্ত্রব্যান্ত্রব্যান্ত र्चे न'न राज्या | न्न'याने न'र्च' के | वात्र'के न'ग्रीरातने 'र्च साम्री य। यरः सराप्तराप्तरापद्रायप्तराप्तराप्तराप्तर्भः म्हाराष्ट्रः । कृताः स भ्रत्याञ्चन्। न्यु अञ्चन्त्रान्यः स्वाम् न्याः मन्यः अञ्चन्यः मन्यः स्वाम्यः । स्वाम्यः स्वाम्यः । स्वाम्यः स न्त। दरहर्न्तायञ्चलाञ्चर्चराच्या द्वाप्ताच्या गुन्त्वार्वत् है। की'ल'झलाज' चुन् चेर्प र्वेर्यागुन्यार्वेर्यवर्वेन्यन्य सर्वतः। तर्नेत्र्त्रीयव्वरंग्रीयवर्षेत्रप्तितः वर्षान्यस्य ロスタスス यन'रर'ञ्चाबोळेन'र्ये'श्रग्राधानानानागुर'तर्देन'पर न्त्र विश्वरायराहे परान्तरप्या र्त्तुतरे ता है या निवान दर पर्नु। न्दं अपर्येत्राव्याक्षां क्षान्व न्याया स्त्रां सम् व्यापय। श्रुवित्वयाद्यादेगारेद् नेर। यापरापकुर्धेगार्वेदया म्बाह्मराह्मरान्यानुबाराध्येवायानुष्ट्यायान्यानुबार्या पङ्ग्या मसक्षेत्राचित्रे विश्वश्वराद्वेत्र वारायवार्श्वर् । विश्वरायः वारायाः वारायाः म्बेन्। महुर्मेग्वियन्र्स्यहेर्रापेत्। झ्रास्यंत्रन्तुन्त्र्ग् नैश्व'यन'श्व'न्यन'वैश्व'व उँन'यन'वन्त्र्यश শৃত্য শৃত্য হবা হবা ग्राप्ते श्रेर्याया स्रायाः श्रुत्रापा देवातुः व्यायुर्यापारा सुरा स्राया स्राय न्दर्वेशन्त्र्वान्तेपात्र्वाद्वराष्ट्ररातु हेन्यर। देन्यर म्नानेश **ह्रमान्दर्भवावयामुमा** अमु केवान्नयामा **ध्वः ५५: न शुरुरा विशेष अध्यापया मेन या पर्याप के वा या परियम र । इ**ंदिकीयर्दे प्रश्चिषायाद्वीयाद्वीय स्थापन र्गादास्य प्राकृषिके । र्गादाय शेर र्ग केरा प्रिमा ख्रा ररा वी विग्रुश्चर्यापेत्। दर्यग्रराग्रेक्यादेश्चर्यर्यस्य मक्षापर हे में बु रे पामक्षेत्रपाधित। नेति है र केवात में न्वाय वाय केप्रस्वित्रसम्बद्धाः भीकान्युर्प्ताया द्वारा विद्या मञ्जयकं व व्यवस्तान्ते। इंग्रेंन्यायन्यने प्रविवानेन् ग्रीवाय त्वाप्य म्बर्क्ष विश्व विष्य विश्व विष वैश्वरिक्षमन्त्रवाचय। सर्वात्रहरूपामामन्य्यागुरुषा नेराञ्चायतेः **२**ग्रिक्ष्रुव्यवार्ष्ट्रेन्यतुव्यनुष्ठिरव्यायान्युवार्वेन्व्यायानुवारान्तुः" बयाग्रेगराय। इयाक्ष्यात्रम् क्षेत्राप्तिकेत्रात्रा बरपन्त्पार्भ्वार्ध्यन् कपन्तित्व नेरम्रद्वयात्यवयात्य भा चन्नानेश्वः इयान्यन्ति। श्वायः व्याप्ति व्यापत् व्याप्ति व्यापत् व्याप्ति व्यापत् व्यापत्य व्यापत् व्यापत् व्यापत् व्यापत् व्यापत् व्यापत् व्यापत् वयापत्य व्यापत् वयापत्य वयापत्य वयापत्य वयापत्य वयापत्य वयापत्य वयापत्य

मन्त्रास्थवात्व्रापय। वीवाहर्षे राष्ट्रेत्र हुर है। रायात्व्य हिन्द्रास्तित्वराञ्चेत्रवायायायायायाया क्ष्याः अरः <u>प्रांच</u> ज्ञान्य हा धैन् 'गृह्यअन् रन्द्रायुवा चना वार्यात हिन् 'गृन्द्र । वार्या धिन् । वार्यात वार्यात वार्यात वार्यात वार्यात व अर्थेन:व'न:रन'न् नन:नदेखियानगृधिन्'ग्हा अतुअतु'नकुर'ग्हुनश''" गुन्दः रन्द्र चन्छे बँद्। देशगुन् हिंद् हेव त्रोंव। दरेव दव व क्षे हो र न ते कुष्य क्षेत्र मिन प्राप्ता विद्या है । त हे प्राप्ता हे'वर्-रु'नश्चवसर्वर-प-र्रा सेवसम्बन्धरायक्रिन्सर्पित्वर्गित्र **बै**'नवे'अ'क्ष'तु'हुन'उन्। धअ'न्न'ज्ञेंब'ॲन'प'न्न'। मु'य'नेयाके नवा नेता वा नर्ने द्राप्त व दर्द प्रेंग व वा द्वा दे वि द्रा त व्य द्वा व वा व रॅब्ग्युन्द्रव्यविषाप्वद्याविषाउँव्ययुन्द्रम्। नेप्यस्यन्त्र हि न्दिन्'द्यं न्या है'हे'सन्'स्ति क्रिंस्य स्तर् क्रिंस्य स्तर् क्रिंस्य स्तर् क्रिंस्य स्तर् क्रिंस्य स्तर् क्रिंस्य स्तर् ঀয়য়৾য়ৢ৾ৼয়য়ৣয়৻ঽৼয়য়য়য়য়ঀ৾ঀৼঢ়ৢ৸য়ৼ৸৻ঢ়ৼয়ৼঢ়য়ৼঢ়ৼঢ়ৢ ध्याननः ने सु देव प्रयापापान्। स्याप्रियापेव प्रयापेव प्राप्त द्या न्दरक्र-त्वरध्यान्त्रं प्रतेत्रं क्रेन्या न्विर्यं **ॅ्रन्य दे** द्विष्य अस्त्र व स्त्र क्ष्र व स्त्र क्ष्र व स्तर क्ष्र व स्त्र क्ष्र व स्त्र क्ष्र व स्त्र क्ष्र व स

न्देश्के देशपर श्वः याव विवः तस्य प्रत्ते प्रत्यं प्रवेश श्वः याव विवः तस्य प्रत्यं प्रत्यं प्रत्यं प्रत्यं प्रवेश विवाय प्रत्यं श्वः याव विवः तस्य प्रत्यं प्रत्यं प्रत्यं विवः याव विवः तस्य प्रत्यं प्रत्यं प्रत्यं विवः याव विवः तस्य प्रत्यं प्रत्यं विवः याव विवः तस्य प्रत्यं विवः याव विवः तस्य प्रत्यं विवः याव विवः तस्य वि

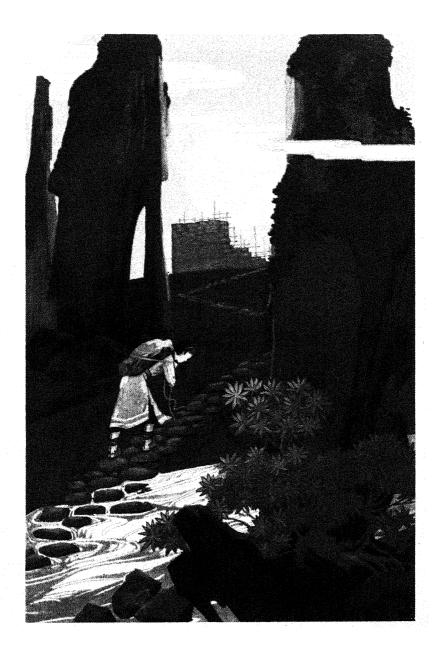
मन। इंसाड्डिर दूर्रापरी प्राप्ता संसाहुर वन। स्राया दिया है स **इ**राधितारा विगानेत् प्रांत्राञ्च अवस्य। यत्राह्म सम्बद्ध सम्प्रा मर्डन्।वर ने व्यापित व्यं होत् किर वित्यत् प्रते हो। गृतुर ने हेन हिन र्यर सें छे लु र सुर यहा | धुराकी लागवा | यापाया पर ताराकी लगवा **हॅ**न्न'सर्ने'र्चं अंग्रीशकी'र्रून्।'ध्यत्रं र'र्र्स्प्य'त्ग्रीश्वत्। ५'यव'स्युत्याचा सुलाने। न्नन्विनान्निनानेन्यम् विनानेन्यम् वर्षास्य मग्दॅरक्रिंग्सुर्नुग्न्सरक्रेयित्ववारावेष्ण्वत्राम्दे ५'८व'भ्रीन्यन्तर्भे यन्यायतन्देश'ग्रन्यवन्यर् वु साहे। ८२ै ग्र-व्राप्तुत्। पर्ग्यास्याग्रीयान्वराप्तासन्यान्ताः मबा मन्ग्वेन्'कार्रे'क्रॅक्षांक्षांक्ष्मेंक्ष्में क्राह्म क्ष्य हिन्द्रा हिन्द्र **. सम्मिन्ने अन्य स्थानि सम्मिन्ने सम्मिन्ने सम्मिन्ने सम्मिन्ने समिन्ने समिनिन्ने सम** मन्या सरीन्त्रसंत्रम्यव्यव्याक्षेत्रत्तुः हर्न्त्रस्त्रम् रन्षे स्वा वॅर्न्, ववन्त्रा स्व द्रा न्त्र वि द्रि वि वे त्र व चर्चन्यराष्ट्रीव्यायायावाया न्याप्ति अयाप्ति व्याप्य स्वाक्रेव्या **र्**यर प्रमुर स्वाब हेरात हैव प्रत् । स्र र्यर प्राय व वा यहें द पदेखेळ**्य**रचॅर्न्स्य क्षें रापसन् । यत्राञ्च या हेवाया द्विराय करा क्षेत्राय र **८८.७.५५७५ व्याया १८.१.५५५ व्याया १८५१ १५५५५** ষ্ল'অ'র্বারাবার্রানের'য়ৢবরাগ্রীরাইবানেরিনিনেতরাগ্রীরাগ্রন প্র'বা''''' न्वत्त्रत्त्रास्यत्वापराने क्षरात्नवार्या वेदाध्यान्तः यव्यापरानुन्।"" ह्मायदि वितायया यन्ग्येन् यदि होन् सुन्या ही यान्यः প্রথাবন। मन्द्रमंत्रीत्म मृत्र केत् क्षत् साञ्च त्राप्त न्या न्या व्यापातुः मलेबान्यान्याकेन्साहिन्यवययर् यहना हिन्यम्भेतास न्यन्त्व। गुस्रान्यन्यन्धेत्र्वन्। बहुःकेन्द्विन्यन्यार्वे रार्थन् ब्राह्वेर:वृष्-प्रनःपश्चरःश्चेष। **गधःनःरनःगिधेव**ःपरःतन्गःगसुनः दुन्। सुअग्रीकान्यायुग्यतायदेशसकारीकान्।तृन्तु।यादेनःनअङ्गयायञ्ज् श्च अधुनायाञ्च सन्दर्भी सामने द्वा है। विन्य सन्दर्भ त्र्वे नर्रः हुन् कुंध्यक्षे क्यन्या बाह्य । विद्यन्ति क्यां वर्षा पर्पथा विश्वित्रित्रश्रायत्यत्त्रात्र्रात्रेवीत्तर्पश्चात्रा <u> नृत्वम् प्रवेशस्त्रम् । स्मिन्यम् स्मिन्यम् स्मिन्यम् स्मिन्यम् स्मिन्यम् स्मिन्यम् स्मिन्यम् स्मिन्यम् स्मिन्यम् स</u> बर्चरकानेगायन्यानेताबर्धरवाडीकाचवा श्रायानम्पराष्ट्रगावायव इत्रात्त्ववारक्षायवेद्यपाक्ष्रवर्त्त्रत्वारायकेष्यायाव्या ह्रण्: प्रवास केया न्या व्यव्या न्या व्यव्या ह्या व्यव्या ह्या व्यव्या ह्या विद्या हुत्व्या महाकेव्येयवाह्यायं महोत् क्या हित्रम्यान् कंपात्र श्चिम् ते प्रति श्चिम प्रति दिन्दा । श्वास्त्र वित्र स्वात स नितः यस्त्राक्तेत्र प्रस्ता स्वाक्ष्य वाद्य द्रात्त त्रात्य प्यतः क्षेत्र क्षेत्र विद्यात्य प्रदर्भागः रीयशम्र्रीयहर्। *য়ৼ*৸৾৾৾৾৾৾য়৺য়৾য়৾য়৾৸ৼঢ়ৣ৾ঢ়৾৾৴৾য়ৣ৽য়৾ড়৻য়৻য়য় ন্তু ব্যাহা দুর্বাহা থ। नेते नुपा कें माय कवा भाषा हु प्राते हु। ता प्रमुवका वैनः पत्र गया वर सप्तरम् त्याञ्च सते हुम् नुः मृष्ण ग्रुम्या इत्या वर्ष पःभेव'व्यक्त्र्य:हेव्पण। यन्न-रक्ष्ट्विन्यन्ननःयःवक्तुरन्यःयःयः लवा र है। यन्या नन्या केया क्रिया के तका लवा क्रिया हैया में रना हिन मन्त्रानु सन् काह्याम्यः। प्राप्तानु सम्बन्धः होन् पर्देश्यस् र पर्देश्यस् **डैर**ॱर्सरश्यागुरुरा। हैर्स्टव्हिव्हे। क्रेन्ट्वन्यन्ताः क्षेत्रहित्ह्याः <u>रहराक्रेप्टर्वयाययञ्चल। रहेग्वेर्प्तुर्वज्ञग्यर्भेर्य्येर्</u> नैनै'क्केन्'चंब्र विग्ऑन्'ब्रस्न्न्र्रन्न्'ग्नब्र्श्रन्ग्'व्यस्यस्त्र्ग्''''' 18 न्'ब्रु'खरन् वादे'त्र्वर्भात्वेन्'प्रम्प्नित्वर्भन्यां के'ग्वन्पर तत्व व्यवन्तुः होन् उत्तरहायः होः न्व्याः देशे वितः। द्रारे वेतः यक र्षत्। र्'रेज्याव रेज्याव क्रयाता यर हुव में केव में लेवा वी न्या प्रताप्ति श्वाप्तर्वा व्यवस्यात प्रते क्षा व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य **अ'अपर'इन्'मजन्ग्र'र्रः।** र्नेरह्नग्यतर श्रेन्। 지도랑지 इतराक्ष्यातस्रियाचत्यार्द्रस्तस्रियाचान्तर्तिः विषायात्रे प्रम् त्रम ब्रायदे हे हिर्दर ह्म वाह्मिय स्वर्ध दिर क्ष्य दिर निर्मे क्षंत्रवाष्ट्रिरहे। ध्रायायम्यानुवाधराम्ब्रीन्धिन्धया। सयागरास स्राक्कीयग्रारहेन्द्रन्त्राप्तेन्द्र्र्त्रित्र्वेत्राप्तेन्त्र्व् Nअ कुराय विवाधी अर श्रेवयाप प्राप्त हैं प्रवाही। प्रार्थ र छे पश्चर या ने'वरार्श्वेन'श्वन'ग्यन। सुक्षेभीन'इयरामर्रग्रावरार्श्वे'ग्रेंभारेराहे वरा चवा वैवा क्षेत्र प्रेंता र्वेत्। देरा प्रवास मा विवास विवास देवा **ॻॖऀॱॾॖ॓ॸॱख़॔ॺॱॿॖॱॺढ़ऀॱढ़ॸॺॱढ़ॕॱॻॱढ़ॱऄ॔ॸॱड़ॸॱ।** ॾॖ॓ॸॱख़॔ॺॱॸॱॸॸॱॻऀॱॾॖॕॱॸऀॿॸ तुः तत्व न प्रत्याश्चिष्ट्रं वाया विवादी तिनेती न वादाय वादनी या ध्रय ग्रैसर्द्वे न्यायस्य न्यायस्य प्राप्तः वर्षायः विक्रिस्ते स्टिप्तः स्वार्तः न्यायः वर्षायः विक्रिस्ते वर्षायः व धेन'पाय। न'दर बारवाध्यायाम्बब्धायने विषानु बांक्षेपें राचाने राक्षेप्र दा पर'त्रुष ५'रुप'येष्'ग्राञ्च अवत्रा येष्'त्रे रूप्य र्घेपय। वेंद'हुद'द्रवर'हुँद'र्द'धेव'पव। बेन्द'वेव'व'दे। बेन्वेंद'यव ऍ८ॱऍ८८५ इं.५५ व.५१५। ब्रॅट्स्प्राया न्यां व. वेशद्र इंस्प्राच्या 8भिवाद'न्यंन्'च्चव'द्यतम्'ङ्गंनंबान्नेवान्द्रम्'द्रम्'। हिन्'ग्रेबार्ग्नन्देव राम नेराना र हुन्दु क्वर ने विवाधना में वा ने यह या राम दे गार्च्यागाग्नित। देंचाव्यात्वादान्दिः व्याप्त्राच्याः हेराचेर स्दिते इसमार वर्षे रहे। व रावे र व द स्वार व द खसर्येग् इंग्निं निर्मात्यात्रेग् की किन्ति क्रिन्ति केन्ति कार्यात्यात्रेन्।

श्चित्तां प्रत्यां प

प्रिन् म्व्रं क्ष्यं न्या व्याप्त स्वर् क्ष्यं क्ष्यं स्वर् स्वर् क्ष्यं क्ष्यं स्वरं स्वरं क्ष्यं क्ष्यं स्वरं स

प्राण्डेश'यहां के व्राण्डे स्वाण्डे स्वाणे स्वाण्डे स्वाणे स्वाण्डे स्वाण्डे स्वाण्डे स्वाण्डे स्वाण्डे स्वाण्डे स्वाण्

परीपारी प्रयासक क्ष्ये जय वाया विदानवा प्रत्या भूषाया मृत्या प्र बैव। विन्तर्भे बाद्या मृत्यारा भिव। ध्रमा तक्षा नुः मृत्या द्वतरः मृत्या ग्रुत्य। द्याप्त्रियायहिष्प्या ज्ञावतीव्यव्य। बहुकेव ওঁন'র্ডন'ন্ন'র্ম্ম'অন'ন্ম'য়্বীন'ব্মার্ট্র্ম'নের্ন্ন'ন্'ঐব্'ব্। £449× ब्रॅग्'गुर्-'गर्हेर-'र्बेब'यव। बावर-स'र्-'हॅग्'ग्रुअ'विस। ग्नबर्गन्याक्षेत्र। देविद्रप्तते हें ज्विप्यं वेद्रप्यं वेद्रप्ते द्र्यं द्र्यं **ष्रद्रान्यत्र्वाच्यार्वेरयान्युरयायय। यदानुःयनुवान्यः धैरवेदा** र्दरका है। शुक्रातान्यायान्य प्रमान्य प्रमान्य । ज्ञायका क्रया गुन् की २व'क्र्यांनाचित्रहे। विषयात्रवाहरहेटायटाक्र्यक्रेयव्यटान्ने **अट्र** केंबर्द्राष्ट्रदश्चित्राची पर्वाधान्द्रतभ्रेपरानु। यपास्य भुग्वयाननःनरः भ्रवाययत्रेनवानुवा न्यायुवाने निक्षे वसर्दरः ग्रामसञ्ज्ञासम् । ध्रसञ्चे । वस्य सम्बन्धः । प्रमानिकः <u> वेत्'रा'क्ष्रचीय'मेव्'ग्रास्य। नेरः</u>न्ग्रः<u>न्</u>ग्रायस्यवेन्'क्नः'यक्न्।



द्वारा हो स्वारा ह्वारा ह्वार

न्यव्यात्वा स्वयंत्वा क्षेत्र हे. प्रायवा हे.

मह्मानुस्य मेमकाम्यः र्वास्त्राच्याः विष्यः स्वर्यः मेम्यः स्वर्यः स्

बर्द्यातायहर्गामविद्यातकन्दिरत्तुग्रायात। क्रेश्यक्यया तकन्या इन्दर्भ श्री स्त्र में स्त चञ्चच'द्य'म् तहेग'हेर्र'तहेग'हेर्र'त्र्रा'म्'। क्षेत्र'हेग'क्रेरा' न्यतिः तत्त्विव्यत्। विश्वास्य याष्ट्राच्यतिः स्वयासः । न्यास्य न्यासः য়ৢঢ়য়য়য়ৢঀৢঢ়ঢ়ড়য়ঢ়য়৸ श्रुवायरप्रतिश्चित्कुत्कुत्कुत्रवातक्रायव्यव्यक्षात्रव्य बर्चबर्या ग्रीहे बाद हो त्यापार मेव पुराने प्रवाही विरास राष्ट्र व्यागुव ग्री नन्ग्रंस्ट्रिन्त्रत्त्र्यायय। शुभिक्द्रिश्रम्ग्रम्शुन्। स्रुप्तःविग् रतिःचरानुरामचार्रानेचाने। होन्'तरीराम्राम्'वानेचराम। स्चा *ञ्चाया यर पा श्वत्र या* देश देश देश देश देश प्राप्त के ता प्राप्त के या प्राप्त के या ता या प्राप्त के या या प्राप्त मय। तर्ने र के या लु ग्रु दिन या पा भिन्। ने दे शिवा ह व या खु नु र दे हैं हु। बति हुन्तु। अर्धेव हु केव भेव प्रार ततु म नेव हु में व इसका स्ता मय। हारानेन्द्रविकाने। रतेन्त्रव्यारहे में दूर्रायते सुनुन् *न्*न्तुग्यान्यार्न्न्न्थात्यासान्त्रीको हेंग् कुन्न्न्त्रीक्विन्न्याव्यक्तरके "

नसानसुन्देन्द्र्या नेस्यन्त्यवाक्रीक्रियावस्यस्य वर्षस्य Bेन्'ब्र्'प'क्व**र्यार्ग्न्य'ग्नृत'कुल**' अर्द्धव'न्न्रेस'क'क्कवाह्येरत्य'हुरू नु मृष क्षः चें समुद्धे द्राया भ्री राष्ट्रोत् पा विषा ग्री का गर्भा । पा स्वापाय दे ता राने'नरवर्न्प्रन्'यम् मूप्निन्तुन्द्रावयन्यन् वर्ष्ट्र (८४। स्वा । प्रस्ता वा ने । त्रा स्वा । प्रस्ता स्वा । ৡ৴৻৴ঢ়ৢ৴৻৴ঝ| ৴৻য়৻য়ঀ৾৻ঀ৾৾৻ঀ৾য়ঀ৻য়ড়৻৻য়ড়ঽ৻৴ৼ৻ৼ৻৸ড়৻য়য়য়ঢ়ৢ**য়** শ্রীঅমাদ্র ত্র श्चेनलप्प'न्न्। नलसुन्। पर्यासन्। हन्न्। हन्न्। न्न्। *ষ্ট্রব'*হন'নমীন'বিন'ন্নু'র্মণ্-রূ'নন্গ'ব্রান্ত্রীব'রুনমান্ত্রান্ট্র इसरायकॅन्'रा'नवरः'रां नम्सरावहा हे दाक्की गर्डें'ने र'न तु ग राहा न हु ग छन्। हन् न राने। प्राचन सन् क्रिं क्रिं क्रिं न क्रिं बर्धवराप्याप्तरम्बन्दिन्।याञ्चन्द्रवासमुक्तिन्द्रम्यस्तिन्।या विष्ट्रित्'ताक्रेश्वुर'नहर'न्येव्'यश् न्नर'नमुर'ग्नवश्रम् व्'क्रेक् উল ন্'ৼৢয়ৢয়ৢয়য়য়৾ৼঢ়ৢ৾৸৸য়৸ৼয়ঢ়ৢ৾৽য়য়৾৻য়ৣ৾৾৽য়ৢয়ৢয়ৢয়ৢয়ৢয়য়য়য়য়য়য়য়য়য় द्वरग्रह्मकाराम्भुरापाधिकाद्वापादत्व नेराञ्चयदिवायव्या ञ्च तर्नि प्रत्यान्ति । क्षेत्रा क्षेत्र प्रत्या क्षेत्र प्रत्या क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र क्षेत् ं धेव। ८.५१ववरान्८.नेवायाम्८.तर्भेट.तर्भेट्यं श्रह्मका वर्षाम् तर्भार्यः स्ट्र **बिट्र प्रद्राया र्म्या चैत्राची प्रदार्थ प्रदार्थ प्रदार्थ । प्रदार प्रदार्थ प्रदार्थ प्रदार प्रदेश प्रदार प्र प्रदार प्रदार प्रदार प्रदार प्रदार प्रदार प्रदार प्रदार प्रदार** कुण्यायम् म्यान्यायस्य द्र्यायस्य न्रेस्येरायन्यम् म्यान्यम्

स्वायान्। सेनायान्न्वायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान्यायान् द्रत्याया द्रत्यक्षिणपदिभयक्षिण्दर्गत्रत्य यानहरः व **रेश्चायते'नगत्मरुग्धर्मरायर्गत्में**विराह्याग्रराक्षेत्रंन्यर्गत्न्वा''''''' म्रम्यापतिः सुन् द्वे त्रन्यास्य । ने त्र द्वे न् ने । यहा या सुन् न हर ये त्रा तमम तुः क्ष म न्मा अवार्षे स त्व व वें विषा वी व म पु व व वा पाय है। कर विवाधकाराया भूगापष्टिंग पर्धिगार्चरा हित्र वर्गापर्धिरा है स् नित्यम् देत्रेष् के स्व के स हैर'रब'गर'च'चेर'६'वेर'५६ग्।धव। रब'वेग'केग'रर'परागा শ্বথা ग्वरावें विर्चे तर्विष्पेर्प्या हुर र्'रे'वें र देशर्र र तुर मय। व्यन्त्वायन्ति । शुष्तश्च अस्तु नेना विवा विवा मक्रम्धेन्यय। धारानानेनाकुःकृत्वानान्ययाक्रम्भूतानान्ययाक्रम् बिरागवन'समयाक्र के भ्रम् ये ५ (५) र्यार त्रम् प्राया मन स्थिति विराय हुँ व पा हु या दु वा वो त दु वा वा वह से राय साम हा राय है पा कु र्योग वी साय व वा हे ५५ ज विर्ने भाष्ठे सणुर से राच के श्वर दुर श्वर यय प्रसास संभागित <u> विस्तरी न में सामा</u> कुर्तेम् मैसासन् व्यादी सकुरा से र विस्तर में सारी व W7'371

मैंश ब्रिन्स दे से मंत्र के स्वाप के सार्त्य स्वाप दे स्वाप के सार्व स्वाप स्य न्नु'अ'हेंग्'पत्रे'ज्रु'प'द्रवरायायर्डेंथ'वेग पर्डेंथ'द्र'रेर'पत्रे'त्र्र'ह्रग्' महुन्'ने'ॲव'मन्ग्'रु'गुर'मक्'हेक्'त्र्वत्वेत्वं क्रेंग्'रु'रू'रात्त्व नैरामलाक्षेरासुम विवायमानीर्वे वास्त्रामुमानीतुरि रंगामानी ययनरः गुन्या सुन्दः है 'नदे रें 'सुन् स्नि 'दह 'दे र दें र वा प्रवा कर विवसक्षे हेराव्यवादिवादिराष्ट्र वात्र विवस्ति हार्य विवस्ति हार् ने। ब्रुअभिवासिकेप्पन्यप्याचित्रस्थाप्पन्यपिकेर्रायस्म **ब्रिट.प.र्च्या.तपु.पथापथायाचिट.पथा** र्च्या.स्.ष्ठ.प.र्चयश.ह्यायाच्याया तळतावेशव्यावयाद्यापय। मुखतीवत्यावया अर्घेयमुळेवादी र्दम्भुग् बे न् में या राज्ये के राज्य के प्राप्त के प् मनवाशुक्षम्बाकु'न। मुनमु'दुराह्मं गहिग्'वैद्याद नेन्'पदे'ग्नव्यद्य <u> দ্যাস্ম্বান্দ্রী ব্রের্থী স্থার ব্রের্থী রাজ্য করা হর বর্ণ করা হর ব</u> अदिन्य प्रतिके। हिन्दर्भ अस्य प्रस् व्यापर स्वायप्र या स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्वाय स्व नेरात्रिराक्की मेंगायराक्षेपपाधीय। नेपरायप्तियमुग्राप्त वार्श्वर पुरा <u>ब्र</u>ेप्तराप्तवार्यस्य केषा विष्या क्षेत्रको केस्य व्यवस्य विष्या स्थान रंष्ट्रवर्शकन्र्संस्वराज्ययम् स्वत्रात्रे स्व A स्र र गु' न र शक्षा A हं त्र' न गु' इ वश्य र र ' र र ' शें शॅ ते' गृ द श शु' र र र र ""

<u> ५८। श्रुः अप्यान् स्थानुः अर्धाः स्थ</u>ा तेः सम्पान् स्थानुः स्थान न्भव रोबरा ठव यन में न्म तिष् भिष्य तहेन हे कुराय हुत्। ने'वबान्ग्रेबान्ने'हेते'न्ग्रीयात्रिंग्नु'न्यनायभुत। ग्नबबा रग्गव्राव्या स्वायिग्न्य्यायर्मात्रेग्व्याय्या ब्द्वाःरब्विषात्तुषारानेष्वर्षश्चित्राः श्वर्षाः स्वार्धित्वाः स्वर्षाः ञ्चायराक्ष्यान्त्रः विद्यायेदरायेद्रः पुराय्येयराज्यः । यद्यादेशयान्ययः র্মানবারবমার্ট্রনেউলেন্সাঞ্জীকারান। মব্দ্রীবাস্ত্রাবারিকার্থী षद्या भुद्रात्म वात्र वाद्या के ने राद्र ते कुद्र दा तदी ताद्य है वा की रीत्राबेर् व व्वका हॅ न वाक्षेप्रं व हवा हुन्द रु हो हु प्रति सह वेर्पा वेना '''' भैवाने। हिन्यम्बेम्यम्न्यस्य स्वाप्ति। स्वायिः मान्यस्य ब्रॅायान् ने स्वापा ह पारा पार पार प्रेन् पार स्वीपार स्वीपार स्वापार **ब्रैट:र्अक्रेट्'यां ब्रॅंबब्य मैन्'न्श्रट्यप्य । दहेन्य छ्यप बैन्'**ग्रुट हे। न्द्रश्चर्वित्याञ्ज्यापाय। वि'न्द्राञ्चन्यापन। व्रायायरापति

इसरानुसायन्यन्तेन्दार्भेन्दारा नेताहिन्दर्भाष्ट्रम्य नेव् देन'क्कीक्षेप्रक'ने'ॲन'यहुन'या ने'अर'ने'तुक'विन'मेन'नहरूप वि**न** त्तुन'राम। न्नामार्टन'राप्ति'तुन'र्मून'र्द्धेन'न्ना'नशुन्धेन'राष्ट्रन'हे। देन'अ'द्युग्'ह्नक्ष'त्रने'चे देव'त्रुम् विद्र'त्'व्युन्'स्'न्युन्' खुन्यः ग्रैसः त्रुः सदैः चन्नः स्टारः मुँद्यः तः दर् न्युद्यः पर्या विद्याः सद् अ'रर'ने'रान्त्रिस्'र्रेस्ने'बेर्'यन्त्रिने धुन्हन्त्रहेर्'र्र यक्षापास्त्राष्ट्रीक्षाम्बर्गः वद्षाति रायह्रम्बर्गः यम् व्यापाय । अप्रेष <u>देशवास्त्रम् वेशियौर्यादेवायेन ग्रीयश्चित्रम् अस्तिम् अस्ति। साम्राह्म</u> यः ज्ञाँयान् प्यन् प्रन् ने श्रेश्चे प्राथमार्थस्य ये ने प्राधन प्रमाय ये ने प्राधन प्रमाय विकास ^{क्}र्व'न्युन्'न'तर्तुन्'नस्दर्वेतस्त्रेंत्रस्त्रें'न्युन्यप्य। ५'यद'नन्न गुराधुगाधुग्रातस्यारस्य विश्वस्या ব্না দুঝন্বাধাতব্স্পুণ্দুর্শ্বন্ধ্বা দ্বন্মাথারপ্রথায়ীকা শৃত্ত্যুদ্র

ने त्यानुषाञ्चित्। प्रेशिने वित्य वाद ति त्या भी वाद ति त्यान्य वाद ति त्या भी वाद ति ति त्या भी वाद ति त्या भ

चन्द्रम् व्याद्यास्य स्वाद्यास्य स्वाद्यास्य स्वाद्य स्वाद स्वा

वित्रकृत्यवेना नव्नः।

वित्रकृत्यवेना नव्नः

वित्यवेना नव्नः

वित्रकृत्यवेना नव्नः

वित्रकृत्यवेना नव्नः

वित्रकृत्यवेना नव्नः

वित्रकृत्यवेना नवित्रवेना नवि

न्त्राञ्चाक्षर्यम्पापपास्यात्रिरान्तान्वस्यात्रात्रान्तान्य भैवन्राञ्चेनसपान्तः। ज्ञासदीलयान्य। धार्मसमुळेन्र्वेनपार्सन्य मध्यक्षेत्रुं हु द्रुंदेन् इवराहेद्वि द्यं प्रवास कद विगाने गवद हूँ रात्र मृग् गुरुप्याच्या पर्स्वाय हिन्यया स्नायरास्य प्राप्त स्वा ष्ठ्या-त्र-सुत्-सुत्र-स्त्राच्या स्राध्याह्या-प्राप्तिस्त्र-स्त्र-प्राप्तिस्य æरःविषा ग्रद्राचरा नुस्याया ध्यामेव 'तृ' र् ग्रेसंद्रशञ्च या मेहेयहा मिन्द्र'त्वव्यव्यव्यद्र'स्र्न्'व्यक्ष्य'क्व'व्यक्ष्य'व्यक्ष्य'व्यक्ष्य द्या ग्री स्वराप्त में प्राप्त विवाय प्राया ग्री ग्राय व्याप्त ग्री प्राया ।।।।।। मल्यकार मुन्याया । अन्पर्रः प्रमास्या स्थाप्तकालया सुना सुन्यका इट्। वियत्रसंदियायसंह्रेरावृत्तेवसंद्ररायाय। ट्याञ्चायायाया चन्नाध्याचनातः चर्चेत्राचन स्थित्य विष्युत्। अध्याहेना स्व भुःगगुनःहन्याकीहेव'न्ना न्येर्न्याध'न्न्यहें हार्यन्यहें रूपेन् र्शः इयायविषाचयाष्ट्रियवश्यव्यविष्येदः सर्वश्याः नेयाच्यः कर्विना रेपार र्राय नामाना नामाना निम्या कुना राज्य स महित्य हे खुन्य ये मृत्य नहें न्य नित्य नुत्र न्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप ब्राचग्रान्थ्रेर्द्र्रप्तव्यक्षेत्रव्यक्षेत्रव्यक्षेत्रव्यक्षेत्रव्यक्षेत्रव्यक्षेत्र हिर्मित्रे, व्यव्याम् विद्रान्य क्ष्यं द्वा व्यव्या हिर्म् द्वा विदेशे व्यक्षः विद्रान्य वितः वित्रा वित् हर्त्याय। रखेर् चक्रेन्चिवानीयानशुप्त नेवाय अहर्षात्वा

न्द्रशङ्ग्रियाभ्यत्यत्रिक्षेत्रयत्य्यत्यत्यक्षेत्रः म्बिस्याप्तर्भात्रयाम्बद्धः स्वाप्त्रयाम्बद्धः स्वाप्त्रयाम्यः स्वाप्त्रयाम्बद्धः स्वाप्त्रयाम्बद्धः स्वाप्त्रयाम्बद्धः स्वाप्त्रयाम्बद्धः स्वाप्त्रयाम्बद्धः स्वाप्त्रयाम्बद्धः स्वाप्त्रयामः स्वाप्त्रयाम्वद्यः स्वाप्त्रयाम्यः स्वाप्त्रयाम्बद्धः स्वाप्त्रयाम्बद्धः स्वाप्त्रयाम्बद्धः स्वाप्त्रयाम्बद्धः स्वाप्त्रयाम्यः स्वाप्त्रयामः स्वाप्त्रयामः स्वाप्त्रयामः स्वाप्त्रयामः स्वाप्यः स्वाप्त्रयामः स्वाप्यः स्वाप्यः स्वाप्त्रयामः स्वाप्त्रयामः स्वाप्त्रयामः स्वाप्त्रयामः स्वाप्त्रयामः स्वाप्

न्या भैकानेकाग्रनः न्या भैकानेका । इस्त निस् श्रीनः प्रति । । न्या भैकानेकाग्रनः न्या भैका भैका । न्या भैकानेकाग्रनः न्या भैका भेका । न्या भैकानेकाग्रनः न्या भैकानेकाग्रनः न्या भैकानेका ।

देवानाश्चरवारात्रे हेवाश्च। झः अर्ह्र गः यदा तत्वारात्र इववास्ताद्वा ञ्च'यान्द्र'र्याके। श्वेरामुक्ष'यान् ग्रा'न्रा'न् क्षे'ग्राह्य अरान् याना व्या वतर। ५'यव'ष्ठ्र'परर्'्ध्याव 'र'अवितावें मर कवां वाविवा वें र'प ने हुँ र गुँ अपर इयल गुँ है। वें प्येय प्राम्य म्याप प्राप्त । विष्य प्राम्य प्राप्त मा वदायरी र दिन्याचे र परायुष्य। ने वैद व दें र पेंन् 'न् गु' गुद 'ञ्च' याया त्त्रतातालम्बान्या न्यनः मन्यवान माञ्चन १३५ भवे व प्रामुद प्रमा व्या ध्रमास्त्रापया ज्ञायायाप्याप्येयापविवादेर्ने सूरायायाया रते'=प'छ्र'उव'श्रे'न्यर'न्र'ग्नवर्गरग'इवर्गशुर'। श्रेर'ग्रेक **१ हे हे ग प ते हे अया प्रमाय प्रमाय कर के ए के पर है पर है जा कर है जो का** परळे दिन रायद्या कुपिते ग्राया वा भीता पाप्ता । विनापार मृत्रा रिला क्रिया च्या प्राप्त व्याप्त विश्व म्यारान्नाम्याकवात्र तन्कवान्ययायायायायायायायाया ने बेद की मन्बरात्मा वदा द्वाराष्ट्रित रता राष्ट्री व कर रे म् श्रात्या ""

त्रात्त्रव्या वित्तर्भी वित्राप्त्रव्या नित्त्रव्या नित्त्रव्या व्याप्ति व्यापति व्यापत

ने वरावण देन गेवा पाइसमान्ता वन वे लुन पहुसारणत पर्यम्बद्धा स्ट्रिन्विस्स्मित्रं सर्हित् देवा 'द्वर्यापदे मुल'तु । स्रायायर पत्रेंभु'त्विश्रुंशेन्थेन्येन्तेन्त्विष्यंदेन्द्रं विष्यंद्रं दिव्यंद्रं न्न यहिंग रात्रा बुद्द त् नु रहे वहा हा वहिंग हो वहा है वहा है वहा है वहा है वहा है वहा है व्या स्वाक्ष्यं क्ष्यं स्वास्या हिन्द्रां वारान्वरान् वेरान्दे केर्त्यं रात्रे मान्यन्त्रभुराव्यापन्ययान्यान्यपन्यपन्यतिःकुष्यव्यादेष्येवःपशुन्या 월조'도号미'다'자'호미'호미'자등미'다'도다 등'라'본미'다'당미자'청미'형 व्याप्तन्त्राचित्रः त्रवा न्नायाद्वः स्त्रवाद्वः स्त्रवाद्वः स्त्रवाद्वः बर्खःकेन्'ल'न्यन्'प्रमुर'वान्यवार वाहेंन्'वागुर्-पतिखवाह वावा इंस्ते भुंजुर। हुन्य द्यापङ्ग द्रंग हेर्न् प्र प्र प्र मान् प्र प्र नेबाव पार्या राग्ये रात्ये राज्ये र यश्चर्यायः यञ्चित्रयः यः यज्ञा मदानग्रात्म्युव्यन्तः ह्वायाव्रायायेन्यावेषायवेषायवेषायुव्यव्यस्युव भेराः देवाल विवासमा हवस्य विवास विवा

गुन्न मान्य वा मुन्न मानुन्न प्राया न के क्षेत्र में न त्यां पा क्षा मुन्न मान्य पर प्रतार अञ्चली कापन प्रताय प्रताय । ज्यो कापने प्रताय । ज्यो कापने प्रताय । ज्यो कापने प्रताय । ज्यो कापने प्रताय रीत हेत ने त् नुन्या स्वर्वा । स्थाया स्वर्ग तरे वर्षा स्वराया स्वर्ग स्याभी सम्भामा व्याप्ति प्राप्ति । प्राप्ति व्याप्ति प्राप्ति प्रा ततुगाय। बर्ह्नप्तर्जन्तुः र्वेक्षहे र्ञ्च प्तवन्यवा हारा झें पाखुगा इन्'इन्'रा'तगत्यहन्'रादे'यहन्। मत्गर्यं गन्दं क्षेप्रसर्धेदंवर्षा हेन् हृंद केंबहर नेरावित्या वर्षेया वा केन्या वा केन्या वा केन्या के केंबहर के क २४५१:अ.३७४.५८:६०४:८४:३४:४१८:७४:४८४:५५४ व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त न्त्रराद्यापट्नराप्य। नेयाचनाञ्चायादेन पराद्यनास्ताद्यानु क्षुव प्रमास्त्र प्रवासेव प्राप्त कराव हा ही रार्ति व गुमान। मा प्राप्त स्थापना तुसासनुसान् हिर्म् वेंदाने प्रसासका निर्दा वेंपा निषा सुरा दहारा प्राप्त हुए <u>बिन:पर्य, प्रथायहर है। स्वा, मुन्तप्रीन, त्रन्त, या, श्रेय, या, श्रेयप्र, या, श्रेयप्र, या, श्रेयप्र, या, श्र</u> मग्राक्षाम् त्राम्य स्वाहित् वित्र दुन्त्र त्राक्षेत्र दुन्त त्र है। रन्दे मृत्रेक्षणात्मकीन् मृत्याचन्यान् । अवानिकान्य स्वराह्य । अवानिकान्य स्वराह्य । <u> রিল'ন্যারার্কার অর উইল্রাইন্'র্লাল্ডন'ন্মা</u> ই'র'ন্ন্যুর্ ब्वितः क्रेश्राच तेः व्रात्मः व्यादान्यः ध्रुवः त्यायः यापनः देः तज्ञुत्यत्वने त्र दः ग्रुनः प्रया ५'यद 'ग्रे'अवादि केंबाके में प्राप्त प्रम्थे ग्राप्त यायर प्रम् व्राप्त न्त्राचरा देवरा दरा वे स्त्र है । है सार्करा में ता पति ही सार्व पति ही सार्व पति है। तर विग्राहेश्राहेर्पार्व चेत्रकेत्राम्यत्राच्याय । म्यायार प्रवार है।

ह्युब्रक्त प्रशियां विद्रा अर्थे व्यष्ट्र के व्याप्त दे प्रश्ने विष्य क्रिया प्रश्ने विष्य क्रांक्षेत्रायद्वर्थाय्येर्द्रात्वेषात्र्यर्द्रात्वेषाः विद्रात्राय्याय्याय्याय्याय व्याद्यस्थापयर्पद्रिकेशमार्थर्व, क्षेत्रश्चर्न,पश्चेत्रक्षर् बर्ने'अन्यायतर्'न्रन्'र्युन्नरः'विद्यायठन्'रा'यद्यवेत्'ळे'य'येन्'रद्यने "" इसराम्। पराग्रीयापडियापदि। ययस्यि स्तर्मराहिष ५१५८ मि ग्वर्पतर्भेर। याग्वर्र्स्त्यंगव्याग्वयः कंश्रिंपप्रविग्रेस् परःदर्भाषुर्यः वयान् ग्वर्भितरः या ग्राधाः ग्वरः इवया ग्रीता रेशपर्धें व व राम् अत वि'म्रान्ताओ'त्र्वा' नेवात्वा नेवात्वात्वात्त्रं व्यान्तात्रेवयाव्यावा यह्रेन्द्रः। रहेक्केर्रः दर्देक्षणया यद्या राधिक वया क्षेत्रं व ग्याय हे. एड़ म्हर् क्रेयतपु द्विय पहला हिर् है। अहेर पाईया पाड़िया हिर ळेळ मा नुन् 'रा'गुन् 'के न् रान्यायके 'या'त्र मार्चे या में रापाने परिन 'कारा 到了「大」」 ろうていれないののであるいれまれならられるいれていれずれ मा वेदायता।

न्तुस्याम् न्यनःन्नान्यसःनगः वया

यम्'न्याक्षम्'न्यार्थेत् ।हेः मर्व्य 'श्रियाया सम्मित्यात् ।तिस्य 'प्रियः' क्रियः हेः सुः मुः देवेषा' ह्या म्यार्थे वा स्थार्थे वा स्थार्थे वा स्थार्थे वा स्थार्थे वा स्थार्थे वा स्थार्थ

नैरात्रु'प'इवराष्ट्रीक्ष्यर ८ईं व खर ८ईं व खर्र -'परान्र रेग्' '" द्यायरपान्मॅन्यपाययवित्याने। वृत्यावित्रित्त्वयार्थिन चन्न्वेन्'अत्यत्यत्नेन्स्न्न्न्गुक्ष्ण्या ध्वः'न्न्न्द्रम्बद्धेन्'प्रवा ह्या.क्र्याक्षेत्रे.हे.हे.पार्यवायाचार्याचारा.वावयाञ्चायर श्रमावायम्याया त्रः व्यार्थन्य। त्राध्यायम् विषयाचात्रुः स्तिः त्रुः कुत्रः प्रम्या व्याप्याप्यः प्र য়৾৾৴৶৻৸ঀ৾ঀ৾৽ঀ৾য়ৼ৶৻৸ড়ৼড়ৼ৻ঀ৾৻ৼঢ়ৣ৾ৼ৻৸ৼড়য়৻ঽয়ৠ৾য়ৢৼ৸৸য়৸ঢ়ৢ৾৾ঢ় ष्टार्चे बहु 'केव मुहेशलु'न' तर्ने 'सून तर्हात्यन त्यावता वृत्य के दे सून प्वन विनः ५'सु'त्व्ग्राग्न्रवेद्यंवित'क्र्यंवित्रक्र्यंव्याच्यायरप्रश्चेद 'कत'वेदायहेन्''" ব্যন্দ্র্ব্বার্থ শ্রীস্থ্রবার্যান্ত্র্বান্ত্বন্ত্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্বান্ত্র্বান্ত্ব্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্ব্বান্ত্ **८.८५.४.३५८.४४५३८.५५८५५५५** धेव'रा'रावेव 'ग्लुर'गेवा नेरम्पाराविषाञ्चावार्देषाराषान्व पर्देव पुः क्षेत्र विषा क्रेया-वाश्वम् रा। न्भू वासुग्राही वर्षान्ग्न्व रहेव नुपन्न रामाधेव प्रवासे नवापन्तु " **८ श्री प्रश्न र सें 'स्व' स्वें दें 'र गृत'रा'या** প্রথানট্র বাবানা रतः संन्त्रात्वे च्चायाञ्चन्यात्वे उत्तुत्तः दुन्तः । स्त्रां निर्मानाः येत् स्यर्षे विष् **इन्याप्त्यक्रियः न्नः स्वाप्तिययामयः अप्तान्त्रः हः वेनः यक्नाया।** न्न'अ'हॅन'रा'यर'प्रहेनयावसम्बु'रा'ने'या न्न'अदि'हुर'रु'अ'र्घे'असु**'** केव'क्के'न्न'यर्वव 'दयरा'वयाय। सु'हर'र्'त्ये रुर'र्या स्राप्ति नेप्तरतारतिरयान्यप्तवा तरीयान्य अव ज्ञानेव तर्गा गुराने राम्या सरारा ताशु सक्ता द्वारा विरापय। ष्ट्रराधेवावावित्रा ५'ने'वड्डिन'बे'न्ब्रा ५'वद्रावर्त्र पति'अर्त्तेद'क्रि'ग्रहें चें अहु'क्रेव'पेद'पदा प्राप्त वापार्चेद्र' ॅमॅग्-र्रेग्'ग्*रा्र्*रयाः नेरःध्यान्यात्रहंयानग्'न्रः' सरुवार्ट्चे रानेष्याः र्मे बहु 'केव'न' 'सन्' ब्रांचरा हिंन हेरा हु' तहें व 'य' तहा हु न राहे 'न हेन्स वशान्यंश्रयतिः ह न यातान्। यव प्याञ्च पश्चित् चि वि स्वतः प्यानः सन्। त्याने श **ॅ्रव्याच्याच्या म्याप्य स्थाप्य स्** परःग्रीकायः ८५ स्ट्रांग्रुस्याय। ५: तुरः परेव 'वयः हुव 'ऋवः परे से ' ळ्ळा प्राची ची पाल कर प्राची के का प्राची ची पाल हो ची पाल प्राची ची पाल हो ची पाल हो ची पाल हो ची पाल हो ची प য়ৢ৾৾ৠঀ৾৾৻৸য়ৢ৾ৼয়৾৾ঢ়য়য়য়৻৽য়ঀ৾৻৸ৼ৸য়৻ঀ৾ৼৢঀয়৻ৼৼ৻ৼৢ৾ৼ৾৻য়ৣ৻য়৻ঢ়ৼ৻৸য়৻ भैव'व'वेपिरे'ञ्चे'वबापर्डेयप्यबार्ट्रग्पर्वार'पर्वेद। पर्गाथेर'या श्चैरः घुन् : ब्रेन् : दुः राम्पान् । अस्य शुक्रेन हे क्षेत्र संक्षित्र स्वाप्त स्वाप्त र्हेक्ष्मु'हें हे वे द्वित्'रत्ने स्पाप्त प्रेस्पाने व 'हे । स्व 'ग्रान हे व 'इ व का रे' विवास्तरप्रें राज्य में वा हिरासाहित् सराधा है राज्य भिव। अस के वा है

ইশস্ত্রীদের্ব্ব'মঝাব্যবিশ্যমার ইবিশ্রীদেরবারীর মঝামরীর। **র**'মর**ু** र्स्या'त्य'यन्या'वेन्'व्यापेय्'ह्यायभूरपा'वे सर्या| स्या'क्रूर'ग्रीयायद्य' ळे*व'स'न् पन्'पञ्चर*'ग्नवस्थरम्' द्वैद'पदि' क्वेद'मुद्रा <u>न्'भै</u>क्द'म् हॅन् मनवाय हेन् प्रवा हिनापार्येन पान्त्री क्रिंग सुर हुन दुन ति ना हेन पते'ने'न्न'के'तर् है। इसपा'केर'बूर'तुर'मबस्यक्' क्रें संख्या स्यानेग्'राधिव'राय। द्रांदाचिराक्ष्याचीत्रयात्रांत्रया ग्रायाराक्रयाया न्नु'र्घेन्यात्। हिस्राधीयुस्रायेन्'वी'न्न्स्यायरायुन्'र्घेन्द्रुन्'येन्'नु ছ্য'ন'র্মন'ন্মের'র। ने 'से राया श्रीना यशकेया श्रीना ग्री स्वया श्रीना स्वर । स्वर । स्वर खुर्यापायन्याचेन्याञ्च छन्।ययायव। द्वायुन्ध्यापाळ्यक्रेवायन्य पत्रिःथोः कन् 'क्रेब्'र्से' नकुन्'न्नः सून् 'कुन्'ब्रन्'स्रिः सूं'व्रबाळनः नठन्'र्सन्''' पायव। न'हेराशुप्त हुन्दराशी स्वाप्तान्तरा वी क्रेन्प्ता रहान देवा न रण'इवरा चैव'हे। श्चिप'इगरा अपरामानमानीबाश्चमा वराईवार्'तहणा राभिन्मकान्गत्पन्ग्श्रीकान्गान्गुन्सुन्।

मुक्षान्त्रभाष्ट्रम् कुक्षान्नम् निर्मे क्षेत्रभाष्ट्रम् क्ष्यम् निर्मे कुक्षान्त्रभाष्ट्रम् क्ष्यम् निर्मे क्ष्यम् निर्मे कुक्षान्त्रभाष्ट्रम् निर्मे क्ष्यम् निर्मे कुक्षान्त्रभाष्ट्रम् निर्मे क्ष्यम् निर्मे क्ष्यम् निर्मे क्ष्यम् निर्मे कुक्षान्त्रभाष्ट्रम् निर्मे क्ष्यम् निर्मे क्ष्यम् निर्मे क्ष्यम् निर्मे क्षयम् क्ष्यम् क्ष्यम् क्ष्यम् निर्मे क्षयम् विरम् निरमे क्षयम् विरमे विरमे किष्यम् निरमे विष्यम् निरमे किष्यम् निरमे विष्यम् नि

मश्रञ्ज्य 'कप'यश्रीत'विमः'पग्त'द्रेत 'के'वेशश्चन' सुतापति असम्स्रेन्यः'' ध'गुत्र'पव्द्र'म्द्र'सेन्'नेपति प्रम्यं क्रांकेन्यं सुत्र'म्द्रेन्यः'।

नेते. बु प्रश्ने स्वारा गुव तह स्वारा या स्वारा स्वरा स्वारा स्वारा स्वरा स्वारा स्वारा स्वरा स्वारा स्वारा स्वरा स्वारा स्वरा स्वरा

न्द्रश्यक्ष्यं विष्णं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं प्रक्ष्यं प्रक्षयं प्

त्र्वात्यं त्र्याप्तात्रात्यात्रे तत्त्व व्यापान् देशात्रु वर्षेत्।

<u>বিবি:ळ'ञ्च'अ'न्न'न्यीत्र'तिर्देश क्षेत्र'यश्चित्र'ग्रिन्', ग्रामः सर्वत्र</u> <u>५५८, प्राप्त १८५, ४५८, वर्ष १। क्रि. क्</u> ञ्च अते छुन पति हु पंतर पत्न न त्रा त्र हिन क्रिंप अहिन द्व'नु'न्न'में'व्यपेवाने। हिन्'न्देचर्देन्नदेनुनम्बं न्याक्षेप्यय तिन् तर् भुन् पाष्ट्रिन् 'ग्रीकाक्षमका क्षाक्षीय कृत्र' पाषासन् 'हें न काम ते 'ह न का ह्यु'तर् व यन् वा सेन्'स्या ही 'सस्य दनै' सद् मुन' तर् वा या धन' वेनिन्न तर्नात्मका <u>वि</u>त्रास्यात्में वात्र वित्र मन्ग्'यातर तर्ज्ञ राष्ट्रेन्'राविग्'र्दर'मधित्। नेरान् हिन्'र तान्ना अ बाप्तरः तर्मेश्वान्य दानारीः श्रान्य सम्बद्धान्य । द्याग्रान् श्रुत्रेषा पा क्षेत्र व्यव व्यानशुर्देत्यापधिव। विन्'जैसन्य विन्'पिते'हर्हेत्'परात्सुर्य ्ह्र[•]ह्रेन्रायरायर्त्र्वायायाने न्निययार्गा ने क्रेन् पुराकुर केरा हॅनवाराम्याद्वार, दुः कुन्पते क्रन्या वा सुन्। हे द्वा सम्बाख्यामा हे स्व खुनः निवे तत्वायाने। नामधिनवात्वावात्वात्वात्वेत्राकेत्रमिनि निवे हवा ह्य'ततुष देव'रा'त्र'र्वेषवारायते'दे 'अ'भेन'रा'ने। हुन्'रन्'वेबर्वा हुन् इत्याचतिः द्वे 'याञ्चन'विन'ख्यान्तु या संति पने 'र्द्रन'तान् पनः पते हन् वा स्र तत्व इत्यम् स्तापन्त्राह्यन् स्त्रापन्त्राह्यन् स्त्रापन्त्रीत् स्त्रापन्त्रीत् दंशर्रान्तरत्याहे। र्वागुन्देश्चर्न्ता सुजुन्यर्वेहर् ळेव'सं'त्रहुर्न्नरहुनदे हुर्न्न्। क्रेन्'स्व'ग्रेक्षेत्रायाण्न्ययान्ग्'गे महुन्'ग्रेशिक्षं अपन्यमुमिति हीन। स्वायहॅन्' बेरी'बर पुरूप्तग्न मल्य इत्र्वास्यायाकेन्मात्युमामतिः हिमानम्यायास्त्रम् जेर्हेन् स्वा **୍ରିମ୍ୟ କ୍ରମ୍ୟ ଅଧିକ ପ୍ରିୟ କ୍ରମ୍ୟ କ୍ରମ୍ୟ କ୍ରମ୍ୟ ଅବ୍ୟୟ ଅବୟ ହି**ୟା न्यनः गुरुव्ययम् वृष्यम् र्वायार्थे व व्ययम् नुव्यते स्व कन्'यन संनित्र नामायाया क्षाया क्षेत्र <u> सॅर-५५'म्सॅर्व केश्र-माञ्चिम हेळे.मार्स्य काश्चिम हाते. हॅर्श्य व संस्था माणा</u> <u>न्म प्रमृत्वेदिदेदिदर्गणं न्यादेवपास्मित्याद्मात्याद्भात्याद्भात्या</u> ট্রীমামীনোর্ম্বাঞ্নাঞ্চান্দা। অমমার্থমার্ত্তীন দ্দাচ্নার্মমারার্ महेराह्न् हिराबद्दाह्न् हेन्द्रा अप्ताकृषा (८ हुन् प्रकार माप्ता सन्नु र के सा सद्ग्रह्म वर्षात्राचरणार के संक्ष्य क्षेत्राच के वर्षात्र वारा स्वर्ण का वर्षात्र वारा स्वर्ण के व **८८ पहुन। न्छन्यन्तुर। म्हेरक पहुँन। ह्रॅंग्**हेन्पासईन ने क्रिन्प ते अर्गे ह्रवायप भेत वायुन्य। न्यन न्य वान्ययः वा विष र्मर्भ्यह्रन्पाक्षेत्रश्रुव्यश्रम् ।

नवै'न। वस्याईंग्यागी हु सु नहु नया

स्ति-त्या स्वाचित्र स्वाचित्र स्वाच्या स्वच्या स्वाच्या स्वच्या स्वाच्या स्वाच्या स्वाच्या स्वाच्या स्वाच्या स्वाच्या स्वाच्या स्वाच्या स्वाच्या स

नेर्रात्याञ्च व्यति महात्राची हा ह्या प्राप्त व्यापा मही हा व्यक्त मतिः रं जुन् पत्रमः में न्मा पर का है। स्वित्र मुग हरी जुग ता र्से का नु मञ्जू न नेति संदर्भ वर्षेत् भूम स्वर हिलायग्रम प्राथ श्रेश्चर वर्षा मॅरप्तवण्क्षेत्रस्थेयाह्रणयानरानुः शुक्षावीतमुत्सानराने वायदवाहिण् "" मण्यत्रः वराष्ट्रमात्रे वर्षाम् वर्षाम सतिः (त्याद्या सुविः ने ज्ञापायद्वः ग्रेडेग् 'दंशङ्गद्वः क्रीडेंद्रन् 'स्यप्यापायः ङ्गस्य हुकारा'न् गतःरयाधिव। न्'रे'ह्रेग'द्यग'र्झ'नेग रात्राय न् न्रे रित्युय'नु वयश्चे संवाशे होन शें होन राज मेंग [RXX!]\[\frac{1}{7}\tau'\fanta केना नहार प्राप्ता विश्वकार् प्राप्त क्षेत्र प्राप्त के विश्वकार के कि साम क्षेत्र प्राप्त के कि साम क्षेत्र के कि स मतिःदूरामित्वा हुराक्षेपित्वा सर्मितास्या क्वारीमारास्त सुअः रे प्रश्वत्व । तुः दें म वीवः भें प्रदे ने गुज़ म वा । तुनः क्षें प्रवेगः अ व्यन्द्रम्य व्यवस्था व्यक्तित्रम्य ह्रम्य वर्षा वर्षे हेव प्रवेत्र ग्रीक

मत्रित्रव्या । स्थ्यक्रेन्द्रस्या । श्रृष्ट्रव्यायाय त्रुन्। । क्षित्रक्ष्यायाय व्याप्त व्यापत व्या

पतिःश्वास्वयान्तः। | निर्मातःविद्वःश्चितःयतेःश्चितःयतेःश्चेताः। । स्वाःश्चितःयत्वःवः निर्मातः व्यवः गुद्दाः व्यवः गुद्दाः व्यवः गुद्दाः व्यवः गुद्दाः व्यवः गुद्दाः व्यवः गुद्दाः व्यवः व

ने भ्रम्भवायन प्रत्वारा विनार्ष्ट्व पुः नर्सायव्या भ्रमका ग्री विगर्देव ॕॱॾ॓ॱ**८**ਫ਼८ॱ८८ॱ५८ केर बेर्'प ढ़ऀॱॹॖॱॴ॔॔ॻॹॴज़ॹॶॹॱ८८ॱॻढ़ॹॻढ़ऀॱ तर्भव । सवा द्रवा पार प्राप्त प्राप्त । विषय है । विषय दे । विषय दे । क्चित्रवायसुप्तरः। स्रॉवरायायेत्पर्यायम्यस्य स्वायके वायस्य स्वरायस्य म्,तिपाक्री,क्रू बेदात,ब्रेट,चर,जूर,त,क्ष्यश,प्रीक्षायश हुन रा रू अ केन ' त शुराच सेन 'पारि पर पार का अह व 'हुन' विना ना व व 'नु' ना से ता र्चेन्'अर'अ'रेन्'पदि'क्वेद'ग्रैस'८र्'क्वेद'या र्चन्यपदि'हेद'८द्वेय'यडु'''''' न्द्रवाधिवानस्वापतिख्वा सवाश्चेद्रप्तान्त्रार्द्रवापरवास्वापत्रेवा पदि'तहें ब'रा'न्न'यरु बारा'तिने पर्वेन'व्यवा'रुव'वर्ग्या'तेने न'रा'द्यवा' য়ৢ৽৴৸৻ৼয়ৣ*ৼড়য়*৻য়ৣ৾৽ড়ঽ৾৾ঀ ৸য়৻৴ঽ৻ঽ৾ৠ৻৻৻৻৸য়ৄ৻৻৻ৼয়ৼ৻**য়** ८व्दर्भ्यतिन्ध्तेष्य्र १३व। धरत्र्षेवरत्र्र्भेत्रवस्त या गृहदारे गया दरा गृहदा हे दा छै। वि रहे दा मिदा हु के परि हुया छै अप दा हि गा" मिन्यान्त्रम् वित्। नियम् तिन्यत्ति का यह वर्षा प्रवित्व गन्य वैवर्द्वचर्रम्यत्यत्रिया <u>र्</u>यवर्द्वेष्ट्रस्या त्रायहेब्दब्द्व्यञ्चेत्रातुः ते छेत् प्राप्ता विष्यायत् ज्ञावाय्त्रे वा ष्याद्यायाः मुन्यल्याद्यानभ्रतानुस्यानिवानुर्भेतामान्ता। नेतिवनाव्यागुना **य**ने'ते वृद्याच्यायक्त्'कु'त्रसुत्त्र वृद्याच्चायक्षेत्र यस्तत्वायम् ₹, गुह्यस्पर्म् त्रित्व विस्प्त्या द्वेष विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विष्य विष्य विश्व विष्य विषय <u> गदर्गन्दर्भेषेद्रपर्भेष्याया नेस्यर्थर्भद्रेरहेर्प्नायर्द्र</u> **८क्षे**प्राक्षी हुन्। अञ्चल्च ८ स्था द्वारा मसबरामसञ्ज्ञान्द्राच्या बेर्प्याच्या । त्रिराचामस्य परः तर्दे न् 'पति' प्रकारा पक्ष हे व 'कॅ' कॅरा मरा पति' क्र्या पा पारा पारा प्राप्ता परा पारा प्राप्ता परा परा विषायामहेवान् में वाही हेव'राज्वि'न्र'त्रात्रात्रा नेतायहेव'वर्ष **द्येग्'रा'रेअ'ग्रेअ**'रहेंग्'रेट'|दश'हटरा'परे'पश्चर'स्थेग्'रहरा'द्वेर''''' गतानेज्यसम्बद्धरात्रस्यानित्। नतानितानेन्द् ロミケ'ロ'ラブ **नुःग्**वेरामः सेग्'रा'न्यव्'परः मृत्यापत्। सेयत्र' उव्'स्यत्रा उन्'त्रिर पः अद्यतः ५ गृ' अवार्षे अप्यन्य तर्दे ५' प**र्वा**ष्ठनः द्धवः द्विवरः यक्षे ५' द्वा **ॿॖॺॹॸॣॸॱऄॣॸॱढ़ॆॴॐॱॿॖ॓ॸॱॺॺॹॱॸॸॱज़**ॿढ़ॸॕज़ॸॗॱॻऄॗ॔ॱय़ॱऄऀज़ॱऄढ़ॱॱॱॱॱ रोयरा पश्चेत् 'प्रेव' पर में 'श्रम्या । विव' र प्रमी श्रयाञ्च प्रया केव,र्यते,भवा,ये,पष्टचे,त्ता,त्ता,क्षेत्र,क्ष्य,र्या,चेव्य,चेव्य,चेव्य,चेव्य,चेव्य,चेव्य,चेव्य,चेव्य,चेव्य,चेव्य हे चेवापरे तथा दुवहवा है। दे पार हे या इस दवा है वराय र छे द पारा न्नायायस्य केत्रिन्न प्रमुख्याया विवानीयाः न्यनः यवि इत्यापरः न्याः स्टेर्षः ग्'र्क्रनेहरायद्वरायायम्'यञ्चन्'राहेन्'राहेष्ठराषानेहरान्राहेन्'''''''

न्त्रा न्यन बेश्रापा चया शें भ्राचा सान्या वसा 「「可苦」、それで ने'यन'यळव केन'स्वारान्न हुव केंद्र प'वान सवा वी मले र क्षेत्र के। मन्गः बेन् १८ व्हें स्राम् स्राम् स्राम् दे । स्राम् में व्हार्था स्राम् हे हरणा स्राम् स न्म कु'अर्द्धन्'त्रवि'क्कें 'व्यायर्थायव्यायन्य अहेन्'रान्म वर्षा न्या में " मन्ग'बेन'हें गहा। ने द्वर प्र चर्च अक्षेत्र पर्न रेग्न अवस्य व्याप र ८६ॅग ५ कॅ राहे। कु अलंब ५ उसे हैं वसाय वन पर देखें। इस हैं न कुन ह्म व्यायेवया हैं गृथे न पुंचा रूप है। सिन् महारा द्वापाद ग्यार वि दंअर्राराध्याप्तराची वादी मे वापारा ग्वाव ग्री शर्केन प्रहें वान में वापा गुना पा सार्या प्रमाणित्र रायम् विष्या व्याप्त विष्या विष्या विष्या विष्या विषया गराताताहिंगापाकेन्य। हेन्द्रेयेस्री सारेशीम नेपानेविगन्य **ग्री क्रिका भित्र । ने भा झ्या अर्घनः नु ५६ द ५५ नः । व्या व्या अर्था हु १५ मा झ्या** बर्धेन बर्बद केन प्राची तकर प्रमा निम्म में मिन प्राप्त प्रमान स्थाप न्नायहत्याची भेतास्याम् नेतात्र न्ये ग्रामाया नेतास्यापा सम्भित्। प्रवित्वा प्रवित्वा प्रवित्वा सूर सूळें वृष्य हुराया इयकाय क्षें यकाय दे ह वृष्य दे या प्रेत हो। क्षेराया वार यार बेर ख्रुयाय ग्रा वर्षे र व वि ग्रव का यान र मेरी व करा र र त र व **न्नावक्यपन्ना संस्रहेग्यपदिन्यन्यः चर्म्यन् स्र्रिप्पन्न** मकरापादि। भूगावर्षेत्रष्ठित्पराष्ट्रेत्परिष्ठवरावेत्'वेरुता त्रुत्रा मात्रेण प्रति सुरा मेरा दें जा या नृत्त प्रता प्रता माना वि जात्र महिला स्ता स्ता प्रता स्ता स्ता स्ता स्ता स्

র্মণাবার্মধর্ণনতবার্মধর্ণনিশ্বীশ্রমকাতশ্রীণ্র্মধ্যুশ্রার্থক্স हिलागुनानकार्श्वराष्ट्री केन्द्रेन ज्वन में निन्दि ने वा वा परि रोग वा ना हुन श्रीकाञ्चेन'प्र'न्द्र'। पर्द्राक्ष'प्र'इय'पर'द्रग'प्रक्रद्रभेष्ठ्र'द्र्र्'कूर'म <u>দে। র অপ্রাধ্র দ্বে মুই দার্শ্র শে অন্তী ক্রমার নিমান্থ প্রাথ নি</u> कुर्ट द्र अनुर्ति ताप्तवाम्ववास्त्र द्रि विष्ट्र में प्रमान क्षेत्र विष्ट्र में विष्ट्र मे रा'ता त्रव्यं ने प्रवादी प्रवाद ने में वा पा स्वाद में वा प्राप्त के प्रवाद नश्रीकृत्रभ्यान् म्यायरम् । विन्। स्राप्तिकृत्रभ्याः म्यायाः पते'म्रत्याहेशर्मे पः तु 'प्रश्न ग्राह्मुहः गृहेश्वायाये ह्याये द्राह्मे द्राह्म त्राह्मे स् चरकॅ त्याचा देव देव चाया प्राप्त के स्वाप्त के स यवयाविन'यहन्थेन'ये हेंग्'या इयशन्यन यतिन्त **월**5'951 बहुद्र'पत्रे'ग्रान् स्वाराङ्गं हे'नेग्'पत्रे'ताअ'नेआग्री'सु'पासेव्'पारार्भे'''''' यग्य। मॅं'प'इयरायर्द्द'तु'तुेन्'प'य'खराय'पप'पसूर। क्रें'य'र्युन् नक्षुर। रोवरात्मवरात्रमुरःदराञ्चरःपान्दरःदरेन। ८क्वेप्तरायन त्रवेताके हुत्र राष्ट्रवेवववा सुद्देव तिरम्मवववे ने पति हा वायान ध्याक्रीहर्त्त। बर्वर्नेर्नेष्वयसहँगात्रव्यक्ताक्ष्यावुर्व्या सुवापते बर्केन्'रान्देश्चेन्'त्रकेतें'पर्रानुत्रात्वात्रात्वेन्'। बनराष्ट्रग्'गेर्हेन्यरादेग् য়ঽ৻ড়৶য়ৢ৽ড়৻য়ৼ৴ৼ৾ঀ৻ঀয়৸৸ৼঀ৾৾৾৻

त्रत्ना क्रियार स्वरक्षियं द्वारात्त्रात्ता व्यक्ष्मे व्यक्ष्यं व्यक्ष्मे व्यक्ष्मे व्यक्ष्मे व्यक्ष्मे व्यक्षेत्र व्यक्ष्मे व्यक्षेत्र व्यक्ष्मे व्यक्षेत्र व्यक्षेत्र व्यक्षेत्र व्यक्षेत्र व्यक्षेत्र व्यक्षेत्र व्यक्षेत्र व्यक्षेत्र व्यक्षेत्र व्यक्ष्मे व्यक्षेत्र विष्यक्षेत्र विषयक्षेत्र विषयक्षेत्र

विषानुषाम्य। ह्यायदेश्वयात्रम। सुर्हिन्'याने'र्सयावेगारे' सन्दर्भे:हुन्तर्ग्'गहुन्'याहेरायहेरायहेरायहेर्।

ध्याश्चीः व्याव्या ६ते स्यादिः त्यादिः स्याद्याः स्याद्याः व्याद्याः व्याद्

स्थान्य स्था

र्यान्ताः क्षुत्राः क्षुत्राः क्षुत्रः देन्तः । हिन्द्राः वीत्रा वीत्रा विवासि। য়ৢ৾৲৾৾ৼয়৾৽য়য়ড়৾ঀ৾৽য়য়ৢ৾য়য়৸য়য়ৼয়য়ড়৽য়ড়ৢঢ়৾ঢ়ঢ়ৢঢ়৾৽ঢ়ড়৾ঢ়৾৽য়য়৾৽ঢ়ড়৾ঢ়৾৽য়য়ৢ৾ঢ়৾৽য়য়৾ঢ়৾ঢ়৾ঢ়ঢ়য় भै। वन्ययः नवाने क्षे ततुवाधालु यः वैवा चे सर्यमः **यात्। म्यामयः या**वाहः <u> ৰিশ'ন हर पर्या । বৃদ্ধেন্' ন্' শামনে রেই' শন্ত ক' বৃদ্ধের শ'রদ'।</u> बारतः तर्ते ते खनः महूदः धेदः दवा । मनुनः ग्रीमनः हनः धेदः श्रेः देशः। न्म भेव व्रत्म मिन स्वाप्त का निष्ठ में के निष्ठ में के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के a/हॅ प्रश्याप्तिकी/ग्रुट् बेट् 'ट्री **प**श्चीश्चर**लकुरुःधेराधिर प्रान्यश**्चन बद'ङ्ग'वरा अ'गेह्र'गृतुग्रान्धेन्'पदे'ग्न्यराप्यव'ॲन्'प्पित' पर्या कु'त्र'वाह्रदर्र त्र्रेंदेखहा प्रमु**द्र'भेद'द**्र्जूहातहुन्द्रें**र'णहातु 'ह द्र्य'** भ्रुअव्या तन्ग्रञ्जरमिन्। भ्रेन्त्रायते हुन नुष्टेवप्यया न्नायते व्या वर्ष। बर्द्धवरान्यां त्यवीर्थेन पर। पर क्रन वुन वेब पर सन् के हुन्नान्नरः कर्षेवत्रवयः अन्यम् वर्षेवायाने या ग्रामने अन्यन भेव'व'बॅ्न-प्रह्म'लु रार्द्रम्बर्य'सम्बद्धम्बद्दः घरःलु खु बायस। धुन्। मुक्ता-न्द्रान्यानात्वम् वाववा नेवायत्त्रम् त्रिक्तानम् ८५गःहै। ८:इ:गरःवदार्द्धरःद्रमः५व। यहःकेदःवुःर्दरे:वतावव। बॅ्र-(८६व) वी पश्चर-ब्रेंबर्यनेवा श्चिमः च'सब्बुब्यश्चर्रेस्र च'शे ८५वा मधा। इं'न्चे'द्रवर्यन्य्ववर्षे वर्षे तस्रियानं धेव्'व्याद्यात्वा वैव'संसव'हुवारा बर्डवा'र्:बॅ्रा-१८हवा'वी न्ये'क परंतप्तव। तर्व प्रदेश भेग्'क'यर' रु'हेर्'रे। ॲ्र'तह्ग्'ग्यिबेतहु'ग्रेण्'ग्रर'वाहेर्'राया

न्नायरिष्यावया न्स्रात्राचुनार्धेष्यास्याचुनायरे यहादे अनासने लुप्यास मञ्जूतापरात्तुव वाववाधरावान्यवारवाक्षेत्रं वे वेवायरात्तुवायका **९**'रु'र्रो पशुर्ताताय। सु'र्दामशेषापतीक्षु'यहंदारं वदास्याद्यापद्या **উ**'নদ্দ'র্দ'ঝ'ইনঝ'দশ্। স্থ্রীন'ঝ'রঝম্ গ্রী'রয়েঝন'ব্রীম'্বরী<mark>ঝ</mark>' पर्या ग्रेर-२ग्रऍलग्-१हुन्यःपङ्गरःहे कुःग्रलाई द्याया हुः रॅप्प'र्ह्नुन्प'त्र'विवेषयप'न्न्यनुव र्ह्नुव'त्र'यास्र्रहेष्पप्रात्रहेत्राक्र्यहेद् त्रोतायन में पहें प्राप्य व्याप्य द्राप्य दे तुन प्रकृष्य विष्य है। प्राप्य प्राप्य वि तरेतरा नैनः परं यापया। व ग्राग्येय हेग्राहु यह याहे। सुःय ह देवैः न्मॅब्रायर गन्बर्ह्रका व्या विष्या मूरित हुण ने गन्य यार गानु बा पया प्रकेत्वू मेरे देवावया नि हिंद् मा इव वयसमा मह - मुनः गह्यनः याय। तर्ने यन् गः यन् यः यद्याः यद्याः यन् गः यायः यह्यः हुत्यत् वेत्। यन्ग्यः श्चित्यः विषयः प्रत्वे वातः यम् पर्याने स्व मारतः तर्जेते खनः नम्भवः सुनः वराषु रः देनवारा तराष्ट्रवारावा हुँ व य. झेब्र न दे. खूवा दु अंद्रा । व ८ खाया है। अप २ ४ ८५ ८५ ८५ । विका**रा** र्गतः वेशस्य राज्ये। भ्रिक्षस्य रेश्वस्य प्रत्ये। विश्वम् स्टिन श्रुव पर्दु वं वर्ष है। प्राणीय गुर्या प्रवर्ष यहा व्यवस्ति प्रवर्ष श्रुव पर्यो १.८८ - इयरा किटा स्वया किटा सूर्व की की कार्य कार्य की की की की की कार्य की (तुवान् भूति परान् पारा सुभ्यान् नेति सेन् नेत इवका वेन् की है न कार्य

सर्वे मुग्ने वे अर्प्यरत्त्र्य)

न्द्रम्यायात्रत्यं कृत्र्यं प्रत्यात्र्याः वित्तात्र्याः वित्तात्र्यः वित्तात्रः वित्तात

<u>૽૽ૺૡૹૹૢઌ</u>૽ૡૹૡૡૢઌ૽ૹ૽ૢૺ૽ૢ૽૱ૡ૽૱ઌૹ૾ૢ૽ૹૹૣઌ૽ૻ૽૽ૻઌૹૻ૽૽ૼ૱ૢૢ૽ૺૹઌઌ নর শ্রেষ্ট্র্ শ্রীষ্ট্রের্মের। শ্রুর্ শ্রুর শ্রুর্বর বিষ্ট্রের নর বি ळॅगराग्रास्तु। त्रायाराञ्चेपायातुःळेन् स्यराग्रीसानुराम। त्रायानेन्यां हो। श्रक्षानुका मात्रुक्षाक्री कारका कुका क्षिति ने दी नाम मात्रका क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा क्षा कि न्नायान्य निम्नान्य विश्वास्य विश्य विष्य विष्य विश्वास्य विश्वास्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष् নৰ্মন্'ৰ্থম্'ট্ৰম্'অ'্যুন্ **७**ण्रॅ्ञान्यद्वयायाप्तितासुन्तः त्रेष्ठ्ययद्वेः कृत्रतसुन् प्रतेतुन् '''''' पद्भव'र्डग'ग्वर'पर'**लु'नुवापवा** झ'बारी'वाय'ववा てるべいだって ळे*व*'शुःतु'जुन्'**८ने' हे व**'८ञ्चे**ल'न्**र'ञ्चे'यञ्च'यञ्चरत्र'यहेवारां भेव'वेर'| **२ग्८**२न्जुन्जुः नष्ट्रब्पायायम् केव् वृः रॅति खन् नस्व्नात्रन् संयम् ''''' **प्र**ा ष्ट्रिन्'तु'केव्'द्रवराग्चैराद्रीयाश्चिष्यायास्यान्या हेन्। महान्या नेन्र तुःकेव्'इयरा'ग्रेराक्षे भया नहार् व्यानु रापया गुरु'ताक्षे भया नहार सं तनातः हुनः ततुना वतनः । अनः चन्नुवः वनः याहानः हे। केव् प्रदेति है। भश्र हुप् रहुंता इवश्व अति हुप् **तु स्वताप ति है।**

व्याद्वाक्ष्याच्च्याच्च्या । गाम्याद्वाक्ष्याच्च्याच्च्या

कार से द्राया में कार प्राया में स्वार प्राया में स्वर्ध में स्वर प्राया में स्वर्ध में स्वर प्राया में स्वर्ध में स्वर प्राया में स्वर्ध में स्वर्

न्'स्राह्मराति'हेव'त्रह्मराष्ट्रीया । महार्पित्'त्रह्मराधित'त्रह्म इथा । पर्यादी'हेव'त्रह्मराष्ट्रीया । महार्पित'त्रह्मराधित'त्रह्म इथा । पर्यादी'हेव'त्रह्मराष्ट्रीया । प्रह्मराधित'त्रह्म

विश्वात्या श्राम्य विश्वात्य विश्वात्

र्यात्रश्चेत्रस्यक्षात्रे स्वयात्र्यं श्चित्रस्य श्चित्रस्य । श्चित्रस्य स्वयात्र्यं स्वयात्रस्य स्वयात्रस्य स्वयात्रस्य स्वयात्रस्य स्वयात्रस्य स्वयात् स्वयात् स्वयात् स्वयात् स्वयात् स्वयाः स्वयः स्वय

हें तुरा गहुअस्य र या जुरा २ में प्रते या विष् पर्पाया सुरापा । स्वास्याय राष्ट्रा प्रमुद्दार दे। । मान्त्रा **८. जुरायम्य १. जुराये । १८ इ. जुरा ह्या व्यायम् । १५८ व्यायम्** बरपार्थार्द्र-८८। । नगरा नज्जुन प्रस्या की नमूब्रपाधित। । ग्रस्य डे[,]बॅं'न् गुन्'त्पने गृप्पति | क्षिपति गुक् ज्ञाबेन्'प्पीक | । डे'प्पके'ज्ञा तिम्पानी । क्रियापार्वित् म्यायाया त्रीवा । वित् ग्रीका व्याया । वित् ग्रीका वित्राया । वित्राया । वित्राया । वित् ग्रीका वित्राया । वित्राय । वित्राया । वित्राय । वित्राया । वित्राय मानतः गम पानी । हुन्या हेना यानेना शुक्र रोता पेन। । साम राजा नी हुप'रा'दे। [तर्भेद'शवाग्रीकाकामाने हुप'रा'भेद। [स्मारा प्रतिराह्म क्रुवंतराराप्ते। । श्रेवं र्जेलान्यरार्वेते मन्यवार्ग्येव। । सुनेषा त्र्ण्ण्वर⁸राप्त्रे । व्यत्यामुञ्जेब्विप्र्ल्याप्येव। व्यञ्जामस्य त्रवारान्। दिन् न्यतायातु यहता प्येत्। शिहेन सूर्टेन्य म्याप्तान्। । तत्रवातुः क्षुंन् प्रतान्वववा क्षुंनः धिन्। । श्रीनः से त्यावी ८व'र्डो'श्रव'राज्ञर'। |८२ैर'र्छ'ग्रया्'रा'तु'र्श्वर'गुव। |र्ञ्नर'र्श्व**र** सुनान्दरार्भे अर्थेन् में देवे। । १५८५ माळेन मर्द्रनार्थि । र्माकी हुंर क्षेत्र प्राप्त दे भित्। । ग्राविष हु सेर बेर की रही राप्ती । विंक्षेनिवेतः न्तः तर्यापेव। वितः न्यः त्रायम् तर्वा मुक्षः दे। । अन्य पश्चन की मन्य यान मा हेन या प्रमा । वि रापा दे ग्राम्यायायम् प्राप्ति । वित् येत् प्राप्ति । श्रुत्

बैग ग्रेंबर हु ग्रेंब व राय दे। । दिवित्र मात्रा है ग्रुव त हिता मिना श्रेनः न्राम्यः न्रामः द्वेन्यः शुः तस्य । व्याप्यः श्रेनः तुः न्रेने न्यायः षित्। । निर्मेश तस्रेश तत्र है 'यस यचर । । तर्ने र छैं प्राय्य पा हु श्रम गुन् । इंग्ड्र गाकेन महिन समि। । गुन् म ने स्ना स्न *ऍरा`≒रः*धेद। ।ग'र्घग'रु'सूग'र्घ'रर'रा'रे। ।विं'र्घ'गवि'सूग'र्र'र**्**र प्राप्तेव। व्रिवा वा तर्द्र असम्बद्ध व वा सुर्वा प्रमुद्द प्र के विद्या सम्बद्ध व विद्या विद्या विद्या विद्या व रणः मेनराराधित। | मिंदः तर्ह्यायनः महायानुरारादी । भुः महायादः संतर्भित्या । हेरामही द्वायाय ग्रन्था । तर्भवाय या स्या मिन मुन्य पिन । श्रुव भेग ग्रुव दुः ग्रे ग्याप दे। । दिन स्पराय श्रुप खुण् तह्रवान भेत्। । ऋण् व ग्राक्त ग्रेन स्ति प्रेन स्ति । वरायते श्चेतः तुः प्रवेष राम्भवा । वर पेर कुर दुः तहे त्या ने । तिः कं ने राकुरः रा'तहें व'रा'प्रेव। । कुं' हे 'सम्राची र व'हे 'सम्राचन र । । तर् र कें प्रम म् पातुः क्रॅमःगुर्वा । बुमःतुःगाळेवः मर्दुग्यायः ने। । गर्दनः रूमः नी बेशः इंद्रं क्षेंद्रं सेव। । गार्च गार्नु हिनः केवः बेनः माने। । विंकीः गावे। हिरान्रात्रात्रिया ।हिरान्यिना सम्राज्यम् राम्दी । १३४ प्रमुन् क्षे ग्रथम् माने विवयम् भित्। । ह्यून प्रमान्य सन् ग्रामेन स्याप दे । *स्क्रॅंश* क्रेन्य क्रॅं क्रिया । श्रुव विषा क्रेव्य क्रिया क्रिय र्हिर्चाराधिः श्वन्त्रस्याचा धेव। । हिन्द्रस्य विते सर्हेन्द्रारा तस्त पदी | वरपरिश्चिर तुमिने गयापित। | तुमक्षेप्यस्थीर विके ्मस्य नन्ता । १८ १ र हे वा बा पा तु क्षेत्र गुरा । छन् र गा हे वा ब

राने । गुन् वर के अपन्य राषेता । गुर्वे गुरु के र दे दे र र दे । विंकी मृति में न्दर प्राप्त के विष्त । किंति के के किंदि श्रुव्। पश्चन् श्रुं ग्न्यवारम् मेनवाराधिव। । क्रॅन् कंटः स्न्। तापठवा**रा** दे। ।ॐॱऄ॒॔ग्ॱॼगॱผ*ॺ*ॱॺॖॱॸॱख़॓द। ।कॅ्र-्रेॱख़ॱतुॱग्&ग्'ॷॸॱॸॱदे**।** त्य्व वृक्षे में अन् किया दिन प्राप्त । । मु: स्व वृक्षे काव व्याव विदः याना प्राप्त । पग्रात्यकुन्'ग्रिपङ्क्ष्य'प'न्स्पाधित्। । श्रुव्येष्णेष्ठेव'नु'ग्रेष् त्रिंन्पाताक्षेष्ष्वग्त्रस्यापाधिव। ।क्त्पाव्यवादिवार्धन्यास्या पदी विराधित में में निष्य विषय विषय । विराधित स्था निष्य विषय मन्। विन्दर्देरळेग्राह्मवरात्रायम्न्राधिव। । नामान्यक्षी इापाञ्चराष्ट्रीता विराह्येत्। विश्वेता विश्वेत रः वे म्ब्रुं के प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त । । विश्व श्रुपः पञ्च प्राप्त प्राप्त स्वरापः प्राप्त स्वरापः हिन्। विश्वानशुम्बाद्या ळॅन्यरागुन्यन्नारः क्वान्यम् हुः वेन् ব'র্ষব'র।।

ने व का श्रायका तुः छेव स्वयाया है का नि न व का नि न का नि न

न्तरं ने हेन हें द हरा है र न ग्रेया है र ग्रेया हरा ते ग्रेया तमाराय न र श्रुर बर्ट्। र्याक्रेंस्र व्रंत्र्त्रेत्र त्त्र त्र त्र त्र व्यं वर्ष व्यं क्रूंब्र'क्षंब्र'मॅर्द्र-'ग्रायार्ज्ज्ञ्च। नःगृतु अर्थेः क्र्यं अर्थः गृहे गृद्धाराः। क्रूंब स्र्यूप्तः यग्तः प्रयाप्तः तर्वेषः यया ग्राः स्र्यं यहिषः प्रया हिष्यं स्या **यां**यमत्रत्तुष्ट्रंत्रायदेतिः श्चीं त्राजुन्।यत्नन्।मनश्चींयत्।मण्डानेष्णः " मबूर्याम्बुरापं क्षेत्रं विवा सिन्दार् ने न्द्रा वृ दिते ब्रुव विवा हिवस र्यायक्वर्यं न र्यान्याच्याच्या क्वर्यायाच्याच्या मा ग्रम् द्रायम् प्रायम् द्रायम् द्रायम् द्रायम् द्रायम् द्रायम् व्रायम् कूर्र्न् नर्ने प्रात्र्यं प्रकृष्य् म्रात्र्यं प्रकृत्यं विष् नेप्ता द्रास्तिप्ताला खनायेदा मह्याकि सेवालि सेवालिय न्तुः कुव्द्रवरा गव्दः है। वर्षः यां ब्रुंत्रा वैगः गहुत्रा गर्दरः रूप बेराहूंब्रहेंब्रहेंब्रहेंब्रहेंब्रा हिन्ग्यायायुक्षव्य दिन्द्वा विकासिन् नवर्वता नर्हे इन्डिन् नबुर्या रामानुब्रहेरे छन् इति मन्ग्राताक्षेत्ररापाष्ट्रापुर्ता के.हे.चते.र्ष्यु। कु.संते.क्ष्यात्रत इयश्यव्राम्बर्ग्यः गमारः सिन् 'न्नः यान्यसिन्' त्रीयश्याः द्वस्य धःप्रदशक्ष्याः महात्या

न्वश्रम् द्रायाः गुव्रत्स्यायः स्वित्रायतः स्वित्रयातः स्वित्रयः स्वर्णायः स्वर्यः स्वर्णायः स्वर्णायः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्णायः स्वर्णायः स्वर्णायः स्वर्ण

ह्रमा रन्धुमन् वेनमम्

पान्त्रसङ्ग्राम्य व्यापय। द्वारित्वाम्य व्यापय। द्वारित्वाम्य व्यापय।

इन्। निर्मा क्रिया स्थान विष्य स्थान स्था

प्रमा विकासित्ति । जिल्ला विकासित्ति । विकासिति । विकासित

स्वारं त्वराव्या स्वारं ने क्षिण्या स्वारं क्षेत्र स्वारं स्वरं स्वारं स्वारं

स्डेल्पेंदा न्प्नॅन्यस्यर्वे वित्नुन्यया चन्न्येन्यवर्कन् रापन्न में विषा में अरापी पा मा अराप ही सार विषय है सा स्याग्रीयायक्रन्यायम्बयावया स्रात्रात्र्यं कृत्यव्या র্মানেমন্ত্রী বাদ্ধকাদ্বা বাধ্ব নেমান্ত্রবাদানী ねそれでなってて! क्षेग्'जुन्'इबराईं ग्रांपर'ग्रांचर द्रा रि'यत स् ग्रवश्रास्य. तर्ने इवरान्ता हे चे बु रे प्रश्ति प्रमाय ब्रेस् के राप्ते श्रुन पहुन्" **ऍन्'मराज्ञैव'प'भैव। हुँन्'ग्रैव'ग्रुन'यह्नद'तज्ञॅब'युन्'मह्द्व'पदे'र्श्चेन'** अर्घेन्'अर्न्न् प्रमुद्दार् तिन्न्या कुत्र्यं त्रकुष्ण्या स्वार्के प्रस्तु रहेन्'' इत्'ग्रे ह रार्चे प'त्र' देव विष प्रवर्भन्ति प्रवर्भन्ति विष्या प्रवर्भन्ति विष्या <u> ५८ कें दिनेदेन प्रतिश्वेर पृष्ठे व व यापतः दर्जे देन गतः कर् देन प्रवाणः</u> **५अपराष्ट्रीयतावययाशुर्वेरय। अताह्द्युष्टीञ्चेरायपुरादानरा** त्रुतात्वेत्'दुर्-त्तर्द्रान्व्यात्व्यात्व्'वैद्यंदु'तुर्वाताः सङ्ग्रापः श्वेयाकेण हे त्रिया है ते बू रे राम हिर पकर पकर पत्र वा र या हिर र र र हर **ग**र्डन्'रा'क्षेत्रःग्रुरा'त्रं'त्रं न्यत्'द्रवयायायत्'रे"रॅग्यायसन्'रे'ख्रायात्रिक्या हूँ द'य दंय राष्ट्रीय। चु'ग्र-द'क्रं या ५ नै दे क भग्न' घग्र र चु-हें न प् खुरावेन्'वापतःत्र्वेते'ळॅरांश्रॅरन्तु'ॲन्पायर। प्रवेप्तराहेन्'रम्प র্ম ক্রিন্ ক্রিল্ম ব্রাক্তির ক্রিন্ मयान् वयार्गः इवयार्स्य्यारारा अञ्चरार अञ्चरा न्नर नेर ने

द्वारान्यरान्वेश्वर्ध्वश्वर्धः व्यव्यद्धः व्यवद्धः व्यवद्यद्धः व्यवद्धः व्यवद्यद्धः व्यवद्यद्धः व्यवद्यद्धः व्यवद्यद्धः व्यवद्यद्धः व्यवद्यद्धः व्यवद्यद्धः व्यवद्यद्धः व्यवद्यद्धः व्यवद्यद्यः व्यवद्यद्धः व्यवद्यद्यः व्यवद्यद्यः व्यवद्यद्यः व्यवद्यद्यः व्यवद्यः व्यवद्यद्यः व्यवद्यद्यः व्यवद्यः व्यवद्यः व्यवद्यद्यः व्यवद्यः व्यवद्यद्यः व्यवद्यद्यः व्यवद्यः व्यवद्य

व् वॅ नगर देव उव या ग्रंया न र देवया । नगर देव उव वॅ न बर्दिः इराष्ट्रस्य । प्रमञ्ज्ञान् वर्षात्यः ने केन्त्रतः । वरः सं **धॅन'८**६ॅन'म्प्रेन'नदे हु। । म्वन्'कुं म्बुन्'रम्' क्वेन्त्रा कॅन्स। । ने' ने'यर'पर'दनै' केन्'येन्। । व्रॅनप्रेयर'पर'दश्यन्। *ॸॖ*ज़ॱऄज़ॱज़ॸॱॸॕज़ॱॸॖॖॖॖॖॺऄॹॴॗ ॗॎॸज़ॱऄज़ॱज़ॸॱॸॕज़ॱॸॖॺऄॴ ॗॖॖॖॖॖॗज़ॹऒज़ॴज़ॴ यभ्राकुः बर्धारस्वकुः बेर्। । सब्किन्निरासम्बन्धारम् वार्धारे देन। । *इॅं-*ॱधुग|सॅ'८५ॅ५'द'८२े'तार्रेत| ।ॐशक्रॅंद'ॲ८रा'८तृतारा'वतराक्री मया । । । । त्रयानर्थन् । या । विवयम् । क्षेत्रया । विवयम् । क्षेत्रया । क्षेत्रया । क्षेत्रया । क्षेत्रया । क्ष **इ**ब्यु नेब्यु स्थान स **६**ॱचॅं क्वेत्'खुन्' चुर्ना । ब्रें बेत्'ग्रें हे 'चन' ल' ले बाहरा । क्वां बाहर प्रिण'स'क्, ज्ञास्त्रा । येवयायाय्ययाव्याव्यः कर्व्यरः ह। । नरास्या न् मॅन्या के स्वापना । येन्या बेन् की न्ये के स्वापनी । मॅन्या न्रक्त्रिक्ष्रित्रात्। । न्रिक्षार्यम् व्यवेत्रिक्षान् वर्षारम् विवा

८.त्र-्वे चक्षर्यः क्ष्रितः प्रस्या । या द्यायः श्राप्तरः क्ष्रायः । । व्यायः व्याय

উমাশ্রদমাব্রা প্রণাদের মের্লার্রণান্ধা ব্রাষ্ট্রদা त्र्रापातन्ते, त्रेवयायापीव्यक्षिणक्षण्याचे व्यक्षण्याचे व्यक्षण्याचे व्यक्षण्याचे व्यक्षण्याचे व्यक्षण्याचे व ত্র্বের্মার্স্তর্থামির্মার্মান্ত্রাহ্র বর্ষার্থার বিশ্রামান্ত্রা न्न वरापन्न वरायान्यवार्त्ते वर्षात्म न वर्षात्र न वर्षात्र न वर्षात्र न वर्षात्र न वर्षात्र न वर्षात्र न वर्षा नैर'र' अर'त्रु' अते' यग्र'पविद'वग्'र ग्र'पश्री ग्राप्य ग्राप्य ने क्वें तर्ने **प्राह्म व्यव्यक्ति । या प्राह्म क्षा व्य**व्यक्ष व्यव्यक्ष व्याप्त । व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप **४ वारा ५८ वारा वारा वारा विवासिय का ने वारा प्राप्त का निवास का निवास का निवास का निवास का निवास का निवास का न** गुर्नेर प्रभिन्द ने गुह्य रहा। सुक्ष ग्री का स्वी का स त्रम् इश्रुंत्राता महेरावा है हे हु द्वा द वराता है न वा तिराम न न न पन्ययप्रतिर्द्धन्यन्तर्भात्। न्नाययभुर्न् ग्रेयप्रदे हे। त्रिर्त्यपने बक्षण ज्यान्तित्यान्त्रास्यास्य वाहिष्यान्त्याक्षेत्रुः न्ता ईरहेन्द्रस्य त्रिंरात्रारीव्यांके। यज्ञा त्रांशीः त्रांत्राव्यातेष्ठवायं वर्ष्याः क्षे खुः हैं न् ग्रन्य रायमेन प्राध्यायार ग्रहिष्मेगाय हु न्रा। त्रें रामते है गृति राष्ट्रमान्या ग्राह्त त्र ही सूरामा संग्राह है है बर्पन्द्रव्यवा देववयानम्द्रप्राध्यक्षित्रं प्रह्रव्यन्ति है। हुत पद्दव'राध्मेव'ग्राद्धर'प'। ह्य'यायरयाकुरा'न्द्रवाह्य'यार्घर'यार् इं:न्यन्द्विन्प्विन्द्विन्द्वे। न्न्र्यंव्यव्यद्यहं:तह्यातन्द्रे तुः र्वतः चरः द्वेतः ५ वृषाकृषायः वुतः। ज्ञायते वृष्यं वृष्यं तुः यर्वेतः हवा **पै**न्देश्ययम्बद्धन्य। यहारायम्य। पेन्येकेशपदेपरान्तर्यः ग्रत्यम। पर्गर्स्यान्यः वर्षत्रे वर्षत्रे तर्षे वे म्र इत्यत्वर्षा दुन्येद्रप्रवेद्रत्र्वर् इयराञ्च याष्ट्र तुरास्य बुरायरा ने राविवान् वयरात्र व्याप्त वा ग्रायायर पदिनेभिन पराने तार्जेयन। मारला ने से सरला सुराधिका उपायहन पदिःश्चेंग्दशस्त्र'त्र'द्वंत्रपदिःवः वर्षेत्र'प्रक्रेत्रस् वार्षे ग्रज्यराध्याने शुः साविदिषा ग्रुतार्गे द्वास रेषेव पवादे तार्श्वया बर्ध्याकी देवित्यवात्वराद्रा न्यास्याकी प्रेमार्के व्याप्ता वर्षे मत्र'मॅ क्रें द्रायु र पद्द द पा दे पा द रा भेद पर र रे ता झें अरा। द्देव'ग्रेक् <u>र्मर्विर्भ्रु</u>र्ने अविदादस्य मिल्या विदाय के स्वाप्ति कार्य के स्वाप्ति कार्य के स्वाप्ति कार्य के स्वाप्ति कार्य क्षेंबरा ग्वन'पर'बे'बेर'ग्रेग्नर'यधुन'ग्रेन'गर'८ हेंबर्'र्'के श्चरारा ते श्वारा अवंदा इंगाय ने ग मर हैं गया का गव का के दारी से में। ते र्रः दुं रेल होत्यव सप्पर्दे हो दे प्राक्षाल स्वीत् स्वरम् सप्पर्दे स्वरम् रान् विन्के सुजन के साम हिन स्वाप किना के नाम हिन समाय सन् दिराग्रहारे इस्रहा श्चापादा गाउँ में स्टें न है ग्रा श्चापादा हा सह देना श् **ঀ**য়ড়ঢ়য় য়য়য়৾ৼৢ৾য়য়য়। য়য়য়ড়য়য়ৢ৾য়য়৾ৼ৾য়ৼয়য়ঢ়৾৸৴ৼ वीया शुन्न प्रमित्। श्रुना पाया बुर् व (क्रें ने न में भवा न व । व विवास व श्री प्राप्त क्ष्री क्ष्र में क्ष्र क्ष क्ष्र क्ष्

म्यस्तर्रः। विर्म्पर्श्वेश्वर्म्पर्याह्म्यंवेर्र्व्याप्तर्थाः विर्म्पर्श्वर्माः विर्म्पर्श्वर्माः विर्म्पर्श्वर्माः विर्म्पर्श्वर्माः विर्म्पर्श्वर्माः विर्म्पर्श्वर्माः विर्म्पर्श्वर्माः विर्म्पर्श्वर्माः विर्मुश्वर्माः विर्मुश्वर्मः विर्मुश्वर्माः विर्मुश्वर्मः विर्मुश्वर्मः

श्चितः स्टाः मृत्र प्रथम श्चारः श्चेतः श्चे

ब्द्यापर्वयायन्त्रारान्तः। ऋष्यावश्चरायन्तः र्यातश्चरायक्ष्यात्वरः विद्यात्वरः विद्यात्वयः विद्यात्वयः विद्यात्वयः विद्यात्वयः विद्यात्वयः विद्यात्वर

मिन। सूर्यः येन्स्यः अस्ति स्थान् स्थान् स्थान् स्यान् स्थान् स्यान् स्थान् स्यान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्

म् । विदेश्या प्राप्त विदेश्या प्राप्त स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर

ह्रवाह्मर्न्वराह्मर्न् हेरहर्ना ह्रित्रव्याम्य स्वाद्मर्वाह्मर्न्यः स्वाद्मर्वाह्मर्न्यः ह्रित्रव्या ह्रित्रव्याम्य स्वाद्मर्वाह्मर्म् ह्रित्रव्याम्य स्वाद्मर्म्यः स्वाद्मर्मयः स्वाद्मर्म्यः स्वाद्मर्यः स्वाद्म्यः स्वाद्मर्म्यः स्वाद्मर्म

हे न्नाय द्वयाय द्वपाय । । यय उद्युष्ट स्प्राप्त य सुवार दिर | कॅस्सु: सम्बद्ध संशुचायारः मृष् | मिना में हेरी महासारा पत्ता 51 ৡ৻ৼয়৾৸৸ড়য়৸ড়ৼয়ড়৸ড়ৼয়ড়ৢ৾ৼ৽য়ৣয়৸ৼড়৾ঀ৸৸য়য়ড়য়ড়য়ঢ়ঢ়ৼ छ्य'र्स्ट देंत्र। । श्वतासुतिर्वातर्गः स्वा । श्वायते मन्तरः र्वना ऍ हेरे'गगुर'। ।कुर'स'न्देर'वेर'ग्वरामर'र्नेग ।धेर्वायहरा त्रॅंति चैन्द्रम्यान्। । व्रॅंन्निस मरान्त्रमार मृन् । इंश्वेंस् श्रुतः बतिः ज्ञुपाहे व देव। । तहा यापा बेदामा स्त्रुप मनः विषा । हे व पह हो या चरार्कति र्बेदायस्त्री । युर पार्वित्तु युराधरार्मेष । क्रेंद्रायहंत् गुदा श्चीरः वाराहे:नेरा । तुरावायुर्यागुर्दानुः हे दारारः स्व । वार्यरः श्चेत्रः स्यायीयार्चिषानु। । न इत्यान्तुः ष्रिक्षिः नशुः सर्वि । सनः हे द त्र्में परित्रयम्या | प्रार्थियात्रत्र्रिक्षेत्रयम् । माध्या विवासियायरविस्त् । अहिषाश्चायि स्ति स्वाप्ति । अहे श्रीत ॲते' वे' त्रॉवर' स्वा | श्रु: क'वेष' संदेश्चें प' प्रवेद' खेट । | के' के द'खेट । परिश्ववाद्यवाद्य । तिविस्तर्याच्ये परिकेस्तर्य प्रा वन्थेन् च भेर्स्य व्यवस्था । वापत्य व्यवस्थिति च नित्र नि

र्षवयाप्ति । ध्यायाञ्च क्षाक्षरम् निर्मात्रम् । तस्तान्येरम् बेन्'पर्देन् ने ब्रुं र प्रन्। । बळवरान्य संबेचन्' ही बेन्'व। । ह न्य ्धर-तृ'वर्षेत्रप्तिः क्षेत्र'वेष्प्त्। । चर्चान् मॅरः चर्चावेन् प्रतिन्द्राच्याय। । मने'म'क्रे'भे'मध'ममस'भँन। शिमकेन'क्रे'भेगवता'मस'व। र्<u>र</u>ेव'ज़ुन'पदे'कृन'कॅ प्रन्। |सॅ'क्र्रेग'केन'पदे'क्क कॅबाय। |न्यकेंग' प्रदर्भत्रेत्रभेत्रप्रवर्षन्। । यग्रद्भवित्रभ्रुयःपरिश्चेत्रस्य। । न्रस्य शुन'गुन्'ग्रे'मिहेर्ना । न्याळ्यायात्रत्र्ते ह्रांग्क्रेराय। । तिर्दिर त्रचाचेरापतिर्शेषाळवशार्थेन्। | सरपार्थे दृति चुनुपा । **ग**हस कृत्यनः यंदे देनः क्षे येन्। | क्षेत्यन्यपदे क्रेन्- दुव्यव। । यहवा कुरामङ्ग्राप्तरेर्त्रुग्'विन'र्षित्। |त्रुंग्'विन'त्रेड्र्य्पतेर्श्चेरातुःत। | कुन्पःपवन्राधितःप्रणः भैदान्षेष । प्रण्यःपकुन्त्वःवदेःप्रणः भैदान्षेष । **ঐ**'ন্যানলন্মনি'নাম' দীৰাস্বি । নন্'ন্ট্ৰাব্যান্যান্যানাম দিবা मृंग । ८४.६४। प्रचट, ग्रंद, प्रण, नुशंभूग । यापप, प्र्यूप, श्रुट, प्रण, **বিষার্বি । অনিমেরের্লা নর্লা নর্লা নর্লা ব্রারাজ্য অনিমে** त्रॉतेर्न्य वैद्यंवित । इंद्यं क्रेंन्य निद्यं वेद्यंवित । उन्दं र्सताक्ष सदिः चर्च विकासमा । तुः श्चिमः चर्ताः से वा विकासमा । **বিল'ৰ্মণ । নশু: বিল'ৰ্জিন গ্ৰুম নদ্ৰ'নম ৰ্মণ । 'ম্ব'ন'দ্ৰ'ল'ৰা নাইন'** व्यवासु'यं नया विवागहार विरारहे वार्मे संवर्ध

ने त्राष्ठ्र गुर्वा त्राय स्वाप सन् र में न्र में वा सुरा की या स्वाप ग्रम

द्वैन्डव्यरप्रतेष्व्यर्भारत्त्। तिःश्वेराद्याञ्च्याः মগ্রব্ধব্ব । ষ্ট্রিমণ্'ইন'র্বিন'ন্নন'ইন'র্ম। । মুমান'ব্রব্স্থী'র্'ট্রন্' दी । श्रुयदे नतु ५ दे स्थे मेश करा । हिंब द्यार दे सहर ता नतु ५ । मन्त्। । श्रुः अन्यापदे विन्। यस्या । । मने यमवे व गुः त स्तः मर्ज्ञेत्। । मर्रायाने वायाने द्राया । गर्वे सामा सामा देर ्र्रिन्व्या । श्रेन्त्यम् याच्यान्यस्य । त्रम्न्यम् । विनः नतुन्यनः तु। । श्वेष्यन् ग्यये विनः विवयश्व। । में ने याने विनः 5ुत्स्त्र्प्यरःश्रुद्धा । देव्रक्व्यायः स्वायहेन्यर। । यगतः देव् रोधयाप्तेनःश्चेनः दुरायहेन्। |यान्तः त्र्तिः निक्रन्याचनः स्तिः ग्रा। <u>इ.चर-क्रुंब-ब्र-च्लर-चर-खा । व्रे-बर-वाचर-व्रे-व्र-प्वबन्धा । स</u> नैयामविवानुष्यम् प्रमास्त्र्व। | यातुष्याचेवष्यम् वेद्यम् । र्रोग्रेवराग्नुम् कुपाययायाञ्चम । येग्रेवर्वेदर्वेवराग्रेनुम् नद्भवरायी विरा क्रियरक्रें बद्यायाय विराधर है। विश्वार्याप देविर विवया है। हॅं-वेशप्तवेव'र्'पत्त्र्र्'पर'र्श्वेद्। |श्नय'पाननः वॅदे'पर्ग'येर्'यरा। |

ड्रेशम्ब्रुन्विन्द्र्षुत्रक्ष्यः स्वर्यः । । त्रिश्यः प्रत्यः स्वर्यः । । त्रिश्यः प्रत्यः स्वर्यः । । त्रिश्यः प्रत्यः स्वरं । । त्रिश्यः स्वरं । । त्रिश्यः प्रत्यः स्वरं । । त्रिश्यः स्वरं । । त्रिश

देरळ्यावरागुवरश्चुवरळ्यायवेत्रक्षेत्राच्यावर्ष्याः स्वित्राधुवर्ष्यः स्वत्राध्याय्यावर्ष्यः स्वत्राध्याय्यावर्ष्यः स्वत्राध्याय्यावर्ष्यः स्वत्राध्याय्यावर्षः स्वत्राध्यायः स्वत्राध्याः स्वत्राध्यायः स्वत्राध्यः स्वत्राध्यायः स्वत्राध्यायः स्वत्राध्यायः स्वत्राध्यायः स्वत्यायः स्वत्राध्यायः स्वत्यायः स्वत्राध्यायः स्वत्राध्यायः स्वत्यः स्वत्राध्यायः स्वत्यः स्वत्राध्यायः स्वत्राध्यायः स्वत्राध्यायः स्वत्राध्यायः स्वत्राध्यः स्वत्राध्यायः स्वत्राध्यायः स्वत्राध्यायः स्वत्यः स्वत

ने त्रश्चा अपापा एउ अव विष्य प्राप्त प्राप्त

भव्यत्यत्तर्भित्व वित्यत्य वित्य वित्य

देव्यक्ष्यं चेय्यं व्यवस्य वित्यं व्यवस्य वित्यं व्यवस्य वित्यं व्यवस्य वित्यं व्यवस्य वित्यं व्यवस्य वित्यं व द्राच्यक्ष्यं चेय्यक्ष्यं वित्यं वित्यं

र्श्वेत्यत्त्रं त्रेत्रं त्राक्चेत्रं त्र्यं व्याप्त्रं । स्य। क्ष्यां क्ष्यं त्राक्चेत्रं त्र्यं व्याप्त्रं । स्याप्त्रं क्ष्यं त्राक्ष्यं त्र्यं त्राक्ष्यं व्याप्त्रं व्याप्त्रं । स्याप्त्रं व्याप्त्रं व्यापत्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप्त्रं व्याप

नुगमा सुनम्मभभन्यम्

स्त्राचेत्र स्त्राच्या श्रुप्त स्त्राच्या । श्रुप्त स्त्राच्या । श्रुप्त स्त्राच्या । श्रुप्त स्त्राच्या । श्रुप्त स्त्राच्या ।

हे पर्वत्त्री विषय्त्र । स्यापि हो स्याय हि प्राप्त हो न स्यापि हो स्याय हो प्राप्त हो न स्यापि हो स्याय हो प्राप्त हो स्यापि हो हो स्यापि हो स्य

यन्द्रम् अस्त्। स्याः स्याः त्र्व्याः विश्वायाः विश्वायः विश्वायः

द्रामुन्य स्वामुन्य त्रिया स्वामुन्य स्वामुन्

अञ्चर्पात्रेशवर्द्राविकावयुष्य हर्तेराया वया वया स्वास्त्रास्त्रा स्वराद्या मञ्जा नेत्रान् देन् 'खेन' मदे की गुरु मिते 'कॅ का क्रेंन 'ता तहे गया द्र गया दर्य। **बि**र्मर ने बुँ व सत्यत्यें य र्वा अस्ट स्टे हैं। **बेव गु**र है के बॅर्प य र्द अ देशक्षक्षत्याक्षेत्रेत्रप्रम् वृत्यं पृष्ठेष् र्यत्येत्रेत्रं दर्ष्टर <u>श्चीरःबॅ'विग्'ॲर्'रा'रे'ल'यदि'र्स्'र्स्स्यस्ग्'मेर्'यूर्र्स्र्</u> **केन्**ष्म्। ब्राबिन्। न्विंत्रन्विंग्येवंव्याञ्चन्द्वेष्यन्वेष्त्र्य इताद्वेत्र्यः रत्त्र्त्र्रं तुरुष्व्।यत्त्रः याः यां वितेष्वतः वः क्रंश्यतः चे रः क्र्रेशः विवादतः चे रः ः ः ः ः ः । । । । । यय। ने'तर्'द्विन'वयां के'र्ययाँ न्युयाया। याने'वयायां नकुन्'र्यया **सॅ**न्। **बहुः न्र**ेरापा द्वुनः पा द्वा संखात तु ग गुलवः घॅरा या सब से नः विनः इववान्ते क्वाञ्चनः तातहे नवाननः वनः तन् नामवा बॅं'त.वुन्:चर्नावें'चर्ना बॅन्'क्रा भेन्'नैद'तृष्ट्रं'च'वेना'चुन्'क्रे। वे'याय हुन'नरः क्रॅन्'क्रेन्'क्रु'हुः हिनः नक्र्। हे'अ'न्य राम्रन् कॅन्'म'न्न खुतानुः बै'ययर्नु'हे क्षर्यञ्चर्पाक्षर्य द्वेतिवेरातहण्युरातसूर् विरामिक्षावरायद्वीत्रया वरातुः हिवामका न्याक्रयान् मेवा धन्दर्भः क्राम्यम् न्युकारतियाः हो। यामाराम् व्यक्षित् विमायस्य स्याप्तम् स्विमा क्वॅुं ता विषा हुता। ने व्यवार्षे । प्रताया स्वापान ता राज्या दे सुन्यं विषायार्थे अन्यं हुस्य तृष्याप्ते हन्यप्य । वे उस्य वन्यं हुः व्रताह्य स्त्राह्म स्त्रा व्यतः द्वाराधिव प्यतः वेदाने । इव इव व्यवितः ह्वा

मश मार्सिन् भ्रापाराये ने राज्ये में राज्ये यम्बाद्याद्वायेन्'तु'त्र्वें'ळेन्'हुन्'प्रवा ने'यावग्'ह्व'वदि'ग्नवका **८ग**'5्रव'वरा। वरि'इस'मेश'५८'८'र-'र्रा'गेशेशश'चश्रेश। 'रे'रागर' पञ्चन्'ञ्च'यदि'तुव्यव्यं भेवान्नः पञ्चेवाने। अ'यदि'तुवारा'यास्यानुवा। র্ন্ধী বৃধ্যুরাস্পৃত্^{তু}বৃ'শ্রুত্বার্মার্মারান্ত্র্বি'ব্যার্মারারা *ঀ৾৾ৡয়৽*৸৽৻য়৾ৼঢ়৾৾ঽৼৢঀ৽ঢ়ৼ৻৸য়য়ৣ৾৻ঢ়ঢ়৻ঢ়৻ঢ়৻ঢ়ৼঢ়য়ৼ৻৸ ৰেশ' यत्वार्यरायान्दा हेरारे तहेवायययरवाहे। यययञ्चितिगायहर यस। त्रिरपंत्रम्यत्रम्यात्रक्षेत्रम्ये वेत्पर्वे म्या क्रित्रम्य दुश्यायत्रीत्याक्षं कं विषायन्य। देवे भ्यवादुः न में वायविष्यात्री नविषा

हिन्द्रिया

हिन्द्रिय

हिन **८ मृथः पञ्च वार्योश्चान्दः मुज्यः इययानययाने वार्यः हेपाः মূচ্**কা त्रेन्द्रपः विन्युत्रप्रत्य। ॄ हेन्द्रप्रक्रकेरः अञ्चिद्रप्र**ः भे**ने इवस्राप्तः स्वर ह्ये र द र भिन् क्रुं पाय कं द से द प्या विषा के र र द र व वि र पाय क्रि र पाय क्रि र पाय के द प पर[|]विंचण|कॅन्'व्या| क्रेन्संति'कॅलान्जेन्'पर-न्यापर तप्पान्च'यान्जेति' 別でかりまりませば

हेके पर्सुन् ग्रीस्प्रिया राहे रुद्र। । मु सुरायराप ते प्रयाद स्त्रा

मविव। ।म धारा महत् की मर्देश महिन की हमा की वित्र में की महिन 夏下1 | 満口「大道有」口三下「古人子」多下、四 | 「元初」中旬「八五五十二 वित्रं क्रीकार्क्षेत्रया । ब्रिस्ट्रिस् वित्रः हीत् धारी है क्रिस् वकागुव्। । विः हणः 部·口声有"不图不同下不觉! |新对内西不口名·盖对内南下河南下! |第下 ष्र्रं वं वं तुः रः बेर्। । तुःष्रं रं वं षः ष्यरः बेर्। । गृहेवः गः रहेवः る下海下、江南下 | 日、下海下、江京、海 ※ ★ N B 下 | 1月 T 下 T 下 下 ボ エ र्श्वयन्तर्भा । सम्पर् द व नुरः सेर्। । नुरः श्लेनवा संभवा । ग्वेराग्तह्याद्वत्बेर्त्याद्वत् श्चित्रा संश्चित्रा । माने याना तहे या उत्ते हेन् में से ना । नुन ल्ट.क्र्ष्यव्याक्र्यंत्रर्वे विवयःक्र्यंत्रीयश्चर्यंत्रयाय्यंत्रित्या । प्रेम्पातह्यत्त्रक्राच्यात् क्रिन्स्यत्। ।त्रन् क्रिन्स्यत् स्यातेन्। ।त्रण 「内です。 女工教が2,1と前 | 内工は成一致、口工可、社、多二 | 口工可、社・ 以切,為,要如母之 「田山,七山上 女士教弘,2,七英 「古女如母上,女人, क्ष्यन्यास् अन्। । यन्यास् श्रेयक्षक्षत्म्यासुरात्सुर। । यहेवाया

विश्विन् क्रिं निर्मु विश्वि व्याप्त विद्या विद्या

रम्प्रम्पम्प्राच्या यहेयाचे विष्युवाच्या बत्रीह्मायस्यात्रम् निर्मानिस्यात् । प्रतिन्नायस्य सम्बद्धाः ष्ठानिवेशयरःगन्त। ने सुनिते नगरा कुरन्त वुरायानन्याता रोर वेरे है प्रवेद रेरेंन वह र राउन व्यापन वास ইন্মনা ब्रुरग्रीयम् तिरामातायेन् क्रुं व्यान् वरीम् वर्षा A & TX + T X 1 **८ग्'न्र**ःश्चुत'र्'श्चैद्र'र्'ग्विद'ग्नर'गे्बागुर'र् मॅ्बार्'बेर्'र्'दे'र्यक्ष र'''' **बै**ण्डण्रुप्रिंद्रकेट्। दःश्वेद्रायाञ्चरायाञ्चेद्रायादश्चित्रायादेखा बर्देयापानाधेव। इयाचरापानने ग्रायाहिन्य। हुग्यान मेन्यापान 황다.다회
美리회다(
文시 নম্ব'শ'ন্ন'রমগ'ডব'শেখন'স্থান'বর্ मन्। म'यापन'न्नुन'पन्तर्गतर्द्रेन्य। रन'न्नुन'पन'न्नुन'पन्यानुन। नन <u>ञ्चरा'रा'बेब्'रा'ग्</u>बब्र'मेबायर'बेखेबा ४र'यर'बेऑर्रर'। शेबङायर' क्षेत्रेयसम्बद्धा विन्'राम्'यात्रानु द्वीतस्य द्वारा सर्वा विन् वा वेदा **दॅरप्रस्थितार्थः हर्षास्यश्याः प्रस्थायाय्यायः वर्षाः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्** राम्चेन्'पदे'पर्यक्षायान् गृर्हु'र्स्रार्थेन्'प्रश्नित्व द्योत्रवर्ग्यं व ज्ता न्वन्द्रन्यम् र्वेन्'नेष्टुन्'यद्रयाय'त्र्'द्रययायात्रीत्'क्रंगीयाक्रन्'नर्न्नी न्नाक्षे ब्राया विद्याचा विद्याच विद्याचा विद्याच विद्याचा विद्याच विद् नैवानसुताविन म्वादि इयवातम्बात्या वळा यत्रातुन्। निवासि **エエママリョノスティョエマンガー**

क्रेयायक्रम्'यरमदे'व्ययस्यत्त्त्

ପ୍ରିଟ୍ପ୍ରିଟାର୍ଲ୍ଲିପ୍ୟା |ଫ୍ରି'ସେଫ୍ରି'ସେମ୍ଫ୍ରି'ସେମ୍'ଆଟ୍ରମ୍'ଅନ୍ମ' | ନ୍ୟିମ୍ୟ ପ୍ରିଞ୍**ୟ**' माञ्चं न हर् होर् दा इसमा । प्रमास्य सिन् प्रमास्य सिन् प्रमास्य षर'स्र'। । शुर्'रेर'शुर्'रेर'शुग'रम्ल'गृहेर'व्यात्वुग । पङ्गेर विन्यक्र्रेरविन्यक्रियविगिष्टार त्रेष् । । तर्रे तर्दे क्रेन् हुन्यय ग्रैस'नेद'रा'इसम्। ।र्जुन'ग्रेन्'र्जुन'ग्रेन्'रूस'मम्प्रान्न'रा'येन्। नश्चित्रिक्षेत्रं से से तहरा । अत्रित्रेष्ठ्वाप्य राष्ट्रेष्ठ्रेष्ठ्वेष्ठ्वेष्ठ्वेष्ठ् ठी: हग्' क्वु: यदे: पॅ्रन: व्रिन्द्रा । युतानेन्द्राग्री: यप्रॅन्पं क्रेन: क्रुन: तन्त्रा । **ৼৢ৻৻৸৻য়ড়ঽ৻ঽঽ৾৻ঀ৾৴৻য়ৼ৻৶ৣ৾য়ৼড়ৼ৻৸। ৢৢঢ়ৼড়৸**৻ৼয়৶৻ৼৼ৻৸ য়য়৻ৼ৾ঀ । ঀয়৻৴ৼয়ৼ৻৸ঀয়৻য়য়৸ঀ৴ঀ৾৻ঀঢ়য়ৼ৻৸৸৻য়৻ हण् हु अदि र्ये । र्ये पर्याण्य इसप्या र्ये रूप् हु प्राप्त हिन्। । छन् बर्गायविग्रुर्गयकुर्दी । तुबारेर्ग्यर्वेर्ग्वेर्य्यायम् व्यवस्ति। बात्रस्वरस्यविष्टंगवर्यवज्ञन्देःन्सन्गु। ।तुबानेन्यस्पेन्यद्वेदःद्वेरः त्र। । तर्ने यर् से हग् श्च स्वरे र्ये। । र्ये तर्ने सग्र स्वर्धे र मञ्चयमञ्जेत्। ।यमस्यविम्राह्मस्यातुः गृह्यस्य । ।तुस्यनेम्राह्मम् बदि:स्रवार् र्वेता । महेनाहे पाम ह्यूनाने पाइन्या । तुनाने पाना र्गः रॅरर् व्यवः स्थर्या । तर्रे प्यत्वे हृगः हुः वरे र्ये। । र्येः तर्वागुरः इतार्वे ररः श्चितापाने । । वास्त्र वास्त्रे सामे वास्त्र वास्त्रे सामे वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त त्यानेर्प्यान् हुर्प्यते हेवागुर्वेत्। । व्यास्य व्याप्तान् स्वाप्तान् । तुरानेत्यान्त्रवान् विवादाविव । तिने प्यत्वे हवा हु सते द्ये। । न्ये तन्याग्रन्दतात्र्वे रनः श्चरायान्तेन्। । श्चर्यकेन् न्र्म्यकेन्

त्रम्यात्रक्षेत्रः संस्थात्रः व्याप्तः स्याप्तः स्यापतः स्याप्तः स्यापतः स्यापतः

नतुन्या भेनताबेन्निः ने'लानक्ष्रित्रताया

धन्यस्य स्ट्रियस्य हेर् यहं व्याप्त स्याप्त स्याप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स्य

के अप्तर्य। के स्थान्य स्थान्य क्ष्रिं स्थान्य स्थान्य क्ष्रिं स्थान्य स्थान

ण्यायुर्या महित्र्यं। के स्वर्धे पक्ष ते या मुन्दि हित्र स्वर्णे प्रस्ते स्वर्णे पक्ष ते या मुन्दि हित्र स्वर्णे प्रस्ते स्वर्णे स्वर

सः देव उद बर परिवयस्य स्र तुर्। । धुसर व इ थे में र्व व। । गुनेव पनेव प्रमुस्य स्यक्ति स्तु गुन्न। । युन् सुन पेर ग्रा गहरान्द्रवेत्। । हिन्षामु । अत्राक्षान्द्र । ना श्रुमार्थः श्रवधरः र विश्वाकुष्टर। । श्रास्त्रश्चना यहारा स्टार्शर वी । श्रीरः अः क्षे म्याब्रेनः ब्रेनः पष्टिन। । मयः अञ्चनः मीम तुनः येययः अर्कनः परा। । षः ध्याः न उद्याद्याः प्रति हो । न हे न ति अन् न न ह न द्वारा हुनः।। श्चीतः श्चार्याः व्यायाः व्यायाः यात्रायः । । तः श्चीः नवाश्चेतः श्चेतः वितः वयायत् य।।। देन्'अतु'गबुअग्री'कृग्'यकृत्य'त्रे । । ब्रिन्'गबेब्'यनेश्वयम्बार्यंश्वया नर्डतायय। ।नर्डन्'श्रुगुरुवेन्'पदि'सूग्'नस्तान्द्रा ।न्द्रार्ट्र्या ह्मन'च ते'ग्रयत'त्रेन्य चुन्। । देव'ठव'यर'च ते'ग्रवयान्ग इयरा । क्रेंयवेट, रामा प्रस्वयान ते के । हैं या तया है सामा । न्नरायेन्'र्यूनरनु'र्द्रम्यायदे'स्रे । । ततुःस्चन्'र्युग्'यदे'स्नर्भ् पतेव। । यन्ग'ग्रन'ख देते झें हुन श्लेयय। । गठन'गत्रन' श्लेखें ज न्यो। । कॅ्रन्याञ्चन्'अत्रा<u>ग्</u>रीत्रान्यस्यान्<u>स्य</u>न्। । ५न'स्न याक्षेन'न्द्र'न्द्रन्या

स्तित्वा विश्व क्षेत्र हितः वर्षा हित्य स्ति स्ति क्षेत्र विष्य स्ति विश्व क्षेत्र विषय विश्व क्षेत्र विषय क्षेत्र विश्व क्षेत्

विषाद्गःत्वामीषाञ्चाः यान् ग्रुत्याने ज्ञानवामा । साने देवे श्रीः प्रविवासुः बॅं'विष[८,५ष[४८] अबे अव र ग्रुट्या ५८] । अवे प्यट क्रीट्या वया बहेया ग्वरंतुः र्वरं है। बरदेशं वर्षेग्दरं सुत् श्रेः तुरापा वर्षेद्रापा विवास्य सं ने'ताप्तभुराद्युरा। श्वाम्ववाद्यवातापञ्चरवापवा। रवार्टानेवापादी बैं'२,तुष विनःस्रैंशन्धेव'मर'मेवाने'सुवव'क्के'म'रे'ग्रुशवकार्यन् क्षेत्रराप्त्रग्रापेराचेदाञ्चरापाद्वयराष्ट्रिरादेरायद्य। अप्रेतिःचेदाखन्या <u> नेशल तुः पर में तरा हुँ न रास्यायतर वी त में न में राष्ट्रया हुर है। स</u> स्रिते वित्रारा स्वयायायर्त् क्रियायाय्या स्य ति स्र र श्री वित्र न्वैरात्य्यापत्र्र्भ्रस्त्रेत्राच्यायायायात्र्यात्र्याच्या राष्ट्रस्त्रम्याउत् <u>ब्रिं</u>न'ग'न् बॅबारा:बॅन'नें ने राव बॅन' हैं 'त बत्यारा ब्रवा ब्रन्' रा बुनारा नवा" ग्रन्द्रियान्त्रार्द्र्याञ्चर्याञ्चर्या द्वरायत् द्वरायाः हुन। ननेवराग्रनार्द्वरायय। यन्त्रपृत् हुनावराष्ट्रीरार्द्वराहुना है। नक्ष'तळेंद'र्य। मदारदेव'र्याह्वर'र्युवायायायने'स्टर्र्यानद्वा न्य। स्रापाद्वराप्य यग्राप्ट्याप्यप्त्री। श्रूप्त्विं स्वाप्त्रा

बेर बेद बद त कुण हु चुदा

देरःख्यादिक्षं गृह्यं द्वाराष्ट्र म्हें प्राप्ते ख्यात्म**्या शुन्पाया** वहरार्थे गराशे हो ५ 'सुवा न गरान हु ५ 'सुवा न गरा रह ५ 'सुवा न गरा रह ५ स्व विव र वि तुर हं अर्द्धुर त्या र के कु अर र में 'छुया राया। विर ' इयया र हे वय वदाग्वाची राजा तुः यहार। देन'रमातान गर्वा इयवा ग्री राय स्ववा र्स्-नेग्-क्ष-इयराधिरान्स्न-प्राह्मराष्ट्ररा अराष्ट्रराद्र-प्राह्मरा हुँयरापर हेराय वे ७४। विषय त्या साहिताय हिना स्थाप हिना स्थाप सि चैव'चून'न'इबबाहिर'हे। ५'खबादिर'नच्-'उन'विन'ळेंदे'**बे'च्न** न्र्याःचरारत्नाःचय। तर्भेत्र्वाश्रुवायाय। नेत्र्वाक्रेःययत्र्यः क्तीं ग्रदाने ग्राम्ब्राप्यप्रम्यं प्राचार प्रते पर विषा द्वार है विषा त्राप्त ने'ग्राम्यून्'परायहेरा'येशकेंग्रेन्य्या चराक्रा'पन् में हुन्हें तस्र्'र्'हुस्पराय। परुरयाद्रयायरामें हु विरातरुष आया ने हुता न्नःश्चनःश्चन्त्रः क्षायन्न्। श्चन्यश्चन्नः सृष्टुः स्वायः विष्यः श्चन्यः स्वायः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः यम् अक्टे अवस्य म्या स्यावा स्याव रेन्युकारक। अन्तरे। ब्रिन्शिक्षञ्जन्तरात्रेष्यनेत मायान्याञ्चन। व्रत्यमार्योग्यम् वेत्। हिन् स्वायर्त्पास्य वस् के। न्'विन'विन्द्रस्यराहिः क्षेत्र छेन्'चेत्रप्य। न्यास्तिः प्यस्यपार्गिः है। न्द्विस्यम्पास्यञ्चरपार्द्र। श्रुःश्चरस्यर्भर्गार्द्रेश्येव।

ष्ट्रें न स्वरा ह्रें न'सरा पत्रमार्थे प न न न हे न' हे न खें न स्वरा से रम्बिंचन् द्र्रम्भिन्वत्र्विन्म्भिक्ष्य। श्रीम्बेंन्म्स्रिन्य ह्रेर। ने'पर'वेर'व्रॅन'रर'र्घ्य। श्रेर'वॅ'वे पर'र्घण'र्छन्'व्'वेर'वर' न्द्रेश्या वित्राराष्ट्रियाच्या वित्रारात्यक्षेत्र विश्वारात्यव्यवस्य पर्या राष्ट्रं न गत्रसुपान्रामुलळेलाचु तळेलाचुन्यस्वि न मे न में रापा ग्रस्थिये देशी द्वा सुग्रम् द्वि । प्रस्ति । प्रस्ति । प्रस्ति । तर्सवायुति ब्रीमान्यमा उत्तर के के नावनान में शततुना पर्या नाम वस <u>ब्रॅंबायक्रद्यां वर्षे श्रे गुवारु श्रेष्ठे रायस्त्रं प्रायत्या ने स्वार्श्वे रायश्यात्रा</u> <u> ५८: क्वपंत्रम् क्वेर्प्यक्र्र्प्रस्थ</u> के स्थान हिन्ॱॐक्षप्य'गु**क्'न्न्'अन्'कुन'**र्सेन्'यर्सन्'न्य'बेर्न्न'य। न्नःसं'न्यय**ा** पात्रेन हेन के के बनक विन्तु न कुन क्या के कुन न में है तन दि केना यभ्रावश्रवश्रि राष्ट्रियश्यापारराष्ट्रिष्यक्रस्यार्ग्यस् म्बिराह्यं म्बारस्यादान् म्बारमार्मिन्न्र्रित स्वास्तरिः श्रुप्तमार्चे राज्येना *ॹॕॖड़*ॱय़ॱ॔ख़य़ॱढ़ॸऀॱग़ॖॖड़ॱॸ॒ॸॱॹॖय़ॱख़ॕॺॱॵढ़ॱख़ॸॱऄढ़ऻ<u>ऄॖऀ</u>ॸॱॻॖॸॱऄॗॸऻ<u>ॗ</u>ॸ॓ॱ दे द पति र्क्ष्यप इयका मेग पार्के कॅरि छ सुग व सु क्रूर उरा। प्रयस क्रुर मॅन्स्-स्वेन् न् म् व त्यायस्व प्रकात्तु न त्यापा के केवा स्निन् में व की য়য়ৢঀ৾৽ঀ৾৽য়ৢঢ়৽য়৾ঀ৽৸ৼড়ঀ৾৽য়ৢয়৽য়য়৻৾৾য়য়৻ ८*५*'र'८२^२.८५२^२.६४'र'ब्रू-अवर्घ८'। ८२[.] वेग्'राकेव्'र्येग्र-'गैक' खन्यभिन'हेर'नव। तर्ने हेग्'र'गुन्'मुं'यर्क्ष्ण'रन'ळेंदर्नेरखनवाकुवा

ञ्चाना में के अत्वयक्ष के क्षेत्र प्रकृत में क्षेत्र के स्वर्ण के क्षेत्र क्षेत्र के क

वत्र। श्रेः इवश्वत्रं ते। वित्तं प्रत्यं क्षं प्रते क्षं श्रुं ते वित्रं श्रे हित्रं श्रे हित्रं श्रे हित्रं श्रे हित्रं वित्रं हित्रं हित्रं

ग्रॅल'८ नेपरान्य'पॅरि'ग्य'८ हुग्'ऐर| । हिन्दान्यर्रेल बेन्'री कर यःगमयः। ।सेवसभेन् प्रवित्रसेन् परिः हैं व ने न सा । विवस वेदः न स महेराक्रीक्षेत्रम् इता प्रवा । त्रह्मार्क्षम् भेर् प्रतेष्ठ्रेरात् भेरा । भेरता माबेन्पर्ने विषाप्रहेत्। । यहं न्प्रश्चरा माने देश हुन मेरि हुन मेरि रहन। । वृष्ट्रस्यातुष्यःद्वरेषाः पाञ्चेष । सनः जुनः सवाधारे हे पः र्यय। ग्रॅ इपायुर्तात्रस्थरस्य ग्रेत्। ।यस्य पञ्चात्रस्य नेवास्य हे अप। इअध्यः तन्नर विते तर्वश्रयः । ग्नि वश्रार ग्रायन् विते तन्न शतुः षेषा । १९ ५५ वें वें राये प्रस्पात केर्या । बारय त्यूरी हें रायक ग मश्कीयक्षेत्र । पर्याक्षात्र्र्यम् मुराधिति क्षेत्राधित्। । श्री तक्षान्त्र क्कीपायायाय ने पराणिया । कियाया में दा के मार्थ के किया । या के दाया संक्रा ग्रैस'बे'हॅपय'पय। ।श्चन'द्यानुन'द्या'श्चर'रादयय। ।श्वेन'द्या मक्केन्द्रभ भ्रायम् ल्। १५ मान्य ख्रान्य केन्द्रभ द्राय केन्द्रभ वा **न्यातः पश्चान्त्रावः न्यावः प्रावः प्रावः । व्यावः स्वः व्याः विद्याः विद्यः विद्याः विद्या** विन् द्रवय। विन्यं प्राप्त प्रम् विन् ।

 पर'होर'केंपहेब'डे'पुरावस्। ध्याक्षेत्र्यायाररे' स्वरामुरावर्षर पा **এ**ব'ব| ট্র**্'**ন্ন'ব্রীকাশ্'বার্ক্ন'বার্ক্ন'র্নার্না র্জ'র্ন্নন্ত্রেম' ण्वत्रुर्देश्राप्तिण्यस्यत्रुण् कैश्चार्यः वेत्र्वे व्याप्ता र्कः पॅर्रा राज्या विषयित्र वि मरायापाय। स्रायंत्रे सन् स्रायंत्रे सन् स्रायंत्रे स्रा परःइतातर्द्वेरःपतेववतर्द्वे तथाक्चुःयधिवःपदाद्विन् मनः वद्येतार्वेरः "" विग्गानिहर्मात्राक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाक्षेत्रवाकष् पति'पर्ह्नन्'प्राशु'तापर्क्क्ष्य। **८'२८'र्ने**'तुप'ने'त्र'वेट्-मेत्राक्षेत्रं द्रिन्'ति इयराग्रीरागुर्-छेन्। सरसाज्ञुरार्वेन'प्रतिव्यवसायवर्वेन'प्रवर्वेग क्रियाश्चरमाधित। ने क्रियामि हे वाया ने धेन निमा नयामि क्रिया <u> ५८ वह या पाया पाता पाता वे दे दे वह भेवा पाता दे वह वे वह है के पाता वे वह वि</u> <u>द्रैव'यब'र्</u>षे अ'यन्याज्ञुस'र्वेन'पदि'र्श्वेब'यस'हग्',तृ'द*दे*नस्। क्टें'दर्नर बिट:रु:अ:बर्'वर:पंपर:व्रेव:धराकेंग्'ऋय:प'व्रुट:प'क्रर। षरः वै'चरः सवका है। र 'गुरः दुवः क्रुवः प्र' स'त्रुः यरि व न वकार व 'वे दः प' **উষা ক্রন্দের্বাধার্যার বিদ্যাল্য বিদ্যাল্য বিদ্যালা বি** 당하게 여주·원도하지 |

हे न्न यदे प्राप्त दे न दे निर्देश हो न प्राप्त हो न प्र

पञ्चरः त्या अरुरा विराधित स्वायाम स्वायाम स्वायाम स्वायाम स्वायाम स्वायाम स्वायाम स्वायाम स्वयाम स्

वेशपतिः ब्रुह्मस्यापत्। अ ने व्यो क्रिंगपानहर्में हाचार्ळः में तर्ने तहाताचे सप्पेष्ठा प्रातास्य प्रेरा

स्थान्न त्या प्रत्या कृत्व वा प्रत्या स्थान त्या स्थान त्या स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्थान

सुयान् बीत्रयामदीप्रामकत् मुकायादी यन् गानुवा स्वामान् परः ठवः विषायाञ्चेषाञ्चेषारः नुः रेष्ट्रिन् । दिनः क्ष्रिषाराञ्चे र वि । दुनः नुनः नवः । " **८८ ५८ मध्ये स्थापं स्यापं स्थापं स्यापं स्थापं स्** <u> वृष्णिक्ष क्षात्रमा क्ष</u>्राचीर वृष्ट्र द्राप्त हे प्रदान विद्या क्षात्र क्षात्र क्ष <u> चेत्। ब्रम्भेभे उत्युब्रम् इव्याक्षेया मिश्चेरः यत्ये त्रम्य कें त्रीये सुर</u> राम्या कुराम श्रुपार्थे। । यन ग्राग्वेशन्या मकत्र तने द्वारा स्युपाय स त्र्वेद'ययञ्चत्रप्रेष प्राते'न्य'यउत्तरे' द्वय्याययत्प्राव्यक्ष्याः पांबी हो न पारि की खुरूप सामि न में हुन पार्या न सा कर हु। यहिंसान साम करा पतिःर्केशन्नः यहतावय। श्वनः राष्ट्रेनः तुरापति श्वेः शुरुः श्वेः परः द्वेवः ঀৢ৾*ঝ*র্র্রনমণী**ণ** উম'ন্ম'নভম'ব্ম'নভম'র্র্র্নমের'ষ্ট্র্র'মম'য়ৢ'য়ৢ'৸ঀ 型と公式||

मुन्ना भूजा कुर्या कुर्या प्रसामित स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स

ने'न्यांच केप्'र्व्यार्थन्यात्वा स्ट्रिं स्वास्थात्वा स्ट्रिं स्ट्रिं

₹·देतहरःहेन्सरःवित्रु। । बुरःरेविरःवेन्परःवेनःविनः

滿口和 | | विवाद केंद्र व्याद कर केंद्र व्याद क

ने'वश्वे'अर्द्रं-ता कु'त्रह्मत्ता व्रवम्यं कुंश्वा व्यक्ष्त्रक्षेत्रदेः

हे व्यक्षित्रे'त्रव्ये त्रिं त्र्वे नेंक्ष्रव्या ह्या'त्रव्यं व्यक्ष्यं कुंश्वा ह्या'त्रव्यं व्यक्ष्यं व्यवक्ष्यं व्यवक्ष्यं व्यवक्ष्यं व्यवक्ष्यं व्यवक्ष्यं व्यवक्ष्यं व्यवक्ष्यं व्यवक्ष्यं व्यवक्षयं व्यवक्ष्यं व्यवक्षयं व्यवक्षयं

ने'क्रांसंग्डेग्'र्रुसंस्थान्त्। ग्वर्यनेराञ्चेन्'र्सेन्'र्स्तुस मदिविः रामन्द्रित्वव अर्थन्यात्वात्वात्वात्वे। मिव्यायात्तिः तित्वा वेर-प्रवासन्। क्षेत्र-'ब्रुवःयार्ग्यक्षेत्र'यति'र्वे ब्रुवः'युवः'यव। भेत्र'भेतः रत्वात्र्षेष्ट्रस्तर्भेत्र ग्रेन्त्रहे। विन्किश्चन्ज्वन्यन्द्रित् देन्द्रय्यायाक्षेत्रविन्त्र हिलाक्षेत्रपान्यरसंहर। विष्क्रित्यण्यास्य याय। मायात्रात्रेत्रवाराज्येपमायेन। येन्'तमात्रुत्रात्रारामें'तनेग्रास्तरा सन्याया तस्तायस्त मुन्द्रम्य सेन् मुन्द्रस्य तस्त्रा तस्त्रा श्चित्रायां यह ने ने वारा करे दिन होता । वर्ष ने वारा दिन होता वार्ष होता होता होता है । व्यत्रेष्याचेत्। यन्तुः ज्ञन्याव्यायायन्यन्यन्यव्ययाया न्यातः ষ্ট্রীক। অক্ট:অ'ঈম্মক। শৃত্তীপাদ্রব্ধীন্তীন্দ্রম্মক্র্মিন্দ্র त्रे वित्रे स्त्री वित्र स्वर्श्य इयान्य हिन् स्वराप्य स्

विश्वस्वर्क्षतिवियव्यायञ्चेयस्त्रिन्द्रित्रं स्वर्षित्रं गः न्तः। श्रेश्वरः यदि श्रुनः ने रेश्वेषुनः। मक्षापराष्ट्रे रामः तपातपातः बदर्शहोत्रवस्तुग्धतेत्रग्यात्र्त्रेयस्य हुन्य। नः अर्धेन्य न्निः दे ८५ग'चेरम्'अद्मभार्चेशस्र। क्षेत्राद्मभाव'रे। वैव'मर्'८दे' हुर-र्ववराधेन-नवर्ध-द्वेशन्तः। न्रिन्तर्वन्वान्वराधेन। न्रिन् षद्रत्व चेर्या । विरामन्य । विश्व तर्गायान्या म्यातन् वेद। रेतन्ता क्रांचा वेदा केदा विदानी ८क्ष्मां वेर्पाया स्वारिश्वरि, केर्यास्य प्रति, त्रेया । प्रति क्षा स्वरा स्वरा स्वरा स मन्द्राया मदेवह्रवामहर्देशेरख्यापदेवर्द्र्रात्रा मुश्का य[•]के'प्यत्रक्षे'ततुत्र्।पन्तः। गुवन्त्।पन्यकुरःहे'न वरार्थे:न्तःश्चन्व द्भग'नी हे स्वराखुताव्या तरीतर्नरायर्निपारी वर्जरहे। देन् **इयराग्चैरापराप्यापेरीयराउन्दाह्यराग्चियरादम्बायर्थम् । देन्परा** इयराक्षियेग्'क्वॅर'वर्सेर्'रेग'नेर। गुरा'गुरा'ठ्य'द्रय'र्सेर'। नेर'र' षर्क्षः चरात्रः कुष्प्र-पराधान् गत्रः सुर्द्धः स्पान्धः। स्राप्तः खस्यने देवाये प्रमान्य विस्थान्य स्थान्य प्रमान्य विष्या प्रमान्य कृतः ने नवया पनत्यं क्षेत्रा हुतः पत्र। व्यातः स्थानः व्यातः व्यातः क्षातः क्षातः व्यातः व्यातः व्यातः व्यातः व <u>ज़ॕॖज़ॱऄढ़ऀॱॻॹॖॱढ़ॹॺॱॻॺऻ</u> ॸऀढ़ॕॎज़ॱॸॖॱज़ॺढ़ॻॱॹॕॗज़ॱऄढ़ऀॱॿॿॱक़ॸॱॸ॓ॱ पर्या वरुर्द्दरव्यान् वृत्त्वाया दर्वा पर्याप्त्राम् व क्रुवापान्ता

स्वन्यं छो हेन हिंदानेन चुनायस। वित्रः स्वन्यं स्वयं स्वयं

ने'वराध्यम'र्थे'वरिव'र्दस'र्सम्'नदेखें। स'वराग्ने'हि मन्मेन्द्रवर्ष वयार दे धिव। महमया नह व वया में राज्य या माना व राज भू राजा न त्रे भेव'र'त्र्'हेर'प्या स्वावक्षेत्'चुबार भेव'र्त्त केपेव'चुबायबा रते र्श्वें त्यस्मित्राहे। हिन् मस्याप्न बत्धेव वस्य हेन। धेव पुत्र हुत। क्विन्द्राचे त्रव्यविष्युतानु रिम्ब्यादी व म्बाविष्युन व्यविष्या नुःर्सरः। ने वरान् परायने गारायम् न पाधित वया ने रा ने गाधित है। हिन्'इबल'नर उन्'नदीनलाबेन्'गुलपावा हिन्'रन मृन'न पने'र्ह्विन ने'ग्राक्टिन्चेन। देंब्द्विन्'नन्'इबराबे'ईन्ब्यान् उँबर्यनेग्'गुरापरा। बे[।] यह सन्नु: यह बाब बाद 'यह े त्यात ने यहाय दि ह्यू र ५ के बाने र | ह्यू र पें द बन्नराम्ह्र-प्रमान्यम् वर्षेत्रहे। विचेत्रने वर्षेत्रवर व्याम् । व्रिन्यान् विपानुवायवा दिवावयाविवान् विवयातित्वानेन

पर्या म्याधिन वान्यां है निम्यां न्यान वान्यां निम्यां व्यागुन्र्परगरम्याया । मययर्गन्त्र गार्चिमः गुरुप्य। देवः व् विवा बेन्'मनसन्द्रीतनुग्'नेर'नस्। द्रं'सन्द्र'नस्य'न्नसन्द्रान्य भिन्न है। विस्तियने सेन प्रमाणित क्रिया स्थाप निर्माण **घॅरा**डेवा'ग्रुस'यस। बॅर्रा कॅर्'रे। बॅर्रा'ग्री'कॅर मॅस'तर्दी'ता'वा हुवास' यह दा ५८-[मः चनवात्रित्या हुर-दें नवाकी तत्न वार्य-रामकी वा वी नवा **ड**राउर-क्रिंत्यन्यत्यम्ब्राइंन्यक्रां त्राह्मरः विद्यातुः क्रिन्तिक्रिलेवाः त्राह्मरः Nया हुन्।पा'न्र'क्रेन्'हे'न क्षेत्र'हे रा'क्षेत्र'हे रा'क्षेत्र'क्षेत्र'क्षेत्र'क्षेत्र'क्षेत्र'क्षेत्र'क्षेत् र बिख्याय्यं प्रति प्रण मियायेग पिता है। इं विषा स्राम्य र्दुः भुःतुः न्दः यह्या क्रं नहिन् । स्वा नहिन् । स्वा नहिन् । स्व नहिन् । स्व नहिन् । स्व नहिन् । स्व नहिन् । <u> चित्रप्रतिकेत्रले हेन्द्रिक्षण्य प्रतिक्र</u> गुडेगायान्यस्य स्निन्यान्नायत्व्यस्यस्य स्वा नेप्तराहिन्यन ₹*য়য়৻য়৸য়ড়য়য়ৣ৸ড়ৢঀ৻৸৸ৼ৸ঢ়*৻ঀ৻৸ড়ৢ৾ঀ*ঀয়য়ৢৡয়৻ঽ৸*ৢৠ चैन्'रा'न्ग'अ'रुन्'केश्वा क्रिश'वृत्र'य'र्चअ'क्कि'तन्'वेरा'कुन्'वेर'यन **८ इत्यापान के पार्क मार्थ में के प्रमाण के पार्व में मार्थ में** नन्वित्कुन्पन्वाकारुन्छे। त्र्यायत्न्त्रंतन्तिःवन्त **ন**ন্দ্ৰ ক্ৰিয়া নহী স্তুৰ্ভিশ ভ্ৰমণ নহী দে প্ৰতি স্তুৰ্

到一

हेर्देश्रुव्यायर्गतिव्ययायत्तु । । क्रिल्दिः त्रुं भेशा विद्यापर **डीब**'जीब'र्ह्ने नवा । घ्रण'न गर हः बॅग्न सुः अर्थेन स् **ॅर्स्टर हे. व् । निर्ने क्रिक्स पर्हे स्रक्षरायाना । क्रिक्स क्रिक्स हे हिसायहरा** वर्षा | ह्रेन्यप्रतेश्वर्षाञ्चराञ्चरायाय। | द्रिन्य्त्र्राप्तेर्रेर्व्याञ्चरः मन्। म्हिन्द्रायतार्यते विन्तरस्य न्। । सुस्य हृत् म्रें स्य मण् मूर न्दिन्। नदी । तन्तर्राष्ट्रन्याः क्रूंबरायते क्रुं खुरायदी । द्विः कृन् में दर् पत्रे ते ब राष्ट्रित पत्रे । । शे प्रते शे म त्र प्रते व स्पान्त । प्रते प्रते ব্র্ব্বের্ম্বর্দ্রম্ভ্র্ট্র বিদ্যুত্র বিশ্বর্দ্র্র্ব্র্র্ব্র্র্ मॅं पॅग्'नीक्षेट हेरी तहता गुरु। विषय ने र ग्रुट ताता र्यटा । विट्रं क्ययाप्तराप्त्रव्याशुः र्यम्य। | म. क्षें सुनः व्यापक्षे कः येन् स्य। | हिंत' पति'त्रान्त्राञ्चत्राञ्चनायात। । नामेन्द्रान्त्रान्तानु । देते क्षेत्रयत्राम्वन् नेप्टर्र् दहेन् प्रस्पाय

श्चित्रं होत् दित् यत् च्या व्या विवाने । वित्तं ते अत् वे त्याव विवाने यत्या हुवा विवासन्यम्यत्वा विकासवा विकासवाक्षीवनः वदाविवादाने। ने ने मंनन ने हें हिते नहीं न राया ने न न है न न रे मान सा की मान न रीयरा ठन्। वित्रत्ता वित्रता वित्राहि दे हिंग्या श्रीरात है द हा नित्र मुःभिन् नेर पत्र। वे न्यार य सम् संस्ति। मनेन्य र तार ता है। Ĕॱॹॺॿरत्त्वरवाद्य५५५०ते बुल्लंबिष्याक्षेत्र हेवाद्यक्षेत्र व्याप्त्र विष्यात्त्र विष्यात्त्र विष्यात्त्र विष्या वेरवर्-५'६रापदेश्यरवर्ष्यये वुर्-द्या वार्-६'६ धेव्पर्यं प् संप्रतुष न्दारींदान्दायदांद्र निवित्तराव्यांद्रण्याह संराह्यस्य लाको तर्ना क्रेंश मेंन तर्ना व निमान निमान ने निमान के निमान स्वर् पर्मा हेना मान मन्वाक्षवा मात्रमान्त्रुह्याम् तीक्ष्मार्भे मान्द्रा है दिन्द्रव तरेयापार्चेत्'छन्'विगातरुग'याने'गन्'विस्वयात्रग'न्गरःहः'स्रेरश्चेत्रा विस्है। मूर्य वे न वार देश राया। स्री गाय मित क्षेत्र में विस्ता में स्थार में विग्निहें स्ति हिन्दी देशरा वस्य कर्ष कर् सेर हैं में देश विद्या वर्ष महें स म्देन्या म् उराज्यानुःकः नदेः यग्रायान्यानः सः हैं जेन्दे ना है राज्यान शुः जेववायात हेवाया या व्यवस्थवाः इययात् कवाः या वित्रपादे वर्धेनः वया म्बाबरायडे.मुब्दारायडाक्रेश्यतह्रवयारायवा ह.ह हेव्यस्चराउटे. दुःळ'प'ततुग'चेर'प'घॅरा'पर्याचे ळॅयाचॅरा'हे। ष्ट्रिन'श्रेषेद'द्रया'तदे थेद्र' बेर। रक्षेत्राध्यापान्गत्येव व्यापया सन्दिने यह । तर पुरिस्या ८.पाप देशवेश व्य.ह.क.ह.च्याच्यार प्यातियात्र क्यां रेवा रेवा च्या चकुताततुन् दलकुराधे हायेवायर नेवाहे। दनतात्र प्राप्त विकास म् स्तिः स्त्रीः स्त्रे स्वर्धः स्वर्धः स्त्रे स्वर्धः स्त्रे स्वर्धः स्वर्वरः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्य

हेश्राक्षक्राक्ष्रव्यात्र्वात् | क्रियाय्याम्हेन्याकृत्राकृत्रां व्याप्त्राम्याहेन्याक्ष्रां व्याप्त्राम्याहेन्या | क्रियाय्यामहेन्याकृत्राहे व्याप्त्राया वियाप्त्राया वियाप्त्रायाया वियाप्त्राया वियाप्त्राय वियाप्त्राय वियाप्त्राय वियाप्त्राय वियाप्

प्रमा

हिमान्यस्यायायम् तर्रा | क्ष्याक्षेत्रम् ने स्वाविषायाययायम् । विष्यक्षेत्रम् ने स्वाविषायायम् । विष्यक्षेत्रम् ने स्वाविषायायम् । विष्यक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम् । विष्यक्षेत्रम् विष्यविष्यम् विष्यक्षेत्रम् । विष्यक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम् । विष्यक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम् । विष्यक्षेत्रम् विष्यविष्यक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम् विषयक्षेत्रम् । विष्यक्षेत्रम् विषयक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम्यविष्यक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम् विष्यविष्यक्षेत्रम् विष्यक्षेत्रम् विष्

ने'व्यावण'तणत्व्यावहेयायेयान्'यरहेर'ग्न्र्। स्थक्रः महरात्यायर'ग्विरहेये हर्र्राण्येर्प्याय्त्रिं हुर्राच। राक्ष्येय्र्र् हिन्प्र'न्रहणहे। रात्याय्यायेर्प्यस् हेर्ह्रात्रुण्याने'यह्र

व्या गृहेशाग्राम् कं दुराक्षाय्त्रायार विरायत्त देवसायायार स हे सुत्राकन प्रत्यापत्र सुन परितरामा ये मुन्दरी न ज है त्या जन वदापक्षानुमधित्वेमस्य देशतन्त्रापत् पर्यम् क्रियरान्यस्य त्यं वे नवा नुवा ने वा वे वा विवा के त्र वे नव विवा के त्र वे नव वा त्र त्य त्य नव विवा के त्र वे नव विवा विवा रॅराबेर। बरेशसे निरो ८ छनिरानस्र क्रूंबसरे केसामुराबहर। व'चलर'वेष'न्यागुन्द्रस्तुस्रु'हर्नेर्द्रम्य। न्यान्द्रस्तिः केन् त्याचर्त्रार्श्वराष्ट्रवात्रार्थात्र्वात्राचित्रां वित्रां वित षरः ह्र राष्ट्री राषेत्र पद्मार स्तु न् 'कु कु न । क्षु न पार्त्ते वा न न न व वा तन न पद्मार प पञ्चपरापति क्रें येंग् रंक् 'प्रमा केंद्र' पञ्च प्राचित्र से क्षेत्र प्राचित्र से क्षेत्र प्राचित्र से क्षेत्र से क्षेत् सतुव्यत्। प्रवेद्यन्त्य्वत्र्य्याच्यावस्य स्थानवाः सेन् क्रियान्यः होत्रिः में क्षान्त्रः स्त्रायम् व्याप्तः स्वीत् में वा मिलायमः स्वीत्र व्यापकार्यान् ढ़ॢॕॺॺॱॻॖॸॱऄॱ<u>ऄॖ</u>ॸॱय़ॖॺॱय़य़। ऄॱॸॱॺॱॸ॓। ढ़ॕॱॺॱख़ॱॾॕढ़ऀॱय़ॺय़ॱय़ॱॾऀॱढ़**ड़ॱ** विवानिका<u>र्</u>देववाराधित। तरीतवाग्रन्द्वाराविवानिकार्देववारातिवाः है। ग्रुम्मनस्य स्थेत् प्राचेर प्राचे स्पाय। स्थिति प्राचे स्याध्या নম্মানীমান্ত্ৰভিনান্ত্ৰপ্ৰি ক্ৰিণ্ট্ৰমান্ত্ৰমান্ত্ৰীন্দ্ৰিম্মান্ত্ৰ रत्यर्परम्प्रत्व चैया प्रयम्भास्ययास्य वर्षे मुस्ति स्राह्म

हे ब्रायदि सुः साग्रस्याचार नेतरा । ह्यून श्रेत् चे त्या ये वित्र हे त्या ये वित्र हे त्या ये वित्र हे त्या ये वित्र हे त्या ये वित्र हो वित्र हो

स्यापा । इ.स्रिन्पर्ने दालके बुरावा । इतार्वे रावस्वारा हेवा राषित्। विवाराः ज्ञेषायाधीयायाधीरावितः। विरार्धितः व्यवस्य छन पर। दिस्र रिने रातके तुस्र । |इत्य तर्ने रायस्य पार्टे प्रया षेत्। |मे पक्षे वेसवार्के रहिना | र दला मुखिलाया वर्षे पाना । रेष्ट्रन्दरेद्धः दुस्य । इस्यत्युर्ण्ययार्थेष्य । १९० दुल'बुर'बबातहेरा'प'र्र'। ।इ'बुबातस्'प्रेबाच'प'द। ।रे'ब्रॅर्'ररे द्रतक्षे नुस्रत् । इत्यत्रहें रूपस्याया हें प्रायः भेता । र हें व्रक्षे हराबेन्'य'न्न् । वन्'व'लगहराबेन्'य'द। ।ने'विन'यने द्वारके तुरात् । इतार्वेर्ययययप्टेंग्यापित। । रातार्विर्वे वेर् मन्ता भिन्द बेबेन्या । रेविंन्यरे द्वा । इस तर्ते स्पर्यक्षयम् हें प्रयासम्बद्धाः । सः प्रस्तरः तर्ते : के बेर् मः प्रमा । तर्त्वेरःतरायापः हें गराप्येत्। | वि.वेन् खन् नते च्वा खनातु। । ह्वन र्मातकः नतेः श्रूनात्मातने । । त्र्रानितन्तिन्तुः रोतवापरः नेष । रेनवा ब्रायस्थाराङ्ग्रेग्यराध्येत्रा । च्रायसा

सहवारान्त्र्त्वारान्त्र्त्वार्थः विष्यान्त्रः । प्रत्यान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त्रः विष्यान्त

धे क्षेत्र द्वार क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र प्रमाण क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्यापत कष्ण क्षेत्र व्यापत क्षेत्र विष्य व्यापत व्यापत व्यापत व्यापत व्यापत व्यापत व्य

क्ष्रबर्धा होन्यस्तित्व यहार्ययस्यः हिःस्सः वि त्रब्धः यः क्ष्रस्यः हिन् तिस्ति विस्वत्वेत्यस्य हिन्दिः हिन्दिः विस्ति विद्या होत्यः विद्या विद्या हिन्द्या हिन्या हिन्द्या ह

मिन्'ग्री'खराञ्चन'इयराहे'डेर'र्सन'वयाङ्ग्रीयाबी'वुर्स्रायाद्वीन'वितेषी क्षेत्र क्षेत्रस्यायस्यवेष्यस्थित्वेत्रस्य स्वाधान्यस्य स्वाधान्यस्य स्वाधिकः मनेष्यवस्यमञ्ज्यम् देते वर वर्षेष्यस्य स्वयं वर्षा स्वयं र्श्वेद'रहेंद'ऍद'*५द'नु'च*ड्डर'मदे'बद'रग'इबद्य'न्र'| ह्यन्'मर्'दिदे' पङ्ग्रेश्वराधते'तुराधरा। **४**'वर'तु'[एशरायतुराह्य:क'म'नरापते' बह्यायान्य विषयान्य विषयान्य प्रत्याच्या स्वाप्त विषयान्य विषयान्य विषयान्य विषयान्य विषयान्य विषयान्य विषयान्य क्षेत्र हरासुक्षणवर। हुराणवर। न्वेणक्षराह्मक्षरात्रार यहा हे। पर्ने न यत्र के हैं न परि ल अरा सर्गे कें मान इसरा मा है न हैं। य। र्वायास्याकेवित्पाह्यप्रवित्रित्रवर्षेत्रवर्षेत्रवर्षे **छुन्'रार-'ठव'क्रेक्ष'हे। गेगकामार्ज्ञान'व कार्क्रेब'इवकार्पव' हव'र्नु'र्ने** त्व्। इयाक्ष्यात्त्वा इत्राम्या क्ष्यात्र्या क्ष्यात्रा क्ष्यात्रा क्रीक्रं राध्ययाः उत् हे दार हो सत् भें होता। ने प्यत् गुवान हो सत् सेवया ट्टॅग्राब कुर-५८- इसपा सम्भाग क्षा स्वा क्षा इस्ता दि के विकास सम्

त्रिंग्त्र| चुर्याराद्वेत्व्यं । वित्रांत्वेत्व्यं चुर्यारादेव्यः चुर्यात्व्यः चुर्याः च्याः च्यः च्याः च्य

प्रतः हे ने परंत्र त्रात्त विश्व वि

भाः अद्धवः विद्यादे स्वाप्तः त्या स्वापतः त्या स्वापतः त्या स्वापतः त्या स्वापतः त्या स्वापतः त्या स्वापतः त्य स्वापतः त्या स्वापतः त्या स्वापतः त्य स्वापतः त्या स्वापतः त्य स्वापतः त्या स्वापतः त्य स्वापतः स्वापतः त्य स्वापतः त्य स्वापतः त्य स्वापतः त्य स्वापतः त्य स्वापतः त्य स्वापतः स्वापतः

संद्रियक्र छ । 124 प्रत्रियक्ष छ । 124

इयरापन्त्रया संयद्धरकेर्त्न्यम्म्याचेरकंप्यव्यत्ष्व्यत् हेत्र्यः च परिःपरःया

छि'रामान्न्वित्रामान्नेन्। छ्नि'रामान्नेन्। राज्यान्नेन्। छन्। स्राप्तिन्नेन्। छन्। स्राप्तिन्नेन्। हिन्। स्राप्तिन्नेन्। स्राप्तिनेन्। स्राप्तिनेन्। स्राप्तिनेन्। स्राप्तिनेन्। स्राप्तिनेन्। स्राप्तिनेन्। स्राप्तिनेन्। नेन्। नेन्। नेन्नेन्। नेन्। नेन्। नेन्। नेन्। स्राप्तिनेन्। स्राप्तिनेन्। स्राप्तिनेन्। स्राप्तिनेन्। स्राप्तिनेन्। नेन्। नेन्। स्राप्तिनेन्। स्रापतिनेन्। स्राप्तिनेन्। स्रापतिनेन्। स्रापतिनेन्नेन्। स्रापतिनेन्। स्र

व्यापान्यते विस्ति व्यापान्नियार्थित् गत्याः स्ति विषाधितः विषय शुःतत्त्राप्यत्र तुः उत्तातिक्षाः हेन्यति। स्ति व्याप्ति। स्ति। स्ति व्याप्ति। स्ति। स्त

त्रत्राष्ट्रीत् द्वर्या ग्रीक्षाय क्षेत्र व त्रिया है या त्रिया है य

व कुरु के विषा कुन्। । त विषय व न र मा च न न त हैन । । ह त है व व **२**हें | । हें गबाव न्रायि गिन्यबान गा हेर। । क्रें बाव न्रायि हुं इन'स्ना । तहन्यन्यं द्वेंद्र'केंद्र'केंद्र'तहन् । स्वयं नेयान्वेया क्षेत्र अपः व्रुत्। । त्युतः बेत् पह्ना परिः मृतः बेत् पद्ग । अगः स्तरः क्रुन'भी'बद्युन्थयन्त्र'यञ्चर्या ।ने'त्य'नेया'चत्रे'ब्रिवु:क्रुन'ब्रॅन्। ।सेया'केव्' रोयरा'पञ्जे, पञ्च 'क्रें वा' केंद्र | विद्यापयय द्वें सप्ति देश प्राप्त केंद्र | नर्भन्। विश्वतं क्ष्मां क्षां क्षां विश्वते वर्षा विश्वते वर्षा विश्वते वर्षा नेयन्ताकुरतान्ते ने त्यान ने वाया । गुन् वानितह्यार्थते ह्युवायाया । र्दिन वि : बेन् परितिष्ठिंग किंग प्रज्ञन । । बंन :बेन् प्रवेश वे क्वें :बेन प्रक्रेंन । । बेहारपाईवाधियदेवायईगय। । धूरापानेदानीगत् बाला । व्यवसा एस्याच्याः स्थाः क्ष्याः व्या । व्यात्मा व्याप्ताः स्थाः । । यन्तः तसेवः या कुषा विवया प्रेम्यायात येव। विवापान्नाया च्याया ८.तु.श । गु*ेव* 'वे' ८.मॅं हु गृ'से सर्थ 'ठव 'स्ट्रॅन'। । ह 'क़ुग्' वे' य ने 'केव' हर्त्या हुन । हुन दे हुन नदे में तयर हुन । न शुराञ्चन दि ग्री इंपठ्र। । ५ छुरा इंप छ्रा ऋषा अरायर होग। । ह 'ने हर ন কু প্রাথ ব্যব্ধন ব্যব্ধ করিব। । ট্রিন্ গ্রিন্টি খ্রীন্ নেন্দের ব্যব্ধন। । त्रेष् केष केष केष्ट्र केष केष्ट्र केष्ट्र विकास का

「大八・まれなっていれれ」とれるなべて「八」

श्री ।

स्मान्त्रिन्द्रम् स्मान्त्रिकान्त्रिकान्त्रिकान्त्रम् स्मान्त्रम् स्म

अश्यः क्रवःश्वेटः दुःह्। । व्रिटः संभ्राः स्थाः श्वेदः स्थाः स्थाः । प्राः स्थाः । व्राः स्थाः । व्यः स्थाः स्थाः । व्यः स्थाः स्थाः । व्यः स्थाः स्थाः । व्यः स

हेंच ग्राहेन उन्ता ग्राहेन विषय । | निष्ठ न्या हैन न्या प्रेंच हैं निष्ठ ने निष्ठ निष्ठ ने निष्ठ निष्ठ ने निष्ठ निष्ठ ने निष्ठ ने निष्ठ ने निष्ठ ने निष्ठ ने निष्ठ निष्ठ ने निष्ठ ने निष्ठ निष्ठ ने निष्ठ ने निष्ठ ने निष्ठ ने निष्ठ निष्ठ ने निष्ठ ने निष्ठ ने निष्ठ निष्ठ ने निष्ठ ने निष्ठ निष्ठ निष्ठ ने निष्ठ निष्ठ ने निष्ठ निष्

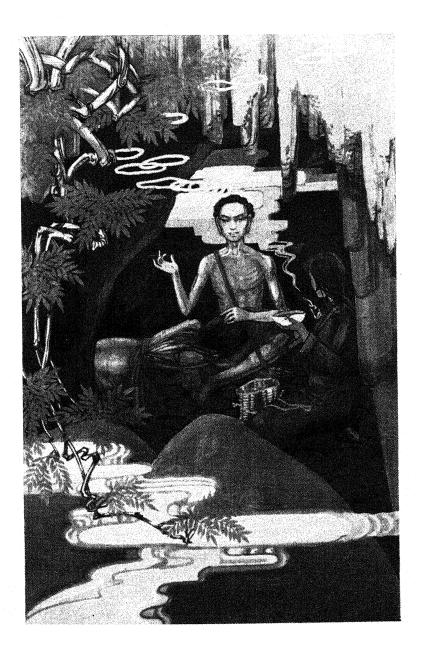
हुरः ह्र्याःमग्रद्धाः यद्याः यद्याः । यस्यव्याः स्टरः मर्दः न्यादः ह्र्यः धिन् । विद्यानयुम्बाधवा

|ガニオのなっていれて、おんからなってい

क्रुशंध्याते। श्चिन्'विषयाँस्यान्तुं अस्ति द्वा त्रमेतापतिः मन्दरमञ्जापातम् तार्यमः पानमः। इनि पतिः भेषाद्रस्य सामाना *ॸज़ॖॸॱॺॊॺड़ॖॖॖॖॺॱऄॹॖॗॎॸॱॺॺऻढ़ॺॱऄऄॱॺऄॖॺॱॺऄॗड़*ॱक़ॗॗॸॱॸॹॻक़क़ॱॱॱॱ बाहुवायाबुदाः चन् वाद्रेन् या स्यापित्रया न् वाद्याय देन स्वार्थाय न् र्श्वनः। न्नेश्चित्रः यम्प्रत्येयात्रयः सुम्। न्यमः श्रेप्ततुरान्ययायायान्त्रः क्किनेपलक्ष्यस्य हेन्द्रत्य प्रमास्य। अये प्रमुख्य हेन्द्र विप्रमुद्र स्या ने'यम'ञ्च'यति'च गत्र'चत्रीत्र'याही त्य'त शें'न् बॅब्बञ्ज्य'यन्'चति'ळे। वे' हवा नयः त्रुः त्रुतः कन् न स्रक्षान् वान विवास त्रिः स्रवातुः गरिना हिनः है। इनः न नर ह र्सर्ह्रव्यय। प्रश्नेत्र्यप्रम्प गुव्ययहीविप्रस्ट्रेव् *षुनः* बनः क्रॅन्'तु'इत्यादर्वे रायाञ्चते ततु ततु तत् पावेषान् यता हुन् वस त्यःक्षेत्रः द्वें रहेष्य यात्रात्या के त्या चे व्या के त्या व्या के त्या व्या विकास विकास विकास विकास विकास व नैसहिबाबाबान्देलार्द्राचान्नेवान्द्राचान्द्राचान्द्राचान्द्राचान्द्राचान्द्राचान्द्राचान्द्राचान्द्राचान्द्राचान नमरावेग्रस्य मृतुर्त्तेन इयरा तैयतुरा मुख्यस्य विसरावे तत्या वदायहत्पञ्चर। ह इन्दर्नेन्निन्तनुस्यायस्यान्नेन्दिन्दन्त् राया रामा वे हरीयवययाया वे म्वर्की केंबरायाय दि तहा ऍट वैवादत्वाक्षे। दरिज इति:कॅबादनै:स्ट हुनावानवन्गेबादहुना म। गहेन'सन'इयम'र्ने कंप'ममबीपत्यापता प्राम मिन्द्रान য়ৢৢৢৢয়৻৻৻ঀ৾৻৻য়ঀ৾৻য়ৢ৾৻য়৻ড়৻য়৾ঀ৻য়ৢয়য়৸৻ঀয়৻য়৻৻৻য়য়য়য়৻৻৻ व्या नेरः र्ळें वया परिश्वेष वा तथा देवा पर्या देवा वा त्रा हेवा वा त्रा हेवा वा त्रा हेवा वा त्रा हेवा वा त्रा র্ষমারী - শ্রীবানু মিনআস্করণ বহু বার্মান্ত্রীরণ প্রণান্তু নে মিনমান্ত্রনাম্বী। প্রণ <u>६५.५५% १५५५ चन्या त्राच्या त</u> व्यास्त्रायात्रीयाक्षीर्वेद्रायात्रात्त्र्व न्यूयास्तरीयद्वित्याद्वान्यवेषया बर्ह्सिन्'या विन्ताम्बद्धाः कें बचा झां कारा देश दे वा साम वि महेगल। हेन व'ग्रुगलासुन'पते'मर'रु। भु'न्रः नप'ग्रीश्चुमलाव'ल्ला ह कर मेरर यात्रमें न मूनु श्रुं न इवस क्षेत्र नुराम श्रुं र नु तुरामका क्षे'यर'र्मे'ततुष'व्या तद्यय'च'यवयक्तुं क्षक्षे'द्वच'च'र्देर'**रय।** त्रिर श्रीतार्द्रसामसङ्ग् ग्रापतिः क्रम्यापत्र त्रर्भे तरा विषापत्य नेते द्वपा द्वी ताला तिहुन द्वारा हिन वार्षा पाव देवा विवाधितातुनः क्षेत्रायां दिनाया तत्वावीय। ने विवास देते के सादने नना रते'त्रिंगातिरामें दिस्पेंडग्बेर श्रेर में कें के क्षेत्र परत्मा हेर हु बेर'" तर्गापया

त्याये : नृ'ने:भून्'याचे र छेन् विन्'न्न्'न् म्याये न्'यां खंदा खंन्यं क्रिं प्राप्त क्ष्यं प्राप्त क्ष्यं प्राप्त क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्ष्यं

रमातर्नि 'श्चिमा हिमा म्लामा द्रार्ट्स न माग्री क्षेत्र क्षा स्वत्या म्बॅन्प्स्कें भ्रेन्यः इसम् रूप्त्रम् वर्षः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः म्बर्यः म् य'गुव'ग्रेक्ष'व्रेक्ष'यरायरायरी है। **ग**र्वेक्ष'ग्रारासे है। 명두'디즈'광찌지'본'&' द। हिंद्रान्याल वायमञ्जेबाद्याचेद्राचादीः इत्यासुरवाय तुरावेषाय त्या राने र्सं कं बंद। यह ब्रिंद की जैद कर हैं में रूप केंद्र राष्ट्र राष्ट्र स्वराईवारा तरी बर बेर अत्र में र पार्थिन पार तुना कुर के ने ए के न। ही र के ल ८.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७।
४.४८८७)
४.४८८७।
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७)
४.४८८७) र्मस्क्षेत्रन्तुः पञ्जन् मास्राव्यते । तन् । स्ति । सि **ग्षे**रःसः**र्ध्राय**ञ्चन्क्षेत्रःदेर्द्रातेत्रःबर्द्धनःश्चन्द्रात्राह्नन्देवःदाक्ष्रर बि'र्सेष म प्रथन् कुैं अयान्य सम्मियाँ मारा द्वारा देशा ने प्राप्त दिया **ळन्यबङ्गम्बयम्भेव। । छन्यम्यस्याङ्गं इग्यस्यदेयग्रय्यस्य।** तिस्याः हेन् के के के स्थान श्रुन् ति नुप्ति स्थान के न्या के निर्मा के स्थान हा अ मुख्यातर्धेर्य। मुद्रस्थित्शिन्देव्यातरीयशाम। छेत्रिहेस য়ঢ়ৼ৾ঀ**৾৾ঀয়য়**য়ৠৣ৾ৼ৾৾য়ৢঀ<mark>৾৾</mark>য়৾য়য়ৢ<mark>য়৾ঢ়ৼ৸ড়</mark>ৼয়ৼড়ঢ়৽৽৽ मराञ्चायदै मन्दर्भुन मन्दर्भ न सुन्य स्वर्थ । स्टर्भ त्रिंदर्तुः सुद्द नदे सेश्रक्ष ठवातम् दे के तर्दि नदे हैन् उं अनु अन्ति। रम्बाब्द्राचेया उव्युक्षे क्षेत्राच्या व्यापान्य प्रविक्षेत्र मेन्या प्रमा *व्या*तके नेवाबेन'तु'ततुष्'मशकें'तिनिश्चापतिनेग्'हेव'र्सवाम्हन्'ग़ैके' वनवाञ्चनवानमेद। पञ्चनवान्यः व्यान्यः सन्तिः सन्तिः सन्तिः स्व अःचन् पिनः रनः उंअविषानः पिनः भे । कें तिने रः यन्यञ्ज यार्घे पः सन्ति न्



<u> हे नुराग गुरायम्य गुराय में मिले स्वापन्न न भूत्र गुराय</u> यान्यान्या । तुः कुन् चुन् चुन् कुरा क्षायान्या । भुः कुरा यरापदी ৰ্বৰাম'নেরুব। ।ঐ'নেইবি'নেইব'ম্বাশ্রুম্বাম'নী। ।রীম'র্রা'রুব্ উग'रो ह'ञ्ज्ञ। । ग्*नु* ग्रांभ'र्स्या'ग्रेस'क्की'न्द्र'हे'रः राण्ग'त्रः ग्रेन्। अर्घगृक्कु**र्वे** प्रस्कु प्राप्तु र श्रीग् प्रः गृहेश| । प्रः गृह् ग्रारं हैपश्च । **ग्रु**ते:ब्रेन्प्र-'बर्डेश्न्न्प्राज्ञ। । श्रेन्-ब्रेन्-न्बर-वॅति:यु:नः ८ दून्वा দ্দান্দ্রী । দেশী নদী নদ্ধকাৰ জ ইকাৰ্ম কাৰ্ম বাদ্ধা । ইকা <u>॑ॻॹॖॖॖॖ॔ॱज़ॖॖऀज़ॱय़ॴॴॕॾॕॴॹ॒ॸॴफ़॔ऄढ़ऻ</u>ऻढ़ॕॴॻॹॗॸॖॱॺॖॗ**ॸॴय़ॵॗॸॱ** पर्तःकेःअपन्। |नेःहेनःकॅक्षपकुन्ःकॅन्यानेगःयेःहःइवा पज्जन्र्हेन्ययवाञ्चे ग्नायाप्य विग्वा । रिक्नेयञ्चर्यस्य । स्व त्यञ्ज गम्बाया विषय । । न गम्भ मंतुमानी जुम्म वा वा अने मान तुन्यविद्यविद्यापर्यं मेन्द्रभ्तव् प्रवास्य सम्मान्द्रभा । क्ष्रिं प्रक्री बरुन्'य'व्रि:न्रः'ग्रुब। । त्रच'हुन्'चर्ड्व'यदे'दर्'ळेंग्बबन्न्रः মরী। । । বেই মরী মন্মকার জ ইমার্মকার ব্যাস্ব। × । এই শৃ हे ব্ मॅ्र १३ग नि नें न देन हि र र न देन । देन हर न र र र दे हु हे र रे *न्रम्बेश* | ऑ.सर.कु:हरी:घराग्यत्तर-न्रम्शुव। ।य**र्वन**्छन

मृतिव्युतिःसम्मानिः तृत्विम्दरः यवी। । तर्ने यविष्यम्बद्धाः वास इस म्बराउंग्रान्त। × । व्यान्त्र'हेर्याना शुक्ष'की व्याना हिन'न्ना निवा । नतिः स्वारात्रिरः क्रॅर-५८-पाशुव। १९ व्यवम् क्रॅर-छे शु छू ५ क्रुन्५८-मिल्री । तिरी मिल्रियम्बराज्या अः हरा में बरा पंचापना × । या बादर ब्रेडिदेश्यर्धे पर्वत्रिया स्ट्राम्बर्धे । प्रमुख्ये प्रवास स्ट्रिसे व्या नेअन्म गुरुष् । सिमः सूकायरं ग्यायते त्रकार्षे म स्टें अन्म ग्रुव। । त्रिंदान्द्रियानदेश्विंद्रम्प्यायन्त्रम्प्त्राच्यान्यवे। ।तदेः नविः नववः वाषाः ६४४म्वराउद्यागन्त। × ।शुःभिनः हः धन्तः सर्वे तस्तः सर्वे न्नः गर्देग्। म्नामः नेवाकेवाकुवाका सहिताकुरा । भेगाक्किनाकुरास्ति राहिता न्युयाप्तः न्रः मृत्या । न्यः तत्यान्ते न्रह्में नः निययया नहें नः नि पति। । तर्ने पति पन्ययान्य अ ह्यान्य स्थान्य स्थान्त । × । क्रिया पत्र न क्वॅंभिक्षक्षे पहिंदित्। । ग्विक्षत्य ही ग्विक्षत्र के विद्या । ग्वेद हे । तृति गृत्र रोबरा भेराया गृत्र । । राक्षेत्र नित्रे होरा बसार गे हिरा ग्रेरा। लरः क्षेत्रः व्यावयात के काये नाता । क्षेत्रायानः या की विवास का स्वास का स्वास का स्वास का स्वास का स्वास का बेर्। सिर्वाबेर्'रु'बुरायान्डेव्'त्बुवाडेर्। स्वान्यते न्ववा रगःरेअरुत्रास्यस् । सन्दर्भाते मृत्यस्य रगः पङ्गेयस्य स्त्रा गुरः। । यदेः केन्। चरपाञ्चरापाधन। निः हैराया है ग्रान्याय हो। । श्रीनः वाँ कंश चकुन्'Aर्नेर'येव'ग्रैका ।सेव''याचे'नार्राव'स्थानार्राव'ग्रीका विश्वरान् शुक्षर विराध्य र के ने विश्वर व र व

मृत्या । विद्यायी । व

ये.ह.व.रो अ.ह.द.५८६०, हेब.क्ष्यांच क्चेर.त.हेच. क्यांच ८८ुग[.]हे। ने[.]दॅंन्डग्'बैन्'बेन्'बेन्'बेन्स्य'झन'स'न्व्स्यान्द्र् नारेलं दू नाक्षुतु असं रापराने बाप दीवा अन्याल है र न वै बारा ने वा मन्द्राया म्हा भिद्राभिद्राया सम्बन्धित्रा मुद्राप्त मुद्राप्त मुद्राप्त मुद्राप्त मुद्राप्त मुद्राप्त मुद्रापत <u>र्रायुक्षभाक्षेक्षवेर्धितैःङ्गार्लेर्</u>यभाक्षेत्रवे न्यायेत्र्या न्याये खः हॅ: रन्: धन: दे: नृ वा बा हो बा नेन् 'या नि हे व दे व व बा न्या नि वा ने व त्रिक्षः इत्रिम्याया अग्रेवि। द्विम्य्त्रिव्याय्यायात्रिया म्याः **इन्। मुर्हेन् पायम् अः यम्पत्नु प्रम् स्मिन् स्मिन्। स्मिन्यः स्मि ष**र्पारद्वानराततुषाम्या हृषानुपातुष्याद्वाराया नेश्वेदादत्वा विवादिवादिकाम् । इसानुति दित्रा मुन्यान् विवादिका त्रें अर्ज्ञ न्या वर्षेत् 'केव्' म् बुर् नु 'ब्रेच देन में नेर्या या म् राज्य वर्षे नैर व्निप्राम् विश्वाह्य श्री श्री में से में में से स्वार्थ में से स्वार्थ स तार्मा श्रीमा अंति क्ष्यातु ने तायमें गुवात हुवशामते वृ महिना तमाम ते श्रीमा *इ.५५५५५५५५५) भरायास*ध्या ८<u>ू</u>चबाकुक,लीबायासीयथा महिन्'नईराने'न्वम वन्'तन्त्रहिन्'कें होनरा हुन्हे। अ'हरा द्भवातु'वा'नदेववा'पाधिव'व्वानेर'न'य। नदेववाषेन्'ग्रवासुनवा इववा स्वर्भवाः इवकान्त्रक्ष्यं व्याप्तः स्वर्भवाद्यः व्याप्तः स्वर्धः व्याप्तः स्वर्धः व्याप्तः स्वर्धः विद्याप्तः स्वर्धः स्वर्धः विद्याप्तः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्

(हर्,श्च.पर्,श्च.क्च.वेच.वेच.ह्य.प्रचेच.ह्य.व्यं व्यं व्यं विच्यं विच

हें हा अद्ययमा हुन् त हता ये हिंदा अद्ययमा हुन् है क्षा हें तथा | सिंह्य प्रहेट याप दे थे 'हु ख्या | द्रिके क्षा प्रहेते हुन्य हें द्रा | हिंद म कुद हिंद याप दे से क्या प्रहा | सिंह्य क्षा स्ति हुन्य

स्विग् स्वग् स्वय् का संस्थित स्वय् का स्वयः स्

षाने पाराषामु ने हिरामाने बेरापित मुरापाने केरा

स्यन्'रा'त्रवा'चेर'स्वा'रादे'त्वावा'व्'रास्त्वा'क्र्न्'स्वा स्वा'रा'त्रवा'चेर'स्वा स्वा'रा'त्रवा'चेर'स्वा स्वा क्रिक्वा'क्रिवा'क्रिय्ववा क्रिक्वांक्रियंव्या क्रिक्वेव्या क्रिक्वांक्रियंव्या क्रिक्वांक्रियंव्या क्रिक्वांक्रियंव्या क्रिक्वांक्रियंव्या क्रिक्वेव्यांक्रियंव्या क्रिक्वेव्यांक्रियंव्या क्रिक्वेव्यांक्रिक्वेव्यांक्रिक्वेव्यांक्रिक्य

षाने 'त्रवाश्चर श्चेतवानु हो। क्षंब्रां त्रवाराय श्वां केषा वे दिन मेन 'प्यन होने स्वा हो। क्षंब्रां प्राप्य होने स्वा क्षंब्रां प्रते ने होने ने मान्य त्रवा स्वा हो। क्षंब्रां प्राप्य होने स्वा क्षंब्रां प्रते ने होने ने मान्य त्रवा हो। क्षंब्रां प्रता हो। क्षंब्रां प्रता हो। क्षंब्रां प्रते ने होने ने मान्य त्रवा हो। क्षंब्रां क्षंब्रां क्षंब्रां क्षंब्रां क्षंब्रां प्रता हो। क्षंब्रां प्रवा हो। क्षंब्रां प्रता हो। क्षंव्रा हो। क्ष

चिया अन्ते स्वितात ने प्रकाशित स्वास्त्र म्या क्षेत्र स्वास्त्र म्या क्षेत्र स्वास्त्र स्वास्त्

सःगुर्वाताचे निर्मास्य स्वा । श्रे श्रुर्वा स्वाद्यातात्व स्तुर्वा । श्रुर्वाचे स्वाद्यात्वा विष्युक्तात्वाताः इव'वयाल वे र्वाया । वी'इव'ह्य पैरान्याय विमाप देनाया । वा षेट्यत्युंन्'रोयर्'क्रेन्'य'र्वेत्। [सु:स:संधीर्म:संदा |स:रामरः मैदार्चेरप्तरे अनुष्वश्रुव। । इंरप्पेर्'र्गु'रर्झे वदाद्वापुन्यु नर्स्य। | वसरः श्रन्'सुन्'नेनः गृष्णम्हिनः तः नवित्। । हिन् खातुः खाने सा न हरान वा श्री र पहिन्द्री विषय प्रेन्स वा के दा श्री वा स्वार वा स्वार वा स्वार वा स्वार वा स्वार वा स्वार वा स त्षुरानदे हैं। । अर्त्रीराद्व ब्यायायाद्व दिन्या । अर्थे ह्वीरा वें दिष्ट्वरा पन्या । श्रुं न्यश्रेन्त्रुन्यन्यपत्यपत्यव्या । देः वर्षेवाश्चित्रं पतिः छे । तक्षेत्र न राष्ट्रियान ग्रेया स्वर्मा । वा के वा अप के तिः र्से । हुन:श्वॅन:रु'र्लेनका । तिविधायेन:की इताति हुन:संवेधाववा । ते:सूनः गर्दर्रे रेवरा प्रवास हो । वि. वें. वें. वेर वेर दिर द्वर । । व्यापी इंग्राचेर नेर म्या विश्व के सुर प्रते न हर स्यापना । कप'र्ने'बॅरे'वर'रु'वि'त्रप'तश्चेम | रिव'केव'र्ज्ञेव'रूर'र्दे'व्रम'हुर' | मङ्ग तर्छेन् चेर विनः तश्चन पान्न । मन्द तर्भेन विनः तम्य पान ष्मि । व्रिन् द्धनः व्रव्यं नी व्यक्षेत्रः निष्न् ना व्यनः निष्यः व्यनः व्यवः व्यवः व्यनः व्यवः व्यवः व्यवः व्य मन्गायान् कें बाबेन् कुना । गुर्भे : इनबानु : बबा वन देवा । ष्ट्रा वेति:खुरुत्यायात्त्र विति सेवा । । व्या वेति । विष्ट्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र वित्र व प्रिते क्षें त्रित्रेनयापति छै। । प्रवाद्य व्यक्षित हिता है। । स्वा श्ची सुरः तर्रे :श्चेनवार्भेन् :बेन। । द्वियायळे बाग्वेन् पदि रायन् राह्मव। । ब्रे ऋद्वान व्या हें द्वा शुक्रा श्रुवा । वितः व्ये में स्था करा पायपा । व्या

ने'न्याहे'तर्द्यायरयापं नितारं न्'ग्रेया हे'तर्द्वाग्रेयाहरात् क्षे हा'यरे'हन्'नु'स्यागुयायद्रम्'द्राग्यायया हित्य्याने स्वयाग्रेयाद्राह्याय हा'यरे'हन्'नु'स्याग्यायययाद्रम्'ह्रेयक्षे'त्ह्वन्'प्पंग्न्तरायया यद्रन्' धा'ने'ह्रवयायायययाद्रम्'ह्रेयक्षे'त्ह्वन्'प्पंग्न्तरायया यद्रन्' धा'ने'ह्रवयायाययययाद्रम्'ह्रेयक्षे'त्रव्याग्रेयं स्वयाग्रेव्याह्रयाद्रेन्'रन्'हेन्' धर्मित्रायया त्रिंत्रत्यक्षे'ग्रेयायर्थन्तुग् के'रन्'ह्रग्'य्'वेद्यायन्' हु'ह्याप्या

्रिं त्वश्कित्र्रात्त्र्यं कृष्यं कृष्यं कृष्यं स्वार्थं प्रस्ति कृष्यं कृष्य

तिर्या क्ष्याप्रश्चित्रपाद्धां त्रव्यायायित् केष्यपादि येष्यायाचित् क्ष्यायायित् क्ष्यायायित् क्ष्यायायित् क्षयायायित् क्ष्यायायित् क्षयायायित् कष्ययायायित् क्षयायायित् क्षयायायित् कष्ययायायित् कष्ययायित् कष्ययायायित् कष्ययायायायायित् कष्ययायायायित् कष्ययायायित् कष्ययायायित् कष्ययायायित् कष्ययायाय्य कष्ययायायाय्यवित् कष्ययायायाय्यवित् कष्ययायायाय्यवित् कष्ययायायाय्यवित् कष्ययायायाय्यवित् वित्ययायाय्यवित् कष्ययायायायाय्यवित् कष्ययायायायायायायाय्यवित् कष्ययायाय्यवित् कष्ययायायाय्यवित् कष्ययायाय्यवित् कष्ययायायायायाय्यवित् कष्ययायाय्यवित् कष्ययायायायाय्यवित् कष्ययाय्यवित् कष्ययाय्यवित् वित् वित्ययाय्यवित् वित्ययाय्यवित्

यम् मुंद्र स्वास्त व्याप्त स्वास्त स्वास स्वास

हे.पर्वन्श्रीवायवरा राज्यानी ह्यापाधिवारायराया सामा रव'र्सर'ग्रुक्श्ची'ब्रुक्ष'य'भेव'रुर'। होर्'रर'ह्रवर्ग्शीश'र्हे हे'त छर' र्रम् यानानु 'अवस्ति' देति देव 'ऋष्यात्र हम्' प्रश्चेश मुख्ये य। ह्युत्रादा ने'नबाळे'च'बे'ऍन'। र्हेबाइबान्ग्'वेुन'मते'ळे'च'बाबाँन'नबासब्। ষ্ট্রীন'ন্রীন'ন্র'মনি'র্জনান্তীস্ট'নর। ঈ'ঈ্ন'মেন'৸'ন্ত্রমন্থিনা'ম'র্জনম্ভন্ चुराधते संसं हुं, पं विषाधे व उत्। है शहु त च साया भे ५ हे साव या। हे इंबायन र के से नहारा निष्य हो र दि से या तु र व र र र र ज हा से मिया राया स्वार रेन श्रेप्त, ष्व । हुन्यमाञ्चायायस्य १६ व विष्णिका हेर्यशुप्त हुन विना। न्यरम् मृत्रा हे सर्वा के सर्वा के स्वा के स्व न्रंन्या व्यव्या वित्र व र्चित्वसङ्ग्रानुस्व। केंद्रित्स्यत्राक्कुः वेक्कुः मेः क्वावीद्रुत्व। केंद्र तिन्द्रिं त्वे पत्रु द्रावा व्यवस्थित । स्रि स्यव व्यव्यक्षेत्र प्राप्त व दे स्याप्त <u>न् श्रुतापायवर वेन 'नु भ</u>ी बीभी में केंग्रावीतन्या भी । कु तन्न वातायेन या <u>क्रेश्निरःक्रेरःद्रश्रक्रःप्रश्नाव्यः अक्राम्यग्राम्यक्राक्रास्यश्रम्पर्क्रश</u> व। रवः र्याः नीस्ना प्रस्थायायाय हैन यास्ना याम्या स्थापित स्ति ही म् वरान्त्रं राज्ञ' वाया व्यागुर्या । परानु गन्वरान्या म्रीयायाया क्रीना

ष्पत्तरमञ्जूत्तरमः हैं पर्वुव्श्वीः यहित्ताने ह्रयमः हैं वृत्याया यहंवा द्रत्त्त्त्रं स्वान्त्रं वृत्त्वान्त्रं वृत्त्वान्त्रं प्रत्ते स्वान्त्रं प्रत्ये स्वान्त्रं स्वान्त्रं

 $\frac{1}{2} \left[\frac{1}{2} \left[\frac{1} \left[\frac{1}{2} \left[$

षरःरश्रहरायश्रहेग्वर्ष्वाश्चेग्वर्तः विष्यर्थः न्राध्यस्य ग्राह्यात्वरायश्

इंग्'अ'र्-'श्रे'शंभिन'इयश्यां व्रॅं'त्रंश्रेत्रं त्र्यां म्यां हैं त्र्यां त्रं देन् व्यां व्यां त्रं त्रे त्र श्रेति तुः श्रूं त्रं ग्वां व्यां त्रं द्रे त्रां त्रं त्रे त्रे त्रित् हुत् त्रं त्रे त्रां व्यां व्या

नेतिकेशे पन्यस्या हे पहुन के ज्ञान न सम्मा के ने

माञ्चे सुन्तरातु मृत्राय। देषा के सान्ता मृत्ये स्थरा वे दाया मृत्ये स्थरा स्थरा स्थरा स्थरा स्थिते स्थरा स्थरा स्थरा स्थिते स्थरा स्थिते स्थरा स्था स्थिते स्थिते

यश्चित्राच्चा स्वाप्त्राचा स्वाप्त्राचा स्वाप्त्राच्चा स्वाप्त्राच्याच्या स्वाप्त्रच्चा स्वाप्त्रच्चा स्वाप्त्रच्चा स्वाप्त्रच्या स्वाप्त्रच्या स्वाप्त्रच्

현리, 열로, 보험의, 원, 도로이 병론, 영로, 망소, 보험로, 무소열, 영화, 다외 1 시설리, 다양로, 보험의, 원, 보험의 원, 보고, 리얼로, 당, 소리 라드, 다양로, 보험의, 보고, 다양로, 보험의, 보고, 나는 어느, 다양로, 다양로, 막는 나는 얼마, 나는

च्छित्। स्वार्थः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वर्यः स्वार्यः स्वर्यः स्

म्राख्यायात्रिक्षे व्रतिःस्वाद्धः स्वाद्धः स्वादः स

ह्यश्र शैश्वर्थं श्रुपः श्रु

व अति श्रूं न का के क्ष्म अता है। के अति श्रूं न क्ष्म अता है। के अति श्रूं न क्ष्म अता है। के अति श्रूं न क्ष्म अता है। के अता के क्ष्म अता है। के अत्य अव श्रूं के प्रता के क्ष्म अता है। के अता के क्ष्म अता है। के अता के क्ष्म अता के क्ष

 स्वा स्वा वितायत्व वित्य वितायत्व वित्य वितायत्व वित्य वितायत्व वित्य वितायत्व वितायत्व वित्य वितायत्व वित्य वितायत्व वितायत्व वित्य वित्

श्चर्योपातान्यम्। ने,च्याचिराके, श्चराविराक्षां वर्ण्याचिरामाय्यां वर्णाः वयार्थाः प्रविद्यां स्त्रे के, विकासी स्त्रे वर्णाः प्रविद्यां स्वर्णाः व्याप्ताः व्यापाः व्याप्ताः व्याप्ताः व्याप्ताः व्याप्ताः व्याप्ताः व्याप्ताः व्यापाः व्याप्ताः व्यापाः व्याप्ताः व्यापाः व्यापः व्यापाः व्यापः व्यापाः व्यापाः व्यापः व

श्चे महायादु के यान्यतान् रात स्यान्य यह या हिराने सामाया सुन् नि <u>बर्ज़ुव्यवर्ष्विण,पृत्रें पव्यर्र्यप्प,प्रस्यहर्षा देवस्य में द्रात्र की के दे</u> लाईवानुःईव्यान्त्रतिःईव्यान्त्राप्तिन्यस्य। नेव्याईव्यान्त्र्यान्त्रान्त्यान्त्रत्रत्त्र्यान्त्रान्त्रत्त्र्यान्त्रत्त्र्यान्त्य **ॅ्रअतु**'त्यर्चेत्र'प्रक्रुवैग्'न्ह्त्य'त्रचुअनु'न्र्राप'ते'प'र्देन्'न्न्'यहत्य। ने वदाहियाखन्द्रियुक्षा क्षेत्र स्वाप्त दार्हेन रहाया न्या ने वदाया **है। तापलुण्याप ते ळें झ यया शुराप इन् वास्य यापतात ज्ञाय सुता है। है।** र्शे (सार्चे व पर दे (भवा दु 'द वा पा कु गुरु सु 'च 'द पर है व ' हे[,]व्वॅं नॅं नें रेल विंग गेंक्रें राल अविराख्य राज्य प्राप्त प्राप्त वा <u> न्राधान्यन्युग्नन्यस्याने र्र्यश्चेत्रात्र्यं व्यव्यव्यं व्यव्यव्यः स्या</u> तश्चलाक्ची नेताक्ची श्वायव वादा है। सेती भूदा दे वाद्याय दर्जी वाद्यादा प्राप्त । दे वाद्यादा वाद्यादा वाद्यादा । शुः में हे हे त्रिन्तु वर्षाया स्टाइन्य राष्ट्रा न्या वर्षाया ने वर्षायातर त्य्रां त्रमुता हे भुं व पारी त्राया नु ख्राया ख्राया अर्थे हिन मुने महा न्यान्तुव्याप्याहे में विषया है न्राम् हन्याप्या व्याप्या व्याप्या हिन्दी ।।।।। **ह्रे बाद्य देव,**घ≅ट.म्.धुब्य,धिट.। ने'वरात्राखना'राज्ञ'हिंदा'तु'नमेव'र्झेबा スペゼイト、スミペラ 多ペコー、新田 コラフ・ギー・イー ইথারিএ,প্র **ब्रॅ** ऑस्ट्र-तुःपत्वष्यं लेपया हेषाःग्रुट्ययानुः हेष्यापास्यापासेषा ने'नहा र्रे र तर्रेग्'वर्धवरायार्चे ब्रायदिश्चेरायार बाह्यरायार्गा वस्य। ने वदा नेतः इव्, बोबु-केट बाप बीय हे. प्राच है बोबा इस है. या प्राची मान है. कूं तका ग्रीका है। पर्व व् श्री ऋष ग्रा ग वा के व् में। प्राथ प्राथ प्राय प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्रा **翌**々 बद्यास्तर्गत्र्वर्ते प्रमुख्यत्वरिः द्वेतदा श्रीक्षित्रं कुत्यं कुत्यं क्वा वर्षः वर्षः वर्षः ने'वबारवाद्धन'रा'न्न'ग्नेव्'र्झेअरवारवाद्यद्वव्यत्यात्र **8्रिंश्चरें ऋद' प्रध्व 'सुप' स्'मलु प्रथा देते 'श्रें 'खॅळकॅट 'सुट' मुप' त्य** त्तव्या ने'न्याञ्च'त्तर्र्'तुं व्याया केंद्रत्या केंद्रत्या [सरम्बह्य विकास के स्थाप के स <u> ५८. अहल। ने वश्र हे पर्वन प्रतास्त्र में प्रतास्त्र प्रतास्त प्रतास्त्र प्</u> पर्वन्याञ्चन्युत्। नेराञ्च पर्वन्कुरापरिःह्नेपराग्रीरायदन्विन्ग्रीःह्नेन राप्तर व्रेंशर्ग में गाने वर्षेत्रप्रवर्णा है तर्श्वरात्तर तुवामका पर्वेग पति'र्झर। नेति'क्वेन'क्वैन'रमाखन'हे स्ति'र्झर। नेति'परायार्जन'स्ना सुत्री क्रेंग्र'र बादा 'न्द्र' बहता मुद्रत्वर मुद्रम हार बादा वि दिन् <u> न्रायह्म नेप्रकाहे पर्यं न्याप्त सर्धे सर्धे न्याप्त स्पर्ध</u> सरा रशकुरामहीरातर्चे नामानीतान्यामहीराहें नाने नामाना उति। स्रा ५८। कुर्वनुरक्षेत्रं रमहारम। ने वसक् ५०० र हुई व वस ५०० चॅति:श्चन'र्झेय'रब'प'न्ट्'यहर्या हेन'क्चे'र्झे पने'पग्न'केब'र्झट'रु। हेन' मर्डें अ'ह्ब' ८ न का श्रीकाश्चर' मह्द्व'पि दे के ब' में खु न का श्रीका करिन" न्यापरः शुराप। न्यों श्वॅरा हैं हो तहें वापा ग्रुता ख्वा शेयशान्य तरे शेयशा न्यत्छिन्यां हार्दिन् वृद्धित्वा रेवस्य क्वा की में द्वाना विस्त्र ही प्राप्ति ही राख वया बेर 'नु ग वर्षों से हे न्र वहता ने वह सह न्र नर की दें अहर व म्बुग्रापतिके। स्रक्तियनु बुन्निति विद्वानिति विद्वानित्वा च्यान्त्रान्त्यायात्त्र्यात्रान्त्राच्यात्रात्त्र्याः स्वान्त्रात्राच्यात्रात्र्याः स्वान्त्रात्रात्राच्यात्रात्रात्राच्यात्रात्रात्राच्यात्रात्रात्राच्यात्रात्रात्राच्यात्रात्रात्राच्यात्राच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रच्यात्रचयात्रच्

यु न्रा ध्वाकी देव त्यापाय या ये भूर। इर यदे व या र ग्रामवर प्र वराया इसराया यह गानी वाया के सरा की स्री ने व रा खु न पर दु रहें वा परिवरमा नैन रेर से हे गणन ने रे क्रेंन कुन्तर नुधेपरा वहा न्वरापल्न' वै सरि स्रा ईन' इ रूपेंद' मन्ग' म्या वैद्याप हे गरा है म्र्रा इन्द्रम्थायरम् अहेरारी त्रायन्ता त्राष्ट्रम्यारम् अधिरेभ्रेर। नग्न्बरर्धे अर्धरायतुन्यविभवज्ञायान्नः। स्वय स्रित्र्याक्षेत्रे रायार्ग्यायाहे। यार्वात्र्यात्र्यायान्यायात्राच्या त्वराय्र्रेरपदिन्हें। ब्रिंगळं प्रयम् ग्रीस्टी हिपापदि र्षे द्या यश्चित्रेश्च तास्व क्षेत्रेश्च प्राप्त प्राप्त स्वर्थः द्वेत्र क्षेत्र क्ष बर्दन्। न्यन्यें त्रीन इसराक्षेत्रं पर बर्दन् केन ज्ञानि समाप्रह्ना म वा इयवा ग्रीवागुन गुन खुन वर्षन । तृ वेयवा न हुन हिन । जिन खुन रेयरा'न्यदे'नञ्चन द्वारा श्वॅन'यायायया श्वॅ रायह दाये ताया मेन्। अस बेन् इवरायतम् इवन् गर्धे नग् कत् नव्या न्वराष्ट्र नरावर्षः रेशक्षुः वेदेः मने माया माँ न पदि दर्शन सम्मा विषय हे व्याय मितः क्षित्रायाराया मार्गीप क्षेत्र पार्वेत मार्गेत्र मार्गेत

(ने'न्न'अगुरात्त्रअग्रैंक्ष्मच्यात्त्रिक्षेक्ष्मच्यात्त्रिक्ष्मच्यात्त्र्व' ""
हे) न्युन्यत्व्यत्य्वयाग्रैक्ष'न्द्र्व'म्'न्न'त्रेव्याक्ष्व'यास्व' महन्यास्व' ""
बह्न'म्पक्षित्रकुन्पत्।

ਖ਼੶ਖ਼੶ਸ਼ਫ਼ੑ੶ਖ਼ਫ਼ੑ੶ਜ਼ਫ਼ਖ਼ਖ਼੶ਜ਼੶ਜ਼ੑਖ਼੶ਜ਼੶ਜ਼ਲ਼ੑਜ਼ੑਖ਼ਜ਼ਖ਼ੑ੶ਖ਼ੑਜ਼੶ ਜ਼ਖ਼੶ਖ਼੶ਜ਼੶ਜ਼ੑਜ਼੶ਖ਼ੑਜ਼੶ਖ਼ੑਜ਼੶ਜ਼ੑਜ਼੶ਜ਼ਲ਼ਜ਼ਖ਼੶ਜ਼ਫ਼੶ਖ਼ੑਜ਼੶

इतार्धे र.की. न मन् द्वा है मईन के तार रामने ব'র্যান্য'ন্ড। बक्रन्तिन विन् के हिन्द न देन व्यापा स्वत के के में दिन्द स 351 मल्युक्राचरित्रव्यावेयाचेळे। तळ्निते सू क्रिया मलेटवा मला है। र्द् : सुर्थे र र न न 'द्ध के र्श्वे र है। में नि न ने न प्य र शे त न न मन न न न न न **बे'**यन'बे'ततुन्'**यरा**। मनै'तनै'रु'ठन'रन'यन'र्ह्चन'यहम्र न्याततुन्' पया वैनःविषायम् स्रायमा न्वायान् वार्यान् वार्यान्यान् वार्यान् वार्यान् वार्यान् वार्यान् वार्यान् वा न्दर्वाहेद्रप्रते हे कुराहेद्राया विषात्र हर्द्रायद्या पर्वर हें भेर हिरा भेर पर्वर हें र शहिर पर शता हुन य र में र स स्रा मास्य मास्य प्राप्त प्राप्त क्रा विषा प्रस्त प्रमा प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप् अहिर्यापरातनुष यन्षातहेन् ब्रेंश्यहेर्यापरे हेंशन्र श्चराप्य रें छेन् ऋया रुषान् गत्रवार राष्ट्रिया भैसान् गत्रवा भैसा हो सागान्या म्बेराम् इंरायहराष्ट्रेप्यल्वरायश् तक्ष्यार्यस्य देवार्या स्तरिक्रमाया स्वाकिनास्वयान्तर्भेत्र्वेशस्ययावित्यप्रतिस् हुन्विनन्नरमन्द्रिन्द्रन्विन्ने स्विन्ने स्विन्ने स्विन्ने क्वा प्रति के बद्धान रामित स्टायान स्टाय यवन परित्रवर। पर्हेन वर्षे देखर ने हेन वर्ष हैन र नर्य नहन विस्तुन्यम। श्वेन्यवीदिर्वन्न्य्रीतिस्तिन्निन्नेन्यर्पन्। नेन् ह्यां मी स्यी राष्ट्री मे बिर स्था ।

स्था विद्यान स्था विद्यान स्था विद्या स्था के स्था विद्या स्या विद्या स्था विद्य स्था विद्या स्था विद्या स्था विद्य स्था विद्या स्था विद्य स्था विद्या स्था विद्य स्था

<u> चतुर्वः वेर्वर्वः विदेश</u> । राष्ट्राचतुरः वर्षावायाय। । रावस्या पछन्दर् । । रयन् स्व वेर् द्र । । रयन् स्व वेर् द्र । मलवाबितावहन इन् मुखान्त्र । भूषाबितावरायाया दुर्म् । भित्र मप्रसंदु र्रे क्रिंड्यादी । नि'क्षेप्यहान व'न्यारप'र। । नि'क्रेन्ड्स हर-दर-७ क्षेत्र-०५५। ।र-क्षेत्र-गश्च-छर-दर-क्षेत्र-क्षेत्र-तर्नेन। मलस्ति न्यर्व १६ व द्वारा व्याप्त व । इस्या विनाय न्या पि रहे प्रवा । यकेन क्रॅ्रवय: <u>न्युय: वर्ष्टर: ५५ (य. ५) | १५ %</u> प्रत्याय: वर्ष्टर: वर्ष्टर: वर्ष्टर: वर्ष्टर: वर्ष्टर: वर्ष्टर: वर्ष र खेशका हूं विवाद व दिस र के स के स र दें र । व व व व व व व व व व व व व व क्षेत्रः तर्देत्। । मरायः वित्रः यदवः द्वः वः वः वः यः दव। । श्रेंथः वित्रः यरः यः ॅ. ५ॅ.२४। । इ.८.५४*.चेश.कु.८८.४४.*७ चंप.तु.८.केट.। । श.स.कुट. वराह्रवाप्यी । १६५५ म्यान् ५ म्यान् ५ म्यान् । <u> न्द्यवार्क्षन्-नुप्तह्यस्यावयाञ्चन्यार्थवाः । इ.२.प्रुन्पः र्यार्थ्यः हिन्।</u> त्यातः हेव रुवा । विद्याम् श्रम्याचया ह्रेव भे प्रमुख्ते खुन प्रमुह्त र्द कुलु विषा पु सुराध दे हैं सा है सराध ने केन हर राज्य कुन में वि रहेन ळे'च'वेषाबेट'ये'८ गर्स्थ'हुद'र्दु'सस्यम्हद'र'वेषात्र'केवसदस्र्ह्वद'हे। <u>न्नःधःन्यन्भेवःयर्क्वायःधःहनःन्य।</u> हेवायःक्वेदःन्वःकुःधयःद्वेरः <u> रञ्चरत्रयथ। श्रुपः (वर्षः ५५%) वर्षः वर्षः (वृष्यययः ।</u> देवाराक्तिर्मान्द्रसङ्घान्द्रस्यकाष्ट्रम्यकाष्ट्रम्यका यन्यस्यान्त्रन् मरेनायाद्वयस्त्रं व वर्र्म्पयाद्वग्रीयश्चर्याद्वीत्यहेंना पर प्रश्ची पश्चर्य प्रश्चित स्वर्ग स्वर्य स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वर्ग स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर

म न्यायरे दलाय में प्राची प्राची । मुन्येरे के प्राची कर् ह्युप्तरा । स्रायदे स्थायर <u>प्</u>रवायां भेषा । हिं प्रयाप संस्गुरा पहिरायया ब्रुवा । विषया हे हिन क्रमया न हे या शुक्र माना । इस देन सून पा मयया **७**५'८ गगरा । झ'र्या ५ व'प दे'ग् ५ ५ ५ ५ ५ ५ १ । हे'पर्ड्व' इव' लान्जन्त्रसम्बद्धाः । भूत्रा भूत्या भूत्या स्ति प्रसारेत्। । त्रुत्र प्रश्चेत्। र्ने हिन्दा हे का श्रुंत्य । श्रुंत्र हिन्दा मही । धर ही । धर ही याय ने वाच दि व्यवा हैं गा धिव। । महिंगा सुर है हिंदा र श्रीयाप रही । बावतःतर्भे अने साम दे लगस हैं गांधिय। । तर है समे द पदे द सा हैं स तरी विरुव्हार्यं प्रदेश्वापरीय विष्या विरुद्धा । विरुद्धा विरुद्धा । विरुद्धा विरुद्धा । विरुद्धा विरुद्धा । ह्रॅं सर्यापायरी । वर्षेत्रायेन् सेयया ठवा क्री ह्वेत् गर्हे न पेता । व न गता नै:ब्रेन्:ब्रैन:दुरादरी । । सबक्षाःब्रेन:ब्रेन्:विष्यारानेन:पेन। । क्षेण'चर्याञ्चरत्रापदि'न्गदा**सुप**'दरी । १९वर्या हॅ ग्राक्षे पदि'यहन् नेन' विगाना रहे। । श्रुट देन हेन पर हैन श्रुव के के का । विवा गर्य हरा। हुन्याङ्कें सिन्दे निर्मात म्यान्या में साने प्रतिया निर्माय सेना विवा हिन

यश्चित्। प्रमुत्। प्

प्रति-दिन्द्रस्या । स्ट्रिन्न् क्रिया विकास क्रिन्न्या । विकास क्रिया विकास क्रिया

महान्त्राच्या अर्डं रान् इवयाहे पहुंद्यायी मृत्याय ह्या प्रायव म् हुंद्र स्ट विग नित्र प्राय मिना प्राय प्

मकत्। । त्राम्बद्धात्मा बेत्रक्षेतुराया श्रीता । श्रायुरा सुतार्दे मा दुरा मग्किलं । किन्न्न्ग्नन्निकेनेर्ने । निकेन् केन्प्रस्कितेः ह। । अय्यत्यस्यान्यान्येर्ययेग्यहिय। । हुन्नुतियां सहर् | इंट्रन्देश्यायाष्ट्राञ्चर्त्रा । १७ छेन् प्रः अदेश्यायाञ्च बनतः नर्ज्ञेन | न्यं के न्युन्यं के नुन्यं श्रीनः | नित्यं क्षेण्यं व्याप्तः बित्रेश्व । जाबित्वरताव्यान्न्यानुत्रा । सुत्रा गुतिः व्याया छत्रः क्षेत्र विषय। वित्तिर्देश्याञ्चराष्ट्रेराच्या विषयकेरान्स्यदेश्या र्शेष्ट्र (त्रीयया । ८ (त्रे प्रमुण हुं प क्रे हुं ८ (या से ८) । पर्दे व हें र त्रश्चाया द्वारा विष्या । स्थार विष्या स्थार के स्वार के र्भर-वे'ग्रज्यत्पञ्चरः तष्ट्वग्या । सत्याग्युयः हेव्ययः प्रॅंद्रन्रे छ्रा । व। । गर्नेगः ब्रें कुराया में बारे स्क्रमः। । वास्त्याता स्वें सार स्वारी हिंदा है हो । *७ चेन'कुभेश'तर्स्रप'श्रेन्'त्र*। ।*सु'त्र-'श्लेश'र'* मॅ*न'रे'कुन*। ।६ गय क्रियः र्वेटः ह्रें श्री नेगया । इ.गया क्रीयः वेटः ह्रें श्री गया व । । व.व.व.र **ड्याप म्याप्त अस्त । | प्राची स्थाप स्थाप । स्थाप म्याप । स्थाप स्थाप स्थाप । स्थाप स्थाप स्थाप । स्थाप स्थाप स्थाप । स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप । स्थाप स्था** त्रेश्विष्याम् । ग्रायाद्यम् इत्यादा द्वारे हरः । । विद्रायि र्चे ब्र'तर्ने प्रमें ब्र' प्रवेष व्यक्ति व्यक्ति । विष् २८ल में न'ल कुर्रान् पत्रम्या । यगात अकेन महान मेन विच स् मधित। दिनवाउन में तुन केवायन स्ता । दिन्न वा वा वा वा

त्रमुक्'विनः। । न् गान्यवगः र्ह्याग्रीः छे: छुन् 'चः द्वा । छिन् 'चन्यः हन् स्व ह्र्वं बार्की क्वें वृद्धे र । । पर क्व र अह्रं वृद्धार्यवा युरु वृद्ध । पर प्रदर्भ र । प्राप्ति दे हु हि स्वा । विश्व पहु हराय व सह प्रया के प्राप्त है। हर-दु: चता ग्री शर्चे द'पता । अठं र-इवरा तहे गरा भुग 'पहर सदसा धैन|देन|देन|देन|देद। अग्रायद्यात्रीय क्षेत्र क गुरात्राययक्षेपादिगानुराहे भेरावास्यवासुग्वास्या यम्र निः। हेः पर्वत्रं क्रीः हुन्। या न्यां निः व्याः निः विष्यः निः विष्य सिः विष्यः निः विष्यः विष्यः विष्यः निः विष्यः विष्यः विष्यः निः विष्यः निः विष्यः निः विष्यः निः विष्यः निष्यः निः विष्यः निः विष्यः निः विष्यः ञ्चन यत्र कें त्राप्त न इं यति जुन ने प्यति कें त्र द्वाराधे व राज्य त्र्गाहे। हासरेर्ष्याय देवाहान्य सहित्राची निक्य हुन्यन्यत्यत्यं न्याययय गुरुक्ते हुन्य पुन्य प्रेत्र हैं। । योग्या गुरु मुलर्च चे चू प ग्रानु व्युचारा। स्राया द्वारा विष्ट्र प्राची स्वा न्यरवर्ष्ट्यान्तिक्ष्रर्र्भ्यः विष्युन्तिक्ष्यः र्म्_य, गुरुग त्याय दव पासुया स्वामी क्रिंट से न्योरी ।

ૡ૽૽૽૾ૢૺૡ૽૽૽૽ૼ૱ૢૡ૽૽૾ૢૼ૽ૡ૽૽૽૽૱૽૽ૺૹૻૣૺૣૻ

चैन्देन्प्रन्परिज्ञयागृहस्ययान् क्षेत्रियान्याने वासुना **५ गृतः हुनः २५ त्रा महेवः वहा गृवका क्षेत्रे हे भि महिनः २५ त्रा महिना परिः** ह्रश्राम्। इया न्वाः ननः विवाधिन्। यानः तनुवाः देशाहे । याई नः श्रीः क्षेत्रः याहे नः याहे नः । याहे नः । याहे क्षेत्रं सदिस्रं हे न्युंद्रं वित्रं सिंत्रं स गृदंदर्दु अपविदाद्दर्जुद्दर्यस्थं सङ्ग्रह्मा विष्युं देर् स्वास्त्र् য়ঀয়য় ৻য়য়ড়য়ৼঢ়য়৾য়ৼয় त्या हे पर्वत्र ग्रीस्र-'देस्र सेन्'ग्रीरेत्र स्रेन् 'पर्दि में सकत्रीस्र स्राप् नेन् स्ब्रिंचर्याक्ष्म् विद्रायाचारायात्री राज्यायात्री म'विग'धेव। श्रॅंब्रेन्रेत्रक्षंप्रम्यस्य हिन्'के'ल'रहाय'हेरपा'ने'रपधिव'व्याहेर**पर। हे**'पर्व्वाहीरा'ने'ला हुन नेर में न बेर मारा वा वा मारा मारा हिन हिन है न *हे*ॱश्वरादाः इस्रायास्य कॅन्य्यम् नेन्यम् नेन्यत् तुम् चेन्यपदि रूस्याप् न मत्याँ नेः" न् भुः रम् रेते क्षें हुम् व वेष्य ग्राह्म श्री गुव है र व व हे ता सव ष्ठग्'तर्मभ। सामग्रम्'ज्ञुराविप'तृदेश'व्य। हे'पर्ड्व'पेव'पर'दे**रा** राप्तर्वरपुञ्चवपुत्ररवाराङ्गेवप्यगुत्रस्वर्षुव्यळेष्वयपस्याने। गुवर न्न'न्न'ळॅल'ळॅल'য়ु'तनुग'रा'त। ज्रत्यां व्'ळॅव'रन्ग'झुग'रॅ ग्वॅंद' बु याविषातनुषायाने प्रमिवार्स्य विषाते । विषाहे यर् वायावारान विषा **इ**संवुसप्तेत्रवर्रप्त्रायाग्राप्तुत्रिंद्वेत्रवर्राताः। रातार्धेःतार्झ्यातुः त्र्ज्ञं न्युन्याम्या सिंद्रं ते ने नया ने न् क्रिंत ने अपने स्वाप्त न्या निवास

बेर'परा ने'दाक्षेद्रप्य'विग'तन्ग'य'दारी सदाबर्कन्'ग्रीकायसुद्रा *ष्पान्*ष'गुर'ङे'ञ्जब'ग्रैब'व्यब'हेष'८तुब'वेर'ङ्ब'वु 'चेर'हे। दा'नृगु'स्'मित'र्स्। १ने'हेश'मॅब'न्नन्ग'ने'स'ने। नेश'स'आ'ता'तेन्'ग्री **८**र्ज्ञेग¦ङान्गदर्से′न्रन'विग्'र्यन्थत्दर्देते'ग्रॅन्'य्'यस्त्रं सन्द्रग्रात्रहेग्राद्रवार्द्रग्रहेग्।द्धंग्राह्यंथे:अ'तर्देन्'न्'ह्यून्द्रनेवरा पन्र त्र्रीं क्षेष्ठित् क्षेष्ठित् विष्ये विश्वेर त्र्रीं प्राथित। प्रत्यक्षेत्र प्रति प्रति विष्ये विष्ये विषये वि पदाने क्वित दुर्देश ना धीव वा बुद्दा पदा वित क्वित क्वित होते होता क्वित वा वित क्वित क्वित होते होता क्वित वा **ጅ**ণ'দ'দে*ই ভঝ'*মল্ল'ম্ন'ম্বতঝ'দ্ব'ল্বঅ' দ্বা'ম'ল্ট্ল'ল্ন'মেল। हे' मर्डुक्'क्कि'व्यादकार-देवित्'र्नुक्षेष्वप्राद्यात्म् स्टाम्बेह्र्य्यात्म **बै'विग'बैब'मल'र्घग'यर'र'रर'ग्डेग'ध्र'रव्ज्ञा** ष्विन'इयराव्यस हेंग ब्रेन्'रान्संबद्धराक्षेपयाहेन्'र्यरापक्षणाहरम। हे'पर्वन्दरायाही' শ্নমান্ত্ৰিব্দামা ह्य-। भर्तः न ह्यां स्वे यन्त्रा तस्यान्य या या परः तस्त्र या । प्राप्ति तस्याः <u> बैरवित्। ब्रॅ</u>ग्परहुग्पान्त। स्टायम्बर्ह्न्क्रेरेन्द्रस्वण। स्ह ढ़ॎॿॖऀढ़ॸऀॱक़ॱक़ॖॖॖॸॺॱॸॖॖॺॱॻॕढ़ॎॿॖॺॱय़ढ़ऀॺॾॕॱॿढ़ॱॻ॔ॱॿॖॺॱढ़ॖॱॿॖॸॱय़ॱॺऻ चर्च्च गुरुष दे दे द्वारा स्ट्रा हिन्। तिनः चर्चे व स्वया व क्षा च व व सः व व सः । हे बेर्'पर'र्वर'प्र'स'र्युः हैर'रु'ग्रग्य। दे व्यवर कुर'न्द्र व्यवर য়৾ॱয়৾৾৾ঀঀ৾৽য়য়য়৾৾য়ৢয়ৼ৾৽য়ঀ৾৻ড়ৢ৾ঀ৾৽ঢ়ৡ৾৻য়ঢ়ঢ়৾৻ঢ়ৼ৻য়ড়৾৾ঢ়৾ৼয়ঢ়৾য়ৼ

क्रवदात विवादिराविराविराक्षेत्र विदाद में द्रांतिरावा सव विवाति विदारि हैं श्वयात्र रत् प्रकृष्यपार प्राप्त विषा वीषया स्थाप्तरा च्या विषयि स्थाने त्यम् वतःतम् मूनः तम् नु गुन्या ने वहारी सामेनः सून रास्त्रनः न समा रम्बियार्सम्। क्षेत्राद्मवराश्चन्यार्थेहेन्'उन्न्'तुम्'श्चन्यात्रेत्रातात्रा बावतःतम् न्याः स्वार्यम् वायास्य वायाः । हे पर्वतः क्रीयां तरे देवः निताः न्द्रंश्चीःस्ट्रिंद्रंभित्राम्यद्रंद्रंपया क्रित्र्याम्वावित्रं देरम् ताव्यशहेराम्हेर्णम् विष्युरा । देव्यश्चराचराहेरामुँदामय। वया बाह्रतः नृह्यान् साहु गृहा क्षेत्र हो क्षेत्रः विषा सुः नव् गृहा नवा या या ये अया कवा इस्रकाता दुस्का प्रतिहित्त में ति हैं बात हित्या प्रकार ग्रह ग्रह त्या ता में ग्रह ग्रह नमर्र्भुं द्वाद्वाकुर्षे कुद्ये कुद्ये द्वादार्भे राष्ट्री राष्ट्र सं कृषा को सं कृष हा राय दे छे साय दु दे हुय। यह सं दे हु में दे है साय दे र षव्यायाग्नान्यादेन्याव्या हेम्वद्वायारीमञ्जीयापान्ना रॅग्यहे'यर्क्षेत्र'करे करा द्रग्'री रचेतापा दरा। अदन द्रया दें या है । हुर या वैन र्सन् केन तार्सन्य हे के अब प्रति भ्रा क्वें न केन के स्ना परिन्त हुन य रु'अ'र्इन्'रु'ग्रु-'रवा वी'अ'भेन'ग्रेश्याम् नदार स्रेतारु'तरुन्'र्निरवा वश्रक्षु तस्र सप्ति द्वापित है स्वादि स्व गुन्तु प्राप्त रहे।

स्याद्यस्य त्या प्रत्येष स्था । विष्य प्रत्येष स्था । विष्य प्रत्येष स्था । विष्य प्रत्येष स्था । विष्य प्रत्य

इ. श्रुपं के प्रश्नित्वरा । बार्च श्रुपं न्वा वित्र हो । वित्य वित् न्गं के गर्दन्ने । व्हें व्रायस्य व्याप्य गया प्रतिस्व साम् ने सा इयाञ्चित्र्योस्याञ्चित्। भित्यापरायाञ्चापदेषाहण्यस्यते। । মমঅংন্ব'র্ব'ইনেমগ্রিশুব্'র্বিন্ন্ন'। । ইন্তুন্নেপ্রথন্ন'নীন্নুন'স্কুন ग्रीया । गर्सन् गर्सन् रहेग् तस्या छेन् रहेन् नेन। । हेन् नेन् स्ता तर्धेन ब्रुंन्द्र्याचीया । अयाने संस्ट्रामिन स्त्रामिन । निगं में ह्यायाची स्त्रा लाबेदा विस्तादे स्त्रावस्य के इत्याबेदा विष्य विद्या स्र्यंद्र्रा । मिर्न्ने क्षिति इतार्ये राया । विन्षेन् गया विन तक्षवराश्चेष्ठ है। । श्चिरमायन् वे वे गः वे तम्य तु पने व पयव । ह्यु'यमुन्द्र' इत्राञ्चेन प्रयाप्य प्रयाप्य प्रयाप्य । । ८५' स्ट्र' ८ में प्राची रे ह्यम । अर्ड अर्डें इर्बेट्सप्टिन् मृत्युत्। _ | देव्यम् द्रस्युत्स्य हे मृत्य ब्रैन्देश । न्दंशन्व्येत्यस्यप्ति । न्यंदेण्येत्यः यन्त्या वित्यहत् ग्रीयायह्याय देवेवया स्वा विहेन् म बराश कुराग्राया वेत्। । ते देवा कव भेवा सराञ्चा पारायत्वा । वित्रंत्रे प्रश्नम् इत् त्रेयश्चर्यम् स्वाप्ता । । त्रश्चरं त्र्याप्त्ययश्चरं देशवी विग्वा । इंदान्ने परुश्चन्य दिश्वेदावेग्वा । इंदा विग्दान स्विन्दा वार्ह्रग्'न्र्च्न्'र्व्स्त्रा । इंद्र'र्क्,प्रमाग्रीदावार्ष्ट्रम्यार्वेदा । विद्य महात्याया तरे न्यम् इयया दरी हिंद्गी मिश्चर मैसरेद्वम क्षेत्रित्। क्षंत्रस्थादेव्याद्वेत्रवित्रत्वेत्। त्यव्

हे ब्रु हुरवरपि विवयस्य तित्। । र प्रकार पर हें प्राय परि इत्यत्वर्ष्ठे राय। । मुद्रपुर छेप्परे स्त्रु विगायित। । भिरायरे रार्केणया गहॅन् ब्रेंब् के के के बार में में के किया में में के किया में में के किया में में किया में में में में में में न्तुसर्रेन्स्यह्मार्रायहर्षेत्रस्य । द्विःयेहुदुर्देन्द्र्या । तर्स्यात्रीन्वयायापरीज्ञवानु के। । रे.मानतिनि नर्से व की में नर्स्या व। विः त्रः त्रः रहेगः देनः म्रायाया । श्चीनः यविः प्यन्यः श्चीः ज्ञुवः नुः के। । शु:नुरःद्ध्यःतेवराकुँ ह्रः<ह्रायःकुँरा । वर्षायापरेःयर्धेरराद्धरः द्धरः ন্নৰা | দ্বাৰ্ষাৰ্থা ক্ৰম্ব হ'ট্ড । 🕻। ট্ৰ ক্ৰান্ত ক্ৰ্তা ক্ৰম্ব নামানৰা । त्युर्प दुर्प ने रक्के हे द (र वे त्र क्वे व) । र व र ख्र र दे रे व व व व तहरळेंब्रच्या। ।तहरळेंब्रझ्ट्रेरे,क्रुब्रुंट्रेक्रे। ।त्रच्यार्ड्र्यायक्रं Nशक्तात्त्रत्या । क्रें.४ द्शनुःश्चरःगोडे विरःश्वरा । श्चि तर्मे.द्ररयः য়ৢয়ৢঀ৻ঀ৾ড়ৢঀ ।৴৻ৼ৸৻৸য়ৢ৴ৼ৴৻য়ঀ৾৻৸ৼয়ঀ৻৸৻৸৻৸৻৸য়য়য়ড়৴৻ৡ৾ঀ৻ नर्झेवरापतेत्रावर्षायस्या । तर्ने गर्ने हेव में संते हे तहाया सुन्। र्क'तह्यस्य इत्यप्तर्हे रक्षी'कुन्'तु'हे। । ब्रित्'येष्वरायरः कृन्'त्रः ह्यः व्य

षिदा । श्रिनः में हिंद् ग्रीका ने का का सके । । नः में हिंद् ग्रीका सने का दा । ८:इतार्ट्ये रक्षे तारस्यप्रित्। । घुस्यस्यस्य क्रीक्षे हेपापहिटादस त्रुप्य । शुः अद्रापते प्रमुप्य के स्वाप्य । प्रमुप्य प्रें द्वा । प्रमुप्य देवा ं धर्तिः छेन्। मैत्रार्छ्यः प्रमृत्। । सद् धर्तिः सेवरा ग्रीया ग्रीया मेन्। । षत्। वि: न्ने पकुः चें श्रू स्वाव वादी । ततः वि: पने : च र पा के वादी ह्यत। | वि'रः तेरः वृद्धः द्वा केवा तहात। । तहाता द्वा केवा हुवा वा स्वि'न्'निन्। वियानश्रास्याम् वी'वामिन'ने' इवया समा हेराहे' मर्ड्र तान्त्र केत्र मुक्षापर युर द्या के तहुता दे पर मुक्त है। तर्ज्ञ ररान्स्यवरक्षे। धेवाखनयान्नेयन् सार्यात्रावितः हन्यायायान्तः ब्राचेन् इस्रवा क्षेत्राकुनः से कृषाया सः ततुन न क्षिन् त्याचेन् 'क्षेत्राय सः सन् वतरादेन्'रव्'दावे'त्रवा'कववासहावादान्रा'न्रा'क्रांक्रांक्रुराम्बर्धिन्'याया''' नेत्। ५'ळॅग'लु८'यार्द् द'ळे'य। मॅं'श्च'यारह्येर'यदे'यदे'ळंदानेगे' **ढ़ॱ**ऄऺऺऱॱय़ॱॺऻॎॾॆॱॻढ़ॖ॔ॿॱॻॖऀॹऄऀढ़ॱय़ॱय़ॸॖॖॿॱॻॖऀॱॺग़ॖॗॸॱढ़ॸऀॱज़ॹ॒ॸॹॱॺॕऻॎ

 स्राप्त्रं त्रिक्तां स्राप्त त्राप्त त्र त्राप्त त्र त्राप्त त्र त्राप्त त्र त्र त्राप्त त्र त्र त्राप्त त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र

स्वर्वर्वर्वर्वर्वित्वर्वाति । । । वित्रं त्या क्ष्यं वित्रं वित

प्रस्ते | व्हर्स्तां प्रदेशेश्वराया | विश्वराक्षेश्वराया | विश्वराया विश्वराय विश्वराया विश्वराय विश्वराया विश्वराया विश्वराय व

विन्यो वर्षावृत्यं • निवासकुन्यतिविन्द्रमण्यन्यः । सन् न्डेग्स्र पर्झेंबरापदिष्य्य हर्नेजेर। हि दूर्रे केर्से कुन्पर ह्रेंब्या | द्रिंद्याद्रं र कुलानते द्र्वेंद्रयापान क्रेंबया । व्रवसावन क्रें त्रवेयानेवाधिकेता । श्रिःतश्चिताक्षराचीत्रवेषवायानः श्रीतिवेषाया । दिन्'व्यक्षे'केव्'यदि'कुन्'य'ल। । न्यताव्यायत्रत्सुं'वृदि' इताद्वीं र बर्। भिर्वत्वत्यतेर्भेद्वत्यञ्चर्यञ्चर्या इब्दान्डीन्बाबुप्यया । गर्देन्'छ्न्न् गर्देन्'छेन्'न्बायायर्घेन्। । **हराके क्रेंट्र** की पश्चित्र राज्य विश्व ही यह । विश्व हरे त्र क्रेंट्र पर क्रेंट्र पर क्रेंट्र पर क्रेंट्र पर क्रेंट्र **४८।। उधानशुरुषामय। इ.४.८४८५५०७४८५८५५५५५४५** ्सुन्'द्रशसुग्'न्न'ऄ्वॅरप'अर'नु'ग्रुरा'द्रश| त्रु'प'ग्रिंग'ग्री'एकेंप'९नुत्रा हेर'तहत'यायापापविदार्वेर'वापवा व्यवस्यापरावयायरकाने'यापरा बर्ट्स में झ रू. ने 'इबरा' झे 'ठे' आ श्च ब' प चर्ट्स पें 'प ह न वा पा दे' त्रिंतरपु'ववापर्भेरववासुराहे। हेपर्द्वप्यामुव्यवरायार्वेष कर्ष्यर्भेयर्भेयाचेत्रं केति क्रेंत्रं दुःयानगर्। त्र्याक्यं क्रिंन्स्य *सॅर्न् राने* 'त्रसम्ब्र'यर'र्से स्राप्तायर पॉर्नर'यत्तर'र्से द्रवयाय ग्रार द्रश्य ८ देद्र' कैर'५'क्षेब्'क५'नग्रि'तन्द्रयानग्री५'केर'के'ग्राग्रुट'ग्रीनग्रात्र पञ्चय' पर्र पश्चित्। धुन्'न्न'ङ्गेर'व'सन्'नुस्'ने'के'ङ्गेर'पर'शुर'प'ने'ल'ने' मुलमें बर त्रोयविषागुर सुद्धे। क्षे के व में ह्वे व राग्ने पर्वा में भिव है। ।

नैसाहे पर्दन ताया प्राप्त प्राप्त माने वा सक्षेत्र प्राप्त माने प्राप्त प्र प्राप्त प् वराञ्चान'गरेग'गिनरर्'न्योराष्ट्रन्ये वेर्'नर्'कुर्'हे। う'すべき মর্ভ্র'মেষ্ট্র স্তু'মর্র'শার্মান্ত্র প্রাথানিকার্যন্ত্র (ব্রু। শেষ্ট্র শব্ধ बन्नेयान्नेन्यासुर्चे द्राप्तियायायस्य स्त्रास्ति स्टाके द्राप्तिनानी न्स्साद स्त्रना <u>ৡৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢ</u>ৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢ चतिःह। बातरतम् बन्धं वाद्यवा चर्चतातम् न प्रवास्य विवासिक राख्याक्रॅरान्युकारक। है यावाबराद मेंदिवनका हैकान हैकानु नासुनान <u> ५८। तहत्यायापापविवासाराहा। नेवसासुरान्नार्धेवापापरावी</u> ૱ૡ૽ૺ૱ૄ૽ૺૹ૽૽ૼૡૡૢૡૡ૽ૢૼ૱ૣઌ૱ૡ૱૱૽૽ૢ૽૾ૢ૽૽ૹ૽૽૱૽૽૱૽ૣ૽૽ૼૢ૱૾ૺૺૺૺૺ૾૽ૺ૱ हे पर्वत ग्रेश ग्रुम भेम्स राग्री मान त्रा ग्राम मे मबाबु'दुन्नरायहंन्'वबर्धेव'यव। यहव'य'न्गु'तन्ब'यदेयहंयवा हु'न्दराग्रिपदुन्'तत्रापदि'र्दे'प'वेन्'त्रान्यन्'न्दराद्दर्द्दरवेन्'कृद्य बर्दर्भक्रें तहुतागुरुषिमिति राम। तार्गु सुर-न्गुरः मुन्न। ने वस गवस अभियानु ने परासु क पर देर की इ रें ने स पहारूपा चुना सक्त पा सुता क्राह्म पड़ि प इन स क्राह्म स साम है। पर्दर की स गुन क्रु तत्रवाग्री हं वायर में गहारकार तेया वर हं वा वितेय पुत्रवाय में राहे वर र्में विषापतुष्याने त्यां वैद्यार्थे पार्टिश निष्य के पार्टिश विषय है। बर्धनकाने भेंद्र न्न्य इवकाय। तर् खुर क्रुंग वे रूप रूप क्रि द्यात्रे : इय्रवाह्यव्यव्याद्यान् भूता ग्वत्याशुः वित्रं पित्। त्याना गर्ने दि की हैक् हे र्झें अपि भेव पार्श्व त्याप्य | वित्र स्वयाय हें प्रित्र स्वराय हें प्रित्र स्वयाय हें प्रित्र स्वयाय हें प्रित्र स्वयाय हैं प्रित्र स्वयाय स्वयाय

可二式'み引不'動'業'へ」

क्रब्रं सुन् । दे पर्वव वे तार बारा ने केन प्राप्त के बार वा ले ग्रेग्रार्श्वंद्रांचरमञ्जात्रे त्रे ग्रिग्रारा ठदा द्रयया प्रता देया परि हुद्राया तान हे ब वरा मान तर्व प्राप्त मुद्रा शु खु मा वर्ष है प्राप्त के वर्ष शु शु र के प्राप्त मान करा शु शु र के प्राप्त **ᠵᠵᡃᠵᢩ᠈ᢅᡊ᠆ᡃᡕᠬᠬᡊᠵ᠋᠋ᢇᠲᠿᠿᠺᠷᠲᢆ᠁ᢣᢛᢣ᠊ᢅᢤᠸ᠋᠋ᡪᠵ᠋**᠍ᡓᡃ᠋ᢄᡫᡆᢡᢋ᠍ᢧᢆᢡᠳ **ট্টমনেল্ল। রমনির'দ্র'ন্**ন'মমন্ত্রম'ঘনি'**মাব্রা। স্কম'ম' ক্রম**রান্তীরা शुन्दर्भ ते ने ने न दे में में से संस्थाल पर्या हें पा तिया परि से । हे पर्वन र्जून बाश्चारी,पंदिबाश्चार्यः स्ट्राप्ट्रायः क्षायः वाश्चायः क्षायः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्व हुन्यत्व हुन्यत्व हुन्य स्वर्था व्यक्ष मन्यत्व स्वर्था व्यवस्य इयसभी र्नेदायार सिंद्गुदादिर रेस्पल्या हिर्नेर प्राप्त स्वा हुल हैन वसर्त्रे व उन कॅप मक्य न काम र केंब्र मेन इसका ग्रुम सुवा है ''' <u> इश्रात्रों नेरपन्म। ह्यन्यर हें व्यापृण्णु व्यन्म। ज्येव हेर</u> यर्नेतायनेवयाग्रीलु पार्कस्वाद्धरायाव्यव्या केर्^{क्की}सुजुर्'ग्रयाग्रीम्'र्स्याक्षेत्रहेग्य। वर्यादे'यग्रद्यम्'त्रु

त्रे प्राचित्रायां म्याचित्रायां म्याचित्रायां म्याचित्रायां म्याचित्रा ष्ट्रिप्रर में म् ख्रार निविष्य र्ष्ट्रप्र ति विष्य दे स्वर दे स्वर दे स्वर विषय दे स्वर मग्रें न्पान्त। इरवापा दववा ग्रीका हुरावरा हे वर्षा ग्रीत है हवा ঀঀৢ৻৻৸৾৴৴৻ৢ৾য়৾৽৴৴৻ঀঀ৻৾৾ৼয়ৢ৾৾য়ৼয়৻ঀৢৼড়ৼ৾৸ঢ়৾৻ড়ৼ৾ঀৢয়৻ঢ়ৢ৾৻ कॅंड्र'र'पृग्रु गु'र्ड्'र्ट्र'प्वेड्र'हॅर कॅंड्रव्यय पव हुता विवाय वितः हुवा होर हे भाष्ट्रमापर दर्भे के स्था सामग्रह का कर के मान स्थान है का ने'वराहे'पर्वराष्ट्रीराञ्च'ळराष्ट्रे'हे'ने'न्द्राराह्ये ग्राम्प'गहाग्'गहेग सर ढ़ॕॻऻॴॹॾऀॻऻॱॾॹॴफ़॔ॸॱय़ॱॻॷॹॹॸॖ॓ॱॻग़ॖॸॱढ़ग़ॖॴॶॻॱक़ॕॱॾ॓ॸॱऄॗ॔ॿॱॿॴॱ प्रिंग इयश्रास्य राजेग हिन्दा महाता होग मुग्न दशत दिन हासु ন্ত্ৰাকা। *ख़ज़ॱढ़ढ़ॖ॔ॸॹॺॹ*॔ॺॳख़ॗऀॸॱय़ॱॺॸॱॸ*ज़ढ़*ऄ॔ॱॸॸॱॿॖॸॱय़ॖॹॱॺ॔ॸॱॺड़ॱढ़*ढ़॑*ॸॱॱ ५८.५ चय. कुर. लूट. यथा संप्राची विष्य क्षा संभित्र नेदि'त्य'र्थे'वर्ष महार है। तारा के दाय हे दा पर्के प्रकृत प्रमाणा ने राह्म पार्की प्रमाण म् १८ वर्षा मे त्यु लक्ष्य । अपित यर व्यवस्थि सहे पर्वद्यं में प्रवा परःचन्। नरुत्ने। हन्। इन्। द्वारान्नेत्राह्मन्। स्वाराम्। **ब्रैस'रा'ग**दे'ञ्च'पत्र'र्सर'प'र्नर'यर'ब्रेस्कुत्'र्श्चप'द्रवस्कुत्र'क्वप्रा श्रीक्षान्द्रग्राह्म हे पर्यं वर्षा नित्रान्त्र नित्र है वर्षे । यह वर्ष शुःश्चेत्रानुः क्षः नतिः क्षेत्रे व वानेवानुः नत्यान् व्यविदः तस्त्रान्य। स वेद विवा ः निष्यः न्यतः केष् मां विषाः तसे प्रायं व्यासुः कुरः सुका है। स्यवः देर में विषाः 口学会,全会,实上,当上 ने राविता इसका ग्रीका ना सारा मी का हो। पाई वा ग्री धुरः विश्वाप्तः पान् वायानि तुर्वासुः तर्वा । त्सुः श्चार् वायानि व्या

ग्वनःक्षेक्रेन्द्रेयाञ्चेनःविनःक्षेत्रंतुःयन्ग्यःत्यादः यवैन् छैन्।यराग्ययः मम्बाम्य दे पुता ब्राय राता वेदि मान हिवा भेषा । त ज्या ने व व्या त स्टार देन विना'यान् वेन'न्र'कृन'र्दु'यहुरा'वरार्वर'नितेरत्यर'याय्रेन'याकृन' तस्र न् चेन्।तस्त्रिः त्रन्यास्त्रा । देन्द्रित्यास्यस्य ग्रुट्ः र्देन्यारा क्रियाहे स्यः <u>ढ़ड़ॆॱऄढ़ॱढ़ॺॱॹॖॺॱढ़ॺॱॺ॓ॱक़</u>ॕॺॱॾॱढ़ॏॸॱढ़ॕॸॹॱॻॹॱॸॸॖॸॱढ़ॸॖॗढ़ऻख़ॖॺऻॱॺॕॱॱॱॱॱॱ क्रेर्रह्मेत्रः तुः वे नतिः छे। हेः नर्ड्द्राग्रैशः यगुरः नवे वापः र्वे वापक्रिः नक्षिः रप्रशक्तिवाद्याप्रया ग्रम्भावन्युश्चर्यास्य । स्वर्षा **दराया ब्रॅन्यप ब्रेन्प्य ऋयाय या श्चेयप्य । व्याय विद्याय या ब्राय्य विद्याय या विद्याय विद्याय विद्याय विद्याय** गुद्राप्तः क्षे प्रेचे व्यवस्य विषय विषय । व्यवस्य *ॸ्*ॸॱळॅॸॱॴफ़ॸॱॻ॒ॸॱढ़ज़ॕॱॸॸॱढ़ॸॖॗॻॱॸॱख़ॖॻॱॹॖॱॹॗॗॸॸॸॖॱॱक़ॕ॔ॻॱॻॹॖॸॹॱय़ॴ नेर्राप्तः इयबान् ग्राक्तेयाद्यानुः र्ते हे। गुद्राहे पर्वत्युप्रीष्ठगाव्यया गुरु'वर्षानुप'नुप'तहर्षा'ने'हर्षा'पष्। हे'पर्व्व'ग्री'वता'वर्ष। ५'ने'ब्रन्' **অট্র**িন'ন'ন'র'অ'র্র'বার্ত্তানের। মিন'র্বারাতীরাগ্রন'বার্নিন'গ্রীরাপ্তবা पर्वतापञ्च अप्तेषाय्याप हु गुर्या पर्वा सूर्य श्री करा इय राष्ट्री यो ग्री परायाया *चन्'पदे'ब्रेन'दबादादादादा*'न' पह प'पदे'ळेंन्'अ'ठुबाद तुव्'प्प'स| क्रॅब्र' ऍ८:पाई'पर्ड्य'ग्रैस'हुन्यायष्ठ्रेय'ग्रैस'न्दिन्यपार प्रायस्य अस्य अस्य । हे'गर्ड्य'ग्री'वियादयानयान'र्मेन'में हेन'द्यापक्षापय। व्रिन्'द्याय ठण' इयराग्रीरादी'स तॅर'नी हेर-व'न्यारात्नाईन' सराहे पर्वुद्र'या यद्वर'।

ने'ग्'र'भेद'बॅर्। हुर'रेशरायन्चर'र्वेच'पदे'इस'दर्वे रप'दर्वुर'प मितिरे हुं बहेर है या ग्री का दें दाया। खरा तर्र र सुरा महुरा मितिर हैं तहुता कॅंब'बुर्याप्रधित। ५'सब'म्रयाग्रम'होन'इसस्य्रम्साय्वानु'तनुग्'पर्या ्रमॅन्'रा'खर्राकु हु'त्रहुक्ष'यङ्गद्र'रा'भेद। न्'ने'ङ्गरहेन्'रादे'वान्यवीताः सामाना बुद्या यद्या ने दार्दे र संस्थित सामा है पर्दे दाव दे दा सम गुराभु अन्रकानिवाद्याप्याप्यापा सम्भागिकानियापा इन्द्रिक्षितः विषया हेना दे सेन्। स्राप्ते साविषया हेना प्रमुवायय। नुग्राकि सेन् रे. तम् केन् पालग्रायम है क्रालग्राव्या है पर्वन नुषा पञ्चर में कें यापर र में इयश ग्रीश कें पार ग्री र विर विर विर में ते आता रे पर रेशके हरायमें र्वयारे तम्बर्गा वित्रामा निर्मान हरी <u>ञ्च'पत्रेश्चर'याष्ट्रेर'त्'र्श्चेय'ह्यक्षणीक्षर्त्रेयव्यत्पत्रेम्र्यक्षप्यव्याप्य</u> बर्मान्द्रत्यापतिः वृष्यस्येवा प्यत्या वर्षाः सदीः पर्मः । वर्षाः सदीः पर्मः । या च क्षेत्राये के तर्देन पा निषा द्वारा पाने तुषा द्विन द्वारा ये वार्ष प्राप्त प्राप्त विषा য়ৢঢ়য়য়ৢয়ৼৢ৴৻৻য়৸৸৻৴৻৴৻ঀয়য়ড়৻য়৻ঀঀঀ৻ড়৻৻ঢ়ৢ৸৻য়ৢয়৻য়৸৽৽৽৽ पर्य। हे: पर्व्व मुंके: विष्य राष्ट्र विष्य हे व्याप द्वा विष्य प्रेश प्रेश प्रेश प्रेश प्रेश प्र द्रस्वप्रत्तित्वाक्षे। देनश्चर्त्तिक्ष्यर्म्याक्ष्यः ग्रुत्य। देवस्पित्स्यस्थिस्रित्द्व्यम्प्रत्र्त्त्र्

परिः वु प्यं व व र द स्थापय। हे पर्द्ध व भी विषय व व प्राप्त र प्राप्त व व प्राप्त व व प्राप्त व व प्राप्त व व য়৾৾৻৴য়৽ঀৢয়ৢ৴য়৽য়য়৻৾৾৾৾৾৾ঢ়৾ৼ৴য়য়৽ৠয়৽ঢ়৾৽৸য়৻৾৾য়ৼয়য়৽য়৾৽৸য়ৣ৾য়৽য়৽ **पर्गः इबब्धतान् वतः वरः पः गुवः गुवः गुवः गुवः गुवः वर्षः पर्ववः ग्राम्यः पर्वाः** रामित वेर गृत्य र व र्रा राष्ट्र का के व से र र में र र में हिर् पर हैं से उर ॲर्यादति:हे: पर्ड्र वृत्वित्रतार्मिषाः वेरापतिः तर्भे वृष्ट् वृष्यद्षायाः प्रमुत्रः शुरः "" नशञ्चां अधी म्नेतः व्येन् व्याप्ता मान्या मा हे पर्दर्शिक्षित्र इसराग्नी व व स हेग पर तर्से व पर लागी का प्रवेशहे। हेप्रद्वप्राप्त्युव्यम्प्रत्येश्वर्थायात्रव्याप्तात्व्या अदित्यार्श्वेत्कुन्त्यन् में रामराम् न्याम्नेग् च मरादन् स्र য়ৢ৾য়[৻]৾য়ৼয়**ঢ়৻**৻৻য়ৄ৾য়৻য়য়ৢয়য়৻ঢ়৻ড়ৢৼ৻ঢ়ৢয়ৼঢ়৾৻ঢ়ৢৼ৻ঢ়ৄ৾ৼ৻ঢ়ৄ৾ৼ৻য়য়য়৻ हुत्तित्रद्रस्यारः हुरार्चे दायस। या मेगावसाम नेवा मेरार्चे दासा हुव। इरायपार्ववयाना सम्मान हुन्य हुवासी सम्मान प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त बेट्र:ऑट्र:म्येरग्न्य:ङ्ग्र्य:पञ्चग्र। **美日後有「下ざ有」類「T」切「下四」だ「「** न्गरविप'तुःर्शे पन्प'यदेशर। ग्नियाञ्चर्वेश्यपित्रं व्याव्यं संस् <u>ୠୖ୶ୠୣ୵୰ୄୢ୳୶ୖୄଽ୵ୠ୕୶ୢୖୠୣ୶ୖ୵୵୵ୠୢୖୄୠ</u>୶୷ୄୡ୕୵ୢୠୄ୷୷ୄ୳ୢୠୢୠ୷ୢୖ୷୷ पर्वन्भेनु:तातकत्वानि:दिवाने हे स्वावाभेने तवा प्रमुक्दे (ववा ぬり、イト・茶・スロッカー नेति कें हे पर्वन्यास्य प्राप्त विनः स्रति चे स्था स्या मुक्षेन्'र्पन्य'नेसाँसँ ह्रंग्रायसंत्। ग्राम्यान्मेन्'रादेन्गुराने व्यक्ष लाग्रॅलाहे। स.च्रा-रग्रास्त्रपाश्चिहेर्-द्यान्रस्र्यंग्याप्तेन्द्रस्यस् ल' पञ्चद'र्दे 'ब्रेन्'कुं'लद'र्नु' वशुर्रातर्ने गृह्यर्वा ।

न्यत्रने नेन्न म्या ने का हिन मुन्यत्र । । हिन मुन सहत्र के स्वा यन्ग्'र्व'सं'न्न्। |नःइत्यत्वर्धेन्दश्यःत्ययःगृतेशः ।त्रिंक्रात्यस्यः स्र्प्या क्रें प्राप्त । प्रकेश्च विष्य विष्य । प्रक्षित । प्रक्षित । प्रक्षित । ब्रेन्'ग्रे'सद'ने'ब्रु'पैद्य'तहरा। ।क्षुद'क्षुद'ने'नचॅद'य'दुनदान्। न् तस्य। । यदः स्वा निर्माणे संग्रु न्या । यस द्विः संधि संस्वा सा स.मि.मा.मा.पपु. थ.रे.वा.पा ीर.पांच्याचपु. इसामान्तरं विद्यायान तर्देग्'त्यं वे ग्राचित्रं प्रतित्। | ब्रिन्यान्त्वेव्यं क्रेग्'तुः हैव। । विम् नव्यासान्वेसाय मुंसानुसाने । भि सेम्ह्रमाने पमा हेन् पन मा तम् प्रमुद्राम् विकार्याया । इति श्री विकार्या तर्मित्र पहुरा । वि'ञ्च'त्रर प्रेष्प' पडें ब'र्-,' पत्रर । । व्यं अर वेर पत्र-,' हरायाम्बरा विवसाग्रीयान्यराम्बराद्वाराह्या । र्सु है वरा हु। व्याप्त वर्ष । अर स्वर्धे र वाया चुन छैदाय ह्या । मुन्भुसन्दर्भवर्षव्यवस्यात्। ।विन्दिक्ष्यंत्रमुवहव्दन्तुः प्रायाः। क्षा है ब्राय देव पर्के पश्चर प्रमान दंब। । तर्पास्त्रवादाक्षराहेराहेराहेरायय। । इराहे इरापायर ब्रान्थ। विस्तान्त्रेतिसर्विस्यवेस्यवा । यस्क्राय्वा रश्चर्या । वि. प्रमान्या पृष्टी दिन्दी स्वीतः प्रमान । विर्वादा स्वीतः प्रमान कुर्क्षर्भवत्व। । अर्वे न्यार्गर्गर शेक्षे वे र्गुर्भरेन ।

र्गर्गर्स्य। ।यळेन क्रयश्चन्यार्गर्यः ग्राप्ति । गर्यरा क्ष्यार्ह्रव्यं सुन्यार्श्वायर्ह्य । यायर्ह्य न्यव्यवे न्यायर्ह्य स्वत्यं स्वत्यं त्त्रताने भूरके निरम्पति व विष्णीय। । श्चिरवर्षे व पाञे तामनाम प्रवा ग्य। । मनः प्रविदे धुग्याया से में सुनः। । भूता रे प्रवास प्रवास प्रवास । तळ्च च'चकर्। भिरातर्च'क नवा चुःता चुन्यं कर्'चुर्'। १८ँन'चः याची पान हेरार् इस । । वरु व वह इसस्य राया विद्या चुरा। । ने त्रतिक्षेत्रत्म् स्वापाय। | निकायारयापतिः र्स्यम् यात्। । हेना . वदातननः पते तुः धना न्रः। । न् गुद्धां नव रः क्षरः ने क्षन वायः न्रः। । ८ इतार्व्यस्थाति रक्षां विश्ववाद्या । वर्षे न्यार्ग्यम् त्रवाराक्ता वित्रत्रत्रक्षाक्षत्रस्य तुल्ला क्रिन्दर् दर् स्टेप्पन रम्बर्वे । । रक्षेव्यके क्षेत्रस्य पर्यो व्यवस्य । गुन्द्रे प्रविष् ने ने ज्ञें न ने दे ने में में के किया है किया की राजा में ने दे हिन । । न्या र तार्न्रकी तहुन पन्ने सज्जलायम । श्री सक्षापा पेंट्या तार्कन् केना चल्न । र्झेरा केर प्रंप्तराया कर देंदिर। । यह र्झेरा न तुरा र्शे र रा कुर गिक्के प पहें दा | वर १८५ प इस पविश्वर ता गविया । है अवर त्र्वायं वेर्पराय हव द्विवया यश्चेय। । ह्वराळ यह विद्यापा वहुराया वित्र । । श्रेषिके ने र वृद्धार विश्व श्रेष्ठ । । श्रेष्ठ वित्र विश्व विदेश শ্রী'মর্বা (গ্রীমাণ্স'রেগ্রুমান্ত্রিশ্মেমার্ শ্রীম্'দ্রন্য <u>२८५-५७५-७५-अत्रक्षान्य । १५०५-५२०७-५८८</u>० । कुल। [८.व्रथ्यकुःक्ट्रंकेव.शेव.कर। किर्स.शेव.व्रेथ्यपट्ट्रेय

अर्थेन्। |नामायातुःक्षेत्रायुन्।योनेनाय। |स्नान्य यातुः त्राराहरू arg-r । र प ठव प च व च कुत्र से के ति के व या । प व का व त का प्रिंट्याबीब्रायरः सून् 'बाब्रींटा' | वि बद्याग्राटः हो ब्रायग्रीकारा त्यावा | र बी क दांछे | न' त्यं प ५ ५ दे । । चे बा ह्य पा कु दां प र र है · बळी । शुरार्चे पात गतारे तर्से का है। । इता तर्से रखी तार यापा | कुला प्रवश्येत्राता स्वापा के त्यके । । कुँ प्राप्ते प्राप्त वर्षा न्यस्यस्य भेरः र्रा देव । । या हु स्य स्था हु स्य स्था हु स्य स्था । रा इसार्वे राग्यर विवरायने पराहुता । वित्रे प्रत्याप्त सवसानु। विश्वरापने त्ववरायश् । विश्वानश्चरापते छै। वृष्टा इयवा न्वतः <u> इ</u>न्बर्दरहेर्चे त्विनबप्बा हेन्द्रप्परहुन्बर्वयवदुर्यस् यहंत्वयाव्ययार्चे यहंत् पया। यः र्वेद त्या वहेत्यपा पविवर्तु वुरः ব্রাম নিংগী শ্বীন প্রধাতন (এবকা ইরান্ন প্রণ দেন ট্রাই রাজীর """ न्न्रतिपः चेरापाता द्वैद्याप्ता स्वापरा स्वापारा इयराश्चिराग्वरादरादरायराञ्चरादराय्वराग्वरार्ग्वराय्वराया त्रगुर्त्तर्वेत्रापितः मुलानु तेतः से ति सुक्षा ग्रीकानु त्यत्र हे पर्व्यत् अ से निकाप पर ने पराय (दि के न द सरा धर द न द पर दे न हिना हुर। अ अ द र रा दे हरप्रश्कुरप्रस्पात्रम् हुत्रप्राप्तरार्वे भेष्त्रहरूष्येत्। ঀৢঢ়য়৾ড়ঀ৾য়ঢ়৻৻ড়ৣ৾য়য়য়য়ৣয়৸ঢ়য়ৢয়৻৸ঀয়৻য়য়৻ড়য়৻ঀয়৻৸ঽ৻৸ঽ৻৴৻ য়য়ৢয়৸ঀৼৢ৾৽ঀয়ৢয়য়ৼ৾ঀ

हेन्न्यतः व्यवस्थितं व्यवस्थितं व्यवस्थितं व्यवस्थितं व्यवस्थितं व्यवस्थितं व्यवस्थितं व्यवस्थितं व्यवस्थितं व बामदादर्भ्य होत्। । न्य संग निमन्ति । सन् प्य संग निमन्ति । बहर्पन्य न्यर्स्य वर्ष्य । तुः श्रुप्त ग्रेष्ठे वर्ष्य वर्षय । यहर्ष्य ग्रुप्त । हुन्तरे सेसरालाईन वेन पना । नहां कुरोने ते तार्स अना । नहां शुःभुनि द्वराह्मा । भुनिति हे गृश्य हिता पत्र मानु मानु मानु राप्रेन्'न्यायस्तुं र्यते'कुत्। । पर्देशःकुते'सुन्यस्यरा'न् त्रम् कुं येन्। । पर्सेया द्वार्स्य सेन् द्वाराया | क्रियापति क्रेन् रत्या पत्र विष् हुँन'पदिन्हु द्वेन'र्द्रन'ग्राया'न्न'। हिन'द्रवे अ'हूँन'पन्चग'हूँन' पर्या । श्वर छ र् देर देर दर्भ मा । श्वर पर दे हो र द्वर प्रमा वराद्वरः। विवायस्ते हेर्गारा नद्वीर श्राध्या । सिंभ्रेग स्थान जुर रेन्ब्राब्दि । पश्चमञ्जू श्चिमभूम्बर्धि । प्राक्षेष्युन् र्ह्याः यज्ञतः वृत्राञ्चरः । १८८ः शेवशः हेशः शुरुः वृत्रः वृत्रः वृत्रः । १८८ः ग्वरम्ब्यवेशशुराधतिहेर। ।यञ्जराधःञ्चराष्ट्रम्यवस्यवा। । तन्न त्रातु त्रुपार् स्तापन से विष्युमा विष्युमार स्थि क्षेत्र प्राप्य स्ति। १८८ তব্ৰে অনি ভূমানৰ তীৰ। । স্থান ন নি স্থা অৰ্থকা দি নকা ন ক্থাক। । ८इन्द्रेष्ट्रम् भूष्ट्रेष्ट्रम् अप्तर्भेश्यम् । विषयः विषयः स्वित्रेष्ट्रम् 🗸 चतुर्वित्वर्षेत्र । बुब्राश्चर्वेद्धर्मर्म्ययास्य शुव् । । स्याद्युर्वेद्य बेन्'मर्खें'व्यक्र| । तस्राम्य्रीयां'त्रेयां'बेन्'मर्म्यस्य सेन्'यनः'।। रोगरायान्त्रापराचयराक्ष्रायान्याच्या रात्रेय। । यतुव्यापम् हे ज्ञायरे तेव। । तुर्ज्ञयप्य प्यन्गार्वियः

सार् विश्वस्य । । प्रमुखान्य । प्रमुखान्य । । प्रमुखान्य । । प्रमुखान्य । प्रमुखान्य । । प्रमुखान्य । प्रमुख

कुंबर्र्ड्याश्च द्वेदा डियास्यार्ड्यार्चरम्पलयाद्या । वरानी ब्रुंद्रवान्त्रद्रवात्रवेषया । विष्ट्रत्यकेम् पतिः क्रुंवाद्ववाया । विष्ट्र व्रैंशर्म्यानदेश्वराहुग्वर्षरः। व्रिंत्रहुग्ग्नरेत्र्तुंकुर्यायय। विस्थायायने पाइयाहुण प्रा । शु ने हिवायश्चिरव्याया त्रान्या । द्व'ने'हुन्बाह्य द्वे'त्रहुँ व्यय। व्याप्य द्वे प्रमान्य प्रमान्य विद्याप्य प्रमान्य विद्याप्य प्रमान्य विद्याप भैद। । अर में ग्रासुग ॲं र द्यायावर वैद। । गुर रा ग्रीर यर द बर्ळेंबेब्। । इस्प्रसङ्खेपवाक्षेत्रे विद्या । प्रतिमानु विद्या ळॅंद'बेदा ।ने'दे'हे थे'न्ये हुग'भेदा । यन'महत्प हन'ॲन'द'हु' मञ्जेद। । विनः र्सेन् र्व्यन् र्झें अयः विदा । ह्यनः र्सेन् रव्यनः र्जुनः यः बैदा । इसक्राप्यन व इता तर्हें र बैदा । पर दुरा प्यन व लेला बैद। क्रिंदिकंप्रन्द्रायम्बज्ज्यवैद। निंदिदर्भेक्ट्रिंद्र्यः सन्त्र। (।यमः ते : क्रमः क्रें दः म् अतः निः क्रें ने । यो म क्रें के दः यो निवार । র্ব্রুব । নি.চ.ব.ব.জ.ব.ব.চ্রুবের ব্যান্ত ব্য द्रण'र्र्नण'के'व'क्ष'श्रेव'र्ञ्चेग ।८'कुल'के'व'क्ष'र्थ'र्ञ्चेग ।८२'रेशचर'८केट' मदिः र्क्केष् पृत्वाल्या । यह रहतः प्रत्या । मर्जुव्यम्ब्रेव्यव्यस्यपित्यम् । प्रार्क्षेत्रात्यच्यस्य । रेविंद्रत्रीयन्वर्धर्धत्र्या । गृहेग्रह्मर्व्वर्धरादेश्यया । शुप'प'छेन्'व्यरपदे'लय। । । १६नै' वनवाग्रीवादमूँतानदे'लयाहुन्। लग्रा । प्यन् इत् देगा क्रेराया गुज्या यदे क्रॅन्। व्रि दन येन्या देगा

पति प्राप्ता । विद्यास स्त्रीय अपि प्राप्ती स्वर्या । विद्यापान सम्बन्धीय र्हरूकुर्जूनः। । तस्र त्युर्वनः यम्बन्यितः क्षेतः क्षेतः । । बुद्धनः वेनः याः *ত্*রহান্তীর্মিন। বি'ন্বা'বাবিন' ভর্গ্রিন'রুবা'ঝবাঝা । আন'এরাঝা गृतुयार्थें दिनरामयान्। हिन्स् ग्रुत् हुन्हुन् स्कुन्यस्पन्। क्रिन् चुन'ऊ्च'रोबर्वाग्री'कुर'त्वप'पद्री । श्चन'न्नत्व'यदे'वेग'येरा'छ्च'पद्र परी । परार्गरार्थराष्ट्रगास्त्रिंश्वरायरी । शुक्रास्त्रमायेत्रायरी नशळें अपसान्ते। १२ दता ८ कें र वस्त्रा की परे कुषा समान শ্রন্গ্রিম্ন্র্শ্র্রা । স্ত্র্রা । স্ত্র্রান্র্র্রান্র্র্রান্ত্র্রা तरी । हिन्तुः श्रॅन' तर्ळे न यम ते 'न न तर्ष्ट्रन' यहें न । यस के 'न न तर पात्रळें प्रथम'न्'नेश'क्या । कम्मतुन्'हैम'त्र सुन पागुव् कुम्य हेया । क्षेर्व्यात्र्व्यात्र्वाचान्त्रे । वित्र्यात्र्व्यात्र्व्यात्रे रेकाकुङकाङ्गेकाने तायाँ र। । ध्विषकान् ग्रेकामराम्या वैकाङकाता पर्या ग्रेक्ट्र्र्र्स्स्ब्रह्म्पर्वद्र्द्र्र्द्र्र्स्हित्र्याम्बुद्धार्यात्र्र् <u>र्रायह्मारुराव्यक्षर्भानुराप्राप्राप्त</u> स्वाप्त्रीं स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्ते स्वाप्ति स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्व पान्ना सुर्श्वेशह। वसापा देश यान विद्येन पान ने इस वार्चे ता सन् नवा गुन् भ्रेन् पर्दर्ग विद्यापय। हे पर्दर्श भ्रेष्य दय। न यान्य व्याप अप्तराग्रम्द्रम् श्रे। श्रेष्ठा अप्तर्भन्या स्थान विकास स्थान विकास स्थान विकास स्थान विकास स्थान स्थान स्थान **व्याप्य कार्क्र कारोजिन 'पाइस्र अपिन' मृत्रीय 'पामिन' पामिन अपिन स्वरामिन स्वराम अपिन स्वराम अपिन स्वराम अपिन** 4121七公211

म् द्वर्यराधित्वर्यात्रत्त्। वित्रवर्रात्रा रा वित्र पुरीवा । नगतायम विषयि पति नता तर्हें म खुरा में तरी । कि के **इं**रः इन्'याक्नेयान'वेद'रु'ब्रेव। ।बॅन'ब्रेर'गुर'र'वेग'पये'तुर'विन' री । रिया हम । सुर्भ न प्राप्त के स्था । यह त के स्था सह दे र्मक्षुनुत्रा । म्ब्रम्वयायम् सम्प्रिन्यम् स्वर्ताः **इ** बर्रः नत् चुः ल। विः हव गुला तुः तहे व पा भेव (तृः ग्रेवा । इन् न् ग्राः क्षे'र्ह्नग्'चित्रेन्'रु'षायञ्च'य। । तस्रच'र्वेरु'न्-र्ह्रेन्'र्ह्रेन्'र्ह्रेन्'रिन्ह्रोव्।। *ष्वेब*ॱदब्द्रभावेद्द्रद्व्यक्ते अस्ति । भू के अप्तद्वेद्द्रप्रे नेद्रप्तुः श्चेत्। विराह्याहियापासुन्त्रिः गण्यार्गिया विराह्यते यतुन्यस तकेर प'वेब'रु बेबा |सुर में बे न्वंर ह्या कुत्रा पाया । प्रवर तर्दर्'चे'द्ररचेर'र'भैद'र्'बेद्। । ग्रन्थस्यर्ग'यतुर्'हेरी'सस्यस्य त्री । । त्रवार्वे रूर्न्द्र पुरत्रहें रूप्ते विष्ठु हु हो वा । हो दायाय रामें हें वा वा राम। । शुर्वा दे के कार राजमी में वा । में शुराव इता तर्से रारा येव वा बह्री। इयानश्चरयाया नेरळेनवार्या देशकाशीक्राहनव हेल बुर्वा यर्ग रुग इस्र ल गुर्दे र देश पुरि श्रुर में स्र याचिर्-१८८। श्रेब्रांतर्भञ्चात्रात्यात्यात्यात्वात्रात्रात्वात्राह्मात्रात्रात्या चर्डुव्रध्यत्रभ्रुंग्रांतरीरह्य्याययाव्या नेन्'ग्रांव्यं चें द्वायात्रस्य नशुर्वित्वायकें । निवासें इयस्यायर त्रेवाय कुवानुत्व गरार <u> लु लुरापर्य। हे पर्वत्र्यीलया दुराम्या वि गम्याया क्रेया प्राचित्रा व्रावित्र</u>

हे 👸 ऱ्या अरप दे व्यवस्था ५५५। । ब्रेट् ५६ र 🛱 यह के क्या के प्राप्त 🚉 पन्ग'र्थ'र्थं इववा | नि'इत्य'त्र्य्यें रक्षेत्य'रक्ष'य'त्य। |त्युर'वेन् क्री ५५'रा'ग हैर'द्र राष्ट्रीया । [म'ले बेर्'यस ग्रॅंग'रा'ईरा । ग्ले'ग्रेग्' र्तुः कुर् पुर्नि पुर्ने । तस्याय व्या पुरत्रेष या या स्ट्रा पा श्रुरा । वैग्। ५ देश के राज् । गृनिश ग्रीशान इस। । ४ ज्ञॅ ग्रास्थ र देन ज्ये देन हारे । स् यरः। । गुनैराप्तद्रप्रवर्षस्यप्राक्षेग्रप्तुग् । श्रॅग्राप्त्रपृष्ठीराप्नी मुँर'यत्रर'र्यं भुर। । पर्सें ५,५५' क्यें विष्यं मुस्या विष्यं भिन्न भिन नि^ॱहॅग्बर्न्यः र्ने'त्रित्। व्विंग्बरक्तै'ग्पें'ब्वुं वे्ग्न्पंके। । ५५'न्न [मःसव्यानवायः स्वाप्त । मृतिवः त्रवाक्ती सेनाः स्वरायः वेत्। । होन्'बे'व्या'योञ्च'बर्ळन्'बेव्'तु'येन्। । त्र्ज्ञेष्याधेव्'चक्र्याद्'धे'ख्याप् तर्चे राय। । जॅन खुता तु खुता वृ क्यें रा रेखे। । न क्यें वृ बाबे न क्यें रेखें न त्रीयानुपर्त्री । विन्निन्निप्रवाह्मयश्रास्त्रीवाद्यवाह्मयान्त्री । विन्निन ळॅगराकुेभॅद्र'यर्ग'यॅ बॅ'द्रवया | व्रावर्कर'यकुर'वेर'यग्'टग्य पया व सम्मार्थन प्रमान मान्या मान्या प्रमान मान्या प्रम प्रमान मान्या प्रमान प् न्मॅन्यराधिदादन्ष न्तु ताव्वाधियास्याद्वनाम्यदान्मंन्यसुन

おれ、さ、まり、から、また、ガイ

बार्वे गुरु। हे पर्वव वीता रहारा ने कि नाम जार वर सर सरी ना अर्देन्यन्त्रन्त्र्रम् इयस्य श्रीसम्बन्न्य स्थित्र म्रास्य स्याप्त स्थाप म्रायदे'नग्दन्भुन्छैरभ्रेन्'र्जून्'नेरेन्पदादनरत्य क्रॅंबर-रुं हें दर्भायता विराधित ह्या सुवाय हुव राजेंदर है। देस से विवा ॔ ष्ठुण्यन्याञ्चनःविनःमतुष्यामः शयाव्याविषाव्याञ्चनः च्छैः सनः मन्देः छे। हे पर्दुव्पत्वुव्ययित्राधेव छेव्याव व्याप्त विवास है । पर्देव्य प्राप्त विवास है । पर्देव पर्देव विवास है । पर्देव विवास है । *ञ्चनसा*यान्युन्'ब्रन्'र्रेग्'ळॅरळॅर'त्रुग्'य'सबानवेत्राहे' ग्रेग् **ठे**ष्यम्बीतनुष मः क्रॅंबाळेव्यानमः क्रमः तिष्ठुत्यानमः तनुषान् वीम्बावया **यम् न**्ने व्यवस्थात् प्रत्वे न्या विषयात् विष्या विषयात् विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या विष्या इस्याबीन्वरमें त्रापांवग् में साविवापित द्वापित द्वापित विता विवा विवा विन्'रा'वेग'द्यन'र्द्य। बे'नेश'हे'यर्द्धन्यात्तु'व्यश्चयादेग'र्द्दग'ग्रुश'द्या बनकान्यविप्यति। बनकान्यविप्यति। बनकान्यविष्यति।

इ प्रस्थारीयाचेत्र स्थायग्रे राप्ती ग्री रहा ह्या ।

ইব্'ভব্'ঝম'দবি'ৰ্বজাম'নে 5ুদ্। | গ্লী'ম'মে' ঝর্ছ' নে র্লে ঝরা গ্লু ব্যব **ढ़ॗॱऀवरः। । वेर्र्स्यः श्चर्यायदेश्य श्चर्यः व्रह्मयः। । व्वर्रः येरः यः त्र्यः विद्याः** ষ্ঠীর'র্মা । এঅন্বে'নেই র্মাঅবি'ব্যা । স্ত্রা শ্লুর্'নেনি'ন সুন্'দ্রিণাঝ' म्बाक्षां विकास विकास के स्वास्त्र के वाला के स्वास्त्र के वाला के स्वास्त्र के वाला के स्वास्त्र के स्वा र्षेष्ठ'ग्री'न्ग्रीत्र'विषाच्या विश्वस्य हराष्ट्रिष्य प्राप्य स्वयस्य । निः**रा** बर्डरक्षःधिषाब्रवाययाप्यापरः। दिन्त्रेरक्केःदर्शेतिःन्यवानुःपर। । यश्रुश्चीर'प्रविप्तर्भेरप्याय। । ग्वत्राष्ट्रप्तर्ग्नार्श्वर्र्यस्ट हेन् । म्र हे अर्घेत्र मेला क्वीपा निरुदेश । । न्र हेन न्य र केंद्र न्य पर हि पहर य। १२'र्चेत'र्स्र-'चर्न्न्'चर्त्रकुल'र्स्क्षेत्। ।क्रेक्ष्व्रश्रॅन्'कुन् क्रे म। |विन् न्यायतः रूप्त्व स्यायत्यायिके। |तुः स्याप्त्याः स्या कन्याम । दिःग्रव्यम् अव्यक्षित्यक्षित्रः विदाः । द्रादाः कृष्यस्य रम्भिज्यान्त्रीयम्बा । विम्मिन्यान्यति । वर्षा बन्दर्न्यान्द्रअष्ट्रकेष । तुन्धान्यान्यान्यान्यान्याः <u> न्यार कृष्णे या पर कषा वा । ने प्रश्चर माञ्च भी या प्राप्त । प्राप्त</u> बद्धन् पुःचारी राधिवा दिव्या पार्थित्। । वितः तर्भे प्रांचन वर्षि रात्राप्त नदे से । इन्यायु न्याद्यास्य देन । इन मे स्याप्य सम् ष्यश्य। विक्रियक्तिर्वित्वष्यः क्ष्यश्य। वित्तर्वः कष्यन् उत्यः इन् ब्रॅन थेव। मिंबकर न्ववर क्रेबिंग के नहिन् । किन्दे न्व वर

हिःलान् चर् तस्रतास्रे। विना है न् ना दाया देन हेन विना सेन् स्टा रव कुंकित्याया । विकारकायिन यात्राव्याया । वित्रीत्राप्तावन देवा मुनेशञ्चरायादन्येद। ।यनेन्हन्श्यश्चेतने त्रेंग्यहराहे। द्युम:क्रुय:ब्रह्म्या:पु:सेबबायक्कीम:ब्रबा ।तुबाळे गुरुषा:सुबायकीय:सन् ब्राय्य देन अं विकास मार्थित स्त्री स्त्र मार्थित विकास मार्थित स्त्री स्त्र मार्थित स्त्री स्त्र मार्थित स्त्री स्त्र स ৸য়য়য়য়য়য়য়ৢয়ৢড়ৢ৽য়ৠয়ৢ৽য়ড়য়য়ৢঀৢ৽য়ড়৽য়য়ৢ৽ৢঀ ८इ'तेयरा'गर्ग'द्वप'त्ररहता'र्रा । । सर्वयरा'ठर्'तेयरा'हा'या नेरा व। इसक्ष्मानित्रे सम्मन्याने । सिस्याने मिन्याने मान व। । तरे स्वाविषय र्रेवापर राज्य । विष्य विषय राज्य न्द्रिन्द्रे सन्द्र । किन्यायान्द्रिन्द्रन्यंन्डिन्। देशन्युन्त पर्या विम्हान्य महाराम स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन गुरुगानेशयदायदीक्षरायहण्या

 न्रःकेष्व्ष्व्राच्याः
न्रःकेष्व्याः
न्रःकेष्व्याः
न्रःकेष्वः
न्रःकेषः
निकार्यः
न म्रायाकि हित्रे न्यापन स्माया | दिन्दे स्वर्धन स्वर्धन विषया प्रश्वापन | श्चित्रावित्रे सुन्यारोत्रात्रं सून्। |दिनास्य सुन्ति वित्रे मान्य स्वित्रे । इर इर हुर हुर के गुर्ने र विरा | | न ही वा विरादे र विराद्य यह हुरा दा | न्नरष्ट्रन्त्र् रुकेयाब्रा । प्रान्द्रन्त्र्रे स्ताया । न्यरेन न्यर्वेर व्यवस्त्वया । ने व्यवस्ति प्राप्त सति कुलार्य है। ।तमस्य तुन्य में विषय त्या पहिन दें सन्। । विन न्यत्र्व्वा त्रायात्रवादिके | वि न्तुवाद क्वाके केविता । न्या रपार्चेब्'क्र्यायाच्च'व। वि'खया'न्य: उद्भाष्ट्रा । क्रुं'व्यायायरे मर्राम्कुः मेरावरा इष्यानुः रेष्ट्रिये नयर व्यवस्या दिः य उत्र न्त्रक्षंत्रकाकुकुन्याके। विराह्मन्याक्षेत्रकाकुक्षान्यम् विराह्मन्। । मिन म्या स्त्रित्र तम्मा त्या त्री साम दिले । । यम स्त्र मे या नाम की है। साम वितः। |२:वॅ:तर्डवाग्रीकावामञ्जूकाद। |कावन्तरम् ग्रा-रुकेतायूनः। । हुनकारवाम्यायस्य वस्त्रवास्य । क्षिं नगरा हायी माना स्वाया । ने पर्वतायक धानारवायवाने। वि.स्टार्श्चरान्द्रेन्यं स्टेर्ट्स्म्रा मिन्दर्भित्वाम् अञ्चित्रत्वर्भित्वाम् वित्रेष्ठे । वित्रम्भित्वाम् वित्रेष्ठे विमः। । श्रुः स्वरे स्वराधिकाया महाकाव। । ६ गावा छः न गः र उरे त्या स्मः। । हर में स्वाप्त सरावया प्रयाप । सिक्ष कर्म में राष्ट्र म्यार स्वाया । निःतन्यः स्वासः स्व म्ना विन्ने नहार के सम्बन्ध स्थान स् त्रस्यावितः। । गर्मगः श्रे हेरा ग्रेस्या महासादा । । घणः है: न्यः राज्या ब्रा । विग में र कर कर की बेर पाया र विर के यार कर दे न पर ह्रण्या । तर्मन्त्रं म्ह्रम् केश्राश्चिम्यम् दे । । शुः ५८ छ्यः यहँ गः पुःरोययामक्केन्।वया |ळेमहेग्।स्यामहेग्।दन्।वेन्।प्रेया ।हे महेग्। बरवाज्ञुबानञ्जनबाव्याज्ञुनः। । तर्ज्ञानुनानीयाञ्चार देवार्चः स्ना व्रिन्डे ग्रेग्रामययाग्वर्ष्ट्रयामदेखे। । मग्रास्यव्यव्यामयाज्ञः छ्र है। |रनःशेययातिष्यानदे हेर्यस्यांग्रीय। ।द्यहूर्यान्या राज्यापन्या व। ।रः म्रगःश्रेष्ठ'र्गः रुःकेला स्रमः। । सरः यगः हमारा यह राय रिकेश Nश्चित्र । अवश्चित्र केर अपेश्वर । विराधित स्थान । क्षेत्रम् । तर्त्रेवर्गहेंद्राचराम् हेंग्याद्। । तर् दार्वाभे र्वत्राम् । षर्ष्र् | नर्त्रेवरान्त्रिक्र्रिक्ष्र् | विवयव्यक्रिक्ष् र्भेग्राह्युत्रस्य । । नाम्याः भ्रीत् सं व्यान्यत्य स्यान्य स्थि। । यन् श्रीतिन् कुष्मेन्त्यत्रष्ठः तिवाष्मेन्। १५५५ स्ट्रास्यस्य विवासम्बद्धाः ।५५५ स त्वियानते:सु:सग्क्र्रा । देवान्याःश्चित्रंस्रानेःम्रन्।तुरःग्चित्राया। हेः मर्ड्व भुष्टित्र वात्र विवाहित्य हिता हिता है। हेरे प्रवादित्य है। २ वे प्रज्ञुर्'की अगुर्द्रत्रे'ग्रुट्यःस्। ।

हिन्'यनेदार्द्र'यनेदार्द्र'त्रे देशंत्र । वित्ययायकातिकायायकातिकायायकातिकायायकातिकायायकातिकायायकातिकायायकातिकायायकातिकायायकायकातिकायायकात्यकायकातिकायकातिकायायकातिकायायकातिकायायकातिकायायकातिकायायकातिकायकातिकायकातिकायायकातिका

न्त्रेर्णुःहरुवर्ने । श्रिविध्येतेः इद्यक्षिक्षित्यान्त्रुन्। । वदः दह्राः म्यारह्मस्यापुर्वेत्राश्चित्रम्याया । व्यान्यायस्यान्यस्या । पति'ये नेबारु र गुँबाबर। । इन्याबर प्रायम प्रायम । प्राप्त विन विन गुँ **८ के प्रमान के स्थान विद्याले के प्रमान के** र्यतः इसाया वेसारः सेर्। विश्वा पविषयः सरायक्षायम् । सेसस रेर्नेते हे त्यायर प्रकृषापय। [त्युर वेन् हेन तहेन हुर हि स्रीवा] म्लिस् त्युरः हॅन्यं प्रश्वित्येत्। । क्रुप्तिः न्व्रात्यं यस्यक्षाः पर्वा । कुन्द कर विराध राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र विराध राष्ट्र र बेर्। ।तहत्रस्त्रंत्रस्त्रं अर्धराउं व। । सूराकूरा तुरातह्रण तुराकुरा इव। १८ हम ७६ मा है सामा हारा वेद। मा हम सम्बद्धा समित र्स्त । तिह्नेन्येन् न्यामान्त्रा मुन्तेन्त्र मिन्ने हार् दिन् हेना पर्या तृसार से तृ । । रर रे प् तो स्रात्म स्रुत्र रा द्वेत्र रा देश रा या । । वृस दर बर्भेरतुर्ग्धेशद्व। । मान्द्रेर्भ्यन् इंट्यायस्त्रवार्वेत्। 193 <u> इंद्र'क्रीप्रवसदे, इंद्रानया । स्यूर्यस्य प्रमान्यस्य । स्याप्त</u> कॅन्यवेष्यान्यान्यान्येन्। ।हॅन्नेच्यायेष्यान्यन्यन्येषान्यान्यः। रोयराक्चिन्'केन्'मॅं'म्'व्या ।न्'स्थियन्व'तन्ने'स्र्राम्ब्रीया ।सयन्व' गर्दे र केर त्र के प्रस्ते र । । दे हु त्र वा हि र र र प्रवास वा । द **यम्पर्याप्तराचित्रान्ये वृष्याप्त्राया । यश्चर्यान्यः वृष्याप्तरा**

त्रिःश्व-भ्राम्भ्रव्या विषय्वान्यः प्रस्तः वश्राद्धः त्याः वृत्तः त्याः स्राम्यः व्याः विषयः व्याः व्यः व्याः व्य

प्रस्तियोक्षान्यया | निक्रम् स्रोक्षित्र | विन् क्रिस्तियोक्षान्य | विन क्रिस्तियोक्षान्य विन क्रिस्तियोक्ष्य क्रिस्तियोक्ष्य विन क्रिस्तियोक्ष्य विन क्रिस्तियोक्ष्य विन क्रिस्तियोक्ष्य विन क्रिस्तियोक्ष्य विन क्रिस्तियोक्ष्य विन क्रिस्तिय क

विश्यत्व, टी. ज्यी क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं विश्यत्व, टी. ज्यी क्ष्यं क्ष्यं विश्यत्व, टी. ज्यी क्ष्यं क्ष्यं विश्यत्व, विश्यत्व,

दिन् द्वा दिन् प्रमान्य वा में मिन्। अता न् रिन् पत्र में भें भें पायर वा । स् इश्चार्याययाचियातास्यया । र्र्यायाः ह्यान्त्रायाः स्वारा विश्वतिवश्येवश्च्यात्र्व्यात्र्वात्रात्र्वात्र्वात्रात्र्वात्र्वात्रात्र्वात्रात्र्वात्रात्र्वात्रात्र्वात्रात्र देया । तर्म कुर् दे सार र ग् के केरा । किर् के के सग स्वाय र द राप्ता । तस्याप्तायार वाप्य वापारी हिरा । व्यापाप्ता हेवा पिश्राच्या । ने धी सूं पर्या श्री शान्यव से मास्री या। विषा स्वा गान स्वा म् चरिः ज्रूनः नुः ज्रुन । नगः क्षेत्र ने न्द्रः क्षेत्र न्द्रः क्षेत्र व । विवरः क्षे न्ने तर्ते निर्देश्य त्राप्त न् । अयान्य परिन्हिन वर्ष कुराय ने । मश्रकुरव्यवाष्ट्रर्भ्वर्र्द्रकेशम्बत्यव्य । १८१६रम्बर्देश्वर्द्रम्ब पर्वसंभित्रम् । । । । । भारती प्रमास्त्रम् । । भारती प्रमास्त्रम् । । भारती प्रमास्त्रम् । । भारती प्रमास्त्रम् मञ्जयम्प्रियाप्रस्य । मार्यमाने सुन्तर स्वेन्यय ये । । अन क्रेन्'सु'तर वसर बेर्। ।श्रुंन'य'सु'तर पत्रत्म हर्'बेर्। ।र'धेन वित्याच नेत्र क्षेण चहेत्। वित्यीयात्र तत्र न्य मृत्य ह्या वित्र माचनका वर्षे तक्ष्यकाय। । तदे हिंदि श्रीमान्द श्री संद्यायेव।

हे रुवा ग्रुवायर या क्या गुन की गरी । दि हे तकर केन ५५० जूर खुरा |द्रवडरामह्रद्रांचदिग्यन्ग्रांबर्ट्रा । माबह्रद्रां छुन् छुन शेयरामञ्जेन'मनमः। निन्'न्यन्यांभैमःश्चेन'मर्शन्यमःह। छिन्' क्चिन्नहुन: इंबर्ग्नं पञ्चेबा । नबर्नः यं रः श्चें पर्ने द्वरंग् द्वरं के प्राप्ता । न्यः इंबाब्रे : इंबाव्यापयया येथा । । पनः नुःपया पत्रे स्वापा विवाया । ढ़ॕज़ॱॲ॔॔॔॔ॹज़ज़ॖज़ॱख़ॖऺॻॱॻॾॕॸ॔ॱॻड़ॱॺॱऄॸऻ<u>ॗॎऄॹज़ॱॶॹॱ</u>ॸज़ॱॸॺज़ॱऄ॔*ॸ*ॱ ষ্ট্রীঝা । দের্বাদারীয়মাভবালয়মাভদ্'মা । দেব'ঋদ'ম দৃশ্বাদি'শাই দ্' कुर्प्त्रभ्य । र्वाक्षेत्र वेर वेर वर्ष्य प्रति व्रव्य राज्य । विर प्रति वर्षा वर्षा ळेब'क्वॅन्। ।क्वॅब'वबाग्रेग'सुरःश्च्यायायस्न्। ।नेन्'ग्रुनःरेबान्गतः देशज्ञ'न् गत्। । न् गत्र'नदे छै र व कें हु न' यह स्। । य न् गदे छै र व ' विनवासायहरू। |देगवेदानदेश्चित्रवाहेतानवाव। ।दुवादाववा न्यव र्वेदे न नुन् द्वार्थेन । । क्रब क्रेन व बाबेन त्य क्रेन व्यानेन । अर्देरवातुवावायाच्या अवर्षे । पर्ने केन र्देन परिपरीया ही त श्चैय। [नुग'क्ष्य'हेव'यदंव'ग्नुन्यप'ये। ।ययन्व'यन्ने'यं पश्चप तुःग्रांय। । विन्ष्येपायायाय हेन द्राया । । द्रने द्राया चुन से छन <u>ङ्ग'नर। । गृतुग्पदेपस्यस्य गुन्दे हे। । इत्यत्र्र्ञसङ्ख्रेनपदेः</u>

म्रायान्यान्त्रेन्याः स्थान्यान्त्रेन्याः । स्थान्यान्त्रेन्य्यान्तेन्त्र्याम् भिन्। । गन्यराम्याभेन् छेन् गनिम्यर्स्य भिन्। । प्रार्ह्स क्षेत्र न्या श्चम्याप्याप्य भिन् । इस्यानिन म्हेन्याप्याप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य स्थाप्य इसराग्रीस् व स्वरा । क्रिन्स् प्रवास्त्र स्वराग्री क्रिया । पृत्र हुन पतिःर्ज्ञितातहिन्धित्। विनःस्वाक्षेत्रकाक्षेत्राचित्। विमन रार्हेन'वरानक्षेंबराय'भेव। क्षिट हेरान्तुन'य'तत्रायभेव। । थिन पः च्रणः त्या व्रह्मच धिव्। । धिन्द्रमा थेन पनः क्षेत्रा यहन् धिव्। । हॅंद्र'द्रबद्दारा सेवर्यं वा स्वाप्त का स्वाप ठण्टवा । तरे व्रिप्यक्षक्षेत्रप्रस्थेव। । तरे व्रिप्यक्षक्ष मारत् नेकामेवा । तर्रे हिंदामकार वाया मकार वामेवा । तर्रे हिंदा मलक्ति। १८९ हिन्यस्य दिन्यस्य दिन्यस्य । तरे तरे उपवाद व व व द प्राप्ति । । तरे हैं मार्य के ब व र्य षिव। । तर्रे कंश वेर र में वर् मृताय पिव। । तर्रे मां बर ने र वर है वर राषित्। १८द्रे:सेयराशुःनेरान् कुन्'रु'तकर। १ने'भैन'खन्यानेस

चर्चवयराउन्'र्ज्ञ्य। । तन्ने'न्यन्'र्वस्थन् ळेण'गन्'रु'गह्नद्। मिं में बान तुत्र द्वर त्याय न न न । वित् कन त्या प कर के न न न न श्चित्रः । वित्यांक्यां में हेरहेर्द्रायां भी । त्यां क्षेणां यव्यां प्रति यशुन् यान्डेन विनयहेर्नार्येष्ट्रन्थतिवि वियरम्परम्पर्या यान्ड्रा ।नात्रानुः न्यायवात्र्यायुराद्रा ।र्दे हे न्युतापरात्र्या तरःदेव। |ने'र्ने'न्याके'तवस्यन्'न्युअप्तसुर। |ने'र्मे'त्ररःग्रीक्षयः यग्'येव'र्भुट्य। सिं'र्भूय'र्भुव'यया प्रवट्गत्यायुर्। । सिंदिरकाळे'व' परे'केब'बेर'। |रप'रविवयापयवाग्रीयावीदायर। । विर'क्रप' सेयरान्नहिन्'स्न'न्या । गृत्यानुःतिरान्धेःन्नार्यसञ्जे। । ई हे रोबबाद्यते पुरुषेर पुष्ठा विद्यान पुरुष हो द्यायाय हना सम्बा য়ঀ'য়ৢঀ'য়য়'য়ेपড়ৢঀ'য়ড়ঀ'ৢঀৼয়ৢয়ৼঢ়'য়ৼঢ়'য়ৢয়। ঌ৽ঀৢয়ৢঢ়৾ঢ় परावशञ्चरवादवादस्यायापापविदार्वराति। परपर्रा वुन्वेन् जुद्रपचन र्येन हुन्या। बह्रा देन भेन् पुर्देन पदि द्वा पर्या व्यवासन्दायक्रन्यायन्त्राष्ट्रिम्ब्राह्मम् हे। हेरवर्ष्वायायक्रन् रास्तावत। चग्रीव वसायन्ग्यस्य व मीतात्रे स्रीतास्य वस्य। चग्रस्यवाद्यान्यस्य । चयस्यप्रम्यस्य विसर्धिस्य नर्भित्राचराया न्रिक्षिक्ष्यात्र्र्भ्यात्र्र्भ्यात्र्र्भ्यात्र्र्भ्यात्र्र्भ्यात्र्र्भ्यात्र् व्रव्यक्तित्तरात्वाश्यकेत्वा द्वा द्वा वर्ष्या विष्यत्वा विष्यत्वा वर्षा पर्दे देश में वृश्वे केंश विगृग्वद प्राप्त (वृश्वव्यात् स्वातः श्वाप्तः स्वरः ।

শা।

खे अप्यः र नवाय हं र वाकी दी। । न वें र व व वापन व व व दि स् पंचर। । कुन्'प'पवन्'येते चैत्राक्रपराचर। । कुन्पाय वर्षन्पति <u>श्रेर:उसक्व। । गुरुग:स्रायलग्यायदेश्रेर:स्रायक्व। । त्रायः</u> दंद'क्कीक्ष्मप्तायस्त्र । । तदे प्रमाण्डेन'प्रमाप्तम् क्षेत्रेन प्रमा । वनः ङक्ष्या हुन्य क्षेत्र हे दार होता सरा । हु या गर हो सर्द दा हिंदा परा । दिन् ত্বা'ট্রব'ফ্রীরমম'ন্ন'ন্র্নম। |য়ুঁর'৸য়'নর্ন'ন্ম'য়ৄর'ব্ম' त्र्वेष। । १४ व'कन्'शुत'र्वेन'यन'यहत्य'यन'। । प्रगत्रेन्'र्वेन'क्र्मका ট্রি-'শেষার্লা । ব্'ব্লব্'র্ল'ন্ন্'শীষাপ্ত'নের্ম'না । ইমার্ব ব্র্ चेग्-न्यब्यम् पञ्चरत्य। । यश्व्रं व्यास्य स्याप्तान् ग्रायः बळेया । तियम् न देने प्रकट्ट स्वर्धे स ब्रायम् वरादेश। । इसाधिसादेन प्रतिश्चितान् मंब्री । । रूपार्ने व्या श्चा वि प्रत्य । हे नुषा पश्चिष्य वि श्वा श्वा श्वा श्वा । के व्य हे न देशचत्रे'र्नेब्'कॅ्ष्वयम् । हिन्बस्यत्रह्मद्रयम् चनः अति देव। निन्दनः याद्रैयानदेश्यद्रम्याद्वम्य। |देशाद्द्र्ययद्रम्युग्ञ्चेयात्रादे। । चन्न'डन'त्रेन'त्रन'हिराचडराय। | क्रें हेते'न्यन'ळेन'न्यपते' <u> ६व। । वेशके वर्षे प्रतामा । वर्षे प्रविधित प्राथमा वरः ५ । व्या</u> ग्रंभ। |देशद्वाचपञ्चाग्रम्पत्का |व्यप्यस्वार्व्यं र्शेत्। । नर्भवरायकार्विरानरात्व्यवाद्येत्। । मान्ये वेत्यर प्राप्तरत्। । वेशन्यप्या हेपईन्ध्या ५५५६ हर्षं

त्यात्रव्यं भ्रं या शेष्ट्रव्यं श्रे व्याप्त्रव्यः व्याप्त्र्यः व्याप्त्रव्यः व्याप्त्यः व्याप्त्रव्यः व्याप्त्यः व्याप्तः व्याप्त्यः व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्यापतः व्य

हे स्र्रापदेश्यम् यक्तु राधिषा व्यविष्य वर्ष । । यह न पहें न प्रमान प्राप्त নম মার্বানা বিশ্বশৃত্ত ব্রাষ্ট্রপ্রমান বর্বা বিশ্বশৃত্তি ব্ श्चायम्बर्यस्थित्रंहै। । तर्रे हिंद्रंश्चित्रंश्चार्यम्बर्धेम्याचेनः। । दःरेषः न्दराखन्यकी न् इत्याभिना विद्या । त्र्या न् न् क्षेत्र न्श्रम। । मुन्यमान्द्रम्यम् मान्द्रम्यम् मान्द्रम्यम् । र्रायांचेया । तहराप्राव्यांच्यांच्यांच्यांच्याः ह्रेची,परंच्यावी,चेश्वा विस्तान,चाची,परंचायावीस्त विश्वालस्य म्बिर्द्रात्मेवा ।द्रम्बःह्याः हिम्बिर्द्रात्राम्बुवा ।हुनःयन्द्रः **ざった「みずりた」 | 野み「中下れ」で、「おって」 | 野り「下下っち」 |** 술'보니의'시입에 | 음다'떠다'환'리왔-'다'에 시원다' | 남의'따다'환'의왕 र्रायाचेय। । त्रम्कम्य प्राप्तः विदाक्षम्य प्राप्ते व्यक्षम्य प्राप्ते । विद्राः मन्गुव्यविष्टन्यवाद्धनः। विवायनःगुव्यविष्टन्यः विवा । रन देग्;न्र-र-म्ययाप्तः ज्याग्वय। । हुनः धनः रोयया हेन् प्रनः तय

हुर। विवायरावेबरावेरारावेब। क्वि.बेर्पराववा नहें न वेन प्रवा । बुन प्यन केंबा वेन प्रनासवा बुन । विकायन केंबा वैत्रप्रायाचेया । तिर्रेराञ्चरप्रायदेरात्रेद्रप्रदेश्वर्राम्ह्रग्राग्रुया । **बुत्।यात्रह्मात्र्र्वेत्रत्रत्।याबुत्।** विद्यायात्रह्मात्र्वेत्रत्रत्या धैय। । । सरायोग् या इयसारीयसाग्री कें तहुता है। । नराञ्चर कूँरा यर्अंहॅग्रायय। १८द्रे.रर्क्ट्र्न्'तु'द्रेद्र्यंद्र्यात्रेंर्द्रह्य। । सर्तिष्याचर्द्रः चारोयश्रम् साधुरः । शिवराकुर्द्र द्रां हे ग्रापायवा ढ़॔ॸॱॻऻॴॴढ़ऒॖ॔ढ़॔ॸॹऺॸॱॻॸॱॺॾॕॸॱ।<u>ॿॖऀॱॹॴॹॖऀॹॸॱ</u>ॻढ़ॿॖॗॴॸढ़ऀॱ रायया । इन् नित्र वर्ष ने हिन् निह नियान । इन हिन निहे ने हिन निह नि बेन्'सरः हॅन्य। । सरः झॅअरा हेन्'कुरः हॅन्'रास। । बेः झॅअरा परः हॅगप्रहे। ।क्रॅंअन्ट्रेक्कॅंअग्वेन्थर्थं वेट्। । ग्वेस्ट्रेक्ट्रेक्ट्रे त्ह्ययानते नृत्वे। । यस राष्ट्रम् र्च्याया स्वापा । तर्ने गुन्ने य या ग्री बर्द्धक हैन दे। | द्रायाय विश्व विष्ठिन द्रोर प्रविष द्राया । देव केंबा वित्'गृत्र्'त्य'त्रवेचर्याय'भेव। ।त्'क्वॅत्'क्ष'च'क्वॅ'त्र'क्यंक्व्या । र्झेंअप्राधेत्रवेत्रित्त्र्र्पुत्त्र्यः । क्वेंत्र्यः श्चित्रव्यः त्युत्रः तन् वायेत् ब्रुंट्य। । तत्रकातुः रेन्द्रं ग्रामः अन् ब्रॅट्य। । तर्रे व्रिन् के क्या अता ने'ल'यहरी निक्रेंट'र्**छ**ट्यश्चु'ल'र्छययांक्षेत्र्या हिंद्'टे हेंग्' व्यवन्ष्यं म्प्री । त्रेषात्तुः येन्वाचे रावदात्रात्रा भेव। । ५ क्ष्मिंदिते हुँ व द्वेण भेव। । तरे हिंद छैल द्वारा हु तेव व तुरा । । इस हु'नन्'केन्'नरामां । भ्रायानु'नग्'येन्'नतुन्'हे'तहुन्य। ।ययहु

नन्यति स्नून स्था

व्यं गुउ | हे पहुंव शिया र या पाने जिन सिन्या व या ने स्व व या प्राप्त प्रापत प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्रापत प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्रापत प्रा

बर्द्धन्यः स्वान्त्रायान् । । सुवारात्रीयानदीयस्वान्दायेव । <u>श्र</u>न:र्<u>र</u>्चेन:पत्रिःन्याकुन:पद्भी । | ब्रेब:पार्श्वेन:पत्रिःयवायाह्यःपीव। । ग्नवरादग्यशेषस्यभूरम्बुयपदी । । परः देशेयापदि यसम्बर् **धै**द्। ।तुर-रोगराभगशु-उर-पः८रे। ।तुर-प्रवयपञ्जर-पदिः स्थायाद्यायेव। । सुनः र्वेषा त्रवः तुः पञ्च न्यां त्रेष्ठः त्तुतानते त्या वादन पेवा । ५ देव पति वादा क्षेत्र । । चिर्-छ्न-श्चित्रार्थित्रायात्र्यायेत्। । । शयायात्र्यः द्वानीयाः सून्द्रत्यः व्या । व्रतः क्रुपः हॅनः त्यात तृषाः गुनः तक्या । वेषाः ष शुन्या वयाः रग्'अ'सुरी'ग्वसांसुर्ह्येव'हे। ने'सव'क्ष्म'ग्वसाने'स्य'नुम'ख्यार्ह्समानु म्पाराया । नेवलाहेम्बद्धन्यवरानेम्द्धर्मेकुन्कीनिननेवर् यद् ग्रायाया त्रावयाविगानी संवया ग्रायायाया प्राप्ता न्या नै'र्-इ'र्-र'यर्शेश्च'यर'र्ये'द्वर'प्य। ध्याप'इयरायान्य्'द्वराय रतायात्व ग्राचायायाहे हे हो हे हे स्क्रां है। रूप्त सर्वे हे स्विमा म्याञ्चर्रायायकेषेद्राव्याञ्चराष्ट्रिष्याया मर्म्यवयक्रायः त्त्रिव्यक्षेत्रः व्यन्तः प्रस्ट्राम्यवयः उत्तर्देव्यवः वितः व्यनः प्रस्टान्यवः । । । ळॅन्या ग्रैया न्या ततु गाया इयया ग्रीया ये ऋष्य प्राप्ता । व्राय ह्रिया या प्राप्ता र्रा मुक्रिया पान् पान् पान् पान् पान् पान् विकास मान्य विकास कर् तस्यार्श्वस्त्रम् इत्रहेत्। हिन्यम् श्रुपःस्याप्तर्भाग्यार्थात्रम् **ठी कुव 'रा बुट हैं गुराय हैं ५ 'र्' मुद्दायाय । है 'य ईव के मुग्न याय विवा**

ह्यम्याञ्चयम्यादित्वयायाम्यायाःमा । क्रेन् हेते स्टारहेत् ৲ন'নস্তুৰ'ট়৷ |নধীৰ'মৰাট্ৰী'লম'স্তুৰ'মন'ৰ্**ৰ**'শুন'৷ |শ্*নু*ম' इति'सं'र्हेग'श्चेन'यह्न'पते। श्चि'श्चर्यस्पते'व्वत्र्यंत्यत्त् **৫ট্র'ন'ব্য'ঝ্**দেন'<mark>দ্দ'ঝকুঅ'ন ই'</mark>মীঅম'ক্ব'ক্ষমা য়৾ঢ়য়য়ৢয়য়ৣয়৾৻য়য়ৼয়য়৸য়ৼয়ৢঀ৾য়ৢয়য়ৢয়য়য়ঀ৾৾য়য়ঢ়৻ৼঢ়ৼ৸য়য়য় শৃৰ্ব্-শৃষ্ট্ৰৰ্-প্ৰ'আৰিব। |भेन्'बिर्तासकुंग्यंबिर्त्त्र्त्रेतिःस्वित्र नराभिन्'यान हन्यानिष्येन् न्या इयस्य । यस्य वे'न्ये श्चन् प्रित्य श्चैन'ग्रेमा । नुमान भ्रंभी नुमामा सम्मामा । केंद्र ने न प्यान मान्य याग्रॅं र्'यम् यमुत्रा । वि'य' न् श्रुत्यान्तरे ग्वरुषा शुक्की । ने कु'त्न्त्रः त्ररं दंशक्षेत्रपदिश्चः । ५'५म्बर् द्रम् हत्रयाहत्रयायवःद्रम् । ५ दे নশ্বেল্ড-শেল্ড বিল্লা বিশ্বিশ্ব শেল্ড ব্যা **सळ्ड्रस्य अपने यान्यात्रायात्र्यात्रायात्र्यात्रायात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र** पर्वेवंत्रपदित्वहुत। । तहत्रहुत्वेवत्रक्तिः वृत्रव्यक्ति।

रतः द्वरापाद्यकारकर् द्वायारकेष। । यन्नाः त्रादे देवराये द्वरायक ब्रॅल। । ग्राह्मराद्भेरायां स्वर्थाया । प्राह्मराया । प्राह्मरा । प्राह्मराया । <u>র্জনামুন্র রূমামারীব। । শ্ল</u>াডানের রূমানের রূমানের রূমান ग्रॅं न्'राते'तेवर्षा ग्रैस्परःग्रें न्'रा । । श्रस्त्रापा चंत्राविषा ग्रुन्परः **बद्रा । रोबराश्चरः यदः विराह्यः हुः प्रदेश्च । विराधि वेदान्तुरः** गुन्पविषा । १२५ विष्या हिन्या हिन्य हिन्य हिन्य हिन्य । १५ अस [म्यरापर्कं पञ्च ५ 'यव' कर्'ग्री । । त्र्जें प्र'रेष सह्य 'र्म् रायर स गुन्। | तहेन्यार्श्वं कुर्याराध्यन्ते भूद। | न्तिने न्ति व्यव्यान् देन <u>ଛ୍</u>ଡିବ'ଶି'ଅ'ଦିବା |ତ୍ରିମ'ୟମ୍ପ'ଞ୍ଚୁମଷ'ଞ୍ଚ'ୟଖ୍ୟ'ମ୍ୟମ'ମକ୍ଥିମ'ୟ| |ଶି'ମ' लग्नें र्पायाद ब्रियायर। । ब्रिर्परि वयाग्नव र्र्येर युराव। । **ৼॅ्व'**ळ्द'प्रुब्य'रा'र्नॅब'बेद'्षेव। |श्चर'प्पर'ष्ठेद'रूर'र्द्र'ळं। | ने अ विग ने अ विग पर हे रहें पाय इस्या । विश्व गहार य दय। ईया विन्'ग्रीप्टन्'रु'यव्यायर'पवन्'प्या तर्रे'ळेन्यस्ययाश्चर्पन्'पर युराने। सुनान्तराष्ट्रं स्वा विनक्ष श्रीनेरा स्वा । ह्येत्रप्त हत्र पार्चे पापति इत्यात् ह्ये रायर गृत्त्रपा नेत्र श्रीकार्मे अनिया र्षे*व् कत् 'सर्च 'त्र संस्रा'या* स्त्र' प्राप्त मृत्रीया स्तर्भे क्ष्या स्त्र प्राप्त स्त्र क्ष्या स्त्र स्त्र स्व नगरनञ्चनप्रसः कॅबारनेतारेग्वरप्रस्तुं नेरप्रस् ग्रीसर्दित्। भैगामानेपानात्रीमुनिनः। न्नीमासुन्। सुअर्क्वेन्यपनः हा। विवान्यस्या वितारस्य विवासित्यस्य য়ॅग्'ब्रेन्'सुतान्त्राचग्वै'त्यन्याच्येन्'यन'विषाञ्चन्याने। रन'रन

र्स्यतः गृवसञ्ज्ञार्सनः नः ने 'इयस' दे 'यन' धारा ग्री'न से रि 'झे 'वें 'नन'। न्यतात्रत्रक्षेण्विष्यन्ग्भिन्द्र्।। देप्तद्धन्षुरुणुन्देर्न्न्यता तनरक्के नृत्वे मन्नु तिरे र हुर हैर रे वें न्यतातनरता के न्रु पक्ष अ तुः त्र्वें क्षे न्वें व्ययत्त्र्वा न्वें न्व है। वद्यने वन ववा प्राप्त ववा प्राप्त व रायव। व्यवस्यभेन मृत्रेय प्रमान स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व चुरः छ्वा झूरा विर्वेशविष्या । चुरः छ्वा श्रुवापि देशे ता | चुन्दुन्तेत्रवातान्तरः श्चन्तिनः । । चुन्दुनः येवदाश्चे इतार्यमुं र क्रुरः। । वृत्रः क्ष्मः क्षेत्रः य्युरः वृत्रः वृत्यः वृत्रः वृतः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्यः वृत्रः वृत्यः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृतः वृत्यः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत्रः वृत पतर्ने न्यागुद्र। । हुन छ्या वर्ष्ट्या या श्वेराय र मेंया। केदा या श्वनः विनः ह्य वर्षात्र वर्षात्र स्वर्धित । दे वर्षात्र वर्य वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात्र वर्षात् न्दिन्निक्षक्ष्यान्त्रः न्दिन्। न्द्रा क्षेत्राक्ष्यक्ष्यान् का यत्रतः स्वारं राज्यान्य विकास स्वारं स्वारं स्वारं स्वारं स्वरं स्वारं स म्नान्द्रिन्। देदेवन्वस्यम्नान्द्रयाः म्रान्द्रव्यन्तरम् पर्या प्रविश्वत्यन्ग्वीश्वस्यान्ग्रिश्वत्यस्य स्वात्र्यः स्विन् हे स्निन् स्वात्र हें पर्वन् गुरा प्रवापन्या ब्रिन्यर की बेर के बेन スタが出ている नुषुम्यायम् क्षुप्रयम् सुप्रायम् वात्रे मार्थः हे पर्वत् ग्रीया वीमा **बिन्दारी वृंदर्शीक्षेन्दर्धतामः अर्थन्यसम्बद्धान्यः विवादाः** विगामेन नतर। क्षेप्रदायान स्वतंत्रक स्वाहितान के न्वे वार परिकृत षिव'ग्रह्मत्यावय। क्षुप्रयम्भायमुम्पर्ने गृह्यस्यार्थ।। र-२ेग्राह्य'तहुलानदे जॅराह्येरहा । इसमेबातहुलानदे

ष्ट्रितुःकुन् रतित्रया । भवाकुः रष्ट्रियः द्वनः द्वन्यः ब्रुनः । द्रिवः र वादः **ढ़ॅग**्रापते'तष्त्रुत'ञ्चर'धुर'। |रॅ'क्रॅंबर्य'सुअ'तु'∃राखु'<u>चे</u>य। |रेब' *है* '८ ग्राट हुर है '८ छट 'छुर। । देश' ८ ग्र 'ङ्गेट 'हे ५' ३ राज्य हु' ईरा | । रेश्वत्वत्वत्व्वाळ्व् स्वायत्व्वयञ्चेत्। |रेश्वत्वतः स्वायते वह्ना इत् वुत्। । न्यारधीयविषाक्षण ह्र्य्यात्वुत्व। । देवातन्त्र र्रा चुर दे 'खुरा हेव। | रेश वे हेर हेरे खुरू त तत्र हा | रेश तनात्रवातरत्र्तिः न्यास्यातम् । देशतनतः तम् नयाते सूनः प'सुन्। | तथ'र्मेब'कुन्'रे'र्मेब'खु'र्मुव। | देब'दगद'गृहुब'र्सदी' **२२**'इॅ२'ख्रर| |रेश'है'व्यर्थ'ळ्य'ख्य'यश्चर'यश्चेर। |रेश'द**ग**द' मॅ्र व्यक्ति हिला दूर्य प्राप्त । दिवा पाये प्रेस मॅ्र व्यक्ति । <u> न् गर में न् वे पञ्चित्र सम्बद्धा | प्यन् न् व व्यव्य से व प्या | </u> **र**र-रेग'रोबराग्री'स'पर्र'पठर्। |र'इत्य'र्द्येर'शे'धेरोर'गे^षित्।| क्ष्रपापचरार्घते मुस्राप्यक्षा । क्ष्रियापापचरार्घते अके के राउदा । *ज़ॺॺॱ*ऄॺॱॴॸॺॱॹॖॗऀॱढ़ॕॸॺॱॹॖॱॻॖॺऻॎऻॗॕॎॺॱॸॖॺॱढ़ॼॺॱॹॖॱढ़ॺॕ**ॻ**ॱॸॗॱॸॆऻॗऻ ८. ईपापच्चे पश्चाक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्र । विट. क्षेत्र श्वेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्र ह्यत्रं द्रवाद प्रयासम् । प्रवाद में द्रवाद स्वाद स मः इत्यत् र्ह्य र के के के न्या मिन्न । य के न्या का नाम निवा मुरा | ह्रेंग्यंदेयपहर्नपदेखेंबर्ज्वेक्टर | विरापहर्गिक्स **ब्रेन्'अप्तर'य'ब्रेन्'। ।यन'न्य'र्न्न'क्रे'ञ्च'अप'अप। ।**तञ्चारा

र्म्बान् के बार शुप्त हुन्ते। । मा इतार हुँ मा ही भी मा हा है। । मा दे - क्षेत्रान्दर्भायाधीव। । मानिभूमानापूर्णम्मानिमाना ततुवायावरामुरायावदा ।रावेरियायेर्वाह्यारामुँ राया ।रावेर न्दः हुनः न् हृदः बेदः बावदा । दः देः त्रका बेदः हुवः तुः य। । दः देः त्रका बेन्'न्डेरसु'य। ।न'दे'हॅं र'बेन्'ब्रॅन्वॅ'य। ।न'दे'धे'ळेब मसवाबेन्'वाववा । न'के'रिनेर्स्न्'रिनेर्गवयाबेन्। र्श्वेन'य'ञ्चन'क्रम'याम्बा १न'बेश्वेंब'य'वे'श्वेन'याम्बा १न'बे'उन' बेर्'र्नेबबेर्'ब्राब्द्। ।र्नेब्रप्रदेखें'ग्रुर्'यञ्चर'र्नेब्'द्र। **ब्रिह्मन्'ल'कृब्'बॅम्बान्ग्रल'ळेष्यप्न। ।**ऍब्'चन्ग्'दॅ'चक्कल'ळॅग्' तान्तुन्। ।इतार्वेरान्यम्। सुन्यर्वारा राम्बरविर्द्धनियां भेषा । श्चिनामिर प्रेत्रा सम्मान ळें दिन र ळें सेट क्ट 'येट 'हेट'। १८०४ त्रुं र पटे 'ग्रुंट 'ऑट या युट्' वया । श्रेच्यान्यापरीविनावयशश्चा । यहसावयार्क्यायार्श्वेना पर मेंग । ने व सामाव व में व मुन पर मेंग । देवा महार सामा ने'गबार्क्रवापर'वान्त्रहे। देन'क्षेत्रवा'पार्क्ववार्थहेन्द्रित्रहेर पत्न्वर्देव्दळॅळकाप्प्पान्वेद्यपञ्चपायकाचेद्राश्चर्पपत्वेद्यप्रप्रत्वा विश्वविश्वव । मुन्द्वरार्थेन्द्रायव व्ययन्ति वीत्र के मुत्र सुवा संस्राय पर <u> श्रैस'सुत्पर्ये। । ने'न्द्रस'हे'नर्द्धन'यःसुन्दर्यन्द्रस'न्द्रस्य वाक्षःनरःगुन्तः</u> नव। सुन्यायकेषायविवाधितायारमायारमायारकायारमारायारा

मुन्दान्यस्य स्वरंदि विद्या स्वरंदा स् मुन्दान्य स्वरंदा स्वर

न्ग्रस्यम् । बन्दर्वर्भव्यन्ग्रन्थ्वर्थन्। । कुनःरेन्दर न्गर्र्षसम्बर्गरुन्। । बतुव्वन्न्म्बर्गर्र्न्त्वव्यक्षसञ्चर्य।। इन न मन्द्र वेद न केन हो ला भारत । दि व्हर भीन दिन राह्न था। ह्:चु:अश्वेन'रा हुँग्यान्यान्। [बूँन्'वेन'कुरापते'प्ययाग्य। [यहं यापते हुः हें न्यम् मृतः कृतः च हुनः । विः प्रवेतः प्रयोगः पुराप कृतः राय। । मरात्रुराषयान्यन्यस्वयान्ते । । यद्वानेरान्यया यम्बर्धित्रेष्विम् अत्। | मून्यित्र्वित्र्वे स्वर्धित्र्वे स्वर्धित्र तहेग् हेद्र श्रेन् परि वितासंह्यका । सन् सन् सन् सन् वितान ने'ल'सु'नते'इल'तर्धे र'र'। । गुन'ग्राल'रे,व'ळेव'घ्रग'हेर'व। । बूर्याची हुन्य देश देव। । तर्रे र प्यं न बेन प्यं र खु दु र्झेव। । इति है स्पर्य है स्पर्य है स्पर्य है से स्पर्य विस्तृत्व से स्पर्य विस्तृत्व से स्पर्य विस्तृत्व से स्पर्य विस्

정도'여러'주리'리다다'至도'라'됐다

प्राप्त स्वार्त स्वार स्वार्त स्वार्त स्वार स्वार्त स्वार स्वार्त स्वार्त स्वार्त स्वार स्वार्त स्वार स्वार स्वार स्वार्त स्वार स्वार

त्रुवाहेलाग्रॅलापातरेपवा ।ग्रवातरेतियं नान्वानुवान्ता भेवा ।ग्रवातरेतियं वान्वानेवाव। ।ग्रेवाग्रवानुवानु स्व व्यायित्रहूर्। विद्यायित्रहूर् ने स्व व्यायित्रहूर् हुं हुव शुग में तहे पया | दिव व व व च च हुव ख त प प । जिप व्यान्यान्यान्यान्यान्याः । व्यान्यान्याः । हर्न्न्य ठन्न् इन्द्रम्द्रम्द्रम् । विनय्य द्वा हिन्द्रम् बह्रतालाञ्चर हर है अनुस्या। । कुन् पुः नुरायका हुः नु नुरायके नु। न'कुर'अ'तुराहे'पुराहेरा वार्षित्राध्याहेरा वि ग्'अ'तु'तश्चर'श्नन्'यर'। क्षि'तु'र्मेर् र्वेशश्च'न्द्वरस्येत। हिं न्दरादिदेश्व, १५, प्राप्याश्ची विष्य । १४ वर्ष प्राप्त, श्ची प्राप्त, भैव। । गन्यसम्ग्रापर्यम् वर्षाः भैव। । तर्रे राष्ट्रें वस्य वर्षाः वर्षाः मॅं कें इयर। विन् हिन्दर्ने हरायन प्रिव यह न विराधिन रार्झेटलाय द्वीपञ्चपया । वेदावहाटकायवा विटलाइयलाकु वर वर्ष्ट्र गुरुप्य विवास नुवाय ने वर्षे | हे पर्ववस्था ने द् *इबरायवावावादापि,*८ग्रदहॅव'दयर्चेद'क्रेशशु'क्षेत्रंशुंत्र'क्षेत्रंशुंत्र'स् यगुरः दर्भे गुजुरुकार्ये ।

য়्वतिः द्वेत् क्ष्म्यश्येयया । व्हिनः हेन् हें ग्याय र द्वेतः श्रीकार्क्षम्यतः सुन्यत्वा । व्हिनः त्वः व्हिनः वहिनः वहिन

য়्यान्यायते व्यवस्य तिन्। | व्यवस्य ये ते न्ये ते न्ये ते त्य व्यवस्य विश्वस्य विष्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्य विश्वस्

अत्राचिरत्वस्य स्वाचित्वस्य । विश्वस्य स्वाचित्वस्य । विश्वस्य स्वाचित्वस्य स्वाचित्वस्य । विश्वस्य स्वाचित्वस्य स्वाचित्वस्य । विश्वस्य स्वाचित्वस्य स्वाचित्वस्य । विश्वस्य स्वाचित्वस्य स्वाचस्य स्वाचित्वस्य स्वाचस्य स्वचयः स्वचयः स्वचय

য়्यं न्यापित विनयातात तृन्। | प्रवासन्त विवस्त विनयातात तृन्। । प्रवासन विनयातात तृन्। । प्रवासन विनयातात तृन्। । प्रवासन विनयातात विनयात्त विनया विनयात्त विनयात्त

विताश्चामान्याम्द्रीस्

द्यं गुर् । इत्र वि न्यं प्रम् वि व्यक्ष्यं प्रम् व्यक्ष्यं व्यवक्ष्यं व्यवक्षयं व्यवक्

सतियान्। ग्वरायान्द्रन्यान्त्यत्व्वत्यात्व्वत्यात्व् सगुर-तुःगह्यत्यार्थं।

ञ्च'अ'रअ'पनि'व्यस्यापत्रुत्। । नः मस्त्रं व्यस्यमस्य महाहे न्रायहर्म । ज्ञायति सुना महत्र ग्रवहरू विवा ध्याप्तर्भराभेरामे विषया । इत्राप्तरे विषया । दिवा विनः गरः स्वरुवा सद्वेदः प्राये । । विश्वेद स्वरं हे प्राये । छः अत्रक्षेत्र व्रक्षेत्र प्रदेश । वित्र प्रति स्तर्भ त्र स्तर्भ त्र वित्र प्रति स्वर्थ । वित्र प्रति स्वर्थ वि *देव*ॱयहंब'येन्'पर'तहत्रैस'त्रषुग् ।न्दुर'न्गुब'येन्'पर'ड्डून'कर' त्ममा । द्वाराधीरावेरामानावात्रवात्रवा । दे द्वाराधीरावे निवानवा व। । इत्यत्र्वे रवित्यं रवापारा। । वेववाकूर वेर क्वें वापते दर् ग्रायायने। । तकर झें यर व नेव मुन्दिने। । यहाँ प्राय के व नेप्तरायने। । । सर्यन्य सेन्य प्रतिक्षेष्ठ प्रत्य प्रति । । सूर्वे प्रत त्रव्यान्यं मेव्र हुप्परी विद्या श्रूप के व्र पेप सप्पे विद्य इंद्रला हुं १५ है दे भे द्वारा परे। | यह या हु पा हे दा भेदा पुरा परे। | यह क्षंबेन्द्रानेप्तरायने। द्विग्यह्रयायनेप्यसम्स्यरायने। १९वस द्वारायात् ह्वायात्रियात्रियः वैदापुः पदी । वर्षेतः क्वायात्रेयारा देवाया यदे। । रग्धुर जुला शुर्भे र्ग्र रव्य हैं र पदे। । हैं ग्धर पते स्वयाप्तरः स्वाक्ती स्वयाप्तरित्यासः प्तरी । । ननः सुनावाक्षीयाननः ननः मैन्दुपर्। ।इस्केंब्यस्परम्देन्यस्पर्। ।वस्यस्देने

श्चित्रं प्रस्तात् व्रेत्रं त्रा । सिन्त्रं प्रस्तात् व्यक्ष्यं त्र स्त्रं त्रा स्त्रं त्र स्त्रं स्त्रं त्र स्त्र

ह्य'व्यायान्या हुन्या हुन्या । व्याच्या स्थान स्थान हुन्या । हिन्दाहेत्र्भव्यवर्ष्यं प्रतिन्यत। विद्यवार्थन् न्युन् क्रिन्य यत्वा । विद्रादिर्यायत्वा राष्ट्रस्यायस्त्रव्यायस्त्र विव । केशवाद विविधा द्वार केवा द्वार केवा द्वार विविधा द्या द्वार विविधा द्वार विविधा द्वार विविधा द्वार विविधा द्वार विवि त्युर। अवित्वत्य हेंग्छेन् तुवाहा। । स्वाध्याविन स्वाध्य ळे देव विश्वान में इंदेव श्रीया ने दिवा में दिवा में किया है स्वर्थ में स्वर् पति'र्द्दवंशेतश्चन। [द्याळेग्'र्व्यापाश्चन'तुवाह्य। |वी'वग'र्ज्ञन रु'अ'कृत्यकेष । कृत्यन्येषा श्रुपार्त्र व्यामेष्ठे । । क्रेस्य व्याप्तेष्ट्र व्यापतेष्ट्र व्यापतेष् राप्तक्रम् । विश्वापतिःश्चिम् गुकेम् छेन् नुवाह्य । वाक्ष्म प्रमान राक्षेत्रेन । क्षेत्रान् पुना स्ति शेरि स्मा । सम्यान् ने मुँ नः महारा राप्तिय । मूर्याचान्द्रम् इत्राह्मा मूर्या ह्या । हा क्रु हो न क्रायान ं विग । यम् व्यान्य विति मृत्ये क्षेत्र म्यो म्यो म्यो म्या व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत प'तळर्। विगयामधाकुर्'ग्कुर्'क्रॅकार्ग्याह्याह्या

मून्यात्र स्वार्ष्ण विश्वस्त स्वार्ष स्वार्य स्वार्ष स्वार्ष स्वार्य स्वार्ष स्वार्ष स्वार्य स्वार्य

हें तगतर है दं उदारा ग्रांस पार दे तथा। विष्य प्रस्त है दे हैं दे स्वया। विषय प्रस्त है दे हैं हैं प्रस्त हैं है दे हैं प्रस्त है

র্ষ্রবাপ ক্রিকার ইন্'অই'বিশ । ইকার'র্সুন্'ঘরি'ইকার্সুন্'বর।। रेया द की के कूंट चर् प्रेंटा | १९ व्यं कुट र तु गुरु त्या र न व में विवा व्यवाह्म व्यवमा द्वा क्षे पुरुष ह्या । । यहूँ प्राय प्रिय प्राय हिंद विष । महिन्द्यन्त्याप्तरत्र्मत्व्ष्य । धेन्द्यः थेन् नुः क्रिंशिन् निर् बर्ग ह्या । मु:यर्ट्य वर्ग हु:दर्भे प्रश्ति । । नन्द्र दर्भे **ब्रुंब**'ऍब'अ'हॅग'डेग । यह गयाव'ब्रुंब'क्कें श्रुट: पॅर अर्घेट: । । नगः इन्डोन् निवरन्यम् विवा विकेन् म्या ग्राम्य विवा तुषाञ्च। । मात्रवर्षा'न्नामान्यातर्नेन्'केण । तर्नेन्'न्'ळग्रा ब्दनेवान्यळेग्द्रष्टुन । यसुक्रांसेनुन्दिव्यन्दर्भनेव। । मून्यायानु व्यायानेन्यात्वा । हिन्यान्न निन्यान्य मून्य मून् 百月 | PHスタガイド、まないでおめでもし、り | スト・まかって・スト・ ८६८-१८ छे. विष् । केवान केवान विषय ग्राम्य श्री स्टेन स्टिन । इन्स्टिन स्टिन स् **ॅ**बल इंग इंट्या के प्रत्या हिंदा | प्रत्या के प्रत्या के श्री का सुर्था | रन्द्रेव छेन्द्रे ग्राच्यराम्य इयर। | रन्य वद नें वर्तु न्रिन् हेर। । हैन्य हेर मेर् छैल रु हरन। । विसम्बर्ध सम्बर्ध मिन्द्रवर्ष क्रियक्चराय क्रिन्दुरान्ता के बन्दे क्रिया महत्यों विश्वान के पराञ्चर है। है पर्वन्य के छेत्य में प्राप्त प्राप्त कर की बहुता सुल वस्यक्ष्म् अर्क्षुन्यम् वत् क्षेत्रस्य द्रियायम् व्यस्तिव विष्यु । व्यापा पर्या हे पर्वन् श्रेष्वान्यव्या गुर्वे र हो न र र इवस्य श्रेष्ठ गुर्वे व ग्रीय। सुः र्झें अग्रीः नव्द रादिः स्टेस्सीनः न्याहर्य। सुः र्झें अर्ह्युद्राधितः न्योत्र स्टिस्सी अगुरुद्राचित्र स्थार्थ।।

<u> भुभाष्ट्रम्य । भुभाष स्थाप विश्वाप विश्वाप । भूष या प्रतीया । भूष या प्रतीया । भूष या प्रतीया । भूष या प्रतीय</u> न्वेरन्युअन्त्र। ।क्वॅुन्यत्रित्ववेरन्युअन्त्र। । तत्र्यः तुःसर्नेतान्त्रेरः नृज्ञुअन्त्र। ।कृष्यिः नृत्रेरः नृज्ञुअप्यम्द्रः द्या । इन् श्रेन् रेवया सुर्व हे मन्त। विवय हैन् म्वयान दिन्द स न्ता |नेपार्स्यामहत्येन्परन्ता ।क्षेत्रपरिन्नेर नुबुद्यानम् पर्वे । इस्र हैं न् इंस्य सुर ब्रेसिन र न् न्त। । रेन्। न्यायन्तित्रित्र्त्त्त्वन्त्। । यात्रक्ष्य व्यापरः चत्नापरः न्त्र । व्रिंत्पर्तेष्वेरःगशुद्धायस्त्रंद्र । । त्वेपस्रुः व्रुत् पर्दे:श्रवादात्रात्रकर। भ्रिवा:पर्हःस्टःप्रवेदावाद्याद्यःदव ।वाहेदा र्घेशः ग्रायः क्षेत्रः पर्वेशः स्थितः । तत्र श्रायः त्रे विश्वास्त्रः विश्वास्त्रः विश्वास्त्रः विश्वास्त्रः व व। अर्पतन्याम्बदावयाञ्चयात्र्येन्। । तिर्वरायाम्बदान्यून नु'बेन्। । नन्तेववायनवाज्ञवातुः ज्ञानग्'रून्। । ग्राचेराग्रुवादनः वयाग्रीराग्रीग्'तरेपय। |ग्रीरादीक्ष्यानेत्'कूर्राप्तीग्रीर। | त्युर। (इन्डिग्'हॅग्यान्चेत्राराधित। । श्वेराक्रंयार्ट्' तुर्श्वेन इयराकु हुन्यन् केस्यहूर्। | द्रेयन श्रेट्या श्रेम

श्च'अ'र्र'न्रवर्गर्ग्यं प्राचित्रं वा अंतर्म विवा इसरा जुरा की तस सम्बद्धित। | तर् तहें से न पर्ते न ने द पार ने | | न्यस्यान न व क्रुंनः न दिः सस्य सम्बद्धित्। | शुनः में नः स्रुवः दे। | ह्युद्राचा त्रीता चित्राचा विद्याचा विद्याची विद यने'त्रॉर्रतिन्'पति'त्रस्यात्राह्यांभेत्। | प्रतः में दस्य खेते हेंग्'रा [हुग्'स्5्'ब्रॅस'नदे'सय'य[सर्'पेद] |नग्द'नकु5'ह्र'यदे' री *बियाचा न्यसानी । भुग्नाशुया भूवाचा देशस्य याव न* भेव। । भुगसा **ध्**यन्त्रॅव्यळॅग्'ग्ड्यसॅ'र्री |दॅरप्येर्'परीयस्यव्यव्याप्य मयायापन्द्वण्योबाञ्च ५ म्यावया । इसार्धे रामने केवा मराया त्र्ज्ञं । व्रिंबाबेन्'बेह्नंग्रन्न्त्रार्थेन्। । त्रन्त्वेबात्रन्ज्ञंत्राक्तिः त्रन्ध्याः **क्रुट्रा । देश**पेश'र्द्रब'पेशकी'रूट'र्स्च गरायहर'। । क्रुत्य'प्रस्रह्मे बेर्'खर'र्हेर'तु। इत्य'त्र्वेर क्वैर्'ग्ल्युत्वुग्'य्विक्'र्ञ्चग् । स्रुक्'य्वे कर्यार्धेन्यप्रत्ररत्या । श्रुरिसेति के ह्ना लित्र प्राक्ति। नुत्रत्रेयवर्षाः तत्रवर्षात्रप्राप्तरः श्रेव। । नुत्रक्ष्याः ग्रेवश्यवस्य ত্ব'ভ্রিনা | উর্ঝাবার্ত্তরেমঝা মিন'র্মঝাগ্রীঐন্মান্ত্র'আল্ন'ন্ড্র'

म्ब्रायात्वा हिन्द्वयाधित्यात्वा हिन्द्वयाधित्यानु विद्वयाधित्यात्वा हिन्द्वयाधित्यानु विद्वयाधित्या हिन्द्वयाधित्यानु विद्वयाधित्या हिन्द्वयाधित्यानु विद्वयाधित्या हिन्द्वयाधित्या हिन्द्वया हिन्द्वयाधित्या हिन्द्वया हिन्द्वय

ন্ত্ৰ'অনি'ইৰ'৸ৰ'স্ত্ৰুত'ঘৰানে হেম | ক্সুত্ৰ'স্ক্ৰীৰ'উন'ৰ্স্ৰামাত্ৰম'ট্ৰৰ' **গ্রীমার্ক্রিমা ।ট্রি-্দের্কি-মেনু গ্রাম্নান্র কিমান রামা** रॅव'यव'रग'शु'रु'येदा | अ'येरबाह्र'परे'र्**पर'र्म'गहें**र्। न्दराङ्ग्रिन्रारोदान्न्याराष्ट्री । विदान्दरान्न्रार्ष्ट्रेटराखुः दग्रैन्प्रे । प्वत्यंग्रैश्यहेग्यप्रायम्बही तार ग्रीन प्राप्त हुं संभित्। । च्या प्रवर्शी ग्रु कु स में प्राप्त । र्में ५ 'गर्रेग'र्श्वे' दर्यायापरे' ५ ग्रीट्यां शुप्तकुर' | मिन्गपर'या शुर स्पें ज्ञां अक्षेत्र। |त्यूराक्ष्याकाष्यराक्ष्यायराक्ष्याक्षेत्र। |कातस्या ग्रीकाह्न ग्रह्मात्राध्येवाहे। । सिकार श्रुमार हिनामान्यात स्विताधिवा । त्र श्रीता श्रीता देव विकास स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स विन्यविन्यव्यान्त्रिक्तावन्य । क्रिक्ष्याम्यव्यवस्य हिन्। ।

न्वैरुषेद। |रीट्न'य'संपैदन्यान्येत्राद्। |री'सार्याप्याङ्ग्रंट्र |क्रॅंगर्नरग्रेशर्नपरायायपराहे। क्रिंयः**ध**न्तः <u> বি</u>দ'র্মীঝা मञ्जूर-प-र्मात्रह्लाधिव। । इंग्यन् च्चिर्या इयान्यान्यीयात्रियः सा बेटबाय'बेट'पदी'तृबबादेव'दे**।** । दॅब'दॅर'ग्रेब'दॅणवाय'य'धेव' है। |ग्वर्'रर'श्रदिंद'र्'र्यर्ख्य'पेद। |द्र-'हेन्' बेदैः वृबबाबेदाया विषयान् सः वृंदाकार सुष्यान् । इंदा सुद् क्न्चेन'रा'स'यायम्ब हो । हम्ब स्यू र-तु' में न'रा दे'पि सं धेन। । रत्परक्वित्रादेश्वाद्यात्र्यात्रात्याः । अधित्यव्यक्तयात्युर्यस्यत्य ने। । ज्ञं महिराष्ट्र में हॅंग राज्य भेव है। । ह प्रास्टें प्राय कर परि हेद'रहोसप्पेद। । सरा हु'र हरा हु रापा हु देपा हु देपा है द **ब्रैन**'नी'रन'न|त्तुन|राखवॅन'प्न'ने| |क्रॅब्स'कॅस'बर-'बॅन'पाटाधीव'हे| | २े*ण्यसॅसॅर्न्य्यायसे*यन्द्रेन्स्केण्**ये**द्। ।क्सॅंझर्न्स्क्षंत्रस्यस्य र्झें अळे द' इब रा | | ति है प् 'हे द' ता श्रे <u>| 'प' छ र' प' दे</u>। | ग हु अ' ले र' सॅन्दर्न्यसम्बन्हे। ।तस्यवन्त्रयस्यग्यन्यस्यर् ६रात्ररायसङ्ग्रयपदिःइतादर्धे रतः। १२.५८:घणयः श्रुंप्यः दे। । **ॅ्रम् १८८३ स्थापेट हे। ।३ प्**रेन् १५ पङ्ग्याप स्टार्ट्स स्थाप ररापदे शु'न् हुम्बायम् पंतरी विम्बाद म् नुस्याय विन है। । ५५'रुव'तुर्श्चेप'र्ह्मप्रयाथ। । मव्यदिन्द्रेन्य नृत्यः वयः सं भैदा । बेबान्यर्कारमा किन्द्रसम्बन्धे हेन्द्रभूतिन्ति

दर्यत्विष्यद्भाग्यस्य प्रविषय्य विषय्य विषयः व

मधीन्यविवार्वे रामुदीविषयायादमुन्। । मुखसुवानीवादस्या पराधेर्णेश्राक्षेत्रवा । रराख्याक्षाक्षितावारक्षेत्रा ८इँ८वाधरायह्रपुः वृद्याः । ८वादि वृद्याः वृद्या विवा पडेवाया । वाप र वे कें या हे ८ 'कें ८ प दे वाप र । ५ 'विवा वीवा' र्भेषाराप्तायकेत्। । एकाम्यानिकार्भेषायकार्षेकार्भेषायकेल। । मॅ्बान्ने न तुत्रार्थे । प्राप्त न न में न विश्व में में न विश्व रुष्ट्रम् श्रीकार्द्र म् कायकार्द्र र विमान्तर्रका | दिरावि (सर्द्र वेर् तमन्यार्वे रामतुत्र। । १५५ हाल ग्रीयार्भे न्यायापार त्या थे न । १८४४ हुँगवाग्रीयार्ने गवाववा सवाविगायस्य। । सवावि स्वाविन प्रेनः वर्षेतः नव। १५% वर्षी वर्ष वर्ष प्रत्य वर्ष १८०% वर्ष व्यामतुरामामध्या ।मतुरामानुवानेयामतुराखेरीः करा। ।र् **क्रॅ**अच्चैबर्न् व्याराप्ताय वेत्। । त्या क्रुं 'पेबर्न् व्याद्यार्म् व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति चर्चला | ज्ञांन्यकी पर्ने में म्यून की ज्ञांन्या | न्यून की कार्य नियान हुन्दहुग्यन्त्रपदेशय। |न्द्रिंग्ग्रैसर्ग्वरपन्ययेन। | र्स्टर्स्ट्र-पृत्तुः क्ष्ट्र-प्रतिह्रस्य तर्धे र टा । गुन्द्राः गृट्-तुः प्रवृट्-पुत्रः

<u>श्च</u>नि'दार-१८**५व |**ऍशाऑ-इन्'सुन्'शेर-'ने'हॅर-'। [इन्'ॲरि'८-र-स्नुन्' श्चे. त. व्हा १ देश ८ चट व्हा ५ व्हा व ह्या नी हेन पहुँ केर हे है। १ ने राप्त ये न र नि र ने र ने र न <u>ब्र</u>े'रु'य**ुग**ाबे'धुग'बे'गु'ब्रे'न्'ब्रेन्'दर्न्। ।नेब'न्यन्'बेन्' <u>नुःरोयस्पनक्केन्पर्स्यानुःपञ्जा ।तिःश्चिताःगीर्याःस्रवःधिनःसःस्त्रा ।</u> *नैशान्चनःबेन'नु*'बळ्ळे'य'८ळॅर'नु'चङुग । ठॅ'गरी'८*शुर*'श्नन'ङ'चर् য়ৢद। |नेबान्यनः वेन'नु'क'पा'য়ৢव'नु'यदुण ।ठःरंग'में য়ৢ য়न' इंकेंगरा ।इसरादर्जेर दर्ग ज्ञानर रेयरायाया ষ্ট্রিব। |**র্**মণেরেট্রস্ট্রিব্'দরি'রুয়ঝাব্রুচ্ঝানবি ঙ্গুণ্মস্থমেরীমানমার্শিব। উরাশ্রাদেরামার নি'নুরাস্ট্রিস্ক্রিমা इयश्याक्षुं प्राद्यान् द्यात् द्युत्य द्वार्थ क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त द्वीया **ॸ्ञ'**ॸॾढ़ॱॺॖख़ॱढ़ॺॱॸॾॣॕॺॺॱढ़ॺॱॸ्षेॱॾॗॕॗॸॱॺॺॸॱऄॖढ़ॱय़ॱऻॕॎॱढ़ॱॿॖॗॸॱॸऄऀढ़ॱ र्हे। *\ने'व्या*हे'पर्त्तुव'याध्यर'धै'न्याग्रीय'न'ध्यर'पेंन्'यार्श्वरयायारीव्रन्' न्येव'परक्षेंब्र'यिवद'पते'प्प्पंव्यात्रेंपिते'म्ब्युंब्र'विव यह्नव्याः हे'पड्द'पर'द्युगल'र्नेर्'त'कस'र्वे । पॅल'र्वे'ग्रन्थ'रदे'ऄ्नर्'र्स् ।

विनाम्मन क्रिन् सम्भामहान प्रति स्मान

ब्रॉगुर्व हेपर्व्यक्षेत्रस्य रहाराने हेर् स्वाप्त स्व

अध्यक्ष्म । द्वित्कव्यय्यक्ष्म् द्ववाया । श्रित्वयद्वय्यक्ष्म विश्वय्यक्ष्म विश्वय्यक्ष्म विश्वय्यक्ष्म विश्वय्यक्ष्म विश्वय्यक्ष्म विश्वय्यक्ष्म विश्वय्यक्षम् । विश्वय्यक्षम् विश्वय्यक्षम् । विश्वय्यक्षम् विश्वयः । विश्वय्यक्षम् । विश्वय्यक्षम् विश्वयः । विश

मन् संराग्तरा । स्विग्राहुग् रम् सर्प्रम् ।गहर तिह्रवानिक्षेत्रेत्रिं ह्रिन्यता । यने हुनानिक्षेत्रां निक्ना हुति देवा । यान्य व्यान्त व्याप्त व्यापत व ताबेर। | वेबबाया वर्षेया पर्ने पर्ने संस्पात्ते । तह्य सन्दुः ईवा त्रुदेॱररःपवेद'दरी । इ'ळॅगराबुदा'कुरः**र**ंबुर'परा । दुग'स्र्' इक्रांच्याकीररादुत्रदेव। । तत्रवातुःह्ररार्वेषाःवीधीराञ्चेदानर्याताः बेर्। |सेबबाया पर्स्यापतरी पार्ने संस्पार्ता | वेदाना सुरुषा मर्ड्र के हुन्याया पर्ने इया विकासीय प्राप्त प्राप्त विकास <u> इ.स.बैरक्षकुष्टी यक्षेत्र्यूरयायेया वित्यस्थाश्चेत्रकुष्पत्र्यः वश्चरया</u> घरा। इते तुः में इवशः ग्रैशः हं 'दश्चतः प्रमेगमः ववा। र प्रश्वापम् व हे'हर:बुर:पदे:गर्डें'बॅ'ने'ब'रे। पर्ग'ऋबब'क्रेदे:तु'बॅ'यगबा हुेर्' तान्नवस्राहेबाबु दुःपॅन प्रायम्बायस्य। मुबन प्रायम्बु चेन प्रायम्ब <u>हु'हे'नर्जुब'ग्रीब'यगुर'दर्ने'ग्राह्मर्वार्थे।</u>

त्राय। । अर्थाय वर्ष प्राचन स्विति । वर्ष वर्ष त्राप्त ष्मः न ह न देश्योत् । तिर्वे न प्रमान स्वाप्त के क्षियं स्वाप्त के । तम्'तम्'तम्'तम्'त्र्ग्'यस्त्यायम्'। |२ेग्याकुन्'यमम्'र्सेते'तुः हुग्'रे। । ररात्रिंशंबेर्'ब्धुरव्हे। । ह्यांया नहरारेते हुता वारी व्रिन्दार्भवार्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या র্ষ'মিঝ| |দ্রাস্ক্রখান্তুদ'মিদ'স্করখদ্*শ্*র| |ইরাস্তুদ'দ্রাস্কর্ষ बर्दन्यवा तिहेनाहे बादने यो भेवाह बादा विकास में ब्रिक्ट बर्धर पर्रा | कें तर्दर धुर परि क्रें दार दाद बना | धुर छ प र्शेषायाः केषायाया स्त्री । विभागायाः केषाया स्त्रीया स्त्रीया स्त्रीया स्त्रीया स्त्रीया स्त्रीया स्त्रीया स् हिन्गुर-ने'प्वविद्वेषप्रस्थार्थ्यार्थन्। देशप्राध्याया द्वार्थाने इयरान्'कृत्रतक्षाकां विरापवितापहंद्याप'न्नायकसम्बद्धग्'न्नाक्रेर' पान्नेन्दिन्त्र्वापात्वा हेप्तद्वान्नेशान्नेन्द्रवान्यात्वा **উন্- ন্- উটিব ব্যায়ন কাম্বা ক্রিন্- ক্রিন্-**र्र्स्त्र्क्चेत्रिपःस्पव्यव्यवेत्।परम्ब्त्र्न्त्र्तुःग्रुरःकुरःकुराक्चेरः""" न्येर प्राप्त श्रुद्ध र श्रुद्ध विष्ठ विष् बर्दर्यादी देर् केरि केरा वैकावर्षर प्रवा रूर वका केरा हु उ ऍ८:पःयाबीकृष्-उन्यासुराञ्च द्वैरः द्वुयाय पित्। ५१३६८:सया दुः हुँ न ब्राह्म्यान्युन्त्र्रात्वात्वात्वा हित्र्व्वाक्रीत्राव्या न्हेंन्न बर् शिस्तान् नम् न वर्षात् में देव होत्। स्राम्तान तर होता में ने न मबान्ग्रेंबायां बेन्। श्रुप्थायानु होन्यतन्ति भवाबेन्यवा होन्

र्मा ।

ङ्गं त्रग्'सर्पते'विनयातात्त्रत्। ।स'त्र्वायते'द्वेन्'द्वनयान्देया | हिन् के पीतु में यहे राया न जन् न्द्रश्चात्राम्यव्याम् न्वात्रयाः । विवयः व्ययः स्वराम्यः स्वराम्यः तयेत। दिवासवार्क्षणीयातहताताता । क्रवास्ववारे गार्ववारा षिन्'त'र्वेष ।न् ग्रन्सं'क्षे'क्षेक्षत्रारान्। ।तहेव'कु'वुन'यन् क्रेन्सं बेरा (क्षु'ह्यग्'गॅवॅब'हुर्दे'मडे'ग्रुर'रे। । सूर'प'क्रेर्'ग्रुर'श्रुर रुप्तञ्चल। । श्रेन्'त्रञ्चल'ञ्चु'य्यते' स्वलं स्ना-ने। । याँ न्याः श्रुन्' के'यानः कुरामती हु। । तर्ने हुना तर्मिरामती हुना महारा दे। । महाराज्यान श्चैन:_{सु}न:दुन:र्य:४:१५८:। । ब्रिन:ने:श्चैन:श्चेन:क्वाग्चेन:परायराया । बर ब्रॅंबरा विक्रं प्राञ्च राष्ट्रिया विक्रं प्राप्त विक्रं इय्यामध्या । न्वीनात्र्यें हुव् न्द्र्या । कुव् न्द्र्य चप विते स्वाराया चीता । सम्भिष्ये भेराकूम केन क्षिया । कुन नु'रन्'रेशवान्यम्'नु'र्ह्ह्यवा विवागश्चमवाया विम्'इववान्ये। देन्'अ'नेग्'यदे'रोवयाक्रव्यस्वय। येवयान्त्'याञ्चयाहेन्'वृद्धन्य राप्त्रकेष्वस्यान्यत्त्वारादिनेषात्त्वादिन्यात्रेवार्यानकेवारानकेवा कॅराप्तेषा'ग्राहर'तरातु'चेरप्तदेशम्, दु'यगुरत्दे ग्राहरकार्व। ।

<u> चैत्र में अर्थे । वित्र प्रत्य के क्षेत्र मंद्र व्या । व्यत्र प्रवया । व्यत्य प्रवया । व</u> <u> श्रेन्'लुन्'न्प'ण्डिप'ज्ञुन'र्'के। । ज्ञेन'न्न'त्र</u>ं'न्यनेप'श्चन्'र्ख'न्। । (दे) ष्ट्र-(यटकार्ट्र प्रवाहरू-दे-ग्रीका । यह्न-प्रवाहरू-प्रवाहरू-प्रवाहरू । ह्या । इ.च.पष्टियार्ट्र वेश । अविवश्चर प्राप्त । अविवश्चर प्राप्त । अविवश्चर प्राप्त । त्र्वेगबात्वाद्याः । इयाः दंगक्रेबाद्याः व्याप्तान्याः । याः । नगुरः है हुन: तुषाह्य। । नः कुलः हेषानें प्रशाहर रेपेंगेय। । तुषा **५८:इयप:वयष:ठ५:५। ।८८:कु५:८व:पदे:८वॅ८:वॅख्य। ।क्वॅ५** NA इय प्रविशेष्ठि 'गुर्' । वर् प्रस्कृर हैर है प्रश्च अस क्षेत्र है । बिष्यान्यर्श्वन्यक्रियात्वयाक्षेष्यत्। |ने'व्यवस्यान्यर्भ्यत्यक्रुवित्। | हिन्'न्नद'नर र्झें यदाया न यदाये द'ग्रीया । वेदान शुन्दा परा सु र्वे ने इययान् प्रायम् वीरामा के द्वारा विष्या मान्या के स्वर्ण के नुःर्यरः स्। । हेः पर्वं व'यारात स्थापति वारावा सुवा वार्या तरे वारावा से पति'र्भूर है। तर्ने यन् गर्से संरक्षियं भेन् द्वरा ग्रीश्वर्षे तर्वरापा **「おざりすりませんが新たべ」**

व्या हो हो न्दं व्याप्त न्दं न्या हो न्दं न्या हो न्य

त्रः र्थन् न्त्रे । । अवाय हुवा स्थाय श्रे क्ष्मान ते हुवा विषय ते स्थाय हुवा स्थाय श्रे क्ष्मान ते हुवा विषय ते स्थाय हुवा स्थाय हुवा स्थाय स्थाय ते न्त्रं क्ष्मा ने त्रं हुवा स्थाय हुव

स्वायस्य प्राप्तिस्यत्ते राष्ट्रेष्यस्य स्वयः स्वय स्वयः या प्राप्तिस्य स्वयः या प्राप्तिस्य स्वयः स्

त्रिं रापि क्षांता भेर् त्र सुराव्या । र्रा पार्य संस्था संस्थ য়ৢৼঢ়। (धलःशुः वेदः पः श्वरः न ग्रदः चरा । घः धलः श्वरः चरा <u> ब्रिच्य ब्री । मानेब्यक्रीनियर स्थलाय क्र</u>ीन्य मारायरा । ने उ इत्यापयान्त्रत्येययात्रम् । व्रित्यायं केत्राययं केत्रायया । रहा कुर मुँ व र र हो व । त है व । व है व मर्या । न्यव्रयम् स्वात्राम् स्वात्रयम् । मन्याः स्वात्रयः स्वा द्रेष्यञ्चर्रम् ग्रायय। । रेन्द्रप्यम्बेष्यः दुःरेन्द्रम् वर्षयय। । हिन् **५**५'ॡव'क्रीळॅंगश'गर्सन'**५ॅन**'ऄ५'**५३**ग । ।८६' दे'क्रे८'रुकाक्रीन ने**८** ह्मन् भिन् । हिन् भुवायायाय सिन् सुन । त्री न प्रताय हिन सन्यगुरः। <u>वि</u>रस्यारेन्'राधेस'त्रिंरः चरः त्वुयस्। । क्र'र्डस वैषागुरायहव्परार्गत। ।दे'हेर्पवहव्पराया गुरायय। । भ्रम्यात्रात्त्रम्थात्रम् कृत्रम्याः । नेयान्त्रम्थत् वेत्रम्यात्रेयम् RBअया निष्ठित्पहरूपराश्चरापात्। व्हिंग्याहुगः विन् सेन् हुन'रु'तळर। भु'ग्रुसत्त्रभ से न'हुन'रु'ग्र्या ।ने ने **हॅ ग्**राप**रि ग्रेन् कंन् अग्रा** | अव्यापत् गृहेरार्घेप ह्या ग्रे**र**

क्रमा । । वस्त्रम्भियाया स्मानियायाया । प्रत्यापि सेवस्याया मुहेशसूर्वित्। विरवासकित्पित्स्यातस्रित्व। हिंग्या हुन'विव'बेन'कुन'रु'तकर। सिु'न्छुक्ष'त्रव्य'वेन'कुन'रु'न्वरा। बेदाराबेदारादश्चिति हुदा । भिदार्देदा ह्वा गुदाशी ग्रह्मा । बिर्याम् वस्य विरिद्धान्य म्या विद्यान्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य विद्यात्य मम। । अहे अपि ते न ह न व प्राप्त के स्वाप्त ह्यद्रभ्रम्भेबर्यया । तर्जें नार देव परि नवस्य प्रमा । वा वस्य खराइवराञ्चाया<u>न्ता । सुन्नाकुत्ता</u>रादह्रवाचेन्या **८केर पर्यक्षे में रा**हे। १५ से दे पर्य हुस पह १८५१ । १८६ दे प **हुँ**न्पर्यः नन्दः कन्प्रेयः । श्रेयश्चितः नन्यः दयः यविरः सुः सुः हुः । **हे**न'ङ्गर'कॅशसुर'गयथय'प'न्ग । इस्र'प'गुन'सहेन'ङ्गेन'प'नेन। । **ने**ल'र्क्न्प्रमण्यवेल'रात्वण'रा'त्र । । ५५'र्स'म्-'द्रश्रॅट्र प्रायेत् । । मर-दुःग्नःदुतरःग्वस्यःवेत्। । मःयरःग्रःषरःस्रःनःवेत्। । **ुरा ग्**शुक्ष ब द्रवारा 'देन' ग्रेन पर पर । । ते ब रात 'हु 'त है दे हु' का मकेश । मूर्न् व्यन्यान्याः वयायात्राः सुःसुःया । न्यानः न्यनः **श्रे**श्चेत्रस्यरम्पय। । तसुरः यः यहै भी हे वा से वा दिन्। । रेयराष्ट्रपान्ताव्यायात्रास्यात्रात्रात्राः । श्रुःसेन्कुक्पन्तायाः মনা দেনমাশ্রমান্মিননি ক্রুবানমার্কন্। দেনী বীনেরমা **छ**दै'गदेर'ळद'यगय। दि'क्ष्ररहॅगयपदे'द्रय'दर्छेर'दे। |दस विना हु खरात हेन ,रा ते छो । ऑव , हव हेन बारा ते ,रा र रें दी।

न्द्रवर्गरम् स्त व्यंद्रिस्त्र्रम् । विवर्गस्त द्रात्रवह्रम् मकी | ग्राय है 'है' दुः वा बह्य वा | वा ह्या है है । *ଢ଼ୣ୶*ॱडेग्ॱॻ॒८ॱपदेॱग्८*ॺॺ*८ग्ॱगैथ। |८्ग्'धदे'ञ्चु'यु**लॉपटल अ८** |प्रायाञ्चात्राच्यक्ष्याक्ष्याच्या | विद्यातः रू श्रीकर्म् ग्रायायकेया । **८२** प्रसम्बित्वुयःश्रेग्ने प्रकंत्य**ग्या** विश्वाश्चर्यापय। गुःशरामीन्ध्याद्मयश्चित्रपुःर्वस्यस्य शुर् <u> श्रीकात्रकाशुर्वाल्यकार्हेग्'सुस' ५'श्रीक'रा'पञ्च पकारा'प्रीक'र्दे। । ने'व्यक्</u> **建江城省'和'有数'连'不下数'角句'添了'可到积'到'示下'和'美' 建'者和'在道不到对** ୖଈ୷୰୵୶୰ୖୄୠ୕ୣ୵୷ୖ୶ୖୡୄ୕ୠୢୢୖୠ୕ୣ୰ୖଡ଼୰ୣୄଌ୕ୣୠ୕ୣୠ୕ଵ୕ୡୣ୕୶<u>ୄ</u>ଞ୍ଚମୄ୴<mark>ୄୡ୕୳ୡ୕୶</mark>ୄୢୄ୕ୄ ब्रु*र*्भु:तुःहेर्र्ग्बु**अङ्गे।** शूप:वॅप:रर:यर:हेर्स्थ। पतिः हॅ ग्राष्ट्र प्रजः स्थापः द्वा प्रतः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थापः स्थाप त्रश्र हेन्द्रपति इत्। त्र्युं र व्र व्यं कृंद्र स्व प्रेष् **८व'**য়ৼ'ঀ৾ৢয়ৢঀ'ঀয়ড়ৼ'ৼ'য়য়৸য়৻৻ৼয়ৼঢ়৾য়ৼঢ়য়য় ଵ୕ୗୄୠॱৼ৸**ୢୠ**ୣପ୕୶୴ଵ୕ଵୣଊୢୖୢଈ୕୶ୠୢ୕ୢୠ୵୳ୄୡୄୠୖୣ୵୴ୣ୕୳**୶୲**ୖୣୖୣୖ୵ୡ୕ୣ**ଽ**

न्वंग्गुःह। हेप्तर्बन्धेल'रसप्पे केप्त्यप्तेकेन्द्रम्प्रण्ण मनक्ष्र्प्र'हुक्त्रम् **3**5、約34、元代の5月、七八、本本本では、成然に、日本の30、日本で、日本の30、日本で、日本の4日、日本の4

र-प्र-प्रतिश्वाविष्यहर्ग्न्यकेष । प्रश्चित्वहर्णः हिनापाः

 सर्च-प्र-प्रतिश्वाविष्यहर्ग्न्यकेष । प्रश्चित्वहर्णः हिन्यतेष्व । प्रवाक्षित्वहर्णः विष्यविष्यः प्रतिश्वावः प्रवाक्षित्वः प्रतिश्वावः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विषयः विष्यः विषयः विषयः

र'गुव्'ग्विदे'विराद्याय सर' प्राप्तिम । ग्रायस्य ग्राप्तिक्र

विनयः न्रामृत्या । त्रवयः विवर्षः श्रुः शुः त्रुः त्रुः त्रुः त्रुः व्यापा भु ग्रुवाक्षित्रवादाञ्चे द्राप्तात्रे । । दे प्रवे पर्यापि से विष् दे। | वयानावना न न व की सें व या भैव। । हिन् पर है न परी र्श्वयन्त्रियान्त्रु'न्र्यु'त्र् । । द्विं ज्ञुन्त्रिन्ने वित्यन्ति । ८ दूर वेत् क्षेत्र वेत् निष्य निर्मा प्रमान निर्मा विषय विषय दे दे रायतु व् ह्युना-५-रान केल। १५ ने पासु देशे विश्व हुन पाने प्रमास्त्र । सन् बेर्क्चित्रेरिक्छेर्र्रिवि। । । १६ विषय्येष्य दिस्य दिस्य दिस्य वयानवनानहन्श्रीः नशर्वे राधिद। । हिन् तरेना हेवापित नशर्वे रानेन यक्षु'यक्षु'यद्। । क्रु'यदे'यर्ग'र्भू र-दे'र्चे रत्य वित्रा । दःस्तरा कुराक्तीः संभेदान स्ट्राप् देव । त्याक्र राक्तीः वरास्तरम् राप्तर प्र ण्वेरा | न्वेरह्वाक्चिकंवरः न्रः न्रः प्राध्या | कॅराक्चिरः वे ष्ट्रं तुर्द्रपतः प्रत्यते। । दे प्रते प्रश्चे प्रश्चा दे श्चे दे । व्य শ্ৰন্'ন্দ্ৰ'ট্টিব্'ন্ত্ৰিণ ট্টিব্'ন্ইন্'ট্ৰ্'ন্ত্ৰ্'ন্ত্ৰ্'ন্ত্ৰ্'ন্ত্ৰ্' নপ্ত্ৰ'ন্ত্ৰ | শ্ৰহ্মপ্ত্ৰ'ক্স্ন্ৰ'ৰ্ক্ত্ৰ্ৰ'ৰ্ক্ত্ৰ্ন'ৰ্ক্ত্ৰ্ন্ म्बेन्बर्केष्यं सेस्यम्सर न्राव्येष । यने म्बर्केष्ठेष्य हिन्द्रस्याप्रस् र्रम्केश । बुर्पतह्रम्भिप्रम्म्पूर्म्प्रम्प्रम् । क्रयस् हॅग्राकी जुद्रावें सायहें सान्दायते। |देनिवें नक्तराय देखरा साने।। व्यान्वन्न वृत्र्यीकुन्य भिव। । विन्तरिन् वृत्रित्र्र्म् নপ্ত্র'নপ্তা । শ্বশাস্প্রনমান্তীনেরব'ডা' ন্র'র্মনার্ছনমা । দ

| वृत्रकार्हे पृष्ठा श्रेष्ट्र श्रेष्ट्र प्रत्ये श्रुव्य | विष्ट्र श्रेष्ठ व्यक्ति শ কুবা ग्रुप्त्रुप्त्र्द्वप्रप्रवि। ।देपविषय्त्रेप्रविष्य्विष् ৰ্যাগ্ৰ্ণাগ্ৰহণ শ্ৰীগুৰান্ত শেশ্ব। । ষ্ট্ৰিচ্'ৰেইণ্'ইৰ্'শ্ৰীগুৰান্তৰান্ত্ৰ্ৰ | तिर्देश्यक्षयाच्याः ने दिस्ता वर्षा मर्ने भवाने र्वे संस्ता । राह्मात में राहमात में **४**न'सरत्रे द्धरत्रेते प्रनासन्य राज्येत। । ८ राया छाज्ञ दाना द राज्य बहत्यनर मृत् । देशन्शुम्यप्य। विमःहस्य निव्दुन्त्रप्र **ब्रुट्या ब्र**ण्यक्षात्रक्षयः इत्याते। ब्रुट्यायः स्पार्ट्ययः मर्युरहें। । नेवसहेवईदार्यदेश्चार्यवृत्त्वार्यवृत्त्वव्यव्या रत्यद्रम्यः हैं व संभी नदी सुप्ति द्रिये व संभे व संभे व संभित्र सामि **देवै:अन्दावु:दे**ळिव्यद्दशञ्चिदःचवे:शुव्यश्च्यदःदाया न्दिन्दु द्वर्यार्थेन प्रचर्में नेरापरा। न्यार मुँग ताने न्यु हैन पर त्र्वेश्वयवरार्धेर्यराचा वेश्वयाची वितासित्राची वितासित्र वितासित्र वितासित्र वितासित्र वितासित्र वितासित्र वि **नते अ'ने व'यर व'र्वेट खुंबेव व राज्य ज्ञान के हैं 'वें व्यक्षिव पराहे ज्व बार्की** श्चरायुग् ने अरुव्यप्रश्चेतायान्ता हेरवर्ष्वा ग्रीकायगुरा गर्शन्ता हें पर्दु व ग्रें हु स पु हो ने या या विषय में स्थान मा मु स से या पि हिस है । **८हॅन्कुन्लक्केसिनेखन्**र्रम् व्याप्तिन्देन् स्तर् **७**८ दें हे गुगुबरा भेव दें | |दिन भवायन् परि हें नवा ग्रीवा हे पर्द व *ष*क्षे छेन्'पर्ने'न्न्'यार्चे पर्छे। गृह्यन् क्षेत्र्पर्ने'त्र्ष्ठेत्र्यार्वे स्वय हेर्पर्वर्भे हुर दुर्ययव्य। ह्या वृत्ते रापस्र प्रायस्य हिस हर चरु 'पर्य। हे'पर्ड्व'क्केंड्र-'व'तर्ग्न'प'न्न'। त्र्विशयायाञ्चन निहरानिस्प्रेन्प्न्य स्वयाय। हिराक्षेत्राचेराक्षेत्राचार्यात्राचेत्रा इयाविशानियापरादेशपरादीवानेरापाविवानुपाने। हेपर्ववायाया **ग**र'नेश'वहा। अष्तिः है दे रायगाना द्वरा आदिग्रामया **ग**वेशहराब्यस्टार्यन्त्राध्यायय। दश्युत्रहेनदुव्यदिन्तुव হ্মান্স্ম্মান্ম। প্রমার্ক্র্মান্স্ন্ম্নিষ্ট্রন্ম। ব্রুমার্ম্নি इन्'ग्रैर'ग्रेर'ग्रन'रसम्बद्धन'रा'श्चर हे। अन् यन्'रहास्त्राचन्यान्य ব্ৰাউন্', বুঝা আ'বুৰাব্ৰ'গ্ৰীৰান শুন'ব্ৰাস্থ্ৰ' ৰ্মুন', মু'ন ভুল' ঘৰাৰা মদ্গানীবদ্গীরারীবাদী। দিশেশবাদুদিবরামার্ভররামার্মদ্রের। राज्याधिवायाः निराम्या मिराम्या है दे में ताने स्वितायहें दर्'त्'नेश्रादत्व दर्'त्रामद्राचत्री'स्रवस्नेश्रास्त्राद्रसायस् इव् राने वरे हिंद केर हे केर र विवाद हुन र दि हा या से ता ईड़ ता हुन **শিন্দার্শন্ত্রাবাবর্শনার্শক্রাল্লান্থার্শ্রাবিদ্রাল্লার্শন্ত্রা र्न**्वेर। मक्य। रशकुर'पश्युर'हे'पर्वुद'शकु'वरश'त्र्वें'नरे'वदर'प'वुद्य मय। हे पर्वव गुरिया दर है। देश हे यहा यह पर दे गहा दस **XII**

द्वैदायळ्या द्वेत्याम् र्वायापार द्वित्यार्थे। । तुः त्रवः खुनः यः त्याचीदा

[왕'전 धिन्यन्त्र्व्यक्ष्व्वव्यक्ष्यायाः । तिः छेवा वैदायनः वृद्यस्यानः सन्वद्या विता । क्रांगरश्चरित्रं नक्षेर्यार्धेश्वर्षेष । वितारहेश्त्रात्राया नश्रुपननत्त्रित्। ।अपनुत्तिदेशतनेतात्राम्यम्यम्। हित्त इै'बेर'बेबबाय'बे'नर्रचीबाय। । र्वाकेंग'र्दाय'र्गर'बे'पॅर'रे' गुदा । तर्जुन् बेन् 'इद्यायल बुद्द् 'हु'विन्। । छ'ग्र श्रीन ने प्रक्रं तार्चेंब्रंडेन |सॅतर्नेंन्नुव्यवार्धेंग्वेंब्रंपेंन्रिया |कॅब्रंच्कुन् वर्षे क्षेत्र वर्षे दा में नवाय | व्यव्यक्ति वर्षे **रो**बबानक्केन्प्नान्पंबानक्केंन्स्यार्चे वर्षेष् ।तुः केन्द्रिन् वर्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः क्षेत्रः स्थातन्त्रवार्था । तेवान्य ब्रान्यवा हेप्पर्वं व श्चित्र प्रमान्य नावित्र 5्पल्गबद्याय। तबाद्धन्यबद्धाःवबादन्याः द्वरद्वराहे। बार्चः रते'हैं'पविव'कु'गर'लर्चेव'पय। न्न'यस'लर्चेह्र'५८'यहलाहे। **छ**ग'र्नेर'न तुअर्रे हिर'न निग'रु द की न न सर्गर ग'र सर्ग है ग र' पर'''''' न्दर्प्य मुंबर्यायय। प्रह्मर्प्य विषय मुंबर्या में प्रियं प्राथित **ळें क्वेन्'ब्रॅन्'ब्राग्न'यतर्द्रे**'बेन्'ब्रेंब्र'पत्य। ह्रन'बे'याचेरपदे हता **८५४ मान्याय क्रिया विद्याय है साम हुआ क्रिया क्रियाय है साम हुआ क्रियाय है साम हुआ क्रियाय है साम हिस्स हुया से स्टार्थ से स्टार्य से स्टार्थ से स्टार्थ से स्टार्थ से स्टार्य से स्टार्थ** ञ्च'अ'र्ग्नेरस्याभेव'द्रअञ्चरहुन्यश्चेरिनेपितर्रात्वा न'र्द्रन्युन् **र्**ट्वेंद्र'द्रवान्द्रेन्द्रप्राच्या हर्न्डिंद्रन्त्राञ्चर्यः स्विनः स्टर्नाः द्रा **र्**रः। र्'वर्'व'र्जेरवार्षर्'ब्रुब्र'त्व्वं ब्रुर'यवैवाववाञ्चयः स्वावी

हन्। नरुन्। मिष्युलक्वित्यं ज्ञून्यं यद्। युल क्रेरे महेर विकेर प्रस्पन्ते । प्रमेर तुव् क्रीह्रायाय यम विकास ष्टि हिंद्य यन्त्य द्वारा स्वारा विक्ति साम के स्वारा स्वारा निक्त हिंदा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स् तर्गयनते द्ररणु यञ्चन प्रयान्। । तक्षं क्षुन नी सुन नहल के न् ने य यदे। |वॅरक्ट्रंस्कीद्वायाधेर्प्यस्यदे। |हर्प्यदेखहेनुष रावेन्'मराने। |वेबवक्कुंस् झन्क्हन्'मराने। |ऍव्'नन्न' नै:<u>स्थापञ्चरःश्चर्मश्चपन्। ।श्च</u>िंदलःशुद्रःसंश्चरःसम्पन्। । ह्यंत्रात्रहेंश्याचुरार्ध्वन्ययान्। । विचुरार्ह्यांशुर्वन्ययान्।। त्र्जॅ तर्नेन्'न्ल'तुम्बेन्'**यब**म्ने । ग्वेन्'व्हेन्'त्हेन्बस्यबेन्' घरानदी । तु'तर्धेष'तर्देष्वराध्यायरायरानदी । द्वां र्र्धुराक्की बहुन् कुंद्र 'हुन् 'नवान्दे। । वैग् 'नते' भवा स्वया बुन्या पान्दे। । यर्रि, देवश्यी प्रयापित्य प्रयापनी विष्ट्रम् वर्षे ने से स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्व नरामनी । म्डलासना मनास्तासन ने। । क्रामकान ने तु'यार्वेन'न्याने । ।ने'यान'नह स्क्रेंययान्वण'म्याने। तेयराज्ञैरानेयरात्मप्रस्थापरापदी ।दे'यर'रे'दें ग्रायेद'परापदी। रिंद्येन्'र्न्'ग्रातार्ग्न्यंन्'व्येन्। । शिंह्रंग्'लेन्द्रान्नेन्यंन्नेन्यंन्नेन्यंन्नेन्यंन्नेन्यंन्नेन्यंन्ने

8'4'エギ'エ'「「ニュニュ」

दःश्रंगुःद्व। हेःपर्ड्दःशेत्यःत्रांपानेःश्रेन्। त्रःर्द्रणःख्याद्वत्रः द्रदःख्रिःर्द्रन्ष्वत्रःद्रन्ष्वत्रःश्रेष्ट्रःच्रद्धतःत्रःच्रद्धतः द्रद्धतःग्रेष्ट्रःच्रव्यत्रःख्याः ह्रद्धतःग्रेष्ट्रःच्रव्यत्रःच्रव्यतः ह्रदःद्वतःग्रेष्ट्यः ह्रदःद्वतःग्रेष्ट्रःच्रव्यतः ह्रदःद्वतःग्रेष्ट्यः ह्रदःद्ववव्यतः ह्रदःद्ववव्यतः ह्रद्वतःग्रेष्ट्यः ह्रद्वतःग्रेष्ट्यः ह्रद्वतःग्रेष्ट्यः ह्रद्वतःग्रेष्ट्यः ह्रद्वतःग्रेष्ट्यः ह्रद्वतःग्रेष्ट्यः ह्रद्वव्यतः ह्रद्वतःग्रेष्ट्यः ह्रद्वतःग्रेष्ट्यः

ऍ ब्रॅल'२ कॅंच'२६ हैव'य। ब्रिंड क'व'२ केंदे क्वंव दिन्न होता। ह्रांदिर् प्राही अहे । शुंगि ने द्वार हे नु यह देवा यह स् मत्र'र्र् श्रेव र्रोगिनेव हे भी । तहे नहारा तरे नहा है अहे । क्रेलायाळ्यावायुकुन्तायायया । तर्नेन्ट्यायावे स्नामिने सुनामी । बेद দেরিখনে ই বৰা দ্বী আই। । শৃ हेद ' মাঁ ই শ্বাৰা ধ্রান্ত ব ' শে শ্বাৰা আই। [मञ्जान शुक्र त्रिर प्रते सुतार्य है। |प्रतुत्प वर्ग तरि, प्रशिक्ष प्रति। देशपा शुरुषा राया विराह समावादाने। ने नैवा मुश्रेयसाया सवादा विवाञ्चरः। देर्'इयदाग्रुरःम्च'यदे'हुर्'रु'ळ्याग्रेर्'रा'यवय। दुव् र्मः नन् द्वेनः र्ने व वे तत् गृः पवा व व्रावका ग्रुनः में व न्यन् गृन् न्यः सुर्वे न ग्रु त्रक्षं क्षुंत्र प्रवा वित्र प्रवा विवा के प्रवा ने इसकारेन 'इसका श्रीका के ने का भारति वा भारती ने ने न वा की में द वा खरा मरल लुक्षपारीक्षव पुष्यगुरार में मुद्धमकारी ।

स्यायम्बर्धा । व्यवसञ्चर्त्या । विस्त्रत्यक्षेत्रस्य सेर्यः भवा । श्रेवर्यायम्बर्गित्वर्त्याचेर्त्याचेर्त्याचे । विस्त्रस्य स्वावस्य स्वावस्य स्वावस्य स्वावस्य स्वावस्य स ह्युत्रह्याप्यंभित्। । नर्रव्यय्यं ह्यायाया हें र पारी । शुष्य वेरवा ळ्यं राश्चाप हिंदा स्त्रीय विश्वाप स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स भेन्त्रयाचेन्याभेत्। ।कुँन्याक्ष्यान्नः सहन्यान्। ।न्याक्ष्याः न्न'यायहेवापायित। ।तन्नवातु'तके'।तरत्रुंत'येत'येत। ।पहेत् न्न्यं व 'यन्न्' श्रुं व 'यन्नु श्रुव | नि'क्षा त श्रुं रूप' ता न्में वा श्रुं कुन्। | छिन्'तहेग्'हे**र'राभर्ग्यार'भैर।** । धुग्'न्न'ले'सार्ख्यातळ्य मान्न्याम्भेवा । ह्यान्न्यं गुन्त्रुत्रहे न्युवा । निक्ता Aয়ৢ৾ৼ৻ৼ৻৸৻ৢঀ৾য়৻য়ৢ৻ড়ৢৼ৻ | শুয়য়য়৻ঽৼ৾ৢঢ়৻ড়য়৻৸৻ৢঀ৾য়৻ৼ৻ড়য়। **।** विराप्ताम्बर्धाः विराम्भराष्ट्रीयाम्भराष्ट्रीया ভুন'| |শ্ৰুৰ'**ন্ড'ছ'শ'ন্শ্**ৰাম'**মিৰ্| |** ৯''ন্শ্ৰামন্ত্'শ্ৰুৰা ন'মণ্বা |শুৰ'গ্ৰীস্ত্ৰীৰ্'ধ্ৰম'দৰ্শী সামণ্বা |হ্ৰম'দেই ন'ৰ্বা पर्तिप्तर्थः तरी । तर्देरत्रळेष्य इयम्क्रीत्रं त्यत्वरम् । प्रदेष तर्न्। त्याक्ष्यावर्ष्त्। । तितु'त्रहेषाञ्चे'व'न्नेव'याहेव। । क्षेट दशक्रेव प्रदेश स्त्रा । छन छन पर्टेन प्रसंभागत्रव श्चित्। । निर्मानविद्यम् सम्बद्धानस्य । विद्यम् श्चरम মন। <u>देश्चयन्त्रियः द्याप्त्रियः प्रमास</u>्त्रेयः प्रमास्त्रियः प्रमास्त्रेयः ন্ন্ধ্যাইঅথান্তৰ্থব্ধ। ইণ্ট্ৰাখন্ন্ৰ্থাইঅথাইবাধান্ত্ৰ क्रा न्वायरेखण्खेरत्यम्ब्याया केंद्रनेव्यानहरहे।

क्षेप्रयायकुर्'र्यञ्चरवायायी | प्रतार्यञ्चर हरायदेशेखुवा न्ग्रा विंतनित्ननेक्षिन्क्षिण्यक्रायक्ता विषात्र्रें रक्षेत्रः मॅं भेर्द्राचा न्या । दिविस्यिते केंशिकी क्षुंद्रायम्बद्धा । श्रुः स्द्रा ८८४। त्राचा अत्याच्या विष्याच्या अत्याच्या विष्याच्या विषयाच्या क्रेड्रअन्ग्रह्मअयः ग्रात् । अन्दिन्यस्य स्वर्यायः । हुन्यहें स्वापते न्या । १८, १५ ही । व्ययसिव्युवस्पतिश्चित्यः न् ग्रा । तिहेग्यः न् तळे तः श्चन्यः प भै। । सुन्'ह्युवार्केन यसि'न् मृन्'स'न् मृत्। । सुः'हुँन्'शुन'यम् रः -बहुब्दायेथी । नबस्रक्केंद्रस्व हेवायदेर्ह्स् बुब्दस्य मृद्रा । व्यन्तर र्ळ'न'ज्ञुररूप'णे। ।नग्ना'तु'नतुन'पदि'खुक्ष'मॅ'न्ग्न। ।ने' इयराम्बराक्त्रां दर्भवराष्ट्रां । हे ग्रेश्वराष्ट्रां विवास तर्ने देन गतन्तरे कॅशन्तु है। । नगत्या पान गत है हुन जन त्रस्य। | देशम्बरूपया | विरूप्तान्यस्य | विरूप्तान्यस्य । है। धुण्धुरत्यरयाम्हेरासुन्त्रा र्यरान्त्रा ग्रम्बराञ्चेद्रिक् ज्ञाताही इस्तरमान्याने निर्मान्यान

स्। द्र्वायायवाः द्वायः रश्यः रश्यः प्रायः प्रायः विश्वरः द्वारः

न्ना'अदि'ब्रॅन'श्चे'अ।

<u>ই</u>:নর্ত্তর'ঐ'ঝ'৴য়'৸'ন্'৽ৢ৾৲'৸৲্ব'বাঝম'ধ্রণ' ব**র্ষা** व'र्वे'श्'रा बर्-स्थराक्चेर्-जूर-द्वरास्त्रुं विवराययर पर्राप्तरा **ॅ्र्स्स्तुः सर्ज्ञुद्रप्रदेश्वे।** जॅ्राह्यस्य विषाची न् सुद्राद्यः द्येयानः संविषा यह षा **ऍव्'यर्ग'इवव। इस'त्र्र्येर'र'स'र्'व्रर्ग्ये**'त्र्र्रेंर्'र्ञ्र्र्र ग्रुट्यायय। विराह्मयादाने। इतात्र्वेरापाहिन्द्रार्थिना **৴**ঀৢ৾য়ৢঀৢ৾৻৻ৢঀৢঀৢ৾৾৾৾য়ৼঢ়ৼৢ৾৻ড়৾৾৻ড়ৢঀ <u>ট্রি-্'ই'ঝর্ড্র-ডর'রিণ'৸র'৸৴৴৻৴ৢ৽</u>'ঐহ'ণূর'য়য়'৸৴'য়ৢ৴'৻'৸য়| *ने*'न्य' केव्दर' ब्रह्म'र यशकन्' यञ्च त'श्री'य क्रिशं तत्य' रा'नेश वनः तु'यान् द' इत्याने। पश्चेदापगुरानुबादवा हासावग्या हिन्कीसायन्त े के देव बद्धवान वर्षेत् चेरावय। हेपईवानुवा प्रवासीयान्त के.र्रम्थवर। समर्रः के.र्रम्थग्रैक्यः विराधितः गृह्यत्राप्य। देविदेन्कुस्दिन्यदेन्। देन्त्यस्यान्वियायसन र्मेष्पर्स्पर्। ब्रिन्पर्म्प्रवृष्णस्यान्त्रीयिः सुर्वेष् वृष्ठवृष्णुर्म्भव। नेषा के 'त्रॉवरप्पर' शुनावा ग्रीवापॅर' सेर'पाता **रवाने' गुव'बी'न्** वेंबार**वा** र्वेरःपःविग्विवःविद्यायगुरःतर्ने गुडान्दार्थ। ।

धतान्नाधं व्यवन्त्रात्त्रित् क्षेत्रं क्षेत्रं विश्वन्त्राधेन् व्यवस्त्रात्त्रं क्षेत्रं विश्वन्त्रात्त्रं क्षेत्रं विश्वन्त्रं विश्वन्तं विश्वनंत् विश्वन्तं विश्वनंत् विश्वन्तं विश्वनंत् विश्वनंत् विश्वनंत् विश्वनंत् विश्वनंत् विश्वनंत् विश्वनंति विश्वनं

यहन्यः द्वीः स्वीत् । । ध्याः न्यः स्वीतिः स्वीतः स्वीतः

ज्ञान्यान्त्रां स्थार्था निस्नान्तिः न्द्रां त्यार्क्षाः क्य बेर्। । पर्र्र्श्वेद'र्के' र बेगाय। । षर्ग्यकेगायपदाद्वराम् हेरा र्में । अु'तातहर'व्श्वेर'पर'तह। । पृत्वाप'प'यज्ञप'व्यानर तु'त धुर। । म'सर'रा'त्व'र्से से न'स। । श्रीव'सिरे स्र सीवा' से स त्यान् व । यतुन् वॅदे त्रवा पा चुन्या पेव। । विन् की न वंदा मुँगसन् शेर्द्र। । देशमधुन्यप्य। स्थापम्य। स्थाप्य नि यास्ता है। गर्ने वाहें प्रति वाहें प्रत बेन्'ब'षेन्'त्रवयदायार्चन्'यायत्राद्यारारेषेन्'वेव'तत्व नेवाव्युद्धेन्' MAK पुरे द्वारायवा स्वयं चेरावरे अव'तु'यगुरादरे गृह्य का हु'न्न्द्रं सु: तु:बीन्द्रं न्द्रं ने | श्रीन्द्रं नि से अवायान सन् श्चनवार्वत्। । पन्र-पुःस्वार्यदारदेन् प्रमार्थे। । वसवार्वन प्रमुक् **य**र्वा प्रश्वेत्। | श्रेषेतु र्वे व्राप्त प्रश्वेष | देव क्षाप स्य है। दुःसुन्। । सःपीसार्चसाग्राम् स्वर्श्वे ह्रेत्। । सःपीसार्वसाग्राम् अनः स्थान्ते, इंस्टिप् भवं, दें वर्गे स्पर्ट, वेशे ट्यां । ह्याने शिष्ट्यां विष्यां विष्यां विष्यां क्षेत्रां विष्यां वि

त्रुंशन्तः संभ्रह्णायह्र्याव्यं। व्रित्तः स्वर्तः स्व

श्चित् खित्र व्याप्त व्यापत व्यापत

हरकी स्थापन प्रमास्य विश्व नर्भिर्मित्राद्यादेवाचेही हेम्पईद्येश्वर्रित्र्रिव्यादेश्वर् बहलरु कुर नदि न विवास दे विदेश में निवास दे विवास में निवास के निव मन्ययया नेराताया मृत्या शत्याया शहे सूर् छ प्राप्त नेर <u>র্মু</u>বাধান্তন:ফ্রন:ফ্রান্ডান:বাঞ্চন:বাঞ্চন:বাঞ্চন <u> २,८.७.४.५४,५५५,५५५ २,६६.५५५५५५५५५५५५५५५५५५</u> गुबुन्यायय। हिंद्दी गुद्रापिक्स्यनेवाक्कित्रान्ताप्तान्याचेर पासन्य नेरावास है'वर्ड्ड व्युविस प्राप्त के स्वार्थ व्याप्त के स्वार्थ व्याप्त के स्वार्थ व्याप्त के स्वार्थ व्यात्यायम् ज्याप्ते व्यात्रे क्ष्या क्ष्रित्राम् क्ष्यात्र्यात्र মণ্বরমা ওলনেই রমলক্রিদিন্দ্রমণ্করমার ন্রেন্ম। এব गुजुन्दायद्य यन् मिंदाने विति।यन्नते दन्दावाकी गुरुवा सिन्दान् क्षेत्रदः संव्यन् संव्यनः नीत्त्वग्या शुक्षाग्रीः वनः व्यव्यव्यव्यक्तिग्राग्वनः **न्यायन गॅर्वन्** रु. व्यन् रु. विनायन हेरन् विनायन हेरन् विनायन हेरन् विनायन हेरन् श्रिया मुडेग'स्र-'न्य'र्'स्र-'हिन्'रनः'ह्रेश'र्नग'न्नः'ग्रुन्यारगरा मन्य यहेर मिर्न न देश मन् रही वर्ष पर मान्य मन्त्री स्थान न विवा मन्। हेपड्वाक्रिक्र रुप्तान्य। स्थापया श्रेयरा ५,५८ व इ.५२ व्याप्त यो प्रयम् इया प्रयम शिततुम् म्हिन्'सं'ने'पयन्'मस्बीस्न्। पन्स'मस्बी'र्स् मतुर्पयक्षेत्रेत्। यत्र्पयक्षेत्रं मानग्रकेष्ट्र। यहर

ब्रुंट हेर् हेर् दं दर्य क्रिया वि । तुरस्य सद राय देर सहया त्देते। | ऑव ५ व र इंश यहा ही प्राप्त स्थान स क्षे⁻श्चेंद्र'| १क्के'प्रेर'ग्रुटराच्यार्थः संग्रेट'क्ष्र । ने'प्रविद्ययेशवा**कु** ই'র্ন'র । শৃদ্ রবা শ্রব শ্রীঝান হ' শ্রুদ্ থেঝা । শৃশ্পি নঝা ওমা Nबाबर्धर शित्युर। |गॅं'ब्रामबार्चयातामहेव'वरावे। |शेवबा वित्रां चर्यां व्यवस्त्राच्याः । श्चित्र स्त्रेत्र स्वयायान् स्वराहेत् । देशमहात्राप्या मिंदारी देवानम् ब्रेन्परिमीन्नपरानेन्न्या मन्ग्यम् शुरुव्यन्तः। मन्ग्मेशः में सुनः म स्यानः स्वापः स्विर तार्भराभगवाश्चीवानिवानेरायाम। हेयर्जुवानिवा देवानिपारर र्ने'बुदः रोबका नेति'_{वि}'र्न् ग्रन् ग्रन् वर कॅषा काहे : त<u>र्</u>न त्रुव र ही नका वर्र्से हुरारें स्वाबहितर्तर दिव वर्षे वर्षम् वर्षे स्वापित वर्षे स्व न्याक्रिं मृंग् देशन् श्रम्याया नेर व्यक्षारके अस्य क्रिंग्या 美口をすりかるててぼうります न्राह्यप्राचन्त्राव्याञ्चेताचुराताया মিঅকানর্মানজন্মবারা বিক্সেন্ত্রামন্বর্ম ই RE'R हुन' न श्रम्याचा विंद्दी न में पा दुरवा न न वि

ह्यामबिराबर्गा पिर्म्या-रेटान्चिप्याश्वासा **र्**ट्राय्येवस्य स्थायक्षाय इप्याप्ट्राय्येवस्य स्थाप्त्राय इप्ट्रा ন্থ্নশ্ৰ্মাৰ্শ্ৰুমাণ ঔ'দ্দ'ন্থ্নশ্ৰ্মাৰ্শাৰ্মাৰ্শ্ৰু मः न्रः प्रकेष्य व्यवस्थित स्याप्तं यन्तः प्राची विषय **बर्ने** गुर्ह्मते कियाँ राज्ञ ता खुश र्जा तर प्रें र जुर्हा कि प्राप्त के स वेन्'र्केन्'र्श्चन्'र्नु'अ्र"क्र्यंत्रिष्यायत्य। न्बरहरपर्वित्रम् उन्विमामन्दरहे। वित्यतरस्तर्भेतितर्भे महा **ॻऀ**ॹढ़य़ॕय़ऄॎॱऄऀॻॱॻ॓ॱॻॾ्ॸॱॹॗॱऄॲ॔ॸॱॻॸॱॾॖॻॱॻॾय़ॱॻॖऀॹॱॸॸॱढ़ॴॹॷय़ॱ - ८ मॅ प्रते दे व बाह्य व न ८ । ह्य में ज के न के न प्रते प्रत्य प्रते प्रता प्रता प्रता प्रता प्रता प्रता प्रता त्रॅ विन् विन वि क्षेत्र क्षेत् विक्रमान्य क्षेत्र क्षे देव'यानन्य'गुन'हुग'तु'तह्य'नर'यन्तिसेर'र्न । नेर हे'नर्ख्य ষ্ট্রীর'অম'ঝগুম'নেই' শৃত্যুমকার্যা।

पश्चित्राचेत् हैं प्रस्ति स्वर्ग्न वित्राचेत् । स्वर्ग्न वित्राचेत् हें प्रस्ति स्वर्ग्न वित्राचेत् हें प्रस्ति स्वर्ग्न वित्राचेत् हो । स्वर्ग्न प्रस्ति हें प्रस्ति प्रस्ते हें प्रस्ति प्रस्ति हो । स्वर्ग्न प्रस्ति हो । स्वर्ण्न प्रस्ति हो । स्वर्णन प्रस्ति हो । स्वर्णन हो । स्वर्णन प्रस्ति हो । स्वर्णन हो । स्वर्णन हो । स्वर्णन प्रस्ति हो । स्वर्णन हो । स्वर्णन प्रस्ति हो । स्वर्णन प्रस्ति हो । स्वर्णन हो । स्वर्णन हो । स्वर्णन प्रस्ति हो । स्वर्णन प्रस्ति हो । स्वर्णन हो । स्वर्णन प्रस्ति हो । स्वर्णन हो । स्वर्णन प्रस्ति हो । स्वर्णन हो

মন্তু'রুগ'মের'ঐবাইন। नेर हे एडं व ग्रीश सुनरात्रें दे **गुनका**त्रॅंति'मक्पॅव'मह्रक्ष'ए'विषा'गवर'व्या **ह्रद**'यद'क**्षु**चराद**ाँ**य'कष्'पर्यक्षेत्र क्षुत्र'रद'त्रभुद'द'तुरूपेद' व्यारोब**राधेवः दें**तु दाः क्रियाया यहः सः द्विरायः द्वा उदेशा गृह्य हारा या देर^{(वें}बर'ङ्'र्रे'पॅर'व्य। ञ्च'अ'यवादाअन्द'यन्व'मेदादःर**र** मुनराराखराधेन'न्यारोयराधेन'न्रक्रापयाग्नेराग्वाधेन'ने। *खुर्काकुः वर्में 'व्याम्* म् मदिन्य स्थाने ने स्थाने स्थ 45 भुगरापन्'स्राम्ययारुन्'रत्यापन्'धेव'वय'गर्यय'पय। स्वान्न रोबबान्नवार्च द'र्र'नेर'पाबेद'रा'सुपदापति'वेर'केपॅप्र'परा'८ तु**ग् रॅ**ॱष८'शेत'तुरतर्वेरर्उ'व्*रेते'वे८'ष८'वे\पॅ८'पररत्**न्** दें'व्शुय**रा** रा'ने'रोत्ररुधित'व्यापक्षापय। क्रु**मराप्रधेत'व'रोवरा**चेरप्र**ये** तहर्भ। रेयराग्रीकेरामाञ्चनस्यान मृत्यामाधिवादादीयायाचेर घतर बै'तबर्'या ग्याने'रीवराष्ट्र'यारीयरावेरवित्। ष्ठै[।]यायाञ्च नवाया**धे**वावावी **ञ्चनवायाय दिन्दार्थीः** रेबराष्ट्राष्ट्री व के रात व व वा करा नवा । ५ ५ दे रोबरा ५ ८ अप्रता न दे रोबरायायान् वेनः तर्ने प्राप्त वृष्याया । रोबराक् छे । चबराक् न् । या सुनका राय मृग्रायाधित व्यत्रियेयवातात के ज्ञु की तत्र्या प्रथा ক্ট্র'ন'<u>ই</u>'ষ্ট্র' मयराञ्च 'नु 'ने वा यहुव 'वा मा नु हु हु वा यु मा हु न या पा वि व या के वा पा यन्तरहे। **क्रें प्रक्रं अन्य के प्रक्रा के ज्ञान के ज** व्यवेर: न्रः विश्वर: र्वेष व्यक्तिः वेश्वर व्यक्ति। 47.424.414.3

शेश्वरादित्त्राच्या प्रत्याश्चित्राया प्रतित्राश्चेत्राया श्चित्राश्चेत्राया श्चित्राश्चेत्राया श्चित्राश्चेत्राया श्चित्राश्चेत्राया श्चित्राश्चेत्राया श्चित्राया श्चित्राय श्चित्राया श्चित्राया श्चित्राया श्चित्राया श्चित्राया श

मन्नाः सेन् न्वराखन्याः कृत्यायते मुः सारा । मन्ना कनाः र्ञाः न्युयं गुरुप्य वा विश्वास्त्र न्या वित्व प्राप्त वा विश्वास्त्र वा विश्वास्त्र वा विश्वास्त्र वा विश्वास्त्र व **ब्र**मायाद्ययम् । पर्यायेर्'ग्रयायायाया वार्के प्राप्तराधे व्यक्ति । **च**न्ग'त**ें वर्**धताव्याचें वर्धान्य सहिषाहरू । | नेरे हेरा क्रेंन डिन् हे में हुराय हेव। । नामन्य हिल्हेव मिल्य से सामित्र । मक्षाप्यवर्षम् । भ्रम्भाष्ठग् मुं केव्राचे । भ्रम्भाष्ठग् मुं केव्राचे मुं **ब**र्चर'**बे्द'र्खुत्यग्री**रा'बर्चर'प**्प**्। । धुग'क्कुकेद'र्य'पञ्चर्याता । बुवि'र्र्'गुरु र्दंद'वित्रकेद'र्यं र्वेदा । । सम्मार्वेद्रप्र परि ह्यु स्त्रद्रा बैरागुर्त्रहरू। । त्र्रायातुःबर्देदातुःक्षेत्राया । ह्यायदेन् नरा **ध**रः वद्गरमः नर्मेता । मन् बरारमः मे ब्रेन् 'तुः दुरः याया । यस्न द्यरापरायादार्थित्रं प्राप्त में राष्ट्र में राष्ट्र में प्राप्त में राष्ट्र म न्म्या । तक्षेप्रस्तुन्यप्रदेश्चिष्रत्वेत्यन्म्याः । नेप्तश्चरायसः **८**तुग्गेष्ठेतुःइरा ।देःदशुक्तंक्वित्ःतास्यतस्यार् मा । नियन् गृर्द्धार्या अक्तारा । ने मन् स्वर्गा सेन् स्वर्गा सेन् हाराधिय। । न'र्केशकी मन्याधिन हें गुरु सम्मान । सिम्हायहें य

८ भी है। प्रवेद (८ प्रेंट्य) | दे द्वारी अवस्ति वापरा र कुर। 15 हितु:इन रोबरायाने क्षेत्र विष । देश ग्रुन्य प्रया विंदाने न मन्याः मार्चेन् त्यायार्थे त्र त्यायायायाया स्थापार्थेन्। मन्याः वीयेवसादनेतिः स्पान्रकेन्याविषायहिदावेकात्रेरारा ।नेरहेपर्वन्शेविषया दिनशङ्गेयातुन्नायाः वीतुन्नान्नान्नान्ना न्मेन्यक्रणाः व म्राह्म निवादया हिन्दर्भी अनुद्रश्ची सुदेरे विन्दर्भ स्राह्म स्राहम स्राह्म स्राहम स्राह्म स्राहम स्र स्तरा नुसरी भुः तर् भुः तुः विषा र्भे वस्य निषा पाद्य र स्वरा विषा वस्य रीष न्बेज्ञरापाविवार्षेयावयायहरारी ।नेराववायह्याह्या ववा मत्वार्थनाम् हित्रिंभाने भेनावया हास्यवया मन्तर षीसु ने 'स्वा' अप्सेन वयाववा 'यतुव र्यनः। सु गुः ने यायायायययययय **८ के पार्** के बार का है। स्वाया विषय के बार के बा **ग्रीवाय प्रमान्य विश्व विष्ठ विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विष्य विष्य विश्व विष्य विष्य** विष्यां विष्यं चेत्र विष्यं चेत्र विष्यं प्रत्यार्थेन विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विषयं विषयं विषयं विषयं विषयं म'ने'हु'बिन'र्येष्'वहार्यन'र्दे। |ने'वहायन'र्येश्वचर्यायहा ष्ट्र- विक्वान्य श्वाद्य स्थार स्थार व्यवस्था विवाद स्थान स् 数タイプ・ハフィ रश्चायदे ग्वन्यश्चर ग्वास्त्र स्थादा **धे**व से न ৰেশ' मतुब्रॉस् व्यार्थेग विभेत्र परिवासिक विभिन्न परिवासिक विभिन्न विभाग हैग्'बैब्'दांबापस्'हेंब्'वुर्'की हुब्भैब्'वेर। हेब्बल हेंब्र'वुर् प्रवा <u>५.७.५श्चेत्राक्षत्रस्याद्यत्राक्षत्रम्भक्षाच्यत्रम्भक्षाच्यत्रम्</u> **२**ॱसद'क्रन्'तुरा'ल्ग्'ते'तुरा'ल्ग्' श्रन्ज्य क्षेत्रन्द्रसम्मारी'तळेलन्न् रापा'''

য়्।

न्यत्रद्वार्रे वे दे वाक्षेत्रायक्षण्या | दे क्षेत्रे क्षेत्रवाराय वि वि वि बातत्त्। । इंदावाया वेत्राय ते देंदा हे दा हे दा है दा **ঈর্ঘান্দ্র্বাঝ্রাম্ম ইন্রা ার্ম্ব্রাম্ম** । মির্বান্ম শৌ্রান্ম নার্মাণ नश्चेनम। १८के मिते कॅलामु १८६ नमा सुन र राजा । से रे रें न पर के छे **ह्युम्बान्यम्। । शुक्षाने अभिग्ने अभिग्ने वा** नर्झ्यापतिः झ्रॅंयाळेव् गुव्। वियवाग्रीप्र रातर्भेव ग्वायाञ्चराय। । इव्यायर्ग्नर्भव्यायर्भेत्रायदेश्चेष्याय्यात्रा त्। |दॅन्'न्यायायानु'वात्र्रेन्'धन्। |सून्यक्रेंब्यावे'न्व्याचित्रा तके'मरायासन्वितः। अर्रुत्रात्मेंदिः कु'तुः वेंदाया वायावा । विष न्गे पक्षेत् सुम्यायळ्या स्राप्ति । । शुक्ष युव् न्या स्राप्तिया तुरु हु। हिंग से न स्थल प्राप्त न न स्थल हैन से हुन षेत्। । ने 'त्र व' वे वा छै वार र त र व ' छ वा पति खें। । व र वे ' क्ष र र र र न्या देवा के विकास क

बावतः पुरवायरः पञ्चलायायविव। दिवा क्षेत्र हेवा वे खेरा रेपा। हॅंग'येन'नययविन'न्नययन्। वि'नवसव्यक्षराग्रीधून'यधिव। । १ अरु दूर्पा ने देवरा पृति राम त्राप्त त्रा | दि प्रमें व व केंग ता प्रमें ता म'रिनेनरामविव्र'त्। |कॅर्लाईरामवस्राक्षेत्रुंस्यामव्यक्त्रंदे। | चन्नावन में स्थलकी स्र हेन स्न वहन ता । वि न व सर र त दें व की ॕॖॺॖ॔ॻॱॿॻॱॻॾॸॱॻॕॱॻढ़ॻॺऻॎ<u>ऻ</u>ॖॿॺढ़ॱॸॣॸऄॗॸॱढ़ॆढ़ऀॱऄॗॖॹख़ॖॱॹॗॕॸॾॱढ़ड़ ষ্ট্রীঝ| |দান্ব'শব'রীঝঝ'নষ্ট্রীন'ষ্ট্রীস্কম'র্ম্বুমঝ'র্মার্মীঝ| NA इस न्या विदा हो न पुर द्वारा माना विद्या है से स्वार प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त **हॅ**'रे`र्नेष्वाक्षेप्रस्थाबंदर्ने'तुषारेष् । व्यक्षेत्र'परःयद्याज्ञुरुक्षे साउ पश्चेतरा । वापक्षापरः कॅश्रुपने 'तुरायर्घनः। । वापङ्गुपरापरः तर्व'श्राक्षव'ग्रीकाश्चर। । तु'न्बे'राक्षेव'र्येववाताने सूरावेंग । देवा न्युन्यान्तान्। व्यवाद्वीरावित्ववात्यत्त्रान्त्रान्यवायाः इववार्हेन्या परःगवरःवयानञ्जवयानय। *वृ*वयाः हेग्यावरः धैवःपरे धुग्यां छै स्याप्तरापात्रम्याक्त्राक्षुत्रसावे वाद्याप्तराम् वावार्षे । त्वायराद्ये वा **ई**न्द्रन। रसप्यस्यज्ञस्युतस्द्रस्यस्यानसः क्रॅन्स्। ।

कृत'स'न्युणु'त्र'हेर्राशु'नञ्जन'नदेःन्न्रेन।

न्यॅ.गुःद्र। हेप्पर्डन्थेत्यर्थन्त्रेत्रंत्रात्र्यान्तेव्हर्यंत्रंत्र्यः गृतत्त्रनःतुःर्मेन्यस्यर्थेः स्वापन्यः स्वर्यान्यत्र्येः न्यग्येन् स्वर्याः द्यान्तर्यः । ।

द्यान्तर्यः च्यान्तर्यः व्यान्तर्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्तः व्यान्त्यः व्यान्तः व्यान्त्यः व्यान्त्यः व्यान्तः व्यान्तः व्यान्यः व्यान्तः व्यान्यः व्यान्तः व्यान्यः व

मुश्चरयरपदेलिययपादित्। । निर्मेहित्निवन्दर्श्यक्ष्यय प्राप्ति । विद्यक्ष्यय प्राप्ति । विद्यक्ष्यय प्राप्ति । विद्यक्ष्यय विद्यक्षय विद

य'यदे'शुं ने दें दें द्याप्ता । तर्ग्णुद्यावेदे द्वयमे व्यव राद्या प्रा । प्रम् दें वे ख्याप्त राया । ने द्रम् द्याप्ता ख्याद्वा के व्याप्ता । के द्राप्ता ख्याद्वा विव व्याप्ता विव व्यापता विव स्ता । पत्र दु द्वापते झ हें क द्वा । ध्राय न हे व की द्वापाय में र दंवाग्न्रें। । स'त्र्वायते'क्वां केन्'ई'न्यां मना । ननः क्वॅन:केन्या रपवर्ष्यत्र। ।पर्रिषेत्केशिर्षेत्रक्षेशा ।हस्ययः मे स्रा अक्रुश्चं अप्ताप्ति। । तर्शे 'हुण' वे तेवशक व ही 'व शप्ता । क्रिट हे' हुन्दाहे वे तर्ने ५ 'तु' अ र्यान्द्रा । विश्वकान बुद्यान् ज्ञान हुन्द्रा प्रा । रत्युत्ये भे व्यव त्य द्याप्रा । प्रार्ट् हें प्राय दे प्रि <u> ५८. क्या । ५ व. प. व्याप्त अर्थ व्याप्त प्राप्त । १८५८ प्राप्त व्यास क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र</u> वस्यभ्रा । तहेव से प्रेमेश्रेमेश्रेम प्राप्त प्रम्या । प्राप्त द्राप्त । क्वॅन'रा'श्वर। श्विर'क्षण'गहेशशुक्षे'तहेंदर्रवाग्रहें। । छरा केंद्रा त्रेन्यायाष्ट्रीयवाप्ता । तेर्नेष्वाद्यस्याव्यक्तायाच्या श्चराक्षेत्रन्द्राया । न्वीक्षियायहेत्राक्षेत्रहेत्रस्यायन्दे । वियाग्युत्यासय। द्वेंदाराभृगागुय। हेपर्डदाग्रेप्सुगयान्यान्ता र्में व राये प्रज्ञन्थित्। प्रमाणी राहे पर्दुन् श्रेष्ट्र त्रास्ट्र त्रास्ट्र प्र उरःग्न्बबारग्भिन्'केबिन्'क्षें'वियाय'विग्थार्घयः। न्'न्यनःन्नः मन्यस्य प्रम्य हिम्स हे स्र रहे व पर ति । व स्र प्रम्य । हे पर्व व ग्री क्यू प्र न्यर-न्र-विन्ययायाव्यर-हे क्रें यानु पाद्य क्रियाया क्रियाया क्रियाया है। हेमईवायावुराम। इसम्पन्सरियमातरीबेनवावराहा विद'यम् वी न् वें वारा तत्व वे वेव वावेन् व वावव में यम् वी यम्पान त्व **ञ्चाया**येन व्यवसार् तेव प्यन् वे वे यापा ततु ग तने द्वययायाय व व केन

२:८८:अञ्चलि: विष्णाम्य ८:४ न्याः म्य १ विष्णु व्याप्य देश्य न्य प्राप्त देश्य न्य दि । ।

बूर्पति:यळव्रिन् क्रिप्ते वेर्। क्रिप्त वुर्प्त्रित्रिति भेदा । तिर्वरम्पियसंदि हिन् गिलिसं स्था । गिलिसं सुन द्रार् **ह**र्गिवर। विवसक्तिवस्त्रिक्षेत्रवातित्रम् ।स्तिराक्षक्षेत्रम् विष् बर्दर्भव। । अयदेश्यहंद्रं वेद्रं चुर्परं स्व। । रदः पर्वे चेद्रं ब्रॅंडिं न्यां भिवा विवयां केत्रं व्यायायतः सुर्वः ता विवयं हेंगः ईर्षे ह्वेत **१** चित्रायञ्चीत्रा । वर्ष्व,रंबंब,श्चर्यप्रवाच,र्या,पट्टी । पञ्चर,पञ्चे. **बे**रके हिंदार् न्त्र । हिंग्यार र प्यारें र न्यायार र । । वृत्यस **इ**८-७,^{घ्र.}.के.य. ४५८। । व्रियश्च ४.८४। या या या या या या व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त महाराबेर्पायाम्हर्पादार्गः । देशकेषाम् नाराक्षराष्ट्रप्राप्ता । न्द्रभ्रान्द्रभ्रान्द्रभ्रा । रद्रभ्रान्द्रभ्रा । स्विन् **इ**ग्'क्वेन'श्रून'र्श्रून'परि'रन्' । त्रन्'बेन्'श्रुग्रातहुन चग्'बेन्'रन्। । मन्यविष्कुन्यविष्ट्रविष्याः । तिह्रवायेन्येषे श्रास्तुन्यरः । । ष्वा । त्राता भेर भुष्या ध्या में यह मही । वेदा यह महामा विद्या मही **८**रः अत्हरश्यरळें **५**रः श्चराया श्लेंबया ने ग् छि ५ 'ग्रीश्यन है' यहि ब के **य** बर्दन्। गुन् गुरु विश्व अवाशु सेव कु धेव प्रवा केवा सने न्वा ने में व व अव इपिट्यानेग् ग्राचित्राच्यायम् ग्राट्रि ग्राचित्राया ।

ब्रुक्षतुःक्रवःक्ष्वःन्यःपःद्वयः। ।केंद्रने ख्रुःचेनःधेवःपःकःवे**नः**

५व। । विन्यार्श्वेन्'श्वु'याभेव'या'ळाबेन्'न्य। । दिविन्यपिवासी **&**'최도'도리 | 다른'다'홟'씨라'원육'다'&'최도'도리 | 다턎도'絜도'크리' **७:**धैव'ए'क'बेन'न्य। । इन्प्य'रोबर्या केन्प्येव'ए'क'बेन्'न्य। । रन्प रोयरायम्याकुराधिद'प'क'ये८'५य। ।यम्याकुराक्रॅरासु'धेद'प'क' बेर'न्य। ।कॅराञ्च'कॅर'वेर'धेर'पळ'बेर'न्य। ।कॅ्गरान'ङे'यूर' रीयराशुःतनुरा । रोयराताहेन् ५८ मार्चन ५५ हेंगा । रोयराता मक्ष्यस्य वित्राचित्। । विविद्याचेत्य वित्राम्य वित्रा ष्ठवाकुळेवार्याया । ररायविवाक्षवायायस्य द्वी महर्रित्रयावन । विवयायवन् हेर्याच्यान् हेर्याच्या । यञ्जे परिन्देशपान्ग्यवेन्। हिल्राब्र्न्यन्यन्दिंव्यक्ष्रन्। 159 परामहत्त्रायहत्येत्। |यक्केयपधिर्म्खेत्यत्। |देपहेदा **ब्रु**यापाक्ष्या । स्वयक्षियाक्षयाक्ष्यपान्ता । स्वर्ध्याना न्दरान्द्रियञ्चरार्यन्य । चेन्प्रकेन्प्रदितह्न्प्चरराज्य। ने द्रवराकेन 'नु' न क्षेवरामका ग्रुम् । । ह न राष्ट्रम संपारी क्षेम्रा ग्री क्षेम्रा ग्री क्षेम्रा ग्री क्षेम् इत्पार्यात्राचीत्रेवराष्ट्रित्याया । वेवराष्ट्रित्यं स्वेदायराष्ट्रीया । हॅन्यापान्नवयान्नायात्रयात्र। हिलाविययवर्केन्यान्यान्ने। इलाविययवर्केन्यान्यान्ने। व्यवा । विवयः उत्यक्षयन् त्या वित्या शुन्यः प्राप्तः । द्वित्या शुन्यः । नुगागुरागुरानुरान्तिः न्यस्त्राम् व्यवार्के ग्राह्म् प्राह्म् मत्रेक्ष्वाञ्चराने प्रति श्रुवाष्यिक्ष विवादि । यन त्र तर् श्रुवा

कुर्द्भव्यापुण्यावाहिबाद्यान्वन्यतिः र्स्रर्म् ।

544'57'458'55'854'56'X

हे नर्दु व वी तार वारा ने कि न ह के वि न न वात ब्रःब्रॅं गुःदु। क्रॅंगर्'द्र्येन'न्न्र्यव्या न्यात्राह्र्य'विषायार्ग्येन'न्येने गुरुन्नेगुन्द्रां श्रे भाष्युयानु सुग्ने तथायायय। स्थारा गुन्ने व स्थ ह ले त तर्ग छन् पर ले त छन में ले पानी हे त द। सु में लें स्पान सु म ন ই শ্রে ব্যাইৰ ্যাই বিশ্বাম নি শ্বাম নি নে ক্রিটি ম কৰ , দ্ব গ্রাম শ্বাম দিব । ... मेवायम् प्रवापदिक्षेयरः संगदंशयहः प्रविषातरुषः प्रवारे रार्धेवावत। ऍन्'न्न्ग'इवराइत्यत्र्र्चेर्रार्'र्'त्यत्र्र्छंन्'वेगार्श्वेर्त्राम्बुर्वाचर्ग तुः अंने वन्ते। इतात् व्यान्य हिन्य म्यानि स्थानि विकास विग्नारायदायदात्रुत्रेतार्द्राचेरात्या हेपर्ड्यायापरनेतिः र्वेर व्यव्या क्षंत्रवाचित्रवाचार्यंत्रवाचार्यंत्रवाचार्यंत्रवा क्षंत्रवरंत्र चकु८सर्स८'म'२८'। धुग'ॐग'व'देते'व८'वयाक्तव'र्से'शे'ङुग'प**दे** क्षः चुन् 'ठद् 'चत्यं पार्श्व रार्वे 'ग्राम् राष्ट्रे रार्वे मृत्रं हत्य ৻য়ৢৼয়৾য়ৢৼয়য়য়৾ঀয়ৼ৾য়ৢ৻য়ৼ৻ঀ৾৸ৼয়ৢৼড়ৢ৻ৢ ৽ न् हुर् बुर् हेर्। हुर् यार्थ्र पति त्रायुर् के तत्र हिर् दि त हे•ढ़ॕ**८बादाभेव' ব্যা**ইশ্ৰাৱ্ৰ ৰাহাঁ দ্ৰীবা দ্ৰীবা দ্ৰীব্ৰাহানান বিবৰাশ্ৰাব্য चेरंडरः। बरंड्'त्रयरंड्'चुरंपंतरा हेपद्वंव्'ग्रेशक्व्यं র্ট্র্র-গ্রীষ্ট্রমেন-ইব্-মেন্ড। স্তুন-রর্জন্তব্-মেন্ড্র-মেন্

परः वर्षे देशः वरः परिः परेः परः प्रकेष । वरः दवः सन् पातुवा श्चैन्त्रपानस्यान्मः पृष्ठेया । स्यापानश्चेन्यन्यम् अन्यानस्य ग्रुवान्ग्रुवान्ग्रुवात्र्वायात्रेत्राळेन्द्र। । । आक्षेष्ठे क्रान्नः त्रिवाचतिः वि'ग्रग्य। । ब्रिंन्'क्षेक्र्ग्'रन्'गेर्ययस्य विरुद्धा । ब्रेन्'व्ययस्य नहरः तुरुवा । तर्ने तर्रः यद्येषाक्षे ग्रुटः र्वेबया । ह्यः ईः व्टरनदेः <u>इ</u>. अन्नः गृहेग । न् मॅन् कें ज़्यान रे ही अन्नः गृहेश। माबेर्परि मु । यहा अपरि माहिकार देवकार दि । ळॅं ५ वा । अ. श्रे. श्र. हें . बेर्पिये इत् वियाया । ब्रिंर् हें गुरूर ने रोयरायार्वेन्या । ग्रेन्य-न्यायते क्षे.क्ष्या ग्रेया । पर्वे व व यह व र व ह्य अहेत्। दिवस्तरे त्र अस्ति स्वा न्यवर्त्रावरेण । बेर्'ग्रुन्'न्ब्रियदि'ह्नसङ्ग्रुन्'न्र्'ग्रेश । बेर्' क्षेतुर्ने तुः र्हन्र महुव। । महुव्य ने महुव्य त्रें वक्षयपि तुक्ष स्वेनः व। । ज्याक्षेप्पयाकुन्परायम् वृज्याये अत्यवेन् व। । व्रिन् सुर्हेणः रन्षे वेशवास्ट्रिया । छेन् व न्यपदे क्षे क्षे व हो । । पहेन व्यायस्य द्वा न्या हेव। |देहरादी तर् छे सुरार्वेगया |विवा व्यमुप्तरेम्बरअप्तप्तिकेष । अर्थेयात्र्रेष्पतिः हण्याप्तराम्बेका ।

वि'क्र रावे द्रापति'त व्यापाद्र प्रायुवा । ग्युवादे प्रायुवात हे म्युवाद हे यह पति'तुकाळॅन'व। ।अ'क्वै'न्म्'स्ग्रव्यव्यव्यव्यव्यवि'से'नेग्व। । विन्'सं'हेंग'रर'में रेययाय विरया । विन्'न'न्यपदि'स् केराग्रीया । महेन'न'यळन'इन'त्र'यहेन। १ने'हेरामने' तर्जे ग्रुन र्यंयर। । बितै'तु'बॅरि'स्तिहेन'न्र'गडेग । न्र्रंगे'तु'करे'छेग'र्वेर'न्र'''' |æस्त्राच्यर:संदे:ई॰लॅर्ट्राम्ब्रुय। ।म्*ब्*यर्,प्राब्रुय तह्रवरायते'तुराळॅन'व। । आधी'प्रॉन्न'प्रॉक्संयापते'स'र्मेग'ठव। । महेन'न'यळन'६न'त्र'यहेन। |ने'हेबानने'त<u>र</u>'ओ'ग्रुम्'र्संयय। | त्र त्रंत्रत्र त्र्यते व्राचित्र त्या व्याप्त विष्य । त्रा त्या विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य न्ना केया । सर्ने कन्पति र्स्नि एस वार्यन्त पहुरा । पहुराने শৃষ্যুরারেইঅরাঘরি:দুরার্স্কর্ব'ব। ।আই।স্কু'এরান্তুর্ঘরিন্দির্''''' मयम। विन्'मु'हेन्'रून'रून'ने रेयसम्'र्वेर्ग । विन्'न्यपरे'भू र्वयम् । द्विः यग्ययः तत्रायदे ग्वेरः अन्तः ग्वेग । वनः भिष्वगः न्न-प्रतिः दुवातम् र-न-प्रवेश । प्र-भ्रित्भुग्वादवः प्र-भ्रियं र न्मान्या । न्युयान्यात्र्यात्रस्ययान्यत्त्रार्खन्या । व्याद्धेर्यत्या इंब्यायतेष्ठं नवेरवा । वित्वाहर्षे वार्याने येववाया वित्वा न्यमदेख्रिक्ष्म्भ्यम् । महेन्यम्यस्य स्वाधित्रः तर्नेत्रक्षेप्ततुष्वंवया । ग्रन्त्यकृष्यतेष्वत्रत्यतुनःप्नः पृक्षेष ।

ॿै'ॴॹॖॴॸढ़ऀ'ॸॖॻॱॻॕॸॸॱॻऻढ़॓ॴऻॴढ़ऻॕॴढ़ऻढ़ॹॗॕॸॼऀॱॺॴॹॸॸॱ ग्रुव। ।ग्रुवन्।ग्रुवन्देवलम्दिन्यर्देन्य। ।अधिवरादम्य वियातम्बर्धे हेन्या स्वाया वितासहेन्या न **डोन्'न्'न्य'पत्रे'**ख़'कॅबाग्रीया । पक्षेत्'न्यंबंत्'ख्न'झ'याक्षेत्। ।न्'ने' तर्ने तर् प्राप्त प्रशास्त्र या । या स्वास के स्वाप्त प्राप्त के के व्याप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स् व्ययस्य में व । विरादि स्याप्तार्म् स्वास्त्र ५''स्रेपीर'म्बस'नेस'नेष'नेष्ठां त्रांत्रांतरी । । व्याक्षेपतके मूर्वां प्रात्रांतरा बेर्'यदें'ग्रॅंर'रुव'वा विंर्'क्ष्रंग्रंग्रर्ग्गेर्वववायार्वेरवा विंर्' न्द्राप्तिः क्षेष्ठं रायहित्। । यहेन्द्रायकं न्य्नः व्यक्षेत्।। देश न्युत्रायम् है पर्वन् के हुन्य हे म्रान्युत्र प्राप्तन् बॅं'रर'न्यर'बेर्'पदे'न्र्'य'क्रुबा यग्'पदे'चयाय'यर'बॅरपर'द्य' बक्षेत्राम्हेन्देवत्र्यन्दिक्षं वित्वित्र्यं हेन्दर्व्यास्त्रं हिन्दूर्ववादन्ने होत् हुन्यवा हे पर्वन्या इतावर्षे रायाहिन **कॅशराधे तर्**पराज्ञ वां विदेश्य हरवा व्या विदेश हराय देश हा वा स्ट्रा र्रुः भेर्द्रात्र्याचे रामुद्रात्वाया मन्यं म्याद्रात्वा सुर्वे विद्रात्वा म्याद्रात्वा स्व **६**ग|विन्।मेबानायानग्यानगुंबायायाया परि'त्रव'त्। **कॅब'नेग'गदर'प'ने**'इबब्दर दे'र्झेग'तुख'द्युर'प'ञ्च'ग्रेज' गुन्किंतत्वामवा रम्याभिः कन्ष्विन्यस्वाने। कॅबायानुः वा रायात्र्युन्द्रग्राव्यव्यावकेवार्न्रायभेव। न्द्रिन्दर्ग्नायुविवेव।

व्यंत्रेन्व्वयंत्र्यंत्यंत्रं न्तः त्र्यंत्यं व्यंत्रः व्यंत् व्यंत्रः व्यंत्यः व्यंत्रः व्यंत्रः व्यंत्रः व्यंत्रः व्यंत्रः व्यंत्रः व्यंत्यः व्यः व्यंत्रः व्यंत्रः व्यंत्रः व्यंत्रः व्यंत्रः व्यंत्रः व्यः व्यंत्रः व्

स्वार्श्वे अस्तार्थः स्वार्थः विद्यात् । विद्यास्यात् । विद्यात् स्वार्थः विद्यात् स्वार्थः विद्यात् स्वार्थः विद्यात् स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वर्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वार्यः स्वर्यः स्वार्यः स्वर्यः स्वर्यः

ने सजु न 'छै' द स अळें द 'प' छै दे हा थ। । दे पा जु न 'द न 'द दा हूँ द 'प'

वर्षेत्रय। |र्न्व्युर्तेश्वर्यात्र्र्व्यः व्यान्त्र्यः व्यान्त्रयः । व्यान्त्यः । व्यान्त्रयः । व्यान्त्रयः । व्यान्त्रयः । व्यान्त्यः । व्यान

सुअराश्चे 'र्स्व 'र्र् 'व्ह्र व 'र्रा 'र्ह् व 'र्ह् व 'र्रा 'र्ह् व 'र्ह व 'र्ह् व 'रह्ह व 'रहह व 'रह्ह व 'रहह व 'रहह

सव्दु'यगुर्द्रत्री ग्रुट्यार्थं।

ग्वेयानर्थाष्ट्रताग्त्राकेन्यॅराप्ता । त्यायानर्थाः ॥ त्यायानर्थाः ॥ त्यायान्यं व्यायान्यं व्यायायाय्यायायाय्यायायायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्यायाय्याय्यायाय्यायाय्यायाय्याय्याय्यायाय्य

ने न शुक्रा न शुक्र न शुक्

हैं 'या त्र प्रति 'हैं प्रति 'हैं प्रति 'हैं प्रति 'हैं प्रति हैं स्ति हैं सि ह

स्तान्त्रेश्वर्षः द्वा । स्विन्त्रेश्वर्षः स्वान्त्रः स्वान्तः स्वान्तः स्वान्त्रः स्वान्तः स्

प्रह्मित्राक्ष्मित्र व्यापन् में स्वर्णन्त्र स्वर्यम्य स्वर्णन्त्र स्वर्णन्त्र स्वर्णन्त्र स्वर्णन्त्र स्वर्यः स्वर्णन्त्र स्वर्णन्त्र स्

ब्रान्तिं श्री । निक्रें न्या क्या करा । श्रिन्य के न्या करा करा । श्रिन्य करा करा करा । श्रिन्य करा करा । श्रिन्य करा करा । श्रिन्य करा करा करा । श्रिन्य करा करा । श्रिन्य करा करा । श्रिन्य करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा । श्रिन्य करा करा । श्रिन्य करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा करा । श्रिन्य करा करा करा करा करा करा कर

अर्गे हे पर्वव भेव भेंके | तिशेष कर्में व प्रव हिया तर्शे र १८ वेद प्रस्ति केद केट प्रवाधी शहीय। । व्यव्य कें प्रवि क्या न्देन्'त्'र्वन्। विरुव्यद्वर्'ङ्'र्वेष्येष्ठेष्वद्वर्'त्र्यम्या ।कॅब्ययद्वेन्' पर्देश्वर्या । वेबनुबयवा हेयर्चुद्राक्चित्रववा हिंद् **कॅशहरान्यान्नेन्दार्ध्याहे वान्नेन्यान्यार मेश्वरा। कुपातुपाञ्चर** न् मॅंबावे श्रायदे व बामवानु क्वारा मुरामिकार देव शुरानु ग्राहर वार्षा । . अरगेष्व्याद्यस्त्रस्य । ग्राह्मस्य स्तर् कत्। व्रितिन् नयञ्चित्राम् शुक्रम्यन् नित्र । ज्ञन्यञ्चे म् नयञ्च क्ष्यायाया । कृष्यक्षेत्रायासुर्यक्ष्याः । श्वेष्यायेष मया ग्रें राया तक्या । न्या खेर द्वा चेर परित ग्या के व्यापना । तिशास्त्रपरमञ्जूषण । शेरञ्चन मुर्गेषेत्रपर मेबलव्यवया विसन् कृति पृत्यकृत्य विस्ते विस्ते विस् न्यतः न्रत्युव। वितर्ने यस्त्री अस्त्रायम् वित्रो ग्रायस शुंकुन्'त्रव्यव्यव्यव्या । भूवं वे म्यायाशुं या कुन्'व्या । दिन्'व्यव्या धेव प्रश्र इं व्ययम् प्रस्था । मृण्य है ' खुय हे म् मिर हे स्वर वा वा तर्भारम्'पर'वहार'यर'ग्रॅंप्यंपसुत्। । गृष्टे'शुग्'र्ग्य'र्पे भेन्' तर्मेश्यवयाया विवयम्ब्यान्त्रियञ्चरताहर्या ।अर । अंतर्ने नराष्ट्री यात्रे न्याया के। । क्रिया ने क य र यत र र त स्वा इश्मियंत्रम्येत्रम्येत्रम्यः ।८माःष्ठेष्यम् स्थान्यः बावि । तर्वासव्यानरामहारायराम् वर्षिरामहावा । हे तहीता न्ताः देशिवाराम् वेदाराम्यायय। विद्यम् ज्ञानः द्वित्रमञ्जूनः तार्षेत्रय। ब्यट्गोष्ट्रायाप्त्रत्यव्या । क्रिंदर्ग्त्राष्ट्रीं याययातस्त्रम् कृष्यं द्व गयाशुः कुन् '२ गया याया । कृष्यं द्व गयाशुः या कुन् 'द। । पहें नः | न्यांकेक्षंत्रेरः नदेः नहुः श्रेन् तशुराधिवप्ययः हैं यायम्पत्र संया वाप्तत्। । तर्ने वास्त्राधरः पत्तरः पत्तान् वृत्राधाः न्याः द्रम्भवात्रः भेषायायायाया । भेषायः क्राचाः सुरायः स्ट्रा वेबान्युट्यास्य। यट्स्युर्झे देव्हे हो झुर्यासन्य। ग्रन्थर्ड प्यत्रक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं प्रत्ये व्यक्ष्यं प्रत्ये व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व विवश्हेरातहेर्यातहेर्यात्वा वेराले म्ववायिति वातातियात् सुनाचरा हे'मईन'विन'रु'अहेगाही विन'विषया'य'वर्षक्रियोजेन'वा 25' कुष्यवात्राञ्चरः भ्राप्यत् भ्राप्य व्याप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त परा अपरिन्पन्स्करायञ्चरप्यस्वीन्म्राम्बर्गा **췿**었. वित्रं श्रेश्वर्णं क्रश्वर्णं व्याप्त्रं त्राच्यं व्याप्त्रं व्याप्त्यं व्याप्त्रं व्याप्त्यं व्या

करमें क्यार्ययार्रत्य हवा वित्रार सुग्या राज्या । वयायावर पर्सेयानु पर्ने त्रवारावा । क्षें क्षेत्र वयायावरे कें तस्ता धिद। । व्रवायावर परायी पराप्तिया । वि हा पर्से या पुरापे स्वाय ।ग्जर क्र्रिन् के क्रिक्ट के स्ट्रिक विका বা 1分割マスマぞくちょ विष । रेनियक्षयपुः पर्ने त्यावाया । इप्नेर् रेनिर्दे विषय विष् रिसं रन निन मुल्य । कु अर्छ 'य क्षेश्चनु 'यने 'यग्बाय। 15 त्रपश्च अक्षेत्रे कें तहाराधिद। । क्च अ**क्षे र**र केर र 'दु' देव । र र মিঅর্থান্রর্ভ্রান্ত্র্বার্থার । বিষ্কৃত্র্ব্রান্তর্ভ্রান্তর্ভার্ रीयराष्ट्रिन्यन्चीन्नन्तुंव् । देशावहानसव्सामञ्जयस्यस्। रेवसर्हरानेन्कुष्वराख्यायान्त्रायमस् *वैन्'ग्रैकर्रक्वेते*'श्च'न्न'नरकाने'वावतःश्चन'तु'वनेववाराधेव'र्वे। हे'मईन्ग्रीश्रयद्वयाग्रीश्रेरःमहेलया गुरुरागे गर्रापश्चे पशुअतुः ष्ठ'अ'न्यक्षन्त्रत्वअन्तः अहत्यन्ते अँरूर्न्। ।

えんしょうしょうしょうしょうしょう

द्वान्त्वा स्तिः सुन्दिः हिन्दिन् निन्दिन् निन

हिन्न्'क्षेत्रायान्ति विक्रित्ति है क्षत्रायाने निवा क्षेत्रा निन्न् क्षेत्र विक्रित्ति है क्षत्र विक्षित्र क्षेत्र विक्षित्र विक्षित्र क्षेत्र विक्षित्र क्षेत्र विक्षित्र क्षेत्र विक्षित्र विक्षित्र क्षेत्र विक्षित्र क्षेत्र विक्षित्र क्षेत्र विक्षित्र विक्षित्र विक्षित्र क्षेत्र विक्षित्र क्षेत्र विक्षित्र विक्ष विक्षित्र विक्षित्र विक्षित्र विक्षित्र विक्षित्र विक्षित्र विक्ष विक्षित

वित्तिः स्वित्तिः स्वर्विययस्य स्वर्धिययः स्वर्धिः नित्ति स्वित्तिः स्वर्धिः स्वर्धिः स्वर्धिः स्वर्धिः स्वर्धिः स्वर्धिः स्वर्धः स्वर्वर्धः स्वर्धः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्यः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः स्वर्वः

ध्याप्रं व ह न उव की न ह व श्री में ति ति । वि श्री भे के ति न ति व श्री भे के ति भे के ति न ति व श्री भे के ति भे के ति भे के ति भी के ति भ

<u>| तुन्'ॡरे'ॡरायवर्ने'र्रान्त्र| | वृत्रंबर्धर्यस्प्रांस्</u> मङ्ग्रस्थेव। ।वन्'ने'यासव्'चावै'ङ्खव'यार्ट्धेय। ।ङ्गं'ग्रुवार्थेया गुर्श्राभुद्धम् हेर्द्राह्मर्य। । ह्यायदे ब्रुद्राध्य नदः हुम्य। [취' ग्रुवाग्रीम्ब्रिन्द्रव्युर्ग्यन्त्रा । तुग्ध्तेव्राप्यार्ग्यापरादेव। । न्तर्रत्त्र्त्वश्चर्यस्थळ्ट्रप्रास्या । वेशन्त्रस्या हिं बर्ह्मन्द्रिन्द्राध्या हेप्तर्व्वाध्यात्राचित्रपञ्चित्रवा *ଞ୍ଚିଶ*୍ୱର୍ପ୍ତର୍ମ୍ୟ ଓଟ୍ ଶ୍ରିଞ୍ଚ କ୍ୟା ନହିଁ ନ୍ୟା ପ୍ରକ୍ରମ ଅଟେ । नेदि" ळॅ'८्वे'प्रवेशवायवाद्यावरायाळेखातस्यात्रीवात्रुवापाया हेप्यईवा गुःषुः सुतिः ह्वंतानुः पत् व वारापायय। विनः वी युःपा द्रवयाय हवः विवस ૹૄૻૢૼૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૼૢૹૢઌૻ૽૱ૢૺૢૢૢૢૢૢૢૺ૾ૹૢૻઌૣઌ૾ૺૢ૽ૢૼઌૣઌ૽૽ૺઌ૽૱ૡૡૺઌૣૢૢૻૹઌઌ૽ૺૡૢ૾ઌ<u>ૺૢ</u> র্থবার্ম-মেণ্ডব্রা **Ĕ'スニが切こをが数してこるもといれてい** कैरातरुष कंपतिरुकाशुम्होपर्द्धन्।वसात्रन्तुंत्र्युंन्पन्। त्रु रा इयहाद में। इयह कें रायह महामहामहाद हा के हा क्षेत्र हो र र होंग ग्वेररेप्पर्धित्या हेर्परेप्रहेवरेपर क्विंग्रेप्पर क्विंग्रेप रेपान्ति देवाबी दुषा धरान् वीति तुवाकी न्मारात्म कु दु प्यान्य तिने गुवा ।"" क्षे<u>र हे तेर २ तर र दु सुर</u>ायाया हे पर्दु क् ग्रीका ग्रुट र का ग्रुट हे 'क्रें अ' ह्रण्यापञ्चर। श्रूपान्तेरर्न्रहराश्चित्रं दुर्ग हेर्ट्रायहेन्यस्य ৼ<u>৾</u>৻ৼয়য়ড়৾ঀৢ৾৽ঽৼ৾৾৾ৼৢয়ৢঢ়ৼয়য়ৢ৾য়৾৽ঢ়৾ৼঢ়৾৾৽ঢ়৾ঀঀৢ৾৾ড়৾ঀ৾৽য়য়ৢৼয়ঢ়ৼয়য়য়ৢৼ৾৻ৼঢ়৾৾৽ বাগুদ্রার্থা |

हेन्'गुन'दर्शयुद्य'सदी'न्'ग्न्'यळॅग्'ग्रुय। १ने'स'दर्श्यनेग्'

पदिन्द्र-पुः ह्रेन्य। ।देश्यन् र्यस्यान्द्रदेनयः ग्रुट्यं व्याप्ते म्बेराक्रेरपरिषेप्रस् । सि.श्चरायेर्द्रिप्यायारर्ट्ह्रम्या । <u>दे'लापक्केद्र'देशक्कॅराणरायाद्येंकार्य।</u> १८८७ सुराक्षुरक्कुरस् इसार्वेरायदे। । कुरायराङ्ग्रीसायदे बावदादर्वेदे छेवा। रत्यं विद्यान तुन्यं विदेश्य हिं स्वर्या । नियान हें राष्ट्रा या है त्या पहिं राष्ट्रा या **५कॅबर्बा ।**हॅबबर्ड्य'ञ्ज्य'यरत्र्वेग'यते'इत्यत्र्र्वेर'पर्ना इसऍग'्यनेन्यकुतम्प्रिन्द्री । त्रेर'बूर'ऍश'वेर'कुर'र्रें <u> </u> हेन्न | नेप्यरं पहुन्यनु प्यत्यत्मे व्यत्न | इसक्तेन क्र **भु**र-५र-वरे:इत्यतर्धेर-वरे| | व:क्रुन्:ळॅग:वेखन:२ेषवःगुद| | न्मॅशर्मे । बून्यन्ये स्रम्यये इत्यत् मुर्ये । वेष महारह्माया र्गिमनेह्मम्भग्रह्मरायन्त्री इत्रात्र्हेरपाहित् रत्ने हु गुर्था त्या त्या द्रां यळ र छे है। यत्या कु या की यह व पा दे प्रे गुर्य क्रेन'र्'र्षेग'सर'र्स्रेन'गड़ेर'रे'प्पर'द्युरा व'पञ्चत'सेर'र्से'रे'पविस *बश* ब्रुंद्रप्रदेशकागुर्द्रप्रवादायात्रुग्य द्वाप्य द्वाप्य द्वाप्य द्वाप्य द्वाप्य द्वाप्य द्वाप्य द्वाप्य द्वाप पर्युव्यक्कीः ब्रम्यव्या नेपन्या होन्पनः यो केंब्राख्या वर्ण्येव प्रवाहिन्पनः इयराग्रीय। राजीयरबारादेक्ष्यस्यायाय। ररायरराजीयाय वियानःविषाचित्रार्क्षन्। स्यान्ध्रत्रा स्यान्ध्रत्राक्षेत्राकुन्तिः **८५'विग'ऍ८'गै३'८५ग क्षे'यनेव'क्रेंश'नेग'ग**शु८रावशायगुर'८**ने'**

বৃত্ত্যুদ্ধার্থী |

द्भः न् ग्रॅं व ्यक्र्या या शुक्रात्म श्रुपका शुक्रा । ह्या या श्रुपका हिला म्बर-र्-प्रस्था । छिन्-प्रनेप्यर-प्रमेशम् हेन-क्रिश्यकुन्-स्वा । व्राप्ता कुर् सेवरा हेर्'या सुराय है। विश्वेय वा कव्य प्रार्क्ष प्राप्ता वा |ग्रुगरान्गरः साम्रिः हैन।यनः स्थर। । श्रेः हगः परः इस्निव्यान्दरत्। दिक्षेप्रद्राद्वीयत्यवेष्यररः स्वय। । ब्रॅंस्प्रम् प्रस्ति स्टिस्स्य दे। । अर्थे म्यं म्यं स्ट्रम् मृदिरे म्या अर त्र् | निष्मेष्र प्राप्त विषय स्थापन । वर्षे प्राप्त विषय स्थापन । वर्षे प्राप्त विषय स्थापन । वर्षे प्राप्त विषय स्थापन । (८५'८६'ने । व्यन्पंन्यांनिक्षेंन्य्युगंत्रा । नेक्षेंत्रप्न्योप्निः प्रमेशन्नः स्था । हः देनः शुन्न ग्राया शुक्षात्र स्था । इं स्या वियानते कुरान्यर यह। । ने खेल हान्ये न वे न वे सर राज्य । हु'खराकृत'अन्यासन्द्रित्ने। | वीन्न्यास्य हुन्यास्य वा नेषाप्तर्पत्रेपतियमेश्यर्पत्रंवरा । अद्भन्नेस्यर्पत्रं वार्ष् तरी । । यान्यका चर्य देशान्यकार हा । ने खे रहा ने बी न दे নৰ্বাংশ ব্যাস্থ্য বিষয় लगः इन्यते कॅरत्र प्रा | नेकेर द्रान्ने परियने वर्षा बॅं'नॅब्'क्केबाब्रुअर्जून'रूव्'त्री । ज्ञानक्केब्यव्ययदेषुव्ययंत्रा । नेक्षेप्रद्रान्वेनरिनवेक्षरम्रस्यवा । वृष्यवर्षे क्रेरञ्च छन्तरी । ८६ॅ१८४ विषयिष्यस्थात् । देखेष्ठ ५५ वेषद्र प्रेम्स्टरः इविवा विद्यायविद्यावद्यायाची विवादायहरायाक्ष्या

। देखे तर् प्रची निर्देश में अप्रमार्थे अप्रा R51 न्नेपदे:पनेसरम्रास्या | न्नेपदेनप्रायेन्पदे:क्रेसप्निन्ने। | इन वरावर्ग क्रें र वेद पार हा |दे लेप र द्र दे में परि य में र र र व्यापा यर संवयर मार्च वाया वाया है। । प्रवय में वा श्रुपाया मार्ग विष्या । न्ने'रानेशन्यम्'र्'इन्'राहे'राईन'याँबरानुस *ৰিঝ'*শৃত্যুদ্র'ঘ্রা न्यण्-हु-बेन्-पाः क्रेश्न्यन्ययायन्यः है। हे'पर्ड्व'याञ्चग'पर्वया য়য়৽য়৸ঢ়ৼ৾ঀয়ৢঀ৾৸য়ঀ৽য়য়৸য়৸ড়য়৸য়য়৸ড়য়৸৸য়ঀ विन्नी श्रु'च देवन व बारी प्रवाद के किया है। पर्व व किया के प्रवाद के किया के प्रवाद के किया के किया के किया के त्वत्यप्तरा न्वर्न्त्यान्वर्यम्यात्वरः केत्र्वयाप्यात्वया हॅग्रायमराधेन हे। हुग्रागुश्याय रॅप्यादीयेप्यन रखपानेयानुः スタイペックスト、おきなられ、ダイギー

वड्डे क्रिंस रस्य प्रत्य सहस्य प्रति क्रिंस

 ॐ'यह्री हेन्'कुंस्लानुंसेनयायर्खं'विनयांन्गं'तह्रायंत्रें राप्तां हेन्यह्रं नुंक्षिण्यान् यात्रनें स्वाद्यं कुंद्रन् न्वं न्वं स्वाद्यं न्वं स्वाद्यं न्यं याः प्रमान्याः प्रमान्यः प्रमान्याः प्रमान्यः प्रमान्याः प्रमा

ग्दराद्वां वर्षां वर्षां क्षा वर्षां के स्वर्षां वर्षां के स्वर्षां वर्षां के स्वर्षां वर्षां के स्वर्षां के स ଵୢୖ^୲ୖୖଽ୕୵୵୳ୖୢୠ୕ୡ୲ ୲*ଝୖ୲୵*ଽୄ୕ୠ୕୕ୠ୕୰୵ୄ୵୷ୢ୕ୠ୶୷ୄୖୠୄ୷ୖଽ୵୷ୢୖୠୡ୲ ୲ ग्वराद्रं सर्वर कुराक्चे भ्रे रे रदी । ग्वराक्च मग्दिर अत *তুমবা हैं ग्रा স্থ্রন' হগ্*। । শ্লম'ঙ্ব' মবার শ্ল' ভব'র্মন' হ'র নায়ী প্রী' ঽ৾৽য়৾৾৾য়ৢ৾৾য়ৢ৾৽ৢৢ৾৽য়৾ৼ৽ৼ৾য়ৢয়ঢ়৾৽য়৾৽য়৾৽য়৾৽য়৾য়ৢয় ग्वराह्मं वर्षर ठव जुला ग्रेश्वे दे तरी । इं वे वित् न् में व प्यता वायत ৻য়ৢ৾৻৻ৢ৻৻ৼৢঀয়য়ৼ৾৻ ৸য়৻৻ড়৾৾ঀ৻৸য়৻ঢ়য়৾৻ঽ৾ঀ৻য়৾ঢ়৾৻য়ৢ৻য়৾ঢ়৾৻ঽ৾৽ वार्चेत्। । हें तर्ने क्रॅंशन हरायें न्व क्रुवार्के क्रें ने वार्चेत्। । नवसा হ'বাৰ্চ্চমত্ব'জুমান্তী'ৰূ'ম্ব'মা | শী'ন্মান্তীৰ'ক্লমমাতৰ'মন্ব'মই'ল্ব' त्रिंदर्सेप्तत्वाचा ।देप्दर्स्सम्भूद्राकेर्यन् सम्भेदा । अत्रा <u> ह्व'लबरम् 'ठव'ल्र-'ब'क्यक्रीम्रे'ने 'याच्चेत्र</u> । हे'रन् में बापहर **অ**ন্'ৰ'কুমাক্টি'ষ্ট্'ই'মোৰ্ট্টৰা । শ্ৰৰাই'অভন'তৰ'কুমাক্টি'ষ্ট্'ই'বা । र्ह्मशङ्खित्र स्वत्र स्वत् अवन्त्र विश्व अत्याप्त विषया । ने प्रत्य क्षेत् त्रीया

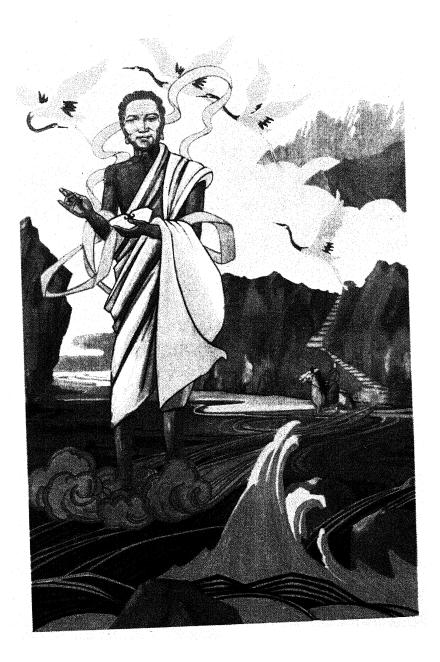
नदिः ईरार्बेट्र पित्। । ब्रायाध्य ५५५५ प्रायः वर्षे ५ त्या व्या वर्षे ५ त्या वर्षे ५ त्या वर्षे ५ त्या वर्षे ५ त्या ইব। । ऄ'प्रदे-'ইবামদমেন্'ব'কুমাঞ্চীপ্ন'মাইব। । ৰ বা म्बुट्बर्ध्या ह्य'न्धंब'ने'वेबर्हुर्न्'यरश्चर'व्या প্রবা मर्दयाद्वमसञ्चित्रम् स्वादयाद्वा विश्वश्चरातुः यहतातुः प्रेराचेरा स्टा विश्वित्राम्यः ह्रेन् केन्यं 'म्नेरेन 'स्य'न 'र्न मया क्रुस हे **口**'心刻 ळॅंअपॅग्'गे'च'य'होर। ग्वर'२ तुय'च'अर्दें न'द'वेग होर' दशयहया नु:हैन'हे। तनुत्राचा छून'चाने' र्हेन'त्रासुत्राचर्या हे'च ह्रन'त्रा ८ इंअ यह र द्या ८ मा प्रमान स्थाप में मा स्थाप में मा स्थाप में मा स्थाप में स्थाप में मा स्थाप में स्थाप में मा स्थाप में स्याप में स्थाप मे स्थाप में स्थाप में स्थाप में स्थाप में स्थाप में स्थाप में स्था **रायान्यदिन् मॅकाराक्षेन् ने। व्हिन्स्स् में नवार्यक्षेत्र महस्का** *चिंस्व*स्व अद्विव स्वा शत्या अन्य अन्य अन्य त्या त्र नुवा ऋया वासा स्यानसरेविनामवेदाने। यन्तिर्रात्रां प्रतानित्रम् ने श्रुताश्चित्र श्रुअकी हेन्'पदे'न्न्'प[™]न्नेप है। हुग्'हेर्द्रद्रद्रव्यप'स'न्नन्न्' क्षॅं य श्वेर्प्ता पा बेर्बा स्वापित स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स **凡自新なてがけているになられが新さぎ」**

৴য়৾৸৾ঀ৾৾৾ঀ৾৾ঀ৾ঀ৾ঀ৾৾ঀ৾য়ৢ৾৴৻

ঀ৾য়৾ঀৢ৾৻ঽ৷ য়য়৸য়ৢ৾ৼঢ়৸ৼয়ৢঀ৾ৼঢ়ঽ৾য়৾য়য়য়য়য়ৼঢ়৾৽ৡঢ়৷ ঢ়য়ৼৡ৾৽ঽ৾৻ড়ৢ৾৽ড়ৢঀয়য়ৢ৽৸ৠয়য়য়য়য়ৼৢ৾ঀ৽৸ঽয়য়য়য়ঀ৽ঽ৽য়৷ ৡ৽

≍ॱक्रॅबराचराग्रीक्यतुःयार्चेदादगा भ्रेग'सन्हेंन्'न्'ग्**ने**बरायदे मदारात्रास्त्रत् । तुन् खेन् कृं पर्यात्रास क्षेत्रायान्त क्षात्रास्त्रा स्वीता खेन्। दाविनानिकाहोतुः इतः नाविवातुः व्यंत्रेः शुः दश्यविवादिनः वया **रक्षप**ष्टिंन्'अक्ट्रैन्'र्स्यपायज्ञन्'ॲन्'पायकष्टिष्'तर्नेरःन्यन् पःभेन्''''' मस्तर्ने (यद्विन देग) ने र व स्वी सून पर र रूप में स्त्र न マスラ **Ӗ**वॱराश्वेर-प्र-प्रदाचकुन्दिर्चायय। दे-देर-पीके-अवायश्यप्-**प**क्षेत्र, ज्ञा, विका, प्रमान क्षेत्र, प्रमान क्षेत्र, प्रमान क्षेत्र, प्रमान क्षेत्र, प्रमान क्षेत्र, प्रमान क ने'स'नेबाधर सब न्न्न्यान्म्यान्म्राच्यान्यान्यान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्र बैग्'न्ह्यत्वस्यश्चित्'ग्रस्ट्रव्येग्'ग्नेअसदस्यह्यस्यस्य <u> ब्रि</u>तुःक्करःगहिन्तुःहःरिव्ययःहिन्यान्ध्यः वर्षा まべんガベヤ ब्रॅन्'नेर'वृत्य**द्वा**ई'क्केन्'नेर'न्नन्। नेरहेपईव'ग्रीशर्षव'ग्राण ब्रिन्यन-नुरस्क्री विश्वन्यस्य। ॉ व रे कु भाषी र वें व व कार्ने र रे ' विन्यू स्टब्स्य होता । दे व दाया र हिंद स्टब्स्य क्रिया के स्टब्स्य के स्टब्स के स्टब्स्य के स र्देन'यन्य'से ह' ज्ञय**ःतुःय ज्ञुन**्र्मेश्य <mark>युव्यस्य या</mark> できたがします <u> इ</u>ब्बल्यः क्षेत्रं क्षेत्रं क्षेत्रं वाद्य देश्य क्षेत्रं क्षेत्रं क्षेत्रं क्षेत्रं क्षेत्रं क्षेत्रं क्षेत्र *ॼॣॸॱ*ढ़ज़ॕॱऄ*ॸढ़ॺॾॎ॓*ॻढ़ॖ॔ढ़ॱॴऄ॒**ॸॱढ़ॱज़ॸॱख़ढ़ॸॕॸॱ**य़ड़ख़ॕढ़ॱॴऄ॔ॸॱऄॗॸॄॗॗ देरहेराईन्'ग्रै**यवॅस्यगुरुह्न'वदेरहस्यहर्ड्र्स्डेस्ट्रिस्**कुर्स्यहर्**न्य** हुंब्रप्य। क्ष्यकुर्यस्क्रियं ब्रज्यस्यायं ने वे व्यवस्थायं

ष्पर'धे'वेग'रेग'ग्रेगयायायायं'र'र'रे'र्य्यायार्यराप्त'न्'न्यं राख्ये'र्वे न्न भु भ्रत्य म्रत्य दें द भिर्म न्य दें न भ्रत्य भ्राम न मुल्य म्राम न मुल्य म्राम न म्राम न म्राम म्राम न म्राम ङ्खंत्रां वे त्रिन्यर ह्रें वृत्या मुने मृष्याया वर्षे नः प्राप्ता नः तुन्ये नः व्यक्ते वा व्यन्तंभेग्'त्व्रियानाभेव्'व्य। विनःश्वेन्'व्याङ्क'याभेत्तेन्नाभेव्' क्रुवा'व्याद्ध'त्र'मीर'द्वेव'य'८८'। न्ना'वा'देर'यतुष्वय'८८'नुवा न्ना नेर्निन्न्पंत्र्र्यात्र्र्यावेषाक्षेत्राहे। ह्रावाशुनार्वेनातुत्वा वस्त्रभ्वाच्याः वस्त्रभ्यः वस्त्रभ्यः वस्त्रभ्यः वस्त्रभ्यः वस्त्रभ्यः वस्त्रभ्यः वस्त्रभ्यः वस्त्रभ्यः वस्त्रभ श्चीत्र हिर्या अंश गुर्या द्वा में 'श्रेश्वर वास यात विद्या । स्थ वित्रध्यसर्धिन्द्रदे न्न्रायम्य। श्रुयम् केर्द्रम्न्राय्येय। श्रुय देहि अत्र द्वापायवा न्यं न्यं ने यान्यं प्रमास्य विषय विषय हि क्षुंतुःचित्रेय। न्य्राच्येष्पान्य्यार्धेय। न्युत्यादेषान्तुःष् नेरव्या शुम्बद्धवार्थित्युक्षावियाः दुःत्रद्भैराग्नुरायाः हेः यर्ड्वाग्नुरा विदेखियातव्यग्रम्द्रियश्चरया।



প্রথা । বিন্দু নুর্বানকা ক্রিকামা মন্ত্রিব বাব মন্ত্র। । ব্রদ্বান মন্ত্র हे गुजु यहा छुटा था । इग ह गुहा गुहार गुहार गुहार गुहार । ॉिन चुन तर्भन्' छे' छन्। 'न वेरा वादर 'न 'पन । । वे किंने रार्चे 'तर्न न रा खुर'ञ'^{क्र}र्| |हे'दू'र्स'र्न्-'ञे'द्रैशच्चैन'नक्रनशप। ्।तेमश^{क्र}य *উ*न्'अ'न्न'^ৼ৾৾ৡॅन'ॐन'। ।এ*মাই ব*'রঐঝ'ग्वन्'तु'नहुन्प'ঈग्। ङ्गः इराष्ट्रिरः क्रीः ग्वरः व्वापत् व्याप्तः स्वरः । । सः व्याप्तः द्वरः क्षवः याः क्वरः व्या দ্রবা বিহুর প্রধান প্রমান ক্রিয়া বিহার বিহার श्चन'ने'श्चन'यर हैव। । वित्रायमें नाविरे सेंन्'त्रायून'नात शुरः। । दिन:ळे:रनवाग्री:ब्रायाभैव:पर:देव। |हे:तश्चरशी:देंखेन:क्रुं:ब्रग्:य। **।** मन्द्रित्रव्यक्तिस्वर्ष्याः । द्रस्तर्भन्तेन्तित्वयम्यन्त्वाय बेर्। । धुरुर्ग्य नी विचर्ल हेंग्'हुल हुल हुन्य ज्ञा । कुर् यस्य वें <u> দ্রীঝ'ম'ৼ৾'ৼे'র্রঝা । দ্রদ'ম শত্রু 'ইর্ম'র মঝ'নেঝ'নেঝা । ট্রিক'</u> क्षित्रयारुव्यक्तिं पर्ने (अर्क्ष्यापा) । श्रीवास्यान्यन्यविहेष्ययायरह्मा । <u>इश्विय। श्रेक्षः यद्भ्यम् श्रीय। । द्वः यश्वाः य्रथयश्रीद्धः यह्नः। ।</u> नवि'र्ह्स है न ब्रिस न न स्वराप्त र हिंगला । श्रिस है न च हुन की छ र से स्वरा यविषा । गन्यसम्य के न् गुः श्चराय हु स्वरा । गवन वा न्या न्या हुन्भेवराष्ठ्रियानन्द्रम् इति । । निन्देश्चरवरायानिः इता तर्चे राया । वरातर् पांच्यायिष्य श्वार्य । विष्य व्याप्य । विषय । वि पांकु'स' कुरा'न बेन्। शिंकुंन्'स' कुर्यस्यन्'युर्यः पांर्डवा।

न्वंद'राकुर्याकुरे वे 'से प्रेदा। । प्रतिवादान स्वाद्यं से प्रियः विद्यं कुर्या से प्रियः विद्यं कुर्यं से प्रियः विद्यं कुर्या से प्रियः विद्यं कुर्या से प्रयोग से प्रियः विद्यं कुर्यं से प्रयोग से प्रयोग

यद्धरयवर्षर्वत्युवर्षवर्षेत्र । विषयत्त्रप्रे के तुःवेग । वश्यह्यः चर्रम् ग्रस्यते स्या जुर्भम् । मह्यूरः इंशयर्प्प्यप्रिक्ष्यासुर्वे**ग** । सर्वन्यप्प्यप्रेत्र्वंस्प्रेतुःसर्वेगः। । स्पार देख: केबा देख: विष्य । विषय: क्षा हिला है । विषय है । नहुव्यम् नेतुःदेशनेतुः अदेशः । । सन्दे 'चेत्युं न्' कुनः नेत्युं न्' व। । हेर्डम्बर्श्वराहियाने पर्वेत्परप्वेत। । इ.र्रेयापर्वेत् न्निग्यं स्वा । वर्षा संदेश निवेर विकास ने स्वाप र्ह*ेन्द्रश्चन*कुष्यम् । ५ म्यत्रह्मप्यत्रिक्षन्यम् । ५ पर्वच्यं ने प्राप्त श्रीक्ष माप्त स्त्र । । अर्दे अर ६ वर्ष श्रीक्ष श्री वर्ष पश्चिषा । मॅन्डोन्प्रवेन्प्नयन्थं पॅन्यर्ग्ना । मॅल्बेयरा तह्मिक्रिश्चायम्भा । मृष्ण्यायस्तर्ह्यक्रिश्चेत्तह्यायास्त्। । तत्रवे त्रांत्य्य रकेव् प्रतात्र्य । श्रुवा श्रुवा स्वावा विद्यापा व सुरा है। । इं'इग्'न्ग्रयंदीयगदन्दन्द्व। । विन्दन्यं प्र'देनः छैन्। प्रिक्तं । क्रिक्तं व्यक्ष्या । विद्यत् व्यक्ष्या । विद्यत् व्यक्ष्या । विद्यत् व्यक्ष्या । विद्यत् व्यक्षया । विद्यत् विद

सुध्रव पर्वा त्व विवा हुरा वे वार्मा । पर इया ने बाहुरा वी श्चार्थः वायान् सुन्तान् । त्रार्थः वायान् स्वाप्तान्तिः स्वाप्तान्तिः स्वाप्तान्तिः स्वाप्तान्तिः स्वाप्तान्ति महेर्द्रभग्रायान्त्रुवाक्षेत्रं भिरायवद्। । क्वानिशयव्यत्रामी मॅंन बेन पर्वे । ब्रॅग स्था हुन वेश्रायम्या । तयः इ से गाहुवा ষ্ট্রীর্বের্ল্যান্তর্ |ব্দেন্ট্রিলান্ত্রন্থান্তীরের্দ্রমান্ত্র্বা | त्रह्मत्रित्र्युष्यं श्रीः [न पश्चरहे। विश्वष्यं स्वे विश्वप्यं श्रीः स्व विश्वप्यं स्व विश्वप्यं स्व विश्वप्य न्ना (स'न्तु'अदे'चन'ल'न्युक्ष'र्वेग'रून्। (ने'क्ल'दर्वेरन् धिर्देग् ह 'सम्बा । विषय 'दिन्दे र प्रियम दि । प्रकेश्य न् उत्रह्म कुम्राया राष्ट्रीय। । विद्वित् कुरियाया दावी यह । नेप्रविद्युक्तरम्परम् वर्षे वर्षा । वेवाहेपर्द्व ग्रीयने स्राप्ति वर्ष मन्त्रं यन्त्रित्रवर्यम्यक्वेत्रव्यत्त्रव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्य नमास्यादनै विविद्धेरें मास्यावता कुःस्यादि मार्थेन् मार्थेन् माने स्तित्व शत्रे निष्य र स्वरंगा।

हे'शुन'हनकुंद्रस्पर्धे स्टेन्संको । छिन्ध्ययस्विन्धस्य बळ्ळरायबा । जुना विश्वरार्धे प्राची निर्मेश या या । वर्षे वापा ब्रह्माबारा है। । मुह्मार है। । मुह्मार है राजा वित्राया मु≡व। । विन्हाहेन्य रामनेगवायार्दे प्रकृतायव। | क्वांस्ट्रवाहे 'धी हे 'ह्वन'ठद। २ेद'चर'ठद'ग्रे'चर'सुर्'ग्रेय। । ह्युद'ष्ट्रर'वहेंय'पदेसुर्'रेय'र्र'। । रग्रात्रत्त्रम्ष्रीराण्चेरयर्गेपात्रा । ह्युप्रम्भः क्ष्र्राष्ट्रीयुराष्ट्रेत्रप्रा । ऍअ८५५५वेद्राचेश्चर्भाविया । यञ्चार्यमार्थाचेयायस्ययाञ्चरहे। । तमरायान्स्रिया । तर्ने हितु छूर र पि में क श्रिया । हे पर्दुन क्रीं विचयायायने वर्षायाया । श्री चन्वाया सुवाया हेवा व सुनः नुप्ताया । *बिरालु 'र्ने द' दे 'सुरा सुरा' पांसरा | हैं 'पर्यु द' ग्री राया प्रवेश है | हिंनु*' য়ৢ৾*ঀ৾৸য়৽ৠঀ*৽ঀ৾৾*ঀৠয়৽ৼৼৼ৸৸ঽ*ঀ৾৽ৠয়ৢ৽য়৾ঀ৾ৼ৾য়ঢ়৾৾য়৾ঀ৾৽ঀৢ৽৸ঀ৽য়৾৾য়ৢৼৼৢ৽৽ गुरुद्धारा।

म्या विषयत्र्राक्ष्यां स्वार्थियात्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्याः स्वार्थियात्रात्र्यात्रत्यात्रत्यात्रत्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्रत्यात्रत्यात्रत्यात्रत्यात्रत्यात्रत्यात्रत्यात्रत्यात्रत्यात्रत्यात्रत्यात्रत्यात्रत्यात्यात्रत्यात्रत्यात्यात्रत्यात्रत्यात्यात्रत्यात्रत्यात्यात्यात्रत्यात्यात्यात्यात्रत्यात्रत्य

हेश्वराविष्णिश्चार्थरत्वा | वित्राविष्ण्याप्ति | व

शेष्यम्यात्रात्र्द्रेद्र्ष्यञ्चाष्यम् । विद्याम्ब्रियायायहा हेष्यद्धद्वाचिद्ययायविद्यहे। हिन्द्येन्यस्कृष्यायदेगोदुःहेष्ट्यस्य सन्देशिव्यावद्यम्

तुःष्ठेतुःक्रनःकृष्यन्नः क्षेप्यनेति। । श्चिरःन्ययातुग्विरः नदिः র্মুল্ট্রস্ত্রা । শব্দর্শগ্রন্থীর্লেন্স্রিল্র্র্বা । দেস্কে য়৾৽ঀয়৽ঢ়ৼৼ৾৾ঀ৾৽ৼ৾৾ৼৼ৾৾য়ৼ৾য়ৢঀ৻৸৸য়ৼ৾ঢ়৽য়ৼঢ়ঀ৸৸৸ रःष्वुव्यायतेःष्वृत्र्यायञ्जेषाः ग्रुप्तः देवा । श्रुं द्याप्याप्त्राप्तः विः য়ৢ৾ব'ঙ্ক'ম। । দ্রাস্কল'র্ইর'ঘর্ম'দ্রম'দ্রাম্দ্রামা । দ্র'ঘ'ন্নর नवित्रक्षे नर्ने नं सद्भवा | न्दीनस द्वार में राष्ट्र स्वर्थ स्वर्थ होराष्ट्र मा । ग्वन् प्रश्ले प्राम् श्वराष्ट्री त्राम् स्त्राम् स्त्राम ग्रायाकी न्स्रावित्राया । न्यापाञ्च खराजीयाय क्यायाञ्च प्रावित्राया पर'र्ने'सें ब्रॅन'क्रीक्र'ण'पहरा | ने'क्रव'तर्क्वेरन'भे' नेतुः हे'भेव। । बिद्धंत्रित्वराष्ट्रराज्ञेतर्नेत्। ।तुःषव्यत्पत्ग्क्चेत्नेत्रे यदेर प्रति । देशमञ्जूरयायया धराष्ट्रेतुःकुरामीयातुषाया हेः मर्द्धवः समाय। गृद्धः दे विद्यादः यम् व प्यम् दः यम् प्रम्यः यम् व <u>नेतुः हेतैः भ्रेतः वर्षः वर्षः ते सुवाः सनैः हैवाग्रतः सविवाधस्तुः वेवाव्यं वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः व</u> 75771

শ্বা ভাষ্টভাষ্ট্রামার্কর ব্রুবামার বিশ্ব । ব্রুমার্কর ব্রুবামার বর্ষ বর্ষ বামার বিশ্ব । ব্রুমার বর্ষ বর্ষ বামার বর্ম বামার বর্ষ বামার বর্ম বামার বামার বর্ম বামার বর্ম বামার বা

हिन्यहेन्छिक्यम्बन्धन्द्रिन् | निययद्रव्यन्त्रम्

चल्ता । रेक्षण्यस्याया यत्षित्ःस्तान्तिः वृत्तं स्वायाया हेन्द्रं त्रायाया छित् द्रायायतः श्री चित्रं त्यायाः वित्तं त्याः श्री त्यायायाः वित्तं त्याः श्री त्यायाः वित्तं त्यायाः श्री वित्रं त्यायाः वित्तं त्यायाः श्री वित्रं त्यायाः वित्तं वित्तं

मुन्यः प्रवेशः व्यक्तं विद्यान्यः विद्याः विद

द्विः मृत्रायां मृत् चार्माले वा मृत्रायां म

तुः वं नित्रा के वं के मान्या देव कर्षा । श्री राक्क ता विवस्य प्रस्ता स्थाविसंबद राष्ट्री विवास प्रेंग व्यापा न्ता । । यस सम्बेदा वी वें स्था कॅन्'नेराबेर्। । वॅरावर्गन्यनेराखराप्यवॅराउं व। । हिर् हुन'रॅदि'र्देरतार्ट्सदानुःवेत्। ।त्रक्रन्नेन्ननुत्रार्द्धदेर्त्नेर्यस्तित्व। । *ॠव*ॱपञ्चन'ग्रीदॅरसु'नेव'र्घ'के| | वृत्रवाशुक्रेन'पदे:स्र'पमॅन्'ने| | इब्रप्रविदेविद्यात्री विद्यात्री विद्याप्ति हिन्द्रात्री विद्यात्री विद्याप्ति हिन्द्रात्री विद्यापति हिन्द्रात्री हिन्द्री हिन्द्रात्री हिन्द्रात्री हिन्द्रात्री हि पक्षण | रोबरादेग'राष्ट्रेदु:इट्गीकुद'र्नु'यहेरा | विद्विट्'कुन्ने' न्यंन् वे तर्देत्। । त् हिन्ने क्षेत्ने ने त्रा त् त्वा । तर्दुन्गुरुव्यम् रने स्निन् वृद्धन्य यः नृतः । यन् विते प्रवयः यः या हेप्तर्दुवाञ्चयाञ्च^पर*ेशम*्चेग् ठव्पु पश्चित्रयाज्ञ वाद्यवाद्य वाद्ययाज्ञ तर्मे प्राया भैव'वयक्रयवर्ष। क्रेसर्'न्यमाष्ट्रिन्'क्रु'यदीर्वे न्याकी गृथे व् **यम्भार्भिकात्राह्म विकास क्षेत्र विकास कर्म विकास कर्म विकास कर्म विकास कर्म विकास कर्म विकास कर्म विकास कर्म** श्रुत्वा है। अँग्'ग्रॅन्'राश्चरवा व वार्ष्या पायेव पावा हैवा ग्रुन् पाया

देव्योश्यान्द्वतायर्त्वात्र संस्थित्यात्र्वेत्रात्र्व्यात्त्र्यत्यात् व्यात्यात् व्यात्यात् व्यात्यात् व्यात्य त्रुत्यस्यायः

र्दे व क्रियाय है गृह गृहा है । प्राप्त है व । प्राप्त है व । स्वार्थ व । स्वार्थ व । स्वार्थ व । स्वार्थ व । द्याच्या । निया न करान्य स्थापन । सम्बद्धान । न प्रवाहिन । र्नेत्राह्यार्थे अक्षेप्तेया । नेप्त्रणास्य वात्रात्येय स्थित । । वाय्य वा ब्रिवाशुवकात हंटा इद वैवा है 'रैका | निवह वा न व व की भुत মাধীব। | নথামদা অই মিন মীবাহনমাতব। | বি ন্যাঞ্বান্তব श्चित्रिंत्रस्थित्। ।म्'सर्ने'हुण्क्षेन्'सप्तृग्वार्चग्र् ।कृत्रस्यवारा हग्यास्याप्त हा | स्टान्याप्रेयाय स्टान्यां केटा तर्रा । तर्देट है[।]वेंन|न्मपप'प'ह्ं'य'८वें| |५'५े'है*×*ावश्रवश्रदेर'८कुँ५'पाक्रेब|| <u> ५'ख़्रञ्जर्भीलबलतभ्रें५'हरबानधीन्। १५बान्'रेबात्विरग्रुस</u> होन्यतस्य । न्रहेब्क्न्यन्यायस्य मामराष्ट्रिक्येव। हिःगर म्रेष्याद्वम्द्वराच्यात्र्वारायात्र्वः । नेः स्रान्तुः म्रेष्याद्यायाया त्रिं र ग्रु अक्रीत्र त्रायापर र वे तर्रा हिन् की ने प्रश्नापर देश कवार्र्र्र्प्रवाहुर्व्यव्याविते व्यायव्यमुर पुग्यहुर्व्यया तुःगुन्यान्येन्द्र्राकुरान्या । ध्यायेन् ह्रेन्य ह्यायाने स वातरवा । नृषापुना खरी हना सवस्य मा कुना छेन। । नुबान नेवा तसवा कुत्रवा प्रदेशका । हिवादर वेद् किपर रह्द विदाप द्रा

इम्प्रिस्वाचीन्'नम्'ग्राया'ग्रीग्'सुमर्श्यत्। विशासमाचेव्'मॅरीः रत्यं त्रीप्तर्। । तथा त्रर्भत्र त्रुण्या र्याप्यं रत्यात्रण्या । द्रेतः हृ ग्राधं व रह व की सेव रह न स्वा | ने श्री व राज्य व न में श्री व राज्य व न में श्री व न में श्री व न में श्री **१** व के के ते ते के त है। विन्'वेन्'यि यन्दर्वस्य । न्यु'नुग्'स्रेरेग्युतः ह्मित्र्र्वेष्याः स्टर्मा । सम्बद्धिन्यं क्रियाः क्रियाः क्रियाः क्रिया नै'इत्यत र्हें रर्र थे र्ग्याचनरा धेवा वि'हिं र्गी द्वा करार वे तर्र् । हु'ॲब'यन्ग्'क्रीन्'नें'ब्रिअ'नु'यलुन्।। केशहें'यर्द्धन्'ग्रीश्रथ्गुरन्ने भ्रद्गार्श्वरत्यायात्रया स्टाहित्रह्यायीत्रात्राया राभगवा हिन्दिरंग्ह्ययंशे प्रतेष्यं भूमा प्रमाद देव विगारी **৪** নের মনমান্ত্র বিশ্বর প্রামান কর্মান কর্ क्ष्यात्राच्या स्वाराहेरान्त्रात्रस्थात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रात्रा हें बुला भुग्ग राज १८८ इसाल हो राय। । इसाय हो वापायर परा श्चित्र'रित्। श्चित्र'ह् गृश्चित्र'रा'यक्क'ल'र्यात्र । संश्चित्र'र्रे रक्षपञ्चालन्या ।क्रॅब्रायहिब्रान्तुः क्रॅनायम्ब्राधीतु। हिन् नगत्याञ्चन्यतेत्रार्हश्या । नःउन्त्रेन्ष्र्न्यन्तुः सन्। । নমাধ্যমার্থনার্থী ব্লিক্ষা । ক্তুমিকান্ত্রী বাণ্ডী শানতব। । ইবি মি ব্লি **इ**दै रेन अर्गे । सुनरा क्ष प्राय प्राय प्राय स्था । खनः अर्ने अरः क्ष्ण अर्थे कृष्म मण्ना । त्राम्य प्रमासे रक्षे कृष्म स्वा प्रवेश विन्त्यांन्यात्वीत्यायहेला वित्रम्प्रवेता

तुः हुना न् र में बेद र हुं र हुं द दिना । द न द हिन र ही अ ध दे रोट'स्डर'य। । यस्त्र'यतुन्'से'सु'सुदीरे'सॅ'स'**पॅन्। ।** ने'सेब'के**न** ঀয়ৼৠৢ৾ঀয়য়৸ঀয়৸। ৠৢ৾৾৾ঀ৾৸৸৸ৼয়য়৻য়ৢ৻ঽৼ৻য়৻য়ৢঀ ग्यं बेन् इन् वेंदे नेन् अन्याय। । ग्वेंदिन्द्व इन् वेंदे रह्य सम परेट्या |सेवयार्चेयार्चेग्'वेर्'परें सुरेख'पन्न | विश्वप्रवाह्नेस घॅरि:ब्रे:खेप'या । *वृश्चयान्*नेन:ळन्'ब्राह्मकुक्किक्षसुन्नक्रह्म । खनः न्न्'रा'ङ्गबा'कुन्'सन्'न्न'। । नहें न्त्युक्षन्वे राक्के हन् सन् [श्रुरःक्रंश्यांन् प्राप्ताराश्चित्रः विष्ट्रा विष्ट्रः विष्ट्रा विष्ट्रः **ढन्'मबारहेग्बारहेग्बाव्या | वृत्याम्'बॅन्धेनकॅबाबानवॅन्या |** ५'यम्लु'हे व्यवेव्यवेष्य ह्या । तुःह्वेदुः द्वम हियानुः विवासन्ति । देशहे पर्दुव गुरुष देशम् । यह विद्याप । यह विद्यु स्व विद्यु स्व हे[,]पर्जुब्दस्यतर्भे रपाष्ट्रिन्'नन्'नेन्'ने,'ब्रपशर् प्राप्तन्'यन्'ने प्रवेशन्''' **धर**'न्बॅब्'स'न्नेब्'स'विषा'त खत्र'नका ने र'ग्न्ब्'ध राव्यापतु ग्वाधर' लु'त कंतावेशलु'ने वृञ्च रासुतापा।

हेर्जुन्धते इसार्के रामहतालुगुरा ठवा छिन् वर्षे रावेन विवास स्याप्तिक्षेत्। |स्यायायस्याप्तस्याप्तिः मञ्जूताः प्रायायायस्याप्तिः स्या बेन्दिक्षेषुवान्त्र्रम् । भुक्षेन्द्रण्ये वें व्यापंक्र्न्वे या **न्य**िष्डिग्राः **न्यत्वप्रया**र्यस्याः । न्य्येन्यः सन् मस्ययश्चरात्रेन्या । ८८ हिर र्नापिताताया । दूर न्ययय विः त्रिक्षां म्राया । वाः स्वाः विता विता । दिः कुवायस्यः क्रियाम्बर्धिया । कृत्यां अक्ति विद्यास्य प्रमान्। । है वि पर्वत्य र्दित्वराष्ट्रीयापञ्चर। । गृतेदार्दा विरामापर पान । स्प्रचित्वस्ति हे ब्रच्च ब्रच्चे क्रांयहिया । नित्ति हे न्या द्रवया स्था मति हेव। । सन्दे पर्वदाशी ग्राप्त पर सम्राप्त गरिया । हिण्य सन्दर्भात्राम्यान्ववायान्तु । विकानु न्यास्याया हे पर्वुवा मुकाया सबे वरहे। ग्री मन्य सुराम सुराम सिन्य राम की स्री बह्रवात हुण के के करा दार के नेवा नेवा नेवा नेवा नेवा कर है के वा का कर कर के का कर कर के का कर कर कर कर कर कर वया मिते वयाय दायगुर पु गहर या।

द्रंत्रश्चाम्यत्व्यश्चित्रव्यः । विद्रंत्रिण्याम्यव्यः । विद्रंत्रश्चाम्यत्वयः । विद्रंत्रश्चाम्यत्वयः । विद्रंत्रश्चाम्यव्यः । विद्रंत्रश्चेत्रश्चेत्रव्यः । विद्रंत्रश्चेत्रव्यः । विद्रंत्रव्यः । विद्रंत्यः विद्रव्यः । विद्रंत्रव्यः । विद्रंत्रव्यः । विद्रंत्रव्यः । विद्रंत्रव्यः । विद्रंत्रव्यः । विद्रंत्रवे । वि

इंग्लर्के हिते हुं अर्पन्त । किंग्ल्याई र छि स्वाविता । इग्लर्म् हिता है प्राप्त स्वाविता । क्रिया पर्त स्वाविता । प्राप्त स्वाविता स्वाव

ब्रह्मान्यस्य । विवान्त्रस्य विवास्य विवास विवा

स्वायान्यवायहर्षाकी कुर्। श्रियायर हिन् वेद स्वाया यदि 51 रास्वर्धरायमा । ब्रिन् क्रेन्सं यान् दे क्रेन्स्य स्वर्धा । यान् ने ही रा ष्ठ्रणक्षं प्रमेन्द्रपरान्नात। | नःस्नायाञ्चलाक्ष्रन्पतिः सुन् सेन्ता । स्वांगिक्ता । क्रांकें ग्रान्ग्रान्यस्तेतुः स्वीः । । गृत्रेक्षावेत्ः ষ্ট্রণ'র্ব'ন্মন্ত্রীরাল্মল্যা |ম'র্ক্ট্ররাস্ট্রব্'নরি'ল'ব্দ'ভর| | <u> वृत्रकार् गृत्यायितेतित्व वार्ष्यस्य। । तुःवार्यः गृहेग् र्देप्ययः वत् । । </u> महो गृतुग् सरी में बाहू गृथाय संराह्मग् स्व। । ने इसार र्रे रामा स्व শুঁগুঅর্মাণীর। ।ট্রিন্'নেমিন্সনিই ট্রিমান্সনান রীনেইন্। |শ্ৰ মন্যাদেশ্ট্রিয়ানু'মাঁযা'মান্তুন্। ইকাৰ্য্যনেষাব্ৰা ইংনর্ভ্র स्याविकारायया यम्विकाया हे यर्ड्याय ग्रा हिन् हें ग्रा **रा**'ठव्'क्के' मृत्'त्वग्'त्थ'र्दे'ळं'चत्रे'ह्रवः'यर हेंग्'रा'ठे'वर्रार**्व'**णर्'। 25'

तहेग् हे ब्राया अर्थाया क्षेष्य प्रस्ति स्थात दे स्था स्थात दे स्

हे इंग्नर्य से द्यं देश हो देश । । यह साल ग्रा हुन् या से प्रेराव्याव्या । यद्वार्ष्ट्राच्या प्रेरा त्रुवाचाद्राद्रावेषायादेष। । १३ अन्य वर्षा अन्य । देन्'त्रहेग्'हेर्'रा'द्रवर्षाद्रं संराहेन्। । हुग्रान्त्रं न्यारा वर्षे हेश्यान्य कुरागुर्। ।तस्यायस्रिक्ष्रिर्देष्ट्रान्द्रातस्यवा । पर्या हितु छून में द्राप दे में राया दे । । हु न्या पार में खुन ने नया दह्याया । वार्श्वराष्ट्रविषाण्डियानुवार्तुत्तरवा । अवत्रवायस्य विषयवायान्यन् ন্ত্ৰৰা ট্ৰিন্তৰ জ্বান্ত ক্ৰিলাৰ প্ৰায়ে নকৰ্মা দ্ৰিন্ত নুৰুষ্ট্ৰৰ नर्भे में मुर्या | देन् 'दहेग्' हे ब्र' संभी में करि में बा | ब्र' मनद सुन कुरादरीद्वतायव। । शिदर्ग्नावादायविवासम्ब 15 भ्रन्तु 'र्न्द्र ग्रॅंब'प्याया । हेपर्ड्द'क्कें व्याद्या सुहिन्'के**य** र्सं कंपान्ति केपिरि देश्वम् केपी निकाष्ट्रम् स्वर्गाराय ब्रिन्'यबन्'ग्न'तुः क्रेन्'ने न्न्'यं अति।वन्य स्याप्यन्यं अत्राप्यन्यं स्य तुर्द्रश मधारकेकेष्पर्रेग्पान्देरतुर्वेद्वराद्यांपिता न्'क्ष्णन्'वरुषावर्ष्ठ्राक्षेत्रेनु'क्कुन्'ब्रायर्न्स्रित्ने क्षूर्राहरू वर्षेत्र बदिन्दिं कं त्राबी के या ने प्रशासुन मा हु प्रति के विषय गा हु त्रा विषय মিনিপ্ৰকামৰ অসু শত্ৰণী গ্ৰদ্ধানা

हिंद्र हिंदु कर हे दाया । हिंद्र स्था संस्थित हिंद्र ।

| यर् बायरि में कं म् बा के ने बा तर्ने दे 'रूर्' हुर 'र्घ' ह प्रश्लेष E.क्.य. क्ष्यापाष्ट्रीर. धु.पड्रा | ८ ४ क्ट्रीर. क्री. ८ ८ . यहा हो । ତ୍ର' ପ୍ରମ'ଞ୍ଚିପ'ରିଶ୍ୟ'ନ୍ତି'ପ୍ୟ'ନ୍ୟୋମ୍ବା । ব্লীব্'থঅ' দ্মদ' দ্বীন্'ৰুগ'ৰু ষ' | ज्ञांतात्वा हेट्र तहें व श्री ह गरा हा प्र न गरा। ষ্ট্রধ্যমন্ত্রীপ্রহাণ বদুন। । ব্রহাণ বিহান প্রান্ত্রী নির্মা ब्रिक्ट वर्षे देन स्वतः स्व बॅ्बा । ब्रिक्ट्रिन् क्रुन्डन् कुन्न् न् बेरिन्द्र्न्। । ऍन्ड्रन्न् न्यान्यः स्टिब्रान् ऍन्या म्बर्। । देसर्भ्नर्भागुस्यायम। हितुःहर्नेममञ्जयास क्के अत्युक्ते व्याप्ति विचयः कृषा मानः स्वतायमः की मावे यामान्यतुषाः माया ष्रम्भेष्याप्रस्तुष्यास्त्राच्यास्त्राच्यास्त्राच्यास्त्राच्यास्त्राच्यास्त्राच्या न्मॅलक्ष्यात्रवा हे मर्जुवन्त्यामायाचा हिन्वन्या हेपान्त मञ्जेषामगुरम्रायानकेमवेषावतन। न्यूयायातन्वपरायात्र्र्विष यन्नात्मकी न्यान्यमः केराकुमः न्युमः तक्रयः विराष्ट्र वापय। हेः यर् व् शुः वृत्राव्या सुने त्राप्याचारा सुने वेत्। रायर् वाया त्राने राये व्या न्यायाकी नुवाद्यान वित्र विद्यास रायात हो। न्या विश्व **8** : कु:चति:खुन:क्रून:विषा:ॲन:पाने नः सब्द: 'ने:रॅन: पाडुन वा पवा। <u> हुदुःकुरः नीपर्यक्षस्यात्रादे द्यप्तर्मत्यप्तृत्यात्वन्यत्वन्यस्यत्यात्र्याः स्व</u> <u> श्वर् प्रत्य हे प्रवेशप प्रत्य मेर केंग्र श्वर् ग्वर प्रत्य श्वर व्यव् प्रें व्</u>

원자성자기

हेल गुर्व के दें बेर बुवाय दे श्रु। । ब्रिट देर दे हें वय बुर्वे दाव क गुरा । रं क्रेंबरा क्रेंबर पुंच हेन प्रतिरामा । ध्याने व प्रवाह व ठमः य बेह्या । मृत्यामः विमः स्वाधीः निमः मेन । विमने सेवया सिर्या नृ ग्रायवा कुर् हुर्। विग् रा हुर्वर कुर्वर कुर्वर विग स्यायाभेत्रकेत्रप्रेरणसम्मेत्। <u>[तुस्य तक्कार्य हेन् गुरादनः |</u>रस्य त्रहुन | ने हुः ने हिंद रा कुँ जूँ द हि र धेन । । न् न तर द द हैं न रा हु तर्वेद्रप्रायतम् । त्रार्थेम्द्रार्थेद्रचेत्रदेष्द्रप्रायके। । वेर्वेस्ह्रण् पर्वतिश्रास्त्रिया । अहे संध्यक्ष्यत्र्रास्त्रेत्रा । भून मॅंबान्ड्रबर्द्वायतरः झ्रार्टेग्न् मृंबा । ध्यान् वृतः दरः खराव्याः अतः रान्। । नतार्मन् मानुकाक्येश्व संवयमित्। । भून् ने मेन् प्रवय [त'नदे'धुरा | निष्ठ द्र'न्शुक्रं'येन्'यर्व'न'रूपना । विव्यवस्त्र बेन्'यर'ङ्ग्वराय'हे। वि'नेर्द्वेत्यर्त्रम्'ङ्वव्ययस्य हुन्। व्हुन् इब्दिक्किंदित्या । श्रीनिक्निंदिक्षिता । यहतः है छुं नतः सून् के वृष्टेव विन र्स्न के रंदेन करात्रा हि छेन् क्रियानेयस्य स्वाचेत्। । त्यात्रे स्वी यानेयस्य प्रस्थापरः वा । हिन्गहर्के अर्कन्ग्वराधी ग्वन्यम्। । तुरु हा छेन् प्रवेशया त्रेवल्यवस्य । यद्वहितः क्रियार् प्वेवस्यर्

हें खुन्यहें व्याप्त व्याप्त विवास प्राप्त विवास विवा

सॅन्द्राह्मेतुः इत्रायत् व । तुः ५५ द्राया स्थान **५**८'| |यरस्यायाद्यीयक्ष्यंत्राप्त्र'| ।श्रेंश्लुंद्र'वेद्र' हुद्राव्यद्रापादी । ५५५वा छैवा चञ्च रहे ५ ग्राया न्या । ५ १ इतार्द्धे रहे बहाता न्या विद्याने ने विद्या **धुँ**रः। । नैरःरेख्यायः न् गॅवाया वराग्रुरः। । धीर धील्यायः होः ण्डं वेत्। शिक्र नतुत् हे श्लार्श्वत्। । सहाविश्रापति राया **ढण्यायाञ्चित्। । त्रानेश्चित्रण्**रियानदेश्चित्यायाञ्चीत्राया । वराविः **हॅ**ग्'हेर'त्रहें*ब्*'चबा**रा**'च। १८'ने'हेर'चबातात्तुब्'प'छ्र'। । द्युने गुद्रहे स्ट्रर न् ग्रेस न् ग्रेस द्री स्ट्रहेन । त्य वित्य तहेन वादा के त्य वहा बर्ह्म मा शुरुष दे किया है द प्रस्ता । प्रदेश मे शुरुष शुरुष है स য়ৼড়ৼ৾৾ঀ |য়ৢ৾ঀয়য়ৢৼড়ঢ়য়৾য়য়য়ৼৼৠয়ৢঀয়ড়ঀ৾৽৻য়ৣ৾ঀয়৻ । *ৠ*ॱऄॖड़ॱऄ॒ॱॻॹॖॸॱॻॹॖॱॺ*ॸ*ॱॲॸॱ। । ॺॸॱ୴ॸॱड़ॕॸॱऄॸॱॸ॒ॹ॒ॱॸॸॱग़॒ॺ। हर्गापाश्चरहेर्द्रस्त्रेश्चर्यश्चेश्चर्द्रम् । स्थानवृत्यद्रस्य वर्ग <u> রিম্মেশ্রত্রেম। । রিধি সামর্ভরাই রাজীর। । শুদ্রাধীরা মইরা</u>

इत्यं । ब्रुंत्यायायहर्ष्ट्र्यं । वनत्यत्त मर्डेराञ्चर्त्रेग्वेर्। <u>| सियावीयामर्डेराव</u> गरास्त्राप्ठव्। | हॅराह्ररा **ই**ন'ন্'নর্ম্ন'র্ম্ম'ন'য়'৸ঽ্ন' বিল্লেন্ন্ন্ন্ন্'ম্নান্দ্র্ম'ন্ षर्य। १८ इसार्डे रही नेयाराने दायने। १८५ ८ हेरे ग्लेट य ने'व'लुन्। । यत्रयम्मल्या'मे'हेन्'दह्याने'व'द्रयेया । ने'हुन नवर्त्वराष्ट्रेनवाश्वार्त्त्रा । । रानत्वार्वते द्वार्थाररा प्रार्मिता । हुनः कंष्यनः प्रवेशकीय हिष्यान्न न्या । विष्यान्य विषय <u> न् श्रेम्य इत्। । नुस्ति देश्ययः स्वत्यस्य विद्यान्य विद्या । नुः हिन् ।</u> कुष्यत्र दुः रक्षेत्र श्री विस्ता देवा वाक्षेत्र विस्तर्भ । स्पश्चरमाञ्चरपारवाश्चेत्रा । यस्त्रेश्चरम् स्पाद्वा । रु: द्वेतु:कुन:कुन:क्नेन:क्न तल्ला । न्युन्यव्यान्ने न्यायुः याने न्यायाने न्यायाने स्वाया कर्ष है पर्वन होन् विषय हैं गुर्क सुरा यह से प्रवेश कर है विश्व सुह से ग्रन्न्निम्नन्ग्भीन्याकेन्यिन्दिन्त्ना वयः हिन् कुर्नार् । स्वापन्ति *नैव'तु'* हॅं 'द'वेषा'ॲंद'स'*वे'ब्रेद*'ण्य-'दर्खण्यवसाद्वेष्ट्रण्याधीसावु 'र्नेव'''' 지사성시'기

 विष । क्र: श्रुषा वा पान निष्म क्रिया भी विष्म । विष्म विष्या पान निष्म वे निष्म क्ष्रवा । मिन् व्यक्षक्षन्य व्यक्षक्ष्रम्य मिन् । त्यत्र मन्यत् व्यक्षित् व्यवस्य व्याञ्चेत्। |नेप्यम् हे पर्वत्र्याष्ट्रवाया श्रीयाञ्चत्। ।तयम् याप्यम् स म्द्रान्द्वे नेप्राप्ता । नेप्रकाद्वि मतुन्य हे प्रह्माया । सुर्वे स्स् र्षेत्र'ञ्जानत्रार्थ'त्। वित्'ह्ननातानुःक्षेत्रावेत्राना विह्नस्या हर्ष्ट्रत्सुं प्रवर्षर्। इंतरह्मालुकाग्रीकाग्नेग्वापावर्षर्।। पुर्वरःह्माप्तरः ग्राहीव्रवंत्र। हिःशुराधेरा गृहेग्रन् स्टास्यासुग्राह ग्रीया । पर्वापवा स्वयं श्रीपाय छ्रा स्थ्या । (पा हे पर्या प्यायया हेर्द्रश्रुव। [सब्दर्श्रेष्ठ्रप्रवान्यान्यान्यां श्रुवा | ह्राङ्क्यान्नायान **षॅर**'र्ने'ङ्ग्रह्म । तुर्का ने'रेर'र्स्का' सक्ष र गत्र'रा'वे ग । पर्या'आता <u>ब्र</u>ुअव्यय्भ्यत्यञ्ज्यः। । श्रुप्यार्वे र श्रुप्वितयः हे गृप्य। । वीप्यर्वे र क्षे'न् क्षेत्राचेरायाने। विकास स्वाप्त्र क्षेत्राच्या विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास व इ'र्वेश्वरंश्वरंप्रद'शब्रेद'। । तरके'ह्वेद'तश्रद्धं वहरहे'द'विष् । र्रे श्यां स्ट्रां स्ट गुन्। ।नेनेन गुरु गुरु के व के निर्मा । विस्तर्य निराल के व तस्याद्धन्याय। |हेन्यायतेहन्याधीयायन्बेन्याया। । पर्गाभगर्वा के के तर्मा विषय में प्राप्त विश्व के स्ट्रा त्र| । इंक्**र्व्या**शिश्चरायायेन्।येन्।यः । । न्।वे।ये। कन्।य्रां।यः र्केट्या सिवयाग्रुट्येट्ग्याद्धर्थयार्ध्वर् । । यथायट्ये ने**य** क्षेप्य'वृत्ता । यत्रञ्चयः सु यत्रवज्ञवावर्षतः सर्वेत वृत्रा । त्राप्तः ्रवःश्चनाः नाशुक्रवः वित्ताः वितः विश्वः विद्यः व

न्वरयागृत्वयाग्रीकृत्रं देश । इति न्द्रं ध्वर्षिते त्यायानु स्ता । क्रुंबेग्'न्द्रिय'तत्रुयश्चें'स'नर्रत्देयरा । ने'र्वेद्र'कन्'र्ब्रूद्र'सय नहन रात्र। । श्रुत्वापरिभवतिकार्ये । गुव्यविदे चन्। कन् राजन्यात्र | निः धवः कन् । हेवः तहेवः च व न राजितः हा | ५ यद्रान्य द्रान्य व द्रवार्थ चंद्र । विक्षेत्र व द्राक्ष के वा द्वाराय व व व **५५**-दाविषापहित्वसङ्क्रिपाद्य । व्हिप्सिन्दीयाद्वीपादीयाद्वीपा मनेक्यस्य इंडियत इत्याव। । प्रितेष खंब प्रतृत् की प्रायमिया सने प्रका षिद। । नरेद र्दे 'अ अअय दिन केंद्र। । त्र र्वे र नतु द केंद्र षित्। । तद्रैयानैनःन्द्रार्द्रेप्तद्देवःह्यायार्चेन्या । तर्नेनःध्यवःनतुनः कुष्यम् मुन्यम् । प्रक्रम् सम्मान्यम् । विष्यम् सम्मान्यम् । विष्यम् सम्मान्यम् नतुन्'ग्रेसु'बें'भेदा । नह्यु'नर'नेश'सं विन'र्ह्हन्'ग्रेस। । स्थ्यस नतुन्'ग्रे'नर्रव्रस्थेव। । घरपरन्ग्रदर्ग्युरन्'र्भेय। व्यक्ष'रुन्'म्वप्'द्रस्थरेषें'न्बेंबिन्ने । द्विपन्'स्'म्वप्'द्र्वेद सग्रा । श्रु'श्राण्ठी'र्वे'प्रें र देश'ग्रुम्'त्र्येता । त्रान्'स्'हेद व। ।तुष्ट्रिन्'स'ङ्क्ष'ङ्गस'नार्षन्। ।तह्न्।क्षेंन्नन्न्न्।हेन् রুবরান্তা । লবার্মাস্কৃষ্ণবস্তুব্ গ্রীণশ্বমরাধান্ত্রীর। ।বু ট্রিব্ গ্রীণ सवाक्षांत्रेक्षि । इतात्र्वे रामायमार्केषात्रे । | विताखनाने श्चेश्वरायानुः कृतः विषा । हो यहं वर्ष्ये श्वराने भूतः गृह्य वर्षा वित्य वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वित्रा वि मक्केन्यायस्य मिन्द्रियमुष्यम् देश हेर्न्य हेर्म हेर **र्**या द्वेशाञ्च 'पापिते' र्वश्च 'हे पर्द्व देव' द्वेव' क्षेत्र 'खुन' खुन' खुन' खुन' खुन' खुन' क्षेत्र 'प्रदेव प्रशा परि'तुरा'शु'प्रिंन' वन' कंब' पावेश'र्रेन संवश वन' में साव 'प्परा'ग्रे' द्या **३**।क्वॅद'२ग्नर'र्घ'५८'। कंर्यराग्रेर'श्चर'ष्ठेर'सुवाय'य'याविराद्या **२**दि:तुत्राञ्चःवापः रेवें दूपः देव'व'व्यक्ष्याक्ष्यः हिनः हवः हुवः ही वार्कें वार्कें वार्कें व मबेरराम'न्न'रुरायहर्तरामरा हे मईंद्रों बताद्रा ब्राम्य विद्या के विद्या के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के कि के कि के कि कि कि कि कि कि कि कि कि र्दून'यास्यायान् नन्त्रमुन्तुकान्ने ग्नावकारा'न्यन्योवा ग्नावका ট্রীঝাশ্রাদ্রেরবা ইংমর্ভ্রান্ট্রিট্রান্ত্রাম্বান্তর্বান্ত্রামা मॅं र्दू 'दा'या' दाने' 'बार्ड वा' वी' न् दार 'हें वा बार रातु बा वा बा बा बार हिर' वार 'हें वा म्वेरायाद्वेरिःस्याम्र्याः हेराह्याज्ञ्याक्वेर्स्याङ्गरान्ता। सेप्रश्रेत्पर **४**ण्योत्रेत्रे इति तर्ने वास्रवस्त्रात्। तस्य वास्य में वास्य न्या वास्य स्व प्रस्तर्भाष्ट्रवाचित्रः । वर्षाक्षेत्रः यदे । अर्ह्मा विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे विश्वे मनवान्ता व्यानम्देषे हे नर्द्धन्यदे क्रिंग्न्ता क्रिंग्, तु गुन्नेदे हुन व्यत्याप्तराम् वृद्ध्याम् वृद्धाः । देरावितः मृत्रेवाधिवाञ्चायाः रेश्वार्षुः पाराञ्चा मञ्जूताववानार्भन्। हे। देव विगवाद्भन्ति स् मक्षयम् वाक्षुः त्रु वाकारा द्वारं राम देश्वे काहु वा न्दा । वाद दार पद्वा वे देश म'न्याम्बुन्'मदेख्या'कु'ळेन्'मॅ'क्यकाकुमकाविन्'नु'मञ्जूनकाने ग्नायका ह्याः अध्याप्तायाः यात्र प्राप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप

हार्य 'न्य प्र' इयदात्म खुग 'त हत्य में | बुन प्र कुन 'ह न दाहे हव Rदे हिन्द्वयक्षके। । बरायां शेषादे मृत्यकारण सुकायां के। । हितुः ह्म है न'संद्र'तरी क्षेत्र' मश्रद'हे। । वा न्मः श्रावर त ग्रें रा हि प्रायः हुर 5'महीरा । सुवियसमिद्यम्पद्यत्र्व्यम्। । सि. ह स्वयं वाययायर। । इंद्यायाञ्च वायारे याचे द्राया स्त्रा । अर्थे द्रा छे हें। पत्रस्थात्र्र्प्यम् । प्रवेद्यां क्षेत्रेत्र्युम् क्ष्रम्यम् ह्रॅं प्रयत्य प्रयाप्त प्रयाप्त स्थाप्त व्याप्त । प्रयोग स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप यम्भीवा । श्रांच भी न्या से न्या से स्वार्थ स्वार्थ । न्या स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स लाईवाञ्चराचित्र। । श्वरात्राच्चराहण्यावास्त्रीताया । भ्रेवाधना वैग्न्रःबद्वश्यरः ग्रुवा । व्यन् न्रः व्यन्त्रं स्थान्त्र चकुर्ग्वर्व्वर्र्ण्येर्व्यवेर् र्झ्वया । रर्र्ण्येष्वर्ग्वयाप्यः । मः अन् भूनः भूनः अन्य स्ता । देवा गृह्य त्याया विता रेन् ग्रैसर्व्यानेसारा राज्यप्रया न्याया प्रमुं यह न्याया प्राप्त प्रमुं स्थाप

ञ्च'य'न्य'यति'व्यव्यत्यतिन्। विग्'गैवार्ष्वव्यति'र्वेद्यं री । हिं*र्'तुर्या* प्रस'रा ह्वें दा हुँ दा हेर्। । स्परात्या देर्' सर्या स्पर दर्शें दर्शें ही | वेषवर्रः वेषावर्शेषावरः | श्विराहबवा न् श्रुवार्त्रन् व्याक्षेत्रं स्यान् । स्यान्ने त्राप्ते त्रान् । वृद्र'रन' वि'यने वि' ग्वरा शु र्गेषा | १ वे यने या संयदेश स्वरा शु र्गेषा | कूँब्रपं हैंग नेहें र दुने थ। | द्रेने क्रेंद र सह है रेट र दुने थ। ह्रतार्द्धे र ड्वें द प्रते गरीय प्रत्ये । अंत्र के द कें र स् मॅमा । शेकियमध्ययन् भंतर् स्वयं है। । ऋद् प्रकु न्याप्तर ८ कॅरि|व'क्र्र्रवाया । कॅयाबार्येन्'ब्रुब'यतुन्'**येव'यवा । रख** केन'तुर तु'वि'च'ठें रा । मॅल'बर में र व'च हु ब'ध' भेव। । हे बेंब' र्द्घरतायाञ्चयाञ्चरायाद्वर्। । १ वर्षात्रिरायगायेवायाद्वर्श्वयायाः । मॅं या या हु राव परिवास के दा । तुरम क्षेत्र में ता महिर या ये या या । क्षेप्रकृष्ट्रम् क्षेत्रकान्द्रम् स्वास्तुर्वेता । देवाम्बुद्रकारम् सम्बन् श्चरतात्राहेग्यहिया तुः झावते तुर्द्य हेंग्यें याता कुर्दे वेत्रां प्रमुर्द्य "" भूषाविदःस्त्राचित्रे <u>बराक्षेत्रे</u>यावार्याम्बर्गान्तेयाञ्चरः पता सिवा

रशासं वित्त र्रं निष्ठ दे वित्र र्रं वित्र वित्र र्रं वित्र र्रं वित्र वित्र

मञ्ज्ञ'याहे'नर्जुन'यानयाज्ञवाकुष्टिन्। । मायापानेवार्यायहन्। শ্বরাঞ্টাইবা [য়ৣর'য়ৢ'য়ঽ'য়ঢ়'৻৻ঢ়য়ৼঢ়য়৾ৼঢ়য়৾ড়ৢৄ गुन्दे नुः सुन्द्रयायात्मया । तनः देन् भाषियाः सुभ्यत्यः क्रुयाः प्राप्ताः इंबायह्य ज्ञेनवारा प्रमेष्ट्री मेर्ची हेवा । नशुक्ष प्रवेष्य कर प्राप्त महत्रा क्रीं कु। । यन्ना नेक्षा गुन् निकेना सुन् यक्न पर निकेना समारा म्रवस्त्राक्ष्यां म्रेन् स्त्रा क्ष्यां स्त्रा क्ष्यां स्त्रा विश्वस्त्र स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स् ह्यान्ने ब्रुं रेके हेव। | नियेष्ट्रायन पेंग्न कुल के कु। | निन्न नेबा ক্তুদ'ল্লীৰ'ল্লীৰ'সুদৰাতা শক্তিৰ্'মেশ্ৰা ক্ৰান্তী रन्। । तर्ळे न्या ग्रात् केंत्र न्वे केंत्र । इत्र प्या ग्रान्य न्या । इत्र प्या ग्रान्य न्या । इत्र प्या ग्रान्य न्या । ह्रवादारादे कु। । यन्वाने वाकुरावाद्यारा सुरुवारा वादेवा सवादा । **চু**ম'বিষকান্ত্ৰ ব্যাথান্থ বিশ্ব বিশ্ न्नों हुं र क्रे हे दा । ति र न पेन वर र र ज़े द वर का क्रे हा । न न न नैयागुर्रादिर ग्रेंग्'झ्राचारा गुरुग्'सग्या । वेयाग्यराया र्हे यान्दर्भ के अपने कार्या कार्या के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार बड़ेशवत्राञ्चाश्चाश्चारव्यायायात्र्वाश्चीप्यान्त्राञ्चेष्याञ्चेष्याः गृत्यवाः प्रवाहित स्वाहित स्वा

与写言·其可以与与'知其中'与命·其下

 त्तृग्याया हेराईद्वंकदार्या स्वाप्त्याहित् धुगारां गिडेगा स्वाचित्राया हेराइद्वंकदार्या स्वाप्त्याचेरायां क्षेत्रायां हेराइ्वाप्त्यां क्षेत्रायां हेराइ्वाप्त्यां क्षित्रायां हेराइद्वं प्राप्त्रायां क्षेत्रायां हेराइद्वं प्राप्त्रायां हेराइद्वं प्राप्ति हेराइद्वं हेराइद्

रिव्यवन्त्रन्त्वादित्वादेवावाठव। । तवाहितावादेवावाविका **७** व । इसातर्ष्ठे र र धर विर ग्रे का है। । ग्रे कें व बेर व र पर दे विर का মা । ইবানে সিন্দ্র বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বিশ্ব বার্মা । মন্ত্র বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব ব इत्या । भूनि- लेब न्यं पुर्वा । प्रधियः कूर्या वर्षा सर्वेद्रप्त हमा । गुर्वेद्रायेद्र श्चर में रूप र स्वर्ग । भेद्राय्य **ब्र**प्पते में न' प्रकृता । त्या क्ष्या ' व्यापते म्रुपति । मेन्द्रायां भेन् प्रतिष्ट्रम् पर्वत्रा । पर्दे द्रत्युवा श्रुर्या परि द्रिया मङ्ग्'याया । मानायापानायेन्'ने'यकी । पुनःद्धनः शुःगुः व दन्ते बकी । तश्रानु त्रानु श्रीव हैं। वित प्रदेश हैं व पर हैं भी सें व स बारवा । मां के प्राप्त मानवा की की वार्या वार्या । के वार्या की वार्या व मर्प्रहो ।वयस्यवायस्त्रिन्त्रम्वप्यस्त्रम्व। ।नेःस्र्रप्य न्देर्-द्रश्रम्भेद। शिव्यञ्चर्-ज्ञन्यप्भेद। शिव्य

त्गुश्यर्थस्त्र्रेत्व्वय्वद्व्यः । वित्र्र्यः द्व्यव्यय्वयः वित्र्यः द्वय्य्वयः वित्रः द्वय्य्वयः वित्रः द्वय्यव्ययः वित्रः द्वयः वित्रः वित्रः

दें'ब'र्षेब'चन्ग्'रहे'हॅग्याय**्या**व्य । ष्टिन'ब्रीब'शुण्य स्ब'ने' ह्यं देव दर्भ । वि सम्मित् क्षेत्र के बाद वि न कि सम्मित् के बाद वेशवा विदेशियरसम्प्रिता । मन्त्रायमञ्जूनम्पर्यक्ता **पे**त्। ।श्चिम्द्रसम्बर्धसम्बद्धसम्बद्धाः ।र्डे ग्रस्थेन् श्चिमस परिः इतार्व्य रखेत्। । दरिः सग्वान्य पत्रः परिः श्चार्य रहिरः सरी । হ'অব্বর্ত্তর্বাত্র শ্বাহ্র শ্বাহা বিদ্যাহী ইব্রের কর্মের । चन्दार्वे हेन् केद्रवह व्याचन्त्र। विश्वेषक केट्रिं स्तुक द्वरा हु Aশ্রিমনা | ধ্রুমারীশ্রণ ভরাশ্রীমাধ্রমা | শৃণ্টানিমারাভ্রমা | **৫২ : দ্ব**্ট্র্র্'ট্রর্'র্ট্রর্'র্ট্র্র্'র্ট্রর্'র্ট্রর্'র্ मन्द्रियतेष्वार्यस्त्रेद्। श्चिष्यम्यः मन्दर्पः दे। ।दिहर নরি·বারী;স্ক'নভন্'নরি'ह गुरु। । <u>স্থ'</u>শের্ষণ্'স্ক'র্ম'নভন্'ন'ন। द्देर्डियार्क्यावायर्द्द्रप्रतिःहम्या हिर्'र्देर्डिद्'यार्वेर्द्रपदे । विश्व मतिः सन् म्राम्य स्वर्षा । विश्व व्यापन विस्व वेष्याने। ।

न्वितेवराकृत्योप्यान्तरान्तरान्त्रात्र मृत्रा । इंडियहराष्ट्रम्यं त्रित्र दान्। । बेबबाग्रुग्। बदिन्द्रं दायाञ्चरवाधिः ह ग्वा बार्चेयायस्तर्गायाने। | न्वायार्वस्वयात्रात्वेवायतिः हण्या इन्याखन् श्वापत्त्व प्राप्ते । इन् इन जुन्य अतर्हेन्य पर्दे न्या । इन्त्यस्यत्वित्नत्त्वायाने। विन्वेन्त्विन्त्व्वायतिः इववा । इन्यं हैं नवान हु अपत्तिनाया दे। | निवित्यः भुगन हु अहं स्पर्ध । इन्दर्ग न हुर र्ये न प्राप्त | जिले हरा हिन त हुर पर से न परि व्यापित कृष्य विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विषयं विषयं विषयं विषयं विषयं विषयं विषयं |英刻湖。 र्भे वाचे न प्रति ह गया अवश्यासु गुप्त न ग्प्ये । के बाह्य वर्ष मयया उन् केंद्र प्रते हु गया । श्वाया श्वेष्य श्वेष्य प्रत्य प्राप्ते । किंदा भेषा **शि**ज्जाक्ष्याभाष्यिः हम्या । द्याः संक्ष्याः द्वाः स्त्राः स्त्राः स्त्राः । स्त्रिः इतार्वर्धे रामर्थाया । इसाईंगाञ्चार्थे प्रमानित नुसा । श्चार्केः रैकायोप्तकाम र्जुन'रा'ने। |कॅकार्लुयाम दिन'तृ वकारा मुन्याम दि ह गया । **য়'ঀ**वर्षा इन् राज्ञेश्य क्रॅं राप्ते | | इत्रात् क्रॅं राप्ते प्रति प्रति वार्षा वि ह्रम्य। (८८८'यत्तर'सर्वाधिकादेवायादे। (ह्र'गे)'न्यर'तु' Rतुरापति'हगरा | झ'ल'ङ्गरा मनेरप्प नप'प'दे। | इल'लर्डेरकेुर' हुसक्के निर्दे हु गुरु। |र गुरु ज सें र पह गुरु पर दे। | व र जे सें द हद्कुर्यप्रिहन्या दिल्लप्रहित्यह्न्य्याप्ति । इतार्वह्र

वैयापायहेदापति हम्या । अगातस्यामहेकाश्चितापारी। । हार त्र्ग'यय'रु'त्रिरामते'ह्रग्या । क्ष्ण'त्रस्ययासु'त्रे । भु'म् गुरायान्नायहत्वत्वतिः हम्या । द्वापतिः हन्या । इत्रात्र्ये र कुत्राप्रवद्यायभ्रम्भायते हुन्या । श्रेष्ट्रेन्या प्राप्ताय हुन्या य ह प्रशास दे। विकाशियाँ में स्वार्थ । प्रवद मनवारवायान मन्यायानी विधारायमा असीना पति हमाबा । नियाओ विस्पान निवास परि | इंग्राईन विस्पान समिति इंग्राही | शुं ती इंदर्भं प्रमण्यापी । विद्रार्थर्यात्वण हु न्यार्द्र प्राप्त न्या । वियार्क्षरः ह्रेन् डिन्। यहन् न्यारादी । यन् क्रन्यार्क्ष क्रायार्वे हन्या । पः वितिः भेरापान न न वाया दे। । भ्रास्त्र भारति । स्वास्त्र भारति । द्रैलानु न्येरानाय हुन राया दे। । अवारा अन्य प्रज्ञानाय दे हुन्या । चूर्यात्रवात् ग्रात्वराय हुण्यायात् । विश्वयायात् विरामित्राय ह ग्रा । इतार्व्धे रासग्वाद्यं रासन्। । श्रीद्रग्वरायाधिका ८ तृत्याचितः हुण्या । ने में वृष्यम् त्याप्य विक्रे प्राप्ते। चन्। इन् क्षं क्षं न्या शिक्षित् 'न्या शिक्षित् 'न्या स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स ळन्'ब्रॅब्लयाम हमाप्ये ह न्या दिख्य ख्यान्यर्म ह व्यक्षा । यम् भूष्यम् वित्रास्थाः स्थाः स गुरु। । विन्धान्नुक्षेन्। विन्धान्नुक्षेन्। विनान्नुक्षान् न्ग्रस्यं क्रंस्न्स्य ह्रव्यस्य व्यवज्ञास्य व्यवस्य व्यवस्य व्यवस्य विवास

क्रिश्मिंदिक्ष्यभव्दर्वयात्रम् स्वाद्यस्य । विद्यामिदिक्ष्यभव्दर्वयात्रम् स्वाद्यस्य । विद्यामिदिक्ष्यभव्दर्वयात्रम् स्वाद्यस्य । विद्यामिद्यस्य । विद्यस्य ।

क्वांबरळेंदी:महिरानेंद्रें रातुःय। | न्वेंब्रां दर्न वृह्याय राक्षेत्रां है। । शु न् नत्रं तहन् में अयमन्या विह्या हिन्दी सहन् निर्म बेर्। |र्नद्रश्व'द्ध'भैंभें न्नर'रे। |न्हेन्यवॅढेन्नरळ'यहैस है। अत्रिनः न्स्य म्याया निम्स्य निम्स्य मुख्य सर्घरःपः वेर। । पत्ररः हुण् द्वर्षः शुः हुरुषः पेरा । वर् कं ग्ररः रोयापराक्षां वेदाप्तार्थेन प्राचित्राया वितासमा पः इवरायप्रें प्राधीश्चेत। । यश्चुः तत्र राष्ट्र ग्राप्ते प्रे ने पः प्रख्या । बर्चे देशयर्चे द्वारा के विष्ठा है। विष्ठा देश कर विषय सम्मान हिर्क्तिम्स्त्रायरकावक्षिक्षि । विभवत्स्रं कव् विषायायण्या । त्र्रत्येत्। त्र्यर्थायात्रत्यत्येत्। त्रुव्यकुत्यव्यत्यात्रेव्यं केया | यदं रामरा हु प्रमक्त यके राहे। | वि क्षेप्र र र र र वि प्र यहुनः संश्कित्याया दिन्दिनः देव। | न्युत्यानः सेत्यायनः क्षां से हिंदा ট্রন্তন্র্রিব্র্বার্থানা বিষ্ক্রার্থান্ত্র্ব্রার্থ্রন্ত্র্ব্রার্থ্রন্তর্ बेन्। । वनः वेन्द्रं राक्के वर्षे राधेन् रेन्। । तनः कु वर्षे व रायर छः बक्रियाही वित्रम्बर्ह्सम्ध्रम्यायायाया वित्रप्रत्नुर्ह्म मैकामहिन्दीष्ट्। । म्इतादर्जिन्दीत्रात्रात्रान्त्। । हे महका रो देव र र र र पा व वे र । विष्ठ र है य ख र वे र द है र हु व र र व व र व विग मतुन्य सर्तु द्राया या विग | ने क्षेत्र प्रयास द्रीय मामविग मामिता |

वित्रं व्यवन्यान्यान्याः वित्रं त्रव्य **ে ই'ই**।ই্ব'ন ছয়'র'ন গ্রা | छे दिन्द्र वित् क्षेत्र क्षेत्र विद्या विद वित्'विवान्त्रां ववा विवादारा वित्तां वित्तां वित्तां ववा वित्तां वित्तां ववा वितातां वितातां विवादां विवादां व वृतानते ग्रम्यायता ग्राया रं ने गता से नं भेदा तर संस्था रे ये य बार्चब्राच्यानुबाह्याः हुण्याः दुर्पन्याः चुलाब्याः चे । द्वाराः चुलाक्ष्याः चे व्यास्थ्याः चुलाव्याः क्रीसर्विद्रस्वयाम्। न्राहेग् न्र्स्यायामा स्वाधित्वर्गे न्तर्ने त्र्वार्यस्य द्राप्त्राचित्। यर्येयस्त्रं केत्त्र्तृत्यं मृत्यं है। तुला नेनः राज्ञाचर्यन् व्यवायायय ग्वायय। वनः ने संब्राह्म वन र्सं व्यत् प्राक्षेत्रव्यस्ता वित्रे श्चित्रं स्वाप्त्रा द्राया द्राया स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत राखेर्यायार्प्त्र्राच्याके स्टाचेर्। स्याके विराह स्टावहत छे मायमात्रिव्रशुन्याकव्रातुत्र्वे नायवा वित्रश्चेत्राक्षेत्राचेत्रामा নণ্ডেশ্বাতীশ্বস্থান্ধ্বা হল'ট্রিণ্মেস্ক্র্র্থেয়'শ্বনা ট্রিন্' रम्यम्प्राम्याग्रास्या स्थागुराक्षेत्। तुरान्युरीन्त्य ऍ८यार्ब्वेन्'सुब्'शुठाळेंग्राया'त सुन्'ना'ता'ग्रॅव्'वे'वा र्स'ग्रार्थर'र्द। वे:नेवापाञ्चेवानु'त्र्में'न'षेत्। हिन्'वें'क्रंबान्दे र्ह्यानेख्यान्त्वं वाच्यान्याचित्र। हिन्यावेत्रयान्यं न्या র ব্যব্দ **টি**মানিব'ৰ'ব্ৰুন'ৰ্ম'মে'ৰ্ম'ৰ্য্ডুন'ন্'ব্ৰীৰ'্ম'ৰ্যান্তিৰ'্মৰাগ্ৰুন'ৰ্স্কৰ্ম ক্ৰান্ত্ৰী **ଭି**ଣ୍ ଶ୍ରଂ**ପର୍ଜି ପ୍ରାୟ୍ଟ (ଶ୍ରିମ୍ୟ) ଜିମ୍ୟ (ଶ୍ରିମ୍ୟ)** ବିମ୍ୟୁ ଅନ୍ୟୁ ଅନ୍ଧ୍ୟ । ଜିମ୍ୟୁ ଅନ୍ୟୁ ଅନ୍ଧ୍ୟ । रेट्येश्वरूट्यायर्भः व्यक्ष्ट्रयान्येन्यः त्र खन्यान्तेव'र्क्सपायमाकेरानुस्योप्पराचरान्त्। नेपसन्निर्रा *୍ଧିୟା* ଅଟ୍ର 'ଶ୍ୱର୍ମ 'ସ'ନ୍ଦ୍ର' ୟକ୍ଷ ଅନ୍ତ ଅଟେ । मर्द्व'न्यॅव'श्वॅप'मृवेश'र श्वॅंबराग्रे'ब्यातु'ल'र्च्व'न्या ध्रवार्च्च'विमाव' इष्या अपुर्वा वर्ष के क्षेत्र द्वा विषा (८ ह्या (८) वर्षे । इत्र'त्र्चें र'रा'इबब्ग्ग दश्येद। क्ष्युग्रां तर्रे त्या प्रकृष्य व द्वापा न प्रमेश्य प्रमा व या प्रा की ज़ या रा *बिद*'र्र'क्रॅंबराग्रीक्वॅन'परार्द्रण्यात्र्द्रव्यपाण्डेण'ॲन्'पराक्वे'कॅन्'न्रः लेट मरा हे नर्दुन ग्रीश विन्दर्भ ता क्षे झें आ हुँ न् परी न सरा से न परी न सरा से न देन्'याप्पन्'यापन्'रुन्'ह्वेन्'क्वैश्रवे'र्वे ने'यश्रदेन्'यायग्रन्ग्रयंदे' <u>ढ़ॹ॓ॴॻॱढ़ॾॕॻॱॿॖऀॸॱॸॱॺॸॹॹॖऀढ़ॎख़ॕॱॻॱढ़ॏॻऻॹॕॗॸॱॸॸॱॻॹॖॸॹय़ॴ</u> तकः त'र्न्याचनक्षा न'र्न्याणन्यवाचाक्रीक्षेत्र राधिन'राह्यने छें में न'र्स्स पॅन्'ने। नेन 'रन' में खन्य की क्षुं क्र क्रींन 'रा Rदि: सूर न्याया शु: भेव चेर | विंर मा ने प्राया शिक्ष के अधि हैं के स्वाया के स्वया के स्वया के स्वया के स्वया धरायन्त्वराष्ट्रित्र्त्रावह्रवाधात्रत्वाची चेत्रप्रवा हेर्प्यक्ष्या म्बार्विराम्बारिक्षेत्राच्यात्राच्याच्याच्याच्याच्या **इ**त्रप्रदूर्श्चीत्रवारामकार्ष्ट्वर्गायस्य विद्यास्य स्वर्गात्रीत्राचित्रप्रे बेर्'रु'अ'गङ्गुगश्रव। **छे**'तरितें'तर्र्र्, ग्रीकेन'न् भेषा'व्या'त्रान्थ्रा चतिः ळेग्'रेग्*रांगुः क्षेत्रं क्षेत्रं क्षेत्रं क्षेत्रं प्रां इवश्रास्या*येग्'यरात्युराराध्येत्'वेत्र''' •

वगुरतर्भगशुरक्षा ।

धराने न्र्यव्यन्ता हे व्यव्या । विष्यत् विषयायान नामि । ग्रव देव श्वर प्राची से से प्राची से प्र |भेग्'दग्'न्ये'स्यस्यस्ये। |र्द्रक्ष्यस्क्षुंन्'स्त्रव्ये ह्य प्रवितः ग्रायम् त्राय क्षुम् म्या । इत्याप धिन् त्राये हेन् या । यह वर बदै'त्युरानुबाबाचर्डेरबाबब। । पने'प'केव'र्धेदै'हैर'दर्धेदाने। । ८६५ न्यतिविद्यस्यस्य महास्यवा । । तस्य म्या दीद्य ग्री स्था महाम्य पति। |अर्छन्'अरि'रूं राष्ट्रीयायाय हैन्यायाय। । दूनायाञ्चाय स्वर *ত্ব*ান্ত| |শ্বা<mark>'ম'শব</mark>'শ'কাৰ্ম্মন্ত| |শ্বন্দ'শ্বন্ধান্ত্' শ্ৰীকা क्रॅब्रायाय। । यह मॅब्रायेन यर या मन प्राप्त । रहा से बराये दशहरान्ग्य। (हुर्'न्न्'वर्र्ष्यवर्ग्यायश्चन्'न्व। । ह्वय न्यायश्याम्बरायम् । क्विं प्राप्तरान्मरायाश्वन । क्वें दरेदिवेषदर्भाष्यक्षा । वर्ष्यक्षित्रक्ष्या । व्रैन्द्रगराञ्चन् पराष्ट्रन्याम। । सुर्नेयान्यवासन्यायहेनान। । चतुन् ग्रीकार्ये प्राचित्र चार्र्यु विचया श्रीया । तिर्वित्र चार्र्य विचया श्रीया देव। |देवावप्यमादगुः ज्वरायाक्षेत्र। | समावर्षे प्रेरायदेः व्यवस्थितं वहूरी । द्वानश्चरवात्या हैवंदाः भेवः सिन्दार् युर्रि नेन्दुयन्देशस्य स्टेश्चेन् धुग्यस्यावयश्चित्रः ब्रान्यत्रात्र्वात्र्वात्र्वात्र्वेवात्रात्रस्वात्र्वात्रस्व व्यापाञ्च है।

たって、おきなられた。 では、一般ない。 では、一般な、 では、一般ない。 では、一般ない。 では、一般ない。 では、一般ない。 では、一般ない。 では、一般ない。 では

「お」と、ありれ、後、日、「「こ、日日は、日内、五元、八元」

स्वायाम् सिन्याचे म्ह्या ग्रेस्या ग्रेस्या म्ह्या स्वायाम् स्वायाम् सिन्या स्वया म्ह्या स्वया ग्रेस्या म्ह्या स्वया म्ह्या स्वया म्ह्या स्वया स्वया

षु साम दिला व्याप्त । है मार्च व गुज्य से व या वे न या किया सि मार्च व या स्थापत है या गुज्य है या गु

मुद्देग्'स्'म्बर्'र म्बर्ध्याय्याययायाः । मुद्देश्सुः स्वरं म्बर्ध्या **८ग'ळे| |गहाअ'र्'२८**'गे|क्सॅअ'यश्र्य'ळे| |८२'वे'ळे'य'क्य'गहा**अ** <u>बॅर'र्'ङ्' । गुड्य'र्'भेयर'ल'रर'द्वर'ङ्</u>। ।दर्ने'दे'छ्र'प इयान्युद्धायम्बा ।न्डेन्'जुः सदै'मन्द्रायदेन्। ।न्डेक् ह्युन्नः विशेषस्य द्वासून। । गृह्यस्तुः गृह्य देवा सुन। । विश्वेत्र्यान्यः द्वार्याम् शुक्षात्रः महाः । । विश्वान्तः श्वेतः वार्षेत्रः वार्षेत्रः वार्षेत्रः वार्षेत्रः । । मृदेशहाज्य मिन्द्र स्मित्र वि । महासम् दुः अशीव संस्ति । १८ मे ने ति पा इस गाह्य स्था । या देवा क्षिया वी के पा क्षेत्र क्षेत्र स्थापना । या देवा क्षेत्र क्षेत्र स्थापना । या देवा ह्युः दे 'नदे त्यद्र'त्यव्यप्तवा । या शुक्ष दु' त्रेववा क्षेत्र' व्यद्भवा । Rदे वे वापकारा इस ग्रुस्य ग्रा | ग्रेग् फ्राने प्रान्दे का से प्रा **ब**र्चर'| |ग्रेब्स्ड्र'ङ्गर'प'कृत्'र्य'बर्चर'| |ग्रुब्र'त्'र्द्वेग'न्द तृःक्षे इवरा^{द्ध} प्रसन्धः ८२। । पृष्ठेशसुःप्रेनसङ्ग्रुनः स्वेषसास्तरः । । नुशुक्षानुःसम्बद्धार्वेन् व्यशुद्धात्तु । १८दे दे १८तुः यः द्वारा नुशुक्षात्र नुश् । रोबराग्री-५ वृंदाने शु. गुडेग । इता दर्जे राज्ञे ता पर दर्शाहरू । । **ब्रि**न हं रायद्त्र द्वयायाने हिंग्वहेरा । क्रिंग शुपु क्रें त' द्वयायाने हे । न्देश | न्र्नेशन्द्रत्र्वयम्यकुत्रत्रन्त्। |न्षेत्रवर्ष श्रम् वित्रा । निर्म् निर्मा क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग । निर्मा क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग । निर्मा क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग । निर्मा क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग । निर्मा क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग । निर्मा क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग । निर्मा क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वर्ग । निर्मा क्षेत्र स्वर्ग क्षेत्र स्वरंग स्वरंग क्षेत्र स्वरंग स्वरंग क्षेत्र स्वरंग स्वरंग

러타다(용다'주라'다'구다'러트라'다라'Ăㅜ|

श्रीन् न्यान् ने न्यां ये ने यां ये में यां ये ने यो ने यां ये ने

६व्यः वाष्ट्रशादः धिद्। । व्ययः कुरः यकुरः यक्षुव्यः यने पा धिद्। ब्रुवाक्षब्राञ्च 'द्रांचिव। । त्रव कुर क्षें पात गुर वाय भिव। । क्षें ब्राक्रेव गुद्रकेषुन्यभेदा । १५'याचन्केषुः तळेन्याचा नेक्षेत्र । क्षेत्रेच्यातहरा पदित्रिक्षित्। । न्युरासर्ज्यवादिकाचेन्याचेत्। । प्रवासादेका य'वेर्'य'वेव्। विंर्'य'यमय'गृह्र्'वेर्'य'वेव। विरामात्रेव्। हर् बेर्प्यित्। । वस्यार्य्येष्यर्थर्येष्यः । वृत्यंस्य सुन् हु कुर पंथेता । र र अर्थेर तर्दे र पं कुर पं केता । गृहर तहेता वेद'ळप्राकुर'**र'भैद।** । शु'र्रद'यर्यासीय तुर्'र्य्याभैदा । म्बास्य इवराकुर्भे श्रिम् राज्य विदा । चित्रापा इवराकुरे रूप राज्यदा । इत्यत्र्यं र ज्ञुताद्वराद्धरत्यश्चर्या । विन् देशे से द्वारायने परत्व गया | वेदा ग्रुटयापय। | विराह्म स्थान देवे। श्चित्रं द्वार् देन्द्रम् या वा विद्वार् विद्वार् विद्वार विद्यार विद्यार विद्यार विद्यार विद्यार विद् **ब्रियम्य। प्रनाहे नर्जुव्य ग्रीयम्यया उन् 'शे हर्ग'म'मेव म्याह्य ये श्रीया वि**ग्'ठेशक्षे हृग्'य'न्ये 'यञ्चन्'यन्ते 'यञ्चन्'य गुरूप्

होन्'तर्नर्देव'न्न'ख्व'तु'र्श्चन्यय। विवाहर् छ स्यान्धिन'
को'न्यीन्। । न्न'प्यानिन' व याश्चेयाश्चेय। । श्चिन्'व्याक्षः इ याः
प्रीत्राययययय। । न्न'प्यात्र श्चर्याक्षेयः यां विवाहित्यययः । । न्ने'ने'
युव्य ह्यां भी'त्रित्ययय्वयः । न्नि'ने' न्यात्र श्चर्यां भी यां विवाहित्यय्वयः । । नेने'ने'
क्ष्म्प्यां भी'त्र व्यव्यव्यवः । न्नि'ने' न्यात्र श्वर्यः विवाहित्यः । । श्चर्यः प्रीत्यः विवाहित्यः विवाहित्यः । । श्वर्यः प्रीत्यः प्रविवाहित्यः । । श्वर्यः प्रीत्यः प्रविवाहित्यः । । श्वर्यः प्रविवाहित्यः प्रविवाहित्यः प्रविवाहित्यः । । । विवाहित्यः प्रविवाहित्यः प्रविवाहित्यः । । । विवाहित्यः प्रविवाहित्यः प्रविवाहित्यः । । । विवाहित्यः प्रविवाहित्यः प्रविवाहित्यः । । विवाहित्यः विवाहित्यः । । विवाहित्यः प्रविवाहित्यः । । विवाहित्यः प्रविवाहित्यः । । विवाहित्यः विवाहित्यः । । विवाहित्यः । । विवाहित्यः विवाहित्यः । । विवाहित्यः । विवाहित्यः । । विवाहित्यः । । विवाहित्यः । विवाहित्यः । विवाहित्यः । विवाहित्यः । । विवाहित्यः । विवाहित्

त्र'र्द्रण'द्रिण्याये'ने'न्न'थ्। |दॅन्द्रु'नेद्र'केव'ने'न्न'हुण् ।ळेवाण्ड्र**य** त्रु'न'ने'न्न'मतुद्र। |शे'तु'^६ द'केद'ने'न्न'मकुन्। ।१ॅंद'कन्'केंग् त्यन्तु स्यार्थे स्या | श्रुप्ते पिष्ठे हे याया त्रें या विष्या ने या देवा के मइ से सिंगा । किंगा ने में सप्ता धुर सं वा । गरीर से मार प्राप्त न्गुन्नुःयय। |नेशःगुन्द्ञ्चः अदेःन्दोःग्रेग् अर्छेद्। |नेःयनः ठी हुना हुंता तुःनात्त। | र्नें **न**ितारी सार्वे या तासू के साथ है ता निस् बॅंबे हॅग राद ग्रीस होता । देश ग्रुम हु यदि दंशे गाउँग अर्केंदा । नेपारकी हम् द्वारा प्राप्त । | र्वारी प्राप्त स्वराय स्वराय स्वराय सु'यो नेतु'कुर' यर त'येशप्तरार् । रिशं गुरः हु' यति र रे मे नि बर्टेंबा निष्यत्तं हेन् र्ह्यानुनित्र । द्वाने राह्याने र्ह्मायहिंद्। विदर्भात्वराह्माः वर्षायहराः । देशायुद्धः बतिर्देशम्बद्धम् अर्क्षेत्। दिः धन्तिः हृणः द्धंतानुः मृत्रः। दिन्दे वार्शवरातास्च स्थायहर्। । च देग द्विष या वे मार्चर के राज्य । नेकागुर्म् हुम्बद्गर्मे महिना बळेंदा | निष्मर्म हेम खंदारु न्तरा | र्मन'तार्श्वशायाञ्च क्रेश्यस्त्। |र्मे राषु रेन के वाहेत्'न वाहेंता नैकागुराञ्च अदे न्रे म्बेका अर्केव। ।ने पर वे ह्या स्तानु मृत्। । र्म्यानेत्यार्ववयायाः संस्वायह्न। विवायश्वयाः नामन्त्रयान्य। । देशजुराञ्चु अदे र्ये ज्वेजा अर्छेत्। दिषराठी ह्या ह्या स्तारी द्वाने तार्यवायाया क्षु क्वायहून | विस्तिन्व क्वा क्षेत्र व्यापी |

स्थान्त्रात्र्वरायद्वरायाय्याः । विद्यान्ताः कृत्रायाः न् नात्र्वरः व्यक्ष्या । विद्यान्ताः कृत्रायाः नात्र्वरः व्यक्ष्या । विद्यान्ताः कृत्रायाः नात्र्वरः व्यक्ष्या । विद्यान्ताः विद्याः व

[B]र्'ग्रेंश्युग्'र्र्'यांश्चेश्रंद्'ग्रुर'] । २८:र्घर' **इंतर्य'न्ग्र'क्र्यं स्थळेय। ।**ह्विन्'न्'क्लॅन्'बेन्'कुन्'याक्नेश्रा 15 त्रस्या । त्रहारा । त्रहारा प्राप्त स्था । त्राप्य तर्सेवर्शनरातुःवै। । इतात्र्ये रातायात्राप्तव्यव्यविता। । विवा মন্দান্ত্রন্'সুন্'ন্মা' বিশ্ব। । একান'ব্ন'ন্ন' ইন'। त्यं पर कर् ' मुंब 'बेर्' पर । । व्यं पर पुर दुर तस्र ' पर देव । र इत्यं ৪ট্র মন্ত্রকাবিষ্ঠ মন বিমে বের্লা । ট্রিন্ পাইকাপ্তরণ গ্রন্থ গ্রাম কা प्रति । देश'ग्रुप्य प्रथा गुव'ग्रैस हे' पर्युव'ग्रे भु'प्र'व' प्रसत्यातह्र विष्ठां द्विष्ठां द्विष्ठां विष्ठां विष्ठ धुना-प्र- भ्रेर-पानुका दकार्यर-पालका निव्यापानिका की वालु पान्द्र **ॻॖऀॴॶॴज़ॴॾ॓ॱॻख़॔ड़ॱॸ॔ॻॕड़ॱऄॣॕॻॱढ़ऀॱऄॱॴॻॖऀ॔ड़ॱॻढ़ॎऀॱख़ॖज़ॱ**ऄॖऀॸॱढ़ॼ॒ॸॹॻख़**ॱ** <u>५०८:५८:१५४४:५४ द्वेद क्रियायाय में ५'५'२'याय हिरा हरा रहारा वेद्या </u> इति ने निर्धेश्वर्यं केवी हिन्ने । अस्ति महिवी दिवा विराह्मे पर्दा ヌテベロルがダイギ!

यंश्रं गुं रुं । हे पहुंब श्रे तार्या प्रें व श्रें पा ह्या श्रें व श्रें या हि या हुंब श्रें ता रुं व श्रें या रुं व श्रें य

क्रिन् सब्के तक्ष्यां विषाञ्चित्तः न् विषय् विषयः विष

हे मु अ इवराय खुवा तहताया । चुवा कुरायक्रा सम्बद्ध हुन् इति । स्तायम्ब हिन् गुरु हुम इस संस्ता । सुस्र हिन न्यायार्श्वेद्रश्चेद्र । श्चिरःश्चें प्राप्तिः क्षेत्रश्चेद्र । श्चेत्रायार्थिता रूर्ध्वरक्षेभेक्ष्प्रा ।तुःवर्डवःर्रवार्यरिद्वेतुःहर्ष्य्। ।र्येः क'रूर'शेर'गविर'यवग'र्षर्। । ह'र्थ'क्यनेशकुर'वव'र्षर्। । **षवायन्यान्यसम्बद्धान्यम् । । स्टर्यक्षान्यम् । भि**व। । नशर्षेव कन न् गुन्य स्थान सुराय हुना । नारेश हेवा व्यन्यत्यविष्यत्रेचय। । १ ते स्यम् विष्युत्र तु न न में भेव। । व्य **इ**सम्बद्धाः विश्वास्त्र विश्वास्त्र स्था । विद्यास्त्र स्था । स्यावेगातम् नामान्या । मान्ययानमा सु व सुन्याया विश्वाप्ति विश्वाप्ति । विश्वाप्ति क्षाप्ति निष् व्यवस्त्रीयत्रात्रीयम् प्राप्ति । विश्वास्त्रीयम् प्रवत् दशनवन । भाने सूर नवता क्षेत्र के भीवा । रर वे वस के विर दशनसूत्र । प्रण्टग्राग्यरपेशर्म्याश्चरः। ।श्चर्वार्न् परि'इससे'नेया |सेरङ्ते'यतुन्'य'नम्त्रीयानमेया |इसावर्त्ते राता **इ**ॅर:इ**र:पॅ**न'ग्रुन:बेन्। |पॅन'ग्रुन:ह्रग'पर्डेर:बेन्'अ'ईन'। | ब्रॅन्य नेन रूप हुए भे ने सर्र | | न ने सहा बेर पर त्र्ने न सराय। | ग्निराप्तर्ष्णे स्गाप्तम्यान्ते प्रास्त्रान्ते । । व्यापित्र प्राप्त विद्वात् । मैया विषानते महिन कुन पर्दे व पाया विषय मनक हो संस् अर्डे,न्। । न्रे क'ङ्गन् श्रेन् नि राम वि स्राय हें व पाया विवादवादि श्वाह अहिता हि से स्या ने सहित विवादेया । यामा सम्माद्या अनुसार । विवाद वाय हाया बॅब्यार्बेटः। धिब्यन्यः न्युकः गर्दरः द्विनेत्रः। । तर्वेतः त्या शु 'ब्रुं र पाया । शि 'कु याया पाय दे र श्रेन् 'या ब्रुं र । । र या या केन् रान्म्बायक्षायक्रिन्याधिव। । यहेब्याह्ययमहेब्याधिव। । न्गर्रां कॅशलान्ग्रापित्। |कुन्पां कॅब्रॉस्चक्रां प्रेत्। | र देशकर व कर देशकर व कर व व व विकास सम्बद्ध विकास विका ते। ने'गुब्द्रंसबंदरनेब्द्र्ह्रकेपरम्बद्धा ने'बेब्द्र्व्रियरविर्धेष् **८**न्देश्वश्चरत्राञ्च ।

चर-दुः के व्राव्यात्रवा व्याच्यात्रवा व्याच्यात्रवा व्याच्यात्रवा नैसागुरः न ह द भूँ न या झुर या पाय न या । ने द या तु ता या या रा पक्ष या या । हु-दर्म द्वे सुन् तर्द्यापन्। । पर-दुः हिंद्य यहेदा हिन्दे रेट में। । হ'ঝম'ব্মু'র্মির'য়ঀয়'ঽয়। | देश'ग्रन'सु'र्ळ'झूनहा'स'सबहा | <u> ने'वबार्वे रात्रायरा पङ्गापण। । ५ मार्थे वे रातु' वे वार्थे के। । पर</u>ा **तु**'बेर्'**वरव**'बेर्'प'द्युर'। |घ'बर द्युर बर्दे'ख़ुर है'वर्द्र। |देश' | 一一一一一一一一一一一一一一一一一一一一一一一一一一一 はりが、水水の、地下され、ころった。 **४ शया र्वे वर्षा में इस्या १ वर्षा १ त्रे अस्य १ वर्षा १ व** য়৾৾৾৾৾৴৴৻য়য়৾৾ৼ৸ড়ৢ৾য়৾৸য়৸ড়৸ উঝ'বাগ্রদঝ'নাঝ। इत्यामञ्जेन्तगुरस्न्यास्यायायास्या। ह्रान्स्यामञ्ज्या मदाययसूर नेवायर सूरा है। | नेवास नेवास निवास नेवास निवास निव न्त्रायाम्बन्यान्यान्यान्यायाः संस्थान्यानुस्तरान्या २*न्रा*कुतुःन्वित्तुःविनातिनुनायःनेहेःमर्द्धत्यःवर्द्धनायुन् ब्राञ्च अति बर्दन 'राम्बबरा' ठन 'र्दे बर्बन 'रा' विंव र'त तुन देन 'ह्रवरा' *ढ़*ॻॕॗॗज़ॱॺॴग़ॖॖॖॖड़ॹॖॏॱॸॖॖॖॖॹॹॶढ़ॺॺॱऄढ़ॱॹॖऀॱॾॕॹॱॸ॓ॱज़ढ़ॸॱॻॸॱढ़ॖॱऄॸॱॻढ़ऀॱॱॱॱॱॱ ผ*ষ*ॱॸॖॱॾ॓ॱॻढ़ॖ॔ॺॱॻॖऀॹॱॺग़ॗॸॱढ़ॸऀॱग़ॹ॒ॸॹॱॺॕऻॗऻ

पश्चित्रः स्वा । विद्यान्त्रः स्वा विद्यान्त्रः स्वा विद्यान्तः स्व विद्यानः स्व विद्यान्तः स्व विद्या

स्वाकुण्विष्यम्बादह्वक्ष्वः । विष्याम्ब्राह्वव्यम्बर्धः स्वाकुष्यः । विष्याम्बर्धः स्वाकुष्यः स्वावक्षः स्वावकषः स्व

होत्। विश्वास्त्रां वद्यावात्र देश्या **।** नर्भेश्यत्र्राधन्यविवा र्वरतुः य**र्वेग । येर**वारा येर पर क्षेत्रा तुवाव। । तन्नवातुः क्षाः म् शुक्ष विद्यास्य देश । विश्वरा मृशुक्ष दिस्य दि भूत हो स्व ्रेष्ण_{र्श्व}ष्ण्यक्रम्प्रतिः ङ्षष्ण सङ्घेष्ण । स्रायतिः **स्ययः ग्रीयः** । स्रायतिः स्वयः ग्रीयः तर्म्यः नेशव। । तिर्वरमारमा ज्ञानिप्ता परादेश। ান্ন'আইব'ক্টব' हु:सु:ल। । मन्स्रवारमः न्यायते हुः सेमः मर्म । न्नः पार्ट्वे सेनः श्चित्रं तमुन्द्रकात्। विद्यापदि क्रें वा व्यन्देशायन्य निद्या नुषुरक्षप्रवा नुःवाद्ववराद्द्रव्यायेग् वर्दा हिन्धरहेर्दे दे न्क्षाक्ष्यप्रतिन्द्रात्यायम् रूट्ट्रा । हेः पर्वत्र्त्र्व्यायम् क्षेत्रः क्षेत्राधिवःबनः र्रेशः वृत्रश्रार्देगः यश्चैशाने दुष्या यन् यत्येत्यप्रदेशन्य द्राराणः **स्थानु बन्दान् नराव याळे वा या ग्री मा क्षेत्र मा ग्राम्य के के दा तु या मा में कें वा या गाम** मुलानुःकृत्रव्यव्यक्ष्मानुःन्न्। क्ष्यायम्य। क्षेत्र र्ह्सारा इवनाया भुर्मे अर्थेत १८ त्रा विना छ। या प्राप्त विना स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स ह्यवानुव्यवानु प्रवेशिन् भीनासु । स्वाहिन् । स्वावानी के वानेवा वा वरापर लु । ॥ <u>५८. चुर्माचुरम् इ. पर्वेश्यीश्वर्ये स्थान्त्रः प्री ।</u>

प्रश्चांत्रम् विश्वांत्रायायम् विश्वांच्याः विश्वांच्याः

क्रिया-प्रकृष्णकार्य-व्याप्त्यः व | याक्षेत्रः प्रक्रेत्रं ग्रीकामा स्वाप्तः । ।

क्रिया-प्रकृष्णकार्य-विवादा | विवाद्या-विवादा । विवादा । विवादा

| इंदर्भरामग्रामियम्। सामरा इयाहेग् हेरासूरायानेयात्। चु'नरारा कुन' तु' सान कुन्द्र | | न्यं राळन् 'न कुनरा पराया 'रायन'। गुरुवेर विद्यां वेर वार्केर वा |おがけがなるなる。 ५'ॡ'च५'छैब'अ'र्ह्र५'व। ।८व्रं'प्रॅ५'मञ्चमबाचबन्या'यायरः। न्'क्षु'नर्स्व'र्म् यायानहरःव। |পুৰাষাৰ্শ্ৰমেশবাৰাৰা মান্দ্ৰ। न्'स्रेरोगरा'स्याय'श्रुन्रान्। 15' क्षुंन्रग् कॅन्यान हरन्। | श्रेशन्त्रयययापद्यम् । यायनः । । । निः स्रु यहरः भृ: सर्हेन् व । श्वित्रार्थेन् : नु: रे: यत्रात्रात्रात्रात्राः । विद्याया शुन्त्राः प्या <u>प्रि. इश. केश. श्र</u>ेश. हे। हरानुन्दरम् मण्हन् वहाम बहागुन् ग्रम् है। हे नर्द्ध व की ख्रा हिर त्य न राष्ट्र तार न न न न वर्ष न वर য়ৢৢৢৢৢয়ৢ৻য়৻য়৻য়য়ৗৢ৾ঀৢ৻য়৻ৼ৾৻ৠৣয়৻য়য়৻য়৻য়৻৸ঢ়য়য়৻য়ঢ়য়ঢ়য়৻য়ৢয়৻য়ৢঢ়ঢ়য়৻৽ঢ়য়৻৽ सुराम्डिम द्वाराम्भिन हैं। । सुन्दर्स सुन्दर्भ न्या न्यर द्वा न्यर おたなけれる。新大米 | |

वर्मवंब्रखन्यत्मानि द्वा

ब्रॉगुर्ड। हेन्दुंब्रियान्याप्ने हेन्दुंब्र्यान्याया हेन्सुन्न ब्राह्मे सेन्यां व्याप्याया प्राह्मे सेन्या हिन्दुंब्र्या हिन्दुंब्या हिन्दुंब्र्या हिन्दुंब्या हिन्दुंब्र्या हिन्दुंब्या हिन्दुंब त्रेंत्र'पति'न्न्'त्रन्'द्रवर्ग श्रुंत'प्र'व्यात्रात्र्यंत्र्यस्तर्म्रत्येन्न्वर्वश्रुण र्सन्नि । हे'नर्ड्य'न्भ्यंत्र्र्युन'गुन्यक्रं समस्योग्री'त्युसन् स्वा पत्रिक्षे। **रा**र्रावेदाकुत्वित्रित्रित्वेदानुत्रेदाकुत्रित्वि য়ৢঀৢয়৻৴ৼ৻। १ৢয়৻য়৻ঽয়ৣঽ৻য়য়৻য়ৣয়৻য়ৼ৻য়য়ড়ৢৼ৻য়য়৻য়ড়য়য়য় **क्वीं त्यायानुः वर्षे मः महान्यानु स्ति । स्** हे पर्ववर्ष्यम् स्वाहित् द्वयरा ग्राप्य स्थित्। ग्राप्य स्वाहित् स्वरा हे'यर्ड्व'ग्रीरा'देन'द्रवराताडि'ग्रुपति'रे विन्'ग्रेग्'वराधित्। है 'शे'त्र' क्रेंश'त् 'पॅट'प'धेर'ष्ठ्रप्रहारश'पश| विंद'रे| शु'हे 'स्र्ट् 'छ्रप्र भित्र'त्रेर'प्रथ। हे'पर्वुत्र'ग्रैस'म् क्षे'स'रस्यप'तुःप'भित्र'ग्ह्युम्सप्य। षान्तिं वारी दें वानान्या है 'शे न्नायक सामसाम ने हिन नाना ना ना कुर व्याम् व्यापाकियाया क्रिवाया ने स्वापायक व्या ही। बेर्। याःबंबंबंकेंदुरः देर्'र्वेब्'र्येरःर्यरः परिरेधेवः पत्रा दरेरः **ॐ्र'द**'दत्रे', शुष् वर्षके देव देवें यत्याञ्चराग्रीः पञ्चव'त्रहेद'श्चे'ताञ्चप'परायुर्'परङ्ग्परे देरेषेव। र्भवामा इसका स्टर्स प्रमुप्त में कुला पुरस्त में प्रमुप्त ক্টিইমান্ত্রিব্'ব্'ব্রন্'। ইন্টিব্'ব্'ব্।এব'র্'র্মন্মানীবা'বাগ্রনমানা विंदाने। क्विन्विवेदात्राचरतिव क्विन्विक्षेत्रात्यावानुः र्देद कुर्पालेगायतुग हिंद्रास्थळरा ठवालेगाधिवादा हिंद्रांद्राहर

ন্ন। র্থান্থ্য নিম্মান্থ্র ব্রেন্ট্রান্ন নামান্থ্র বর্ধ নির্ক্তির বিশ্ব বর্ণ নির্ক্তির বর্ণ নির্ক্তির বিশ্ব বর্ণ নির্ক্তির বর্ণ নির্কের বর্ণ নির্ক্তির বর্ণ নির্ক্তির বর্ণ নির্ক্তির বর্ণ নির্ক্তির বর্ণ নির্

वास्त्राक्ष्म हिर्म्पत्र विकास स्थान क्ष्रिय स्थान क्ष्य स्थान क्ष्रिय स्थान क्ष्रिय स्थान क्ष्रिय स्थान क्ष्रिय स्था स्थान क्ष्रिय स्थान स्थान स्थान क्ष्य स्था स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान

क्ष्यरातुन्यराधी |बेर-फॅरराज्यन्यन्यरेजीयर्ग बरपरिप्रग्रदक्षिपा । है सेरी ग्रामा संवाद्वीय । सन न्वतः र्वान्वेशञ्चर्परिक्षे । वित्रक्षं उदार्थित । मग्रिय केन् महत्रायव्या ध्रियत्य । मन्यन्गरहे से मुक्तिन। रेश्वम्।त्यत्रः वृद्धे वृद्धाः दे। । त्या क्षत्रः यस्त्रः प्याप्तः वृद्धाः । **रा** प्रथान्य प्रकें हुं 'के प्र| हिं हे न्'क् जिस न् न न न न प्रयो इवरान्द्रतरम् अरावश्वरापिय। |दिशेषाररापाञ्चाकेपा |वीत्वर ब्रिंग्ड्रेम्ड्रिंप्पदे। । वृत्त्र्प्त्र्युप्याद्यार्वेद्र्प्पीद्। बेर कुग यहार परि । (८ विराम देश अर्थ यह या पिदा 15 इन्तेवयान्द्रेयायन् नन्त्रम् न्या । व्राक्षेत्रया म। ।तहेना हे दाञ्च तारना यामय। ।तहं या श्रेर रे जुला है से सदी श्रिम्बन्याकुर्यान्यस्य स्वाध्ययः उत्। नगनः। **क्षे** त्यञ्जून् परायस्वास्य प्राप्तः । । वित्राः सूर्यम् स्वर्यः स्वर्यः । न्यः कॅराचेन् वंगुव्ययव्य । विचेन् स्वर्यान् केप्रा । एय हुँ वारा श्राक्तः वावयः दुः स्ट्रा । श्रीरः प्रमाहः तसुता पर्देः ताः कृता । ব্রাবার্ত্রিকার্ম। সুন্দ্রেম্ম প্রব্যার্থ র্ম গ্রাই নানস্থান্ম দ্বী **ह**भागवरापि देश्वां क्या शहरवश्या गर्वे न'प' वे न'पार वर्ष न'पत्य। ब्राप्ट म्ब्राया व्याप्ट व्याप **है।** ८ पश्चेतश्रयाकं पश्चिषेत्रात्र्यात्रह्टश्यात्रे हे. पश्चिषश्चिक्तात्रम्

हे व याया हा के हो दे राज्य। हे पर्व व श्री हा स्याप्त या प्रहा हो ता नश्चन्यं र्राय र्राये श्वेम् तिष्वार् तिष्ठम् निर्मा । बी'त्याव। वित्रत्राहरी क्षेत्राची मानवामालवानु क्षेत्रा ग्रुत्यापय। मिन्दारे। तयाग्युतःहुत्ये में द्राह्मया में त्राह्मेर्या । हु 'तश्वात्यव व व व विं र र र जुवा व र र र र विं वा य व र र व व र व व र वे र बेब्'हॅन्'र्स्स'यस्र-'ग्रॅन्'य'न्न'हुन'रा'ठुर'व्'वे'र्स्स'कुः'न्स'र्स्रेण'न्न' तवायायका ह्या पर शे.उटा। देशेवार शे.व.सें.पया हे तस्तार ग्रव इं नेर। विं हे से तार्मन स्रेर रु सर। हे नईन र्मन स्रेन हैं ब्रॅंग्स्याक्त्रं व्यापा है सेते जुर मराहें र बी खर न ते वर मर्ने र छेव' र्वा विनानी प्रत्यहतात्व। विंदारी हिन्द्रवर्ग स्रिंग होन् विष्या ५'यद्र'दरि' दुष्या वा सु'त में चे म हे म ईव में ग्रे ख्या देश में द सें ब्रेन्'न्'ब्रुन्'नरा। हे'नर्ड्न'क्रे'लत्प'नरा न'त्यस'र्येग'रा'त्र'लुग्न ব্ৰাষ্ক্ৰ-মেঁণ্যেষ্টানেষ্ঠ্ৰী うちずぼう ステンスス है प्रविद क्रिंग्न् म क्रिंग्न विद्युम्य में विद्युमें दि स्व प्रविद्या पहन हैं। यर तमें व्रं व्हं र तमें व्रं परि पर त। य में पर ने हे पर व्यं के वागिते। ब्नर्स्ट्रेस्य चुन्स्रे। देते. संस्ट्रेन् कुर्म्या स्वास्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र वंब्र'र्सं हंब्र'र्बेर त्यां वेद्र'व्यां के 'येदे' व्याः 子」 一等に対で四下であるが、大利の一方であるが、当れて、日 **美口袋す** क्रींब्राव्यव्यन्दे हिन्दर्भे वुराधायार्ग्य महार्यायय। मिंद्रे न्यम्ब्रिन्द्रस्यकेकेत्रः न्यत्विष्टुन्हे। न्द्रः युन्धे इत्यत्य्

सःस्ट छेन संविषानी हरू सः यह न प्राप्त संविधान मुख्य चुन ∄रा <u>हे</u>'न दुव'ग्रीस'ग्रुट'रॅव'रॅव'रॅवे'ग्रुट'हेते'वर वि'रट'ने टे'हेब'व ग्रुट' दंश विना पहुषारवा यन विन देश न्य न प्यन हिन हुत हे सव रेल्यन्ष वृत्र कुतायम् कुलाम् कि छ्रा ५ ५५५ हत्य त्यन् चेरा पाय हे पर्वत्र्ये लावत्र। विश्वाप्तर्यं क्षेत्रं प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प्र प्राप्त प ঘ'ণ্ট'ল্লহাইন। ট্র্বি'ব্ব'ল'ভল'রপ্রর্বান্ত্রিব'গ্রীঝাল ই র্লি'নম। है⁻से-मधी-न्यमधीन्। हिन्-प्रस्तान्यस-न्यप्र-च-रंगन्म। नेन्-रताहर्मानिक्ष्या जुन् की के या गुन्न की स्वाहर ही र। है 'तह ता यह न महार्हेन् नहित्या हे पर्वद है रेशेर वृत्य हैं नहित्य हैं प्राह्म से पहिल्ला है रॅंड्'र्स'नेति'न्नर'हें ग्रांड्'प्रॅन'य'यत्रा हे'पर्ड्ड'श्री' व्यत्र त्रपंत्रे व संवित्र मानी ह्यापिमानी प्रवाकी वापी में स्थाय प्रमुम्याने प्रवास है स ট্র্র্ব'গ্রীঝ'গ্রুব'নেই'নেইবে'গ্রীঝ'নীবা'বায়ুরঝ'নামা ন্ত্ৰা ক্ৰা <u> श्रुट्यं विश्वायाम् स्यापमुस्यापमञ्</u>च्यापमञ्चे प्रयाप्याम् র্মব্' वयायायराधीयाधीवाद्ययाधीपावन्षान् देवापादिवाधुनापया र्में दुनः चन् 'तृः क्रुेन्का तुनः नृनः 'तृनः 'यनः हुं 'तहुत्यः तश्च वृद्धं 'चेनः 'वेनः 'वेनः 'वेनः 'वेनः 'वे *্*বি'ব্ৰ'শ্ন'ন্থেন'। ই'নৰ্ভ্ৰ'ইৰ'শ্ন'ন্ব'ন'ষ্টন্থ'ন্থ 45 है सेति झूँ खूँ ग्रास्य सहस्रायति से स्टर् देगा यगस्य प्रस्य मुकाकर पेपान्ने प्राप्त में बादाय हुन। एक। विष्ठी बादर प्रदेशिया याजा देग'न्य। हैन'ने व्याप्तरायकान्य त्यापय। व्याप्तराय व्याप्तराय े भैग त्यार्थेग्'तर्मयायाधीव्'चेर्रामायया स'र्मेर्'केव्'में की गृहुअ'

इंअ.बे.ब.र्.लट्यारा.बेबा.य.झबा.य.इंच.ब.७८.दे। दें दाया वी वा मेंवा উग्'ग्रुन्स''। ট্র-'রेম'র্মন'। ই'নর্ত্তর'শ্রীঝ'দ্রমানপ্রনঝ' व्यान् हेन्यायय। विश्वास र्वेट हेप्य ह्य राष्ट्रित वित्र वित्र विवा पतिःवा ह्यव्यायं र्वेदः रूटः हे 'कुंदुरः वा न्वा वा ळंरः त नुवा रा। कुं कृटका बर्द्रकेषवायद्वाष्ट्रस्यवा विवामम्बद्धार्मे देनेन्द्रास्य ळग'रा। ५'होर'र्नेग'गहुररायरा। ६८'रे'हॅिं५'ग्रैस'नरुग'नेर पर्वा इ'त्रह्मात्र व्यव्यक्षेक्षे क्ष्या या द्वेत् प्राप्ते व स्वाप दिवा ज्ञत्हन्द्रन्त्रस्य प्रति स्व वृत्त्र क्षेत्रेत्। न्त्रेय त्या हिर स्या महारक्ष पत्र। यन विराष्ट्र र की ने प्राप्त विषाणम् व व व व व व व व व व व व व व व व यन् हे पर्द्व मुंचि को सेवा प्रि दे स्ट स्ट का सहन प्रक्रिक से শ্ৰম **८सःग**६षास**र्भ** हिंद्र'ग्रीस'हिंता'केषा'नेर' परा। हे'यर्व्य'गुरा द्यातम्बर्धेन प्रत्यात्वा क्षित् क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप हिन्दर्वे वाको सेवा देवा सेवा सेवा स्वा वाह्य न्यक्रम्युव्यस्य विवयम् মৰ্ভ্ডৰান্ত্ৰী ৰেমাৰ্থা। पतिः इतार्वे रापतिः इता प्राप्ता हिन् व व स्तानि हारहता ইন্ন'র্বঅগ্রীকারী প্রন। নকাঞ্জনকাত্রকা ইমেণ্ট্রকাঝব ব্রাইন্'গ্রীকা न्मिन्गु गुर्ने के सुन राम्र तिन् हो। त्या क्षे क्षेत्र व्याय प्रमानिक स्वाय प्र षरः गरः त्रग् ग्वत्रः प्रायाः द्वेश्वाव् प्रवादः प्रवादः प्रवादः विदा प्रवेतः वादिः विदा **ब्रेन्'नब्रन्बद्यास्यायायाचिन्'नेब्य्यस्यहे'नन्यायाया।** 并邓 원리·통《·영리·원드·I वर्षेत्र'तत्त्र'ग्रुट्य'व्याक्रेट'व्याप्रहेराध्य विनयहेरा हुन। नवरा ८ नुगा गुरु त्या द्यारे गु य या या गुन <u>र्नः र्नः छनः हेरा छुनः पः ने त्यः सं त्यः स्वार्यनः स्वार्यनः ।</u> नेते छे या ॅॅं व'र्घे वाहे पर्छ व'कु तापर | रवाह्य रक्ष वे | । गृत्व र पर हे पर्छ व' र र ब्रंद्रंप्वंक्ट्रंप्वेश्रह्रंत्र्युवाधीःस्यायट्रंत्य्वद्रात्यय। हेरद्र्वाधीः बर्दर्दाः इयश्दें यदं रहे प्वित्व सुरुप्त विश्व स्त्र व्याप्त विश्व स्त्र विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विषय हिन्दर्भाक्षुः यायाहन् हेरहे। स्वायक्षाळे हिन्दर्भाकुः यायावन्द्रत्त्र् तरिते छेत्राय रें श्रामान न का है। येति हे सं र खु खेन पा व हु न का पा दे र है से <u>र्नराम्येत् केर्यस्वा वेर्द्रयाश्चराणुराश्चर्यम्यत्त्र्यः स्राप्त</u> हे'नईव'गुरुने'म्नन'नुरामसङ्ग्'हे। हिन'रनाव्यरानव' बर्हेग मे **न्द्रश्जुन'इन'ए'।श्रेबशकुर्न्न्वस्यइन्न्क्रहे।** ने'बईंद प' सिन्द्रिश्चराञ्चर्भी यहन्यान्यत्वावान्यत्वायाङ्ग्रीयान् वेतान्यान्यान्यान्या हुँ ५ कुरोबरा ५ ८ ८ ते से स्वयं भाग सन्दर्भ के **प्र**ा ই্ব' ই\বা' <u> न्राक्ष्यक्षात्रन्रेषेन्।</u> श्चरायात्र्यायत्र्यानुपत्ताय्वरमः। त्रवाष्ट्रेत्यक्षेत्रक्ष्यः क्षेत्रक्ष्यः हित्युः तेष्ट्रक्ष्यः हित्युः त्यात्रक्षः वि **५**ॱढ़ऀॱऄढ़ऀॱॾॆॱख़॔ॸॹॖॱॺॺॕॗज़ॺॱय़ॱॿज़ॱॾॕॸॱय़ॱॺॖ॓ॸॱॸॕॗॱऩ॓ॸॱय़ॱॺ। <u>बुैश्र</u>नेक्षरः वत्राचुैश्रः चवेश्रानेक्ष्याप्यस्त्रः हो। । नितः संस्वानिक्षः वि

\$'য়ৄ৾৴'৸য়ৼ৴৸য়ঀऍ'ঢ়'য়৾৲'য়৴'য়৴ঢ়৻ঀয়য়য় क्रेब्राचर्ड सुदिः हा रटश्रं श्रंटक्षे। व्हॅं स्वंदिक्ट वेहें युव्यक्षेत्रवश्यानितः E'A'बॅब'हे'ब्बाबहित'यातर्जे'च| हे'चर्ड्य'ग्री'तु'श्चॅच'इवर्ष'ग्रीरा'नई वर्ष हे' पर्वत्राची व्यवस्य विषयित्वा प्राप्ता न्या कुरायवा हे' पर्वत् म'ल'यार' महीमकार्सर'। हे मर्ड्द'न्'तुर'म् मृत्वुग्राद्यसम्दर्भाताया द्रा भुष्यपः तत्त्वराद्यादेवाले । यत्त्र व्यक्तियास्य स्यापः स्याप्त्रेतः गुरुष्ट्रयः । । । । । । । । । । । । । । । हे'मईव'ग्रेश'हे'हरराविष्'यहं न'वय। न'हेंब'न्न'ष्ठा म्हेशम्बाम्बेर्वे व्यापस्में अवुवाधरः भ्रें समायार्थे सात तुन बातकरातुःकानान्ता। हेम्बईदाकेदार्यश्चारात्रे मृतानाहिन्या व्यात्रत्रस्त्रम्ते म्मिन् ज्ञान्यस्त् द्रात्रस्त्रम् क्रिया শ্বন্ কিন্মে हे 'रोदे के र ये पर्याप 'त्र' है आ न र पं 'तु रा य हुआ तु हु है '''' ''' नेति हे हे नर्डव मुर्ग कुन प्रति हा या स्वरा न् न ति सिन ले स्य चतिःस् :संग्रातिरः ५८: पठरापः ५ ग्रेराचते :स्तारु । प्राययो पत् ग्रायः ८ नुग प्यास्त् खुद्य नुः गहे ग्यापय। स्प्याय विस्यापा विद्यापा विद्यास्य म'विव'रु'न्ग्रेर'विन'र्खे'प्रम्युर'र्ह। । नेदे'ळे'व'र्स'र्घव'रुन'प्पन'र्हे' রিবি:অগ্রনাব্দেশস্থ্রনাস্তুন:নাননা इं. पर्वं बं. शुंहिण या हेते. ज्ञेताया मर्झर्'रार्व्वयायात्रत्यवाक्षराक्षेत्रकेर्त्वाचीतः हे त्रेति क्षेष्ठं वावावावरायाः।।। र्वितः न जुला प्रः देवा वारा वयवा है। प्रवद्शा #0'6'\\ हे

য়৾৾৾৽ঢ়ৣ৾৾৾৾৾৾৾ৼ৻৸৾য়৸য়ঀ **८.जाबकापरी अहटा श्रावेगा में क्रीटा अप्तार्थ स्थार क्रीटा** <u> हे पर्वत्र की नियान राष्ट्रिन 'यात हे ग' हे न'य नै ये 'सूर्य</u> 출자: 및도 **디**티 हेराशु'यहर यदे हुव र्केट मेहु 'दहुता हुट न्नर 'दरुव' वदर'। र रर <u> बुर्ज्ञ ने रायर्य या राष्ट्र रायदाय हैं गृगि न रें राष्ट्र रायदि ग्रास्त्र गृग्ण</u> ह्रवरान्तः हु 'तह्नुतात् गुर्वानुताः के देश में ता द्रवागुर्वा है 'सेरी' हे 'सेरी' **ऍॱॾ्रे?र्प्यव्यं नेशक्वेश्वेश्वर्पयात्र्र्यर्थेश्वर्पर्यः वर्षः ग्राग्वर्यः ""** ब्रिंन्'मर्जेन्'पर्व'ङ्ग्नवश्चेन्'दुर। न्'सब्'रकानेन्'ह्रबा तपुक्तिया प्रदेश ही पाश्चिता मूर शास्यशामा वेट पा विश्ववशास्र पश्चिता वयायातरवराक्षरायान्राहान्यान् **B**T'~'T' तरिते सप्तरत्में प्याप्तर्दि तुरायाया महे व द्रावर्में प्रेया प्रायस्य *ढ़*Ҁऀॱढ़ॗॱतुॱऄ॔॔॔ॱॖॻढ़ऀॱक़ॗॗॱॺक़॔॔॔ॺॱढ़ॸऀॱक़ॺऒऄ॔॔॔॔ॱॻऺॴऄॖ॔ॿॱढ़ऀऀग़ॱग़ॹॖॸॴॺॴॱॱ**ॱ** য়য়ৢৼ৻ঽৼ৽য়য়ৢৼয়ৠৠ

इत्। ।इतार्वे रक्षेतरस्यात। ।इतार्दे रह्यार्वे क् बर्। । विक्रक्रपश्कृत्यरस्वयश्चित्। । कुत्यप्रते के हत्यविग्दुन्। |र्नें हे तकन्ने हत्य विग्दुन्। |बहुदारहे न्वरारम्गुन्थ्न्ययि । सन्तिः न्वयिः सल्विम् नुरः। । वर रावार्दिः हताविषा हुना | वहतः हता हैं भगतन् यापी म'तर्भे स्वाविषा दुर्। । गर्ने न' दर्शन् ग' पति स्वाविषा दुर्। मेन्त्रवेन्'न्देग्रयः'ञ्यान्यव्। । इंग्रयः'तन्धिः स्विग्युनः। । र्दिन् न्याया केन् र्राते स्थाने ना सुन्। निर्म् न सुन्। रा सुन्। रा सुन्। रा सुन्। न्। ।हुन्यः तर्भे स्वयं नेषा धुरः। । शुक्यः त सुरः शुक्यः प्रते स्वयः विवाह्यता । इंद्रावेदायराज्यता । तत्रवाताति विद्या विग्रह्मा । स्रास्त्रग्रदराष्ट्रवादिना । इत्रदेरनगद महोत्रम्बुम्य प्रश्नि । न्यं ह्रेन्य्र दे धे दल होना हुन्। । हेन्य सुन् सेन् परि स्ता विषा धुन्। । क्रें म न्न परे या देश म झें सरा माना । वृवयायेन्दर्भेषे इत्यावेषा चुरा । इत्र पार्तेष यान्य स्त्यावेषा चुरा । र्गारः सुराक्केरः दुश्यम् राम्मुलप्या । इत्यार्धे रार्रा वीस्याविषा हुत्। वितारवापरिस्ताविषादुत्। स्तानेवार्रवार्यणास्तर मक्त्रवया । मन्यप्राप्ति सेप्त्यप्ति । मन्यवित्र न्याक्रॅबाम्ब्र्दापान्त। |नेजुलामार्वेनायदिनायदिनायेव। । न्रताक्ष्यक्रम् म्यो विश्वाच्या विश्वाच्या <u> इंत्रिक्षं क्ष्यं प्रत्यं क्षयं व्यक्त</u>ं क्ष्यं क्ष

鸟可治学学堂堂中的城内部的

मै कर्'शेर्'हर'। श्रुःयात्रायर'कर्'शेर्'पर्रे'शेरिरायाद्राः वृत्ताः बह्मायात्र'त्रे'श्रुंशेश्रशंभिद्र'तृ'यादे'मण्या श्रुंश्यादे'मण्ड्राय्याः लु'र्रावेश्वश्रायम् हे'यर्ड्र्य'श्रीव्यादस्यात्याद्र्यात्रे' महास्यादस्यादश्चर्यात्रेर्यायात्रुःमहेस्यत्रेश्वर्यात्र्याद्र्यात्रे

क्षेत्रग्'ठन्'र्न्रन्दरामरापानित्। । स.स.वाम्रामरीहरा **८र्चे रापरे। । इ.पन्न**्रेंग्'यश्चेंय'प'पविद। । ग्राच्या दिन्या नित्रस्यति हुँ रानने। १२ नुष्या स्याया व्याप्ति । प्रिन्यया स्याया विद्या । प्रिन्यया स्याया विद्या **ॅॅं**ट्रप्रदेश्चर्यदर्बे रायदे। । इ.ज्ञुत्राव्यात्यराष्ट्रप्रिं प्राय्विद्। । १५ पर मण्कॅर्फीइसप्तर्चे रापरी विषयपाकुप्तरिक्षे सेरापवेदा । व्यव्यात्त्रव्यात्त्रेत्रव्यत्त्रेत्रव्यत्ते । अव्यव्यव्यव्यत्त्रेत्रव्यत्ते स्टिन् मविव। । वस्य क्रिंमः ग्राया क्रिंमः मित्र स्थार क्रिंमः मने। । न्राया क्रिंमः हुमाञ्चरार्यामविद्या । तमा तशुरावेर्पारे द्वारात हुरायेरे। । कुर्न केव'र्राते'ज्ञुव'पतिव'तु। । वृवयाज्ञुव'क्रन'षेन्'पते'द्रसातर्धे र'पने। । हुर्द्वित्वर्षेक्षेर्रं प्रवेव। । इप्पर्धर्यपरेद्वयप्रधेर्प्यते। । इ बळेंदेविन्द्राह्य हेन्य सुराय देवा । श्चिर शेष्ट्रियापदे हत्या दर्शे रायदे। । ष्राप्तराया के ज्ञान पराचा प्रतिवा । सिन् गुवाया प्रयाप पराच स्वाप स्वी र यदी विराम्भित्रें विवासे प्राची विवासी विवास सतै देशयन रूप में नाम है नाम ह मविदार्थेगोन्द्रेशेंदरम्। । देवताहेरमर्द्धनाग्रीत्रान्त्राद्धनापातार्श्वे प्रा म्मारेश्वरम्ब्यान्यः हेष्यायाः केष्यत्यः पश्चित्यः यस्ति । सम्मारेश्वरम् स्वर्थान्यः हेष्यायाः केष्यत्यः स्वर्थः ।

त्ररत्हेन्द्रं क्षां श्रीकापत्रु पत्रु त्रा । मिकी यम्पन्न में क्षु गहेर। । चर चेर ग्रेर ग्रेर ग्रेस ग्र ज्ञरासुकेद। किंदिर-८८: वर्षेवा: वैद्यानह्य नह्य: तहा । ८:दे: वर्षेवा: सुरारे बिंदात शेव। विंदादार इंशिया यहा वहा विंदि स्त व्यव्यक्षिरम् हेन्। । श्रे ब्रन्स्य स्योग्यान्य न्यु त्र्। । न्ये वर गेरीयरात्रायः । इस्यायर हेंगायराय्यु पशु तर् । । र वै से नेबाह्यशुरुप्तरः। । इबाहरायते मृब्युं वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे वार्षे देश'र्द्र'गह्र प्रांत ने यथ। । भेगांद्रगांद्र ने : क्रांत्रश्च प्रश्चांत्र । । ८ ते कृत्रप्रकुत्रिंगत्ययर्ग्यापर्वेय। ।वःकृत्रप्रत्रप्रायकुर्यकु त्र्। । प्रतियान इंश्क्ष्णाप्तर तहेष । त्यर क्षे ति के पि वेश ग्री का प्रति । त्रभु त्र्। | न दे हे वेन में दाय न्। | व वया ने राधवात्रभु त्रभु । त्र । । नः दे देवाप दे रनः इता हुनः । विवयत हेवा हुना वा नहा নষ্ক্র'বর। । দ'বী'শ্বকাশ্রশ্বদেশ্র'নেইল । উকাশ্রদক্ষনকা रबाद्धर परि ह्याबाय। व्राज्ञाबर बाज्जुबार देवाया प्रश्नुपरि हें बाबेर्' देश_। ८:५८:१० बरायेब वे अस्य इब वर्गी क्रेंब या ५ में ८ ब वरा महार प्राधित सुर्य। रमानी ज्ञून मिंगानी सुर्से सं हुँन प्रामावन पुर्देशप्र दिखु **१**इ.५१ स्थाया ।

म'ञ्च'य'हे'नर्ड्व'कृव'ग्रॅव'न्न'। ।नन्ग'र्केन्यमदे'र्ज्ञेदन्ये

रे बुन । हुन्य हे ह न य रायान हर ह न राया । हन छन न हे या है य बर्द्धवराशु । वद्यत्य्ताद्वाराष्ट्रेराहेराहे प्राया । ग्वराखन् ग्राग हराया चेवरार्या । विन्देन् पृष्ठिराक्षेत्रं यह यराष्ट्रा । यने पृष्ठारा स्रियापा इं रहे वर्षा । विद्रारा पर्जेषा सुरादर्ग र्मे । ज्ञरार्मे राषा है का छै की बक्षक्षक्षत्रा । स्वायात चुन् कुन् पार्क्षर हे निया । तिवयान तिहेवान हि यतर्न्न्रं । इत्राच्ना न्वे राष्ट्रिश्च संस्थात् । इस्रान्ना नस्य **ह**र्वाःक्रॅराने विष्या विष्या हिन्द्र स्थान स् ण्वेताकुर्यायस्थाया । प्रत्येययायाया क्रयाप्त्रे प्रते वारा । हिंदासुः **हॅ**नबाबु:बार-६ॅन्'र्न्। |२'२ॅनवान् नेवाक्चीक्षं सहस्ववाबु। |८ न्रवा**नु** दिव'र्घके। | ह्र-रायनायानादेव'ह्रण्याहेरायञ्चनरा | न्तुन विभवता रवास्ताराष्ट्रितायाने स्राधिवारा विष्ववाहें वादा नेवा प्रेरा है **ऍन्:पर्व। मामायमानु क्षेतुमामयानुमार्चमानुवानेयान् शुम्या** मय। हैमईन्केस्य ह्यनेख्यान्य न्यास्तर्म्य हर्म्स तमरहे। यम्परमञ्जूमारमञ्जूमारमञ्जूषाया । मञ्चासहे पर्वत्र प्रमादि वर्षीय। ।हे न प्राप्त वर्षी में वर्षीया **हॅ**नका । ञ्चनःगरीः वनःवरुष्ट्रेनः राक्तेन। । नःनन्तरार्थेनः कुराक्षे मगुन्न्। । श्रुळेन्यद्राव्यवान्त्रेययेन् हेन्। । न्यत्यवायन् ह्रेन्द्रम्प्त्रित्यम् स्वास्त्रम् वित्रम् स्वास्त्रम् वित्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम्यस्त्रम् स्वास्त्रम्यस्त्र

हे न्न य इवराय द्वन तर्वयाय। । यन दून हेन न वेराकी न र में व। १ हर्गः कर् छि क्षेत्राध्यस्य अर। । इस हर्गा मे शुरा सहरा र स तिह्र्या । निक्षेत्रे अन्ति सम्बद्धा । तिने क्रिं स्वातु ना मन्या वी स्वात यन्या । ज्ञन्यह्नेन्यः स्वायः स्वायः ज्ञान्यः व्यायः प्रायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व ष्रिक्षिप्रस्रित् । विष्यव्यक्षिप्रक्षेष्ठा मर्द्धरकी सेसलात हैवार राजी हीता । सामेरलान हुना सरी रहा तु तहना। तर्भेश्चर्यात्पात्वाची क्षेत्रयात्माचा । हिष्यात्वयश्चितः उत्रायहेषा ক্টি'নন্'ন'র্ডমে'ব'য়৸ |র্রুমে'নেইম'ট্রমার্মিন্'নেইনেমর্রাস্ক্রান। ।৲' हु उद्भर में न वर्ता प्रमर। । तर्रे दें यातु न न न न में क्रें न पर न न । ब्रॅम्बर्स्यत्व्र्रेर्द्धम्बर्ग्यान्यार्च्यक्षुत्रेत्। ।श्चेंद्र्यस्रुद्धम्बर्धेन् नर्भेंद्र । इस्राधरम्याप्रस्याप्याप्याच्याः ब्रिन्तेर्। । १५% रम्भे वर्षाम्यम् ५५ ह्याया । १५५ व्याप्यायः चर्वाचीर्स्य द्वांतवाया । भूवियाप्रिवयाव्याय्य व्याप्रिव्याय्य बेद। । । বৃষ্ঠি ন ব্ৰাশ দুৰু ক্ৰী ন ন হ'ব। । বাহৰা ক্ৰ ৰ বৰ ব न् के श्राच्येत्। । रे दे न् श्रात् इस्तु प्रकारी पर्दित्। 17、岛、安山、 নহুল'নন্'নম'ৰ্ম। । দেই'ই্অ'ন্ত'ন'ন্ৰ্'ন্ৰ'ন্ত'নৰ্মান্ত'নৰ্মা ब्रॅग्रय: मुन्दारळें ग्राय: प्रेंट क्रुं बेट्। व्रिंग दें द्राय है शक्ती पर र्नेंद्र। विषयापरीयः क्षेत्यायायायाया विष्ट्रीयायायायायाया वेता । न'द्वेष्ट्रन'वेन'कंबान्नुरम्ना । तन्ने'व्यानुनन्ना'ने

हॅन्यायायाया । १ नया नेयाययाय हेन्याया सम्बद्धा हुन्। देशवु पासुमानमा ह्यासेनाहुनाहुन रकाइनापानुनकाहुन षळन् हेन्यने भेन। र्राया द्वेन १६ व छ न । स्वाप्त हो। **ह्याया हे स्थान न महाया** स्थाप क्षा स्थाप के स्याप के स्थाप के स **बहेरापर पुरा पर पुर्वसपर अधितह्न क्षेत्र अर्थेन पर हेन ए**ळेट पञ्चेयवारावा। व बरावबराह्नं ग्राष्ट्रन्।याः स्वाः देशश्रीवाह्नेवा तत्वाः দীকা <u>দ্</u>ষেত্ৰপূচ্জিণ্টাইজানামান্বান্ত্ৰা हिर्-चुर-ळर्-'ग्रीकामन्दर-र्-दुंकामार्झ्यकानेष रामायर-स्रायायराचते हरावरा अर्ने कुन् की नेशक अन् कुन की साम्चन की से पा है रा स्रात्सर पर। पिवर रे दें स्राया मा स्राय के न हार ने प्राप्त पिवर में स्राय न् शुररापदे न् शुर छन् पर उव द्वाराय पहेन् पर ज़बराहा हत्राचर्या तिरामायार्ज्ञे प्रियापान्मा प्रेंद्र हवातनी द्वारा कुनीया हिंद्र'कुर्द्रदे न्नु'या य राध दे 'न हुन् प्रदे दे 'कु रा देने न ক্লীবাঘার্থব। नशुम्यायय। रयास्तराया। हे पर्द्वन्या न्नायायरामसहि सूर् महारुवाराने इयरायन्य तायवरायर (१ रूप्तियाय) ই'মর্ব্ব' श्रीकाञ्च अति गाडीमा। गाडीमामाङ्ग क्षि क्षि ग्राम्य प्राप्त में अगु मानु -বাগ্যদক্ষা

तुःहेब्'तु'न्जॅब्'अर्ड्ज'चल्लं वित्रः । श्रिंज्याश्चर्रः प्राहेब्र र्डेज्'न्युरः। ।ज्रेन्द्रःह्र्ज'ह्र्ज'क्रेद्रं'न्युरः। ।ञ्ज्रियःश्चरः केर्द्रमहान्। विवाद्भुरायकेर्द्रमहान। ।ययपुः अवार्द्रवान् वर् **र्ने**'गहुन्। द्विन'हिन'हन वेशक्षेत्र'ने पहन्। श्विन'रा'ङ्गेनरा'राह्वेस व्यामन्ष्याया । त्याँ मानुष्यानुष्यान्यान्। । मर्वे प्यवस्य त्यन्'व्रक्षस्य'प्रकृष्यंद्। | इरःपदे'यन्ते'र्चयं से वाकासुन्। | **के** न्ने पद्धरीयाञ्चरवात् । प्रवासित स्वाप्यस्या ग्रीम न्रे वा वा ता कूर वेर ब्रैस हे अ पर्वेषवाय। | यसर दिग यर वा कुरा के मिया गुरा। । ळें ८ रे र य ८ या जुला वें वा '२ दें ५ 'या | वें य या यो ८ या ये ५ 'हें सामिया' न्युन्। । जुन् ग्रीयम् र सुन्। यह्यापते न्त्। । इसात्र र र तुन्। न्यर ह् न्यर व्यवस्था अर्भे श्रवा नेना न्युर । हिन् न्र प्राप्त स्थि য়ঀয়৻ঽৼ৾৾ৼ৻ঀ। ।৸ৢৢৼ৾য়ৢঀয়ৼ৻৸য়য়ৼ৻৸৸য়ৼৼ न्वत्रसञ्चित्रपत् । तिहेन्द्रपत्रिन्नपत्रत्रह्मत्त्रन्त्रन्। । रीअवाक्ती ग्रामः में व्यापातृताद्य । यान्यवाम्य (क्रेया वीवापक्षु (दे याद्यमः) । ढ़ॖয়য়ॱऄढ़ॱॿॻॹॱॺॺॱॿॻॱय़ॕॱॿॹॖॸॱ। ।ॺॻॱऄढ़ॱॾॱक़ॗॕॸॱॿॖॆॹॱऄॖॻॱ नुबुन्। (क्षेत्र क्षेत्र संभेता हुन्य भेगा नुबुन्। (नुबारा है। या हेत्र উग'गहार'। |बेळे'पेरवाययक्षुतागहार। । বহ'বेबबक्कु'वेद' हुँच'नेव'वडीट। ।
प्रिंग्यरपर'यर्ने'प'अ'रे'वडीट। हिव'यहत्व ब्रुंब्र-५-४८% वर्षे वर्षे । विश्वया हे वर्षा या स्वया क्रिया वर्षे न वर्षे । वर्षे वर-र्'ब्रॅंबरा'बे'न्ब्बन्युर्'। |न्ब्ने'लब्बन्ययं बेन्'न्न्युर्'।।

है। विद्या हिन स्वर्णिया स्वर्णिय स्वर

पाञ्चन्यते हिन्द त है बातन्। [माकन स्वता गुराने हैं हैं वेब] 155 कुप'क्षजुब्'त्रवुद'प'तरे| |पतुद'प'यत्य'ग्रेश'र्दे'त्र'वेब| |कूबा. वैकाद र दका के वारा तरी । निकार्वे र प्राया गुरार्ने जा वेद। 一度。[6] बरायां वर्षं दर्श । श्रुपार्विपायता ग्रीकार्ने ह्या बैदा । रारा से बराया ह्रयाक्ष्यात्त्रे । भिन्यावयाग्रीशर्ने त्रा शेव। । इत्यावर्गे राशियारका प'र'। । क्रॅंबर केद स्वयं ग्रेस रें हा बैदा । व' कं बेद 'प दें खुका सं तरी । ब्रुव्ययायायीयार्ने व्रावेश । अराज्येण ज्रेवा राज्यायर রের্বি:র্ভ্রাবা । রি'ল্বার্থানট্রীর'ল্রান্ন্র্বার্থান্ন্র'ল্ব্রা न्रवादर्भेग्न्वववर्षस्वन्त्। । बिद्धं प्रमुक्षं गुरुद्धं परन्त्। । रबाकुरः सर्रे गार्दे प्रयागद्रा । विषयरे प्रकुषा गुरः परे विषय । ञ्च : खुक्ष तर्दे मृ'यरे प्रराण्य । वि व्याप्त प्राण्य स्थित । वि व्याप्त स्थापत । क्षे'त्रअत्रद्भेग्'र्वेन्'पर'ग्नत्। । पने'रु'र्केर'र्र'द्रत्यंत्र्वेर्र्राः। । चन्'भुः हें हे अव् अव् । चन् भुः हे हे शे अवे 'व । दिन 'व ब ब ह <u> नृग्र के व्यक्ति। व्याग्य र स्वाया प्रतिके वा दिस्ति स</u> चशशु'हेर्-(८) देव'वा चेवाव। । ज्ञुनवाबेर-'हेंन वारा-रान'वा द्वंनवा। गुनःद्वराद्धः जुन्यात् सुन्यान्। ।द्वः येन् भ्रयाता देवाय। 13 बदै'ग्रबरारग्'बे'चर्या । यतुर्'र्र्ययक्रिं केशंबे'देर्। **इ**त्यत्रर्हेन्स्हें प्रश्याक्षेत्रव्या । बीचेन्'ने'हॅन्'के'त्यत्रश्चेवा । तने' र्गाञ्चायायायायायिदेवे। । श्वायायाववानवाविदेवे राज्ञा । वेदा

स्त्राराम्भवन्त्रं लेकाश्चिमकाम्बर्काः नेत्रास्त्राम्याम्बर्धाः स्वरास्त्राम्याः स्वराम्याः स्वराम्याः

हें श्र अह वर्षा वित् क्षित्र व्यक्ष व्यक्ष व्यक्ष विद्या वित् क्ष प्रत्य वित्र वित्र क्ष प्रत्य वित्र व्यक्ष विद्या वित् विष्ठ व्यक्ष विद्या वित्र विद्या विद्य

न्द्वेरकेन्'न्युवा । तर्ने न्युवार्न्द्'क्रीक्रुन्यान्द्यायन्य। । देन् गुन्द्रिन्त्यः सुन्यामस्य तळेन्या । विन्युन्तिन्त्रः सुन्याव्ये वया। ब्रिन्'ग हन्'क्रें हुन्' नम्यां क्रुंन'यां भी अन्यां न्यां विकास में व्यास हुन्या व। विकास सम्मित्त विकास विकास मान्य विकास संन्त्त्रान्ते है नवायाना तृत्य। । हु अरु की नित्तिया ने वार तहेन । तके र्वेन् की रेन वार्य न वार्वेन रेन वा । न्ये वे ने वार्येन र्रापतिवा । मनमन्ध्राणुनः ख्राख्रात्रेय। । प्रापताचनः यन म्यायायाँम्। विश्वापातकेःपायाँमार्चा । म्वोत्यापञ्जेतापतेः श्चॅन'न्रॅक्षेत्। १ने'त'न्नतम्बें'के'तत्न्'न्न्'यन्'न्न्। १देन्' ठव्रतक्षेत्रवर्षत्रं । । न्योक्ष्याः हुव्यत्रेत्रत्रत्वेव्यवा । न् तारक्रेंट्रां दे.पं.यु. प्रसे विवास् प्रमु । नम्प्राचन् श्चर्र्यम्भेत्। १ने'लाश्चें'म्बाके'त्रुव्याप्यस्यम् प्रम्। ।व्यव्याप्यके पःयहम् रंज्। व्हिंयम् वेन् क्षृत्यमः क्षेत्रः न्यंत्रः वित्। चर्डव्यत् शुक्षके तितृ ग्'चल्लायनः चल्ला । त्यन्यने क्रीन् वास्यने क्रीन् वास्यने क्रीन् वास्यने क्रीन् वास्य **ष्ट्रा** [नु:श्वन् श्वन्यात्मः केळःष्ट्रा । इं त इक्षराम् वाश्वतिः देन् न्त्र र्षत्। ।शुन्याश्चरायाकेकाषत्। ।श्वयात्रवात्वयात्रवात्रवात्रवात्रवा त्रेम। । सम्बन्ध मुन्ना सम्बन्ध । । सम्बन्ध सम्बन्ध । विवास्त्रक्षेत्रात्रकिर्षत्। विकान्नेत्रक्षेत्रीत्रात्रमुत्। विकास हुन्नायः देळ्ल्ना । सन् क्षें न्राः द्वे त्यां हुन्य स्त्रां न्या हुन्य स्त्रां स्त्रां हुन्य स्त्रा

न्नेत्रं क्षेत्रं न्यः यः न्यः अहतः प्रतेः क्षेत्रः

द्यं गुर्ड हे न्युं द्यं श्रेत्र स्त्र स्

व्या की अपितार स्में बिद्रा प्रति स्वा । श्रेन हिंग हिंग की से न या स्वा की या। ब्रह्मापराष्ट्राचितेकावेत्राता **「カスガイやコストの過れり、「「」** |মহার্মান্ত্র্ বাহারার্র্ট্রার্ড্র पर-देश । हेर[्]वस्थिः क्षूर-पराशुर-पायस ずられる。例をはて मातरत्र्त्रतेष्ठाः यह्न्यं पुः न् मृत्यं न्या । भूतः ह्यं न्यासुः तर्हेन् प्यतेष्य 5ु:खन् हे: विन्। न्रः अहताता नेत। हे नर्ड्व विन्यानाता के तर्हन विन्यानाता के तर्हन विन्यानाता के तर्हन विन्यानाता द्यायायत्यायाची वायायायाच्या व्याधीन प्रतिन्त्रायाची वे मर्जुब्रायाविं नम् नी न्नाया सुताव्या हें स्विश्वापात्य। हे मर्जुब्रा ग्री सार्विया षश्च त्राया विस्ति हे स्त्री वा स्त्रा त्री से हे ते न न त्रा त है है बेर्फ़ुः हं राद्रबदायपर प्राया विरी बुर्पाय हेराने 'र्पा ब्रेस ने त्तर्था के अपने दिवस्त्र विश्व का स्वाद्य के स्वाद के स त्रेते'चरे'क्केर्'न् पेवागुर-'र्नेवाप'वेर्'प'र्ट' व्राववान्यरका **પ**લે'સુંગુ'તક્સ'ને'ક્સરાઇંગ',6ુ'ફુન'ર્યાએ'તકેન્'પલે'સેયરાંભરાઈરાપ્ટુંગ' द्यातके'यार्वमानुत्र। न्नेत्रामन्ययेकेसमिन्।वुःहेर्या मा हे च र्रुव भुष्ठियां विभाग विवाद में निवाद मान मिं वर्षे चन्न'त्र'अ'ॲ'ऄॣन्'चदे'सुन्'द्र'के'न्वन्युक्तिके के के न्'द्र'विन्'चर्नेन うべ त्र्वेत्र्यरत् नेरव्यद्मरास्यास्य वाद्यर्थे हिन्दु ग्वन्द्र हिन्द्र विषय 争 हेंग्'राज्ञद्रां'सुतात्रवाह्रग्'राह्रतातायत्र'परिकेंद्रानु जेरारा'स|

मर्जुद्र ग्रीस दि नद्र स्री में देश वास मा दि देश में मार्च में मार्च में मार्च में मार्च पर्तःतुराह्यःकुण्यस्थाकेष्पराधीर्यरःपराग्न्तःस्रे। षरासेश्रयातस्या *रा'न्न'त्रॅर'नते'सून्'नसूत्र'त्र्ववानसॅन्'श्चन्यरन्'के'ऄन्'नर'''''''* जुद्दर् पर्ेपाविषासुष्य स्ट्राय हेदाय र विष्य र विष्य मर्ड्द'ग्रेडिश'कुद'रु'मरे'म'र वेंबिशद'हग'रु'केग'म'श्चरवादत। रॅंदि:कॅबान:प्रवेद:ग्रेन:प्रबंबागुड़न्यायया विंदाने देंदापन्या हुर्द्र्यन्यत्र्र्द्र्यस्त्र्व्यस्त्र्र्यस्यद्र्यस्य RATINA () বিশ্বামান। । ই নর্ব বাট্টিশামর কবাট্টার্ম্বামন দ্র্মানর **৾ঀ**য়য়ৡৼ৸ৢৢ৾৾৾৾৾৾৴৻য়য়৻ৼয়ৼ৻৸য়৻৸য়য়য়য়৸য়য়য়৸য়য়৸ हैं गरा स्वा इय्यामी वटावयायक्या युरामी क्षेत्रास्ति । युरामी क्षेत्रास्ति व्याप्ति । ロ'う'夏二光| |3円|差'スがむ'うて'おこれ'日れ'ろだが'スにな| नते शुन् नकृत हुन्न स्ति हे न दुन प्या ने न दुन *सॅॱ*ळे*न्'सॅ'*नु'अर'सॅ'ॲन्'स'ॅंन्रॅन्सॅ'त्र'अर्ळेग्'नु'ॲश्'स'वेग्'वन्'ॸ्रग्'सॅ'वेग्'' ष्ट्रीयाचेवापतिळ। विति तुः गुडेगा सें त ने प्रशासु क्षेत्रपति सें खुना ता विति । ब्रुन्'नु'ग्याया'च्कु'र्न्च्कु'ख्या'चकु'इ सर्यायसन्'द्रर्वार्केन्द्र्वे द्रन्द्र्वेद्र्वे ন্ত্ৰ প্ৰান্ত বিষ্ট্ৰ প্ৰান্ত বিষ্ট্ৰ বিষ্ট বিষ্ট বিষ্ট্ৰ বিষ্ট্ৰ বিষ্ট বিষ্ট্ৰ বিষ্ট বিষ্ট বিষ্ট বিষ্ট বিষ্ট বিষ্ট বিষ্ট বিষ্ট বিষ্ট ग्रन्थम् प्रति है। हे पर्द्व एस में निम्मेन स्ति स्ति है। सुन् सेन् सिम्स तेन्दुः हुन्यातात कॅन्द्रन्व्या व्यापाता व्यापाता व्यापातने न्या हुन्।

देर्द्रुब्द्रित्रं दर्द्रात्रे स्टाप्ट्रिय्द्रिय् हेर्या हेर्या हेर्या हेर्या हेर्या हेर्या हेर्या हेर्या हेर्य देति विकानु के विभागत्मायतम् इत्या विचानि विकानिमा स्वा विकानिमा स्व ब्र'देन्'कु'बे'ब्रेडेश'दा'रून्'ब्रेडिव्'ब्'द्र'देव्'ऑन्'ध्रक्षेड्रेर'व्रंट्राडेर'दा'य। <u>हे</u>:८ ईद'ग्रीक्ष'म: क्षेद्र'मकार्क्ष्या नीक्ष'म:स्रेग'र्रुक्ष' रेग' मसुका'र्क्षे पर्या विनः इवल क्षेत्र कुनः प्रदेश द्वाप्य मुख्य प्रया हुनः परिने हे त्रवेत्रद्वराष्ट्रियायाँ राष्ट्रद्वर्यस्य द्वेत्रत्त्र्यायाः । देरायरः हे यर्द्द्र [दयान्नद्रार्ह्चेन्द्र स्वा व्दर्भ ने से हे पर्द्द्र की क्रिया वर्ष्ट्र स्वा वर्ष्ट्र स्वा वर्ष्ट्र स অ'হল'ঝুদ'ন'৻ শ্রুম'নই',দৃদ্'র'ষ্ট্রুর'ব্রা हे'यडुंब'शुंब'मत्र**ा** *ब्रा*सह्यके'ञ्चायायग्य। यन्ग'र्ने'तुन'यन'गेके'सर्ने सम्बाग स्वा न्द्रेन्यत्रत्रस्य देर्यके अप्रमान्द्रित्य न्द्रा हेन् **८.५८८ स्थाप्तर्भः क्षाप्तर्भः हिन्दार्श्वस्य स्था। ४०% स्थाप्तर्भः वर्षाः स्थाप्तर्भः वर्षाः स्थाप्तर्भः वर्षाः स्थाप्तर्भः वर्षाः स्थाप्तर्भः वर्षाः स्थाप्तर्भः स्थापत्रा** *শ্বঁঝানন*:ঘ্ৰথাৰ'ট্ৰিন্'গ্ৰীঝা**ট**'নেই'শ্লীঝান দলেৰখাৰ্টখান্ত্ৰীন'ৰুঝাঝমা'''''''' শ্রদ্রদেশ। ন্নাব্দেশী এম র্মির্মার্মার বার্মার বার্মার त्रुप'र्डर'र्ह्रशचेत्। तु'द्रवर्गगुर'र्हराशु'तह्रग'रा'य ग्राहे'तेरप्तग्। हे'पर्द्धन्'ग्रे'सुग्यन् मॅप्याय। यापर'र्स्स्रेरे'सुर'पर्द्धन्यायप्यास्यार्ह्यन् चर्भिर्'तेरच'अर'तर्भे गरत्तुग्'र्मेरल'व्या दें'व'म्यग्'र्र'र खुग्। तर्ने इवस्ययर ५ दुनः हिंद् । त्यां स्व व वितः गुर्वे द । या सम्बन्धे द । तर्ने इबराकें बर-र्-ुक्ष विन्दर्ग्द्रन् । स्वार्थिता विन्दर्भाव वेत्। हुन्परागनायार्थेश्वायुर्वायय। चन्य्र स्वायार्थेश्वरायः बेन्पति हैन्द्र मॅब्न्न प्राव्य बंदा हैन। स्वार्य वर्षे प्राप्त वर्षे इयश्राह्मर्यानेन रश्राह्मर्यायन्यतेर्द्रन्द्रन्युर्यायम् **बिते तुः क्षे पात्र ने पे व् बाग वाद्य क्षेप्रमायतु प्रशासु स्रशासु मार्क प्रायद्य पर्या** क्षेःर्र्ष्वप्रायम् वाद्याया चेरायय। हेराय द्वप्रश्चीत्वया दवारी स्नार्ध्यया ग्रा सरामकासम्बुक्तिन्। वनामान्याक्रम् सन्। स्वासासन् हेन्सा वैवा व शुस्यायय। व द 'धा व रे दा अव सु अव व शुस्या प श्री व 'श्री वा विग'नेर'परा। कॅ'ग'यदिव'न्ट'ब्रुव'रा'इयरायहॅटरापरा। बी'इयरा वाने ने अर्थे पान्न श्रुवापायन विवासन। इतात भ्रुताय ने विवास भ्रुता नशङ्खर् । अरे व शस्त्रव में से ने पा धेव व व से से द का गुव सुव पर स्थाप गुर " पदिः छ। वर्पाविते न्नायायायायाया हिष् चर्ड्यभीशन हैं ना छेन् रापा शुन् न्रायका न र्रेन शिन् में रा **क्ट.**या.पर्नरः कृष्ट्रया.या.खटा। क्टबाञ्चा.प्रेचान्च ट्या.खा.खेनः या। यञ्चतः क्षेके.स.स.व देशायान्ये प्रवासियमुत्रातने वाह्यात्रा ।

विश्वत्यक्षेत्राच्यक्षेत्रच्यक्यक्षेत्रच्यक्षेत्रच्यक्षेत्रच्यक्षेत्रच्यक्षेत्रच्यक्षेत्रच्यक्षेत्रच्यक्षेत्रच्यक्षेत्रच्

মউল্লামনি'অন্মন'লঅভৰ'ল্<u>ছাল'ন। | সল্'নত</u>ৰানেইল্'ইৰ'নস্তু' निक्षेत्रम्य । मः न्रः स्वाक्ष्यं स्वाक्ष्यं या । सिन् हिन् या निवन् मुन्त्रस्त्रस्या । सन्द्रस्य संस्वार्यस्य संस्थान। । सेम श्रम् स्थायः म्राह्म व्यास्या । ने पहेरा हो न दि हो । हेर्पत्रोताप्तरुपहेराद्वर। ।तुः व्यानेरास्य प्राप्त प्राप्त । ড়য়য়ৢৼ[৻]ৡ৻ঀৢ৾৾য়য়য়ঀ৻ঀৢৼ৸ ৢয়য়য়ৼ৾ড়৻ঀৢ৾ৼয়য়ঀ৻ঀৢৼ৸ हुन। वित्र्नाख्यान् हुन्। निर्द्नाने नयहेन्द्रन मज्जूर'हु-चुन्। ।व्रर्भेषवामवि'मज्जु'इ'मवि'चुन्। ।मज्ञर्भन्य क्वितित् क्वित्तार्वे । प्रचलक्विति सम्बद्धाने विद्यार्थे । विद्यार्थे । विद्यार्थे वर्'ग्रैश नेवा । वे व प्राप्त प्राप्त प्राप्त विषा वा । क्षेत्र वे कं प्राप्त वर् ग्री वा होत्। विव्हासं पारोष्ट्रात्या विदान वित्या वा नामना सून - रहिदा । ज्ञन्दे गून् नदे दन् ग्रीका नेदा । तर्ने न क ग रा गून न स् क्रात्वित । नरातर्त्तात्रेन्छे सङ्ग्यस्यया । परान्यत्रे स्वा मुन्युं रामेना । यन्या तहेना न्या सुहित सुर तहिला । यन तया कुर नेवर छैक नेवा विवाह व केंग्र में छै हिर तर्स्ता किर व ततुराधते'व्र'क्रीसचेद्। ।यन्ग'यक्नेन्'ग्वर र्क्नेन'ळेर'स्र तर्डम्या । न्याम्येन निर्वे स्वार् निर्वे । महिन तर्दे न हरा A'अर्ने'र्ने गृहर्। । र्ने'नदे त्रस्य श्रेसर् र्वाप्य त्रस्य A 新四下面 「下可養不愈對不可以不過可不到

सन्याहित्रायहरात्मेद्र। विद्यायहराष्ट्रीयपार्ध्यायहराहित्य नग्न। । इंतातक्षाणी वृत्र इत्यं व्यापिता । वृत्र नहिन्। । वृत्र नहिन्। मुकायमत्यानक्ष्रत्। |तेवरात्वुतानतेष्ठ्रण्यासुवनःवेत्याः। | तर्न्द्राचित्रवार्म् राष्ट्रितायावेदा ।नि'तत्रवी'व'तुष्वार्याचे ने ॥ हि: वृर् द प्रति तेतु के पार्वे | निः स प्रति प्रति विश्वे व ने'य'सॅ'न्र'मॅन्गुल्यव्। नि'हीरह्मातम्रंहरसं'हरानेत्। किंवे हग्'गुर्द्शूंर् नेप्र केर् गहेर्। । झ्राययावरापदेश्रायतगुग्य। । **८८.५८ के ब्राह्म के अन्य के प्राप्त के अन्य क** इरल । विक्रिक्रिया संरापतिस्य वर्षित्य । विक्रित्य नाम्येतिःस डिश'विथ। । त्र'या स्मिश्य दिशं या सेया । त्र हुन्त नि दे से ग्रान हे नगुर्य। |हेद'रनेतान्हु'ग्हेराग्री'सॅंझॅर'नईय। |इयानेशळॅग्य নজ্ব 'শ্ৰীপুৰ ব্যান্থ ব্যান । বিশ্ব ইমান্ গুনি স্থান স্থান। । বিশ্ विष्णाम् केराग्री न्या में प्रायम्य । विष्य देव संक्रियेतु से महास गर्भ | विषयायम्बर्मित्वयाद्भेते | निवतः इति सुःस्वित्वरेषाणी | त्र्राञ्चः विष्विष्ठ्। |त्रुं संत्रेष्ठ्। त्रुतः त्रितः त्रिः च्वाः हेषः स्त्राः 1 न्याक्रूम् क्ष्यापादे वार्षे प्रक्षिया । इत्याक्ष्य प्रमानिका विवा स्र। ।वयः गृष्यः द्रशः देशः क्रेषः पश्चर्यायः। ।वेः नेशक्रैषः स्रः ग्वयानु'यार। । निर्'केद'की ख्या झे की या वर्षा वे । निर्'रेग मे न् मः क्षं 'र्येग' न् व्यंत्रेन्। । क्षं 'ने 'ग्रुव्यं ग्रेव्यं ये व्यंत्रेन्द्रनः त्वे व्यंग्रेवा।

तरे के प्रत्युपदे प्राप्त प्रत्यु प्रकेषा प्रति । तिहेषा हे द के साम कु प्री सु रवःग्रॅन्। द्विणः यहायः गुवः तहुनः ते सुनः ही सन्या विद्यनः से तनरक्के सर्त्र पर्वेत्। । तर्ने द स्व सङ्ख्या पेया यहतः नर्दि । मिहे झुन्' झुन्' सहैन राष्ट्री सु नर्दि महेंद्र । । महि सहित्र हुन तर्द्धतर्भी कुल तर्ने दः नाई द। । सना देना नामें छी द की पर कर देन कि गर्दि । । ननः तर्देन् । यः तर्देन्यः । यः तर्देन् । यः तर ने हें बार्दे न परि न माने व बारी व व बारी व कि का माने तनुषान्यत्यत्वताः नयाष्ट्रियाकः प्रत्। । नर्षे पृषान्यत्यत् संत्राच्याः स्त्रः **८४। |४८:ङ्रेट:ऍग:५४:८ग् ७:८४। |ॲ:८४:८र्ज्ञेग:धै:४:५४** विषान्तेत्। विष्टम्भूष्यः कर्षयायन्तः सेतुः द्वेयविष्यते। । ५ दि दस्यः तर्वेत्रत्वेव्यवेषाचेत्रा । व्याकृत्रत्वेव्यवेषाचेत्रः चेत्रा । त्रावरः अत्राव्याः चरावॅदि'र्नेद'र्म'येव। ।तुरु:र्वग'या न्टानंदि:रू:र्ने:त। ।श्रे:र्वेद् ग्युवाश्चीक्षः ग्रिप्तिरा । विश्वाप्यवार्क्षयप्यति सुन्वर्षान्ता । र्यकेंग गर्दर यदि पर्में राप्तिया प्राप्त मुख्य । जुर् स्थेप वि के जेर क्षेय मर्जुन्य। । हन्यत्वेद्येद्रम्देश्वद्र्येन् पहिन्। । पे वेद्यश्चि क्षुः षरपत्रा विभिन्न विभान्त्र प्रमानिक स्वर्मा विभानिक विभ क्षे ग्रेयपाया । पर्निप्यविते ग्रेयपार्श्चिया वित्रा । यस रैग्'गेर् मु'क्ष्'प्रंग्'यय। विद्यारमार्थेग्'गेश्चर्'ठेग्'यहम्। त्रेष् हेर्क्षप्तकुर्णे कुष्पत्र्य। |त्र्र्वेर्नेष्ण्यते के स

विषायज्ञम। । द्वषायद्वसः गुद्धस् चेद्धस् द्वे स। । यने छेदः न जैनक शुःसद्वापानुस् विष्ट्राक्षेत्रस्य क्षेत्रपान्तुन्स । हिन्देन्से नेयार्चराराम् । तर्देर्वसम्बद्धात्व्याः नेवायात्र्रात्व्याः । विवया वितःक्षेत्रःप्रतिश्चेष्यर्देशः<u>प्रवा</u> । गृतिःश्चग्रश्चनःप्रवेगरःग्वेश्चग्वत्तः र्माया । क्रून वेन प्येप्ने वाक्यी मान्य पहला । स्वा न्वा प्या होन क्री मर्डव्^१ ग्राया । मुशुप्ये ने शक्ति अन्तर् रामर्ख्या । पा मनेब्राध्यापिते व्यावासी । मन्यायावन मून्यित सुराक्ष्या । रुप्तर्भेत्।वाधेक्षेष्ट्रेर्द्रेन्यया । । प्रन्यः प्रवादिवः यो प्रस्ता सुमहरा । सम्बन्द्रमण्डम्बर्गीः गुनैद्रतर्भा । रोगमा हुन कूॅन्यरेतरे देन्द्वया । क्ष्या परे भून्य देन । प्राप्त तर्रे'र्भेर'क्'रे'क्षेर'रागर। | वर्ळेर'क्वं'र्भेर'वर्ळेर। | शेषरानेन्'र्द्रयाक्षे प्रकेषेन्। । ইবি। क'र दर्पर व पी राप्तेन । रम्बुम्र्यं व्यव्यव्यत्र्त्र्यायेत्। विश्वक्रम् व्यम्यं व्यक्षेत्रम् तरम्बारिदे रामातर्द्रायाचेत्। |द्राराकात्रवार्यदामुखान्त्रेम्। कॅर्न्द्रसम्बेग्रिंव्युक्यात्र्रेग् । स्यान्द्रम्पापन्द्र्रेव्युक्रियासेद्रा । हुग्। प्रकृष भेरे श्राप्त सुमाप्त सुमाय स्वर । । में व्याप व्यवस्य स्वर । स्वर श्रीकायार्त्रेण । द्रण्याराजेद्रायान्द्रवाश्ची भेत्राक्षेत्रायाद्री । यात्रात्रकेते सु स्वित्रेश्यं। व्रिंयरेव्रत्वियानतेः व्रायण्यं। विन्यातस्व न्यरंतिः ततुव्यन्तरता । क्ष्रांन्यवार्थने प्यति संवर्गनि ।

मने म्यापा ने नात है व कि साम कि साम कि साम के कि साम के साम कि म्बा । द्रारं स्वराहें न स्वेद् की नह स्राप्त में हैं । विदेशाय दे हुदु'द्धर' पर' छेद' व हें र'। । इं श' हें व हा रा छेद' घेदे 'दे 'दे दे रा । ଡ଼୶ୡ୲୵୷୷୳ୠ୕ୣ୵ୢୢୖୠ୵୕୳ୖ୷ୖୢୡ**ୖ୳୷୲**ୗୄ୷ୄୗୡ୕ୄ୶୷୳ୣୖ୵ୠୣ୵୕୷୴ୣ୷ୄଌ୕ୣ୶ तर्द्व। । क्रुन्भे प्तते भी खन केन पर्द्व। । भे क्रेन्न पहारा भी प्र ८६ँ व । व इ स'रा है द' की हि द हैं ग । हु से ग रा से ने रा की या है द मं वृद्धव |भून:पा केन् भी तज्ञ न कुराया | विराप्तराधाय र ग्रीयावय । ल्याच्या । तराचुराखेष्ट्रेशकीय , तर्तराच्छ्याया । यह राजवा गुद्रायाष्ट्रयाम्यान्द्रम्। ब्रिक्षायाम्बन्दिःस्याया ।स्यागुबन्दाः ग्रुअश्चि'र्वेन्'रुक्न्'रुक्र्या । नग्रिक्षुरः चरावेदे'र्वेद्र्ये'या । वनदानेदान्देदानुंदा | विवासान्त्रान्दान्त्रां स्वापा चेग्'रा'**रेअ**'न् गुरी'न्यापग्'नेच'न्यांस्य | ऑस्चासु'रेन्या'स्र' ला । ज्ञुन् स्रे प्रते के खानी राज्या । ज्ञुल क्षु प्रते प्रते पर र्जे पा स्र व । विः क्रेंन् पात्रु अश्वीः स्थितः पार्थित। । त्यु स्पारं विश्वास्य विश्यास्य विश्वास्य विष्य विष्य विष्य विश्वास्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष वा विन्'वेन्'यि से'त्रम् कुर्यत्रवा नि'सूर्य गर्रवाय कर् हेवायस्य द्वा । वाहर् रचा वी हेतु हैं। हुवा सद्वा । वॉर वी रखना म्यापन्। न्युक्षांचा । विवाकेन ध्यान्याये । विवादान् व बहुद्ये भेदारीय। भिद्यान्य ईद्यंति नसात्री वहन । हिंदाव सयम्बेराकुर्याकुर्यात्वराष्ट्री । श्चित्प्त्रवेरातह्र्यात्र्यम् स्वरा । इस हॅ न' छै 'धे भन् ब भ मह्म हुन | व में कु न न में न ब भ महम ब न हुन हुन

इत। विर्'र्र्देग्याम्बाक्ष्यं द्वायील। विव्'र्ग् हुं ही ब्राह्य ह्यर्पर्। विवाधवाद्येष्ठेष्यायान्यः । विवाधिताया मनि र्केन्द्र हुन । सु न्या सु न्या सु न्या सु न्या नि न्या । किन् येन्द्र नि स् धिभेविषाञ्चर। । त्रमणहें प्रामास्य हार देविद्यार पर्स्य। । वात्रम <u> ইবার্</u>র-দের্শাপ্ত শব্দমের বৃধ্ हु। |नेग्यहुग्'रह्मयनदे'जॅन'ह्मर्यय। ।श्वःळॅग्यह्मयक्रिं क्रां *ঀ৾ঀঀ*ৢ৸য়য়ঀয়৻৸য়ঀ৸য়ঀ৾ড়৸ঀয়ড়ড়য়য়ৼঀ৸৸ঢ়ৢঢ়য়ৼ৽ঀ৾ড়ঀ৾৽ঀ मर्नेशन्मक्रीयय। १९५१मर येन् पर गुन्य इंस्य। १नेशन्य इन्'स्व'क्के'स्याया । स्व'रह्म व्यापति'सून्'रा दूनरा । सव् **८ व**'खेट'र्स्र्व'क्के'त्र'या। ।वरत्ययाञ्चट'क्व'क्केश्वंव'स्ट्रॅट्य। । রীরহা ভর্বের্টিশ্বাব্রান্ত্রীর্বাবিদ্ধারাম। । ব্রদ্রাইণিবৃদ্ধারা धेग'ळॅल'र्नेट्रा |ळॅग'र्नेड्'ग्रेड्'ल'य|प्रथपदे'ञ्च'य'य| |रॅ'प्रज्ञ' इन्निरेक्षेने र्देन्या | ततुत्वाविययाश्चन्निरेन्ने तत्वाया | वि बिन:न्यापते:भेन:नन:<u>इ</u>न्या । ह्यःतञ्जानेयपते:वंबार्याया । मन्ग्'ग्वत्र'न्द्र्या भुक्त्रम्था श्रिकेन्'ह्र्य्या तर्वेरत। । नरे'न'केव'र्येते'केंस'रे'र्द्रेरत। । नक्ष्व'रा'क्वेंर'नदे न्दरायहरूला ।गुरुलासर्परे भ्रेन्।सर्र-द्रेररा ।न्यरः ह्रण्याद्रप्रयास्य क्रियापाय। । यन् केन्ष्र्रम् क्रिया क्रिया हिण्या हिण्या हिण्या हिण्या हिण्या हिण्या हिण्या श्राह्मा झ्रेंश पति झ्रेंबा केवा मा विवयमाया ग्राह्म स्वरा की ख्रीत सुर्दे तया । शुन्यवत्रस्रुंग्राक्ष्र्र्वेन्याय। ।गुन्न्रावस्रुन्यतेवसर्वेन्

इंट्या विवाय हेर्चिवय देशके न्याया विद्वे के दिवाकी सन्। अन्य क्षेत्र द्वा । तहना हे दावे दार्यना नी मन्। चना सा । क्षा व बेन्स्वयक्रिवन्त्रेर्द्रय। । गर्डें दें हे हे क्ये हेन्प्य । दत्यय शु'नदि देर्ग कु'र्इन्य। । तक्षेत्रेन् तुन् सेवयकी बुद्धाल। । तद् है ज्वे के राक्षेप्त स्वा (५५ जुरु विकास दे ज्वा स्वाप्त) ग्नश्राम्याग्न्र क्रिकेट हेर्द्र या । न्नेप्रस्थित क्रिन् प्रम् | कु' तत्र राजे प्रश्लु प्रति सके व'प'र्दे प्रश्ला | प्रत' सव प्रति वा त्शु र छे य त। । वत्र भे र पृष्ठे र ग्री यात्र य दें द र । । य र र र र्में न भे 'है राम् था । इन 'हॅ द'हेन 'अपशक्ति हैं लाई ग'र्डेन था । विसर्व त्त्रतायेन् क्रिंन्पते इतार्वे रत्। । प्रकृत् स्वापन वर्षा दे हे प्रा इॅर्या |बॅ्र्यास्यरायाक्ष्र्वायाद्वरायाक्ष्रेवायाद्वराया ने स्र र हें द वें शेष वाया र र म में वा १८ दें ८ वा र वा में हें द वें ८ में ८ । देगलक्ष्र्प्रभ्यित्वहुगलपर्द्धन्या । गृह्यप्रस्थित्रस्यान्याः विस् श्रेग'र्देन्य। व्रिंग'व्रैन्द्रच्नानदेःभ्रृंद्रच्या। व्रिःमेन्द्रःभृंग् निहेर नेंग देंरया विरयदेग्य में तर्रे कुर्य प्राप्त विरय हेन्य कि तामनत्वेत्'क्रिप्रत्रे देंत्या । देग्यायव्यस्यस्य हुनार दे 'वन' बॅरि' न इर सुर्दे र या । सुन य सुराम रहे व की मारा त्या वित्यसुद्र्र्स्र्पंतरम्बुद्र्य्र्र्स्या । त्वाराधद्र्य्र्स्र **ॅ्रयापाया । अँगपाद्धन् चेयाग्रीश्वादे प्रेंत्या । ग्रॅन्ययायग्रीयापदे**

हराराया । इंशर्य श्चिरारादी इ'यह गुर्ने रया । १८७ खराया क्षेत्रे व्यान्याया । मन्यायया गर्ने प्रकेरी अके रामा मूर्याया । गन्याया विदी <u> २,५८८ म. १५५५ । १८५५ म. १५५५ । १५५४ ५५ । १५५४ ५५ । १५५४ ५५ १</u> बाह्रेन्याह्नेंद्रक्ष्याः । इ.स. न्यीयाह्नेंद्रवाध्यक्षयाद्वीयहेंद्रवा वृत्रकारेन्। वित्रक्षेत्रकुर्वार्वेत्रम। वित्रकेत्व्रहर्वेत्रंप इंट्या । ध्रयाळे नेया छुट में क्षेत्रायाया । ग्रुट सुर घट में में ग्रा इंत्रा ।र्युग्चर्क्त्'रूप्पंग्नेयर्द्यर्या ।स्प्रस्ट्पंग्रेंग्पदे' <u> इत्र्रंग्नार्द्रत्य। इत्र्रंस्यम्निन्द्रेन्यदेश्व</u>्याय। इत्र्यह्रय हु:क्षर:खन:र्इरया ।कु'त्रज्ञराङ्गर:क्षरे:न्र्राचन:स्रा ।हन:कर्' बहरक्ष्राचीयहण्याईरय। | द्वीक्याईवयान्द्रवेदायाः। । रमामक्षाप्तवातकिरीप्तवमाने द्वारा विष्तवस्रोवस्य देवाने म रात्य। । बहु अवास्त्र द्वा अर्थ स्था । के ह्या श्रु र ह्व सही द्वारा । मा । तिर्दरनरन्त्र्रेग्नित्व्वाः र्र्यर्द्रत्य। । तर्नुतिर्देश्तिद्द हम्बर्कियाय। ।गुन्यायविषयित्रम् हेन्द्रम्य। ।हुन्येन्यम् क्रॅंबराचेन्'पाया । प'देन'ळेतादेन'क्रे<u>मिय'मिय'र्</u>द्रमा । पर्वन'क्रम <u>ब्रॅ</u>प'न्यॅब'ग्रेन्'याया ।सु'यन्त्र'सुग'पतियंन्'**य**'र्द्रन्या ।ञ्ज्'त्य र्ष्ट्रप्रतेश्चेद्राञ्चेयत। । श्चिष्ट्रयाद्याद्याकुषुत्रव्यव्याद्वेट्रय। । ष्ट्रिंद्र्म्रद्र्र्म्य्र्य्याया । व्यत्रस्थ्यक्रिवेद्र्यः द्रद्या । निवनत्वग्न्वाक्रित्वन्वन्वा । विष्ठन्वन्तिन्वेवह्वातुन

इत्या । धुनारं त्रेरः बूकान केत्याराया । न ह्रान्य मेतः तर्मेरः न देः मुँदाराद्वेंद्रवा व्रिंदिनेववेंदानदीन् नामाना विश्वेनवाद्या रुप्तहामिति हार देंद्रा | हिंद्र केंद्र क्षेत्र क्षेत्र हिंद्र पाया | हिंद बह्नेन्दर्द्र्र्स्त्र्र्स्त्र्व । वनत्र्र्स्वर्ध्रेत्रवा । वर्त्र **ढर्'चर्दे'र**्ष्य्यार्द्र्स्य। |ठर'बेर्'ब्रेअन्यखेर्'प्र'य। ।८र्दे'हेः শৃঙ্কার্ স্টাক্ত ই ইন্ম। । ইশ্ব্যামণ্ নির্মান বিশ্বনার । প্ बेन्द्रन्यद्गन्यक्तीपृत्रं द्वा । इस्यक्षे प्रमृत्यक्षेन्पते गन्निय ठव'बर में ता विकेंद्' श्रेव'शेंप' श्रु'गुव'त' र्देरता विव'म'गुव सहिव्यो नेवार्ग्नेवा । क्वं स्टार्न्स् वार्ग्नेप्रकार निवासीया । वार्मिका कृष्ट्राच ते 'वृत्र'क्कृष्ण वा वा विषय स्वत्र का किल्ला विषय का किल्ला विषय का किल्ला का किल्ला का किल्ला का क म्बार्यस्थित् वर्षेत् पर्यात्र्यस्य द्वा । मृति रत्यस्य दिन् म्बार्यस्य **घॅंग| |८्रम्थार्ने याळर यात हु**रब| ।क्वॅंब्रॅंबेरे से**८** क्वेंप्च कुर् **पर्दे। | ५ वे पर्वे ५ वार्च अधिक के हो | वार्च कार्म वास्य के हो हो | वार्च कार्म वास्य कार्म वास्य कार्म वास्य** *ञ्चव*'ग्रॅंब'८८'। [२ मॅ्ब'बार्ट्चग'क्षे'बस्ब'८ कुराव्या । ह्रां या बहुं वा बी के दर्भ पात विकास विका पत्ना । कें शे हमा गुन् श्वॅर मैस विम किम र स्वाप्य । प्र र दुर्स *ॼॖॺ*ॱॸॺॕॺऄॖॸॱॻऀॺॱॺढ़ॖॸॱढ़ऀॺॱॺॖॕॸॱ।। इॱॺॸॱॸॸॱॺॱॸॸॱॺॸॕॱऴ॓ॱढ़ॖॸॱ <u> বীঝ। । শ্ৰীঝাই র'বাদ্যান্তীঝাবাদ্র'ঝানন। । নদাঝাই নেরীর'</u>

न्यापाकी विप्तिकार्यं हिप्ति । विर्मे विप्ति विक्रित् इ.यरा । गुरादिन राळें गराइ यराया में नाम गरीया यत्रत्र्व्यत्रकुरक्षकेश्चा विष्येवा ।यन्षःन्नर्यःवानुनःचंवा। য়৾৾৸৾ব্ৰাম্বানাস্বানামী। ।इतातर्ते रायस्वातश्चारव्यविषाधिव।। ने'न्राबॅ'खन'हुन'र्रं'त्। ब्रिन्'यन्त्रायंबेन्'यन्त्रम्हेन्'यांबे। । इ.स.५ हॅं र पहें र प्रंत उन विषाधित। । ने न न पह र र पा पहें र र र |र्दे र'तर्सन्'य'बेन्'यन्देश्वन्'र्यंभेत्। |ने'त्राक्ष्म्ंक्'र्येचेन्'र्रः ह। । अर्शेव'यामाने अने यामा भे। । इस वर्शेन ज्यारा हिना उत् *विषाभेवा |नेविषाञ्चेनः* मर्जेकाष्म् हॅनः संवां ।गुवःसामञ्चनः पर्वः बायवर्मिया । त्रवर्मार्खेन क्षेत्र क्षेत्र में निरं निरं नि । विद्विया वेन प्रते महिन्'न्रांताच्या । तिमिन्याहिनयानि ह्रेंद्रायानि हेन्या। । येद्रिनी <u> शुप्तर्श्यु</u>षेत्र्व। । मनत्र्रङ्गेषु स्यावेश्यम् । । मन्दरम् स्प्रवः মঁৰ্'ক্ৰীৰ'ৰ্ষ্মৰা | নউদৰ্খাৰ্মৰ্'ৰ্'ব্ৰ'ক্ৰীৰ'ৰ্ষ্ট্ৰ। | শ্ৰব্ধ'্য'ৰ্মন্' ह र्ने द श्री का चेन | नि गुन न न का श्री क्री न स्वा का भेव। | क्रिका ने न 'ह न न দ্বান্ত্ৰৰাত্ত্ব'বন্ধ্ৰ হিন্'ন্ম'ল্যৰাক্টিইন্'ই'ই| |শুক্তি'ন্বন' मुंकर'हे'रेरो । १० वर्षा भेव होत् क्रम्यहाय था था । । हवर्षा परि कुष्यान्त्राभूरारात् । यदेःश्चेराक्चेरावदान्यराञ्चन । वसस विद्'ह्यन्यपं केतावे वे । डिद्दान्य दर मुद्देश । द्रव्य हेर् मॅं झबरे देव। । यन् पाय हराय दे तेतु क्षेत्र पर्दे। । हे यह द श्रीकाने क्षा प्रति श्रीका ऋगका सन्। विवाद प्रति स्वाद श्री खेला तुः या सन्। या व

वन्यावन्यवज्ञायनते हैं। वन्याने ते सुद्रान्य विन्ति नि मनेराप्तरं मकरायाप्तवाराष्ट्रं प्रावाप्तु वेदायार्षे वायरं युर। स्रायां वे इयराग्रुन:वन:पातके।पान्याञ्चेन।यन्न पॅन्ययाग्रुन:कॅबान्नेन'क्रनका ळे[.]च'षेब'चर'८,तुग्'चेर| गुब्'हे'चर्ड्ब'यखे'छेन्'चदे'न्न'य'र्घेच'चर' शुराहें | देवे के बनायाने वादे | श्रायाने इवश्रायें वाया प्रेता के शामित परति व पर्णवर्षेत्रस्थित्रस्थित्। प्रविष्या विनः भेन् 'केश्रायस्यानन्या' सः तुःगुद्र'केश्र क्षेत्र' सहयापारा तुः वेत्रायस्य *हे*:पर्ड्ड्युक्टीशःग्रुप्तःग्रद्धः हें।विंद्रप्तःप्तः दिंदिः तुःपक्कप्तःयः तुनाराःगुद्धः व्याः। ৡ৾ৼ৾ঀৢঀৢয়য়৾ঀ৾৻ঀঢ়৾৻ঀয়<u>ৢঢ়ঢ়</u>ৢ *ॸ*ड़ॱॾॕॺॹॱॻॸॱऄॹॻॱढ़ऀॺॱॲॸॱॻॱड़॓। **ॾ**॓ॱॻढ़ऺॖ॔**ड़ॱॸ॒ॸॱॸॖ**ॹॻढ़ऀॱढ़ॕॹख़ऄॱ धेन'पदे'न्न'ध'र्वप'दय। धेन'ग्रैस'न्स'कॅस'न्न'श्चप'म्नेद'म्नेस। क्षेग्'न्र-'इअ'गर'तद्र'य'र्रस'तर्ग्यादतर'। ष्ट्रग्यहे'न्र-'तर्धेद'सय बै'त<u>र</u>,प'ततुग्'रेम्। <u>षु</u>न्'धरः सून्'ग्नेव'तर्ने'कॅ'ग्'वयाग्चेन्'ग्रैकॅ बैबराठवः रेप्तः व्यवस्रान्यार्थित्। सुगराण्यवस्रान्यः वृद्धार्थः वर्षः त्रहेग्'हेर्'क्के'स् वि'त्र'त्र'देत्। त्रके'के'ग्नेन्'के'प्पन्येन्'केन्त्र भुग गेर् द्वरातके प्रत्रत्ग्यम द्राप्य द्वरायक स्विनु नेर। हेपर्डर्श्येष्ठग्रेडरत्त्रर्परत्वयप्यय। हेपर्डर्ग्येक गुन्न गृत्र सम्भूत स्व द्रिन् में न्या व्या ग्वन हिन् यन न्या या रग् गैकाञ्चेद्रारुट र्ज्ञास्य राष्ट्रस्य देश। विदेश्वेद्रारु राष्ट्रिका सुरादेश के.नदःस्यापद्याचित्रच्याचित्रच्याः सान्तःस्याच्याच्याच्याः

エグ・後人、サイト、なばち、古代・流人

क्यां गुःद्व। हे त्वं क्यां प्रस्ता प्राप्त ने त्वं हु न त्यां क्या प्रस्ता क्या हु न त्या हु न

न्हें नुस्यतित्तुः भं नृद्धित्यस्य स्थायस्य स्थायस्य । हे स्द्धित्य स्थायस्य स्यायस्य स्थायस्य स्य स्थायस्य स्य स्थायस्य स्यायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्थायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्य स्यायस्

क्ष'न् मॅब'बर्ह्र ग्'न्युक्ष'त्र सुन्य रहु'बर्ह्र । हिन्य हे'उव ग्रीका <u> चुर्भुश्राञ्चयर। । हे सक्षाचुर्द्भुग्राप्याम्बर्भग्रेश्याम् । अप्रुप्या</u> क्षेत्रका जुर द्राया प्राप्त । १८६२ व्याया क्षेत्र प्राप्त व्याया व्याप्त । ब्रेन्प्रहेन्थयर न्रास्त्रा । देन्प्रहान्व्या इयम। । हु से यहाद की राय हैं पार्टी यह प्राप्त प्राप्त । हिना से पार्टी प न्ये भेश्यक्षें व्यप्तित्। | न्वान् क्षान्नेन के बन्दर्य वा वा वा हिन्दस्यम् कृत्रायातु पायम्य। । मन्तर्म मन्दि से स्नन्यम् । वायान्त्रित्वराञ्चाकेता । गन्यानेवाकीयकेन्हेन्त्र्र्त्नन्।। वर्षेत्रवृत्त्रत्वेत्रवर्षंव। ।रिवर्गिषयवान्तृवरायान्वहिन्। ने'सहत'न्राचीरापर्सरपान्देन ।ने'सहतात्र्राचित्रपा ग्रेग |नेप्पान्यस्यस्के हु बेन् | |नेप्पायस्यस्य के से स्राप् यामयान्यान्यान्यान्। |यावर्ष्ट्र-तृत्यान्यान्नुःक्वेन्। |यक्वेन्यान् बह्नसार इरिं स्नि । वर्षे र व्याह्य र पुरा हो न वर्षा । में विष् ञ्च मैदान् भूरामायकेष । ने त्यार्स्य संस्क्षेत्रः सेन्। । ने त्याया य संद् ঠি:జે'শ্রন্' | হাণ্'ব্রন্ষ্ণ্রেই'রুন্'ম'ন্| | খ্রার্ইন'স্তুন'ব্রান্ত্র' ळे'व। । विग्'रेव'ळेव'श्चरवार'लद्रें भूत्। । वर्षेत्ववाहरातुः

মন্ত্রীমঝার্ড'ব্রা । স্থাম'মেরবা'মিরেরম'মাব্রীকা । নি'মের ব্রাজারকা बेन्। |ने'स'य'यंबंब्'कें'क्रे'यम्। |ब्रिन्'रबाक्वेब'रबाकुम्'झन्'या दे| | अत्रव्यस्प्तंत्रव्यञ्चाञ्चेत्। । शुत्रव्यत्र्य्यत्र्र्यस्य भूत्। विवेदःवयादुनःतुःपश्चेत्यार्चःव। विवाधीयार्देळ्वेतःया मृदेश दियाबेर्म् रहिराकेर्म हिराकेर्म हिराकेर्म रा'पड़िया । क'शुपाय'ग्र'न्ग्र'क्रुंद'रा'ग्डेय। । शुय'य'र्यार्ग्यं র্মুব'ঘ'বারীঝা । রেই ঘাস্থ্রম'র বাবারীঝা । স্ত্রীব'ঘাঠীবারার <u> चैर्रारा गृहेया । रे.प्याच्यं यह राह्यें ग्रुर्य । रे.प्यापा यह वर्ष्टे ह्रे</u> ध्यतः। । शुक्रवानक्षेत्रः या वृद्धियाः वेत् 'दा'या । त्राक्रवानक्षेत्रः या देवा रेक्ट्रा । श्रुवायाद्वीवायावीनायात्मा । न्यूनवार्वेनवायाम्ना ळॅग्राळे। |शुरु'यायर्घर'प'देगायेर'ए'य। ।रे'रेर'यर्घर'प'म्ब <u> টুরাণ্ট্রা | শ্লুর্রাইরাম্'র্ণার্ন্র্র্মান্র | ট্রাম্ম্র্রের</u> र्देशन्तृत्व। ।हिंन्'यम्'दाकुरामदे'न्**तृम**'दळें<mark>यान्</mark>वेत। ।यम्'द्र चतुर्भीचरः कर्'बुर्'। । सक्षां स**र्' ग**ुनेका गुकेषा सका चन सः का सेर्। । नेप्यन्यतुन्कुष्यरःसन्द्वन्। । ह्यानेत्यनेत्राव्यवद्विषार्धिय। নর্ব গ্রী বেশব বামবাস্তুর মা বামবাসি বার্তাবেরী নাই সাঞ্ব तर्वाण्चेवास्य म्ह्रम्यति श्चरायव्यात। श्चर्'रायहरायास्य स्व ন দ্বাৰা নিশ্বৰ কাটীকাইবা'বাইবা'ইন'স্থান'বাৰ কাটী ল্ডানাখন तर्हर्रायां स्वादर्धे रायदे में 'ग्रुक्षके में द्रायां में स्वादर्धे रायदे में 'ग्रुक्षके में द्रायां में स्वादर्धे रायदे में में स्वादर्धे रायदे र

हिन्दर्स्ट्रेग्यकुन्न्दर्भाष्ठ्रात्र्राष्ट्रवाष्ट्री । शुःशेष्तयुर्वस्यह्रव चर्तःगर्वेद्राचा द्वरा । व्हिंगाः केयाः क्षेत्रः स्विद्राचाः स्वा 158 न्देग्यद्यस्य तेद्रम्रें वं विष्ट्रम् विष्टित् धीर्यानेया । क्षेप्रास्ट्रिंत् ग्रीयायानेयात्। १८८ प्रयाळे व प्रयाख्या छा प्राप्तीय। १८ की म्बन्न्यायश्वराञ्चः त्रेवर्य। वित्यद्वयाद्यं राष्ट्रप्यं वा वित्राम्बद् रा'न्येंद'द्रात्रातर्वेन्याः। | त्राकुरः हॅरः न्न्यायः ग्रुः पः धिव। । अवा **प**रिक्षेग्'र्न्द्रनुरम्ब्रेमबर्द्रम् । द्वेश्वपरिपन्'र्यद्रन्द्रवा<u>र</u>ुन् RB । १ वस्य हें गय प्राप्ति वस्य में स्याय दे हा। । में वर्ष के हो र इन्द्राञ्च छेपा विवादगर्धे वर्षन् हेर्द्राद्रा भूत्। वर्षन् द्रश्चित्रः तुः पञ्चेत्रश्चरं व्या । देश्वर्गे । वश्चरं वश्चरं वश्चरं वश्चरं वश्चरं वश्चरं वश्चरं वश्चरं वश्चरं मित्रवान्द्रम्यान्ते । इवित्रन्ते निवावित्रित्यिक्षात्रान्त्रम्या । रिसंग्राम्यार्थ्या । श्रीरात्रं सामित्रे । विरा बेर्गर्स्सित्सीर्राचित्। वितार्गर्सीस्म केर्वेत्रस्य प्राप्ते। । न्यतार्विरतिर्वेष्यपदेषं सन्येत्। |नेवमत्वन्यनेवानक्रंरत

दे। | र्मापर्वेमध्यप्रकृतिपत्नवयम्यम् । व्यापकृत्ग्रव्कि षर्हेन्'परीहेत्। नि'वनरात्रुन्'नेशनक्रेंन्नननि। विंशनन्'युन् घते श्रेचें भेद। । श्रुव भे । गृर्व का ग्री पतु न 'हे । त्रु न का भेद। । ग्रु न प **ध्याप्तर्भवेन्थेन् । । सम्बेर् हेर्यस्त्रायहेरान्येन्। ।** र्हें यह र दे 'प्रश्रहे 'प' ये द्रा | या यह द दे 'प्रश्रहे प' ये द्रा | या यह न्य अळ म्र्रायान्। आयर्दा कुर व्यामु के न। व्यक्षे न्युरे यङ्ग ८५ऍ'য়ून्। ।अधॅन'द्रश्हुन'नु'चब्रेनशर्च'द्। ।मॅं'য়ण'ळच'য়ैब्र न्दान्वरेन । में स्वाक्ताक्ष्यं न्दान्ते । व्यवस्य ने न्वर्वे न्य ग्रीरायुन् पङ्ग्परी । विक्रमाईरायाने राग्नु प्रमेत्। । श्रीन स्पेत ८तुराक्तीयम् पित्। । १९ श्रुयद्यस्य क्रीस्ट्र स्थित्। ण्युत्रे,अङ्गेलात्र,पान्। । शुं केव्यकुत्कुन्कुञ्चन् **भव्। ।ने** ला**स्** য়৾ঀঀয়৸ঢ়৸ৼ৾ঀ |৸ৢৢঢ়ৼ৾৾ৡৼ৾৻য়ঢ়৻ড়ৢ৻য়ৢৼ৾৸ঀৢ ৻ৠ৾৻য়ড়৾ঢ়<u>৾৽</u>৾ঀৢৢ৾৾ঀ यक्तुःपतेःश्चराळपाधेव। |**ङ्**णवासगायकुन्दराखेद। |ने विनः तर्स्यातुः है 'प्रतिः ह्रो' गवदायेव। । ह्रिं तर्स्यातुः ह्रीनः विदाने त्या इया सिंबहरने पराके पायेता । पायहर ने पराके पायेता । चग्'न्बर्स् अर्घ'न्नन्पन्। [अवर्धनःकुनवराञ्च'ळेप। [चग् रेब्'केब्'झुरखप'८५दें'ब्रुट्। |बर्धर'ब्**ष**'हुर'5ु'यब्रे**गबर्'ब्। |** इन व्याच्या देव । इन व्याच्या देव । हिंदा मन् निन्न व के निर्धे व स्व निम्न व स्व नि

ଭିଣ୍ଡ |ଥ୍ୟ''ମ୍ପ୍ରୟ'ନ୍ତୁ ଅ'ର୍ଜ୍ୟକ୍ତି' ପ୍ରମ'ଧିଷ୍ଟ | ଛ୍ରିମ୍ୟ ଅଟିମ୍ୟ न्द्रेशकीर्शेवळवराधिद। किंद्रेन्प्त्रितित्रीयराधिद। दिःता ब्रुब्के ह्विनि पेता । व्या नेदाळेदा ब्रुट्यापा प्रद्वापा है। इता ই্র্মান্ত্র বিষ্ঠান বি भैव। । इर-१८ न्यांग्रेशुन विनामत्व ग्रायाभेव। । ने यवतः ऋ भेवा नर्भ्ररपदी । गुन्धीयपर्भदार्भन् ग्रायप्रीय। । द्वायस्य प्राय **छे**:पंबेर्| |**प**'संबंद'रे'पराक्षे:पंबेर्| |देर्'रराक्षेद'रहासुद् न्न्र्न्यान्। । अवर्धनः कुनः व्याञ्चः क्षेत्रः । । शुनः र्षेनः द्रायः त्र्र्वेनः धिवः **१ अ८। । वार्चर वया हुर ५ पञ्चे पया उपने । ज्ञान विकार विका** ग्रेश । ग्रंदां चेतार्रां कंशे दारादी । यह वास दाराहेगा स्तराहें विदा वियवेर'ग्डेर'वृत्यचेर'रा'री विहर्दर्धन'र्वेद्य'र्दर' म्यानधीत्। । काशुनायान्य न्यान्य द्वारा देवा । वर्षे या या वर्षे संस् **भू**न्त्राराधित्। |निव्राञ्चाकुन्तिव्याने| । वृत्रवार्श्चनार्वेन्त्रव्या न्रप्तिष्व। । खनायरनार्मेना कुन्यन्ते। । गृतुन्ना संतिपने दूर् त्यर प्रभेद। १८ ई पः ब्रुट चर्चा चारा दे। १८५५ प्रमेद प्रभेद पर म्ब्रुम्बराधित्। ।क्वॅन्पाकेन्नारकेन्पाने। ।ळॅन्बरहुनाः शुना मरम्बग्यभेत्। दिन् भ्रम्ब्द्र दिन् परि भ्रास्क । दन् **ॱॺॖ**व्यान् बराम्यां लु 'राधिव। । ब्रिन् पॅव्यान्यां व्यायां व्यायाः विवा । मानवानर्वन्द्रमवाक्षीनातुन्नवान्त्रभीत्। ।क्षेत्राळेन् नववार्हेन्वा

त्रज्ञायाराधित। । श्रु तर्ने प्रस्तर त्रा प्रस्ति । प्रवि प्रस् सुन्यान्त्रायान्यायायान्याभेत्। । मृन्तुं वेन् वर्षेत्र नु वुरायाभेत्। । रेश्रयान्तुन्यान्नर्त्र्रारङ्ग्पित्। । । स्यान्त्र्न्त्वयञ्चन् साङ्ग्रयारा धित्र। । ननः नेंदार्र्स्यासुः हें वायायाधित। । श्ववायादेवावादानंदा हुन्याधिद। सिंबर्डरादनियाकोचाबेन्। । याबर्डदादनियाको पः बेर्। । ब्रेर्'बर्रैर'र्ळे ग्राक्चिं र्'द्राचा क्रांचिं। । ब्रेर्'द्राचा क्रांचि प'विग'येन'प'य। | १ व'कन'पश्चें राप'र य'तुप'धेव। । न'पश्चें र **द** तस्यवारासः हे प्रमूर। । होन् अधिवारावियावेन प्राया । हें वाकन् **डीव'रा'न**राहेपवाभैव। |५'त्र्सें'व'र्हे'हेप्प्रव'रु'स्र्य। ¦ह्विर'व्य बर्धरःचःविगाबेरःसःव। । ऋँ वः छन् वर्धरः चः देवः बेर् भेव। । नः मञ्ज्ञान्त्र्राच्या । विन्याम्यान्त्रिम्या । विन्याम्यान्त्रिम्यायाः ळन्'र्रेश्राच'रुत्रार्छताधीन। ।न्'वृन्द'ङ्गृन्'म्जुन्'ग्न्वश्रारण्'वृन् । हिन्यानहेन्यानेनाचेन्याया । इत्यान्यानेनाचेन्यायाने । द्वा मङ्गेद'द'न्न'अ'न्अम्'ङ्गेदा । हिन्कोन्चेन'म'विग'केन'म'वा । **ध्दा** म्ब्रिंशित्वयायव्यक्षिता । निःर्मेष्ययाययव्यव्यव्यव्यव्याय्येव। । वार्मे प्राची हु। इत्री वा वित्र द्वार विद्वार ही हुन प्राची प्राची हुन प्राची है । ট্রিন্'র'আই অভান্তনে'র্'মেঁব্'শের্মন্তা । বিশাবার্তনে বানা इयराक्षेत्रम्य वर्षान् स्वराज्याने प्रमान्त्रण्या स्वराज्य स्वराज् व्या श्रे'क्'स्न्पित्रिं रहान्द्र वर्षित्रिं वर्षेत्रिं वर्षेत्रिं वर्षेत्रिं

है नहुन्कुः व्याप्तात्रम् व्यापात् व्य

४ अ.भे. म्. १ म्. १ [हुन्यहेष्वयहेन्ययहन्यहे | हैं सें दुर्रं वारन्य षय। । हैं संदूर्भते श्वरष्ट्रा । ५ गत्र पश्चित्र प्रेन्। । व्रु'ब्रुर्थरपंथरप्यारप्यायय। व्रु'ब्रुर्थरपरित्यव्युर्ह् न् ग्रात्रचाञ्चन् प्रतिर्देश्यक्षरञ्ज् । । यह्यानु ग्रायर्थाकेन् अर्थायाय राय। भुः गुरेर सुरि खुराया गुरे । या सुर सुर्दे गुरा **ಹ**र्रायि क्षुं क्षुंग्रिर्। विषय् विष्यत्रे रिंद् 'ष्राया कुर्क्र' बेर्। । संदर्भपदिञ्च पद्यान्य वाद्य वाद्य । यर्ग दर्दर **टेंग्**रापुऄं इयप्थ्। | धूँव्कर्'नस्प्'व्यययाप्यप्यप्यप्या बै'खुर्श्विप'गुर्म'ब्रु'प'न्यद्। ।क्षु'कॅशचेन्'पदि'रर्मन्यम'बेन्। र्'रेशहें पर्ड्व देव द्वारा राज्य विष्य । रूप से स्वर्भ प्राप्त के क्केषा ।श्रेभीदॅरस्देद्देद्देद्दर्भ । वर्षेप्ताक्वेद्द्रयदेत् त्री |हेरवाराष्ट्रेर'वारखवायवादाधेव। |प्रमादादेव'स्र'क्रंबा न्दरम्द्रि। हिर्द्यायंकेन्यंहित्द्ववर्शी। हिन्कत्कित्कित् बर इर बर ग्रुरा । इ परि तु गर ग्रुर रु ग्रुं ग्रुं ग्रुं ग्रुं

छेन्'त्र। त्रायान्यक्ष्ययाप्यान्त्यवर्ष्यक्ष्यः वित्राय्या वित्राय्या वित्राय्या वित्राय्या वित्राय्या वित्राया वित्राय वित्राया वित्राया वित्राय वित्राय वित्राय वित्राया वित्राया वित्राय वित्राया वित्राय वि

हेर्स्-हेरकर वैक्'वेद्रायह्मप्रया। । है संदूर्सरे हुद्राव्यः द। । न्यात्रपञ्चन्यदेन्यं वर्षः वर्षः । यः सन्यवेषः ख्रुः य। भ्रिं ह्रुर्ययर'प्'यार्यव्यव्यव्य । ने'पे ह्यव्य हेर् र हुर्या षा'या ग्रुन्' र्ळ' न् ग्रन् जुद्' धैव। | नः ननः में स्पान् ग्रावे स्वेन। | र्षेद[्]श्चेश्च'तत्रक्षक्ष<mark>,पर्या |देद'क्षज्ञुद्'नक्ष्य</mark>्चरक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्य ष्पर्राधीतारे किर्प्त् गुर्ताता किया क्रिक्र स्वार विरा ने न प्रमासं चुरा । न स है के दें राया । में राह्य तुन सं हे स ने र <u> भुँ श्रेरहुर ५८ सहुवाय हैन। । अ.६५ सहय हुर</u> हुद'र्'तुरा ।अ'वेदेरेन्द्रेसर्गरवग्यक्षा ।ञ्च'ग्रद म्रिं श्री निष्यं वार्य । । देन वा श्री निष्यं श्री निष्यं श्री निष्यं श्री निष्यं श्री निष्यं श्री निष्यं श्री पन। । हुना नहस्त्रकी पी खुना नहीं न भून स्वेत्। । हा अ न खुन हुने । **र्**ट्र्र्ट्र्व्यूड्र-र्वाद्राया | व्यष्टु-तेरःव हर्वायुव्यद्र्य्र्वेव्यायद्र मञ्जनन। । वाप्तुः न्राकः ने नार्षेणः प्रत्यापते। । स्थाने हियाय हेन

सुन्यानहरा । निनेधिरानवस्यानिन्तर्ग्रेन्पाक्षेत्र। । हेन्द्र रं हैद। । माद्भेदाक्त्रेन मित्रमाहरातु। । मिर्मेशे मारसामा । बॅंड्ग्'झ'अर्घर'पकुर'रु'पद्रर। । युर्य'अष्टर'र्गु'र्घेग्'ष्ठ्ययार्रः মকন | বি'ৰ্মন্ম-'মিন্<u>মন্ম-ট্র</u>ম'মস্কর্মা |ম'ইর'কর'ব্রা गुन्द्रवाराहेर्यमहरू। (सुन्नदेश्यवर्ष्यवार्ध्वाक्रिक्षे विवर्श खुन्य चरा बॅदि से ब्रुं न्दर्। विनयामया वू सेदि के हुन न्दर्। । ଶ୍ମିଶ୍ୟୟ'ମ୍ୟମ୍ପରି ନିଞ୍ଜୁଣ୍ମମ୍ମ'| |ମ୍ୟୟ'ଖ୍ୟ'ଣୁ ନିନ୍ଧିଞ୍ଜୀ'ଭିଷ୍ त्या । भिन् के साम त्या न व्यवा पर साम न व्यवा । मा न व्यवा पर साम वर्षे देव बार्ख वाया । दाइता तर्जे राष्ट्र हिलादे कर वादा । विदः तुः अंश्वीत् म्रें त्रें व्याप्तात्त्वत्। विश्वाप्यात्या वितः द्वाया हे यर्द्द की द्वा वर तावर्षेत्र की की प्रति प्रति प्रति प्रति प्रति की की प्रति त्तिन्'न्म्**रायतेषु 'यान्द्रायु राय्याया** स्ना हेम्पर्द्रवायान्या ब्रिन्'इयरा धुन्'मॅरि'न देरा धुन्'नेन 'ग्री' छै 'या छैन्' उन सुन् दे चेन करा डेन्'न'तरे'क्षु'दुते'न्गात'रा'ब्रुंन्'न्ग्यपम् अ'सन्नयस्य वर्ते'र्वेन्य म्युर्य। मिन्द्रवयातार्ष्वे न्द्रे निर्वयम्य रिन्द्रे म्युर्वर्या । ञ्च ञ्चरवरपरिवयसायत्तु । वितायरिक्र स्वायात् अञ्च स्त्रं । क्षेत्रव्यक्षं क्ष्यन्तेन् क्ष्यवा । वित्तन्ति स्वरायान्य

व। श्विपदरे देव र्षेयरायायव विवासिय। । क्वेट दरावे पठन द्वा मंभिया । न्यारञ्चन्द्रयात्रस्य वयायवित्रात् । ज्ञान्यस्य वया र्वे र ज्ञुन दुराखवा । माध्यय यहुन क्षिप हें द र ने। । नेन हुरा *দৃশ্*দুপুদ্বাব্যাশুদ্। ।শৃত্র'আই'ট্র্র'রেরীঅ'র্বা'ব্রা' ।শৃত্রি र्दन्यतुन्कुः हिन्द्रम् ने । महिन्ध्यः नेशहे क्रुट्यान्यान्। । सर्वत्राय्वत्राः सामक्षेत्रं वृत्रायस। । नत्रार्वे रामतु राक्षेत्रं क्षेत्रं वृत्रायस। । र्वाप्तुनेशितेश्वरात्रात्रात्रात्रा न्स्राञ्चण'त्रहरायेषयाञ्चरवाद्याग्रुरः। । वृत्याव्याये प्रने द्वेरः हुरुष्य। । ग्रॅन्स्थलान् मृत्र्ग्रम् श्रह्मा वर्षा ग्रह्मा । श्रीकेन्र्रस् র্ভুন'রেরীঅ'র্ভাগাঝা । রেইল'ইর'র্ভাগামগ্রুন'র্ভ্রামার্ভালা । र्भे पिट्रवान्यन् क्रांप्रहेन्द्रवान्यय। व्रिंप्रनेतिः ह्रण् हेनाञ्चन्यान्या गुर्। |व्यातके देशके द र्झे या वु राज्य | 1 दे गुवा वु राज्य द र है र मृष । नगर नजुन 'ञ्च' अरे 'छुण 'श्रॅथ' नवे द्। । गुरुन 'स्पर' स्वर सम्बन्धस्य । तहनाः क्षेत्रः । । तहनाः क्षेत्रः प्रमानिकः । हेशमञ्जनसम्बा सुर्वे ने इवस न्यायमुधिन स्याने सुर्वे प्रहें **8**। বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব বিশ্র नान्यवातुन्। गुवाम्बे दिखेबसायार्थास्यायास्त्रीयासक्रियान्ना स्रावस्यतिः वेशान्देग्यायस्यस्य । हासरीयग्रायवित्रःह्याये व्यासम्बद्धाः लक्षराग्रात्रया ध्रम्धिरारतिराधरात्। ज्ञूयाराक्षेत्रक्षेत्रका हुन्यां अद्वियान ते न् नेन्यां प्रस्ति सामाध्यां ने न् हे न दुं स् कीन न्तर

मते र ज्ञुन दुर्शिन छण् छैर तम् नगर तु 'नित्ते तु 'न्द्रित्ति ज्ञुर सुत्राणण ला ।

म'यर्जन'स्व'न्न'र्याजे । गुरेर गुरिख्यायान्ने'यर्र य व्या । पहुत्रानु ग्राञ्चेत् 'पद्म ग्रान्व वया देव' या देव' । हे पर्वद 'पद्म । हे पर्म । हे पर्वद 'पद्म । हे पर्म । हे पर्वद 'पद्म । हे पर्म । चतित्रवर्गतित्। ।देन्'तर्नेन्त्रस्य वर्गतुः स्वाध्ये। ।के त्रिंदनिरे हे सन् वेष स्वयं वयवस्य भिद्रा । न गत्य हुन दुन हुन हुन हुन मॅंभेव। । म्रांभदे राग्दार्वे दाव श्रुवायर वर्षे। । या धाया वर्षे राज्ये 'ঘউৰ'নবী | দুগ্'রুপ্রনেম'ব্মাই'(র্ম্মারা | শ্রীর' ఉব'নের্ব' क्षिप्रम्यत्रेपयरी । हण्स्यार्थ्यस्य स्थात्राध्या । नश्रद्धाः यतुर्'क्रीयक्कु' वेर'रे। । हम्'तुः श्रद्याय्यार् गृतः सुयः यक्कीर्। । <u> नृजुबाह्यम् क्रें अने र ह्यन् बायका गुनः । । गृतु अक्रिं यने द्वेन ह्य र परः ।</u> <u>पत्री । कॅ्रप्थल र नदर्जेन र ब्रस्य र य गुरा । अञ्चर अर हिर</u> त्रीयायरायग्री विहेगाहेदाळ्याच्छन्'श्राच्याच्याणुन्। अर्थ म्ह्यान्यव्कान्यव्कान्यस्य । व्यान्यविकान्यस्य विकास गुरा | व्यातके रेषाये र पर्स्ने यापरायग्री । यार् र या श्रायदे । मग्रम्मिव मा विक्रम्भ मा स्वास्थ बॅ'झुर'स्'र्ने। । ज्ञायते'सुग्'हेर्रात्रेति'पर'त्। । पगतःदेव'स्'कॅबा न्दरपरत्। विवातवापव। हेपईवाग्रैवायवर **५**मॅं - करे खेग खेर दिन्। **२**देनुक हेन ईन प्रतासका गुरुव हें दुर

हिर्म् द्वा मिल्या स्था स्था मिल्या स्था मिल्या मि

हेत्रकार्यात्वर्षा | विकार्यक्षा | विकार्यक्षात्वर्षात्वर्षा | विकार्यक्षात्वर्षत्वर्षात्वर्षत्वर्यत्वर्षत्वर्षत्वर्यत्वर्यत्वर्षत्वर्षत्वर्यत्वयः

बळव्यति दे व्यवस्थिति व्यवस्था । । शुक्षात् चुनः यति दे वनः दीका सेवका । শ্রুবারা বার্বারা শ্রুবারা বিশ্বরার প্রার্থিক বিশ্বরার দ্ৰী স্ত্ৰু স্থাৰ স্থান ক্ৰিল্লী মান্ত্ৰী নাৰী নাৰ কৰে। सम्मान्य वर्षा के स्वार्थ के स्व ଦ୍ରିମ୍'ନ୍ଧ୍ୟା ।ଞ୍ଜ'ସ୍ପ୍ରଦ'ର୍ମ୍ବଦ୍ରିଷ୍ଟ'ନା । କ୍ରିମ୍'ନ୍ଥିମ୍'ନ୍ତିଞ୍ରି' त्रक्षित्वव्यक्षित्व्यक्षित्व्यक्षित्वः स्वा । स्वा वा हे ते खु बु वा की तळ ना तळ त्वा । हि खा वा न वा चा के त्वा । ठत्। । पर्गः र्त्ते रवदः श्वाप्यः द्ररः रु: गर्वायः । श्वग्यः हेरे : हः गयः श्रीयान्तर्र, न्यार्थिता । विद्यान्त्यायया हे पर्वव पिदान्य विद्याने यद'र्ग'क्रवरा'गुर'क्षेग्'अ'ठा'खेरा'पर'ग्वर'हे। रहाकुर'रा' ग्युत्राव्यान्यास्त्रासुत्रायाग्वताव्या रेविग्गेगियरपुर्रार्यासुराधिर हुग्रान्यक्रीक्ष्रव्यास्त्। देवसाग्रान्ये ग्राया संस्था स्रीति से संस् বাংন্যান্ডব্'ব্যার্কান্দ্রব্'শ্রীনেম্ব্'ব্স্ল্রাম্বান্ধ্রিম্বর্ প্রমাধ্র' -য়ৢৢৢৢঢ়য়ৼঀ৾৽ঢ়ঀয়ঢ়ড়ৢ৽ঢ়ঢ়৾ড়৾৾ঀ৽ঢ়য়ৢঢ়৽য়য়৾ঀয়য়৸য়ৠ৾য়ৢঢ়য়৽৽৽ हॅन्यायद्यात्र्यः क्षाः अक्षेत्रेत्रेत्र्येयायायः हिन्द्रा **पैन**'र्ने। । हे'पर्दन'ग्रे<u>'यु रा</u>द्वयराग्रे श्रेप्पतिता हें।रेप्पते ग्रंथ व्यवस्य

कुंवळ्डानुतुः कुरातुः रवाकुरावात्रावाद्यावादीः ब्रांस्टा

造'エ'エミ'ロ'「「」」、おこれ 「日子 「新工」

व्रःसंगुर् हे न्युंद्रं से तार्रारा ने हे न की ह्या व्यवस्य व्यवस्य मन् संस्थानि । स्याप्त विष्या विषय है पर्व विषय मिन विषय है स्व मळवरवाकीन् नेव पावयागाने प्राप्त महार ह विवाद्यान देश समित्र पा गानव <u>ষ্ট্রীর'দ্শের'দ্রর'দেরীনম্বাধানমানুমাক্রর'ক্র</u>দ'ঐদ্'দ্শের न्यश्रीयाः अर्थे त्यान्यर्पायान्यतः न्यत्र द्वार्यात्रः भन् वेंग कर मा के मा मग्भेनकारे हे वितार हैं म। अतुवादा विवास संभाग नता में के हिंगा हु ळॅगरानग्रानदेख्ना श्वान्त्रहेतुः स्यराधनास्तारहेना शासु न्त्रद्वार्वातार्वावाने वहें वादादी मुद्धे वादान्य सन् मुद्दा सु तु तु तु तु मु *बिद*ॱहैन क्वार्क्षेण त्यार न ताम विमानी मान क्षेत्र राज्य हैन क्षेत्र की स्थापन क्षेत्र की स्थापन क्षेत्र की स्थापन की स्थाप बर्वः वःवरः गणतः सुःग्रायासुः संस्कुः इवयः तृषा कुवः कर् वेर्धारा सुरा क्ष्र-१ क्ष्र प्रते क्षे क्षेत्र केन प्रत्या निव क्ष्र क्ष्य क्ष्य हान् गता । मर्चव त्यायमुव मुेव तहें बकाच दे प्रोद भव वा गा न प्य वे वा मुनित सुना **८ या र हिंग या क्रीकी का भेन । इस वा क्री वा ना ना हिंग । इस विकार के ना हिंग । इस विकार के ना हिंग हिंग हिंग** कुव भें हेर दे तहे व भेर राया त्वा यापायया रुषा वया वेवा वेळे ग्रवादित्रहास्त्रहास्त्रप्ताद्या देहिबाहुग्राञ्च केव्याहिना



च्यात्रम् त्राप्त्रम् त्रम् त्राप्त्रम् त्राप्त्यम् त्राप्त्रम् त्राप्त्रम् त्राप्त्रम् त्राप्त्रम् त्राप्त्रम् त

तक्के पाक्षेत्राव्यकायार्वेत्'यव। |शेष देते'येववाववाचरातुःते। । हां देते:ऍष्याय हेव:ग्रीकार्द्र । | ने:देष्यान्य प्रात्यात्रिरप्र त्रावध्या । **ॅ्रिन्यः दुः रं. र्ह्यः ह्वाः वे ति हिन् र्ह्याः तन्यय। । अगः क्वः र्ह्यतः र्झ्यः** विवा क्षेत्र। । विद्यानशुरः स्टर्सपदि रग्नुर्स्याष्ट्रा हिरान क्ष्रुत विराधी र दुः त्रज्ञान्त्रज्ञान् श्रेष्ट्राध्याः वित्रत्र्येत्। यस् X5'71 वगुराने सून गुजुरवासवा हे'यर्व व'शे विषय हे बान पाने दि तहेता भूग'न्र्युग'त्र्य' वे त्रर'वे द्रायके अधुयान हर हे हे तर्द्र्याया व्रत्रत्रः स्वादितः हेराहे पद्वाक्षियार्ष्यः स्वाद्या ন্না'মন'ব্ৰা हे पर्व शिष्ठु गरा न में न राया व्रतः व्रवायस्य (त्र्यायाया षिष्ठिः ऋतः ने राप्तः त्रान्तः त्रान्तः त्रान्तः त्रान्तः त्रान्तः त्रान्तः त्रान्तः त्रान्तः त्रान्तः त्रान्त हे दुःतुःविषायन् न्यन् मन्यम्यन्न । वि संन्यम् सः अवन्मितः क्षेत्रानु प्रमुष्य प्रदेशः स्वति स्वयः प्रमुष्यः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विषयः विष क्षे ८ र स्थितः र्रकार्भे र ना वे ब्र र ना वे र र शेव शके व रें राष्ट्र म र प् र्द्र व केर चरा बूदा (A क्रिंग क्षर A हुण दा विषा प दा दे दि **हे वा गर्द** केर हुत्यामका न्यम न्रिन्डित रहेत्य होत्याने दिने भेदाय र तर्ग मित्रिके सूर नतिन्देशस्यार अर्धर अर् मुर्यर सर्वि वे ष्ट्र ग्रेप्ययामा प्रवीत्रस्य मार्यिते हे स्राप्ति है स्राप्ति है स्राप्ति स्राप्ति है स्र न्कें न्यायया भेन् क्रि. मत्राग्रेत्रागुन् व्यापश्चाम् त्राप्ति । क्रेन् हे सद्नु नु शुर्रा देशमुर्दि है के सम्महत्वार्य।

हें के विन्यत्वित्रायात तर्रा । विवयक्त वे व्रावित्र

हीन'ग्रीस'र्ह्रेनस। । तम् न'हिते'सुसास'हुन मैदि'ग्र्निन! । हिसस श्चर वर्षर राज्य मुस्य मार्च । वित्र द्वर प्राच्य मार्च राज्य स्था मया | बि.र्ट पराश्चर ब.ल्ट्रिय पश्चित । क्रुंति कर ब्रिट्रे खेया शुक्रीया | हुनामहार हुन्यामदेग्नर सार्च्या । वृत्यंस्या हुन्य है नित्या सेना। व्रत्रात्रेयसाम्बर्ग्यसाम्बर्ग्या । विष्याह्यस्य महार प्रसारीया मव्। । तर्भव व रन् रेययात भव व रन्ति नुष्य । या । श्रेयया वे स्र र्बेर्चाय तर्ने र स्नि । । न सिंहिर क्षेत्र र पाया । वृत्य सरवाने स्टर अप्यञ्चन्द्रया । देः सं देते र्येष स्व द्याप्त्र की देवा । व्हिं देते र्येष स M: हेन'नु'रो | रे'न्षायरर M: A विराधर ति स्वराध । विन्या दूर्रा हॅं रा हु गः वी र वि न र हे गार ने न रा वि गा हु जो है जो जो है जो *ৰিখাশ্যুদ্যান্*য। हे'तर्द्व'ग्रीश'द्युष्य'हे'ळेव'र्घेदे'८८ 'द्रश'ळं८रा सते'न् ग्रुन्य'ग्रीब'र्ह्रब'ग्रुन्यस'नेबा **डि**'र्के'ने'वेन'ग्रीवे'र्ह्न वेन्बे त्रन्'स्'व्यातर्नेद'विन'। हे'मर्ख्य'याद्या'यान्त्रीयान'न्न'। मञ्चर'व्*षा* वृषा'म'र्रेष वाषा गुवा गुवा गुव्हें (यानु 'चुवा व्वा ₹'নৱ্ব'গ্রী' न्यत्राञ्चं न्यासुप्तन्यापान् केत्राकुष्यत्रः पुः बहुत्यायाः यहुन्यः द्वाविष्यः य वैत्यात्रेष्म, नः न्नासास्त्रे सुत्यानु क्रायान्यात् तुत्राम् । ने व्याहेष्ट वर्षुवर्ष्टेष ম্বুদার দ্বানা বিষয়েত্ব নহী দু বিষয়ে প্রী প্রার্থি করে প্রিণা ॲंट्र वी ब्रंॲंट्र 'देख'हे। इंट्र 'कॅट्र 'ब्र' तर्देर 'ब्रेट 'ब्रें प्रेंट्र' द व्यापाया रे'विना'वदाबी'८अम्वना'यावेना'स'यविन'रा भ्रा'म्बराउन्कीरेंद्र' चर्डेन्सप। हु'च'त्र्यसम् नेन्'न्न'म्'स्य मनेन्'चुसप। न्में'क्रॅग्'

हिवायरात्रायक्ष्यावयान्त्रायान्त्रायाः स्वायः स्वायः स्वायः विन: न् ६ वृष: [सर: तर्ळन राम: हुत: दुन| हुन| सुन्दाये: नः विन: क्रेन: हुन: स हि बॅं न्रम् यहें यर्ड्य श्रेड्र व्याय्य स्ति ह्वा नुपरा इंशकेन्यं तर्मा वि न्यामा प्राप्ता मानि स्वाप्ता है स्वाप्ता स्वाप्ता है स्वाप्ता स्वाप्ता है स्वाप्ता स्वाप्ता हें विंदा दे। रहा या प्राप्त प्राप्त के दारा प्रति के प्रवाहिय के पार्श प्राप्त है। बर्च मन्यन् ग्रास्कु द्विन्यसु न्द्रम्य ग्रास्त्र प्रस्त्रेत दिन। न्यतः सु <u> ५८८ वर्षे होत् स्या श्रेप प्रेर वैदार तुवापय। देरो विश्वा</u> मस। हुन्कुन्रान्याम्याक्रियान्तिः सन्तः सन्तः सम्मान्ये सुनानाः स्वान्ये स्वान्यः व्यायन्तियान्युन्याङ्ग्याव्यायर्थन्यान्त्या हेरवर्व्याश्चीत्व्या **न्मॅ**न्रात्मतुन्दर्भे अर्थेण्यदेग्न्यदेग्न्न्दिन्द्र्युर्यात्मपन्द्रस्यायम्न मलम् वित्तरत्याः वित्रेश्वर्मा वित्रेश्वर्मा वित्राम् व्यावस्था विन् क्षेत्रस्य द्वा स्ट में श्चु'त्र'हर्न'प्रॅन'प्रेन्'नुङ्गु'ङेग्'ग्रुन्ह्य| सुग्रां सहित्'यहे तुर्गादा न्नः क्ष्यं प्रतेष्ट्रः युवा स्टब्स्य प्रतेष्त् ग्रुट्यः श्रेष्टः स्टब्स्यः स्टब्स्यः स्टब्स्यः स्टब्स्यः स्टब्स्यः मगुरः तर्ने गुजुरुकार्य। ।

हे मुप्त हैं न विश्व क्षेत्र क्षेत्र प्रिंग है न विश्व क्षेत्र क्षेत्

ষর্ভ্রম্ব ব্রুইন। । ইবি মনি বৃह্র ব্রুই বৃদ্ধ কর। । বর **इ**स्ट. देवे. पहेंचा विस्ताय है. पहेंचा पहेंचा प्रत्या विस्ताय है. पहेंचा प्रत्याय है. **ब्रैन|धरादर्भन|धर्म| विम्ने विद्यासीन|दान्भन|विम्ने|** नते. तुराताना । ब्रिंद्भानानयद्धारा की त्यादया है। इत्राप्त विश्व न्याचते द्वां के राष्ट्र राष्ट्य राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट्र राष्ट तन्त्रया । धुण्कु'ळेव'रॅदि'र्झेय'वैण'र्झेव। । वेशण्युत्रपदेष्ट्र ता वदाविदान्य वदार त्वा हो। विदेश्य वदायायाया हेवा देख वदार दाया देखा राळिरवेर्'रे। ष्ठि'र्र्प्प'रा'तर्रे'ग्रेशक्रराधेत्रत्रं वे'क्र्र्प्र्र्र् भ्रुना ने बाय में मान्ना वाये ना प्राप्त ना प्राप्त का ने प्रिमा कि से प्राप्त का ने प्राप्त का निर्माण का निरम मव'र्झ्व'र्अ'तुरि'र्झ्ल'रु'रास्न्'र'रुन्ग'र्डन्'। न'रून्'गैवान् गुव'ग्नन्त न् ग्राम् क्रोक्ट्रिंट् यासु यान्य न् यास्य त्यायाय श्रीयाया श्री ना ना त्यान् । यान् । यान् । यान् । यान् । या बेन्'परात्त्रीतार्वराप्ता तन्यार्वर्वर्वत्रवाद्वर्वात्वर्वेगायेवापरा महग्द्र्यंत्रक्ष्यंत्रया श्चित्रं ची वर्रित्रं वर्षा महत्राप्या **ॅ्र**के अप्तान्तां विक्रिके विद्यान के तान्ता प्राप्त के प्राप्त म'तुन'तृन्य'विषाक्षेक्ष'वय। स्यायण्याह्येन'ग्रीक्ष'व्यन्न'न्याकेंबा **९**वर्षायेद्र'द्रवराहे'भ्रृत्'सुरा**भेद्र। गृद्धान्**र्भुग्रायेट्यःक्वुन्'द्रवरा

है तर् स्त्रां निया क्ष्या क्

ह्म' अ'है' सें न्र्यं द्र' स्वर्धा मुख्या | ने मुख्य शेषित ह्र' संभित् | ब्रुः यत्रिन् नृषु या ग्रीकार्यमः व्याप्ति हिः त्या वृत्ति । ब्रुः या ये प्रयाप्ति त्या वृत्ति त्या [तर्ने गहु असी सिर सर्के न भाव का भीव | सर्के न भाव का ने म्बुअधीक्षक्ष्यादारक्षप्रदेशियार्म्य । यदशक्तवाक्ष्याद्वर्पाद्वर् ग्ह्या । ने ग्ह्रियं के त्यति स्मुत्या ग्रम्था । सुत्या ग्रम् महावामीयाम्यान्य प्रतास्त्रिक्षे त्यान्य । भूष्याः क्ष्रवादाक्षुत्रायामहावा। ने'ग्रुअक्षेयदे'न्वयायेष्पेद। । नवंययेष्दरने'ग्रुअनीयपेट्य रक्षराद्रिश्चै'त्र'म्व ।व्यादर्रिः न्दःव्याद्रक्षरे हं र्रेःवृत्या ।दर्ने वृत्य के सिंदे क्षुपान् व्यामेद्। क्षुपान् व्यापे न्युक मुक्त स्पान्य सिंहे । वार्मेग । मानान्मीनामद्यानाषुय। । दर्भेगुह्यकी सदि में हुन्य षेत्। । धुन्यन्ते न्याद्यसम्बद्धाः स्वत्यस्य । मुधिन्दाः तस्र राष्ट्रर में मात्रुय। । तर्रे मात्रुयक्षे सिर क्षं क्षे पित। । क्षं क्षे रे ग्रुवाच्चेश्रॅंप्रव्यं न्यापदिश्चेश्यम् । इत्र्र्ष्यार्थे मृत्र्र्यं स्त्रं न्युवा दि'न्युवर्वे सदे हिय स्पेत्। हिय स्टेन्न्युवर मेस्ट व्याप्तराचित्रं वे त्यान्त्रे । विष्यान्ना प्रमान्यान्या । तिने न्यान्यां विषये

ह्युव्र'ग्रेण्यायेव। ह्युव्र'ग्रेण्यात्रीः गृह्याग्रीकार्येन्द्र्यं रक्षायदिश्चिः ल'र्नेष । इ'न्रातरे'न्रार्मार्चा । तरी ग्रुयं से तरी हिस बळें राष्ट्रिया । ब्रियायळे राप्तर्ने गृह्य ग्री राष्ट्रिय प्रम्य दिश्वेष्य स्मृत् । ब्रॅन्या यत्री महाद्या ग्रीया प्रेमा व । यत् । प्रमा माना । यत् । प्रमा माना । यत् । प्रमा माना । प्रमा माना म क्षेक्ष्य'ग्रुवा । ८२'ग्रुवाक्षेत्रते क्षुं ज्यावाक्षेत्र । क्षुं ज्यावादि गह्य गुरुष मुन्द्र स्थान दे हैं। त्रा मृत्र वि । त्र प्रमान स्थान **ब्रि'त्य'नेन ।न्यत्र'कु'न्द्र'न्द्र'न्द्र'न्द्र**'न्द्रु'न्द्रु'न्द्रु'न **ା**ନ୍ଦି '୩ଶୃଅ'ଣି'ନାନି' चतुरःकुषेव। ।चतुरःकुष्दरेःगुशुक्षःग्रीक्षष्परःव्रःरक्षपदेःश्चेष्यःमृग् । **इ** ५८:क्रूट:५८:वेग:२:नशुव। । ८६:नशुव्र:वे(यरि:प्रें)द:क्रु:**धे**द। मॅबादर्ने नाबुद्धा ग्रीबाधें र द' र बाच दे श्वीपा में न । ই बान बार बाय बा विदे नरायां प्राप्तायह्न देशे देशक स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य बक्षेच्य'क्षेग्'पर'र्नेर। धुग'र्यर्थत्वरश्रेक्षेद्रस्त्रहरू है। हेपर्दुव देव में के सम्म प्राप्त है। के स्थान सम्म है प्राप्त का स्थान इयरात्रात्रापरासुताव्या ५६४।म् १६५१ इयरागुराञ्चायात्राया नन्न'न्न'ष्ठि'र्वे'त्रनेत्र'णुन्'ब्रन्धेन'रा'यन में पुरा ५ 'खेद'कन'धेन' · दाञ्चीप्राप्ता विःसंश्वेषाश्चराप्ताः वर्षाः देशकाः प्रवासाः । त्रेव'पर'व। प्प'व'वग'में'तर्र'मर्'केव'श्चेभयात्र'र्र्र्प्**र्ग्यं**त्रा **ॻ**ॸ्गृ'ऄॗॱरॱॻॱॵॺॕॖॺॖॱय़ॕॱॾॕॱऄॱॵॸॱॱॕऴॴॵॺॸॱढ़ॴख़ॸॱय़ऄॳॎॵॴॱड़ॸॱॱ

5्गर्ः। वेष्रवुःर्द्दान्दरः स्टायुर्द्याया

८२ प्राप्त व व मा प्राप्त के अपने के प्राप्त के प्राप मन्ग्यक्षेन् ग्राञ्च अद्विन्यात्म्य। |म्पान्य व्याप्टे मन्दे केव्यवस्य इन्द्रगर्सेल । व्रेग्बुन्द्यर्थं हुन्दुन्लस्यत्र्द्रन्दुग्रस्य। म मंद्रार्थे में हे सरायदे नद्रश्रा द्रा न्यु न स्त्रा । व्याप्य न द्रा न्यु न सदिश्वे'कॅ'ब्रॅग्'शुर्र्न्यर'कॅ'दरी । प्रतर्व वयायापरी सुध्यर हेवा र्दमन्दरमम् हे। । दिने के न या के न में बाह्य सिहान होना । भुप्त'वग्मेंप्रेने'केव'गवसासु'त्र्र्र्'ग्रस्य। अत्रिग्शुर्र्र्न्य्रस्यें'हुर् **&**पालस्यान्त्रम्'तु म्यास्या । सर्वेद्र में हे हरापदे म्यास्यानु मानु শ্রমা । বশ্বান্বশ্রেশ্রেশ্রেশ্নিশ্রের্ভব্য । বেইক্ষনগ্রশ্বশ্ मुन्। विते तर्मेन प्रमान्य वा निर्मे के न म्रायाष्ट्रेन्त्यत्रवा । नामान्यनामानने केनानन्यस्य प्रमान्यवा । व्याप्तिक्ष्यात्र व्याप्ति देश्य विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त्य विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त विष्य विश्वास्त विष ঘরিব্যব্যস্ত্রন্দ্র্ব্রা বিশ্বর্ষা मॅव्यन्ग्राम्यान्ग्राम् श्रीकृत्वासुष्यम् द्वार्यम्यान्। १८नि स्रीमास्य स्री न् में राञ्च अद्विन त्यार स्था । भू मा दण में मने के द ग्व दा हा दूर स्तुः न्रला - क्रिन्द्वर्र्त्वर्वे द्वर्रक्तं न्वर्वा द्वर्रा द्वर्रा व्याप्त र्गर्दे हे सन्परिष्ववश्रान्त्रन्तु वर्षा । । दिते सर्वापाय प्राव्या तत्र नदे ज्या स्वायत्ता । क्रायिव विषय क्रिया क्राया । तरी यहार

इ न द्वारी न व देश न दि ते हो । दि र के र ति के र व के हा अ हि र लात्स्या ।मापादनार्यापने केन नद्रश्राह्म हुन हुन न्यर्थे प्रनः खुन् नव्यासुर्न्र न्यु न्यास्य। विष्यं में में में स्मार्थिः वदराशुः इतः तुः वृद्यता । विदेव व र सहतः प्रदेश व व व व व व कु'कुन'र्मे'पिरिप'कुद'ठदा । तिनै'मतुम्बद'व वसकी'तशुग'कुन'केर र्द्रमन्त्रत्म् हो । १८६ केन्स्य केन् म्यान्य हिन्त्यत् सुत्रा भारावनार्में मरे छेवानवरासु इत्रुप्तिया । भ्राना भुराप्त सर्वा गुरा क्ष्यां नवस्य सुर्द्र स्पृरं न स्था । य में द्रार्य में हे हर स्पित प्रस्तु द्र स्पृरं न्रस्य । विद्यान्रस्यानान्नाः भानतेः र्युन्तान् विः संस्थान्यन्तेः त्त्रयाचा इव्यासुत्राच्या । ज्ञायायाच्याचन्याः गुरः सुवाः स्वेरः तज्ञरः चरः <u>चि.जबाया वि.शॅर.इययाग्रीजनात्यापक्र.श्रेमायाश्चरयाययाप्राप्या</u> न्दरः पर लु 'लु सप्या हे' पर्वत 'यर प्राप्त पर देश प्राप्त पर प्राप्त है पर्वत प्राप्त पर पर प्राप्त प्राप्त प भूष्ट्रशायात्र श्रुरामा या सुना वा व हेरा वया । वि रामा या तु भेगा पा श्रुरा वा वया **र् ने पः पञ्चतः पः स्थळ र के श्रे अग्नरः स्र्रिशे अर पेरः उरः प्रवाधारा स्निः हुः** विथान'न् मत्वेन। इवारिवायर-नव्यार्थन्यात्रीर'पार्द्रन्ताय केन्यरायम् ग्रायस्य नेप्रवास्य केष्ठेन्य व्याप्त व्याप्त विष्या केन्या न्य क्वुंवा र्द्धव्यत्रे स्ट्रेन्स्र भेवा गृह्य स्वाव वा वागुराय रे गृह्य र वा वा

कुष्यम्यायाञ्चया । विश्वयाञ्चययायायायायायायायायायायायायाया ञ्च न त्रुसर् क्रिंस क्रिंस सुद्ध । अस्ति सुर न दे न क्रिंस सुर न दे स | न् गुक् ज्ञा गहाळा व व व व व व रे गहेन हु कें व | किन्न व रे व रे व बेरा ठद'८र'यति'श्चेर'ऍल'पेद। ।८३८'श्च'ग्रुय'ग्पत'५८'शूर'ल'र्स्ट्। । हुन्यन् गृत्यद्विष्यये त्यारुष्ये वा । न्युर्न् गुत्र येन्यर र्स्स्य ताले त्या अन् र सह । । अश्वात सुन र प्रति तह ग्राय ते सुग स्था भी । त्याक्रवानुष्येत्वावेत्। स्यान्तिमा विव्यवेत्वान्यानुष्येत्रेत्रहेववा मनकाषीत्। । तर्केन निम्हिन मन्। । तर्ने न खेन खन निर्देशीन हग्राधिव। । तुराकुर्वानुः कॅर्रामात्मन्याने। । इतात्रिं सम्हेंदा त्युकाळे पं भेव। । वेका ग्रुत्का प्रमा क्षि रापां क्षेत्र में सुधाने क्षेत्र **धे**व'दा'र्दे'बर्बररहे'दार्ग'श्रेर'व्रवाहेंबानेग'होर'दा'य। तुःश्रुर'द्रवराय ष८,४.५.५७५। ह्र्याश्च वारा भेवा ग्राम हिम्म व साह्य मान् दिन पा रज्ञासम्बा ने प्रस्ति । प्रस्ति ज्ञासम्ब <u> २८. भूर. मे प्रसंस्त्रां प्रसंस्त्रां ये संस्त्रां ये संस्त्रां ये संस्त्रां ये संस्त्रां ये संस्त्रां ये सं</u> ळॅ'व्यापक्षे'क'येन'पेव'विन्'न्'कृति'चब्रयाय'चन्नर्में'वनै'प्युर्ग् वेब्''''' न्द्रं रन्द्रायर् राष्ट्रं त् तुञ्चन्यायान् भेन्याये मेंग बरम्याक्ष्रिन्द्रम्यायान्वेत्यायानेन्यायं देशान्त्रं गुर्वा वशुर्वित्रः गशुन्दार्थे|

ढ़ॅॱड़ॱढ़ॕड़ॱॸ॒ॸॱज़ऄ॔ड़ॱॸ॒ॸॱऄॗॱॸॱॻऻऻढ़ॹॖज़ॱढ़ॖॸॱॿॗॱक़॓ॱॺॸॱॺॗॕॸॱ म्नु भैद्र । तहराम र्ग ने ग लेग रागुर प्रताद रात् ग्री । तहेग हेदा ह्या । त*्रवाञ्चवा* हर्गा हर्गा । इवानियार प्रेर राने ने ने से वा विषय के ने न्म्'रु'स्न्' । व्रश्मव्पर्भः व्याप्तुन्'रु'त्न् । । देव्यवन्यं । मञ्जू न्यारा | पार्चे न्र के । । भेग न्याने या चुरा पार न्या पार्वे न्। ্ য়য়৾৾৾৻য়য়ৢ৻৻য়ৼ৻য়য়৻ৼৼ৾য়য়৾৻৸ঽয়৻ ৠয়৸৻য়ৼয়৾৻৸ড়ৢ৻য়৻৸ৼ৸ৼ৸ঽৼ৻ ं**ढ| ।** प्रचतःबरःदरःदशःसरःकृरःगुरुतः। । सरःवर्गें (दर्देदः प्रदेः तुराताचवा । छेतर्ने के हुर्नु तकी । हराता छै । वस्ता हुर के उदः। । पञ्चे पति पृत्रेव भुत्रातिकर परत्येव। । श्रुवापक्षेत्र पति े तुसायाया । क्रेंपरी दुर्गरी या क्षेत्र सुन्। । न्या क्रेंस होन्य परिनुसा लानमा । देवानाशुरवामवा । शिरानायान्वामा हे रामा संविधान ॅबॅग्'पर-८बर्पदेस्ट्रब्स्यादं युर्र-५वा सुन्नु८-ग्रीवर-अधिव-पर-दि<u>८</u>-विश्वस्य में वर्षा प्रवादित्य विश्व में वर्षा में प्रवाद के वर्षा में प्रवाद के वर्षा में प्रवाद के वर्षा में ५-५८-७ अर्थासु हेन शुन्य ग्री मन अर्थार माधुन्य हेरा तहेन पर है। लेख विश्रामका हिम्बद्धन् अवेकाने प्रवाहित वा हिम्ब की अर्थे अर्थे अर्थे वि *शुःदेव*'खन्नस्टिन्स्र्स्मीक्ष'नेन्।म्बुट्सव्ययम्द्रस्टि,मबुट्सर्स्। । ज्ञायान्यापानहेन्याया । गर्रायाना क्षेत्रायाना धिन्यायात्रत्र्त्रं क्रेंयापदेखें। । नक्रेन्द्रेयायन्यन्पन्पत्रत्रे

|व्यातक्के'क'येन्'यन्पन [तक्के'च'क्के'हुग'ई|अ'चत्रेके| गुला वियाकु के वार्म झूंया परिक्री র্মব্য | きべら'まへ'ら'やへ'やく |रीयशंकवंमायरक्षेंयायते हैं | | यर्यर देव'यव'द्व'यर শ্বীঅথ। শূকা ।য়ৢঀ'য়য়ৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢয়য়য়য়য়য়য়য় 多いではならればれて गुरा । न्यंक्यंयचतः उ.त म्बंग्यते छे। |बर्धे'न्बव्'बेन्'मर'व्रन्रे श्चित्रा |कॅश्न्रान्यक्षेप्रसुन्यस्यि । इतः श्रेचः श्रेचः न द्वाः त्यंत्रेत्व । श्रॅंत्वसंद्भंकॅशंत्रेन्'रा'त्व । तिहेग्'हेन्'तुःपामवशंकन्' इर्था पिक्र्यक्षेत्रस्रीयास्त्रीयाया । विग्नायस्यास्य बेत्। |वेरःक्ष्यानव्यव्यव्यव्यव्यान। |वायतःत्र्यंक्क्ष्यान्वः हेण् धिव। |ने'छैर'छैर'ग्री'पराय'र्बेड्र'पॅर| |ने'छैर'ळे'८ने'क्लंपरा इत्या । वेयान्यस्यव्या - र्यन्त्रम्ययस्याः अवस्त्रम् रबारा विषाद्यायाषु वाषाकुष्या वाष्ट्रेवा सुन्नान्। । हि न्ना ना प्यानि वाषा महार हैं र द रॉन की हुवा नहाम शर्मा विषय में विषय के व रम्बास्यान्तरेयन् तःबृतु । यन् नुवान् । कृते । यर नुवान् । यून् ।

ਖ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑਖ਼੶ਫ਼ਜ਼੶ਜ਼ੑਖ਼੶ਖ਼ਫ਼ੑਜ਼ੑ*੶*ਫ਼ਜ਼ਫ਼੶ਖ਼ਜ਼ੑਜ਼ੑਜ਼ੑ ਫ਼ਜ਼੶ਫ਼ਜ਼੶ਜ਼ਖ਼ੑਸ਼ਖ਼ੑਜ਼ਫ਼ੑ੶ਜ਼ਫ਼ੑਜ਼ਫ਼ਜ਼ੑਜ਼ੑਫ਼

व्यंगुरा देन्द्वव्येश्वर्यान्ति विन्यं व्याप्तानि विन्यं

গা'ড়বি'শ্বৰা'ৰ'ৰান্তদ'নতদ'ব্য क्रमें कुर्य केरसा तर्वे राम प्रतिवाद मदि:ले। **अर्ग्ने भूर् ने हि राग्र ना राम्य म्यान स्वराधिका हे यह वर् न्युन्यरुन्द्राक्ष्र्र्र्ययाय्य्वायाय्यर्ग्यर्ग्यर्ग्यर्ग्यर्थः इ**श्चित्रप्रहिष्याहे। देविषागुब्द्विश्चर्यस्याञ्चर्यस्यस्यस्य मर्हेन्'यर्द्धन्याते'हिंद्र'क्षेप्रेव्द्वयत्दे'प्रेव्। क्षेप्रेव्द्वर्क्षद्र'यासूय्याधेवः रात्र स्थर दुन्य स्थर । हिर्म दुन्य कुरान शुरा स्थर न सर हो हिर्य **দদ'ন'ন্ত্ৰাঝ'নঝ। মিদ'র ঝঝ'গ্রীঝ'র্মণ',রুবা'ঝদ নেঝদ'র্ম'** मञ्चरारमञ्जरास्य ने हेरान्डरायञ्चरात्रस्य वर्षाञ्चरा *अतुरापस्*यम्द्रअवेश्यक्र्रस्यश्चेष्रगुर्-अर्छेष् ञ्चग'मीस'प'म'सु श्चरः केवः में तरारापिते ग्यारः सः पञ्च रः राजा क्रीसः गुरः राक्ताव्हाः য়৽য়৾৾ঽঀ৾৽ঽয়ৼৢ৽য়য়৽য়ড়য়৾ঀ৽ঀ৾ঀৼ৽য়৽য়ৼয়ৢ৾য়৽ঢ়ৢ৾ঀ৽য়ৼয়৸ৼয়ৢয়৽ *नुःतसुरःदबासूरःक्कैयरःभेनबानुः*गशुरःआग्वरःमदिःररःशःम**्वग**यः गुब्भः सळव्र प्रतिव्रार्थेग्। स्र ८ प्राः इ वर्षा ग्रीकारी सुवा ग्रीका व्यक्ष *८२* ८५ प्रत्वेष् ८५ ष्र्या क्षेत्र प्रक्षेत्र प्रत्य क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र प्रत्य ब्रन्थ्यात्रुन्दिन्कुहिनीः प्यत्यन्देश्यान्दिन्न्यानेष्पेद्। यद्द<u>्रश्चित्र</u> **ष**र् छेशंहिं रन् ने ब्रिन् र प्राप्त भाषा श्रीयान न न पर र र । ቒ፟፟ጜጚጚ፞፞ቘ፟፞፞፞ጞ **छे**न्'चरि'र्से'कुराइयस्यस्यञ्चन्यस्य। गुन्द्-द्'रेट'गुरापर'युर'हे। हे नर्वं व के के व निवास के के निवास के *৲*৻৾ঢ়৾ঢ়য়ৠৢয়ৢ৾৽ঢ়৾ঀড়৾ঀৢড়৾৻ৼৼ৾ঀয়য়ৢৼ৾ৼয়৾৾ঀঀ৾ৠৢয়ৢঀৼঢ়৾য়য়ঀয়ৼ৾

षाःय ईव् वितः न्न्रपः न्तः गुकाय र युनः है। । नेते के वि विश्वकार्याताः য়ৢ৾য়৽য়য়ড়ৢ৾ৼয়ৢয়ৼৼ৻য়৻য়ৢয়ৢ৽ঢ়য়৻৸৸ঀ৽য়ঢ়৻য়য়য়য়ঢ়৻ৼ৻ नतार्थे हें ग्राकुरेग के रेग हैं भर गा करे खग या दा वर्ष *ঀৢ*ৗৢৢৢৢৢয়৻৻৻য়ৣ৾য়য়য়ড়৻য়ৢঢ়৻ড়ঢ়৻য়য়য়৸৸৻ড়ৢয়৻য়ৢঢ়৸য়৸য় *दे*'ल'सुल'केष्'त्दि'ध्वैदे'दॅब'ळेब'र्घे र'तशुर'प'**पॅ**न'दॅ'ग्रु'प्दे'सुर'प**र्**ह्न**ा** कुत्रार्यस्य गुर्द्धार्येत् भूत् भेषारा विषा यस्र राय हरायसहे यर्जुब'न्न' यहत्य हो। ` नेशहें पर्जुब'की कें तरी हैं शपा हरायरी यहन्। र्ह्युं प्रविकार प्रविद्या स्थान के रखे'ल'भैव'पर'*त* नुष्'ङ्गे। देव'ग्रुन्'स्य'युर्हेन्'ह्रेन्'न् बॅशक्रुया *शु'*तु'हिंद्'खु'हे 'ब्रुद्'दु'पंभेद्। पञ्चत्पतृह्र-'खे'बेद्'प'तदे 'शङ्ग्'हु' *য়*৾ড়৾৾ৼ৽৻য়ৢঀ৽ঀয়৷৾৾ড়৾৽য়ৢৢৢৢঢ়৽ঀৼ৽ড়ৼ৾য়ৼ৾৽য়ৼ৽য়ড়ৼ৾৽ देशवुषायय। हेपर्दुव्येषुषार में र् ग्रीकीय र यापिवश्च पाद्य । दहीं र राविषाभेदा ॲं'इ५'ये५'रा'ल'ङ्गा'तहल'ये५'खगदाकु'५ कॅ्राय'ल५ै' <u>৻ৼৣ৾৸৴৻ড়য়য়য়ৼ৻ৼৢ৽৸য়ৼয়ৠ৾৾ৢ</u>

हें झ्य इयश्य हिंग प्रदेश स्त्र स्

न्तित्वर्द्धनायस्यात्रमा । विषयर्त्रस्यायतेत्र्यायस्यात्रेत्।। Bयदाहुन'येनदार्सेयेन'ने'येनवा निरायर में मन्यादारी सर्निन मस । निरुधाक्ष्य में साह्य स्था तह ता है। । निर्मा में से हिन महिन निर्मा न्ना । पर्रित्ववादा गरि हुन रहूल बेर्। । मः बर वृद्यकारीः ल'तर्न्द्राचेन्। ।र्स्न्राचेश्राख्यातळलाने। ।न्द्राचेंड्रव्यात्रहेन् हुनाम्मूल'वेरा । पर्रिं सुल'त्रेर'हुनाम्मूल'वेरा । मावरस् श्चर द्वर्ग प्रवृत्य केर्। क्रिंर श्वरेशय केर देशय क्रिंग वा । वेश वा श्वर ता ॉ^र'र्र्'यविन'कुल'र्येदे'हुर'र्'हेब'द्रश्रक्षेत्र'रश्रप'दर्ने हुर र्'तर्ग'र्गे'वेशर्थे'कुशद बर्शकुश्चर-रस्त्र'राह्य 夏々ざ、タフィック・ *ঌ৾৻*৽ৼৼয়ড়৻ঀৼ৾৽ঀ৾৾ৡড়৻য়ৢ৻য়৾৽ঌঀ৾৽ঀয়ৢৼয়৻য়য়৸ঀ৾ঀ৽ঀঢ়৾৽ৼয়ৼৼ৻ড়৽ৢৼ रक्ताकुतानुभूराने पान्या हे पर्व्याप्ता वस्तानि विवादरा षे रम्द्राह्म अन्य केषा यह विषय में साम में मान के मान यहराष्ट्रियास्य तर्धे दान् वृषात् यायवा हे यह दार्शक तथा र श्चीरः धरः ग्रॅरः ध्वारु 'श्चेत्र' दश्चेत्र' दे दिन्दे दे दे दिन्दे होते होते । । । । । । । । । । । । । । । । । र्वतेन्द्रम् र अधित हित्। यहत्य कृतः भेवित्य क्वेतः यहतः मेद अपित्। र्ह्स होन्'क्रियाम्' स्वयः द्वेषाया वे प्रतास्त्र विष्या क्रिया क्रियाम् विष्या जुलार्ये प्रश्लेब परिकारिका है का है का रेन्स्स्र राष्ट्र है जा बना पर्देप्पन्द्रपदिव्यञ्चप्पश्चित्रहें। हुँन्द्रर्प्येण्यक्रित्रा नुसुन्त

क्षित्रं त्रं कुष्यं त्र कुष्यं के त्रं मित्रं कुष्यं मित्रं त्र मित्रं कुष्यं मित्रं मित्रं

क्रिन्तिन्श्चिन्तिन्त्र्वाचित् । श्विस्व्यां । श्विस्व्याः । श्विस्व्याः । श्विस्व्याः । श्विस्व्याः । श्विस्याः श्विस्यः श्विष्यः श्वयः श्विष्यः श्विष्यः श्वयः श्विष्यः श्विष्यः श्विष्यः श्वयः श्वयः

क्रपंद्रम्'द्रमे प्रसुदे सम्माप्तिम् । स्य मुरु हो सम्माप्तिम् । **.** इत्यार्थ:८'भी:प्रगाद:श्रुप:र्नेग | देश:ग्रुप्टल:प्रश| विंद:रे:दे:र्क्राक्री खन्यश्यत्त्वा स्थान्यस्य स्था संगी द्याप्य द्याप्य स तर्भग वेश्वतस्तात्वात्वे स्वत्य म्या में ने स्वत्य मा ने मिरे स्वा प्राप्त स्वय मुत्रासु ग्राप्तुत्रायकायतेकावकायर्थः याप्ता द्वारा ह्वारा ह्या या ह्या या ह्या या ह्या या ह्या या ह्या या ह्या र्स। । नेति छे र राखुर 'ए' ८८ मनिव क्षेत्र र राया हुव त रेव र र हिव पर रा <u>. हे पर्द्ध द'स्त् 'अ'र्क्रन्'पर'ग्रे 'म्र्र्न्र्प्यश'र्येते 'ह्य 'प'न्र्युय'द्र्य' '"</u> त्रवारियाप्याप्याप्या देन्हें गि धेन्यत्र्वार्याया है गि'<u>चे र'ब'राब'र्ड 'र्ड</u>'गी'<u>चे र'प'</u>पेद। वळॅब'त्ग'अ*र स*गुर-केसुग श्रेश्यान्द्रियं क्ष्यायन्त्रियं ग्रम्पर्यात्र्युत्रयः त्युर्भर'। वि'विंठाकुल'र्यरागुर'ग्रद'वे'त्रेंद्रद्याद'वेग'र्भर'वेर यम द्वापानिवावमार्भवानम्बानम्बाने हेपर्ववान्यम् हे गा ने गरि रहा ने भु या गहारा। छा र र र इया कुल ने कें र रे या है गा ने हे र । इ'यल ग'व सार तु ग'र्मा दे'व सार सारा ग हे सा ही साहे पर्द व 'सा छ ग' क्षियंद्रवा भ्रुप्तवयामनेत्रविवासुद्रम् नुवासवा हेमईद्रश्चीवया द्यान्यन्। यने'यरियन्'सुग्वार्यस्ने'सूर्येद'ग्रुन्यद्यायगुरस्ने <u> শৃত্য হথ ই।।</u>

शेर्ह्रण्युः र्र्व्यव्यञ्जे । यदेश्यतः । वित्रः इवव्यव्यः स्त्रः वित्रः । विश्वतः स्वरं वित्रः वित्

चरी व्रिक्षक्षेत्रराज्ञेन्नराज्ञान्य । यह्यक्षेत्रप्रे ररास्त्राचे | दिन् ग्रायायारेगा सुत् ज्ञायने । १८४ पाया पर्क्षेवरासम्बद्धारायने। |पर^भर्देगकेग'रूर्न'र्देर व परे। |सगः भेर'यरे'केव'र ग्रेट्संब यरे। ।र'रे'क्ष्ररम्यरे'यत्रिम स्व'य। ।वैर' ष्ट्रण विरायर राक्ष जुराष्ट्र। | सं सुःग्रर: द्विःक जुरा**र्य**र्। 15ঁব' ने'ल'र्राययला'र्ने'प'र्यम्य। । विन'इययम् न'पर्ययप्टिययय। न्र्यन'त्र्ना र्वेट्यनेन स्वार्था । रूट कुट्दिया न्य र्य <u>र्राञ्चा । क्षेप्ताक्राक्राक्राक्रा</u> ५८.चला । नेबद बङ्गङ्ग्रंबरानुब, री. श्रुंच स्थला । बुश बंध रख ग्नेव क्वॅंबररायाव रे। हे पर्वंव हु गुरी इतावर्षे रायाया मनेखन्यन्त। न्यान्तास्यन्यन्तिस्तिस्तिन्तिन्तिन्तिन्ति <u> 5ुःस्तः राभगवा ने क्षेत्रः व ५ २ हिन् वि व राम बुरा के न में बाधवा - र्यन्।</u> মার্ট্রব:ব্যারিয়বাতব'গ্রী'র্ব্র বার্ল্ব'ন্ন্ন্র্রান্র্রান্রা ষ্ট্রীৰেম্বেকাই ব্রিণ্ড্র'বহুদ্'ঘ'দ্'শ্ রিঅকাতব'ষ্ট্রাইর নব'দ্রাঘাঞ্জির। विन्'याधैन पराक्रम्'नस्यन् वेन्'रामिन पङ्गेन रापनिन्ने क्रेरप्तन राजा षेव'हे। ब्रु'यरे'चग्रद्देव'चयपप्प्र्र्ण् इस्रत्वुंद्र'पदेखायग्र्कुर्यव् <u> ह्व. घवबाक्ट 'दे हिंद 'दे ब्रे. प्राचिव विद्या देंद 'ह गबारी प्रवाद हव प्राच्य र</u>

गुर द्वेष प'नक्षेष प'इस'त्र्र्वेर्यते'त्यतःह्वंस्थिद्यश्वित्र्यश्वेत्र्यश्वाः

मर। दिवः भवः श्वापायातहतापादी हिः पर्ववः स्टबापायायाया हे। श्विनः इतः गुदः श्वेःश्वेदः ऋगः धेव। । युदः मदिः सुदः सुद् मः द् ग्रदः |भै: यनः तर्भें तयनः क्षेन्यतः व। | वनः तः नेः वः व्यक्षितः है। | रि:नृष्याद्वयराष्ट्री:न्धरःद्वराष्ट्रेय। । व्हें:चे:कृष्यःसं:न्:चद:ने। । व्हेंष्य केद'र्रादे'न्यद'र्खुयाधेद। । तुनाकुष्रीदः खुखन् ग्रन्थं ने। । ग्रनः भराग्रवादः क्षेत्रवादा । त्र्ते क्षेत्रप्राध्येतः है। । क्विंत्रक्रा कुल र्वेदे न्याय कुल धिव। । न र के छ कल के न रेवे न । न म्न अं छ बर'न'गर्रेन'रा'ने। । शुर-गैर्यार्ग्ययम्ययान्। । दस तमर गर्डे र पर द्वापीय। | बिलार राप दे क्रें या गुरु ता तहेगाहेद द्यापान्हें रापानी विंतर्त्यम् नामानिकानी । <u> রিব ঘর্মাণ্য রি'মন' দুবার্মারী । । দ্বর্মান্ডর্ র্মানরী ক্রমানরী ক্র</u> म। । न्सेव ग्वरारे विन् प्रतिश्वासी । विव्वता की सामा स्वीत हे। । शुप में पञ्चे धे दय वर धेव। । ८२ र ळें पय यु रा सुर्ख्य सा। नग्राधियरासुः अळवरान्यायाने। । विन्यं व्यव्हिन्यायामेवः हे। । ग्नवरारग्त्र उ लेव याने । । इड्डा बेन्य यमिव है। । इन्य परने

वे र द विविधानुष्य श्वाय । श्वायी य द वा ये शियी है। **€**4. कुल'गुर स्वा'तेबलार् रात्या |हेरार्ड्द क्वेंल'बलासुर प्रवृद्धेत। । मलार्मे म् इति सुग्या । असिर सामाञ्च दार देव चुना । १८ ५ है। नसरहेन्यद्वाराष्ट्रेद्र'यय। |नवार्यक्रिंशकुक्त्रप्रेस्य । भेट नवा न्गरतहव्यत्रवर्षेष्यत्ने। । व्यप्तन्गतुव्यव्यत्रेष्यव्यव्यव्यस्य ो। इयज्ञत्यञ्चर्यस्व वर्ष्यायः तुर्दा । त्युरः ग्रिव्दः ग्रीय हेद संस्पन्नर। । शक्षेत्र न ग्रॅति सुक्ष **सुँ न** शक्रे न ান্মী'শূৰ শৈন্যৰ'ৰ্ব'দ্দ' न्ना । वेबाग्युत्वास्या न्यासम्बद्धाः सहैग्राहेदःईया यकुर्केष्ठिरक्षेत्र्वेत्परःक्षुत्रपर्र्रायहर्पात्व्यात्वरः। र् **ঽ৾৾৾৴**৻৵ৡ৾৾৾৾৾৾৾৾৾৵৻৵য়য়য়য়ড়ড়৾ৠ৾ৼ৾৵৻য়ৼ৾৾৾৴৻৸ৼ৾ঀ৻৸ড়৾৾৵৻ড়৾৾৵৻ড়৾য়৾৸ড়৾য় <u>इत्यवयामधे स्थार्</u>देते स्रव पायव सुगान्ता त्वा वर्षे देर साह्यया । र्'द्रवाळे। हें पर्दु व 'सेर 'हेर 'वे व व व स्याव 'रेव व र व 'छे नु सें **ॅॅंट्रवर्श्वेन्'केट'न्ह्यान् गृरःश्चेक्षेपॅट'म्**वेन्यायदिवावर् द्वायावरः'''' मैयपर वर्षर्। देवि क्षे क्षंत्रक्षर खर व प्तनु ग्रायदि तु वा यद के देदः बाञ्चल पुःर्रे त्राचया 🐪 हे पर्युव 'ये त' मे (या के प्रयाद दिश्व 'या नाया के व' न्मारमाञ्चनवानिमान्ताताको हेनाने नेमान केम्बा के व्यन्मा होन

म्याया म्याया प्रत्या स्वाया स्वया स्वया

व'र्वे'गु'द्र। ग्राच्यंच्व'कुर्'रु'ग्नु'त्वुर्वाग्रुर्' । तहेग्'हेद् **श्**वरश्चैत्राव्यम्बर्भन्। ।द्वर्भन्नेत्राचुन्। । के ज्ञाक्षरम् मार्था अर्था । हे के स्यावेश सुरः मुन्यार हो। । स्य रसम्भेत्रासुन्तस्य। हिन्यन्य विष्यान्य कर् केरे कुन्। **क्षे** भ्रद्र'नेष् राबे प्रदेष प्रत्याचे द्राप्त के प्रत्याची स्वाप्त के स न्यर क्ष्यर प्रदेश के दे कि स्तर्भ के ते कि स्तर्भ के ते कि स रन्पवित् श्रीकारमेत्रानिका निष्टिकार्य हो । स्वा देवार्य हे के राषे राष्ट्री राष्ट्र **८५'नदेन्द्र्यंत्रा हे** केंद्रिक्षुत्र्याप्तेक्ष्केरेर्द्राव्यदेग्यंत्र्या ंग्राच्याः मृत्र्वं पेया ग्रीकारा क्रें रावते र तुका वर्षे ग्राचा या प्राची पते'ब्रुव'खर'। [कुंर्नें लें ने 'न भी शुर'तश्रव। ग्वयद्वीव'ग्रीका नक्षन्य प्रज्ञान क्षा विकास के वार्ष के वार के वार्ष के व इसार्वेरपाने विन् खुर्च बुद् श्री इसार्वे र हे गारिग सु इसादि । ।।।।।।।।। म्बुग्यंत्रायय। कुर्वे त्रुग्ने वित्तु रहार हार निर्मा र्ग्न

ৡ৾'য়ঀৢ'৸। ।८'ৠ৸'ড়৾৾*ব*'ঀৢৢঢ়'৸য়'ঀৢয়৾৸'৸ৢৢ৾ঀয়৾৻ঀ बर्देव: नृष्टीन्यवयाष्ट्रगयन् मृत्यात्रस्य। [यन: नृवेद:य: श्रेद:श्रेक्टः ग नव क्षेत्र दुर्दे । । प्रवर्ग त तुर्वा ग नव का ग्री क्षर ग्रामा । दि वर्षर श्चीक्षर्विकेषर्वस्य । श्चिरक्षर्वित्रित्रिक्षंदर्वेष। । तर्नरः अर्ळेग्यापन् वृत्यापन् वेत्। । वित्यार श्रुतापति वृत्येत् स्। । <u>ब्रे.क्रम् ब्रुयः परेष वृत्र परेतः। । व्रे.पर्मायाव्य स्वयाप्त्र वर्ष</u> चक्षुक्षे । चर्न्यार्डन्र्स्यार्ड्ड्यार्डन्र्न्युक्ताः । गोर्न्युक्यम्बन्यदे छन्'वेन्'रुन् । त्रिप्तप्तप्त्रुं तेनेन्वाय'वर्षेत्। । न्वर्वे प्रन् तर्न के ब्रुट प्रदेश । ब्रुक के कुत क्षेत्र दिन का राक विरा । रता तहेग्राम्भेद्राहेरी'ग्राह्म्याराच्य्या विःत्राह्यारायहिता। रॅल्प्नदेशुन्'बेन्'ग्न्'कुन्यरुद्। ।ग्नद्भून्'बन्'ल्प्देन्य्प

बर्घर। विव्रतुः भेगायास्र व्यतिः गहानवा । यः । यः । यः वर्षः यः व्यतः बेन्'डेग । तर्ह्यावैन्'यहुं'होन्'या' वहूंना । ग्वन्यपन्हुता पते'ग्रॅंन्**ष्ट्रे**द'द्रवय। ।ग्रह्मग्राबेन्त्यग्राक्तेन्त्रवास्त्रहा ।हिः निर्वाद्यां हेत्र व्याप्त स्थापा व्याप्त विद्या विद न'अर्चर्। |द्रायावरके'पेशविर्याम्यर्चर्। |सम्बिः स्थित वित्राम् अर्घेत्। वित्रः भूतः गृतः नित्रे के स्वित्। भूतः दे के सुद्रेतः मन्द्र । निर्नापदिप्रं क्रिन्यं क्रिन्यं क्रिन्यं दिन्यं दिन्यं र्वेटरानेगाभूत्। । अरायाद्रताश्चीकरायनेतान्। । देवादा हेदा <u> इत्रात्रां भूत्। । तद्भात्रत्रात्राम् इत्वुत्राचतिः छ। । वित्वेद्</u> क्रम्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्याक्ष्या मदीन् शुप्तापदी द्रायत में द्रा | द्रिकेट सादा महिष्या महिष्या महिष्या | परण्डेन्'बुर'पदिक्ष्यक्विंर'द्रवया | वि'वि'दिदे कुप'हेद'न्वग्'हु' [Bेर'यह'र्राह 'तह लार सुराय होर'या | राह्म लाय होर ঀৢয়ৼয়ৢ৾৾৾য়ৢয়য়ৢয়য়য়ঀ ।ঽৼয়ৢৼড়য়ৼঢ়ড়ড়ঢ়ৢৼড়য়ৢ৻ ।য়৾য় नाम् र्रम् विषयिन् स्यापित्वया । मृतु यक्ते वास्य युर्द्ध सं सं सं स्वया । त्यायामीवरहेरीमा सम्बन्धा वना निवरत्ते मेना मही न्याय देशा। व्यायापराग्नानि देवा स्वया । विवाद वाये हिते में गार सु [॔]बेटा । तशुगःश्चन्द्रग्राण्यः रंज्य। । द्वैः न्टम्बरःण्रीः करत्येयवा म। । निवित्रमित्रकृत्वर्षमित्रकृष्णिक्षेत्र। । निरःसत्रमेष्वरकृ

न्यायार्ट्स्याङ्गेन । शिक्षर्राश्चित्रस्त्रिः दुःत्र्र्ञेन । द्रारं रोगराश्चित्रस æ॔॔ॱव॔॔रःतुॱर्वाया । क्रेवंप्तवं क्रुंतः क्रुंपः क्रुंप्ययतुः पश्चरा । पार्नेवं हिन्निम्यद्यस्यस्य व्यापायम्य । हेम्ब्द्रिम्य म्या चलेकात्वा अध्यापान्यायान्यायान्यानुनानुन्यान्याया सराम्द्र केव्'र्यातर्रे'त्रज्ञुन्'ग्रीका**न्**रें'तुकापति'झे'त्र दे'ः इयकाग्रीप्यवस्यापाय। यद् इतार्र्ह्रेरपत्रिते हेरलुव्यक्ष्मि विति भेर्'नु'त्रि विवाया हॅग्'र'क्ट्रेशव्याप्रेर'प्रत्यत्रम्'यय। ५'रे५'ठग्'द्रवशक्रीश्राम्य क्रेन्निर्द्रक्ष्यव्य। इन्चन्न्यत्विन्द्रव्युन्न्न्त्निर्वेव्य चति जुवाया या वर वर्षे वया परि व नेर के भेर की नेया परा तहे वया वित्यान्त्राची क्षेत्र्यान हेत्या विति रोगया है न्यत्यमे ह्याया के त्रेन्यस्य भूतिरेन् ने न के त्रुन्य स्पूर्ण में संक्रुय नु रे स्र स्वत्र । ने स ଝିମ୍ୟ'ପରି:ଖ୍ୟୁ'ନ୍ଦ୍ରି'ଝ୍ଅବ୍ୟପ୍ତିବାପନ'&ମ୍'ଖ୍ୟ'ପଞ୍ଚୁସ'ଦ୍ରି'ଖୁ'ମର୍ଶ୍ୱସ'କ୍ତି' \$4.2.QUA

 वर्श्वरक्षीं व स्वारास्त्र । । त्यान स्वारासकेन विस्वारस्य । । स्वार राम्या वेराव परायार्थेन्य। । क्षेत्रुव पारवाशीय न्यार्था । ८५५११८८५४५५५१ । त्रांबह्द्रांस्या क्रिक्ट्रांस्या क्रिक्ट्रांस्या क्रिक्ट्रांस्य क्रिक्ट्रां र्श्याचिर्त्तर.कर.बु.कु.क्रबाचबिर्ता ।र बीर.श्रेबा.धि.पच्ययाराष्ट्र.बीर ऍयात्। क्ट्रिंट च्या प्रज्ञुन स्तु प्रयोग या क्री क्रियात्। वित् क्ट्रन दिन क्रीनः राति क्षेप्रदेषा | वरायापति क्षेप्यव यव कत्वा । यारे गा क्षेप्रक्षेप **५**८५:इन्यी । विश्वास्त्रास्त्राप्तिः विष्यास्य श्चिंत्रदिरञ्ज्यायह। विदेरयागुग्रायदेशययास्यवितः। । श्च **ढ़्र**विद्यान्त्र क्षेत्र स्वार्श्व हेन् स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्व **ॕॖॹॺॱऄॗ॔ॖॖॸॱय़ॾॖॱऄऀॱढ़ऻॕॎॸॱॺऻॸॕॿॱऄ॔ॸऻॗ**ऻऻऄॖॹॱय़ढ़ऀॱॺऻॸॕॿॱक़॓ॿॱय़ॱॾॕॱख़॒ॱ **ष**रा । विराधनः स्वाने के वार्षे स्था । विष्या विषया विरोधिक स्वा । स्व हैपःन अन्यतिः त्रुण्या अन्या । यहिणः हेदः यस्य ग्रीः श्रीदः व्यापानः । देन्'२नैर^ळन्यांकु'कु'कुन्जुंब'कुरांक्या ब्रुट्या । व्रट्टाम्यम्य द्वरायस्त्र हिन्याययय। विक्रुन्य वियहेरा रन्न्यन्थन्यदेधित। । ज्ञान्नाक्षेत्र्यात्र्येषाः द्वानान्यः त्युःपञ्चिष्दःग्रॅन्पुःर्दरम् । भिन्द्रसम्भःहेदःन्दःत्रम् द्रत्या । श्रम्भाष्ट्रमा श्रम्भाष्ट्रमा । श्रीष्ट्रमा । श्रीष्ट्रमा । वर्त्तर्। विक्रेप्यर्ग्यायतुर्कित्रा विषयकीविषयपंत्रना ইবারিনঝ । ইব্রাব্রাঞ্জিপ্পর্নথ । এইব্রান্ইনেরের্গ্র্র্ पर्या । क्विन् व्हें ब्रांक न 'चुका परि' सक्ष द्वाराता । क्विन 'सुर क्विन 'पा ॲन्द्रियं बेन्। । ब्रिन्प्निव्हेन्दे र्यं क्राक्षित्राया । तके र्वेन्कु ह्या अस्त्र न्या वेत्। वित्र न्या वित्र वित्र व्या वित्र वित् त्रेष्यरायते प्रेन्प्न्यक्षे थ्र| |ने द्रवादर्धे न्हिं प्रायत्रे प्र स्थाय वित्रं वित्रं वित्रं द्वार खुत्र विष्य पाळे वित्रं वित् रु. तर्ज्ञ 'न में संभाषा । व्रिंत 'खेरा स्रुत्या मृत्या मृत्या स्रुत्या स्र ८ग्'ब्रॅब्ल्स्स्यक्रींकृत्यंव्दर्रेत्र्व। । धिन्'ब्रॅन्छ्रिंग्व्वक्र्नुंत्र्वंत्रें रव। । क्रिन् पक्षेत्र विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विषय विष्य विष बेर्। । श्चिष्वराष्पराष्ठेर्पयतेष। । न्वेंब्यरीयसंबे मर्जेर्प्तात्री तत्ग्'यातुरादनेरा । वेशक्षंप्रते द्वावाधियातु 'ने'ऋन'केयात्वर्वा पर्या हे'पर्वुव्शीरु'ह्यावान्मॅन्यानहरःपर्या । यर'रते'हिन'पर्वा ण्वव्पाञ्चन विनःश्चेन् प्रते र्स्याच बद्या ठ न् 'गुन् बे बद्या वसुता वा "" **ग्रॅग्रायम्बर्यम्बर्येन्यम्**यव्यात्राच्यात्रम्यम्यस्य व्याप्युत्य। वेयवांकुद्धिन्द्राचिव्यक्षिवार्यित्। व्याप्याये **बन्दरम्बन्दर्भः ५८०** व्याप्तरम् स्वाप्तरम् । स्वाप्तरम् व्याप्तरम् व्याप्तरम् व्याप्तरम् व्याप्तरम् व्याप्तरम् **८२ र भेदा रेबराग्रे**रर प्रविदाक्षेश्व म्याये र प्रायमित हेरी *ঀৢৢয়৻ঀৢ৻ঀৢ৽৸৻ঀৢৼ৻ঀৣ৽*ঢ়য়য়৽ঀয়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়য়৽৽৽ **ট্টা**ল্লম্মনা**ন্তুদা** মন্থ্ৰদ্বস্বস্থান্দ্ৰেশ্বমন্ত্ৰুমন্ত্ৰিন্মা

छ्र्चा बार्य दे. ये. बार्य क्री. बार्य क्री. बार्य क्री. बार्य क्री. बार्य क्री. वार्य क्री. वार्य क्री. वार्य तत्राभैर'भॅव' हव'श्रे'वाषु 'राक्ष्यराश्चर'। वि'र्नेग'र्र' रहेराचे र नन्नर्भेर्न्यर्रुवेर्द्र। गृनिश्वायः नर्देश्यः १६२ **८५**'थेव। য়৾ঀ৾৽য়ৼয়৾য়য়য়য়ৣয়ৼ৽য়৻ৼঢ়ৣয়য়য়য়৻য়য়য়ড়য়য়ড়য়য়য়ঀ **Š**5' ঽঀ[৽]ৠ৽৻৴ৣ৾৽য়৻৴ৄ৾ঀয়৽য়ঀৣ৾ঀ৽য়য়ড়ঀ
৾৾ঢ়ৼয়য়য়য়য়য়য়য়য়ঢ়ঀ৽য়৽ঢ়ঀ৽য়ঢ় গ্ৰীমান্ত্ৰীৰ'ঘ'নদ্দ'ৰ্ব| ইৰ'টৰ'ম'শ্ৰেমাণ্ডীষ্ট্ৰীৰ'ঘ'ন'নেগ্ৰুম'না দ'শ্ল' न्तर्रत्रह्त्यायरे हेन्यायास्य प्रदेशम् न्याया क्रम्य विद्या तह्याचाक्षरत्रिरचाह्याका अन्यान्या क्यान्यान्या स्वा ह्रवायान्यान्यते कुन्वं व्यापायय स्ट्रान्ति क्षेत्रायते क्षेत्राया व्याप्ति व्याप्ति क्कीं इद्यासर हें या राष्ट्री दान्या दानु दानु दानु की की स्वाद है या राष्ट्रीय स्वाद स्वा यत्व। यन्त्राचेर्यन् ऋयन् गृबै गृब्दायुग्वर्येन्त्रन् मुग्रवायव्य श्रेप्त हे न व्ययं मिन् दु कुन् केन हे न व्ययं न ने न ति ロメ:ロタゴ:ロタ शुराधित अगुराय दे प्रविद्या वि

<u>चैत्रापतिः सुन्यरत्। । विन् द्रन्यापक्तन्यः प्रत्यापार्यः स्वित्रायाः ।</u> झ्'ग्वराग्वव'त्रसुतायव'ळन्'व्या ।स'देंग'ङ्गं'त्रे'प्यव'ळॅन्'त।। कुष्राचारित्युप्तान्द्रव्यवात्रत्येत्। दि'त्राश्चात्राचीतवाची ।कूप ८ छे 'शुत्र'तुअ' श्रे**द'र्य'ग्रॅद।** । रंपारत्य'ग्रॅर' श्रेव' द शुर'रे द्वया। रेन्द्रेत्रेश्चर्व्यम्द्र्रियर'| | म्ययाग्रीयाश्चित्यमः मंत्रेष्ठेणया | विनिद्यार तहे नया यति खेव खें स्था विन त्या के क्षा हो । के तरी व्यायार्ययात्र्त्र्त्र्व्याचेत्। ।त्रिकेष्त्र्वेष्व्यात्रेष्व्यात्रेष् द्या |वेबबादक्के'बेर्'ग्लुग्'बर्दै'स्ट'र्'ड्डुर्य। ।दर्विर'प'रूर র্মানারিটানার বা ক্টিনের্মান্রের্মান্রের্মান্রের্মা हेब'बेर्'ग्रेर'तु'तरी । त्यु'प'र्रस्ययम्यदे'ग्रेर'। । ॕॕॕॕॕ**ॸॱॻऻॺॴॱॾॕॣॸॱॻॸॱक़ॕॖॱॿॻ**ॱक़ॕॸऻ॒ऻॸॎॱक़ॗॖ॓ॱढ़क़ऀॱॻऻढ़ॏॺॴॎढ़ॺॸॱऄॸऻॗऻ म् वी विंवा मुक्क म् या तहे व वा तहे व वा वि हव ति विम्म मिर के वा **न्**बेग्यन्र्संयय। ।सुनयन्गंद्यक्न्यंग्यह्यय्यःस्त्रंस्यायःग्हन्।। ৸য়য়ৢৢ৻ঀয়য়৾৾ড়য়য়৾ঀৢঀৼঢ়য়ৢৼঀ **ह्युटरापर्या ।** प्रणास्य गरा ह्येप'यरि' हुव'यस' परुप्। । हूर' प'रे ह्यूर' श्चिषरहें ग्रा | १८.८ ब्रॉस् ग्रुअया व्यापा व्यापा वेदा | १८.श्चें ह्यु रास्टें ता त्रिन्यत्रेन्यत्वत्। |त्यासन्नःकृतःताहेन्द्रवेतानञ्चेन्त्। | ग्दर्भत्रे प्रमुख्यायञ्चरस्य प्रमा । किंग्य हुन् ने सूर प्रत्ना न मनि छ। । क्रामु में ब्रेन् क्रियन मनि मनि । ने राकुन छ न रास्तर सम्बन्धान्य । तेमबङ्का वेन् कॅबाक्की न ही न बहु तम् । १५४१ न

क्षुनिष्यम् वर्षम् अन्। । सम् हिन् क्ष्म् हेन् हेन् हेन् हेन् 13 ८ मॅंदि हें र्रेन् हुताप इसर। । ८ हु था नह नय ग्रेस्ट्र पें दिने। **बि** हनातहेनाराति हॅबाउन है। । सर देवागुर वे हूंर तर्र राज्या । तर्रे **ॅहिं**न'त्य'न कॅबाव'ख'न गत'होता । श्चित्र त र्जें'न'ॲनकाकुश्चन'र्' गहेंना। র্মাইর'তর'ম'মনী'র্বর'ন্ত'মই। ।এঝ'ন'দ্র্যা'মইন'ষ্ট্রর'নেনী'নইঝ' मरा । विन्न् गत्यमुन्नरायिनः वेदा गुन्नरा । विन्नः कन्निन पार्चनाः केन् छी। सिग्रॅंबः रहितारगः हैन्य र हिना । सब्द बन्धानः त्रिव्याययायरवर्षेत्। विवयत्वयुष्यात्र्रेवावेन्ष्रेत्रान्। तिनेष **ॅ**ष्ट्र-पश्रम्बर्ग्यम् प्रवेत्। । त्रुत्राम्बर्गपर्वे प्रकृत्त्व्य A८यागुर्। । तहे ग्रायं क्षेया द्राराया के ग्राया । ता क्षेरा के त्रायादि । इत्यत्र्रेरःय। । त्रष्टुत्यचरिन् केन् पेश्वयति हिन। । तर्ने हिन्त्य *ज़*য়ॸॱढ़ॾऀॻॺॱय़ॱऄॸऻ॒ऻॺॸॱय़ॺॺॱॸॱऄॺॺॱॻॖऀॱॾॕॱढ़य़ॗख़ॱढ़ॆऻॗऻऄॱ सारवयान् शुस्रात्रिराचिते हेय। वित्रातिन् सूराचितं सक्ता । *ଵୖ୶*ॱॾ॓ॱॻड़ॖ॔*ॺ*ॱॻॖऀ॔॔॔॔ऄॱढ़ॎ॓ऀॻॳॱॻॱऻॕॸ॔ॱॸॖॖॱॾॖॸॱॻढ़ऀॱॺ**ग़**ॸॱॸ॓ॱ**ॹ**ॸॱॻॹॸख़**ॱॱॱॱ** वरः। गहुन्। यहिन्यिति हैन्। येदान्येदान्। यन् व्याप्ति स्पा विवा अन् वरामध्यन् कृष्यम् कन्नु ग्राम्यम् द्वन् श्रीकाक्षेत्रास् निन्। हुता स्पर्यामवर्ष्याती अवार्षे वं व्यावेषा स्वाप्ता स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त **छे**न'ग्रीक्षुन'र्मे तयत'वेग'ययग्राम् नेन'र्म् वाबेन'ययापर र्मेन प्रायया **१** बन्दुः कुरायाञ्चर् केषा चंद्रा चारा बेर्। दारोबाख बार कुरा प्रवित तुषा प्रवि मग्परकाशीयुर्पार्यक्षेष्वरान्त्रीह्रवाशुक्षकुर्वेषावेष्वर्वात्र्यम्

हिन्दिन्स्वेगराभिक्षात्रे द्वारा हे विद्यालया है विद्यालया है विद्यालया है विद्यालया है विद्यालया है विद्यालया *द्यायायवाद प्राथात्रवेवाकेनः पात्रविवापवेतः* पाद्यव्यक्तिम्नानः नास्नुविः । र्वेदे अरुप्तरी पहें मानवा या में श्री वेदि पार्डु प्रवास की मान मान दिस्स है सा **৺**ব'ভে৲'৸| স্তু'মন্তু'শ্*ত্ৰী*ম'ঝৰ্শ'৲৲'মন্তু'শ্*ত্ৰ*অ'৲ মন'ম্'ই'ইঅ'ম'ঞ্'ই'র' क्षेत्रस्यायाचा वत्वियास्यायात्वन न्द्रात्रस्या म्द्रा &্রশহা ग्रन्'र'न्न्'ग्रन्'क्रा लग'न्न्'हिन हुग भु'न्न्'रोब'र्वा मन्यम् न्या न्यन्यन्यक्षेत्रं अन्यस्यन्यम् त्यार्थम् स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः मन्द्रात्रः स्वर्थः न्त्रः स्वर्थः न्त्रः स्वर्थः न्त्रः स्वर्थः न्त्रः स्वर *ঀ৾ঀ*৾ৼঀ৾৾য়ৢ৵৻ৼ৾৻য়৾৽ঽৼয়ৢৼ৾ঽঀ৾৾৾৽ঀ৾ঀৼড়ৼ৾ড়ৢঢ়ঀড়ৼ৾ড়ৢয়ড়ৼ৾য়ৢয়ড়ৼ৾য়ৢয় ५'धैव'क्र५'गर्ने५'ध्वैव'शैव'र्रेते'र्स्टेगर्शं स्रवशंवे स्ट्र শ্বইব ব্যা **ग्**तृग्र्इपर्केप्ययापर्व्याप्र्यस्व वित्। कुन्त्रग्धर्वेन्प्रतेष्ठेन् **केत्रॉशऑंट्याशुग्दायेव्यावित्रायित्र**स्युराहेष क्रेटाहेरेशलेप्यरायेवा **७व**र्,'बुर्'पद्वबर्गयान्व्रॅन्'केन्'दक्कें'च'क्केंचेन्'ने। न्व्रॅन्'केन्'दक्केंच' **षण**श्चर्येग्'द्रश्चेद्र'द्व्येनदेश्चरेशेयश न्रम्थ्यहे। प्रयश्चर्यान्तः **ॸॺऻढ़ॱॻॹॹॹढ़ॱॿॹॱॿॾढ़ॎॱॣ॔ॻॹॷॸॱॿॿॹढ़ढ़ॱॻॖॸॱॻॸ॓ॱऄॗॸॱॱॱॱ** सुन्युअळेष्यायापदिप्तर्धेराचान्मास्यापरायुर्गरेष देशहे पर्वुव्यक्तीः ।।।। नुसुन्द्रम्पति र्र्म् व्यापति र्रम् व्यापति द्रम्य व्यापति । देन्द्रम् व्यापति । **ढ़**ॱय़ड़॓ॱख़ॺॹॱॸॸॱॹॖॣॖॖॸॱॺॕॹॱॸऀॸॱय़ग़ॖॿॱॻॸॱॹॗॸॱॸऀॗॱढ़ॹॱॸॿॱक़ॹॗय़ॱॿॖऀॱ

इस्यापनि इस्रायन्तुताव्यावि पाकेन पॅरिप्टरायान्यस्य प्रायत् शुरि है। दे इसराग्रीवर्त्वराग्रर्भेवर्तुं से नासुवर्षेत्रः स्वेष्याये स्व भ्वात्रं में या स्पार्धे रापा हिंद्र श्री साम राज्य साम हो न हण्यायात्राचन्त्रम् प्राप्ता अकॅन् ह्वे बन्नु गृहेन्ता मे बन्नु स्थान्य करा के वायाना देनः होन् त्यः श्रेनः चन्। पः वदान् वेनः केनः तस्रे प्राक्षः होन् निर्म्भवराधादेः *9*यवाययार्हे वायायते वा नेता के तत् वा प्रकृत के त्या प्रवित्र ৡ৽৻_{য়ৢ}য়৽ঢ়৽**ঀ৾৾৾ৼয়৾৾ৡ৽ঢ়ৼ৽ঢ়ৼয়য়৽ঽৼৼৼয়৽ঢ়ৼৼ৾য়৽ঢ়ৼ৾য়য়য়৽ৡ**৽ **छे**न्'डेन्'झु'न्न्'हु गेदि'न्यग्'झुब्'पदे'न्ग्'ने'ल'हेराह्यान्यग्रा हिंद्रांकुः विद्रायात्र वितर्भवा वायायान्य विद्राय वाया क्रुवायाञ्च ळेवा व रगःरुप्ताहॅन्'डेन्'अर्घं'तळवरायधित्तुं। न'सु'ग्राह्मारग्'यनेद्रापदे' **ळ**ेग्'केश'चन्द्र'स्थ्रत्। किंक्षंठग'८र्न्र-इन्रथ्यं इवर्यग्र-भेदानुः न्द्रन्दिन्त्र्युन्पर्युर्न्ह्। । न्यन्द्र्यत्र्युर्न्येन्त्र्युन् *ৡ৽*ৢৢৼ৴৽ঀ৻য়ৼ৴ড়৴৻য়য়য়য়ৡ৴৻য়ঢ়ঽয়ঢ়৻ৼ৸৻৸৻৸৻৸৻৸৻৸৻৸ चरकॅन्देन्'चराष्व्रवात्वर्याः कंट्यायदे त्रहेग्'हेव्यव् क्ट्न्'व्ये. विन्प्रत्यम् विन्यहे प्रस्के बुक्का । विका त्रायाञ्चर यर। ষ্ট্রীন' বা দুরা র্যারা, ব ষ্ট্রারার বি বারারার বি বিরুক্ত বিরুক্ত বিরুক্ত বিরুক্ত বিরুক্ত বিরুক্ত বিরুক্ত বিরুক্ত पदिःश्वैवःब्रॅं <u>श</u>र्चे ने प्ना की बाय ही वाग हिगा हु प से पक्ष व का है 'पर्व व ही अव रुश्वापर्भियामध्याम्

मसन्बर्धस्था । प्रताद्धिरः हिन्दार्थः प्रतिभूतापः **उत्।** त्रायम् । श्रु त्रायम् । यहर् । देष्ट्रिस् क्रेस्य अक्रवा देवा या हिर्म् सामान्य वा वा वा तहेग् हेदाय। जिंग्रां नवदायस्य निर्मा कता क्षे पान्यदायस ८ व प्रस्पार्थं प्रस्थान्त्र । वि. ५५ में प्रस्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र । हिन्'ग्वम्'कुन्'कुर्रं व्यायाक्षे मेरायय। । मग्'यहेन्'याळेव्'वीयान्ये। बर्ळें व्यवा । में व्यहेरा न्या पान्य या त्ये प्रवासी । ज्ञा भरात्र'नरक'यकेरा'ग्रहा । अि.देगांकि'पकेरामराश्चांतरी गर्यदा । प्रकृषिप्रम् भेराहि द्वेष्व। । हा संप्रस्य हिन्द्रप्रस्य । ह्य <u>ब्रम्भिन्भिन्न्यम्यायम्या । श्रिन्सिक्निन्स्य</u>ीम् भेन् नृतुन्त्रायक्षर्येन्यभेन् <u>मृत्येन</u> न्त्र। । छन् ग्रेस्य मन् क्रिन् ग्रेज्ञय *ष*'द। । ग्रुन'न्द्र'वेद'ग्ध्त'नु'तुग्र'य'व। । त्रन्'श्चेन्'यंग्'गु'भेक्ष' **ब्रु**टरानेग्'यर्टरराग्रेपस्य। ।त्रम'सृग्'ग्नेग्'कुत'र्दि'त्र्रःक्रं' व। । शुः ह ग्राप्त पुर्न में श्रुं विंशा । वन विं खुनै महेर वर्गे या येग व। शिष्त्रसुत्यत्रिरञ्जगराष्ट्रीयाशेषद्भगराष्ट्रीय। । व्राप्तिराम् नि र्र्ययानेग'रहिताक्रेञ्चं। हिंग्ययां हें ररह ग्यक्रिस्यायम् द। । ঽঀ৻৴ঀ৻য়ঀ৻য়ৢ৾য়৴৻ঢ়৻৸৾৾৸৸৾ঀ৸৻ড়৻ড়৻য়ৼ৻ৼয়য়৻৸ৼ৻ঀ৸৾ঀয়৾ঀ৻ राष्ट्ररहिष्यक्षेत्रर्भित्। ।भैरःदरःश्चैर्ध्यकःभैष्वत्वप्यव्यस्त्व। ।

न्दरान् नेदायाचेदाक्रीसुन्तराद्या । विन्दीयार्थरार्भ्यानवरारी । बराह्म ह्रेन्द्रिंद्राध्यायम्बद्धाः । विष्यूर्म्द्राप्त्रे वृष्ट्राध्यायम् तहेन्यस्य । वर्षेवयः बुर् ब्रुंट्यनेन द्राय हुँर । । भेर त्तु'त्र्रेष्यं वेन्'न्त्र्त्व्यं तुष्यं व्या । विन्'क्रें क्षेत्रं वेन्'क्रें न्यं देन्यं वि त्या । हिन्द्रहेन्द्रवेन् व्यवेदेहेन्द्रन्त्वत्यः । हुन्द्रक्तः सेयरा कुन् मुँब'विनः। विवासयाश्चिमाहेरी'वार्ळवायहराहे। ।यतुन्यविरी न्यग्'वैद्यायहत्'न्र्ज्ञॅर'यन्। ।ग्हन्'त्रहेंद्र्ये जूँन्'नु'वे सेन्द्र वित्। । ग्विव्हेरे तहेग हे व्रत्यर सर्व्या । वित् ग्यास स ही: सर्या कुला प्रसारे या । स्वरा ही 'तर्दे न 'प्रवासून' पा सून' कें स्वता । व् *बि*ॱन्दराग्रीप्रस्थान्द्रपद्वीरःर्नेद्'बर'। ।धस्यद्रन्दरान्द्रप्राप्तीदेव राप्त ज्ञान साम् । इत्या अर्थन निया कुत्र साम । इत्या हॅग[,] निक्षंप्रदेप्नाप्यवस्य विवा | रेप्नायकीपस्य प्राप्त हुन्य मञ्जुग्यव्या । नः मन्या ग्रेव्ययस्य सकेन वेद्रस्ता । छिनः इव्पर्मिकामिवन्ग्रीकार्यकार्वेग्रीय। हिम्दिन्ययाम्याष्ट्रस्य वर्ष्ठ्रस्य। अव्यक्षेत्रम्देर्न्येग्वदिर्द्र्र्न्रस्थः विष्युक्र्त्रम् हा हैन नह स्यान हुन। | द्वापल से देव से से द हुन स्यान हो । दे बहुव्यर्र र्व्वर्यविष्म्भयप्य द्या । विषय अर्वेद्य विष्टे ये प्रवेष र्ने वर्तरायक्षायि श्रुष्टे यर्ज्व वृक्षे श्रुव्तु स्थायायाया। यराहे यर्ज्व प्रीय सव्याष्ट्रस्याय क्षेत्रहे स्थाय तुन्के देव बङ्गे सद्दे दे प्र प्र प्र प्र मन्य उत्तर् द्राय पर हिंगाप नेवन के हेर वेदाय समुद्राय। **B**7'

ठण्चेरप्राष्ट्ररप्रदेश्यप्राप्टित्द्रायात्र्वेत्रप्रतिखुण्याण्चेत्राप्रास्त्र् **हुँ** द्रानुः क्षेत्र प्रस्पाद्राः स्ट प्रस्था ही ह्र स्याप के हितायता **म** ठव' इवकाया पर्से ब'त शुकाशी क्षिण ति नेपका। गिले ब'में 'श्रें 'सुनः तु 'श्लें' बिर्-रेग्-परि-र-तर्देव। तर्ने-हेन्-छैराखरारग्-न्ने-क्वेर-ताम्सुतादस मलला महत्रुरातुं कुत्रायां कुं प्रते कुं होत्राया सला मेंसला मैटा महत्राया विष्याः स्वयात्रादीः प्रवादा भी भी का की मार्था स्वयान स्वयान स्वयान स्वयान स्वयान स्वयान स्वयान स्वयान स्वयान B८:किटाकीश्रीव्यक्ष B८.त.र.२४ वि.वि.त.प. के. वि.त.प. के. वि.त. के. वि.त. वि.त. वि.त. वि.त. वि.त. वि.त. वि.त. वि **गॅ**८-५'५३डेव'यर'छेर'र्ने। । तुरु'देते'ग्वरुपन्नम्यवाद'यतुर्'रेग्वर'ईख' **ब्रु**ट-५-७०१८ युर-७८५। ६०४-ब्रुट-ब्रुअ-अ-४ य वेर-पराक्रेव-५ देशःयुरा ロス:まて'A&'5'煮下' इया हैंग केंश्रुर तकर। **ৡৢ৾ৼ৻**য়ৼ৾৴৻য়ৢ৾৸৻ঽ৻ঀ৾ৼ৻য়ৼ৻য়য়য়য়ঀৼড়ৢ৾ৼ৻য়য়য়৻ঽ৴৻ঢ়ৢ৾৴৻ঽয়৻৸য়৻৽৻৽ मञ्जय'पर्राष्ट्रेन्'न्। । अवराष्ट्रग'नेशपुरी'ग्नेशयाञ्च प्राराति गाहेशा ग्यमुत्रःहै। रेद्ग्रार्श्वरःसिन्कीयर्द्धन्यर्रार्यरःम्यान्य। तह्नस च'नवि'बेन्'नु' हॅ नव्यक्तियत्रियात्र खन् कु'केव्'चॅर्य्यक्र चन्त्र चान्त्रे खं कुं इयापराहेंगायान्वेनयात्राहेयापदीक्ष्यास्रादि, प्रवासायेन्यावे यात्रे रु: य ५ पा वर्षे पा श्राप्त वर्षा दे 'द्या' भी दें द' हैं पा वर्ष श्राप्त कर 'दे 'पा श्राप्त कर NI

कुलामतिःविम्।वस्त्रात्रस्याश्चिमःतिम्। ।यम्याकुराम्।वेरामःविम

मुग्रापिता | वित्राप्तस्वापितिक्तायस्वापि । वितास्यास्या के दिर तुः क्षर। । गुन् ग्रीकापगुर विदः यर्कर 'पाने ग्वरा। । क्षुन पाने प'न्द'शु'न्छन्दां श्रीया । धिंगया द्वयया गुद्दा ख्वयः पादे । हिःयन्तर মন্গ্'র' ট্'র'মগ্রামার। |ন্'র্ট্র'ব্রমান্ত্রীম্র্রামার महेव केर पद्राप्त । श्रुप्त दे प्रमान । विषय । विषय । है। अंबुदाइससग्वदावीससम्बद्धाः । । यदे न ने न सञ्चर्याः से न हानसः ठव। क्रिश्यकॅग्यरायस्त्रित्कृत्ग्यस्। विक्रिस्त्यहेन्द्रर इन्याय व्यक्ति । वा ह्रें व व्यक्ति व्यक्ति व्यक्ति हो । ध्या की वे व्यक्ति ८क्टेर'पर'वेर्। |कॅ्पयाप'क्रवयायाञ्च'वर'ब्रूर'। । ध्रुयख्रूर'सेवस क्रीज्ञं पद्म ह्या । सदम्हया में दाया दूराया श्रीता । श्री वित्र के दा भूरप्राण्यां न्युरा | व्राप्त युप्त भिष्ठी ह्या ने या दि । | वा हें न्य तुस्य द्या देवाया । सम्बद्ध द्या द्या विष्य क्षेत् । हिं प्रस्य नरंभेगाये मे अहे। १५ ग्राम्येरे में दाहत हैं ग्राम्य सम् हुग्'र्न्द्रायायो ने कायेन्। । इंकाइ बका चन्'कर कुराया गुडार। । खया विक्षंष्ट्रगायस्याने समारस्या । हे गया वासे भी सार है। | मःसयः लेद्रायः नर्ज्ञेषाः प्रस्ति । विस्तः स्वा मेद्रायः स्वेदः दी । श्वेन'ञ्चयायाययः स्र-रन्गं में गुरुर्। । गर्ने न'गर्ने र श्वेन' यें र्येदे क्षरपत्री | अक्ष्रियात्रावायत्राधिवाते । विष्यात्रवाया

हिन्द्रायम्ब्री । हिन्द्रायान्त्रायान्त्रायाः स्वराष्ट्रवास्त्रीत् हे। । स्रीत्र न्द्रश्चितःष्ठिनःभवात्रस्यः। विषयःस्याःद्रवाद्रश्वितः। ।इयः **ह**्याः चर्ष्यः सुध्यः स्वादाः । श्चितः चेषाः पतिः सद्यः स्वादाः स्वादाः स्वादाः <u> स्त्रेयां वृक्ष | व्रिप्स्याय देश्यहण्य वर्षेत्र प्रस्य वृह्य ।</u> इन्ह्रवन्त्वानेवानेन। । यनेवानं क्ष्रयावानेवानु र्केन्या । नार्थेवा **ह**र्-हॅररापस्य वर्षे चें तिर्देत | | सर् रेग् तिहुतापति : हर्न प्राया | मन्ग्रॅन्फुंक्ष्रेप्रनेप्रनेन्प्रस्य वहर। । एत्रुप्रमें प्रेप्रमाप्रदेन **१**८ | १८ | विस्तर तर्वाप्त वृत्रा श्रीता श्रीत स्थाप स्याप स्थाप स्याप स्थाप म्र । । त्रष्टुत्यायाम् विवेद् ५५ ह्रम्बाया देव। । देना प्रते खु ह्रा ह्रम् प्रा বুদ্রা বিদ্বার্থনাঞ্জীন্ট রাষ্ট্রব্দ্দ র্মা ব্রাইণা প্রব্দা প্রবিদ্ধা পরিদ্ধা প্রবিদ্ধা পরবিদ্ধা প্রবিদ্ধা পর বিদ্ द्यायरय। । इरियासीयमा (मिरायमा वर्षाचय। । भिवायमा **वै**ण'दर'दरादहरधेद'ग्राता । सरदरेरदधेदाधेद्वार्हेग्'रेद **घॅ**ळि। ।गृह्येक्कें खेन् क्रिंग्यययाय नेप**र्याच्य संस्के। । हिला**ञ्च खरी ग्ह्यान्द्राचित्रं वर्षा म्यान्यव्यान्यं नेवा के व्यवस्य विश्व ने'द्रबर्शहे'यर्ड्व'ग्रीरायहेरायाया **ग**र्नेद'केव'र्ये'यर्डे'यज्ञुन'**ग्री** गुरुं र्ने र ब्रुंश्य दे दे र हे गुरुं यदि हुं दि है 'इ बरा दि दे | हिंद् 'यह दारा **घॅ**ठाचते[,]इत्यवर्धेन्यन्यत्तुग्याय। देन्श्चैयने'स्नान्यानेयाने र्षेत्रकत्थर्वे १८ ळवायाचे तः प्रतः कत्युयाया **दवयाचे तः, प्रते तः वितः "**"" तर्गुन्यस्यवर्षन्याकेन्यंपविद्यातस्य। **न्धिन्क**न्षुन्केन्बन्य मन्त्रंत्रं हेत्त्वा स्ट्रं हेन्यं ह

धरवातुःबुरवामतेःक्रेवातु। व्यवामह्यामतेः न्यारामते। रायंत्रार्श्वेत्'ग्रीन्वराष्ट्रिवायय। रेंदेग्यूरे'वर्धन्'रन्'श्रुन्यार्शु রুব'রুব'স্টান্ত্রীব'রুবাঝাকুব'ঝাক্রব'মার বাঝারী রুব'বা KALLI मेपेशशुराञ्चरपायद्विवादीमा यहतातुग्यञ्चित्रपरिञ्चित्रपराय *५५'पदि'वरु५'५५'वॅग'५३व'ळर'गॅ४*५'पर'वुब्रापदे'५पद'र्चे ळेव'सं दे। हुन्यक्ष्यक्रिप्पलुग्यदेष्ट्रायययम्प्यप्यविद्युत्। **छेत्र'र्यश्रम्बद्र'र्य्य'ग्रह्मग्र'द्रया** न्नर्परत्रुर्प्तिः श्रुष्यकेर् इरायके इरायमा कुर विराविता कुराय दिया प्राप्त । यमें प्राप्त विराविता कुराय कि विराविता कि विताव कि विराविता कि विता कि विराविता कि विता कि विराविता कि विराविता कि विराविता कि विराविता कि विराविता क हारश्चराञ्चर्ळेन्या नष्ट्रदाद्यान् ग्रान्युंन्यायान्नान्यदेशे न्राधीदाः तन्दर्दर्द्द्रविष्य स्ट्राह्य । तन्दर्द्द्राह्य स्ट्राह्य প্রায় প্রথা গ্রী মা <u>न्युर्ज्ञरमदेळेलामङ्ग्वरेषाकीत्रमार्थायळराष्ट्रमार्द्रन्तुःळव्यपदेः</u> **छन्'बेन्'पबन्'बें'**क्ष'व्यवाहुन्'हुं'दें न्वाव्या क्रॅन्यप्यन'रु'्छवाञ्चण् ह्म पुः भैद्यापाय जुप् । यर्थ त्र त्रा या व्यव व की विष्य में स्पान हो स्व व की *ञ्चेपारा पाराञ्चपा पृत्युता दशा पार्यव*ाहर स्थाशुणातात्र (मिन्ने। **७**ण् : तुन् : बेन् : स्टेन् : से : पर्व व : या ते ब श प्र क्षेत्र : या के व : या ते न्न्नियत्रस्य। वेरःद्वानु न्तःत्वारानु वुरः नःसय। हे'गईंड'ग़ेश विग्रान्मेंत्रायहराय। यत्त्रिः द्वितिः देव्यं केते क्वेंग्रायहन्यर पायन्थियेव्यक्षे हेन्य। सुनान्न क्रिंग्य प्राचीन्य विवास तरीगुवाङ्गारद्रेप्पेवापराततुगाञ्चयातुःसुग्वायायाष्ट्रोवादतरा।

विषार्श्वेन्'ययाश्चित्रकायाः विषाश्चरायहण्ययाः निषाः ह्याः निष्यः द्वाः श्वाः विषाः व

हे भु पावे ते से पे हे पकर। | इं न एक पा है का पावे के पावे के | स्रताय्वातन्त्रायः भेदिनन्नेन्यवत्य। । तह्यक्रीनः स्तर्सेन्य परःइ<ा |रैःपेंग्रबारुव्युन्परिता । श्वाश्वरुर्धःर्द्रःश्वर ह्मयाय। विषयर्क्षणारीमानेदिरमार्क्षणाय। विषयर्क्षणायदिः सुर्वे र्दितः। । ब्रु-देश्वरायस्याग्रीसग्रुतः। । ८ वः ५ ज्ञायाग्यरक्षः भुतः भूत्। दि:श्चर्छेर:दा शिरामामाईसायरेत्राँ हुन्। | भ्रेष्ट्रम्य प्रस्याप्त हेया ने । साम्नेत्रिष्ट म्या हेते इन्यायुःभेषा । तर्र्त्रार्वे द्वारार्थे व्याप्या वित्रा । हिन्याय दे शुंगुं पक्कें द्रां न व्या १दे हे यं के वे द्रां न व्यापाय व्या व्याप्तिः विद्यायाया । ज्ञास्यायाः स्थापन्यायाः स्था । दा चेन'ळेब'सब'श्रीं इत्यत्र्यें रामा । नितृत्यप्तिते रार्के 'मिश्रेष्त्रमा । क्षेष्ट्रेन'श्री हुन्याहेरेकें अपी । तकरान्दिन्कें इपिया । त्रें में याप हें रिद्या **कुरुक्तिः। । व्यन् व्यन् प्रति**'क्ष्याचेतु प्रत्नुति व्यवा । ने ने ने प्रति व्या त्रष्ठुनः चनः अर्हेन् । ग्रायः ग्रायं व्यवः व्यवितः प्रति विवः चन्ननः व। । श्रेनः । बॅंब्रिन्यार्रे कुर्षेत्। १रे पार्ने वागववाययके वाही । ब्रिन्ये तय स्र'रि:रें'अंनेया । गुन'येन'ख्यायायायळं वाठवा । स्राम्ययर्थेन नदेशं चर्ड्वार्थ । वर्ळर हुग र्दि । दुः हजा वादार्थ । दिन दर्धे हुः वी

सुर्वे था । ब्रिन्न्न्यं जुन वर्षा सर्वेन्दं । विन् बेन् वेन ह नव व्राप्त क्षेत्रया । भूग दयत्रिय राग्ने व्यापने वा । यह गर्य न स्वे महब्ध्याप्रस्थान्तेन। । तर्ने याकृष्ठन थेन् वाकेया । ने वद्याययानु विषय रंदा । शुर्रिण पहराया गुरुषा पाय विदा । विषा चे दर रे **१**८ म्य व १८ | विवयमाया न्यापित वे स्वयं स्वयं । विद्वासीया मन्द्रम् स्वा ।द्राष्ट्र द्राष्ट्र व्या । व्याप्त व्या **श्रिम्नरहेद**'पदिदा |देशभीकाहे 'तुराहे 'तुराहका | दु'यर द ग्रे**र**' **६**८:इ८:४गवाधिया । शेर्पयि इप्तरे प्रेव वया इया । यह गुब **बे**द्द:गे**णे**द:दवाकी |कॅल:ब्रॅन:ग्यल:दश:ग्रेन:क्रुंश| |ब्रॅन:पॉन विष्णाम्भवन्यवान्तेन। । तन्याग्रनः स्राप्तनः भविष्णानः । 135 ष्ठवा न्यं व्याकृतवा हु। । श्विव ख्या में म्या न्यवा व्याचे ना स्रेश्युम्भ्रेष्ट्रेष्पेन्पर्नेया । यतुन्त्रेश्याप्रस्तिम्ध्याप्तस्य म । १ म द्वारा विकास स्वार क्षेत्र द्वार स्वार स प्रेन । ने ने पर्व व सनि छन प्राप्त भव। । तर् या से समुद्र होने के लग्या । इन प्रज्ञ न्यर नुः हुन ने भा । स्यार्थ है मार्थ स मर्खन्य। । अन्। यनसञ्जेयम् देखन्यः सुन्तः । न्वदः न्यः वे बहुब्द्ध्यतदेतेस्य ।बिन्याद्यन्यस्य वाहेब्य्ति। 18 बेव्रॅम्पर्श्वेष्वपश्चित्रवा । नैक्केव्रक्ष्वेत्रव्यस्यत्त्र्त्त्या । १८दे ब्रेभेशकी हेन् 'इ' तर्ने ते वृंदा | दिन्ने ज्ञान व प्रेम व प्र

| दिल्यः मुँ प्राये न् प्राय देशाय देशाय । सिंग चित्र क्या की अर्थे न कु न न । इंबरादे न नवा कुरामा दे के में नवा कि मान য় ঀঀঀ৻৸য়য়৾৽ঢ়৸ড়ঀ৾ঀ৸৸৻ **। श्रुवःगर्हेगदायं वेवः केंद्रा**कुलि। । | य'वळव'ळे नदिवया त्रशंहुन। | तर्भेक्षेत्रयम् वर्षेत्रप्रदेशे स्वर्गः । **ग**न्याग्वद्यापत्रव्यस्य है। हिन्पर रेगर पहुन हिन्द मान हिन्द मार से देखें न र के क्षे'अ'भेज्। |पङ्ग्रह्म'स'रप'र्ग्यप'र्न्'प'रुज्। |ध्वाञ्चरक्षपण् *ঈ্ষ*'উগ'নট্বি'নরন'ঝ। |ঐ'নঅ'লুন'ঝ'ব্ঝ'র<u>্ন'ম'ম্ন। ।শ্</u>চু**র** हुन'ग्रीराधानश्चन'र्शेन र्देन हुँग। । विन्न'न'वनवादेनवायाना'वन **ম**ন্থা | ব্রিবাংর্য্যান্মন্ত্র্র্যা | মুন্রনার্ক্র্যান্মন্ত্র্ **ष**र्। |रेवशास्त्राक्षेत्रं वारा | र्यारा सुरामक विके न्नः छ। । न्नें श्रुपः हे र स्वराह्या । वि: नः न्नः हें व्रक्षनः प्नानः रुप्तस्त्। । मा नुस्रम् बद्रास्य स्याधिय स्थाने स्थान् । मा मा त्या स्थाने स्थान <u>ष्यत्युन् इत्यंत्रङ्क्ष्या । विष्यपत्येत्रमुत्यत्वेषाने दे प्यवर्द्यायया</u> **ष**राह्य प्रसुवा कर् की सुन् । बेन् 'ने 'न् वा की बा केन् 'नु 'न कु रा है 'श्रू रा हु रा पा **हे**'पर्ड्व'क्केरियु'न्यापाष्ट्रिन्'क्कु'के'ह्र'यायापर्रान्'व्वयापयाप्यापर्यापर्या **ঈ্**দৰাগ্ৰীৰা**নুৰানে** ই-শ্ৰেদা**ইন**'ক্তুন্'ঘনি'ক্ত্ৰ'মন্ত্ৰ'দেন' কৰ'ন্দ' অহন। **मत्र्'डे'न्श्रन्'ने**दॅर्'डेर'ह्यायत्रायत्रायदात्रहेन्'हेर्डस्यकुर्''''

मॅर्-र्वरश्चर्यं रंर्-छुस्स । प्राप्त हर्षे न्या स्वर्धः विद्या स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्य

चेत्रापर्झेयपतिः धेर। । ५ 'सु' दयायापतिः सत्यात् र्चेराप। । ५ व' दय ৼৄয়ৠৢঀৼৣঢ়৴৻ঽঀঀয়৸৸য়ৣয়৻য়৸৻ৼ৻৸য়৻য়৻য়ঢ়৻য়৻য়ঀৢঀ৸৸য়ৼ৻ परत्रुत्पत्रेश्चे'यळेत्'स्यया । शिखूत्'मेत्र'मुरा'म्द्र्य'त्त्। । हिन्थान्न्यत्भे वें इयस । । रयः तृन्यत्वेन् में यहं रायस । । य शु'न्यं'वित्रः सक्षे'सारह्म । ने श्वेरहे पर्दुव्य वर्दुव्य ने व्या গ্রীরাবগ্রমন্ত্রিশ্রেই ব্রেরিকা। | ব্রামন্ত্রাইশর্র ব্রের্নিক্র वर्षेत्। । कुला श्रवायन द्राप्ति द्रित्राय। । वृष्य द्रित्रायन वर्षायम्ब है। |देन्'रुष्'नर्सन्'व्ययान्यव्यदे'रेष्या |यावदःयाक्कुंनदेः *बै'अ'भैव। १५'क्षु'ब्रुव्'स्-र*।विंद्र'य'भे। १९५'वेद'क्ष'चें'तदी द्ववका मा विशेषाळेन् मॅस ब्रिंग हेन् छै। विषय हे प्रस्थापति हैन स्ट्रा यय। । विद्वत्रप्रति, द्वेदेकर स्वतः है। । यनुत्रान् गृतः देवा वित्रा मानति कुत्। । रनः पुः ळेळा वेनः नज्ञत् युरः वय। । ज्ञां वेनः हेनः पा बर्ह्म वीरोबया दिनकेन हु मुन्दु निम्न विश्व हि पह तालु प्र ষ্ট্র্র্বিন্দরি বাহী অব্দর্ভাকর। । রুমেনের্ট্র্র্ব্বন্ত্র্ব্র্বাল্ট্র্র্বাল্ট্র্র্বাল্ট্র্র্বাল্ট্র্র্বাল্ট্র্ हैरः तहें ब्रेने पारे देश क्षुरयायय। । मृत्व कुर्विषया रूरः र्यरः मरःग्रेचिष्यं व्रंथरा । श्रेषिष्ठेव्रं स्थ्यं द्रंपि दे 'विरः से द्। । हिन् 'ठग्' हुंभैद'रानेशनशुम्। ।देन्'ठग'तहेग'हेद'गहेंद्र'केंद्रेद'र्शे किलाहे इ.र. ह। १५ में १ चुं परिश्वेष्य । १९ हे व वेषा हुर

ह्रं गेषिद्या । नियम् श्रुरायस्य श्रुर्थेषय छेना । तर्भेषा हेन निर्मा शुपक्तियम् हेर। १२२,२,४८४,४४४,४५५,४५५४,४५४,४५४। । ह्येस **श्चिम**ंप्यत्रश्चेष्वयाद्यस्य । विःवेरः हः याव्यव्यव्यव्यव्याद्यस्य । द्वित्वप**ञ्चः** न्रस्यान्द्रत्र्वा । नश्यानः स्याक्षेत्रस्त्रत्तुः । स्विन्रक्षेत्र्वेत्र स्वार्भरन्तुंत्र्ज्ञा ।देन्'कुंवं वन् हेव्रवंदी ।देन्यर्ने'न्न् त्रेने न्यकार्यन्यत् । न्यान्त्रान्यत् न्युयान्युन्ति हे व्यक्षं न्या । हेन् यक् बेलाक्की तुरस्तर्भा वित्रम्याले त्राप्ति त्राप्ति त्राप्ति वित्रस्ति वित्रस् राध्यक्षकन्त्रा । श्रेक्षन् न्या स्थितः निर्मे अन्या स्था । मेन्या अक् कन्कन्मि | व्याव्यक्षेप्तवारमेमवाराने | मन्वायम्ब यर्ड्वाह्वेर्'र्र्र्यं अहलायां भारा विषेत्रात्तुराह्यां रायां विष् त्र इत्यान्य स्वाप्त । विष्या स्वाप्त स **ब्रि**रपर्र्ग्गर्येति रूपः करः सम् । गुवःगुरः तर्गुर् प्रविवः पर्वे**र्** न्रतास्त्रा । ने ने न हिन्दु न स्वाप्य । विष्य ह्वा क्रिं न प्राप्ति न वित्रधे। । वयान्यायम्यायम् तत्र्वितः स्तरा । यतुनः सराष्ट्रीयावीनः ग्रुत्यायग्याय। । न्यापायतुन्देशेस् बुव्योगा । ग्रुत्पायाया **डेग**'क्केब्रानु'बर्ळे**ग**। डेब्र'रसि'र्नॅब'ने'न्ग'क्कब्र'रम्'क्क्रुर'श्रह्मस्याने'या**व**' Rन्तराशुःकुरःपासरा हेःपर्द्वाकुरासव्यात्रहरूम। प्रविदःपञ्चर काष्ट्रेन हें ब कन् भी ब रहु के पहुंब कि पहें न कि कि पक्ष के प्रश्न के स्थाप हैं र पार त्ययन्त्री हुन् नते हुत्य चू हैन् व ग्रीकान देन् केन तरे अर्घ नते अर्थन

मर्पर्युक्त है। रक्षर्यं रेश्वराष्ट्री इस तक्षुत्र दुनिक निर्यु **१**९८, प्रत्राचेशत हैं स्तर संग्रह्म स्त्रा प्रत्रा प्रत्राची स्त्राची स्त्राची स्त्राची स्त्राची स्त्राची स्त्राची स मामान्द्रमा नग्रह्मा द्वार्यस्य पद्विद्वार्थस्य स्वार्यस्य **इ**शंतु'न्य**ग्यन्ग**न् त्रग्।ग्वन्तुग्रापंतुर्येत्रप्तेत्रप्तेतेतु **८ में 'प**'सत्य'प'त्'अ'ल'गर्ने न'केन'त्रकें'परापुरापा स्याद विया प्रा **र्वक्रिं मुल्यिते स्था की स्था मुन्याय में ने विनाय की ना चतिःरीवर्षाग्रीरावर्षेत्राविरः**यम् नृष्ठायरः मुःचः न् रः है दःहन् र्ह्याः ष्ट्रीष्ट्रीर**,त्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यत्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्यात्र्यात्यात् बु**प्तरात्म् **भेयरापश्चे न** खेवायर उत्ते ने भे सामित दासुर सूर्ये न ही साम **८ देवायहर्ष्ट्रियान्यरायहर्ष्ट्राच्याचेनाःचायहर्गःनीःच्यायाञ्चेनायान्या श्रिक्षां भिन्दां भेन्दां भेन्दां मान्यां क्रिक्षां मेन्द्रां मान्यां मान्या** म्मॅ्रायाव का देवायव मुद्दी क्षुव प्रवा के वा का प्रवा का न्या का का कि का है """" "" ग्रव्यया

या कि. त्यर्रम्यक्तिस्य । प्रकृत्यक्ष्यं व्यक्तिः क्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्तिः क्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्तिः क्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्षयं व्यक्ष्यं व्यवक्ष्यं व्यवक्षयं विष्यं विष्यं विष्यं विष्यं विषयं वि

विग । तमुरानदेखरायाळ ग्राचेत्। । मेळ के नेया गरेरा वृत्रा बहरा थिन सकी होन क्षेत्र में ते किया अनि के में कर की कार्य बेर्। | व्यायमिरीयह्रव हैर्प्यक्ष्य दे। | शिलाई यहेर्यायम्य षय। । निर्क्वेन प्रतिस्तार्वे रात्रापान्ना । विन् सं रहारा वर्षे . पुन्'बेन्'ऄ्। । श्रु'सर'ग्रेग्'र्स्ड्रर'ग्रेग्'येद्र'र्प'ने। । ध्रॅंद'कन्'र्झ्रेद्र' त्रवाच हत्ताचरादेवा । व्वित्तां चेत्रवाळ त् व्याचेत्रा । त्वित्यं वेत्रा <u>র্মান'দ্বারা ব্র'রীদ'র্মার্মান্র'দ্বারা র্মীদ্রার রিদ্রান'র নদ্</u> ब्रॅं'के| | नर्ड'ब्रॅं'ब्रिं', ग्रैंबा नर्षया गर्यया नय । तहेना हे बाब्री पा देखे त्रेःळॅग्रा । त्रुनःचित्रगांगितःन्यश्रा । त्रव्यः छन्। । त्रवः छन। । त्रवः छन्। । त्रवः छन्। । त्रवः छन्। । त्रवः छन्। । त्रवः छनः ই'নপ্ৰঅ'ৰ্জ্ডুন'। । শ্বুণ'স্তুন'ৰঐব্'ট্ট'ভ ম'নেননৰ'নীন'। । **क्षे**'र'स्पनर'ग्रॅंन्'के'अ'तुर्या ।र'ञ्चर'प'रोश्रयाशु'व्य'क्रेंन्'केर'। । रोबरा है न हिंद पर ने राप ते ही रा । विद्या है न प्रेम रामे के राहित ला । वार्त्तरमाळचेत्राञ्चा । हीत्रयत्तित्रमावहत्त्रमीया। विं में भेद्र दुवे नर्वे द्रायम । रद्द नद्र वेद पदि केद हे के का <u>र्गार्ग्स्स्री</u>प्रह्याकरायत। । ब्रिन्श्चरायम्ब्स्यिन्गुरायनः युरा में हिंग लें के नेर राह्य । वर्जर हुण स्वर्य दे सुर् |দর্শ্নীন্মের্মিরীন্দ্রবা্মর্মা | শেষ্ঠর্টেন্রী ह्यव'न्द्रेनव'र्द्रद्या । हे न्विन्युव'र्द्यायात्रवायात्र्यः व्या । द्वा'क्रव' पत्रें केंग् ने लु 'दर्ग या । विष्ट ह्या से स्वर्ग के श्रे के स्वर्ग । विष्ट ह्या से स्वर्ग के स्वर्ग के स्वर्ग **रे**दे के शक र विप के पृष्टी । विष्ठ प्रेप्त स्वाप्त के स्व

क्षेप्राधीर्स्त प्रवास्त्र रासुरम् । सम्बद्धार्यस्त्र देशम् न वास्त्रे रास्त्र त्यक्शिन्विन्प्रगत्दिक्ष्व । श्चिश्चर्यस्पर्वे द्वि । न्यापा वित्राप्तृतिः ह्यानु प्रत्वा | वित्राप्तु वर्षा हे हे दावा हा प्रताया । दे । बेर'रगर्सेरे'र्दर'रबॅशपरा । गृतुयानुरे'क्रेर'गेगु'सु'र। । बहेराय्तिके हेंग्विक्षा । हेंग्यायति वेतुत्र हु ग्याय रहेर्।। दें अहिंदः द्रायतिषा हे ब्रायी पृष्ठु राया । अयहिंदा श्रीपापा के प्रति श्रीता । **१**४६ व.कर्.प्रप्रिंग्ना सूर्या । प्राच्या क्षेत्र व्या । यह व्या बिन्यम्बर्धस्य व्यव्या । वया व्याप्तम् न्यमे व्यव्याप्तम् । विन्य র্ছব'ল্ডব'র্র'ন্র্র্র্বর্লব্রন্তি। |দব্র্ন্ত্রুব্**শ্র্মানুর্ন্**র্র্বান্র্র্র্র্র্র্র্ **ষ্ট্র**ব'ল্ল'র ব্যান্থ বিশ্বান্থ বিশ্বান্থ বিশ্বান্থ বিশ্বান্ত বিশ্বান্থ ব व। । नक्ष्यान् व्याविष्यायम् वे। । न्वेन् न्येन्वे वेश्यव इयराय। । हु'र प्रयाप्याप्यापययाय। । प्रवार्थर हुगाप्य स् के नर्सन् भाषा । स्वित्सं प्रति हरा श्रेष्या । । नग् प्रनः प्रतास्य भिवागुरातस्य। । तर्ने नामेवार्भे वातुः सामिना । विवाधावर ব্রামার্যাব্র বিন্দের দেই ব্রামার বিন্দ্র বিদ্যান্ত বিশ্বর बर्नेब्राचित्रेंब्रा ।गुब्रत्सुरःग्वेब्रायंत्रक्षेब्रायरात्रस्य। ।त्र्रा हुग्देव स्व संयाय। । व्यापदेव द्वा स्थाप । विव पान सवापर म्बानिहः मुंदा | नेष्टिरन हे निष्ठे न् में भेग | मुन् स्ना ने ना ना मञ्जान मुद्दार क्रिया । विषय प्रमान निष्के क्रिया हिया केव व्या ক্রীর্মানের্ট্রন্যা ।মাস্কামার্মান্ত্রিন্ত্রির্বা ।শ্রকাস্ক্রকা

মর্লুদ্দেরি'মের'অদ্'ব্উব্ । অঁব'দ্ব'দেইব'মম'মহদ্টিব'দের। **र्णारा अस्वर्गायि विस्**ष्यश्चित्र र्दि: ब्रेंग्रह्मयारः गर्देवाके |देशपदि'र्देद'ने'नग'हे'पर्दुद'ग्रीशयगुर-नु'पदेशद्यापगद'ङ्ख प्रविष् प्रज्ञत्या द्वारा निराक्षेत्र या या दे रोवाया उत् कृत्य द्वारा विक हु रव्ययमध्येत्रप्रया चैव्। ठर-दुः वृत्रेत्र संक्षुं प्रायम वैद्यातृ न् ग्रायया *ঽৼ৻ঽৼ৾ৠয়ঀ৽ড়ৢঀ৽ড়ৢঀ৽৸ৼৼয়ৢঽ৽৸ড়ৼ৽৸৽৸৸৸৸ড়ৼড়* प्रतेष,प्रस्था, स्था, श्रीश्राच्या **নি**ণ্ডিকাগ্রন্থানকা मर्ख्द'त्रव्यव्यक्ति'त्रुव्यव्यव्यक्ते'नः केद'र्यव्यक्षे'नः मेन्द्रविद्र'त्यव्यक्तुः तञ्च**व्य** য়ৢ৾ৼ৾৾ৼ৻৸ড়৾৾৾৾ৼ৾৻৸ৠৢৼ৾৾ঀৼ৾৻ৼৼ৻ৼ৾ঀয়ৢৼয়৻৸ৼ৾৻য়৾ৼৼ৾ড়৾৻ৼ৸ৼ৾৻ नेरानीयहर्द्दर्भाष्ट्राच्याचेरानेदिन्द्राच्याच्या দ্যথাই দ্র্রিদ্য **५८। वृह्यसंस्थानसम्मानस्य वाराविन्द्वेन्वीमानस्य म्यास्यस्य** न्तः। इत्यत्र्वेर्यक्षेत्रवर्षः त्यार्वेष्ययाश्चरायात्रहेरापदिहेरपर्वत्य तन्तःवेनाय राष्ट्रनःकुराकुरोववाकुष्यवः ध्वानह्नेन्धान्नः। सवान्नानः *वग्* गेृळॅ*रायर पुःर्वसामस*। ५'ने'र्चसपुःगश्चरकीतळताग्रीसप्र *ড়য়৻৴ৼড়৻*ৼয়ড়য়য়ৣ*ৼয়৻৸ৠঌ৾ঀ*৸৸ড়৻৸৾ড়য়৸৻ড়ৼ৻ৼঀ৾ঀ৾৻ঀৼৼ৻৻৻ Bेर'रे:Bॅर'इसप्नरी'नशयान्त्रप्राह्मस्यात्मत्रवरात्मु वर्षात्मी नेर्राचे तर्गु" मक्षुविनः हॅ बद्यायदेश्येष्य प्रमुद्दानदेश्वेरः प्रा नगद'नम्बन्ध'हुदि *ভ্*ৰেন্ড নেম্বিস্থান্ত্ৰ ক্ষুৰ্'ব'অ'ৰ্ক্ বৃধ্ব'ব'ৰি'ছম্'বাৰ্কাম্ব্ৰ'ব্ৰুক ৾৶৸**অভ্ত**েষ্ বৃত্য বৃত্ত বি নাশ্ৰী বৃণ্ণ মং ম ঋ**না বৰ্গ ক্তি বৃক্ত শ্ৰু ব**্য শ্ৰী '''''

मर्केग्'तृ'रेवरापक्केन्'प्'ग्वन्'पर्वा देवा वेदावु'प्र'त्रवार् नेर हे पर्व व भी व प्यान प्रमान में नि ロゴスペスト मवैवामस्यास्ययाष्ट्रेनार्देश्यानुःववान्वानुःमश्चरवेनातुःमा दायान् देते है रही ज्वन्या है वर्षे राय देव केन्यान्य करा में याध्या'न्नः सक्रन्'रा'ग्रीका भैग मिं कें रोससामक्रीन्'राते स्वाचनः हैनः मे न्द्रशर्में निव्दारी तर्देन्यस त्रेन् हे द्या दे न्द्रश्युता रे रे न्तरा सुता " त्रकें राप्तराप्तरा विकार व्याहें न् किया वा शुरुवारा या वा रतः हुः गुरुषा प्राप्त कराय सम्यावे श्रुप्त है । <u>यु प्राप्त</u> व्यापा **ळॅ**वाराक्वेप्त्वरावरवार्षःबॅरार्देशयावरिवाद्ये। पर्वादेश्र स्वर क्रिवर्ड संयवस्त्रे। पर्वाके स्टेर प्रमा नैसा से स्टाया वेदा प्रमा श्चि<u>र्श्वरान्द्रेनाराकुर्</u>द्रसेक्षाचिरेर्द्रस्याशुचार गुक्षाचायम् राज्ञे सेराञ्चरा बीवयानन्यवेशन्त्री। सून्यवयाद्येन्द्रवात्र्याययाय्य | 対対スポー नेते न्यायकार्येष वाक्षक्र होर्म न्या विषा करे। षीबैर्वे, इंत्रव्यव्यम्बर्ग्यन्य विश्वयम् । यरः वहर्षे द्रेर्यः शुपायस्वयापायवादाद्वां चेराञ्चरा वहां व्यति वृद्धवाद्वां विवादी स्वर् यन्ग[्]गेश्चेन्द्रश्चेत्र्यभ्क्षंत्र्यम्यावेश्यम् শৃক্টিশৃ'ৰ্'শ্ न्यर वर्षा के दूर वर्षा वरत्र वर्षा

द्मांवेद्यायम्। म्हांपावीरुद्दायम् । स्वांपायने । द्वांपायम् व्यावेद्यायम् । नेर हे पर्दुव मुक्ति कि न का स्वराय देवा प्राप्त विवर्त् **新**京 元 第二 मुन्यात्यां न्रास्या की स्थाप से नापा के नापा के नापा से नापा मञ्जेन्द्रबद्धाः द्धंत्राम्बेन्द्रः मृत्या हाइबराज्यस्य स्पर्पत्रस्य दिवा हेर्यं वेषा हुर के हा ने करे इयराप्तार्त्त्रप्तादिनम्भवस्यस्यापित्रक्ताद्वरात्राद्वर् **৳**ঀॱ৾৾য়৾ঀ৾৽ঀ৽৽ঀয়৽ঀয়ৢ৾৾ৼয়ৼ৾ড়ৼৼ৾ৼয়ৼ৾ঀঀয়য়ৢৼ৽৾ৼয়য়ৢ৽য়য়ৢঀ৽ঽৼ৽য়ৢ৾ঢ়৽ र्केर प्रमादः सब्बेश सन्दर्भ य सम्बन्धः य प्रमादः । মশ্রেই ব্বর্থ এন ঐ महेन्यमात्रक्रियाँ। । विश्वाश्चर्यायाँ वृत्तु वृत्तं व्यामा विश्वाश्चर्यायाँ वृत्तः বন্দ্দ্ৰ্ব্য ইংঘর্ত্তব্যুগ্রিব্রুগ্রিব্যুগ্রেবিশ্বর্যুগ্রিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগ্রিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগরিব্যুগরিব্যু क्रॅॅं.प्राय**्य प्राप्त वर्ष वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा प्राप्त प्राप्त वर्षा प्राप्त वर्षा प्राप्त वर्षा वर्षा** बहर्ष्यावसुर। ने'वशकुर'रेर'र्सर'र्सर'प्र'न्र'। वरार्यर भूत्। यन हा पानेति ही वर र्यं निर्मे ही ই্পানপ্ত শাহিনা. मैं दुप वें क्षेत्र कर 'अवें 'र क्षेत्र क्षा शुं पर 'प्रति सु 'वा श्रेत्र के 'प्रजु र' देग वा पा ठव'ग्रेश्वे'न्सॅव'र्'युर'रा'ने'इवस'र्सेंसॅर'रर'रर'ने'^३.गब'र्र'वहुक्''' पति'त्रिंतर्पुर'सुद्धर विद्धंवयान्रायकवारान्ता क्केप्य कारहेवा हे ब'बेग' हु-र क्रें हे 'गें अ इवब क्षेग 'ठेट' वहें ब'रा'वे' बें गॉव ब'व दे क्ष छुन्" -तु'मञ्चर दरास्मा श्रुम दरा की में सार्ता दिवा में के सूर्वे के सूर्वे न सा की कुवा राता। न्सन पर्नेप्राद्धेन पर्यायस्यापन्न। ते संनेप्राच्चा वाद्ये स्वा ही वा र्नर्नुमञ्ज् व है। इब्र्न्य म्प्रम् त्रिय तु स्रित्रे म्बर् प्रम्

सत्व भी त्रा स्व का स्वा स्व का स्व

ब्रा विङ्ग्नाविषयातस्य स्वराचया निःयनः स्वराहिनः हुन्'बेन्'महेक्'मस्या |ग्राम्धुर'क्षेग्'बॅरि'क'हुन्'ठ्रा | द्धरः द्वराप्तरकी वायहराप्ता | मिन्स्या कुवाकी वायहे वारा भी न्हें सं हिंद के राज्य दें तरा न्या राज्य वा वि न कु न दें न का न दें स् श्चित्र । व्येन्द्रन्त्यम् स्वाप्ते स्वाप्ते । विषया सम्वाप्ते स्व ষ্ট্রী≅ব্যানকথার্থা। |ব্**রাখাদেনে দি**ন্থাম**রি বছন্ট্রবান্ন**া । ₹ ८.इं'ऄ्ब्'पि'चर्रा'त्र'| |श्रुंळॅग्रा'र्स'र्ग्ने'स्त्रा'द्रशामुन्। | देश्र ब्रम्बित्रायः लु प्याने। । ब्रिन् खून् श्रीन खूर स्ट्रे खाल ब्रायया । ६म:ने:न्नन:ह्रं:व:इ:प्यस्त्रव। । प्रम:प्यनेव:प्रयायाँयाव'गुव'गुप् १९४। । १५७ ४ वाले स्याप्त १ रहेन । श्री स्वयक्ष गहास्तर्म स নরি:রিল্লাক্র্রান্থ বিশ্বনার্থ ক্রিনার্থ ক্রিল্লার্থ বি ल्डिन्द्रियाश्चर्त्रा |नेर्न्याः ह्वेत्राञ्चर्टिष्याद्वर्यात्वर्यात् । मृत्रे यन्ग्रातुःक्षामंभित्रतुःअन्। ब्रिन्'र्ज्ञ'न्यव्यव्यव्यकाश्चीप्रवय्यव्यन्। । ন্পুৰ্বৰ্মগুৰ্মট্ৰৰ্মন্মকুৰাগ্ৰীম। বিশ্বৰাভদ্দেদ্ভিমান্থ্ৰন্ম राधिव। | द्वर्यानेव्यित्नरः दुवे। । नगेव्यास्ययन्य कुरानेन्'णुन्'बेन्। ।श्रूंयानांसंबन्'नर्झ्यानु'बेन्। ।नर्ज्न्'नु'नु'स् इ। रदायर्थाया वेरा विराद्या केषा विषय कृष्याय केषा । विवय

न्शुक्षान्हरूप्त्रान्भें प्रत्याच्या । न्द्रिप्त्रवाक्षात्रुप्ते हु । म्बियेन् स्वरं रेग् क्षेत्रं रेग् केत्। । स्वरं न्तः स्वरं क्षेत्रं केत्। । दे है रतिरानित वैरायर वेदा विषय स्वृग्दिय पे दे स्वर्ग दिया । हु वेर्'तज्ञ रातुः वेशे शेर्'पया । गुवः हैं पान रेवः पतः र्ना । **র্টির-দ-দ-বি-শ্র**'ন্ব-বেব। । প্রথম ভব-দেন্টির প্রবা হার ग्रुत्य। |पॅन्पन्रॅवर्धरङ्ग्रापन्। |बेन्पाङ्ग्रापदे **४**४% हेन् प्रकेश । स्प्रिंत् हो स्थेन् स्पर्वेग् प्रका । स्ट्रिग् म्बित्र देवा भेर् वेद्र है। विश्व र क्रिंग स्वर्ग भेर् । ने भूर हें गुराय दे यावराय थिया । इस ने रास वर्ष में राम में राम वर्ष ने राम वर्ष में মীমন্ ভব্'মামার্ল'ন্দ্রের ক্রামার্ল' । ক্রিন্ডব্'মামার্ল'ক্রের জিন্ত बहरा दिलाक्षेर हे. श्वायात हर है। क्षित्या र स्थित हिन्य ग्राचित्रायार्थ्यम् । यात्रयाक्चरार्थ्य- हव्यानः धिवः या । विं राष्ट्र देव'केव'क्त्रानु'त हुन्। ।ने'इतातर्हे रून धे हॅ गरा केन धेव। । |अ:हे·रक्षेक्याप्रश्रह्य| | वाप्रयम्यक्षक्ष्यम् শ্ব। वैदा । तुर्दिन् द्युत्पनि संधुन्द्रवया । येद्वेते नर्देवा से प्र नैनः भ्रम् । तम् त्विमा भ्रमः स्वाधिन श्रीनः दा । तने देव स्वाधिक स्व म्याप्तरत्युत्। । यरवेपायाप्तरायत्वयान्याक्षेत्र। । पर्वे न्नदर्भे नु'र्न्' मं 'ते' कुल | विषापत्रे अगु र ने 'सून्'न् ख्र र प्रवाने

য়ৢ৴ৼৢ৾ঀ৾৾৻৻৻৶৻য়য়য়য়ৢ৾ঢ়ঀয়ৢঀয়ড়য়৾ঢ়ৢড়ৢ৻ रग गैर्दे द्रायमन्य। য়৾৻৾ঢ়য়ৢ৾৾৾৻ৢয়৾৻য়ঀ৾ড়ৼ৻ৼ৾৽ৡ৾৾ঀ৾৽ঽ৾ঀ৽ঀয়ৼঢ়৻ঢ়৾৻ৼয়৽য়য়ড়ঀ৽ঀঢ়৻য়ড়৽৽৽ **ग**नः त्रवा वी त्रें निन्दा त्रस्य व या त्रेवा पा यू कें व या शु न सू व पा भी व पी । बदरहुग्'ग्रुस्'ब्'ग्रिग्'सब बेर्। गर्डेग'र्से'ने'ग्रेबि'र्केश'हेन'अ महर्यापाधित। ने'भिन'खन्यानेसामस्यी'र्ज्ञामाने। यस'श्रुटस्य ঘ'ষ্ট্ৰ'দ্ৰ'ব্ৰুম'দ্ৰ্মীনা **लक्ष कुं नर्जू न र्हुल नर्ब अ कुं क्ष क्ष कुन से हैं ने रहे वा केंद्र कुन केंद्र** धिव। सर्रः रेल ग्रीकार्यः व स्वतकार्येका स्वतः तह्ना नवा व नेव निव निव कार्ये र **बे**न्'त्'तष्वेर'तर्स्यार्थे'ग्रुत्य'प्य| स्'याश्चेर्'ने'द्रवयाग्चे'द्र दया ব্লব্লুব্ৰামান্ত্ৰ্ৰেন্ট্ৰামান্ত্ৰ্ৰাম্প্ৰামান্ত্ৰ্ৰামান্ত্ৰ্বামান্ত্ৰ্বামান্ত্ৰ্বামান্ত্ৰ্বামান্ত্ৰ্বামান্ত্ৰ 食べる ひがっていてだける

व। । नग'भेन' गडेर' सुदै' क' सुन्' ग्रीय। । ने ग्यान ब' सुर्वे से न्या ক্টিই'নেধ্রম'শ্রীমা । রহ'ণেম'শ্রী'মঞ্জহ'বশ্যুহ'। बेर'क्रायायरवैयाप'यवेर'। ।ने'यवेर'रेंबर्टरायांवा'क्राविता । <u>बिटा । अर्गे या के ने गारी राज्या न जुना । अर्थ या इस के दार साम्या । । </u> अग् ग केश ग त् प व द द द सुवाय स्व द से प व । प क व प न न व द सुवा सं । *ব্ৰ'ব্ৰা'*গ্ৰদ'| |ব্যাম্দিনিট্ৰদ্যায়'দেই'দ'মইদ'| |ন্'ব্**ৰ**' *शेऱ्हर'पाया व्याचय*। १२'या परकर' श्रवया हेर। १५य**र** दैर'न्दुरह्य'रप्या । ब्रिन'इस'त्युँ रखेयब'ग्री'न्यत'वर्गेर'दैर'। । हैनःत्रेद्दरानरःकॅन्'द्वःऋवायम् ।ॺॖॕॎन्'क़ॗॱॺऄ॔ॱळेव्'पॅते'क़ॕ॒नःन्ख़ै**ॺ** ह। । क्षेन्स्रात्रयात्रविः मृत्रां मुद्रावितः। । वर्षे स्रातुत्राः श्रुताः हिन् <u>नुः नर्वे स्था । स्थानीते स्थाय ज्ञाप मन् प्रया । यतु प्रस्थि। स्था</u> **ब्रै**य'गुर'चरुय। थिर'चलैव'र्दे रातु'र्द्गेर'रु'हे। ।रे'र्पेह्रिर'येर्' **झ'त'यर्झेर'। |र्ने'स'य'यर्ळव'में** ळॅंबाक्नेब| ।ष्ट्रेर्न'र्भ'यं सेयका स्प्रिंग्न्यः । । अप्रांति । 13 **छ**णबाहु'तह्यसङ्ख्रापदेखेर। । नद्यद्येव'हु'दुते हतात् द्वेराय। । <u>भूषा-८-७८-१५८-१५% वर्षा २८-१५७। । श्रुप्त कुर्यन्त्र प्रमाण</u>्य रोट्मो क्षु स्त्रि इसार्क्षे रामा विश्व मा श्री न्राम्य विश्व मा श्री न्राम्य विश्व मा श्री न्राम्य विश्व मा श्री मा स्त्री मा

चरःह्रन्द्वां न्याया विश्व विष्य विश्व विष |ब्रह्मश्राम्याद्वेदाराञ्च वर्षे | व्यक्षश्रीदारेवाया र्दयाग्रेशग्रुम्। ।ग्वरम्बन्यम्बन्यस्य ।भेन्यवेवः इं रामु रेब् पॉके | हिवयायायर यहें व्यापित यहें व्यापित विकास बदै'न्येर प्रश्री पश्चेर 'हेर'। यो ने बेर पर दे में न के न पर है परः क्रांचतुर् 'ग्रीका श्रूपकाया हेर्। । दिर् 'परः क्रांच मे का यहाँ 'त संयक्ष पर्वा । न्यूर्रे रेश्वरा परकर प्रमुंन परिश्वरा । हन्य राप्तः क्रं त्रुवासुर्वेगवाम। |देवळ्रानुयामस्यानुवाना। । गुनुदा रग्'यरेब्'यश्र^ळब'यम्'रे| | म्बब्ध'ठर्'बे'यरेदे'यश्रयायां याँन्। | रग नेशर्ग्रस्थ स्था । म्बर्या ४५ वर्षे वर्षि के स्थापित देव'ळेव'**छु'गु**'चक्रुेन'य'गवन'। |सार्देन'यस'क्र्रेव'न्नेपिये'यमेला | त्र्यं नदे: न्याया वर्षे दाहें नहुं दाहिन। । वि: वदि: नुवा शुः मृत्रः हुं नृवा शुः । बर्द्र प्रवादिक्ष स्ति । इति । मदे। हिन्दारी स्वर्षा हुन्दि हुन्दे । स्वर् सर्वेन स्वर् नि र्पर्दे हे में अद्रवस्पर्। | मर्डर अरे म्रा के क्रिक्स के कि | | इयराग्रीय। । इव्यस्मक्षित्रम्मक्षित्रम्मक्षित्रं न्दराश्चन्नेन्यरापदेखे। ष्टिन्कुन्यस्त्रम् न्युन्ह्या। । सून प्रावीप्तराधित। दिन्रचग्रहोंन्यपुर्ग्वत्वा शि यदेव विवादिया से स्केर मित्र विवादिया से स्वादित स्वाद

यर है नर्द्ध मुर्ग ह न स न में रखन ह र न। दहेन MEN'D'NA हेद'ग्री'अयित्रतर्शें अतिरे 'इवकाक्षे' यह्युद'विर' वे**द'तु'**ष्ठुता' यर्र र्ग्रत'''' <u> ५.७८.८ श.स.च.८ बारा कुरा कुरा का सार्य परा प्राची का क्षेत्र का सार्य परा प्राची का का सार्य प्राची का का स</u> मग्राह्रसम्मविवामनास्यस्यवाह्येन्।न्यने संसन् न्न्रिक्षात् । तुराष्ट्री'यातार्श्वेन'ययात नेपरापास्त्रन'क्रें प्रातुरारोबरा प्रात् た。大きぬれるからなっ न्केन्न-नुप्रस्वप्रभव्यकन्तिष्रसङ्ग्रह् য়ॗ৴ॱय़ॱक़ॖॖॸॱख़_ॖय़ॱऄॺॺॱॸॣय़ढ़ऀॱऄॕॣॺॱय़ॹॺॻॹॱढ़ॸॣॱॺ**ढ़ॖ॓ढ़**ॱय़ढ़ऀॱॺॺॱॻॹॕॸॣॱॱ मानक्ष्रमाधिदाय। निष्ठनायरानुष्यसञ्चरत्रावरायान्यान् गतः दा: अन्'दारा क्रें व्या देवाया दिवाया कृषा का की न्दा क्रें वा न्दा खेता क्रें वा प्राप्त के वा प्राप्त के वा प ह। हिन्द्रवराकुर्वन् नेश्वन्मं रेरेन्स्यास्य स्वर्धन्य देवह শ্রু শ্রাপ্রাম্থ পূর্বা ভ্রমণ নায় দ্রামণ থকা অন্বিন্তব্ इसलाननः तृप्न वर्विष्ट्वं प्रम्युरिने। सक्त्पान्त्वि क्रिया क्रिके वर्षे मन्यय। धुग्न्राङ्ग्राचायदाग्रान्यानुवाद्यानुवाद्या रहारराजी र्षेण्योक्षेर्रायं रे रे यह र या व्यव हु ख्या है। हे पहुंद् की खुद यय हु ছুন্ত্ৰী শুনামনিব নিৰ্দানৰ। বন্ধী মানিন তথা প্ৰ र्श्वें स्वायि देश देश मान कर प्रति द्राप्त प्रता स्वाय स न्यानुस्य क्षेत्रां यह्नस्यतिख्ताह्रस्यस्य **অ**দ্ব্**ৰ प्रतर्दर्स्य वादा द्वया न्यांस्य गृजीया यह याद्य द्वया विदाराणाया ।**

क्वॅुन्'सवाह्मयानि'सवान्न्युम'के'**द्वेन्'गुन**'हुग्'तु'त्रुवाक्षेक्वेन त्रेन्य हे रान् द्युत्पात् क्रुत्य त्रेन्य केना न्यु अअय न हें न्य ইবিবা र्दिः राष्ट्रिष्ट्रिष्ट्र षश्पर पेव थ। ব্দ'নস্তুদ'গ্রী'বীমরা তব্মেরমাত দ'র্থী'দ্রাগ্রী' ৠ त्रॅं प्रवादायहर अप वें अपिट त्रुव्य या खेत प्रवादी । **এ**ব'ঘমা ग्रॅन्किन्दळें न<u>्</u>न्न्ग्ने विन्छंतार्क्ष्रार्क्ष्र्न्यम्त्रम् मत। तुरान्ता इयामा स्याता उत्ति क्षेत्रेन कुतान्ता या सामा निया श्रवाश्चर अञ्ज्यम् इति । ইম্পান্ত্রন্থান্য বা सन्बर्भन्।पार देवप्पट्नबर्ग्याः सन्बर्ग्याः विवर्षाः विवर्षः विवर्षः विवर्षः विवर्षः विवर्षः विवर्षः विवर्षः व वनश्यम् वार्याचेन् यारा त्युवाया हुन्य राश्ची नु ळेवा व्यवस्था या मृत्युद्धे व्यक्षेत्रा स्था सेन् 'कवा खन्वा परि 'त्र्जें 'कुन् 'त्र्विसः **च** ইন্'অ'ঐন'ম'ব্ৰামন্'কল্ম'ৰ্ম্বামম'ম বি'কুৰ্'অন্তুন্'ম'ন্ন'। पर-रु:यर-सुर-वेर-क्षे-प-र्विद-क्षे-क्षे-क्षे-क्षे-**美口袋与别** *ग्*डार'न'क्रेर'कुर'अअक्केब'ग्रर'। त्रवाद्यक्षेत्राच्येत्रावेदःतश्चनःच**र** चर्चेत्। । न्वतः त्रें कुन् तेयका ठवः नुः शुरुः पात्मधीन् अश्चेः स्रूरः नाः प गर्दे न् केन ते के ना सरा क्षेत्र मान्ना ध्याया हे । पर खुर'प'क्षरायावीयवाप'न्न'पने'पनि'न्देरन्देशर्ये के देवारापनि क्षें'वरा' "" ॱऍ॔ॸॱज़ॕॖ॔॔॔॔ॺॳॻॻॖऀ॔ऀॸॱढ़ॖॸॱढ़ॖॸॱॸड़ॱज़ॴॸॱॾ॓ॱॻख़॔॔ड़ॱढ़ॖॖॸॱॶऀॱॸॵ॒य़ॵढ़ढ़ॎॕॎॸॱॱॱॱ**ॱॱ** रेग्राजुन्नुगर्ग्यायामययाउन्यायधुन्विन्यसुवायन्ना धन्य য়ৢড়৽য়ৼয়য়ৢৢঀ৽ঀ৾৽য়ৣয়৽য়ঀ৾৽য়য়ৢয়৽য়ৢ৾য়ড়৽ঢ়ৼড়৽ঢ়য়ৢয়৽য়৽য়য়য়৽য়ঀ৽ঢ়৽ *ब्रायायायुवातस्यावेनः श्रेरावायवायरः र्वुयाने वराश्रद्धायातयुरः वर्षाः* र्सरः क्षरः दें। । हे रहारा के दार्शे वर्ष्य वर्षे दाहे दायर दायर दायर मबन् पार्हे हेल। वर्षे कें प्रमा भैता के रेन्द्र बहा नृतुः वर्द्र प्रदेश हैन हेद'वेग'ब्रु-रक्केट्र'गी'अञ्चाभेषाचेग'रा'बळॅग'गेरोबका रक्केट्र'रादे'दॅद''''' <u>द्रैयायव्यात्रम् इत्यापाद्ययाळेन प्रत्यानेन याद्रीव्यक्तीयात्रम्</u> य्या 'वैराप राताकी अर्वे व' अर्वे र 'रेते' हे 'ता झाता एव ' खु र राया का न र राया है त्र'रॅं ५'ग्रैब'श्चेर'बॅं प्रग्'देशकें'रेर'अ'वेर'अ'त्रें बाह्य विता" मर्ह्व 'स'स्य व 'गा शुक्रा गा हु गा वर व वर न् श्री वर निव व 'नु 'गा व न निव से ना शुन ने वर ' ''' इसरा न मेव ग्वरा वसरा न सरा दिन मुन प्राप्त में साम देश में साम स्वार में र्मताक्षेत्रवारात्रवाष्ठ्र। रवार्षेताक्ष्रवारार्मे हे द्वारी रूपा ढ़ॎॼॕॖॖॖॖॣय़य़ॱढ़ॖऀॱय़ॱढ़ॕॱज़ढ़ऀॺॱॻॖऀॺॱॻॖऀॺॱय़ॱढ़ॕॸॺय़ढ़ऀॱज़ॸॱॿज़ॱॹॣय़ॱय़ॱॸॱढ़ज़ॱय़ॱॱॱ त्वत्र्दर्द्वत्त्वत्रेष्ट्वा विष्ट्रम् विष्ट्रविष्ट्रवाक्ष्याः विष्ट्रवाक्ष्याः विष्ट्रवाक्ष्याः विष्ट्रवाक्षयाः परः त्र्व पृत्य प्रमुख को। प्रमृत्य हिन्दा छेवा वो हो स्पर्व प्रस्थित स्पर्व व भेनेर नम्राप्ति दार्या नित्र है मेरि देश होता निवास निवास ।

द्रांश गुःदा देव के द्रां कु द्रां द्रां व्याप्त द्रां व्याप्त द्रां व्याप्त व्यापत व्

| খ্রীর'উন শ্রুমারার্মনার'ডর| । খ্রুমারার্মনারীর দীবা। | र्मसंस्र्चित्रम् स्त्रीत्वर्गसंस्त ラデミタ イタバル 単一 महं रावरातुरापदेश्वद। १८५८ क्विंयाग्वर 'क्वेंपरर रें'य। त्यूरः नवता खेर केना ने न तर्या । क्रें न यद' त्रद'य' न कें खेर यमें रा । म्न्यत्रत्रिर्वेर्द्वारादेव्यत्ते व्याद्वाद्वाद्वा क्षेप्रेन्सू मंग्रह শী'অন্ত্ৰঅন্ত্ৰ'স্ক'শাৰীকা माद्रवरावत्व भीववावाद त्या मतुष्य न मात्रि प्राप्त प्रेष् न्देन्यभित्रेन्रित्रित्रव्यात्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्र्यंत्रा ५ स्थाप्त्रव्राध्य दें दें वे व्यायुः चा ने वे ने विकास्य विकास वित श्चित्रपंत्रव्यं पृत्रपुर्वाप्तस्रित्। शुक्षप्तग्रद्धप्रश्चित्राच्या **द्धे**न्य न्नः पठवापव। न्यान स्वाय सुनाप ते प्रवाहत हे वात होता। मिसराग्रीखरायन् ने ने न त्या न हे व व व क्रुंक्टेप्ट्यूटें व्यवस्य स्ट्रम् है। तहत्र देव 'द्रु तरि वित् 'शुः भु 'देव पर र खुग्' कु 'केव 'सं यह ग्' ने तृ देव शुन " ইব্'গ্রী'প্র'ইব্ধা বি'নগ্র'রী'ঝঘন। श्च-विन्द्राध्यस्य ब्रेक्'ब्र्'दहें दर्या अहेद क्या दिविषा या परिदेश ই গুঝা 리크스(원리 तह्रगाव्यार्थक्यान्यस्य द्वी यानस्य हुन्यम् न्या विस्केवन् ग्रास्ट्रेन तर्भेग श्रुव थुन गयुरे श्रून सं देश चलन स्था নই বার্ডিক অধ্যথা स्वाराज्ञ्चन् क्रेन्स्य वित्तिराज्ञ्च नित्राचा न्या विद्याराज्ञ क्रिक्षे

यत्न'के'न्दें लागु पाकु क्वें द्राया के अन्तर क्वें अत्यव प्रति खु द देवा वा रर हुर है द है राज्य प्रत्य प्रति ने व न व व हिर पर प्राय है दें **ౙ**য়৾ড়য়য়ড়৾৾৻ড়৾ঢ়৾ঢ়৾ঢ়৾ড়৾ঢ়৾ড়ৢঢ়ঢ়৾য়য়ঢ়৾ঢ়য়য়য়ড়ঢ়ঢ়ঢ়ঢ়য়য়ঢ় হ্রদ'বা विराध हिरे लें कुँव हा रागरे श्र राश हिय वा कुँ न प्रारास गरा MAI पति'खरारें रार्चर' कं क्रांकेंद 'ततुका देन 'सादीक्' देर देशका द्वाके क्रों ''''' मम्याने। वर्षीरेष्यां शुचरपात् व्यासुर्गात् वर्षान् । T' रेबराप्तग्'त्र्वु'र्रः। क्रं'न' सुद्रदेनसर्रः। *बेश* द्यापार्या रेज्यापाद प्रदेश सम्बद्धा स्थान स हाय नेति है स दूर हार हिट यं र र र र पर ति हे स यह ग दिग ने न्मॅन्सॅ कें कें कान्यर हर्ग केंद्र केंद्र निवास महार कुर्ग देंद्र दुर कर्म स्था **छ**८'अर'ररन्गर क्रेक्षंत्राह्यर त्या सहत्य केरा क्रेक्षेत्र केरे हेर् स्वर्थर करा **श**ुद्देशय। शुःनद्गन्द्र्यं क्षेत्रुः सूद्दे क्या प्रतृपः केनः। गुनः विवय **१**८-१८ दे हे यो त्र के के दे ते हिंद के दे ते हैं ते के दे ते हैं ते ते हैं ते है ते हैं ते है ते हैं ते द्दियम्प्रिंद्रम्भातमस्य व्यन्तियात्। मूट्टिव्याग्रीस्मुःयहेर मङ्ग्रान्देशश्चित्रायांश्चेत्रायां विवादित्यात् याव्यवाश्चित्रात् स्त्रात्या क्षेत्र-८ ग्री-सिवी था श्री-८ क्ष्या है। हें रा दुंवा मन्यां विश्वं रुन् में हें से नेव रु हैं र देश नर मुर रास्य नर या में रे '''' मगुलानु गमेग्यात छला हेरा व्याह्यकार हेवानु हुए सूर् ガベダ

नर्जुद्र गुरु न दे अरि संस्था स्थान **ने**'मश्कुँन'रून ग्राम्याया यम् वार्याया सम्भावा स्वार्याया मेन्य मसळें व राज्य के रा ने ने ने ने के राज्य मा व वे व राज्य मा के राज्य मा व वे राज्य मा व वे राज्य मा व वे राज्य मा व चर्ड्व मुक्त ने तद्र चति त्यस वन व ॲन् प्रेन प्रेम के कि कि के प्रेम प्रेम के कि ने'तर्न्द्रत्रते'ययवर्षन्'वा**र्धन्'।** हें न्यान्'न्'न्यरत्रें'न'भेदाहिन्'हैक भयः श्वः श्वेषः भेषा गावु द्रवासय। विते त्र त्रवाद्या व्यातुः दृण्या स्थातुः दृष्या विवा महेंब्रहेरतर्भूत्रयामुत्रव्यव्यन्थिष्व्यरम् विव्ययस्य बळे नेरः हेः नर्दुंद्रः श्रीः वनसानवग्या र्चया श्रीसः श्रीन् रहेग् या श्रींग् रहिष् पति:श्रव्राच्यायवायाय्यं या सम्बन्धः श्रव्याचा प्रतास्त्र वित्राचा वित्राच वित्राचा वित्राच वि **कु**या कें अर्थे व 'यथे द 'यो प्रायम् या प्रायम् प्रायम् या प्रायम् या प्रायम् या प्रायम् या प्रायम् या प्रायम् **ঘ**'র্ন্থা প্ত'ব্যব,ফ্রী,ছূব, হ্যনা, অঞ্ছ দ্রানা तुन्याः स्वायः मेन **बॅ**ॱरत्यपत्रित्ररातुबाहेर'पात्रप्तुपत्रेपबायबाखुबाग्रेपवया। **स**म्बर्धिंग ने न विनास्तावस्य में हुम सन्पर्ने के स्वर्धन सन् ढ़ॕॎॱॺॕॱॸऀॖड़ॱज़ॖॱॸॖॕॱढ़ॾ॔य़ॱॻॸॱॼॖॸॱॻॹॶॖॺॱॻॴढ़ॱऄॹॱॴॖढ़ॸढ़ॾऺय़ॱॿ॓ॸॱॱॱॱॿ नेराहेपर्वन्गुकार्वेभाष्ट्रन्नेन्डिर्वेस्व। নুঝাৰ্মান্ত कें वहाया गरी न्'स्'व'खेबबाई'स्रम्'दे'वेशवीन'स्'नेशनामग **इ** ते विं वें र्वे प्रस्याय राष्ट्र राय दे के **व**ी ध्यापादिदेशेषु व देशे **इ**बराग्रेशप्तिन्द्रप्तिप्तिस्य वर्षा 月口(登画二句 दामिं वित्यार्थना प्राचीति क्रिया श्रीका मिं विष्ठी तह स्वाप्य राष्ट्री । । त्रा दीवा राम क्रिंव हो सम्मित्र सम्मित्य सम्मित्य सम्मित्य सम्मित्य समित्य **ম**নি:ঐঝানন্ত'ণ্ঠিণ্'**ব্**ৰাধীৰ'কুন্দ'ঝানন্'নবাই'নৰ্ভ্ৰ'ঐব'মাঁখ্ৰুৰ'''''' म्रायायाया **ध**नवार्रेय वित्तरेववाद्य ५ गुन् ५ तुन्य या ने क्षेत्र या नवारी वे र ब्राह्म **दैरः हे पर्द्वभूष्टे हुन्यायाय दें वृत्य देरः द राष्ट्री प्रायवशक्ती** पर्वा संने दें स **धि**वासरातत्त्रवास्य ५ 'शुषायमास्यव' वृत्ववश्चे 'तेनामास्य <u>५'ॡ'ख़'बॅं</u>न्दबाळ५'बर्ने'छे५'५बॅब'५बॅंन्ब'६। শ্বন্থ্যমান্ত্রন্থ नविन'नन्दार्अं हिंद्र'त्रार्श्चेन'कर्'द्र'भैरागुद्र'कुद'कुष् धैन्यः क्षे धैनज्ञत्यसम्दर्भन्यन्य ज्ञुः तज्ञत्ये क्रें काने स्वापि মপ্রবার্ট্রির্ন্ মাথাঞ্জী শ্র্বা कर्पाके पर्वाप्यक्षय पर्पाप **&अत्यान्ञ्चन्याक्षेत्रेन्यम्**। अ देशपित में प्रति रेशया न देर <u>ष्ट्र</u>'यते',क्ष्यत्य'यक्ष्र'याद्य'ह्यं,द्वियाधिन्'याळे यापता **स्**यादित्रे, न्यायवया ग्रॅन्प्रान्य विवादान विवासका व्यापा प्रश्रं के विवाद प्रमान के विवाद के विव न्या<u>न</u>्न्य **ॕॕॗॖॖ॔ॖॱॎॴज़ॱॸऻऄॵज़ॱऒॖक़ॸॖॱॻॎख़ॱॻऄॣज़ॹॱ**ॻॸॱढ़ॎॹॗॸॱॸॕॱऄॣॎ॓ॴज़ॹॖॸॹॻॱॱ**ॱॱ** য়৾৴ঢ়৻ঢ়ৢৠৢঀৢ৽ঽ৾৾৾ৼঢ়৻৸য়ঢ়৾৽ৼ৾ঢ়৻৻ৢ৾য়ৢয়ৢঢ়ঀঢ়য়৸৻ঢ়ৢয়ঢ়য় **ই**ন্'রীঅম'ডব'ম'নীশ্'ম'রি'নন' মারী র'ম'রেছ্রম'মারী রন্'মাশ্'র্ভম'র ছ্রুন'' हु-दुन्-प्रसद्भिन्दिः मुख्न-प्रम् हु क्षिर्-प्रम् दिना हे द्राप्निन-रेग्व

कुं के पर दें न्या वा वा हा ता स्था के पर दें कि प्राय निर्दे ने प्राय निर्दे ने प्राय निर्दे ने प्राय निर्दे न **৫ౙ**ॱౘౘౢ౸ౙ౸౹ भ्रूषा ग्रीका मिं भ्रूषा दी प्रदाया प्रतिव प्रामे हैं पर्व द में ळेन्'तु'न्शेग्सहे'तशॅं'न'इसस्यागरॅन्प ロッスペロネッセン यमुक्षपत्यायमुन्द्रुत्यपायायायकेवाने। द्येरायमुक्षव्द्रम् सुराह्नाया **इट्रायान्यान्। यद्रीक्षान्या स्वायान्याः स्वायान्याः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्** प'ने'मिवेद'तु'वि'र्क्षे'ठग'मी नेपार्याराष्ट्रे छंद'तु' महिंपयामिति दिन्दिन्दा षदःग्रॅग्प्वःचःवॅ:द्दःश्चेदःवॅर्यःश्चरःधःप्वःतःत्वदःविदःविगःवर्द्रवादःःः ने'प्पर'वि'र्वे' मने'म्पर'युर'द्र'हे'मर्जुद'ग्रीमगृद'वृद्ध'म्बा छै। पन्द्रवर्षकीर्भिष्ठ विद्वारीय विद्वा न्भेरामुग्राहेराम्भेर्या तळात्रावेरावु भाष्य हरा हुन्य हुन्य साम् NAI देरहेराईदाग्रीयाने ग्रित्वार्थे दयाधे वे प्रकुषि देश्वार्थे वृत्र का ञ्चायान्दर्भेद्रायाङ्गायाम् र्वत्यायायान्दर्भित्र न्याम् द्वान्द्रेत्र মর্চ্ব। इयापर कुलायते र्झें वराळे पश्चिराया संदापता देते वरवायर वर्ष बत्यवद्यास्ट विट स्वा ति हत्य ने वादा रहेता । यतुव्रच्यानुन्नेष्रायाष् कृत्रकेरा द्वेवा बीक्ष यञ्जयकारा वर्दन्यकार्वा नेवा स् মই'ক্ষা ब्राम्यागुन्यत्रयाचनः विनामग्राग्युवाग्रुवार्ष्टेग्य परःशुरःहै। । यद्देशर्थं ग्रेशयग्राद्ध्यायायि वायनदः वार्ष्ट् रपः तृ'पदे'प' तदे 'र प्येद'ग्रीय। प्रस्था स्वारा स्वर्षः <u> चेन्'न्'न्यं'चय। विन्'इययकीय'यहुन्'पदि'ह्याण्न'पिन्'प'न्न्'।</u>

२अऑस् १५८३८ । अन्यानः त्यार्श्वे यात्रेना के यात्रे यादाया हे'पड्डा क्षिरायने'यरातयुरात्। देव'ग्रुम'युरानु'यरायवेन'व। 25' ठण'तहेण'हेब'पदी'द्व'मी'ठा श्चिति'त्य केंग'प्रेब'पर्या मुहेण'या यने 'व'गुब'" *ॻऀॹॱ*ॻढ़ॆॸॱॻॲॱढ़ॆॸॱक़ॗॸॱढ़ॆॺॱय़ॖॆॸॱय़ॱऄॺॱय़ख़ॱॸऀॴज़ॕढ़ऀॱॶॻॺढ़ॎऀॱॸ॓ॱॸढ़ॏॺॱ न्नेन्यायत्रेन्द्रन्द्रन्द्रम् राक्षेत्र्रात्र्या ठन्क्षेत्र्वा व्याप्तात्रा हेन्'र'ळेड्'रॅरे'अर्ने'के्'त्रपार्वेदे'न्शुन्'र्भुन्'र'न्न्'। सुरापदे'रुपेख ন্যু 'ৰ্ন-'ৰ্ম্ম-'ট্ৰ-'ফ্ৰী'বিন্ধ্ৰণ',দু'অৰ্জ্ঞৰ্যন্তব্'ম'ব্ন'। 57735 *न्न्न्यराख्न्यर्यास्यव्यायाः* अविवासन्नित्रं विकास **র্বাব**দান্ য়*য়*৾ৠৢয়য়৻৸৾৾ৡ৻৸৻৸য়৸য়ৢঀ৻৾ঀ৸৸ৼৄ৾৻৸য়ৼ৸৻৸৸ नैरःहे पर्दुन **न्यायययत्रीहेन्यम् विहास्य विषयः व** ८५'ने'वॉॅंप'त गुत्रपञ्चरा'व राष्ट्रीन्'पति'स्र्र'त दे'गुव'त ह्युवाराव राप्पेन्'पर'''' *त*तुग्'चर्चन्'नेअ'र्जेते'ग्रेन्'खग्बात्रिन्द्रन्'कृर-तुग्रीचात्रान्-ठव्-तुःयन्'खन्'''' हराल हुं ता वे ना न शुर्वा प्राप्त । ध्राप्त या मुर्दे । सुर्द मुर्दे व व व व व व *इब्रया*यळॅंग्य*८्८:ग्रॅं२*:यक्कुळेव्:सॅ:यन्*वराने*। ञ्च'य' ५ में ब' अर्क्रण' व्यव्यक्तियान्य निवा क्रियां श्रुप्तानिव स्थानिव स्थान <u>বি'ব্ৰায়ীব্'ঘৰি'ৠ'৸ই'য়য়য়'ঌব'য়'৸য়ৄ৾'য়'য়ৼ৾ব'বি। মবি'ঢ়৾য়৸য়'</u> स्तिन्त्राक्ष्यं विस्तिन्त्रिक्षक्ष्यं निर्मा विस्तिन्त्राक्ष्यं स्तिन्त्राक्ष्यं स्तिन्त्राच्यं स्तिन्त्रच्यं स्तिन्त्रच्यं स्तिन्त्रच्यं स्तिन्त्रच्यं स्तिन्त्रच्यं स्तिन्त्रच्यं स्तिन्तिन्त्रच्यं स्तिन्त्रच्यं स्तिन्त्रच्यं स्तिन्त्रच्यं स्तिन्त्यं स्तिन्त्रच्यं स्तिन्त्यं स्तिन्

प्र अर्ज्य के नितः श्रुव्य अर्भित्। विद्यु त्यु विद्या विद्यु त्या ठाः हें पाः ळें व्यं ळें पारा या. पारीः श्चीरः । श्चितः श्चीरं रू. पारे पारा व्यं व्यं व्या स्थारः । स्थारः **इति: इत्: व्राप्तः व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्यापत्तः व्यापतः व** पाइपावर्द्धरयायवायया । छिन् भुः छे स्यर् छव वर्षित्यवायाया । ५''सु'शे'लुरा'देव'ळेव'र्घें । । सुर'च्च 'से'से'शे'सर्द्र वे । त्रव्य बेर्'नर्य अ'गृहद्'न् इंबर्'ने विद्या शिक्षु वेर्'ने वर्ष নঅঐনেইশ্রণমের। |ইর্নিস্কৃত্তইংক্লানেইঠ্রন্ম। ।ক্তুননির্মিক্ यह्रतालुग्राक्षुंत्रपाष्ट्रळ्ग्राचीत्रा । तर्जे द्राह्म्य्यस्त्रक्षेत्रातुः रा'री । श्चिरः कुता विवयर्थित्य ग्चिष्ठ व र दु'के। । श्चिरा घर देरा क्षिप्रायम् । तुरुष्यं तुरुष्यं सुरुष्यं यह स्वायक्षः वृद्धेवाया । वि ग्रद्रम्याग्रीसानेरानश्चरमात्रम् । त्रह्मांप्रतिस्त्रप्रीसानेनसान्त्रम् গ্রন্। বিশ্বাসন্মান্ত্রাস্ক্রনামন্ত্রামান্ত্রা ळॅरपाव्यवराशुर्केरा। |व्रावश्चाराहेबप्रारीशुरा| |दे त्रद्भे द्वा चन् कुराये विष्ठे । । हे क्षेत्र कुन्ये क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व महें व। अहें तक सेन्य देशेय सर्धित। विस्ते न सह

तस्यान् हेरा विन पर्न सहाय विदेशन देरहा । अस वैनः चत्राक्षुः चुनः ष्यमः विनः चने। विश्वरुषः हें गरा या श्वरूषा श्वरूषः विनः नना । ळे*ं*त्राह्मद्रादक्षेत्रत्रेत्रात्राह्मत्यक्ष्या । ट्रेन्यहत्रह्मायायान्यन्यहर |८४ वर्ष के व्यवस्था । विश्व के देवे । विश्व के र्स*ॱज़ॱ*ऄॗॖॸॹॹॖॱॻढ़ॖज़ॱऻॾ॓ॱॸग़ढ़ॱॸॖऀॺॱढ़ऄ॔ॱड़य़ॱढ़ऄॖ॔*ॸ*ॱय़ऻ॒ऻढ़ॻॸॹॱ **हैं। प्रकार सर्यर में हैं या प्रकार की शाम किए में हैं एक स्वर्ध की स्वर्ध की स्वर्ध की स्वर्ध की स्वर्ध की स** षर्। [तुकान्दिकाळे क्षेत्र] बहुन्यानी । क्षेत्रिकानहेन्द्रवका **অ**ন্'অ'অ'ছুপা । শ্বি'শ্বীৰ'পৰ'নম্বন'ন'ই নি । তি'ন্ শ্ৰীৰা न्द्रभश्चयात्रस्यान्ता । कियाबुन्यम्यस्यकीयन्यस्य । तुरापर्ने दरापत्र हो अवस्य स्वापि । हा से ५ 'इन ख्वा था वें नामा । **ब्रॅ**ब्र्'लय'र्ग'पते'कु'कुव'ग्रीय। । । । । । । । । यद्य'र्प'ग्रीय'यद्य'यिव । **न्न**र्-रेग्-श्रेन्द्रायात्र्रम् ग्रायुर्न्द्रया । व्वित्-सर्देद्रायार-सारकाकुका शुरापतिः छै। । गृह्यम् अस्य ततुतापतिः विदायस्य देर। । १ स . इंग'वरी'नर्नि' हे'त्रवुर्नानर'र्नेग ।ने'त्रवुर्न्नानर्नि' हेते'प्रवान्न য়ৢ৾ঌ৻৷ ৷ৼৼ৻য়ৣ৽য়ৢ৻৸য়ৢ৾৾ৼ৾৽ঢ়৻ৼৼ৻য়৻৽৻৻ इयराया । पशुः पः इयः पति देश्चे वः स्टें पयः यय। । व्यःस्य पर पत्रः द्वेते : करायपात्रवा । त्या गुवारपातुः क्वें खुरा वृता । देवा पाञ्चन'मर्खन'म्या नेवाळे नेमायवान्तुवार्न्'की वेग कुरावाहा वेवाहे प्यानिया।

प्रान्तिया

प्रान्तिय

प्रान्विय

प्रान्तिय

प्र

स्वाप्तिः व्याक्ताययय। वित्तायत् वित्तायत् वित्तायत् वित्तायत् वित्तायत् वित्तायत् वित्तायत् वित्तायत् वित्ताय वित्ता

न्द्रम् । तेववायासूना प्रस्थाय विषया । प्रमुन्याय विषया <u> इद्र'क्ष'द्यर'प्यत्यत्य'यूर्व । ब्रॅ</u>व्यंक्ष'ह्य'यूक्ष'र्यः नेदु'ळर्'र्वया । ने'र्स्व'कन'यरानव'मरानव'सिक्षेत्र । ।न'स्र'हराञ्चेव'ने'स्रन्रहेन्। । <u> ५'८५'ब्रॅ</u>ॅं५'सर्चे'सबाळायॅग'द्। |द'रग'<u>५ खुल'घ'</u>ने'सबातहेगवा | तुस्र न ने साम्र में में भी कुर्या । हिन्न न परि सामें न न परि साम्र । *क्षे:*८स्य गुर् देश्'गुर् व्याय द्वर्य । । ग्राय द्वाय य देश्' परि' ষ্ট্রব্যুক্তর বিষ্ণু বিষ্ণু বিষ্ণু বিশ্বস্থা বিশ্বস্থা न्निर्हेरीम्बराञ्चन्या - १३४१८५ व्याप्यान्यपरानुपाञ्चर क्रेड्र'र्द्र'प्रस्क्द'ळें रु'प्रश्लुर। । ब्रिट्र'द्व्यर्रु:डेंद्र'र्द्र्यप्पदिद्र' यहरा वा । सर्वरायानेश्रायान् गृत्यवायमा । हेर्नाग्राहेवानेवानु **ଛे**दॅ'बेया | म्य'ङ्गब्'र्देदे'ळेय'येद्य'य्वहरः न्य'यहरः । ह्यु ने'त्य' **८.ल८. त्र्रेट्रास्** क्रेश । १८.क्षेत्रं क्ष्यः ह्या ह्या । व्यायेट्रा हुग्'यह्मकेव्'रॅदि'मम। |द'क्वयर्'ठव'ग्रें'सु'यवे'८८'। |यर्ज्र <u> नृ गृत्रक्षे विद्यापञ्च नृ ग्री गृद्या । इस छिन छिन छिन प्रिय गृद्या ४ स्थापन । ।</u> मतुन्'मित्रे'हग्'मकाञ्चन्'मित्रेका । तह्र स्वेन्'मर्स्'न्त्रुक्षःश्चे तर्रा | प्रत्वेत्परः तञ्चलाव्यग्रनः । हगः तुः यते विष मन्यप्रतेषया विपानेष्ठवाक्षेत्रपुरिन्द्र। विष्यप्रताप्रवायेवा गर्नेद्रश्रीत्र। |श्रीनात्रेर्स्याः अर्बद्रश्रीक्षेत्र। |नाधीकुन्।सान्त वळरळे। दिगारा हें हे तकर केव वशा मि क्रिकेर में प्रवास ह। । पर्नरम्नेनवाश्चरायायायाया । न्यरः चन् ज्ञरः पद्य

परः अर्केत्। |ने'धैरः पात्रेरा गृष्ठे गृष्ठा है। । ध्राया क्राया राज्या ब्राञ्चाळाता । र्माताव्य राज्ञेर् क्षेत्रिव्यात्रा । मिन् क्षेत्राया <u> इत्या इत्या वितात पुरा विषय वित्र इत्या वित्र विता वित्र विता वित्र विता वित्र विता वित्र विता वित्र वित्र वि</u> हे मुन में न न देश है श है द न इस सार | | दे के मिन सर म से द किया | खुक्षाञ्च,'न्राजीप'ठा'नविद्र'तु'दर्ज्ञेनवा हिंगबुन्पितीरमातातात्रां ह्र् बर'यहर'। । हुन्य'न हैर'व्याय हेश्य दे'न दर'न' रेग । हुन्' न्नपार्वे' ५ ग्रेक्षपति र्दे हे ५८। । विद्युत्तपत्र क्व ग्रेपि दे वर्के ग्राप्ता । क्रैनः सं वाङ्ग् वापारी कुन्। । न्याय ववाय वित्र क्षे खरी नवान ति वा ५८। । । नगरश्चर ठदाश्चेष ५६ वि ५६। । ह्युसारा यह य कुरावि । पित्र अवर सुण क्रेंद्र पा क्रेर वि क्रेर । । प्रापत য়ৣ৻য়ড়৻ড়ৼ৻য়য়৻য়ৢ৻৻য়য়৻৻৸য়৻ ৸ড়৻৻ৼয়৻ৼয়৻ৼয়৻ড়ঀ৻য়ঢ়৸৻য়য়৻ न्नरया । गवर'नप'र्गुरी'र्नेब'क्नेर'सुर'प'इयया । गयेर'**्व** ब्राक्षुःतुरःद्रीतावबाग्रुरा । ५३। पञ्च १३०। ७५ । ह्र'गै'न् यन'पर्ड्ववयन्तु'पह्रुन्'प्रवेश । क्रुव'पक्रुन्'कु'वन्बय'नव ৸ঽ৾৻৸য়ৢঀ৾৻ঀ৻য়ৼৄ৴৻য়৻ঀঀ৸ য়ৢয়৻ঀঽ৻ঀ৾৻৸য়ৢৼ৻৸৻৸ঽ৴৻৸৻ मंगनेर र जुरा वर तर्पतिष्ठ वर्ष जुरा वर्ष । वर्षिर गुर्पर्पर्पत्रम् । विर्वेर वृद्या हैर वर्ष्ट्रम्

रः हुँ न् द्वायारः प्रवेव क्वया । नुरापरीयायासः तेव हे यह। । हें हैं। या सब् कर 'ह ग 'हु 'परी | | १५ 'हे 'धु या साब ५ 'बर 'बेर | | शेव या ग्रैशक' मूर श्रुर प्रपर | विवास राज्य धिने र विवादर | अं। पुर हुंब्'ग्रेब'बद्बब्ब्'ब्रुर'व्या ।हराग्रुब'ययग्रेव दयद्वेव ग्रीय। ।ररा ङून श्चेताय ने सून शुना । दने यन श्चे तथा श्चन रेवा । ने मस्तर्वस्त्वस्त्वुरुवे न सेस् । स्तर्भेरः नैद्रं तुः मर्चे न ग्रायः । ब्द्रन्द्र्याद्रम्भ्राच्यायद्र्यायद्र्यायद्र्याः । द्र्राद्र्याः स्ट्राच्यायद्र्यायद्र्याः भैग'शेबरा'नग'ङग्ब'रहियान'लय। । ही रॅलाङ्ग'नङ्ग'नङ्ग'हेरा'हेरा' य। व्रिंदाराजनवाज्ञवानुग स्वाम। विरेहे क्रेन्यंवालुवाचदेः सदा |देशप'र्द्द'क्केंअर्दे'द्रश्चन्त्रुट्या |देखेर'गुद्र' महन्वस त्रुतानित वृद्धे । मध्यक्ष ठन् खेबका शुः अपने वा । इत्याम दे त्रहेग् हेद्द् प्रत्यम् व्याप्त । वित्यायने प्राप्त वित्र । विवय यवगानिष्येत्रस्यान् द्राया । यञ्जलायरान् स्यान् राम् स्था । व्यक्त रुन् अहिन्दा वित्रेशित्। । ने प्रश्निक्त न्त कृत् ब्रॅटबाज्ञी ।श्चितःबाष्ट्रबादावाक्षवादाश्चितः। ।श्चितःङ्गतः रेबराग्रीकुन् इंसविता । बहर हैन हे सेर में वाया है। दि यर। |र्नेब्युक्र-तुःश्चनकानिगःस्रयायत्रनःव। |श्चनःव्यंश्चनःवर्धनः पवित्रपत्रम्य। वित्रम्वितित्तुःपन्त्रपतिःश्चाने द्वारार्गित्र

मुकायाष्ट्रन्पर्रं नुप्तस्वायास्य राज्ञुत्राक्ष्यान्य केवान्यकाया **Š**5' *ૹ૾ૢ૽*૾ઌૺૺૢ૾ઌઌ૱ૹઌૢ૽ૹૢૢ૽૽૱૽૽ૢૺૡૺૹ૱ૢ૽૽૽૽ૡ૽૽ૺઌૣ૽ઌૼઌૹ૽૱ૹ૽૽૱ૡ૽ઌ૽૽ૢ૾ૢૼ૾ઌ૽ૼૢૹૢ૽૱**ૢ**ઌ૽ૻ राम्याक्त राष्ट्रिया कुन् मान्न्या विष्या विष्या विष्या विष्या क्र 451 बेर'री रें क्रियाक्ने 'तर्शे रोबरा उव्'र्'बुर्' पायात है प'रें र्'ग्राया है श तरर्ने'न्न'रा'यंत्रार्श्चन्द्रंन्यययते'शु। श्चि'तर्श्चन्य ট্র'মা ह्ययप्यतेसु। सु गहुस्र^४ ग्वर्भाम् स्थित्र स्थित्र स्थित् हिन् क्षेत्र स्थित्र स्थित ठवायान्यः क्रवाशुर्धन् ने में अनेवा ने में मेन्नाय संदेन प्रायाशुरा में पा **ॻॹॗ**ॖ॔॔ॱपदेॱॺॄॸॺॺॱॸॺॱॾॸॱॺॕॱॸॸॱॺॱक़ॸॱॱय़ॱॸॺॕॣॺ**ॱय़ॱऄढ़**ॱॺॄॹॖॸॹॱय़ॴॄ দু,গু.হথ,দুখ্,শুব,শুর্ব,শই, অন্ট্রিন্ডেল্'ব্'ই'ই'মর্ব্ব'মন্বা *८मु=ॱगदशर्मन्'नु'र्मुव्राचित्रात्रात्वातात्वात्रम्'रम्'* स्व्रायम् अवस्य स्वर् तळंबराताचेद'मश्चात्रः छुण्कुः गृत्रद'र्यतेः त्रेतार्द्रण्, तुः बदद्र'हे 'चग्रतः''' त्यम्बायग्रीन्यम्बाद्वेषयायाया मन्द्रवयात्र्वान्त्रीक्षेन्याया नेति तुरान्यम् अर्ने श्रे कु तत्र राष्ट्री के रायम तु विश ন্র্থান্থ্র षरः कु' गरः क्रीतु रः हिन् खुद्राया भ्रा श्रें गा देवाद्यापरः श्रें पार क्रीं पारा क्रीं गा चहुत्र'लुग्राञ्चेत्'स्वग्'सं'व्यराधरात् ग्रीत्र'त्रिंत्र केव्'सॅर र्यर्प्रस्य में प्रति । ज्यर् म् ज्यर् में हे मेग्रा दे हैं स्याप र तु <u> छन्'पर-न'रेबाग्री वें बन्'छेब'र्घ पर्नेबाविंग्रें प्रहेनाबानेन सुना पान्त्रकाश</u> **ब्रॅ**८-पदि:ब्रेर| वेवका स्वान्बुक्षप्ति:कृषा पक्षान्नि, स्वेषा क्षाप्तान्त्र्री, परक्षेत्रकाते। नेपर्यव्यान्तिन्त्रवादिष्यान् पानेप्त्रवाद्विष्यान्

कैन्द्रम्याराञ्च निवासम्बारम्यात् स्वारम्यात् स्वारम्

न्यत्यंत्रस्यास्त्रात्रं त्रिं विन्तात्रस्य । । श्रेत्रं स्वरं निवास्त्रः त्रिं विन्तात्रस्य । । श्रेत्रं स्वरं स्वर यर्ष् वृह्मित्राचे । श्रु कुलाने वृद्ध वृद्ध वृद्धे वृद्धे वृद्धे । । या य स्व हु'रहुरापमॅन्पिया । श्वेरानेपीर्या द्वारा । प्राप्या क्षे च्व'क्षेत्रकाढी क्षि'क्षेव'द्रे 'चदे'तु क्षें 'क्वा | क्षें क्षेण्या दर्ने न **ऍ**ब'ऍररार्च्चित्' । श्रु'णर हेन्'रहें 'भैब' हु'न् गर। । श्रेब' क्ष'रा'भैर'गै'र्सेग'र्सेश'व। । ब्रुब्र'र्नेग'राग्या'भैरा'रैर'ठा मेर। । रे' परःग्**राधःभेज्ञ**रःसंकृत्यायाय। । ज्ञुन्ध्याकृतिकेत् चेत् क्षेत्रके। । बर ब्रुव्युतः नेवा क्रेन्रें र दे। |दिन् खु धेप्तर वह देन् धेव परि हैर। | **३**'मङ्ग'ॅप्रकार्श्वेन'रह्मरामसेषा । म्रन्यवितृन'रक्षे'रमेया प **धैद। ।**ॡर्ज्ञ्ग'ने'व'न नेव'णवर्ष'वृद्धरान् गतःच। ।हु'न्चर'ङ्कारा भुदै र्थं प्रन र्भन्। । गवनाने वा भुवाय केंगा पाय कवा उव। । यहें वा पत्रेश्चर्यात्र्यात्रे । विवर्षर्प्यम् विवर्षात्र्यात्रे विवर्षात्र्यात्रे विवर्षात्रे गुन् श्रेपाया श्रुं पाय दिन दिन । । श्रुण कु सु धार में पाय था। । श्रुण ळॅन्यह् त्रहु**याक्ट्रन**्य स्ट्रान्ते । गुन्य बहुन्येशव्य हेट्रम्स्य हेन्य पर्या विकारित्यापरायात्चरायञ्चराविता । इस्रान्गाः गुरुका पर्दे प्रश्न में बादी किंब हेन हिंद पर्दे मुं में प्राप्त निन मूर विराश्चिर्'पदि'ञ्च'राद्रे'द्रवय। । १५५'पदि'ख'र्येव' ग्राय्यापाद्रय। ।

मग्रात्यतिष्ठ्रविष्युष्यस्य मञ्जीत्। । के मरावात हुनः च भेन् ः देव् গ্রী |ব্রমন্ত মর'ক্রব'ক্করণনে মের্মা |শ্রিস'মানট্র'র্মাম ইমা ह्यरप्रवा तिहेनाहेन्वेनाह्यरहानीत्रा । ह्युप्येन्वहन्य ठव्विं वें ठग | इंव् ७५ १८ विराम इंग वेर् थी। । वारेग १८ हुतः नदि'रम्' बुन्'न्म । श्रेन्'पदि'केम्'व बंदर्श श्रुर्यापय। । न्म **सॅ ब्रेक्केट प्रमयसं ग्र**म्बेर्। |५'ड्रम् विषार्थ्र् 'मॅं क्रुसपाय। |८डे' यन्यायमिन'हे'क्रन'रा'ने। विवस'र्वन'की'श्रुन्य'यार्श्वन'न'त्रहित्य। । तक्रें स्थेन क्षेत्र के वा स्थाप क्षेत्र का विकार के त्र का के का के का कि য়৾৾৾ঀ | ৻য়য়ৣঢ়৾ঢ়য়৾ঀৢ৻য়য়ৣ৾৽য়ঢ়ঢ়য়৾৽৻য়য়৾ঀ৾৽য়ঢ়য়৾ঀ৾৽য়য়৾ঀ र्मर में त्रावापर हिर्। | देवस्य मर्दे देखूर माद हर। । खूर ह्यद्रिंद्गीययातस्र देन । विहे से द्रापे दे में ही प्रवेद तहर । दे। ।सम्बन्धः स्टन्स्यम् क्ष्मार्थः क्ष्मार्थः स्थार् पुत्रः बेन्'रहिन्। । रन्'न्यन्'बेन्'यरक्कु'ग्रक्षरहें या । रहिन्य म् क्ष्याष्ट्र-ाज्या । भ्रुः न यात्रकः श्रेनः पादीः यहा । नायाः त्राह्याः च क्रवश्यक्रिंद्राया । इंव्रक्ष्याक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्य त्रहेन् क्ष^{क्}नितः हुन् क्षिन्। न्नः । तिन्नः क्षेत्रः निक्षः न ब्रैन्। । त्याग्रीकुंश्चेद्र'तळे प्रायय। । व्येत्रहेण्यपने प्रयमुनस ব্রাগ্রন। মে ব্রহমর্থনার্থমন্ত্রিয়ীনা ক্রিউল্বাধ্বক্তিব

सम्बद्धाः । तथार्रिनः स्तापिकेन्द्रस्य । दितापर्वेशन्त মহাশৃক্তিব্যমিশ্ভিহা ভিমম্মান্শ্রমানেইব্যমিল্যহান্ত্র । <u>র্মের রিই জ্বাপ্রাদ্যের | রেই গ্রাম্বর রাই মিরা মন্ত্র দৃষ্টি</u> ব্ৰাঝা ষ্ট্ৰিন'শৃশ্বাঝাধ্যব'শে छे ন'শাব্ৰা' উন্'। বিৰুপ্তিন্ত্ৰ ष्ठवःष्ववद्यदुन्यः। ।वर्षेनःपद्यत्देष्यः सुष्यःवर्षः । য়ৣ৾৾য়<u>৾</u>ঀ৾য়ৢ৾৾৾য়ৢঀ৾ঢ়ৼ৾য়৾ৼয়৾ৼয়৾ঀৠ৾৾৸য়য়৸৸য়য়ৢঢ়৾য়ৢ৾য়ৼঢ়৾ঢ়ৼঢ়৾৾ৢ त्रअङ्गरञ्जन्तुत्वर्धवरायाद्ववरा । वित्रानाशुरः देश्वर्याया । æॱधेश्राद्धरशाईव्याय्ये| |त्त्रापः श्रेर्ण्याराहेद्रायेर् हेर्ण्या ऍ८,४इ.४८,४४,४४,४५०। ।श.४ब.१४४,४४५,४४,४५४,४५०। । तस्र तहरवेष षा वा वा ता ता विदाय ক্টাহণ্'মকট্টিম | শেকটাঙ্গ্ৰাক্স্প্ৰান্মম্মনউনকা | ৪ম बेर-बिंद-परिनेंद-रु-पश्चर। । तुब-र-रेब-श्चरवान्दवान्न-बाहे। । **कॅ**लप्पाशुकागुम् कोर्शेनकामदे। । ५५५ **प**नेव हो ५ ग्रीवहा क्रूनका ग्रैय। पिह्नीयनपुत्रयातस्य पञ्चयनपुत्रीयः पिष्ट्रीना पिष्ट्रीना ব্রমের্জ্রস্টার্য়া ।ইম্যান্ত্রম্বর্মন্ত্র্যান্ত্রমান্ত্র্যান্ コママデ र्वापत्रेश्च श्रम्भा वित्रम्भु सङ्ग्रेत्श्चे वृत्वराम्बा न्दरान्त्र हुते रूर् प्राप्त र्ष्त्। । हुता सुर्दे हुन कुन्वरास्य हु। तस्र-ने[,]ष्णुअपम्बुत्यप्रदेश्यः स्तात्। । प्रस्कत्प्रतुन्त्वर्ष्ण्यस् वा वितहेन्य पञ्जेययन् प्रायनित्यय। वित्रवेर्ष्याप

गुन्न के स्था । र्गार परे स्थान के विकास के व IRT यायह्न स्थाने हूँ व्याप्त है। विराम मिर्म वर्षा शुक्र वर्षा हिन्। बर्मेद्र बेन् हे द्वारा दर्देव्या इया । तुरा मृत्वाय धेवा दर्ने हेन् [त्र्रातुःभुःपवित्रादेव्युर्ग्तु । विरागरंतायायहराक्षे RI দ্ভামান্দ্র প্রার্থনে বাধান জ্ঞান ব্রং ইবং ই প্রান্ত ব্রং বাধান্ত ব্রান্ত ব্রা विग'यड्रय'रु'तराय'रु'युर'राय। |हे'राईब'ग्री*स*'ग्रारया। मदेव महरास्त्रिं प्राया ने उंदर्ग नु सं सागु सक्ते दिन के साम निया वदा हवा ८'र८'वी खन्य स्रुचिद्वा क्रुच्य स्रोत्र प्र्यू राज्य स्र 5'9'91 ট্রিঅ'ব্রেন্'র্নমানীণা'নার্নমানমা বিন'ডন'নীমান্'র্নি'র্নার্মানন ल चरा मृत्या दु कर्ष व वर दि कें प्रमु व वर हो । कें वर दि दे व मूल व महेब'वबाविन'ठग'ङ्ग्स'हेग्चर्डब'इस'सर्चेन'ङ्गब'मकुन'ङ्गब'र्डग'ङ्गेब"' बदिः अपवादाद्यान् निर्मे स्वित् द्वीत् द्वाराया वर्ष्ट्र दे। देशीत् वर्षा **पर्रोप्तर्**कीत्सर्ष्ट्रेंब्र्स्स् केन् क्रेवितः नुः पर्वेत् 'खुष्या रातने स्वयायगुरः नुः प्रवेशाया ।

त्रस्य श्चीर श्चीर सं क्षा । व्याप श्चीर स्वीय स्वा । व्याप श्चीर स्वीय स्वा । व्याप श्चीर स्वीय स्वीय स्वा । व्याप श्चीर स्वीय स्व

विद्रा | वाक्रवाख्रवाक्रदान्द्रवाज्ञायायहेवायादी । हेव्हान्दायहा ळेव'स'यान्यस्य। १ने'नेन'त्र्राची अळॅन' कुर'य। १म ५ मृतः च अन्य देवा विश्व स्राया स्याया स्राया में स्राया । इति गत देव कर की विषय स्राया । भूगाश्चराराश्चर्यायतिश्चेषव्यायाय। विःइयवाळे सुरायं रवार्श्वराप्तवार्श्वराप्तवार्श्वराप्तवार्श्वराप्तवार्श्वरा मतुन्'रेष्रयान्रःकॅन्'यर'पदे'श्चैर। ।तुत्राखुत्र'रेर'र्ख्न्'पदे'र्खेर' बैन्'र्डन्'। |नैशंधुनै'सम्रत्य'कॅन्'नुशंबेन्। ।कुन्'श्रे'याष्ट्रेन् क्व'त्रळं व प्रवा | सु:ब्रुव'दा:ब्रुट:घॅर वॅट वा:वेग'ग्राह्म | ब्रिट वा: गुन्ते संयानगुराहे। |हेरानगुन्यानदेनग्रानदेनहरास्यायहरू। । নর্ম্মরম্বানমা - বিরম্ভিদ্মেদ্ভিদ্মে ফ্রীর্মান্র্মেদ্ব বির্ম্ स्वावे महिन्दिन स्वाप्त स्वाप्त । श्री स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप **ऻॻऻढ़ऀॱॻ**ॸॱॸॕॕढ़ऀॱक़ॕॹॱड़ॗॻॱढ़ऺ॓ॹॱॻॖॸॱढ़ॎख़॔ॺऻ ऻॎॺॵड़ऀॸॗॱय़**ॱ** मुख्याक्रीतसुर्द्रत्वाचीय। । मुद्रयाम्बर्यामुख्याद्रिर्द्रत्रस्यर्ध्या মেন্ত্রবর। । নের্দ'মেন্ড মারীবানী ব্রামারী ব্রামারী । ব্রামারী । ব্রামারী बर्जेद्रार्थे बेग्रुडाया । बर्दर प्रमेशम हेद्रा क्री सुराप्ता । प्रमूत र्वेन पर्नेन वर्षा न व न्यास्त्यानेन्थित्ध्वायक्र्याया । स्वार्धिन्यक्ष्य्व्याद्वारक्ष्य्वा । <u> न्सर नेन प्रें व ग्रुख प्रस्त स्था व ज्ञा व ज</u> ळेंन्याह्म वर्षा | अवस्ति तहेग्रापति भून वर्षा | अन् भून

न्तर्भेष्ठेष्ठं । वर्षेर् ह्याप्यं वस्त्रं वस्त्रं वस्त्रं बैब'ब्रुंब'यदे'गहुन्यत्देव'रेट'। । यह्य नदेळेन'नैदायेर'नहुर षत्र'कत्'तु। । सून'बुन'बुन'यते'यतर'र्ने'तु। । कं ग्रन'कुग्'यह्र्य' व्यवाश्वर्ष्ट्रा निवयायवाश्चित्रात्वत्वाते। । श्वरापरात्विरा नतेन्वर्ष्य्रस्तह्रण । न्वर्धस्यन्नेत्वराध्यस्य । न्व *देश'तोॅदरत्शपर*'र्दे'दु। |ण्*दश*खण्यर'हेंड्न'ङ्ग'ङ्ग'ङे। । न्दियान्त्रत्यात्रेत्र्यात्रात्र्यात्रात्र्या । इत्याक्षेत्रेत्रा । रेग्'रा'रोबराग्रीस्य'श्चर'धेर। । तस्य'रहीर्'हेन्य'य देनर्' कुर्त्रहम् । न्राया विद्याय की प्रमार्थे । विद्याय में देश्वा हुर हुर। । अव्यापकुर ग्री ग्राम वर्षार ग्राम क्षेत्र यह रहेश । है। यस न हेन् की पर रेंद्र । । यन हन वायस र प्राप्त हुर पर दे है र । हर्न्न्ययाञ्च त्रसङ्घर यदा । वास्त्रीत्रपरितरार्देत्। । भु'नशुक्षयसँ व्'तु'शुर'वकाग्रुर'। विरामिक्यानश्चर्यानुराम् त्रस्या । मृत्यान्त्रं क्षर्में क्ष्यां कुराया । क्रि. मृत्या मृत्या मृत्या विषया र्देंद्र। ।श्वेंब्र'लयान्याम्बर्यव्यव्यश्चित्रःवया ।श्चरत्रश्चेश्चितेः हेब्रप्तह्येयाचीय। |५याप्तह्यें राप्तह्यापत्रिश्चर्याप्तिम्। ।स्र बदिःभवदर्वे वद्वयाग्रम् । सम्बद्धे हेष्वयायम् दुन् हे। । रेट्स्रिस्विस्विष्रिद्देश्चर् हिन्यायस्य स्वास्त्रित्त्र विन्था । हे न्हेन् गुरायस्य नगर द्व

त्राच्याप्त्रव्यात्र्यात्त्रव्यात्र्यात्त्रव्यात्र्याः विषय्यात्रव्याः विषय्याः विषय्यात्रव्याः विषयः विषय्यात्रव्याः विषयः व

मर्श्वान्त्रभावाः । भिर्मान्यश्रम्भयम् अर्ट्यान् । मिरम्यान् । भिरम्यान् । भि

लम स्नारि स्वार ने भीव रहायहें या । प्रवाहन संवी या श्री वार रा न हा वा बिम। [म्ये:गुन्'बर्ट्स'गुरुःश्चरायदेःश्चेम। । দুবার্বাশ্বর बु छेन प्रायक्षित्या । अ. यहार व्याप प्रायक्षिता । **ग**ञ्जराञ्च र छरवाङ्गदापादी जिते हु। । ज्ञारराञ्चराञ्चरा हिरापा केवाकी ज्ञा । मन्'ळेब्'रोन्'वेदि'श्च'र्श्चेष्'पया । मतुन्'न्न'स्रेहेष्या अभूषाय संन्'र्रेन्। । म्नस्य मृत्राचार्यस्य स्ताना । वार्ष्यान्य स्वरायक्रम मसन्द्रित्। विवासक्षेत्रेत्रक्षेत्रम् हेन्द्रन्। विवाद्यतेष्यवर विग्गगुरायाया । द्वारागुराञ्चरवायवायाया । विर हुन्यत्युराप्येत्प्रते हेलाप्यूत्। हिल्लाकुर्यार्पेत् मुन्युत हुन्या । भूळेन्यान्द्रान्य हुन्यते हुन्। भिन्यवेश्वरा द्वातुःहिन्। ।कुतायळवाहे संश्चेषाईनाने ।हिन्धान्यान्याताः बेन्पन्देवयं बन्द्रा । अग्निया वर्षेन् केन्य वर्षा । केंतर्द्र 'रे'प'ब्रॅंद' यहंद् 'केर'। । तद्द् 'पते'र्द्र द्यशपञ्चपयहंद् य। | नियम ने ज्ञाल में 'कुं तुं भी | हे में ब्रामें के लाख मां त के लाय हूं न । हिं कुरिवश इ.है ब.हू वश्यापा । विध्यष्ट्र प्रश्ना । करत्ययार्थ्यत् जुन्देषा । अत्यव्यत्यत् विगत्र हुन्छेद्या । क्वे ज्वायत्री के न् विव्या । विव्यायामा प्राप्त व्याप्ता । हॅगरापरे शुः गुः तहार रातश्चरावेरः। । यह गहारा हें रहे तहे व पारी

ब। । भु ८८:जे.वेबादर्श्वरायबन्धी । सिंदश्वराक्षे कृतासुद्रासुद्रा ळॅंग्रह्म । तर्में गुर्द रय हुळे अन्ते र्या । ने र में र के मिष् पञ्चन्यरः त्व |देशः व्याक्षेप्यः प्रमा । व्याक्षेप्यः प्रमा ৸য়৾৾ৡ৾৾৾ৡ৾ৼৢ৾৾ঀ ৄয়ঀ৾৾৾য়ঽয়৻ঀয়৾ৠ৾য়৾৾ঽ৾ঢ়য়৸য়৻ ৄয়ঀ৾য়৾৾ঀ৾৾৻ৡ৾ঢ়৻ चने र्हेन हैन तहें दाय ग्वरा भैना । न्तु अरी में दाय तह ग्य दे ষ্টিন| |দৈনেখ্যস্ত্রদরাদনিপ্রথননাম| |দির্মধানগ্রীদ্বান্ तळतालग्राचरा । पृश्चेत्राचित्राष्ट्वित्राधित्राच्यान्यस्यस्ति। । <u>ने हे या त्रन 'व या लु 'न ते 'न्वा | कॅ या तने पर में 'त स्न 'र्स्च</u>ताया | | हॅं न ब'यह्नद'ळें न' ने ब'यह 'अ'यह स| | ५ यर दि ५ विच' पुःच ह्नु ५ स' <u> ५८। अस्य प्रतिस्बित् र्म्बजीयवर्। । अस्य प्रत्य राज्य</u> বাম র্লম রাট্রী । মার্নি নে মুবানে নি মার্মান কিমারী ন রুষরামির'নস্থ নম্রু। ।শ্রব'শেম'র্ট্র' গ্রী'ষম্বাশ্রম'। । ह्मन्द्रम् त्रान्त्रम् अर्थः स्वार्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर्षः स्वर् बद्यरहुरःह्री व्रिंदर्नेते सूरायां मिन्यार्ग्रा विवासिकार् मुळेपरामा हिमर्जुराहिन निम्यवासर मेपा देरायहण न्नोपितः क्रॅब्रांभयान्नायक्षापतिः शुः ने द्वारा हे पर्ववशो श्रुवान् स्थानाः । यय। पर: हे: पर्डन् ग्रेयायग्रदङ्गाय। प्रवेधायम् स्वया न्दिन्शुक्ष नुविद्वियामान् कृत् क्षेत्र नुवित् क्षेत्र स्ट कत् कित् सम्

बर्जेंब्'र्स'ग्रुब्स'र्फेन्'दे। ग्नब्बल'र्ग'ग्रुन'र्फेन्'त्र'वृबबार्ख्यपन'ह्नन्त्र' रादि'ग्र-'त्रग्'न्र-'। ग्रवश्रारग्'र्भर्'त्र'वृवश्राह्याञ्चररापदे'ग्र-**ヨ町'55'|** मग्नां व्यापाने विश्वेन प्रतिलयान्ता तम्बारा विश्वस्तान्ता चतुन् ग्रे[®]श्रुन्'त्य'र्स्रग्रह्मद्यदे'त्य'न्'च'ग्नन्'यन'बेन्'ने। ন ব্লুঅঝ'ন বি' ग्रन्'ग्रीशर्ज्यानरे हिर्दे । हे सर्वे क्रे में मायस्पान्तायहर्य ने। [ময়য়[৽]য়য়ৢয়৻৻ঢ়৾৾য়ৼঢ়৾৾৻ঀ৾৾ঀয়য়৻য়ৣ৽ৣ৾৽৻৾৾**৾**ঢ়৽ ক্র'ন্ডের'ট্রম'রি**র'র্**র प्रस्थात्वर् प्रस्वे खुन् खुन् व्याप्तुर् स्थान्या कुन् प्रस् तार्चरायक्षेत्रप्रतिषाराचार्यात्यक्षायतिष्यातस्याने प्राप्ताने प्राप्ताने प्राप्ताने प्राप्ताने प्राप्ताने प्राप्ता त्रवयःविद्यान्यकेत् 'चरुत्' ग्री श्वन् 'चक्रव्'चक्रन्य व्यवि 'न्वव्यव्याप्येत्' ने छिन् त्याकी त्युरानदी रून् पान्त। वन वें तार्वे वार्य दे मे वार्यान्त। तुराळ्ट्र'र्राञ्चरहेर्ष्राच्येर्यक्र्र'यराष्ठ्रा र'नेराञ्च'ग्रुयायर्द्र ঀয়ৢ৴য়ৣ৾ॱয়৾য়য়য়য়য়ঀঀ৾৸ঀ৾৻ঀ৾৻ঢ়য়ৢঀ৾ঀ৸য়৻ঀয়ৢ৾৾৽ঢ়৻য়ৢ৾ঀ৻৸৻৻য়ৢ৾৻ঢ়৻৸ ग्रिन्ग्रित्र्राष्ट्रिव्यात्रिक्षात्र्यात्रिक्षात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र वृव स्यामितिकित्पाव वत्त्वा तय इयान मुँवान 単刻(4) ब्रायापराधेद'वेद'येद'प्र'त'के 'त्र'प्र'दा'क्षेत्रु कें का क्रीन् वेद का क्षेत्रापा प्रवासा ७८ 'हे 'पर्रहे 'पर्रे केंद्र पंक्षित पा हित 'क्षे नवराखन वाय वाय विवास है के पा है का

देरत्वस्यकान्ग्रिके यादि 'ग्रायक कार्की' भुष्टि देते। ने'धेव'रा' व्यंभेन'यर हैं भेरान् मेंबा ने हैं भेरापर होन पाया **두 왕평정** न्यापस्य स्थान्य देशव्या स्थापित स्थाप बळॅंब होर' त्रसञ्चित्र प्राथमञ्चर तहत। त्र स्थित त्र स्थित । त्र **এ**ই.ফ্রি.বাপ্রবাধ কর্মের ফ্রি.বাপ্ত ব্যব্ধ প্রস্থান করে প্রমান মুদ্ৰেব ऍन्'क्रियर'नें'तु। नयन चेंगुव' ढन'ईषाय'य'येन्'देन' सवकी ह्र तह्नस पति'भु'भिन'है। हुन' ८६ग'स्रेरे' सून' पा हु रा'सु' घुन' पति नरा दर्ग पग हन्यास्य स्वर्भास्य स्वर्भात् स्वर्यात् स्वर्यात् स्वर्भात् स्वर्यात् स्वर्यात् स्वर्यात् स्वर्यात् स्वर्यात् स्वर्यात् स्वर्य ने⁻हॅ'नेबायर:छेन्'स'स'न्'सुंगक्केन्'सदे देशस'झेदे कुं <u> নুমা</u> न्र्वान्यान्यायान्त्रा वहेंद्र होन् तथा शुः हु वाही तथा हुन तहता ผ**ଊ**ୡୗୣୣ**ୣ**ଵୄ୳ଅଂଶ[ୣ]ଶ୍ୱ'୰୲୴ଵୄଊୄ୕ୢୠ୕ଽ୕ଵୗୄ୕୕୕ୠ୵୵ୣ୵ୠଽୖ୶ୣ୳୷୵୷ୢୢୖୠ୕ୢୣ୷୕୳ୡୖ୴ त्स्र दे : स सरलकी के प्रकार के समिति है से दे से के के स्वार के स्व **ਫ਼**ਗ਼ੑੑੑੑਫ਼ਫ਼ੑਜ਼੶ਫ਼ੵੑ੶ਸ਼ਫ਼੶ਫ਼ੑਸ਼੶৶৸**ৢ**য়৸ঢ়য়য়৸ঢ় **इं**र-गे*रव्ययान्र-वेर*-विस्तायान्यम् हेव्र-पॅनि:स्यायम्यः हेव् प्रयासकान्तेः " स्र पार्शतकराविषा। तृषाष्ठिवाकन्यव्यव्यक्षेत्रास्यव्यक्षेत्रास्य नेपीव'रा'लपीव'यर में ने व'न में वा धरिश्च भेव है। पर्छित्पार्य सुर्ज्ञायाययागृहुवावार्द्र क्रिये मेवाक्केवापान्ता हनाव **इ**ंट्रियान्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र्यान्त्र

८<u>न्न अप्तुञ्च 'ग्रुअ'यर्</u>दे -पु.त्युराक्षण्या क्रीपुत्य प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क मेशपरामग्रीन् तहम। हे हुँ ज्ञप्यरपदे तुष्यग्री पहुन् हुन प য়ৢঀ'য়ৢৢৢৢৢঢ়'ৢঢ়ৢ৾য়ৢৢয়ৣঢ়ৼৣয়৾ৢঢ়'য়য়য়৸য়৻৸য়৻৸য়৻৸য়৻৸য়৻৸য়৻৸৸ बेन्'न्। । इतार्वे रपन्ते न्वान्ति न्वान्ति प्रवेन् खन्य क्षेत्र के वाकी **ग**नेरःतस्ताव्यवाद्यान्तरः ज्ञुःतर्ने सव्यवेरः यव। विदः पत्रतः व्यक्तिः *ৡয়*ৢয়ৼৼ৾৻ড়ৼ৾ঀয়৸ৼয়ৢয়৸ড়য়য়য়ৢ৸ৼয়ঀ৾৾ঀৢ৽য়য়ৼয়৸য়৻ য়ঀ৽৽য়ৢ৴য়৽৾ঀ৽ৄঀ৾৽ৢঀৼ৽ঀয়৽**৽৺**য়৾য়৽ঀয়৽ঀয়৾য়৾৽ঀৼয়৽য়ৼয়য়য়ঢ়৽য়৾৽৽৽ रॅंब क्रेन्सॅब्रॅन 'यानेव 'तु'कॅश्च नैनन्न 'पन कुरामानेख। अन्य पन *ষ্ট্রার্ম স্থান বার্ম ই* ন প্রবাশ নুষাদেরী ব্রাম রুদ ক্ট্রিস্ট্র 'শ্রবাহন বার্ম কর विं बं ही नवेव 'रु'त इस वेस भाषा ग्री हुन ही न मेर तह सामा । नर ഺഁ൲ൣഁ഻൱൞൮൴ഺൎഺ഻൵൵ൕ*ഀ*ℊഩ൵ഺഺൎൖഁ൱൵൛൶൴൞൵ൎൖൄഀഀഀ൹ൕഀ൛**൷** रुष्ट्र वारा या वारा त क्रा देश वा पाय वा पृत्र पुर्व र्या वा अवा प्र <u>Ĕ</u>ſੵ<u>⋛</u>╌╗むॱऄॿॱॻॕॱॺॳॺॱॻॾॕॸॱय़べॸॗॗॗॗज़ढ़ॎऄॸॣय़**ॴॻ**ढ़ॸॣॱय़ॱॾॕॱ*ॾ*॓ॱ <u>५८। ८६ग हेर वेग बुर केह ने अङ्भिरात्य प्रत्र केंद्र ने अङ्भिरात्य प्रत्र केंद्र ने पर्</u> য়৾৾ঽয়ৼ৾৽য়৾৾৾য়ৼ৾৽য়ড়৾ৼঢ়ৼ৽ৼ৾য়৾৽য়ৢৼয়ৢৼয়ঢ়য়ৼ৾য়**ঀ**ৼড়ৢ৾৽**ঀ৾**য়ৼ৾৾য়ৢ৾৽৽ वित्राविषाग्वान। समाही।

हेर्च र-तु-देव केव प्याप्त देव रवत। | न्देश शुप्प पहेश पति र रशप न्दा | विहेश हेव केश शुरु ग्देश पता श्री | श्रे मा विश्व श्री हैं भी खित विशेष हैं भी खित हैं भी खित

कुर्रम्याञ्चरत्रस्य। विक्रियाचेर्म्याच्चर्यस्थित विर्मात् वृद्धकाकुन्न्रिन्वान्द्व'स्री । धिनेर'न्न्न्रिन्द्रिन्द्वान्। । चन्य'केन'महेन'मबातहेयबार'न्न'। | अ'र्देनबायुन्'खुन्'तहेव धाइयय। |ब्रायनिम्ब्रायामक्रीन्धिन। व्रायमिन्यमिन् भेगेर हैश। । सद ग्रुअपर र दु लु स्यादश। । द् ग्रेशप्त देवा ग्दरप्रथमग्रय। |यापरप्रभूगें स्रिप्तयपरिश्चेत। |गृहा सुअरस्य कॅन् म्हारा स्वाय सुवा । अन् वहार र्से व स्वाय हैन स्वाय हैन स्वाय हैन स्वाय हैन स्वाय हैन स्वाय हैन स न्यरमिन् न्वरा ळन् या मुकारान। । न्ये वहन यो ने या नहन गुजुरः। [ञ्चार्याचेष्पेयानगरः ज्ञुयान हन। [गुरारे निगरः सय तन्त्राश्चरःद। द्वांगिरिःचग्राकन्।तसुनःचरिःश्चर। धिःगेरःशे शुंभाञ्च तर्ना विरामाङ्गियामाद्रीयान्य श्रुवा विरामाङ्गिया **इ**र-६देश्यरहिता । शुः हुन-देर्न् न्या कुः नदेर हता । दिशकुर न्यताकी दग्रातन्यराषु । । न्याळे ग्'ठव्'की कें हे खुव। । सु' र्में गुडेब : यंदे ब्रल्यम् द्वा । गु दु र्वे 'हे 'द्व 'हं 'त्र '। । यन् ग 'बेन' **ঈ**দ্'ক্টাশ্লন্ডেৰ্'ক্ট্ৰা | শৃত্ত্যুদ'ই'লিম'বৰ'দূৰ'ক্ট্ৰথা वगुर्द्धगर्वरश्चिर्यालेया |दॅव्यस्वरश्चिर्वयस्वर्र्प्यालेया | विशेषां प्रश्नित्र व्यवस्थान स्थित देव। । त्रीं गुव प्रस्त्र ज्ञां स्थाया । त्रीं गुव प्रस्त्र ज्ञां स्थाया । त्रीं गुव प्रस्त्र ज्ञां स्थाया । त्रीं गुव प्रस्ते स्थाया । त्रीं गुव प्रस्ति स्थाया । त्रीं प्रस्ति देग्। हेवववायाबेन्'पति'इत्यत्युँ रायाकेव्'यारशकीव्रापनत्उवा न्ना अर्कत् भून श्रीष्ठण कुराम्म नैकाले नेन्या हुन स्ति हुना

सर्-तु-प्वराय। तस्-भित्यव्याच्यान्यः विष्यान्यः विषयः विषय

ब्राज्य प्रिया स्वाप्त स्वाप्

ष ब इव खुद खुद खुद्दार वा | श्विप पश्चिर में र खुर बेव हिए। । तहेग् हेद् कॅश्चकु पायायरार्द्र। श्चिर्पतेप् मॅव्यतेपत्र धुरः। । दः बद्धरः हेर् इतात् हुँ राय। । प्र्यां रुषा द्वारा स्वारा स्वार तरी <u>| ह</u>'तह्यत्यत्याचीयातरीराञ्चण्याते। । क्षेत्र'पारी छेण'र्रा तहस्यदिद्व । केयनेरद्रस्यविषक्ष्र्रं प्रात्युम। । यद् क्व त्र ठव देशें ठव। । श्रू देशें ठव द्र द द्र व्यय प्रति। । पर्या ठगा <u> ५८.५ के अन्दर्भ में प्राप्त १ | १८ में अन्य ५ के के अन्य भारत में अन्य १ | १</u> यग्रद्धन् भे्श्वत् अन्धन्य । भिःन्नश्चान्य क्षेत्रः श्चेतः श्चेत सु'कॅ' न् गुग' के स'ग हु न स' स्थादा । पश्चेत 'च गु र' इस रा कु द न द स' गुर्। । ध्रम्कुप्यायहर् केर्रम् शुर्। । ने क्षेर्यन् मृत्र र बहरारी | ५'बहुव'पर'वार्द्द 'ठेग'इतात्र हुराय। | गरेर . हुति: खुकालाम् ने: विद्याने: क्षुताम् ने: कुकाने: क्षुताम ने: कुकाने: कुकाने: कुकाने: कुकाने: कुकाने: कुकाने **₹**तर्ब्द्रशीक्षायद्रश्राहरकाय।

र्नेतु पाय्याश्चिक्ष र्हेन् स्या । द्विन् स्वतः सुन्या । यान्या । द्विन् स्वतः । । स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । । स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः । । स्वतः स्वत

चति'तज्ञकातु'भैद। |तिविन्द्राचनात्रम्त्राचक्क्षं'तृद्राचादे। |वह्नद् त्यव्य प्रवास्त्र । विष्य प्रवास्त्र विष्य । विष्य प्रवास Aे सॅंबेन्प्पंषेत्। ।न्पूप्तन्त्यंत्पन्। ।ब्रॅन्य्यान्यन्यं ग्रन्। विष्यं स्वाधन म्यान स्ति। विनाम स्वाध पते'त्रमुत्राचाभेत्। । ५ ' छ्व ' कु ' प्रहे ' त्रे देव । । पर **७**व'बर्म्स्य'यर्'पर्'क्ष्य| |तुम'७व'वृबक्ष'म्गर'यम्'पः श्रुम्। | र्रेशं न है ८ ' स्वा : स्वा : प्रा : स्वा : स्व ট্র্বালা । ব্রথান স্থ্রির স্থান স্থান স্থান । ব্রার্থন বর্ত্তর স্থান क्टें देन्य। विदारपापदानदेशहाल। अ.नेहीनदाने ही दा बर्द्धत्राचित्। । वनशक्तीं द्वरातुः हुं वृद्धत्राचे। । यतः ग्रीकाम् हेका गदिः वेग ले । पर्या | विषयान् । ने वान्यान् । विषयान् । तह्रगः पने प्रतेश्वर्केनः प्राधित। । नगरः प्रायति ननः स्ननः केगः प्रते। । श्चित्राचाला वार्त्व हुन्द्र रामञ्जेल। । माईनाया तुन्तर्मिते तस्त्र रामने नाम **র্ন্ত্রির্বাশ্র কার্ম্র্রাশ্রের্ণ, ক্রুবার নির্বাশ্র কার্ম্বর্ণ, ক্রুবার কার্ম্বর্ণ, ক্রির্বাশ্রের্ণ, ক্রির্বাশ্রের্ণ, ক্রির্বাশ্রের্ণ, করিবাশির্বাশ্রের্ণ, করিবাশির্বাশের্ণ, করিবাশের্ণ, করিবাশের্নাশের্বাশের্ণ, করিবাশের্নাশের্বা** मया । ति दे रं यत्या परे प्रापेद। । सम दे द्यारा श्रु है गय हे रा ।

कुंदै'त्रॅरत्र्त्रामृहेरातात्देनस् । । । । । । । न्कें ज्ञान्य दे की अवा छेन्। । छन् दे निर्मेह्र न् छे र बेन् या । क्षेत्र्तिः हिन्द कुष्मिनः द्वा । क्ष्रिंयशायहण्य क्षेत्रणा हिन्दे । विदेशमा चग्चेन्'चन्'नक्षण्नानिस्या । ग्रायाक्ष्मान्द्रवासुन्'वहुन्'निर |के'हॅग|क्वॅराञ्चराक्ष्याभुदिःता | | पन्दे'केद'लॅटराक्वॅर' ह्रव्य सुति तथा । व्ययम् इत् इंवय बुया सुति तथा । यने न्यताक्षेक्ष्म् । इत्रातह्मा । विश्वेष्य वित्र व ने है रळ व्यवस्य हुँ राम भेव। । विन् गुम ने वाम राम राम हिन्। विदान दिः वशुर ने अन् नविदानय। ने छैन कर तथा छैजा छ न छ । चन्नतः चतु र गुः द्वा चिरिश्चेद चर्ग सं गुरुषा भे गुरुषा भे वर्ष वुग्य न्यानम् नित्य वेश्वराय स्यह्न 'न्। । श्वराय मेनाळे रेन बान्दा वाक्षेष्वत्वक्रियाँ बुद्धवाने बान्दा विद्यान्य ने ञ्चर अंत्रा प्राची या स्थान विश्व अं श्वर श्वर । स्था अं भारता र्ते निवित्र्यं से त्राक्षेत्रं हे पर्वत् क्रिया क्रिया क्रिया वित्राप्ता नुःतस्याबारायाः विकासे देनः वार्त। । वीयायेवः क्रीत्रार्थे ख्याः कुर त्र गुन्य सु स्यापि क्रे स्याप्त स्याप कर्ष प्राया प्रति प्राया स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप स्थाप য়ৢ৽৸৲ঀৢ৽য়৾৽৸য়ৢ*৽ঀৢঌ৻য়*৾৽ঽ৸৻য়ঀৢ৾৽য়য়ৢড়ৢ৻য়৻য়য়ৢয়ৼৢৢ৽৸ঀ৾৾৽য়৸৸৸৾ कूर्यं ने बाब्वेद की बेरापा ने बाब्विया होया। रहाया बळेर पार्टे वाकी वाका वा स्यान्यान्यान् ग्रेयान् व न्यान्यापा क्षा क्ष के नेत्या म म् श्रुक्ष मुस्ति स्वर्ण त्यात्र स्वर्ण स्

नश्य इं हे नन्द इन ने ने नि

दः व्यापादा देन दुवः व्यापादकाराने केन वेदाया यह सार रेन्'य'तुन्'ठर्'क्रेश्वेर'र्'रतुन्यपदिश्चे। तुर्श्चित'र्र'वृध्य'रन्रस्य ট্রিন্ নে দ্বার্মার্শ্রমান্ত্র্বা নমা ট্রন্ট্রমান্ত্র্বানরনা विवापत्वापानेया हेवयापानित्र्येत्वराहेयर्ड्वयार्थाहेत्पारी ५५-ए। विराह्मे विराह्में वादी वाहित व हे पहुंद सम्बा पर्गायिक्त परि हे सार्थे मुख्य पर्माय प्रमा ম'ন্য্য্য্ ग्रस्या . हेनर्द्व शुन्ता हैरात्यरवादवादेव वहवर्त्व प्रेया য়ৢ৴৻৸য়ৢয়য়৻য়য়৻৸য়ৢ৴৻৸য়৻ঀৢৢ ऍव् पृत्यायक्ष्रवात्रदेगा हे व्यति प्रांतिष्या शह्य शह्य प्राप्त में वा बेन्'न्'न्यराया दर्ने'न्व'ग्रे'क्स'नेग्'ग्रुन'न्युन'न्यंता वेश' विश्रापया हेपर्वुन्गु स्यगुरादर्भ गुरुद्यस्।। रित्कुर्पाई हेपकर केव भेवा । यर वेब हैं से नेर प्रवर

षेत्। |बेरायं दूरं प्रावः केत्रं भेत्। ।यः मन्यायरः पायं दूर् भेत्। ने'वे'भेव'रा'क्य'हुग'यगय। १७'वे'शे'यते'हुव'हुग'यळ८। ।हुः वितः तहें अर्थाय दे प्रवेदाया । वि ग्वरा चेराया हुन पुष्पता । च जॅ़्याबादिकाक्षरान्यम्। च्याविकात्त्रम्य स्थान्यः च । व्याविकात्त्रम्य स्थान्यः च । व्याविकात्त्रम्य स्थान्य खुरायान तुरार्थे तगरार्च द्वा । इस्य हुन नेरान हुन नु निरा । विकार्या तर्ने का ग्रुरान् में का श्रुप्ता । विवा र्ये ते व्यवका स्टार्स के तर्दन्। । ष्ट्रिप्ति । विश्व स्थानं स स्थानं स्थान ८वःश्चगःचःने'न्न्वंयपःदनः। । गर्भःभ्नयन्तेनःश्वेनःवःदन्। *बिवापावनःवसा*र्येगार्चः वा । विराह्यस्याचेरापाह्यन्तुः गृत्या न्र्यन्'तह्ना'तर्वाणुर्'न् म्याणुं रहर्। वि केर हेत'नशह रा युवा । श्चिम:दुरु:क्रेंअ:पश्चव:पश्चेन:र्ज:द्वा |तु:श्चॅप:बेम:प:ह्वन:दु:ग्नित। | बह्रान्द्र-विर्मेश्यन् में श्रापकुरः। किश्युर-प्ने क्रुं स्रतक्रण्या धिव। [क्रेब्रचकुर्ग्न्वराय्यायक्षेत्रवार्यः व] क्रिक्रायम्र बरार्भहेबर्र्गित्र | ब्रिंग्गहेर्दिश्युर्ग्रेश्युं छर्। **६४७,८८८, में इ.५८७, १५५,१५०, १५५,१५०,४५,५५** १५४८ पर-गुरुवाय में पर स्वा । विकाम ग्रुटका पर मिकालुका या **८ प्राम्म प्रमान्य क्रिया क्र** 51 पर्वेपरावया क्रेसम्बर्ग-र्ग्या वेसल्यापया यन

वगुरः दर्भ गुड़ दश्रा ।

शेन्यकेन्यं प्रश्रुन्। | शूर्य परिकेष्य यहँ र्'हैरातु। | ५ ने श्रेशियते छे हुन प्रमृत् । श्रेशियते छे हुन प्रमृत् चं म् । त्रः बान्मॅव्यक्ष्यानगत्रदेव्हा धिन्वाझःह्यंत्राह्येव्हर्म्यक्षे । ळॅं रार्श्वेर अंतर अंतर विष्या है। । ॐव'प्रकुर'ग्रव्यवारग'≅प'हुर्' के। | बि'स'रबारा क्षें संरा र श्रव के। | श्रु 'रा सु क्षें रा 'र 'रा के। | न् दे बे भरे पने दुग पन्। । बे बेन् खुन हूं न ह्न पन ने। । ह्यायतीन्वराम्यार्थेयसायायम्। । स्मानदीयस्याद्धमार्थेयान्यम्। घग'स्य'क्रॅंर'र'क्रेर'द'रेरी । तश्र त्याक्र्यं क्रंबर्यार देश्वः सुवा मदी । तस्त्रात्रिरस्यार्शीयरुत्वरम्यायदी । द देशेयदी ८5'इग'रम् । विद्यार वे इसवा हे ग्या सुरत्। । वह द सें रन्त्रेयस्य वृत्रेस्येन् स्थयः नुःदन्। विन्त्यत्तः स्यावेस्य स्यावेस्य त्रा । न्देशेलहेर्स्ट्रग्नन्त्। । त्रग्याग्रन्ह्नाश्चर परिहिन्। । न्यान्यर वर्षेत्र खुन खुन विहेन। । न्यान्यर र्श्वा विकास स्ट्रिया । विष्युत्य स्वा स्वा की की स्वा । विषय स्वा स्वा की स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स इत्नेत्रास्य स्विन् हेन्। । श्रय न्यान हर्षे न्सु सहिन्। । न् है बिलदि प्रस्ति प्रमान्ति । अन् कु के द्रार्म स्वापना र्रः कॅबाहुग् पर्देशपापननः। । मध्यवायस्य नपः सं सुन् प्रापननः। । भ्रु ग्रुबः क्षुन् श्रुवः स्वान्त्र वार्त् पत्र नः। । प्राप्तः पश्चन् वार्षे न्य वार् पश्चित्त्वर्गः स्वर्णाः विद्याः विद्य

ある。古、多、イニ、おまは、日の、ガイ

दारेष्यापतिःकु'यहंद्यंत्रापत्। हेर्न्युव्यंत्र्यापत्। स्ट्रिंष्युप्तवःस्।

हे'ञ्चायरा'द्वेद'ञ्च पर्याशुप'र्घप'यर'| | द्र'यहरायरयाञ्चरा मह्य द'य' न्र | | यने श्चिन 'द शें यदे 'न्य थ' तु 'न्र | | हे श्चय है य' बह्यक्षेत्रम्पि । स्रवास्त्रप्रस्पित्पदिः हुन्या । देनः रेते'न्यपायन्यज्ञसन्नः। ।याङ्गेन्'गुः दुळेययाळे व्यन्नः। । ロペガ・ダ・ペ・ラ・ズ・ヘー・ | 西・オ・夫 南・ガ・号・ヘー・ | 切って ロー・記・ त्यान्याच्या । रोग्रया ह्यानेष् चंद्रानेष् न्यानेष् रमः अर्वे हिंदाचा शुप्ततम् धेन्। । त्रेवता समावाया त्रेवता संशुक्षा गुमा *ने*य। |श्रुयःतश्चरहं रहस्यागुवाग्रीयात्य। ।क्रॅट् केट् क्रेट हे गुद्राग्रीकार्योत्या । तस्याद्यं वक्ताकृत्यं वित्रकार्वे । १९वरा हु ८ जुल ह्यु त्यार र र र व्यापय। । श्रे र उ र विद व्यापी र र र है। । ग्वर इवस हुन प्रत्य बढ़ेश्यम् | | द्व वह स त् वे तस् । | रु:छेन्'इयलायहत्र'रुंशकुन्'र्यरय। ।ग्वन्'र्सुन्पन्'राखामेन्' हे। । ८.४.४.म्थानश्चाद्याद्यस्य । ८४४५४३३४५४५८५४ परःश्चित्। | मे:ळॅग्रायाचेन:श्चेंग्नेन:र्षन्। । केश्याग्राम्याया तत्वाचेरभुरावानु वरातत्वापवा। देवागुरातर्भेवापातवत्यावा बुरापदेशवर्तुवमुरदर्भे महर्ष्या ।

त्रस्त्रम् स्वाप्त्रम् वर्षः स्वाप्त्रम् । स्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम्याय्त्रम् स्वाप्त्रम्याय्यम्यम्वाप्त्रम् स्वाप्त्रम्यम्यम्याय्यम्यम्वयम्त्रम् स्वाप

¥ॱहेॱगुन्द्राप्तिः तर्देर्'द्र। । त्रु'व्यं यहेद्रप्य'र्देद्र'नें 'कुर्रा । ग्रुत्राद्य। हुन्प्राद्यशर्ष्यायाद्यायाद्याया गुह्यत्य। तुःर्श्वेन'क्यवार्थेव'यानस्त्याय। हेन्दर्वन'वर्धेव व्यं शित्र्र्भ्यं व्याप्त्य यस्यापति से स्वयास्य म् ने पति स्रायायस्य स्तार् श्चेतर्रुक्तर्याया हेपद्वापुराञ्च वियाग्री यह एहेवा गुर्ब यावरा ब्र्य-स्वर्तः तस्यम्बर्याः पति व्रतः विष्वाः अतः । स्वरं व्यव्यव्यव्यवः स्वरं व्य तुःश्चॅन'इयराग्री'वर'रु'ईव'य। इत्र'र्नेहरायर्घर'परार्द बङ्गप्रस्थान सुर्श्वेपाइबद्याचे क्रिंबाच पा हे पर्द्वाव्यायाहता मॅं है विश्वस्य प्रस्ते। में नृ की बेला रहा प्रस्ति हुल प्रस्ति । ଶି' गुव्।ह्र्यार्पे हे सर्वागुराबीया रहारा प्रसरा प्रसरा पर भेरा के बारी रा। पहिला **ᠬ**ᠬᢝᠬᠬᡳᡃᠬᢋᡃᢆᡚᡧᠬᠵᢩᡊᢐᡧᢧᢆᠰᠺ᠋ᢋᠿᡧᠵᠸᢤᠺᡜᡘᡃᡆᠵᡃᢩᡒᠵ᠁ । ने 'व बा शुरा विराम के बा हि मा के मा साम हु मा बा व बा व सदा रहें वा बहेशपतिगातुम्ब्रेम्यह्न्पात् इत्रं देशहेपहेन्य **8**5' ष्टिग्'स्ररप्ततुष्यं रा'रर्प्यासुष्यं र ग्रेक्षपर्य्यं ५ रतुष्'रा'र्द्रेय बंरक्रे' हेपर्वन्त्रीयन्तिः सन्दर्भात्रम् न्नु'अ'न्नु'स'प्रवेसप्य'तर्नेपर्य। । प्रगृत्र'यनुर'नुप'र्वेप इयराग्रीदीयाग्रीसार्द्रात्रा । ज्ञानाराज्य पेंडियान्सेंवर्राप्री । **८२ैरः हेन्यञ्ज्ञास्य प्रतार्वि (व्ययम्य)** । विष्कु इसार हेर केला

पन्नम्मं हे त्रम्भून मुद्दम्य स्वर् न्या स्वर्या स्वर् न्या स्वयः स्वर् न्या स्वर् न्या स्वर् न्या स्वयः स्वर

हैं श्रुपः हैं पह क्षण्या पाय प्राप्त प्रकार क्ष्य क्षण्य क्षण्

तम्याक्ष्यां महारामरातुः न्राचेरामदेश्यम् हुः चेत्राचीस्यम् स्याप्तरहिः ॥ महारक्षां ।

स्वताया मुंदाकुरावा प्रत्नाविके। । प्राप्ता प्रवास्ता । । वित्रा प्राप्ता प्रवास वित्रा व्याप्त वित्रा व्यापत वित्रा वित्

प्रतिन विवासिक्यां स्थानिक्यां स्थानिक्या

ਖ਼न'नेन'ने'ङ्कन'म'ह'वड्डस'न्न'रुश'मश'नहॅन'मदे'ऄूर।

<u> हे'पर्वुद्रावीयात्रवाराने वेत् खेवात्रात्रा</u> न'र्खे'शु'दु। त्तुरामसन्वि द्वारा देवाग्रीसर्वे व देवा क्रिया स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स सुलामका कुदामानका कुकादन। मानुलादमा मीनी माने वाम केदान मे नित्राता <u> इत्र्भृत्रहेन्द्र्व्यासुत्रापत्। स्रुग्नर्सन्पनः कुरापदेन्दरः त्यारेश्रयः </u> ठव्कीर्देवप्दराष्ट्रवादाद्वादायात्र्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या नेति ळे अळव के न की मु अ विषा प्यन्य नेति हें व पा स्था है'यर्डुक्'याञ्चन'र्नेन'नी क्वें'वदार्ख्य क्वेनवार्ळवार्यन'यामवध्येव'नेरस्नुर'वुका इग्रां हो द्रापर हुर है। । त्रावय विग्रां के गुलर वर दुः सुने सुर **च**न्'रेग्'र्स्न्'रा'त्रव्। स्त्रां स्वरा ग्रैंशक्ष्र्व्यात्रव्यं स्वरा क्रॅब्राया इयवा ब्रान्ते। देन् इयवा ग्रीवा क्रॅब्रा प्रेण् विवासवा। वै'न्ने'नर्सेद'न्नेदे'द्रहत्यंदेन'धेंन्कु'दे'वेन्। नेन्'र्राह्यकाकु *ॅद्र र भूत्य इवहा दे* हिन् व्हें तार्में श्ले केन्। प्रते केंदा इयान्या **ध्रें प्रा**या हे र ही ''''' कुण्यत्यत्र**्। छिन्'द्रवर्या** छ्व'न् वें बाद'छिन्'न्न्-इवस्यत्यस्न्'नुस

तर् हिते सुनरा नद्या हे पर्दद 'ता लु . र्स् । हे 'तर्दर 'प्नें सामा 'तर्ना परातस्यार्वे र क्षेत्रपाद्ययायतर सिर्ने ने न ধ্যম'ন্ শ্ৰ'রবারা नेते कें क्षृत्रायां सवायां की त्रापार्थे कें त्राप्ते वा **となれるが刻し** र हेंबर्रर र अ में ज़ॅरा वेश हारा या रा रा नि हें दर्पा सवरा R 5 2 2 7 5 1 ୖ୶୷୵୶୰୳**୵ୖ୵**୶ୄୡୣ୵ୣ୶ୄ୴୷୵ୖୣ୵ୖ୵ୢୖୣ୷୷ୢ୕୕ୠ୷ୣୡ୶ୣ୰ গ্রী গুরাঝা <u>५८.बंट.चर्.ज्य.पर्संब्ल्यश्चात्रःस्टर्यातया</u> য়৸৸৸য়৸ र्हेश्रायम्भेत्रपुर्वे व्युत्रप्रदेश्य विषयम् । स्वाप्य विषयम् । स्वाप्य विषयम् । स्वाप्य विषयम् । स्वाप्य विषयम् । सुन्'व'रन'रे'इबश'र्ने'क्वंविन'सुत्र'च'इबश'यप',तृ'दर्शें'पर्य। **Š**5' क्रॅब्र्याञ्च ळ्ट्'ख्ट-२ेव्यात्रात्रावात्राराच्युठा त्राट्यात्र। ৰ্ক্তখ্যখ্য দৃঙ্যা विंतापि.यंबार वीर वी. की. जयात्रर तथा प्राप्त की वा **動物でで** सुन्।सुन्।त्रारम्।सुन्।तात्र्रीं,पःधिद्।मुन्।तेर গুৰ'দমুদ'ৰ্দীণা'উণ **क्रॅब्रप्य गुरुय न स्था रहन स्था प्रमान स्था में प्रमान स्था स्था में प्रमान स्था में प्रमान** মন্ত্ৰিক'ম দু ম'মমা **५८:यहत्याप'भेन'नेर'नुर'पर्य।** スペース・スペース では、当り、だったといった。 विषायाद्येपर्द्धवायाध्वेदायाषातुष्ठायाद्यायाध्येदानेरातरुषायाद्यापार्वे नाम्या **রি'শ্**র্ক'নঝ। **८.५% हैं, ये ब्राज्य ५५ प्राप्त B**T'D**N** মীয়মা ভব'মাঞ্ডমান্দা দৌন্'শাগ্তমান্তী'স্ক্লা'ব মানব'শান' র্মণ মন্ত্রীমা ब्रत्वेत्यम् नुसन्त्वेत्रस्य व्यक्तिम् स्वार्थित्यम् स्वार्थित्यः <u> श्रैक'ग्रुप्तक'ॲन्'प्रक्ष| द्रान्त्र्यंत्रक'वृग्'ग्रुप्तक'प'क्षेत्रदर्द्र्यं।</u>

য়्।

इस्यामा

इस्य विकास स्थान श्री स्थान स्यान स्थान स्थान

स्त्र्र्युन्तित्रम् वर्षायुः श्रेत्रप्तस्ता । विश्वम् युन्त्राध्या ह्रिन् सान्त्रो पश्चर्यास्य श्रेश्चर्यान्त्रत्र्र्ये प्रम् स्वर्यायि स्वर्याये स्वर्याय्ये स्वर्याय्ये स्वर्याय्ये स्वर्याय्यः स्वर्यायः स्वर्यः स्वर्यायः स्वर्यः स्वर्यायः स्वर्यायः स्वर्यायः स्वर्यायः स्वर्यायः स्वर्यायः स्वर्यायः स्वर्यः स्वर्य

प्रत्यां में बार्या त्या त्रे ने त्या में व्या क्ष्रा त्या में व्या क्ष्रा त्या क्ष्रा क्ष्रा त्या क्ष्रा त्या क्ष्रा त्या क्ष्रा त्या क्ष्रा क्ष्रा त्या क्ष्रा त्या क्ष्रा त्या क्ष्रा त्या क्ष्रा क्ष्रा क्ष्रा त्या क्ष्रा क्ष्र क्ष्रा क्ष्रा क्ष्रा क्ष्रा क्ष्रा क्ष्रा क्ष्रा क्ष्रा क्ष्रा क

यन्गाभिक्षश्चकुर्धनाथिः यञ्चेष्रकार्यः द्। । स्मार्थेश्चः मह्यः न्यः स्टाः । विकासेन् प्राचन् प्रकारम् प्रवास् प्रियोग्यन् प्रवास्त्रम् । विकासेन् प्रवास्त्रम् । विकासेन् प्रवास्त्रम् । विकासेन् प्रवास्त्रम् । विकासेन् प्रवास्त्रम् प्रवास्त्रम् । विकासेन् प्रवास्त्रम् प्रवास्त्रम् । विकासेन् प्रवास्त्रम् प्रवास्त्रम् । विकासेन् प्रवास्त्रम् प्रवास्त्रम् प्रवास्त्रम् प्रवास्त्रम् प्रवास्त्रम् । विकासेन् प्रवास्त्रम् स्त्रम् प्रवास्त्रम् प्रवास्त्रम्यस्ति

[क्र-कि.वे.न.पहरावरागवन-नियहेद] |प्रवरानगर **५ अर गृहेश्वर्य लग्य इस्याप्तरा । १ इस्याप्तरी ग्राम्य स्थाप्तरी हें गृः सुद्र ग्रीश** | त्रॅं में क्रिं सं क्रीं यतुन् 'रा'न् देश सु ते व | क्रिंश विश्व से स्वार्थ स्व ছুদ্দের্মা বিদ্যালয়ের মুখ্রী বুদেরী বা श्चेन्'चग्'चदे'सुन्'चॅद्रेन् । इन्'क्ट्रंन्'ग्डिग्'तु'दर्ज्ञाराञ्चं ने'चन्। । **इॅंट.त.चूं.तप्त.**2.व.तक्ष.क्ष.क्ष.च.ट्र.चेंट्यंपा । पाष्ट्रिय.त.ट्रीट्यंश.चट्र. वेशन्त्रस्य पर्वे पर्वे त्रे त्रे ロバトン・ショ ढ़ॕज़ॱढ़ॱॾॏॱय़ॱय़ऻढ़ॏॱॳ॔ॴॹॗॸॱॻॏऄज़ॱॺॏॱॸॸॱॴॶॴढ़ॻॖॴऄऻॱॸॕॻॕॴय़ॵज़ॴॱॱ हुरा न स्थान वर्षा तर्मा देवा के स्थान स्य 45'5'55'A5! র্মব্য দ্বাধীঝথা শেন্ স্বাধার্থীর ঘাষা *য়ৢয়*৾য়ৢঀ[৽]য়ৢ৾৾৾৾৾৾৾৾য়য়৾ঀৼয়৾য়য়৾য়ৼয়য়৸য়ৼঀ৾য়য়ৢৼ৸ঀ৾৽ঀয়ৢৼয় 到一

पर्वाक्षिण्ड्यां कुरातह्रव्यात् व्यक्षर् र्वा | द्वाक्षत् व्यक्ष्यां कुरा व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्ष्यं व्यक्षयं व्यवक्षयं व्यक्षयं व्यवक्षयं व्यवक्षयं व्यक्षयं व्यक्षयं व्यक्षयं व्यक्षयं विष्यं व्यवक्षयं व्यवक्षयं विषयं विषयं

क्षे'यन्ग्'गे'म्च'या हे'यर्जुन्'ने। । तन'शुरु'ह्यान्ग्'यन्या कुर्याप्री विता । क्रुन्थन्नामा सेङ्गेते वि। । इप्यन्नामा मङ्गेष्णन्ना । विस्रहा <u> श्रुप्त प्राप्त विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विश्व विष्य विष्य विश्व विश्व विष्य विष्य</u> खुरा ठव दें दें तकरा विदेव वे राहुवा थव है वेरा हु परहुता इ'च'बु'र्रं'य। विगार'देव'ब वका बेन'ब रूप दे'झु। (रह्म बेन हेंडे वित्री कुर्त्र प्रात्तु नवा । वित्र विवासी स्वी विवास विवास । वित्र विवास विवास विवास विवास विवास विवास विवास तकर: दरः वृत्रेकाशुः बेद्। । द्दः शुक्षः श्रीकावित्यायः तदेवका वेवाव। । हुन् या हेरी हुन सुना पत्रापायय। । विना क्राया हुन स्वर्ध तकर्। विश्रवाभेदाश्चिवासकर्पायत्वायानेवाद्। । न्देवासुराश्चे न्द्रेर्पायम्बर्धाः व्ह्रात् । विद्यान्द्रात्याः द्वर्पाः नद्वरायाः रम्प्राच्या अन्यत्या क्षेत्र विद्या के स्वाप्त का स्वाप्त का स्वाप्त का स्वाप्त का स्वाप्त का स्वाप्त का स्वाप ನ್ र्षे|य'रेष',५ष्ठुत्र'न्र'ष्ठ्य। ८हेष्'हेर'८र्रे'द'यळर'रे'छे। चेरप्पे' मनेव्यम्बान्त। देन्'गुंभिन्'त्यके'भन्त्यं वेश्वयं वेश्वं क्रंत्रं गुलान्त्रं र

मानाविषाधिद्र'यरात्र्वाक्ष्रमञ्जा हिन्तार्द्रवाळन्तायद्रान्त्र्व् हेष् बेर'र्'दर्ग **ॾ**रॱॾॕॸॱऄॕज़ॱॻॖॹॱय़ॱॺॱॿॕय़ॱऄॕॱय़ॸॣज़ॺॱॿॖॆॸॱॻॖऀॱॿॖॱख़ॱॸ॓ॱ इसराशु'गुरामेरायर्घेर'कु'वेद'पर'ततुग'हे\ हिर्'रर'तावस्यगुरागु**रा** न्रस्यान पहनापर्या न्रस्या मुन्ति के निम्न मुन्ति स्वाप्ति । चन्न'डन'इसस्य स'सम्हिन'श्रीस'न्यस्य मन्निस्न मन्दर'चर'तु दे र गुर्स **"** गुराक्षरात्त्वापाता हे पर्वन्यामा वे वापति न'न परान्यापा नवरःवरार्झेयःतुः पद्धनापरा। व्रवशः हेन् वास्त्रेशः वे देश्वः स्वयः नर्वाक्ते रोनः वे तर्भन्ते हें प्राय्व प्राध्य सुनः नः भेव दे। । ने वश्य राज्य विवा षेक्षि। गृत्रत्य तर पुष्टिंद विं के दार्थ विषा हो तु चित्र विद्या हो विष्य हो विष्य हो विषय हो विषय हो विषय हो पर्दे ग्रांपिते हें ग्रांपिते हैं प्रति म्यांपिता है पर्दे द्वारा धरा है प्रति क्वारा स्थापित है प्रति स्थाप स **यक्षे वार्य वार्य प्रति वार्य प्रति हों वार्य या प्रयाप इयरा ग्राय या यहि वार्य प्राया वार्य प्रति वार्य प्राया वार्य प्रति वार्य वार्य प्रति वार्य वार वार्य वा** শ্লীন'ব্লান'র্বঅ'ব। **ब्र र हिंद्रायाया मारावर देवर मारावर वर्ष मेरावर मारावर मारावर** तर्चे रापते स्वाह्य कुष्य वया ग्राप्य स्वते स्वतः साह्य स्रे राचे राचे राव त्या रा'सॅ'क्रॅव'न्न'न् र हॅंबाब वॅन क्रेंबेबबा तहिन्यंवता हेन्दिन्त्र' नमून् ननेन परि स्तरि दुर्भे न दुन वा नेन की नमून परि ने ने नि से न तत्वाप्यवा तद्येवाचान्वाद्येन्याः द्वराद्यावाया बादराग्रीशसुन् न में साक्ष्रया ग्राया मन ने गान है पर्दुव त्या से क्षेत्र वा दे। दे इत्राप्तर्ह्वे रायाक्ष्रि । हात् । या स्वर् रात्रा विषाधीव । या रात्रा । वित्र स A'य[र्यायम् केंत्। वे'य[र्याय्यं क'खितः दिनै दन क्वेंत्रं प्रायदिकार्यः कु**रा** कुं पद्देशता पर्वति कुरान्य विषया भीता सिर्धान कर् मरुतः दुषः गुन् 'रा'भेद' राजा । केन्' सारी गुना समतः राजा राजा विषा विषा विषा निषा वेरपरा हे पर्वत्रक्षे वयावरा क्षेत्रपाच कुन् की हैन या वा वेदपर स इस ज्वाप्त वा पुर्वे का है न 'ज दुवा सदै 'र र 'तु विवादा। हिका वे रा पुर हे का बॅंदरायदे'न् वेद'यें र ठे दम् में भे राप्ता भिव खुन राग्ने पेंद क्व दिना दर वसक्षे वित्तः तर्गानीया ने विवासना र्तेनाया स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्व <u>ढ़ॼॹॹॖॗॖॖॣॸॺॱॺॕॸॱॸॖॖॱॻॷॖॸॱय़ॸढ़ढ़ॖॗज़ॱय़ॹॸॸॱॿॖॗॸॖॱॵऄॗज़</u>ॗॗॗॸॺॏॗॗॗ॓ॸॗऻॗॗॗॗ खुतःशिकंन्'याने वीभेषाहे। नः ननः गिखुण्याशिकंन्'याकें कूँन्'ज्ञायाकंन्'या त्मन्यराप्त्नां कर्'यावुरा। क्षेत्राद्धर्यं वर्षा देश्वरा देश्वरा वर्षा वर्षा कंद्र'बराबर्ह्रेन्'ग्वरार्छ्न्'य्र राष्ट्ररप्य। ह्येन्'र्येत्रेन्'ग्रीक्रेंन्पार्छन्' बर्यास्य में या केंद्र सा होद्र रहेन पर त्या हो। विद्यापा केंद्र स्वर ह्या प्रह्मा प्रह्मा कन्'अर्कुन-न्पायहन्। ने'विद्यं कन्'यरिकेन्'अन्यान्यकी देवा ने'न्या *षे|दॅद*ॱॹॖॖॖॖॹपरःपन्द्रप्त्र्वं सद्युःदिन्द्रे रावृद्धःष्ठ्रदश्यक्षयगुरःदिन्।'''' শৃত্যুদ্রার্থা।

मुख्यः व्याप्त्राच्या । भ्रित्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्राच्याः व्याप्त्याः व्याप्त्रच्याः व्याप्त्रच्याः व्याप्त्याः व्याप्त्रच्याः व्याप्त्याः व्याप्या

मिन्य | मिक्य परिश्याकें के त्या के ता | मिक्य परिश्याकें का प्रकार का | कुतर ह्यां विक्रिया विक्रम् विक्रम् विक्रम् न्द्रवरार्वात्वात्राहेत। विवासक्तित्वात्राहेत्व गृहव्'यारेविंद्'रेक्षातश्रीय। ।गृहव्'यारेविंद्'यातश्रीययाव। । व्ययः ह्रे प्रार्ट्स ह्र प्राया । व्ययः ह्र प्राय्त्र ह्र प्रायः क्षेत्र व। । रशम्बानुन्प्यान्ते । । रशम्बानुन्प्यान् द्वा । पास्या र्नेया के त्या है। । इंदापास्या र्नेया अहे त्या । इंदापान् इत्य परण्यात्म् । यानीञ्चरः क्ष्रून् अर्घन् मान्। । तेन्त्र वर्षेत् खं समा । तर्ने नेन प्रतः वरः मून सुन् व। । वित्यः र कार्यः र वर्षः । व्यवाया । व्यवानी द्वेदाया हुना हुन्द्वेवा । ने रूट द्वेदाया यहाया वया । **ऍ**ड़ॱ**ᠴ**ᠵᢩᠬĕ੶ĕ৻৾৻৲ৢ৾৻ॱয়য়৸ <u>៲ឨৢ</u>ৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢৢ৸য়৽ঢ়৻৻ৼৢয়৽ৼয়৾৽য়ঢ় **ब्रु**का । ने रन् वाष्ट्रा पर्द्धन (स्तुता सक्ष्ये । । में व वे न के न के न के न के न मा । मनेव'मन्य'तहेव'हेंब'केव'इयवा । क्षेत्र'ख'ङ्गेर'ख'हेग्वास्य गुर्नेया । हॅन्प्रां हेन्द्र सहत्यद्र सद्या । केंशुस्त निवासन् रायार्ट्घरतनुग ।नेपयायन्ग्रस्यरम्नर्यस्य। ।ह्यायार्ट्यम् पः जुल। |वेशन्तुत्रापस। ५ म.ज्ञंन्ते। देशपरिकंशन्नुत्रितन् तनेवर्याक्तुः वेन् प्रते। अदेशपितः वेष्ठाप्राधः वर्षः क्ष्रिं स्ति रहे स्ति। सतर्भेर्परतिष्मे वेदिष्मुत्र्राह्म स्त्रिष्म **ॐराञ्ग**र'ग्रीभव'र्झ्यापतिव'दरेपराङ्ख्येर'र'र घॅप। रे'बेब'र्गेर'विंदा रमः विमात्रस्यात्रुप्येष्यायि।यानेरान्ग्रीराज्ञायाया देशप्रवितारा **८२ ८५ ७८ ५ में रायर ५ में यहां ने रा** राष्ट्र र मार हे पर्दु वर्ष श्री हा त तान् हें र शुर्प्तरा हे पर्वन् शुर्राराष्ट्रिया व यात्रात्रहं या या र र रे। दें हिन्'न्द्र-नेंद्रिन'देन्या राक्षे'तरिते केन्'नु'न हुन्' नति क्रूंब'केव'द्रयहाता'''' **इ.स.ल.चे सर्ट, पर्ट. जी सूर्या के बी साक्षेत्र अपने ही पर्टी** ळें कूँ ८ ख़ूँ या **ग** हे रत्य श्चर्य 'हर्य 'हुँ त्र क्षारा में अर्थ र के। म्हा क्षेत्र हर्य कर्य कर् ॲ८यःपरिषा वेदायं राजञ्जनवादीरा नेवायाध्येदा है। ह्येरा द्वारा ह्येया हैवा <u> नश्चनश्चन् वृद्धां स्वापत्रे ज्ञानश्चानश्चन् वृद्धानश्चन् व्याप्त</u> *८८:४:इबबा* हॅबाश्नू८:५८:कॅबाखुन्बान्य:यायष्ट्रदान् गुरुवा। देदी:ळें:८बा <u>चैग्'ठव्'दर्ने'दर्</u>ञ'राञ्चत्यंव्। स'सूर्'दर्यग्'ठेर'राञ्चत्यंव्'ळेंग् <u>चे र वे र ग्र'ग् के ग्र' हो र 'ब ब्र' घ हे ग्र' हु क ब्र' हु र 'घा |</u> हे पर्व्ह ब्र' ही ब्र' घ हु र र क्नेतुःरका**ह्यन्यन्**र्वेशनुकाकीयव्ययतिवेत्रः। कृष्-तृकाकीयव्ययति ण्डेव्। क्रेंब्रंबेर्म्यप्रतेर्क्षस्यस्यस्य हुन्दर्क्षेप्यमेवर्षस्य **कॅॅपश'पञ्जे**र'यर्'त्र'पश्चिरवानीयः स्वाद्यते'त्र्र'प'र्र्'रेय'प'य'क्ष्याः तन्त्रवाराधिवान्। त्राह्याः त्राह्याः स्वाद्धन्। सन्त्रवाधियाः गुनः **८२ विश्व**

हे'गर्जुग'गे'द्रॅ रासु'तर्जें'नदि'अर्गेद। ।देव'ठद'व:रासदे'व्यक्ष'त्रा *८*,५७ । क्रेन्प्रवास्य ५ क्रेंप्य स्टेन् क्रेन्य । । स्ट्रिन्य ह्राप्य **बे**ट्य'ट्र'रेंग'वेंद्र| |दि'ट्रेंबब' के क्वेट्र'क्वेंक्र्यर'द्यवा |क्वेद रव'रा'नुर'तुराम'यापा ।दे'रर'नुर'रव'रास'रर'मुन्न'ग्विया । त्वरायामुनाव्याव क्रात्मा स्वा । सुन्र केष् क्षा स्वारी यापाराया केवा। ब्रुंटला । ब्रुट्र श्चरा न में गृ 'स्याय' वय' के ग । पक्कारा न में गा स्यावय पा द। । धुँ पश्चर्याची पमन्त्रा क्षुनः वेदा पन्त। । सुन्द्रश्चरः ह्या सदी चग्रत्याकृत्। ।क्रमाञ्चयाचरिक्तयाचरिक्तयाचरिक्तयाच्या कुर'प्पर'द्रभ'र्बेर्स्य । वि.कुर'प्पर'द्रभ'र्यावव'द्रेग । यज्ञ'भ'प्पर' स्याववापाया । तिष्ठुयानदेर्नेयानुः छन् 'वेव'गन्ता । तुः रशः छन्' ञ्च'यरि' च गार' स' वे व । विश्व श्वें न 'च दि' ज्वे स' यें 'च न रा रे सा । वि दे पी पर्वत्रेत्रस्थ्रवायम्बर्ष्यञ्चरत्र। विराध्यायम्बर्धयायाववर्षेव विक्र तायर सता वताराव। विवास कुर् कुर्य प्राप्त हिन हेर् गर्त। । सु'नबाकुन'ञ्च'बरी'चग्रार'ख'कृव। ।कॅबार ग्रचारी'कुतार्या देव'ळेव' ब्रीमा । तुःनेवाम देरेळें मासुवाळें मा देवा । कें मासुवा के ताळें अ लवःडिग । तकुः त्रांत्रेताळें लवः पाव। । कॅबांने नः ग्रींचें नः तुः तकें नः ने वा ग्रम् । सुन्याद्धरः झ्यते यग्रायावे व। । सुने स्राधिन्यः कुर्पत्रेग विव्यास्याक्षेत्रवेद्रां हेत्। देवाग्युर्याया रशकुर्पतिमुग्यकुलावे। येव'यर्ग'द्यशक्ष्रं प्रद्यशासम्भर्वेर रशकुरायायतराकुरावर्ग्युरार्भा हेर्पर्वुदायाने वृत्रायनागुरार्वेन परः शुरः हैं। दे व काकी इसका नदः नदः की किया न का का की का दान का का র্ভ্ব'ঘ'ন্ মন্ত্র্বি'ন্থবে'অ'ঐনঝ'ঘবি'মুম্ 南、エニ、ておれ、 बर्ग्यं ब्रेरहे। न्राह्में न्रायं हुँ व्यापात गतान्ता पर वाराप त्रुत्यत्रं भेत्रप्रा हे न ईव'न्न' यहत्य'न में या वे राष्ट्र नाया **छन्। यश्यम् वश्यायन् वेश्न्र्वा हिन्यायन् वेश्न्र्वायन् व्यापन्** ब हे बाव वा | ५८ में व बा हे बार्स्टर में बाटा में गारा ब केंगा धेवा है। में गा हेरायम्बर्धायोऽप्यारयाधेवायय। क्षृत्रायाद्वयावरारुविरस्यिक् म्बारकाववायहरापायहरायवा न्यांकाने हे पर्वन्यायवा बर्राह्मेर्'यरेव्'यरॅभेर्'यश्चर्षेत्'यश्चर्यत्रायम्यव्यात्राम् विवादिरे'तस्यापा <u>५'र्में'हे 'सर्ने 'इवस्य ५ ५५ म्स्येन्य ५ ५५ म्स्येन्य ५ ५५ म्</u> न्राधिवापवा ज्ञांबाष्ठ्वापादीः क्रांचित्रां वित्रांचेत् वित्रांचाता हे पर्वन की नियन्य। केंन्या तहिन हेन्की निर्मे ते सम्बर्ध संस्थान स **छ**र'गुर्'अ'नेबानेरप'क्रा कॅबानेबानीनेबार्टा गुरायागुरा हें दा **ॲंटबर्प:न्ट:यन्वा**:रहेंब्रह्मयायास्यासेबाही। वृंब्रॲंटबान्ट:यन्वाः तह्रव्यस्य क्र्यन्य गुराया च्या गुरा च्या प्रति ह्र ग्राधित प्रया पर्जे ब्रेन्प्न्स्र्रंप्य द्वाप्य गुन् कुकुत्य करा प्राचा प्रवाप स्वाप्य क्वा बॅटबाकुर्चेष्यायार्वे स्थापन्यार्यन्त्राचरे। क्रबानेबाव्यंन्ट्याय्या

छन्। क्रूंन ने ब्रेन से विनारम ज्ञार तर माजा विनाय स्थार स तयय: ५ तत्वापय। देशवापनवाया मेन्या स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्वात्र स्व ब्रेन्परायन्यम् वर्षासुर्धेद्यस्त्रम् स्वर्यसम् । यन्त्रस्त्राद्यस्य मन्ग्'तहेन्'न्न'कृष्'ञ्च'ञ्चरत्राष्ठुत्रायाष्ठुत्रायान्त्रात्त्रात्तुत्रात्तुत्रात्तुत्रात्तुत्रात्तुत्रात्त्र <u> शुक्रायामुला तुनः पञ्जा श्रीनः मे का मैनः सें नः त्रम् सेयका मा</u> मेशपरा त्रिंरप्राध्यक्षक्षेत्रेरप्राप्त्र वृक्षियायाः वृक्षित्रक्षेत्र स्वाविष्य स्वाविष्य स्वाविष्य स्वाविष्य स्वाविष **बै्ग'र'ळे'3८'यट**'बेर'प'**पे**द्। यद'शे बेगशद'हुद'रॅदे'ब्रेग'र'दुट' ऍर पं धेव। ने बाबी ने बाकी प्राची प्राची प्राची प्राची प्राची हैं है बा इत्यत्र्वे रप्राव्चित्रत्र रूपान्य त्री रापान्य केन् में विन्य वर्षात्र पठता बिनावना नर्भ नेर्भीक्षारेन्द्रावेक्षान्ध्रयाधेव। देव्यापराह्यर्भरानेर् **४ अप्तरीत्मक्षेत्राह्मकाराङ्गव्यापादीत्मानीर्धेनानाव रहीः यांग्रीकान्मा हेन्।** গ্ৰীমানৰ'নে নিমানি মানা। ই'মৰ্ব্ৰ'গ্ৰীৰ নাৰ্ম। ই্ৰ্মাডিমাণ্ডমানী *বৃ*ৰ্'ব্। নন'ন'গুৰ্'গ্ৰীৰাখীণ'গীৰাখৰ্টন'। **র নৰাইবি**। **季可'5'** त्र्व्वव्यायश्च क्ष्यप्तित्व। त्र्वेशक्षक्ष्यः वेत्यत्रेक्ष्यः वृद्धेवाः त्रा मना मिन्देन नेप्तर्पत्रे नामन्यम्य सम्मानिकानिन धनः एकः शुस्काराधिवः धवा । सवा सने प्रवान विवा वद्या वा परः विवा য়৾৾ঀ৾৻৸য়৻য়য়ড়৻য়৾ঀ৾য়৾৴য়৸৸৾৾৾য়৸ড়৾য়৻য়ৢ৾৻ঀ৸৻য়য়৸ৼয়য়য়৸য়৻ इविष्य च इक्षणित् चे स्विष्ठ स्वायवा विष्य दे। ने भ्रम् चे स्वरि न्यन ऍ८: श्रुप:८म:रेफॅर नेरामिक्रें। हे मर्खन में श्री श्राम्य स्तर श्रामित त्वरायां हैं हे वेराद्या निर्देशन त्रें दाराय नुराध राम्यावण वर्षा <u> चैत्परः तस्यवापव। अव्यत्रः पॅते तत् गृख्यवायायाः इतः सत्युत्</u> म्प्राया चुन विना नग्यान ह्य के नेराम दे न तारे विषा श्रहारी दिते प्रत्याहे पर्व्यव्यव्यव्यव्यत्यात् व्यव्याप्तात् व्याप्तात् । तस्यापात्ता व्यापात्ता **५८**। श्रेमगूरामक्रावयाम्बुवयामाराक्षवयामेश्रिन्। बर्दर्द्। देवसहेनईदिन्देर्देर्देर्देर्देर्दे बाह्रतः र्ह्मेन् व्यवेन् त्यात र्ह्मेन् ह्या विष्या नुष्या हिन्ता हिन्ता **ब्रॅन**'न्सॅब'शु:ब्रेवब'न्द्र ह्ववब'न्द्र बेव'त्सुत्र वेब'र्स वेव'र्स्र रास्र " ८तुन ८*न* स्वासन्दर्भन्। ८ श्वलाकी तुरुपायाया न हें नाया র্মান্যারীন্'র্'বীমারা ভর'গুর'রের্ন্নি'উন'ম্রাহারীনার র্লন্'স্থ্র'ন'মীর'র ম'ন'''' मा है: नर्द्ध्य क्रीं वित्यव्या वयायापि: ह्रॅग 'नर्डें न' येन 'रा'गुय 'गुर <u> इंग्राबेर्'र्'दर्दर्'र्व। हर्'दर्शें इवयाग्रर्म् वयावेर्'र्मुञ्चरया</u> **৳ৢৢ৾৻৴ৼ৻৴ৼ৾ঢ়ৢ৾ৼ৴ৼ৽ঀ৾ৠৢ৾ঢ়৾ৼ৴য়৾ঀৼয়ঀয়ৼঢ়য়য়৾ঽৼৠৢ৾ঢ়৸ৢঢ়ৼঢ়ৢ৾ৼ**৾ रन् वैवाह्नव परायहर् हुन विन। न्द ६ववा क्री हुवाय धेव उत्तर ल

हिंद्र'द्यायम्तर'यार्वेष्यपायम् मैत्रार्व्यवानीय। दायमान्तरेप्याय उतर लासुग्'मत्रै'ञ्ग्'रूर्ने व्यायेन्'येव्'चेर्न्रे । व्विन्'केचेर्न्र्यान्युन्त्र पर्या मिंदःरी **ब्रिं**रिकेशेग्द्रस्य म्हल म्हल्य द्वारा द्वारा दाया न हें न स য়ৢঀৢ৻৸ঀ৾৾৾য়ঀয়৸ঽয়৸য়৾৾৻য়য়ঀ৾ৢয়৸য়য়ঀ৾৾য়৸য়য়ঀ ष्टः सॅर ब्रिं न्'रनः ने पिका श्रम् स्वा क्षेत्र। स्वा ब्रिं न् श्रेन प्त श्रुता त्या श्रेन प्रका कुवाततुनामय। विन्'ग्रीयानयायविन'यनवातने विन्यवेन्'तुर्दिन नितःश्रेग'तक्षुत्र'विषाग्रीक्षन्न'न्या ह्यान्त्रं विष्यं हेवा'तक्षुत्र'नेवा प'न्न'छेन्'प'उन'अन्'बे'उन्'। ब्रिन्'रून'बे'व्या'य'द्ववव्यव्या'क्र्रेरच्चव हु गुँ रा ने रायरा | हे पर्वं व गुँ वितायरा | परि परायापाया हिंदा गुँ राये नेरायाम्डन गुराबेरायर तत्ना क्रुयाय हुर है। BT'NB'55'0 तर्ने रायां केन् 'या रायां कुषा विं वा प्रयायां या विष्या प्रिकी तुमा प्रति करा तवा वा '''' पर'ग्रत'ग्रुर'। वें'क्ट्रॅब'व'रे। व्यायावत'र्श्वाय'तठस'र्र'त्रः म'मबैब'रा ञ्चपारिन हें महाराजेन धेन परिन महाराजित है मारा रमानिवार्द्वेदान्मानेरामय। नेति संहेपार्द्धदानुवानम्पराद्यायापिः सरमताह्नरम् अति हेन् ज्ञा नी है रखें द राया वा वा रायहिन परिश्वहर। ज्यानेश्वायायनाव्याञ्चरापराख्यायीवाव्यावापरायायहेता पते'चरमा रहाकुर'पायमाचाह्वेर'र्मेग्'म्बुरबापबा <u> てが</u>褒「 मक्षणुन्यः र्वेन्याचार्यः विष्वित्वित्वित्वित्वित्वव्यव्यव्या हेन्ये व्य ताहे नर्डन श्रेष्ठणहे न भेग श्रुत्तान पृति स्तर तत्र तत्र स्ति दे बॅर्इव व री हिन्दर वर्षे वर्षे वर्षे दार विवास की वा হ্মব্য' के विन्'सुनेराया हेप दुव की विषया हैन दवरायत न हिंग्य য়৾৾ঀ৾৾৾ঀৢৼ৻ঀঢ়ৢঀৢ৻ৼ৻ৼ৾য়য়ঀৢ৻য়৻য়ৼঢ়৻ঢ়ৢয়৻য়ঽৼ৻ঀয়৻য়৻ঢ়৾ঢ়৻য়৻ न्युन्यस्य। न्यञ्चर्ने। नेन्र्युवन्र्व्यायाधुन्। चतिः विष्यं विर्मान्यं दिन्त्रे स्वया है न्यई व् क्वें विषय् वया है मा विषय बिन्धिव्यदि ह्वायिव। हिन्धियायाय विन्ययायेन्यर विन्यं विवास देते[.]ळेकूंब'रा'न् राज्ञें ने'राबागुराबेबबा त्र्रुग्'रारागुराकेरः। में देश इंश है। दे दवरा ८५ वें हुए। देन हैं ग गेरा ८६ भेन केरा **पर-५ गृद-प्रदा** इत्यन् हुँ र पदिने इवस्य वेग नहात्र स्वराय भेव पर-स्वरा ह्रगृष्यभेद'द'सस्य सः रॅलातुः छैद'रा दुग्'ला गञ्जरा ५ वॅश्या य। *ড়ৢ*৽৳ৢৢঀ[৽]৳৽ড়ৢৼ৽*ড়ৢঽয়য়য়ৢ*৽৸৾৾৾ঀ৽৾৾য়ৼঢ়য়৸ঀ৽ঢ়ৢ৻য়য়ৢৼ৻ৼঢ়৽ঀৢয়ৼয়৽৽ X1 1

सुन्यक्रेन्द्रस्यत्ते | स्वत्रक्षेत्रस्य स्वत्रस्य | स्वत्रक्षेत्रस्य स्वत्रस्य | स्वत्रक्षेत्रस्य स्वत्रस्य | स्वत्रक्षेत्रस्य स्वत्रस्य स्वत् | स्वत्रक्षेत्रस्य स्वत् । स्वत्रक्षेत्रस्य स्वत् । स्वत्रक्षेत्रस्य स्वत् स्वत

র্মার্থারার্থনের বিশ্বরাধ্যার প্রান্থ বিশ্বরাধ্যার বিশ্বরাধ্য বিশ্বরাধ্যার বিশ্বরাধ্যার বিশ্বরাধ্যার বিশ্বরাধ ह्रपःबळेंद्रःकःबे:हुपःपदी ।णुष्यः८६ँ५ःपञ्च५ःपञ्छःयःमद्य। ।येः র্মাঙ্গুরামজরাস্থ্রদজান্ট। |দ্বীমান্ট্রস্মার্ডিমানর। |দদ্রীমজ न्येरः पः अङ्ग्रह्मा । हुन् पः पर्वे रः पञ्जे यहा पर्वा । सूर य ज्ञें वृद्ध शुः अ प्रस्ति। | विश्वाप्तामञ्जूषश्चापत्राक्षेत्रामत्। | न्दर्भन्त्रान्यां विभिन्नायते। विश्वयाक्षेत्रयके त्यावत्। विराह्यर त्रणात्रेव विष्यस्व प्रति । क्विंत्यस्य प्रति । प्रतः क्विंतः ইনান্দ:ঐনস্কুর:ঘরী। |ঐন:ইনি'বান্তব্যন্তিরাইনামর। |ঈর' बॅटबर्नुन्'ब्रुव्रक्षे'न् बॅट्'धर्म । वे नेबर्ट्र्र्य्यंन्'क्ष्मेत्। । स्न <u> </u>र्मग्रह्मयः व्यायात्रीयते। । चुनः येवयात्र न्पारं मृष्ट्रे वेव। । दर्मे तातळे च या शुरुषायते । । च गुरु है । तर्र प्याये गुप्त धिवा । । र र तह्रवः स्वार्थित व्याप्त्र विश्वार्थित । विश्वार्थित । विश्वार्थित । मन्षातिह्य तर्मन मंत्री ततुत्रामन। वित्र सन्याम मन्यास्याति न महरा । हार्बेर् स्टिन् वर्षा अपिक्षुरामर। । ग्राम् की प्रोप्तामराहा ছুন্'ন্যুৰ ।ঐ'ম'ম'নশ্ল্ৰমান্ত্ৰী'ব্ম'ব্ন। ।নঞ্চ',দম্ভী'নেটুন্'ৰ্বম रेवर्दित्। । ठेवान्युत्वामय। त्राञ्चादाने। वित्रियागुनामर्थिदाः हुण भिन्नेन व्याप्ति । स्याधित महान्या हुण निवा व दे हे हिन हिन मित्रेलव् रु'व्यगुरासरी मुख्यार्था ।

हे सु हुरवर्पासु देव रव। । दुव हुष वयदे वेवक स्वापसुप

রুবার্থা । इश्चर्या र्रण विषय राष्ट्रीय की सहस्या। । विष्यं पर्रा की इंद्रपान् सक्तं द्रा वितक इयाचितर देन्या विवादात वेता Ёंगृ'स'रोबरा'रोबरा'द्या **|हें**शुद्य'गृहैरा'**≒न्'रा'ठा^{क्टे}र'ग**न्त्। ५'क्षे' त्रमका सेव्युका क् सेवाका । त्रका क्षेत्र वा सेवे सेवाका कव कें व्रक्षेत्र का रगवा । बिक्रेग कर नियान वित्र मुगबा बेर्। । द्राप्त गा दि दे पदिन्न रस्या । इस्याप्तेवका ग्राप्तां वर्ष वर्ष । दिन्य विश्वनायाः र्स्याद। । नर्सन्यामुनार्येष्यादासेन्। । तुस्रस्यित्रसम्याधेन्यः र्स्याव। । पर्हें बात् शुका द्वापारी प्राची वा वा । । पर ता प्राची वा वा विषय र्स्याच् । प्रस्रसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यः हेन्यः पत्रिमः र्स्तात्। |नेसारपाद्यापार्येषादाव्येत्। |त्रुदार्व्यवराष्ट्री मः रंभाव। विमया बेया द्वापाया वायेन। विमुन् प्रविभित्रे सामिता र्स्यत्। । भूतमा लेका सुपार्ये व स्वराह्य । । मृत्या है मा सुपाप से सा र्स्यान्। । ब्रॅन्थसम् मार्ग्यम्य न्येन्। । वृत्रम्बर्स्यरम् य हिन रैगपाव। । भेरनेशमुचार्यम् वस्त्रेत्। । मृत्रुवस्य सुसेवावपि स्रिक्षा । द्वेन स्रिन्पि स्रिन्पि स्रिक्षा तार्मि सामा स्रिक्षा । विद्यापा स्रिक्षा स्रिक्षा स्रिक्षा स्रिक्ष बॅ'क्रॅब'ब'ने। ने'इबबा नॅब'इंब'बसुब'त्रम् इब्प'दर्धे र'दा'हिन'रून निर्मेक विवास सिन्। स्टार्मे क्यो ने देश स्थाप निस्क्रिंग्'सु'ततुम ने'क्केंश'द्राक्षेप्रा'। बैग्'तह्या'द्राह्र'तह्या'व ह्रद्रा **१**९८१ त्या के बदात्र प्रत्य स्थान के बद्धा के बद

सॅ हे 'सर्ने' नवा' वी रॅब'व केवा' ग्रुन' खा सुन्। । न' सॅ हे सर्ने' नवा के रॅब' देवा' यमः पंषेद्। ने 'यम्बेष' द्वा हा ह्व वर्ष 'ठन' वर्ष 'व हव या दिन स्वा न परः छन्यान्यके। छन्यानेसादार्ये हे न वन द्वया वन्यात्रे परा **धॅन'अर'ळं५'अ'अ'८र्द्रे 'राधेव। दे**देअब'धेनशसुन्दान्गपायर'ङ्गेर घरा हुरको वर्षा केरे वर्ष केरे वर्ष कर कर हिर्म हुर्म स्वरं वर्ष कर हरा है अ न्यण्यां वी व व्यं के न्। तमात्राहण्यां न्ना स्नायां ने व्य पति ह गर्या गुन्य स्वर्य स्वर्य दिंग न् नः स्वर्य स्वर्य हे न दुंद ग्री दिय व्या द्वाराष्ट्वरात्र्ययात्रम्रात्रम् । भेराष्ट्वरायरात्रा **५अ'यतर'अ'केशपर'तर्ग'पर्य। ५ग'प'यरबाकुर्य'यतर'वेद'र्नग्र** ब्रित्तुग्वादादायायायास्त्रेत्। त्याष्ट्रित्यगुप्ततेःह्या श्रेट्हित्रः देश'त्र्चुन'न्ग्'ञ्चन'ग्रेचल'न्न'ळॅथॅ्न'ऄन्'पति'**ळंन्'**यति'ळॅन'यरा'रू'''' क्रून'ग्री हे 'मब'रेवा' पति ब'त्र हिन्यापय। वाष्ठ्यपान क्रामी वाचिरवाही। षरभावन्ना'वहून्'क्रॅअ'सेबस ग्रेहेन् सन्दिन्'हेन्'स्न'न्ना'ने हुन' रा <u>५८। बर्याग्वन्र्बेर्'केत्र्वेन्ग्रेंर'वेर्या छ्र'ग्रेंर्'केय्र</u> गुरुष्ट्र रूप्या प्रमुप्तव्य गुरुष्य गुरुष्य गुरुष्य द्वर्ष्य वर् रुप्य प न्दा कॅलार्येण'क्या, तृ संदायने तद्वा के ने साने । सूराया समार कर् रेवता शुचन कर्। सेवता देन नवा ता क्रूंन राया में क्रा वेन पर विन के वा रायाहेबाबुर्न्यम्'न्मॅबाकुक्रियाम्डम्'कुन्येन्। तम्यात्रहेयान्नः सूनः त्यस्य देशपरि ह ग्राप्त्री स्वा हिन्दा से भेशकुन प्रस्त परि स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वाप्ति स्वापति स्वाप्ति स्वापति स्वा त्वातान्त्रेत्वाताः हृवादाधिव। त्वाताः हृवादान्ताः कृत्वाद्वातान्त्राः द्वा <u>त्रोतःहण्यध्यतःवित्।</u> ह्यात्रिया विषया अवत्रुवातुः स्रान्यात्वाता त्र्वेतान् केशान्तिः हुन् शर् कर्पान् देश्वरात्या देशाप्ति हुन् श्रिष्ट् । """ ग्रुत्यप्रा व्यक्ष्व्यम् म्राध्याष्ट्रस्य म्राध्याष्ट्रस्य म्राध्याप्य स्याप्य म्मायाचे बाकु हुना परिवर्ग वहना गुमा केन् प्राचा वहना कु वहना कि वहना <u> ब्रेन्प्यत्रे क्रेन्व्</u>न् वृत्या वर्ष्यन्य क्ष्या वर्षेत्र क्षा वरक्षेत्र क्षा वर्षेत्र क्षा वरक्षेत्र क्षा वर्षेत्र क्षा वर्षेत्र क्षा वर्षेत्र क्षा वर्षेत्र क **ऍ**८५ देरे'न्यर'ऍ*र*खुर्षेत्। हिन्थनेशपश्चन्त्व'यहून्देर' ग्वरक्कॅन्यम्भेवर्व। व्रिन्धियाह्नेन्यन्यम्याद्वराष्ट्रश्चराद्वरा दंश विषाञ्चन मुन्न नवा हिन् जैवा जन विन्याने वामन तर्षा है। ने हिन्या नर्त्त वयवान्नः भवा तस्रवाया न में वा पत्ति । न व वा न र्हराञ्जन् प्रीयवादन्द्रवाञ्च वेन प्रदेश वे न विषयादि दिन्द्रवाद वास्त्रवाहरा ॅॅन:तु'पर्याळे:प'ने'ठा'ङ्गॅ्रव'पर'र्झेरा'ठा'न'रॅग्'पर'ऄ्न्'तेर'परा| नर्द्धक्षिः (वराव्या नः वर्षः स्वाः स्वाः स्वाः प्रेतः प्रेतः स्वाः या । स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स रते'हग्रावरे'हिंद्'वाबी'दर्गेराहे। तदेशक्षेत्'तु'त्रकुग्'धराद्र्या **ळेद'र्योधेन्। म्यान्देशखन्यम्हेन्'यस्ट्विन्'रन्येन्देन्यस्यन्यः ५८। ८ ४८ व्याप सून् पायद्राय विषा ग्रुप्य भिवा है। से स्निया रोवारा** चन्द्रवराष्ट्रीतेवरादिन्'ग्वतराङ्गेन्'रा'तिदिरतन्त्राष्ट्रीश्चुंदापद्'ग्नानित्रा' गुन्यम्बर्यप्रिया गुन्यविदेशस्य जुराविसगुन्छ। सन्यनेवस क्षेर में बेब कुर हो। पर् रर में रर बैब ब बेब बेर ब रेव पाय में हुर ষ্ট্রীর অ'নুদা । ঈর্'র্রমের্যানুদারীরমাতব্'রু'রীদানদৃগ্রার্মার্মিনা

परतिष्ठवस्याधित। सेवस्यर्म्स्रिन्दिक्षेत्रिक्षेत्रः विराधित्या धिव। ने'त्यन् में म्यादयान र्रें अ इंदायन्य ग्रीया ग्रम्। मने प्रेप्त ৡৼ৺য়৻ঀয়ৣ৾৻ঀ৾৾য়৻য়ৼয়৻৸ড়৸ | ৻য়য়ৣ৻৸৻ৼঢ়ৣ৻৸৻য়৻য়য়ৼয়৻য়য়৻ <u> বিবা উম্মান্ন। মুখ্যাহর, ইর্মার্থ, ধাংকাঞ্চ্যা, বিবা</u> कुर ब्रॅं सुर द्वे स्वरायक्षेपय। |दे केद प्रस्था व्यवस्था कुरा केद। देख राद्रा रोग्या हॅ प्याया प्रेया मे वाधियार वास्य मदिः तर्भेशारमः तृपार्श्वयारः हुदे विश्व हाम्य। श्रेयशाम् र्प्य सदिः न्यतःकून्यन् कृत्यायायायायाया ज्ञात्राशुष्ट्रवायाधित। नेवादान्यारू रोग्रयः हें नयः राजित्या स्वाराधियः है। हें वाराधिन्य के वाप रात तुन ॕॖॿॖॕॸॱक़ॕॖख़ॖज़ॱढ़ॺॕ*ॸॱॺ*ॱज़ढ़ॕॸॣॱय़ॱक़ॱॲॸॱय़ढ़ॏॸॣय़ॸॱढ़ॸऀॸॱख़ॕज़ॺॱग़ॖॿॱॿॖऀड़ॱॱॱॱॱ श्चरः दिवाञ्च सार त्वा है। विश्वास्य व स्मेन दुनः दर्मवा के सार्य न रा त्तृष्यक्षकीयनःषाह्यदक्षयका। विविद्येत्रस्थ हरहे। सङ्ग्रह्माद्वप्रविद्य त्राम् हें न् 'डेन् स्पन्'रा दे हु' यह व्यानु व्योन् 'हे वारा हु हु' सन् व हु वान्ता। वी ळें इंग्'र्ट्'श्रेग्'रहिलाश्चें श्चु'त्रेर्'त्रश्चर्यं त्र्र्भ्रेर'त्राभयः द्रग्'हेरप्तय। हे मह्दावादार हं स्वाय है न वा दें व हिन र मधिन हे सामा र मधि सह मा मबान्नेन्द्रम्या म्याप्यस्यानेन्द्रिन्द्रन्तिन्द्रम्यानेह्र्यानेहर्त्द्रन् विवानव्यत्रेत्रवर्त्तर्वाया देतेः न वेषा व्यव्यास्य । स्वान्यान्तरः मदि ह ग्राबी द द्या गृत्र त्या श्रा वि में द्या थिया सम्मान्ता মর্ব্'শ্রীবারা শ্রীন্'শ্রানকাশ্রনরা পূর্'নম'নবাস্ত্র-'মকা<mark>শি</mark>নি'প্'রণ্'''''''

न्मेत्रायत। पुन्येन्यहेरास्रे नेपर्द्वायादुन्ये संस्थित्र रातां ब्रह्मरा विवाभित्रां नितित्ववा वत्ता विवाहिताववा विवासित्राह्म कंबिर्वास्त्रित्यायतेर्दर्वत्या हे यहंब्यायात्र्यायात्रुर्विर्द्वार्या रशकुराधार ग्रेशकीर गुद्रायायगापत्रा पहुन वरा हार यर प्रति होर दे तथा होर राम स्थित हो। अति तम वर्ष हैं कर दे विन्ना हिर वुन्निया गुन्येन के यमान्ना में क्रून यम् के जुरायेन छिन मन्यादीव्यादिन्यात्रे स्टाने स्टान्य विद्यात हुन है। यहगायान्त्रेन'न्बेंदा ह्यार्थाः द्वेदान्त्रीय। क्ष्यायनेत्रित्वान्त्रान्त्राय्यायन्त्रायन्त्रायन्त्रायन्त्रायन्त्रायन्त्रायन्त्रायन्त र'विरिन्द्रन्दराक्ती ही साम्रु' विषापिद्राया दे अर्थे अह्या व्याप्त स्वारा है। तरी सवरा ने सामुन् वायदेवाने सान्न हैं तहाता सवरा गुन् य संवा हैना पा धैव'मर्क'न्ष'ब्रेन्र'न्बॅ्ब'ययय। दनसम्मरहेमर्जुब'ग्रीहरानु'धैव'मय। র্ষণ্'অস'সঝন্তর্ন'ঘ'ন্ন''অরথ'মঝ। স্ট্রব্'ঘ'র্ট্রব্'ফ্রন'স্ন''ন্ন''নঞ্র' ञ्चायायान्त्रव्यव्यव्याद्वादेन्ययाध्येवानेस्वत्र्वाचयार्वेन्यान्त्। € मर्जुव्यवयातर्ज्ञायर्द्राच्या क्षृत्रायाम् गृपान्तेन प्रमेश्वरा हिन् र्राइयरार्भ्रेग्'युरारु'(२५५) प्रतेष्ठं राचयरा ठन्'र'ताय देवा शुया रु' प्री राधित। रोरान्हन्यक्रिक्रेंन्'तुर्न्न'स्रिनेख्न'हुन्यस्रान्ना मनेन्ग्राप्तिकेन्द्रिन्द्रायञ्चन्द्रम् स्वाध्याया स्वत्या स्तर्व केवापित्र

व्यन्तिंश्वर्याः स्वाद्धाः स्वाद्धाः स्वाद्धाः स्वाद्धाः स्वाद्धाः स्वाद्धाः स्वाद्धाः स्वाद्धाः स्वाद्धाः स्व स्वाद्धाः स्व

अन्यतः स्टा हिरास्म्या विस्तान्त्रा स्टास्त्रा हिरास्म्या विस्तान्त्रा स्टास्त्रा विस्तान्त्रा विस्तान्त्र विस्त

६८-अत्यक्षीः रेयपाद्धाः अया क्षेत्राच्छात्। त्या क्षेत्राच्छात्। वित्राच्याः वित्राचः वित्राच्याः वि

म्रु मुर्यस्पित्वप्रात्यत्तुन्। । भूविक्वायवानुम् विषायेव।। त्रवात्रत्रेत्रयात्र्रेत्रप्रद्वा ।सुर्द्वेत्'व्यव्यत्त्र्वह्वा । यर्च या दुः बेदः बा केदः प्रते बर्केण |ने'वै'वेबकाकृन'नेव'ळेव'गहेन| |गनत'तुबेन'व'तण्दर्य परि'यर्ह्म |ने'वै'क्रवार्म्या हेन्द्रिव्या परिःश्रक्षं । देवे मुद्दारेश्यश्य पतु दृष्टे दिः करा । दर्दा देवा की थे। बेशदरी । दग्द्रपहॅरपदेशयाययवित । वृद्धराष्ट्रीयपदेशस्य बैब'हे| |हॅग'गेपदि'यर हुँद्'ध्याबैद्| |पश्चर वॅपबेद'पदे'र्द्द हॅग्राबा । २ घरः गेयळॅग् गुरः रे त्या । । अर्घे : त्यवः ये २ 'घरि 'र्देवः | तिया श्री वर्षण श्री में त्या | | क्रि. त के वे न प्रति में म के वा | **५ कॅबर्स्स वेस्क्रिं कुर्राने व्यान्ता । ज्ञान्य मुख्य मिल्य मुख्य मिल्य मुख्य मिल्य मिल** ळं ५ वर वर वर्षे वर्षे वर देवा वर्षे व पदेश्यळॅग्'गुरुने'त्यन्तु। [तत्ररुद्धवेत्'पदे'र्ने व्हॅग्रां'त् वत्राक्षेत्रळ्ग्'कुर्र्द्रेत्यद्य। ।गृहेर्ब्र्ड्येन्'पदि'र्देद्र्हेग्र्व्य 骨 नदेश्वर्षण्युरुदेशस्य । प्रवेषयग्वर्षः वेर्ध्यदेर्द्रवर्ष्ट्रवास्य **ঈ**ষ্মন্দ্ৰিক্ৰ্ল্'ডুন্ন্'শন্ত। [রুন্ন্ম্মন্'ন্দ্ৰিন্দ্ৰ্ল্জ্ৰ্

ह्यॅं८'रादेखह्म'श्चर-देख:ह्य | इंतर्श्चर बेर्'रादेद्द्र क्र्रेन्थ द्य त्रवाद्यत्यात्रे वर्षे वृष्णुराने व्याद्या । निः त्र ते से वर्गन के व्यवस्थि। र्ह्मरामक्रेष्याचित्रः द्वेष्ठेष्ट्रम् । व्याप्तिषाम् केष्याची व्याप्ते व्यापकारा ८८। अप्तिन्त्रेन्पतिः अस्य केन् ग्रुय। |ग्रॅथ रु'रे द्वे पर्वे पर्व परःबद्ध। । **ग**वेशः ८ देव्। स्वाः प्रकारित्वामः बद्धे। केंप्रवर्षण्यात्रके। ।ववरायह्रयाद्यक्षवाद्यक्षात्रके। . विवार स्थापन स्थाप *बिकानाश्चरवाचा सम्बन्धीकाविरवाद्वेतावाञ्चरवाद्वाञ्चना* स्क्रयादा ५८८ ६ंश,बु.च'अ'बु.च'यावा केंगवा हे:चर्ड्यक्षकी हेन्पदेन्न्'च'र्घच है। न्ग्'स्याद्वार्यग्'हे। न्राह्मंत्राकीयाचेराचारविवारीक्राह्मयावहवानेन्या ৼয়য়[৻]ড়ৢ৾ৼৢ৾৾৾৾৾৾৽ঀয়৻**৴ৼ৾ৼয়৻ৼঀৢৼৼঢ়**৾৽ৼৢৼৼয়ৼড়ড় चते[,]जॅ्रावराड्य,दर्जे,दराजेवयाड्य,दर्जे,द्वे,चेद्यप्तर,दर्जुव क्षेत्रदेश्यम्ब *नेवान्*न्ह्र'त्रहुक्षक्चेज्ञुन्ह्न्वयह्नवयक्षेत्र'त्रहुक्षेप्रेव'ठ्यपद्मन्द्रे''' तर्जुन्'राञ्जेल'नेन'पेन्'ळेल'ञ्चराचर्या *नन्*ञ्चं'न'ने कुँन्'रन'पेन्'ळेल *प*ॱर्रुत्यः हुन्यः न्रः हेर्याकुष्यन्याः न्र्यः स्वर्थन्। न्यः विदेशस्य वि *बेशन्नः ह्वा*त्रस्थाद्ययात्वुनः दाँकेवार्यं वेषाक्षया हेयासुन्त्रहार त्वाः क्ष्रयाराव्यम् कृष्या स्थायस्य स्थाप्त । स्थाय स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित स्थापित क्रकें क्षेत्रज्ञें तृ 'गुरुप्प पद्येत् 'तेर्र्पेण 'क्षेत्रे र्र्रा त्रा की प्रवा इंस्लाहन्यहि। न्द्रिकेन्स्तिनेन्याः सुन्तः विन्तुः क्रेसन्यायवतः प्राचारित्रां विषाचुर्दा । देवर्ष्यं क्रेल्याय्या प्राचार्यं विषाचुर्दा । देवर्ष्यं क्रेल्याय्या प्राचार्यं विषाचुर्दा । देवर्ष्यं क्रिल्यं विषाचुर्द्या विषाच्या विषाचित्रा विषाच्या विषाचित्रा विषाचुर्द्या विषाचित्रा विषाचुर्द्या विषाचित्रा विषाचित्रा

スターのである。第二

त्यं गु.ठ। हे पर्डन्थास र स्पाने हे न् 'ये स्वाप्त प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त प्राप्त के प्राप्त के

मसन्ग्रापान्याकेर। हिन्डॅन्यदादन्यराहिराक्वान्याकेन्या ह्रा तुः (तर्जे वा तरेगः हे दः तरे पायि वरः तर्जे पायेवः वे पा प्रकुः तः प्रविक्षे ष्ठवरा वेदार्त्रेसाय हरा द्वार्ट्स नामा स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त रा'गर'व्यार्रेर'गे|देश'रा'बेर्'केर'। क्षेग्'रेग्य'गुव्द'वेश'रादे'तृया ইদ্'ঝর'দ্দ'<u>দ</u>্ম'ঝর'গুর'পৃষ'ম'ঝ'য়দয়'কু'দ্'র্ম্ম| カーガニューカーカー あんかがかがれる *नैसाराञ्चॅसविनः* ब्रॅन्। सहस्राग्वन्यंत्रस्त्राह्यः सन्देन्दुरायाः बेन्'क्'रून्'वृद्ध्यान्द्रियान्'सुन्'यांधेव। ने'बेब्'न्र्यागुन्'स्रुगुरु'स् तान हे द्वाय सम्मित्री हुन दुन्न गृत्य पुन्य सुन् प्रें वा सुन्। ळें'हुन:वयातक्के:क'येन'क्नेयायाद्रीयायार्थेन्'ग्रह्मरायाया। रह्मास्हन:पह्म क्व'गरायातर्भे प्रतितु पात्रवाष्ट्रीयायायाप्ता हे पर्द्धवाष्ट्रीयायाया ৾৾ਫ਼ৢ৴৻ঽঌ৻ৢঢ়ৼ৾৾৶*৻*৽ঽ৸ৼড়৻৸ৼ৻৸৻ঽয়ৢ৾৻ঽ৻৾৾৾ৼ৸৾৾৾৾ৼ৸ नःङ्ग्रीत्र्वायाः स्वर्धाः द्वार्याः द्वार्याः द्वार्याः स्वर्धाः स्वर्धः स्वरं स् यावतः त्र्विते कॅश् क्रॅं रः न् गु' सया न वि' ग्वनः व्या やイグラッカイ ব্র'শন্বান্নেন্দ্রীন্তুন্ত্তীব্রব্যান্তু হর্মীকুন্মানান্ত্রাব্রামান্ত্রা *ঀ৾ৼ*৾৻য়য়য়ড়ঀ৻য়ড়ঀৼ৾য়ঀয়ঀঀৢঢ়ৼঢ়৾৾৻ড়ৼঢ়ড়ৢঀৠ৾৾৾ঀ৻য়ৼৼয়ড়ৼ৽ र्मेश्रार्मेश्राम् म्राप्तान्य स्थाप्त चन् कॅन्'मबादर्ने'च'बे'र्सन्'चन्दरत्न्।'न्'ब्रेन्'बेन्बर्सार्येन्बर्नेन्'केन् हु ग्रायात्र्रें प्रायाग्वेरप्राव्याध्याध्याग्वरप्राव्याया त्तुतान हुन न ने कर नु न हुन का स्तान का स्तान हुन है। प्रे क ने क के

प्रस्त्राह्म । व्याप्त्राह्म विश्वास्त्राह्म विश्वास्त्राह्म विश्वास्त्राह्म विश्वास्त्राह्म विश्वास्त्राह्म व क्षेत्र्राह्म विश्वास्त्राह्म विश्वास विश्वास

ब्रु:बुर:बर:पर्दे:व्ववश्यत्तुन्। |इव्यवर:वर्षेट्यपर:वैवः <u>गुैबार्</u>क्षे**पर्य। ।तुः**र्वेबार्क्कन्र्ह्रेन्'याययायान्। ।ये[,]ळ्यात्रःवेनः*वृ*बका *बिज्*पत्रॅर। ।**श्चॅप**ण्वेन्रप्त्रॅन्'क्चैर्र्ययदत्'श्चॅर। ।ने'इत्य'तर्चुर **ॅ्र**ग'पर्दे'त्स्र-'दे<mark>ग'मेदा । ह</mark>िं-'क्व'गर्स्यत्ग'तु'त्रें प'दा । प्रहःकेद' बु रिते कु र पाया । अवाबे र व्यवित त्ये ते केवा क्रें र वुवा । हें र क्षेत्र^भनेरप्तराष्ठ्रज्ञु'वेर्। ।र'र्रासंख्यादायाद्वेरपा ।वरपा पॅ. वृंदे विनवास गृहु गुरु। । निनः नुः क्षेत्र वा वा वा निनान गर ह रॅंदि हे 'या पर्झें यहा | वि. य र क्या यह र र । | पर्ने का ये र र दे का बेर्'खुर्स'रु'क्वा १र'र्ने'श्चेर'वे'श्चर'त्र्चरात्र्वा १देशव'द्रस्य'दर्द्वर **ॅ**ब्ब के होत्। । तः ब्रें सब बर यदे विषय हुन विषा । विषय वित्र विषय हुन विष् लप्रेन्'नुबाबु। । श्वायायम्बाज्यायन् भ्रम्'नाबुन्। । दिवस्याबाञ्चर मुलन्देश्केन्'तहेत्। ।रेग्रायस्य स्तर्केश्वेन्'र्येन्। ।रेग्राय **षे नेषञ्चित्रक्षेण्डिण । इ.व.स.स्.च्यां प्रतिस्त्रां प्रतिका । यस्.** छ्वा ष्ठवाक्तकेन्द्रस्थ । न्यक्रवानद्देशकावान्यः। । न्युन्यद्रान्यः

स्त्राच हुन् भारत्या । वित्या वित्या । हिन् या स्त्रित्या स्त्रित्या । हिन या स्त्रित्या । हिन् या स्त्रित्या । हिन् या स्त्रित्या । हिन या स्तित्या । हिन या स्तित्या स्त्रित्या । हिन या स्तित्या स्तित्या । हिन या स्तित्या स्तित्या । हिन या स्तित्या स्तित्या स्तित्या स्तित्या । हिन या स्तित्या स्तित्य

हैं, सर्वे बंगु बं, रका के स्टार, पाया में र, पर्ट, में शिर या प्रमान प्राप्त प्राप्त

| गुरुव: रु:कॅस'य:रर:ग्रुब:र्सुर। **।** म्बेश्राश्चरावेत्यां रात्र्राह्या <u>देलस्बर्दास्य ग्रुवायर्ह्न्। । गुरुगः हुः यरे पदि देन् ग्रुवायर्थह्नः। ।</u> **ब**बुकाशुस्तरायाञ्चल्यायायात्तरा । बाह्यार् सिर्म्याययदार वायात्तरा । दे'ल'अर्घर'म'इस'न्युस'सर्दि । द्विग'क्कु'अर्छद'स्व'र्श्चेगसर्यु'ग्रेस। । व्यक्षं क्षेत्र प्रते प्रते व्यक्ष व्यक्षेत्र विष्य विषय । विष्य विषय विषय । विषय विषय विषय विषय विषय । विषय व यान्डेबाराः इयान् बुद्धाय स्ति । क्षेत् पर वान् नवबारना श्रीयारा सर्य। । १वर्षाश्चराञ्चराञ्चरवा ।इतार्व्यर्ग्रार-नुत्रव्यव्यापायरवा। *ऻॺৡॴॱॸॖॱॺ*ড়৴ॱॹॕॖॺऻ*ॺॱ*ख़ॗॵ॔ ने सम्बद्धार इया गृह्य यहिन्। त्त्। । गृष्टेशः शुःस्रायतः त्र्ये ह्वेषा शःशः त्रु। । गृशुसः तुः प्रः चुन् रहेषा श हु'तर् | | ने'तातर्'न'इयाग्रयायहें | श्रु:ने'र्नेवानययावया वृद्यकारी वार्यका । विद्याना सुन्ता द्वा स्ट्रान्य साम्राज्य वार्यका क्रिक्ष्यं विवाद्यात्र स्वादा केव प्राम्य क्रिया विवादा वि नर्रे स्रं देयान्त्वरुषा जुरायाकरा है। नयार्थे रार्या कुरायान्ता कु **ढ़ॕॖ**ॺॱॺॎॶऀॺॱॺॺॱॻॖॸॱख़ॖॸॱਜ਼ॸ॔ॱय़ॗॸॱॸॺ। हैॱॶॱॸऄॎॱॺॕॖॖॸॱॺॱॹ॒ॱॸऀॱॺॱ र्रः यहत। मिनियाकुल संतार्यकुरा गुरासमध्या भीता शुरास । **धु**द्या तर्द्र त्यापते शुवार्षे वादेते खुवादा युवाधिदापारा तर्तु वा वेरा तर्दे द् राप्तविष्णुः तग्राप्तः प्रमाळवा सुमान्ने। सुःगमानुः भेववा वदा है । सा न्नः अहत्यत्वाक्रं वा गुनः तर्ने न 'पान्यवि व'र्षे न पान्नः । हि सु 'पा पनः हे' मर्ख्यप्राप्त्राच्ये के के विषय है के किया मान्य के कार्य षरःरश्रहरःराश्रग्रेग् जुनायि जुलार्वे न्रामहत्रहे न्राग् वे न् गुन

मान्यश्रम्पार्चन्यान्मः। शुक्रेष्वश्रायान्वश्रम्याद्यः यस श्री स्वराक्षेत्रे सुतिःश्वरायाच्च देश्यः। संस्ट्रं स्वरायश्वराय्वश्यः स्वरायः श्री श्वरायश्वरायः स्वरायः स्वर

おればなっておっては、強工

मु हुरयरपरिव्ययस्तर्त्। विश क्वयार्यम्यत्रिर **ह्यम्य गुरा । १९ वर्षा द्वेर स्वाप देशे मवर्र दे। । ह्य दरे ५ वर्षा वर्षा** मते वृत्रवाति द्वार्यम् । । यन् गृत्य द्वारा सन् व्यार्केन भगवाराया । र्रानेष् त्रुवरत्वरष्ट्रत्वय। | र्रानेष् त्रुवरवरव्य न्या । शुप वित्रहेर्द्राक्षेत्रवात्रव्यत्। । सूर्वात्रे करत्वर्यात्रव्या । सूर् मन्ये करवा । न्याम दे न्या हर न्या वे त्या तक्षा 1वेदा **रा**न्दर्भवृष्ट्वत् गुन्दर्भवा । विव्धान्दर्भवाभाग्नुन्व। **र्**यते सेययन्त्र के तञ्चल तस्य। श्चिष्येन में ब्रायन स्वाया विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास विकास ं **है** : बेन् 'में ब् बिन्' वा है न वा वा | हु 'त ज्ञ बा सवा ता तहें वा पाना तहें व त्रिंदरत्रामृहेकाबेदःम् पद्मात्रक्ष। । त्रिंदरत्रामृहेकाबेदःस में व। । गरेवामहैका हरा तहमा क्षेत्रा यारा तहन। | यर्ग गलक **र**्चेर:बेर्'तर्चें रत्रागुर'तळल। । यर्ग'ग्वद'र्चेर:बेर्'ख'तर्चे रत्रा व। विन्द्धमानेवन्नित्वेत्वत्वत्वत्वत् । कृष्वराप्तन्त्वर्षन् क्षरात्रवा विवासमान्यस्य व्या विवासम्बद्धाः िंच शीर्षर्र्भा विश्व विश्व

ह्यंश्चरह्मां केष | श्वंयाप्त्रं विर्त्तरह्मां नेष्यं में केष्यं विर्वे विरवे विर्वे विर्वे विरवे विर्वे विर्वे विर्वे विर्वे विर्वे विरवे विरवे विरवे विर्वे विर्वे विर्वे विर्वे विरवे व

प्रत्यम्बर्धार्यम् । विस्त्रः विद्यम् विद्यम्यम् विद्

मिलेश्चान्त्रेष्ट्रांस्य स्वाधित्रं स्वाधित्रं स्वाधित्रं स्वाधित्रं स्वाधित्रं स्वाधित्रं स्वाधित्रं स्वाधित् भ्रामेश्चान्त्रं स्वाधित्रं स्वाधित्रं स्वाधित्यः स्वाधितः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधित्यः स्वाधितः स्वाधित

श'मे'देंन्'क्रि'सून्।

व्यवान्ति । देन्यर्वव्यवित्यान्यानिन्तिन्। म्वत्यन्नान्त्र्या द्रश्र्ये अर्पेतर्भातराय रे ब्रेंबराकु व्याद्याय हैं न द्रा या विराद्वा प्रा प्रविष्यात्रे स्वाप्त्रप्रध्यायेमस्यापायस्य सुर्वे स्वर्यसञ्जेत्यप्तर ह्या र शेर हिना ने न। सं न सु हुना स्था ये दारा हुन में शान न र में हुला सा वसवर्-पु'र्सरप्राथय। हेप्पर्श्वर्नेप्रायल्यवस्पर्म्। नेव्रप्तर् षातुवकाराषान्वसर्वेद्राक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्ष बेरप्परिःस्वाज्जुरानेःभेवापत्राज्ञेन। पज्जायभेवावासन्मानीकेःसम देवर विर नी सुना का हे भिन्न दे का राजा हा भिन्न पास कुछा के पा सुन्न का निना हो र **ब्रैक्क्स्ट्रेन्द्रक्ष्यान्द्रकाने। इत्याद्रश्चेन्याब्रेन्याब्रेन्याह्र** म। हेप्रह्वाकी व्यावया हिन्यमाने ने व्यावस्थी स्थाना विवाधिता

ब्रिन्म नत्रवर मॅन् खुन रीहे रई करे वरहे के कामक के मेरायाम। भेदानुतरानुर गहारकायम। अतिकालियानम् याद्वान न्न्यस्युः र्यन्ष्यस्ति। स्वाप्तस्यादेन्तिः न्यार्यस्य न्न्यायस्न ः **है** । स्टाप्त स्टापत स्टाप्त स्टापत **भिवितः व**र्दिन् खेन् पदि हैं ज्ञान है या तर्ना पासय। मन स्वित्य वस है ज्ञा **୕୴ଵୖ୶୳**୵ୣୄୠ୕୷୳୵ୡୢ୷୷୵ୡ୕ୄ୵ୢୖଌ୶୷ୣ୵୕ୣ୷ୖ୶ଵୖୄୢ୕୷୴୷ୖ୵ୣ୵୷୷ୣଌ୶୷୷୷ୠ୶ୖୄ୶ **৪েন্ড্র**। ৪:ব্**র**প্রনেইউ;রুব্দরেইঅ;রিন্ট্রাইর্জ্রাম্মর্যাগুর্ न्याये से संस्ता से स्वाप्त से स्व **६ स ने ग् प्र**म्प्या के स्वाप्त का के स्व ने'व्यारेट'र्यं'अ'र्घे ग्यायर'रूर्ये राष्ट्री'तु'र्से'ने'र्स्ग्यय ग्रेन्'न्ट् े मिनामिनामिनाञ्चना हे न छना न मानु में न श्वा राख्या या

ष्ठाः स्वार्त्ते स्ट्रा विक्रण्या । श्रुवाया विक्रण्या विक्रण्या

न्ध्रेंन्'नहरा । बळव्'बें'ग्हेन्'बेन्'न्यस्यस्य नहरा । ह्र्यःहन् मर्सिन्'व्यक्षाम्यवाद्यां प्रस्ति । तृक्षास्य विष्ये से स्वर्ष तरी | सॅन्ट्र'त्रु'नराकुन'व्यानेत्। |वन्न्ट्र'त्र अरावत्व्या <u>वित्। । त्रत्रचेना रेचा ग्र</u>न्ति के ताले। । शुर्वार्यून तुत्वात हा क्षेत्र ग्रेतात्तः महरामका अपने। । भेराभराभरात बुकामका वृहेरा समुवाक। । सा हेपर्दुव् केव् पॅति विषय दुर् दु। । भेन् न्यपते हॅश्या व हन्द्र र्देरता । ५ म्हें पर्ड्य केय पेंग प्रमुप मुग्ने ग्रांम । प्रमुद देव केया न्दर्रुव्येशा विदावदायय। हेपर्दुव्येशस्त्राक्र्यर् हुबाराबाबी तुरा ५ 'तुरात हैवा है दाराषा इरवादा हो ५ 'त्याबी हो ५ 'हववा **राम्यान्य विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विश्वास्त विष्य विश्वास्त विश्वास्त्र** हुरार्नेष्यप्रायन्थेत्। प्रकुत्रातुर्वात्रस्रायम् विवारापान्तिग्रा <u>ने'नब'न'क्ष'गॉवॅब'त्ब'वब्ध'तहेग्'हेब'गुब'रा'त्र्ग्'ग्युनबंबबाँवेंदेवुय'</u> सव्यग्रर-त्यग्रर्वा

प्रताय विराधि क्षेत्र क्षेत्र

गन्त । । महात्महेन गुन्ने ने स्थी गन्ता । हैं हे गन्त श्री गुन् सुंगल । दे। | बि'ळर्'द्र'ठ्यप्रैशकेंक्र्र'ग्रा **ने**या । हार: धुँग्यानः पः ठवः शुः धुला । पलः पॅर् ग्वेशशीः शंव ळवलः व। [त्रज्ञां पानुसाम्या स्वराक्ती सम्बा । तरा मुरास है पना सं म्बुग्या । ने स्र्यायेन स्ययान्न के यहता गृत्र। । पक्क या यहता षर्-र्र्प्येर्। । यद्ययेर्'त्विर्न्नतेः कु'यः हैत्र । । गरेरः **ই**ন্'র্ঝ'হণ'রের্ড্র'ন'র্ঝঝ| |ন্র্'র্মন'ন্ত্র্রান্ত্র'ন্ত্রন্ত্রনা | न्याने'न्यातर्हेर वें पार्श्वन्यतरा। । तर्शे असुन्'पर्श्वन्यान्यान् **ब**ित्रय। । पक्कायापय प्रयाग्य क्षेत्रया क्षेत्रया । वित्र वितेष्ट्रया स्वाप्त **ष।** | न्यात्र क्रें स्थायुकार्षे या व्यवस्थाय ने प्राप्त क्षाय ने प्राप्त क्षाय ने प्राप्त क्षाय ने प्राप्त क्षाय नते तथा | न्याक्रं तथा नु'तह गांपा थे न । निक्का सक्र में स्विग्य ब्रायम्। | न्यांकेंग् क्रियानि ब्रामश्चरानि कुरा । । साहे मई वर्ष वर्गिकेग् नी पग्रदेन्यय। । सूर्प्यस्ययः ठर्प्यस्य । क्विरक्षेत्रे । क्विरक्षेत्रः मबीदर्भे । श्चान्ये स्पर्भव प्रमाह्य में देव। । प्रमाह्य वार्य बेर्'ऑर्'न'र्ग्रा |र्रे'नशसुक्षं'ऑग्'र्प'त बर्| |व्यासुन्याहाँ हैं' र्ह्मरायान्त्रित्। । पञ्जियादादीःनातृत्रः ज्ञिन्याद्यः । त्यत्रः , ह्रण्यातुः यात्रीः दिन्दां मुक्ता । वाक्षायन् वास्त्राच्यात्रे विष्यान्यात्रा । विष्यायन्यात्रे विष्यान्यात्रे विषयात्रे विषयात्र मन्याविरानेवापायमत्वसम्बाता । प्रभूत्रापतिष्ठुग्वास्य । प्रमू

हेन्या । स्ट्राह्म प्राप्ता विकास में न्या क्ष्या होना प्राप्त क्ष्या होना हिन्य हि

त्रचन्द्रच

र्सरः नशुक्रकीः तन्त्रानिः पहिरा । सर्वे देशा हरः पतिः स्ट्रानि होता । म वारे वारा वें राष्ट्र र वारा हा । दें वा बेर की यो गाँच वा पार हें वा । ता वें र चर्याकेर चरि वृत्रद श्वापा । प्रामेश्च सुप्त ईयामवा क्वा । पर-त्'पत्-'पॅर्न्स्'वग'या । मः यर श्वर-तु-तु-तु-क्वर-ख्वा । प्रवयका विरः श्वें पावरावयाश्वेव। | देवावात् संस्कृत स्वाने । । ज्ञावा राष्ट्रं हे'झुद'र्-'८र्ग्रेगय। |ने'वयासुयायाक्षेत्रायदे'तु। ।यर्रेन्'ववया <u> थ्रदारानेनेस्या । यहारुदानेस्य सुनापतनःश्चित्। । यदाक्रेरयद</u> हन्यत्रेत्वावद्दी । १८ में स्थ्यक्तिक्वे वर्ष्यत्र्वे । । १८ में स्थ्यक्तिक्वे रु'[त'भै नर्श्व स्था | वि अर भग ने दें र दर्श्व ग'र्य । । प्रस्थ अर **वै**८:ब्रुॅं:प'व८'वशब्रुंग। ।नेशव'तु'ग्रॅं'झे:कॅशच्रेन। ।श्रशतु'नेग'पदि' Bेद'इट'ग्रॉं। ।गर्दुग'सग'विट'ट्ट'अर्ग्रेद'विट'र्सग्य। ।गर्देग्य राद्वर्भद्रिरेखेब। ।दिवरित्वर्धर्द्द्रिश्वावितरे। ।द्रासं रेबर्यायाष्ट्रगानस्थानभूर। । । परानुःशुकायारायानुतानभूर। 15' बर विगारमध्र स्पान् रः। । । नश्र श्र भी रः श्रुः नः वरः वरा श्रुवा। देश'ब'सु'बें'क्षे कॅरा'ग्रेन्। । तहेग'येन्'मराया'ग नव'यानर सु'डेग । यने निमेत्रा निश्च पति। । पर्ने संविदः भवा इयवा देवाचे दः धैव। । दरः चॅरः वरः कूंदः वर लातहरा । परानुत्वहुरामञ्जूलातहरा । वासरसम्बन्धिला ' ८६८। । परा यस मेर हुँ। पा यर य रा हुन। । ने सा द रा हो से हर स <u> चैत्। । विन्तुः र जुन्म र्जेन् १२५०। । गुल हे सेवस्य स्क्रीन् पर्यय</u>

रा विवा । विवादायर्थर व्यवस्थर प्रमायत् हीर्। । स्वीदार्थर हीत हु वैराज्ञिय। [हुमयासुगारसुर राष्ट्रिगायतिस्या । प्रार्थेर रहता रेशकातर्भेन्यस्था । परानुभ कुलास्य भेर्यातस्य । १ वर न्नः यंते न्यापा सं पुरा । प्रयास से मार्से पार्य प्रतास से साम प्रतास से साम प्रतास से साम से साम से साम से स एः अं क्रान्तेर। विवाय अवा क्रान्य विवास क्रान्ति । नरा **हुँ**द'रर'गैरावे'नेद'पर। |बेथेन्चुँद'राज्ञुद'रु'स्| ।गुद'रर'यहद' मानासात हुन। विवास ते दे सान् महातान ते। । गुन्य हुन महिन्या स्टराक्चरायत्रा । वितायदायारं व्यववारं व्यवधारीय। । विताय स्त में प्रण त्यार्था । दे हि स् गुव प्रच के बसुव विष् । विशेषस ब्राप्त्र्वें क्षे क्षेत्रं होत्। [त्रि तेयवाक्ति न्त्रावया | व्यत्यक्ति श्वाराष्ट्रीत् केत् क्षेत्र । स्ट्रित् म्बर्या कत् विरात्ति हत् । स्ट्रित् दतर भेर बेर बेर १ १ देर दिया हे वाय थे क्रिंट है गांवरी विकास र्श्वराष्ट्रियाणुरातद्या विदाराक्षेत्रते न्द्रश्यात्ती विरायरा **ड**्राया इवरा ग्रेस नहारत। । ह्या या भू प्रति सम्बद्धारा । प्रती पर श्चन्यसन्'व्यवस्तु। ।<िम्'विश्वयन्यक्तुशः द्यशःग्रीयः गृहन्य।। बेर-व-व-व-वे-इ-वन्ध्राच्या | दे-हे-देव-व्यत्यक्षयान्यवा | व्यत्य मदि हे बादि प्रे विवाद वागुरा , । प्रमाद देवा झ क्रवाम्बर प्राप्त ।। बैसाल में बाह्य दास्यायम। हे यहं बाही सार्व ने प्रेर ने विवास विकार श्ररणर्वे ररायाव्दाव्य। विर्वे व्यने वेर्पराक्रीरव्या हेरा

बह्नव्यात्राया | विद्राप्तयात्राया | विद्राप्तयात्रायाः विद्रायाः विद्रायः विद

हुरापेंद्र हुत्रु हु पाया । हुन् हुन हेन परि दे परु दस्य। । हुन् सनियान्ये स्त्रिया । कुन्दन्येन्यदे र्झ्सिविष्यस्त । व्रायदे ট্টব'ক্রমঝ'নের্গ'মা'না |ইক্'গ্রুক'ল্ডব'ঐব'ম'নের্কনা |ব্রু स्राहर् तर्भे त्यान्ये वित्राया । यहतः न् तुत्राये न प्रति स्रायः विवाय स्ता । न्यकालन्यम् व्याप्ताना । व्यवस्तर्भेषा रमः बुरः तहनः तहनः तहना । हिञ्च पहिलामा । प्राथम स्थित स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स बह्री रिवयह्वास्यरवेश्रयाया । क्रेरहेगुद्रायाष्ट्रया तहता । इ.वह. व.चीयार हे प्रस्याता । इ.स.च.व. अर्थर संदर्भया **वि**वायर्सेन्। | तनःरीयरायर्सेद्राशुयायर्घेनःपाय। । म्लायरे वाशुनः चतिवाञ्चरायातस्य। । साम्बितिरीयान्ये सिन्याम। । तशुरापायेन्। धते क्रिं से विषाय हिन्। । गन्य या र गार्चेन 'तु'तर पाय। । गुन् प्विते' <u> ५५ मा १ व में १ वर्ष १ १ मा १ वर्ष १ व</u> धते क्रिं विष्यहें । क्रूर पर्ये करतकर प्राया । क्रूर प्राये विराय দীর্মমর্মানের্রুল। | ব্রুমান্নর্মান্র্মমান্ত্র্নার্ভীর্ पतिःकुष्य श्रेक्षात्रवा । स्ति विस्तात्रवास्य स्ति । स्ति विस्तात्रवास्य स्ति । स्ति विस्तात्रवास्य स्ति । स्ति दिव। । परायान नदायसनाया परी जूर र हैं भूगा । नेया र परि देर क्रीशञ्चर्याप्यसम्बद्धत्। । हायदे देवस्य द्याय हेन् परा । १९वयान्स हॅग्यापन्तम् तत्त्वानीय। । र्वयस्यापराग्राप्याप्यार् विश्वान्य प्रत्याया अस्त्रन्य राज्या केन्य प्रत्यं केन्य

र्में चम्बन। हे पर्वत्रायापाराय वेताय दि यक राया सुरावता। हे पर्वत्रा शुःचग्रायविदार्के रिनेते सुपान्यया उन् पत्र राह्य गवर'वर'ञ्चर स्याकीक्ष्यान्त्र्वर्म् त्यर्भेद्र'व्दर्श न्यात्रात्रीय'येद्र'यदेर्द्र'न्यायत्यश्ची'र्र्द्र'व्दर्शस्त्र न्यात्रे पळेद[,]पॅस'रराकुर'प्'याग्नेग्रप्या वेयाग्री'वर्कर'हेद'र्द्रदेर राविवादुःहिन्दे स्प्रिंदिन्द्रार्थिन् स्प्रिंद्राथिय। त्राकुन्य स्थित् न ८ दार्म प्राच्या प्राचित्र के स्वाचित्र के स्वाच्या विषा क्ष्य स्वाच्या विषा क्ष्य स्वाच्या स्वाच्या स्वाच्या स <u>ট্রিমার্বর-দে'বর্না নির্বির্বার্থর-খেলেন্ডর্বার্থর-বেরার্</u>শ্বর <u>चग्'न्बर'र्सें</u> बर्सें द्रश्यां द्वेतें प्रस्यात सुरार्में द्रापि दिवरुष द त्यन्त्रण्यत्रैः व्यान्यञ्चताः सुनान्द्रश्चेत्रः तुः गुन्यव्यः यत्रे भूनाः स्वाव्यः व्यान्त्रः व्या मस्वित्रसहित्। व्राह्मा विक्रा विकास के स्वार्थित । विकास विकास के स्वार्थित । **छ्र-रायाविवयाया अक्षात्र्वायान्यक्रानुना** र्ह्मश्रीवर्ष्णीप्रत्यस्पृत्वत्यात्रात्रेष्ठ्यस्य । स्थान्द्रत्यस्य स्थान्त्र ऍ**॔ॱइ**लड़िरतर्दे विट्र्युंब्पित्वयम्र-पुःमब्दि तम्दर्दः तस्द त्मचेन्स्रिन्स्या न्न्स्रिन्द्वत्त्वाक्षे स्वासीया र्झें अनु रापाने हुँ दा अधिदा भेंदा नदा धेदा प्रें प्राप्त हो सेरी **৪৯**% বিশ্ববা सर्वेद्रप्यत्। संस्कृत्र्र्प्य्याकाकीर्यः वस्ति व्यव्याक्ष्या नशुप्तालार्देर्राप्त्राप्त्राख्यान् विस्वर्देर्यहर्षात्रेषु वार्त्रासुवादीः सुरावसार्वः भाराभी वेरायरात तुगापाय। हेराई व्योजसार्वार व्यवस्य प्

न्यार्थित्रप्रेत्रप्रविष्याप्ति । इत्युत्रप्रविष्याप्तिः तिः दिन्। विन् वन् द्वर्गमुक्षिक ह्यायम्बेन। । धिन्क्तन्यन् निक् **ছ**ু ৭'গ্রী**ব'**ন্ডুবা । চনবামঅ'ন্তু ৭'স্টেন্ই' মের্চ্চণা নম্বীরা । নুমান**রি** ह्यायान्यानेयान्नेया रेलाई हेन्'येन्'गुराविष्या । सलातुष्य ठन्'सु' सुलात्यारणया । **६** स'त्र पर्' प्रस' पञ्चे सारा **गु**र ज़्रें ये शेत्री | | च्रिन खुन खुन **देर** च्रु प्र**स** पत्तर' । छ त्रा हे हेरापत्तरायर'। । र्रेग हेरा खर वे हे र गर महरा । महर्निसर्म् असुतिष्य नारायाम्या । तम्नामिसः क्रेंबन्य तह्य'त्र है नदा क्षेत्र। | न्यात्र ह्या सक् देनः व्यवेदा हेन। | स्यम् त्र्वाचा वे संविष्या । त्राम्याका वेशवायाया मन्त्रवा । त्र्वाचा पर्वतर्भवायर्थस्थिकेत्। |सेवस्थित्स्यविव्युत्पिक्षेत्राचि हॅग्यदेश्व तर्पनग्याचं वया विषय्वते हा असे देश के से या ष्ठ्रणाय संबद्ध्याय दि संबद्धा थिया । भेरा न या हुं प्राय वे न हिंगा या न श्वरापरत्रेष् पर्दर्भ्य । पर्दर्रर्भेष् पर्दर्भ्य हेन न्न्या । पञ्जा अन्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र । क्षेत्र त्र प्राप्त क्षेत्र क्षे न्म्या विगाये दूर्रि इंद्रायेया । न्र्रेयां देर्रा द्राया द्राया न्न्य। । सन्यान्त्यक्तिन्त्रे देवे । । सन्यान्त्यन्त्वा न्य । युवेशतहें वृष्यु नृप्यं प्रत्यं स्था विद्यं अयु के वृष्ये वि मृष्या । भूष्यस्य स्थाया । स्थाया श्री । स्थाया श्री । स्थाया स्थाया । स्य

₹ंहे'तळ८'ने'कुर'प'तहेंद। |३'रिवेबेष्र'तर्मेंदे'सुर'रिह्न विता वित्वत्त्वत्त्रव्यात्र्र्व्यायस्त्त्वति । हिःस्व र्रेते स्वाया हेपिय। । इन् वेरेन्ने न्यराष्ट्र वयापन्र । अ श्रुर्यस्य राज्ये दुं **ध**। शिवाया हेरि से हेवा हिवाया नश्चर शिवाया है स र्षराष्ट्रीय। ।तन्नरानुरान्नानुन्र्नान्यरापते। ।तन्दारान्श्चे र्मेश भेर यह ने पा । गुन चर र र के द ह गय हे करा । कुर द दे प <u> ५ व र्ष्ट्रिंग या यह राज्या । यह या यो व्याप्ती व्यापती व्याप्ती व्याप्ती व्याप्ती व्याप्ती व्यापती व्याप्ती व्याप्ती व्याप्ती व्याप्ती व्याप्ती व्याप्ती व्याप्ती व्याप्ती व्याप्ती व्यापती व्या</u> क्रिः गुरुष्यका गर्रात्राप्ताः देवस्य । सः स्राया द्वेतः ग्रीप्त ग्राद्धेतः प्रीस्य । नन्ग्रंबन्धन्त्यन्त्यन्त्यन्त्यन्त्र মন্ত্রুব| । ষ্ট্রিব্'উ'ঝার্মাণ্ শেঝাঝান্স্বি| । ক্তুব্'ঝান্ত্রীব্'ব্নন্'নীকান্ত্রীব্ बर्द् देद। । अ ज्ञां याच्या श्री श्री प्राया राया है। श्री स्वी श्री स्वी तकरनते दूर पति । हु अप्राप्तर देव । देव पहिला हैन यन्न्यहर्मा । त्यु न्येययकी कें त्सुयाहे। । कु यहें दे ज्याय प्रवेदार्यायर हैव। | तहेवा हेवा सराधी केंद्राया इसरा । हिंदरप रमेन्प्रक्रिया चन् गुर्या । क्रिं तर् ग्याया श्रामन् ग्राम चन्। मययार्वे र कु र भा कुराराधी । ग्रायर ह्या य समस्याया म्याया म म् । त्रस्त्रम् वस्त्रम् मृत्त्रह्नायायेन्। । तर्नेन्यस्य स्यक्तस्य कुराय हॅगरापरा । जुराहेदारा नर्सा गरार हे गया । व्राय दे दूर

<u>इत्तरायाचे यश्क्रीयाया यहार। । य्रायुत्राया वेरावेरा वेरावेराया वस्ता ।</u> ਖ਼ঀ'ঀ৾য়৾ঀৢ৴ৼ৾৵৸ঀৢয়। । ঀ৾ঢ়য়ঀ'ঀ৾ঀ৴৸ৠ৾৽য়ঀ'৸ৠৼয়। ।**ঀ৾** गदराक्षेत्रपुरमञ्जूर्परश्चित्र। ।क्षेत्रायाद्वरायाग्र्रप्यन्याग्वरा।। |अप्रेन्त्रहे ग्रेग्रन्त्रंयत्व । अर्द्रित्र्र्यदेवत्र्य री । १६ ८ के ८ के १८ बेर्। ।ॐरु'र्दे बेर्'यग्रीर्'र्ययने'बेर्। ।यग्रद्देव'रुद्यीञ्चय पा वित्यक्वित्तर्न्त्रात्य्यायाञ्चेत्। वित्यक्त्रात्रत्वत्रात्रं भु देव क्या । भ्रास्त्रे व यशु रता के वा या वा तर त्या व व या है व य प्रायुत्रायता हेम्पर्ववायवेताहे। सरावितायेन्ध्वाक्ष्याह्यावाया न्ना क्ष्मायविन्नेहिष्यप्पन्नप्रदे। न्मॅब्य्धिव्वत्रा ৾ৡ৾৾ৢৼ৾৶য়য়য়য়ড়ৼ৻য়৾৾ৡৼ৸৾৾৾ঀ৻৸য়৻ৢ৾৻ড়ৢৼ৾৻৸ঢ়ৢঀ৾৻৸য়৻ ৽ तार्झेवयानेग्'ग्रुट्यरा'सूर् याते'र्द्र्र्'ग्रैयागुर्द्र्द्र्म्र्र्'र्द्र्यान् গ্ৰাম্মীক্ষাৰ্থিক বা ইংনপ্ৰত্তিপ্ৰতাৰ্বক প্ৰীপ্ৰতান বিশিপান ক্ষা पति'लॅं चुरा'र व'्रेंर'प्रेंव'प'ठुर'ड्नप'जुल'र्रेश'शे'यहे**र'पति'ग्**तुररा**र्ख'र्भ** नेर्यम्द्रप्रा अविस्ति क्रिस्ट्री

म्पना हते संरा

हे'पर्डु व'शे'य'रश'र'ने'हेंन्'ग्रेश'रेष्याराप्राप्ते'ह्रव ८व्रॅं रः अश्वे तें रिंगु वें वृद्ध द्वा हु वृद्ध श्वार श्वे तर राष्ट्र राप्त शुप्त देः **है**र न्ययातुन्यार्चे वाहे। रे विषाने हे तर्नेन प्रवाहें न नुपान परा मर्या र**राकु**र्राया गुराबराव्यात क्वेंद्राया प्राम्य । प्राकुरा कुरा बर्गा खुरा **य**त्रह्मुत्रात्र्व्यार्यत्व्यायश्चित्रत्व्याय्ये विषयः हे प्रस्तात्रार्ये द्राःःः मया विराध्यानिकार्यायात्र्रिक्षेष्ठार प्रीयार् वाहरायि है। हर्पिते प्रवास्था र हा नरामा व ने व है व प्राप्त व ने व है **अ**न्दर्भित्रग्दरविद्यस्यकुषाकुष्यकुष्यकुष्यान्दर्भेवश्चर् **8**वायान्ना न्नाया हेन्य द्वाष्ट्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र नास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र वास्त्र **८**८-१ वृद्धायाः स्वाप्याया सङ्ग्यायाः स्वाप्यायाः स्वाप्यायाः स्वाप्यायाः स्वाप्यायाः स्वाप्यायाः स्वाप्यायाः बर्दर्र्ययग्रवादिर्दर्वत्र। हे.स्.म्बर्ड्यर्द्र्यर्रास्त्रेश्चर्यः मतिःल ग्रां द्वतिः ख्वग्रां तिनः नेत्राः ख्वग्रां हे व पुत्रः ख्वग्राः ख्वारायता। हे मर्ख्वराख्या त्रवाशीः सुन्या दर्भे म्हार्च अयम स्थाप <u> न्यादानस्य निवेदात शुर्रातुन्। श्रुः स्थाप्य स्वन्यां श्रुः यारायां सन्य देनायाः स्</u> नवसन्दर्भन्द्रित्वनाय। स्राप्त्रस्य वर्षे स्रुद्धाः स्रुद्धाः स्या न्मॅन्ब्रॅन्न्वन्त्र्तिद्वाराप्न्। त्राराज्ञ्वायाळेन्द्रयान्यः विश्वरापत्रम्पर्भित्रम्वरायश्वरापत् हेमईन्श्रीस्वायाया तर् मञ्जू हेग्यपरित्व विग्वुत्र स्या नित्र की विव्यीयान स्वयायया

ण्यात्र व्याप्त क्षेत्र व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्यापत व्यापत

म्प्रिक्ष्यत्र्रीवश्यत्रिद्धार्म्यः । प्रवश्यने वा <u> न्द्रीन्यक्रीन्क्रीयाय्र्वियः क्रयाः । नुषाः ध्याद्रेषयः ययः वदः यन्ययः । ।</u> सपने समकेरापने सर हुए। तरु तहे ले व पर दे ने मे पर पार्ट का ण्डिण्स्रर्र्र्र्न्प्रस्थियस्य विष्या । श्रुक्षेत्रस्य स्थानिक स्थानि व्या । शें भेर् सुर परे र मेव पाय रे। । तहे ग हे ब सुग पे हिं अ द य इत्या । गर्येग' दह्मा अत्यदि द्वाराय दे। । यावया दर्दा द्वे : क्वार पञ्चमस्याया । तेयसम्बर्धन्यते प्रतिन्ते क्वें स्पर्ने । **व्य** ५५५ न **5**य शेक्षे नदी | मियक् हॅं न्पायेन्पायन्। | गर्थे हु संस्विन बैं के बापते। १ ने बुद्दार है चे ने बाद विद्या विद् **४**न|प्रस्त्रन्रयन्यन्यन्। |बॅल|न्-कॅन्य्कन|प्रस्केत्रयन्। । अस न्ना इंबाक्रन्यक्रन्यक्रन्यक्रित्यहे । अन्तर्भित्यक्रम् षः म्व्येत्रार्यापार्। । ब्रु ब्रुर्ययरपदेष्यगृदाईव्युवा । । व्रिंद -८८ श्रीवरामार्से वर्षामारा । त्रिया द्रवापार पारी पारी द्रवा सर्धे र मित्। । नरापाञ्च वायके न विवास सम्मित्। । निवेद समिति स वयराविवादिवा । सुन्दराह्मा हे ग्रावादाय हिंद्। । हा ग्राधादा ब्यात्मिरः सम्बद्धाः । मृद्देन्दः सम्बद्धाः स्त्रा । सुद्ध

प्या रक्षक्र-प्रश्वक्षायक्ष्रप्रम् प्रकारम् स्थाप्ता ।

श्विकारम् प्रमाणि । भिर्मे प्रकारम् स्थाप्ता ।

श्विकारम् स्थाप्ता । स्थाप्त स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता ।

श्विकारम् स्थाप्ता । स्थाप्त स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता ।

श्विकारम् स्थाप्ता । स्थाप्त स्थाप्ता स्थाप्ता ।

श्विकारम् स्थाप्ता ।

श्विकारम्य स्थाप्ता ।

श्विकारम्य स्थाप्ता ।

श्विकारम् स्थाप्ता स्थाप्ता ।

श्विकारम् स्थाप्ता ।

श्विकारम् स्थाप्ता ।

श्विकारम्य स्थाप्ता ।

श्विकारम्य स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्थाप्ता स्याप्ता स्थाप्ता स

हेन्न'यदे'नगदखराहें हेदे'नहरा । नज्जन हेरा छु राज्य ध्राराहु **8**वा । सम्रत्स्र १८६ वया राक्षेत्रकात्। । न्यायः श्रुनः प्रयाः बर'संबुर्। स्वि'कर'र ग्रार'प'बुर्'रेव'क्रव । हे.सु.व्यर-ह्यव **ध्र्मर्भेन्म। |अन्**रिन्'शुन'पदि'ज्ञुल'र्क्ष'यहरा ।में'यहरहेनदे' भैन्यायर्चन। |वापरार्क्तेरेखनः पङ्ग्राहण्यान्नः यहस। । ननः रे'तर्नेन्'प्^{ते}'बद'रग'दी |रेग'प'षे पेशञ्चेंद'क्षे'न्न' |स'कुन'रू' **धैन'त्रिंग्सॅंन्न' ।** ४ क्रूबबाष्ट्रीः धैक्षेत्रंप्न'न्न' । यने केन'ना सुनः नी **र्हें व'के'न्ट'| |न्व'ळे'व'न्ट'वेबराके'वॅट'न्ट'| |न्व'ह्रा'हें वहारदे'** *ष्ट्रै*'अ'त्र'| ।क्वॅत्'रा'सुधीरताची'त्र'| ।रर'र्ज्ञतासुग'कु'केव'र्से'त्र'| । तके बेन प्रतृन है दे पहुन 'शेष में ग्रा | ग्रावय प्रमान वेर नमा दि प्रति केंबा | सिं<u>ष</u>्ठेन्'ग्वन्'ग्रेपर'रेंप्न्' | प्रयम्ग्नुव्यव्यस्याग्यन्ययः रग'र्र'। । यह 'रॅब्ग्युअर्र'रेब्'छेब्'स्। । व्यवश्रु'येब्'यरि'कॅब्र' हुन। न्दा । कें तर्दर न्वें वार दे न्व्या न्वया राज्या । न्वया ग्रीया वे

प्राचन विकास के स्वर्ण विकास

प्रवास्त्रम् स्थान्य स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान स्था

न्र भेत्। । न्रंत्रत्त्व न्र्यन्यंत्र संवर्षायान्। । ध्यापनन प्रकृता मतिः सुरः दर्रे भेदा । बर् दर्रे से दि हरा । । र र हिर् सुरः परिभूगप्त भेता | कॅशपश्रम् ह्रंग्रा श्रेष्ट्रपा | प्रमूत्र प बारतात्र्र्में त्र्रियायि स्याधित। विष्यून्वर्यात्याप्तरं से सक्केपानी । रमञ्जून'म्ब पर तर्रे स्व देन **पि**ष्ठा । द्विषा द्वेर के सम्मन् सम्प्र दी । १९ वर्षायमनः क्रिंगत्में ग**र्हे**न्दिन् । निर्वाधिकां मिनः सुका क्के'च'ने**। । ज्ञ**'यार्श्चन' भेव होन' भन्नेन' भन्नेन । अर्थन व्यवस्थान विवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान व्यवस्थान विवस्थान व्यवस्थान विवस्थान व्यवस्थान विवस्थान व। विन्याने भवके प्राथन। विवाह कर रे भारी हुग द। विन् *षाने प्रवाहे* पांचेन्। |कॅश्रामका हे नेन अञ्चनकात्। । शुन त्याने प्रवा क्टेप्पन्नेन्। । विषयपद्मन्त्रवस्तित्यन्त्रम् । विषयपन्पन्तराक्टेप भेत्। । पर्वतः पर्वाह्यसिवययप्य सुरयात्। । मिलने पर्वाह्यस्य बेन्। ।तुःरश्कुरः बेरानदेग्रेव देग्शर्ये। । न्वःतवन्वःररः बें हु ग्रस्त हुन्य । अप्त हुन् न् ब्रम्य दा गृन प्रस्त । प्र तकः नवात हैन्या । स्वारी विकास के त्राता । ष्ट्रिं प्रविवात : नराडे राक्षेत्रके प्रति हैन। । नः क्रवाकी के निपालें निपालें निपालें निपालें निपालें निपालें लनवान्त्रंत्रलाग्ने दार्यर। अष्ट्रियायराम् देवाकवा विराक्ष्य यमुन्'नन्पर'वेद'ग्रैकार्हेयका विषागबुनकावका रकास्त्रापदे मेतु नुसन्मक गृत्रि सुग्नि विरामस्यका है। सुरस्त्र सुन्य श्री कार्य श्री का र्चे व्यापारकार्क्यापारामा स्वापार । स्वाप्त व्यापार स्वाप्त विश्व विश्

मलैक्पत्त्र-न्युम्यक्ति प्रमन्तित्वत्यक्षा ।

र श्रुः अ हे पहन हुन भर न ५ ५ १ । छ र ५ ५ ५ हुन य भेर १ ८ हेन केश्चित्। । मगदर्दे 'काबेद्'चदे 'ग्न्यस्य म्य द्वारा ष्ठग्रात्रात्राचरात्। विद्यायेन् यापत्रहाँदी हें का क्रेंग्या विर मन्या अवस्य हेप इंदर महेप या नर्ता मन्दर यह देश स कें श्चराप्रा । बार्याय संभी यह के प्राप्ता । हैं हे खुरा ही म्बराखन्यम्म । शुन्यत्रेकुतार्वते हुन्यन्यर्वन्। ।नेपन म्राया हेला तर्मा । न्वतामा ह न्यान श्रुम्या सम्ब्राम्या । व्दा शम्बर्धिकवर्ष्यान्यः। । महेवर्षम्बर्धिकवर्षम्बर्धाः म्रोस्वृत्याक्षुत्ते यत्रात्मायम्। । ने इयस्य अयहे तारस्य। मन्द्रम् अव के कुल में द्रा | | द्रात में द्राय स्वा इयम् | स्यापितिषापग्यादकार्द्रम्य । ज्ञायतेपग्रारहेन्यनः र्द्धाः । श्रद्धाः क्रवाः क्रवाः क्रवाः व्यवः व्यवः । व्यवः विवाः विवाः विवाः विवाः बर र ज्रास्याय। |देव'इर बेर्'परि'या अ हं व'ठव। । है सु ज्रार ह्रण्यर्वेर र्देभेया |हेरवर्ड्न'इर र्'क्वेश्वुख्या |र्'मायदंन्के मका ग्रेग्यमिव विवात्। |म्यात्मा कन् प्रति रक्षक्रायाः । महे मसन्बित्यते पत्रवाय व्यक्ता व। । क्विन्यः द्वन्यक्तिवर्षेन्य ह्वान्यः । प्राप्तेनः स्रवास्यनः मन्यवा । मगद्भैन्यम्बर्ग्यक्तम्यं भेव। । मिस्रेग्म मन्यं व

इं रहेन्द्र। वित्यापा इयस्याति हिन्द्रात्र स्वाया वित्रात्र प्रमाया विद्रात्र विद्रा

तुः स न्रायह्रवारा भैवातुः से ग्राया । गुवान्यायह्रवान् जुतार्यः षिव। । सन्दर्भहन्य भराकुता श्रीदर्भ सन् धिव'हे। । स्पन्य ब्रिवह्य (८३ म्हर धिव) । यस प्राप्त । ষপ্তর ব'ঐ শবা | ইব' এব 'অ' এত এ'ব' এ মিন | গ্রিড্রান্ত বি क्ष्मिन्न व्यायके व्यायकार्य राष्ट्र । । रूर् म् व्यायका व्यायका व्यापन **ই অ'ব' ব প্ৰা**শন ব'ল্লন অ'ব' । । **ঐ**'ম'ই ব' তব' ন শু ম'ব' নু অ আ । । गृन्धाकृत्कृत्रकृतः तमुन्दान्यंदा। । न्याक्षेत्रान्द्रभूताः वेन्त्र प्रदर्भ । विवाहन हे प्रत्र विश्व विश्व हो। । तर् प्रवाहन विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विष्य विष्य विष विगवा । पत्रमार्थे प्रमारे वेषका के नार्यमा । विमाया विश्वेष मबबारु द 'पेवा । हुन' मंबाद शुष्पा हेन में बी निवा । खुबा बेद' बावतात्र्त्रेतिः केंबाक्रें राय। । । तावा नु प्रभूषाय बायवा पार्व पार्व न वेन । । **१९७१ म्यान्य विश्वस्य विश्वस्य** य ग्रेग्'शू प'पते' कुल बें त्र | | द'पर्यं प्रस्' प्रते श्रें प'या बे द्। । य **र्**र्वापरत्र्रेतिः न्यर् क्षिण्डस्या | | राज्यान्यरा व्याशुर्वा | **नै**रःश्रूरःगुरेरःश्चेत्रङ्गयःह्य । स्विग्राग्चेत्रवित्रस्थयः संस्थित । **वि**

र्धराचें ब्रावर क्षेत्रे विरावश्यक्षय। ।र र्रायत्त्रेता वृहिना गुरु भेग्। विंत्'ग्रेरागुरापदेभगद्रवयाम। विंत्'पर्यत्'रत्रया ष्ट्रिको । वि'र्लेय दूरि देव या याय या विद्यार । विद्युत प्रदेव या या विवान् श्रुट्या हे प्रॉन् र्र्स्न प्रान् हेवा यहे यहा द्रार्स् व् ব্লুঅ'র'বর্মা। **ह**। न्यान्तुःसम्बद्धान्यद्द्यान्यदेश्चर्द्धन्दःस्यान् नेविहाहे मह्न्यमार्ष्यार्र्धेन्यदेशस्यम्यस्य रस्य रस्ट्रियम्यम्बन्यक्रि ह्याधिव'व। र हु'ग्रावयात्रियात्रीयत्व'त्र'क्र्यंत्रित्र'त्रेंत्र **२०** वित्राचन में प्राप्त है। प्रति हाथ दिन दे दिन प्रतास के सुर्ग सुन्त का प्रतास के **रा**जतिः द्वरः **द्धंतायारः तरीः यात्रावे राज्यारः त्याद्याये व**र्गाताः स्परः। न्रत्रित्। न्यरङ्ग्वयश्चिक्यञ्चरत्रेस्यन्यप्वित्वतः **द्य**ाष्ट्रराष्ट्रीयाञ्चरायाञ्चेर्यरा। दर्नेर्पय्यः र्राटरायकवाने पर्येवार् **য়ৢয়'पते'म्'जुल'न्महे'पर्डुव'ल'सॅप्'क्षेते'हॅग्'रा'मव'रा'चुम प'हे'पर्ड्व''''** मुन्नान् मृन्तान् । स्याप्यायायायायायायायायायाया हेराईवाकुः **धि**न्'श्रप्तत्रिञ्च'ख'तन्ै'तेस्यत् गृत्रवे'गृत्तां गृत्रप्तान्त्र्वेस्याः धेन्'गृह्युन् च"" महेन्यर्न्। नेस्रत्यत्रिक्षंक्राण्चेन्वे विष्ट्रके। विक्राण्चेन् <u> ८६५ पाळे हिरावरे प्रोपे भेर्</u>दारायात जुष्ण जुष्ण उत्तरी का के छेन इया तर्मन देशे द्वा पहुर देशे द्वा में सम्मर्ग व्यापया न्द्रवार्मातन्द्रवाष्ट्रवातक्ष्मात्रक्षात्रवात् भुराविन। न्य्यावित्वायन्

प्राचित्र'न्युन्द्रव्यक्षे प्राचित्र'त्रव्यक्षे प्राचित्र'व्यक्षे प्राचित्र'वयक्षे प्

स्थित्यं स्था | प्रथानाय क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र व्याप्त व्या | व्याप्त क्षेत्र क्षेत्र व्याप्त व्यापत व्य

न्यन्श्रीप्रत्यं वर्षाप्रवस्त्रं वर्षा रमरा। । सुःरंप्रः अव्यव्यव्यामानाः दुरे वरः मुक्का । मावरः वरः मने लायम्यापा मुति वर्षा वर्षा । त्राकुर विर्मेयार हे ह्वा ह्म-पर्वेग्पर्ज्ञ | तेश्वरम्द्रम्बारम् हेन्द्रेश्वरम्द्रव्या <u> রেটান'ন ম'র ঝানঝঝার্রাইনঝ। (র্বনার্থন'র মন'মঝার্থনে নন'।</u> राज्यभग दुते वर व ज् न त। । तु र शकुर जे हुँ र पा के तेर हुर र्रत्र । देशतग्रद्याहे देशतग्रद्येष। । द्रयहेयचर द्याम्बर्धात्र्याः विषयः **र**म् अत्रावानायाः द्वीत्रमः तुः र्मेष । ष्वस्यापनः यने । स्यापनः यने म्प्यम्द्रित्वर्वं मह्त्र । सुरम्बहरमित्र्रःसुविर्धितेष् त्रा |रेकार वृद्धे वृक्ष हे रेकार वृद्धे वृत्र वृक्ष वृत्र वृक्ष वृत्र वृक्ष द्वित्र द्वा वित्र न्या दिन्य म्वापन क्षेत्। सिमान्यत में निमान स्वापन सुःस्कृत्यं वित्र न्रस्थायायाद्वीद्रप्रता । निमाद्धम् विमन्रम् न्रायम् र्ष्या । सिम्ब हिर्भुःद्वाविवयान्ता । हान्यायावार्वेदयान्ता ।वावस शुप्यम् संप्रहेष्या अर्था अर्थाया । सुप्यमञ्जयमम् स्वर्थम्

चित्राधिकान्यम् दुःस्ति। विद्यान्य वित्राम् वित्राम वित्रा

माञ्चाराहे पर्वताक्षवानार्वन प्रमान् । त्रारण पुः कुनार राख्ना **६**र मुन्यान्यरः। । भुः क्षेत्र र्श्वरायः । यह र् न्यन् न्ययः। तश्चित्र'त्र'ञ्चेत्र'त्र'। । वेद्रारेष्ठा व्याचेत्र'यः प्रमाण्या । तद्रा मॅबान्नयादुर-र्ह्नेब्रादुर-प्रविधानाय देनवा । १८५८-राज्य अधादुर या षत्रअतुम् गर्रातापाद नेपरा । विद्यानु सामरा। हे पर्दु व गणगा दुने बरावस्त्रिस्त्रेवाने। वद्यायातरायान्त्रम् मृत्यानेगायर्त्याया हुत **बि**श्चेन'क्रवरार्वेश्वर नेत्रयान्याने'ठाळ व्यानिमानर ग्रुत्यान्ता रखा **छ**रःपर्देः र शर्मे शाह्य वाषा सुवाय। र र छिणः पत्नु गुवापादे पराया हेः पर्द्ध्व श्चित्रया रशक्रम्यायमु रम्प्ग हिन् क्या नम्यार्गे सन्म्यार् गुर्नेव। कॅबाख्यां कुं केव् संन्रान्य दूर्र कंबा हुया मेवा केंद्रा व बाकु गर त्रायाञ्चेन्'पाभिन्। ५'व्रिं५'कु'न्रायाञ्चेन्'न्यात्रेर्'प्यत्रेर्क्साद्रवसार्विष मृदेशतर्स्याग्न्त्रत्या। रुपायागियावर्षन् ह्रेंबरायातर्हे न्तुस

धते तुषात्रे गायम्बद्धाः अस्ति ह्या स्टि व्याप्त हिन्द्य स्टि व्यापत स्टि व्यापत हिन्द्य स्टि व्यापत स्ट व्याप ই'ৰ' **८६ॅ८** हैं न हर की रूप हें प्राप्त के बाद है के प्राप्त के कार्य के कार कार्य के कार कार्य के कार्य के कार्य के कार्य क मन। प्रभूति ह्व 'सं के त्या हैन वा सम् स्त्रीत न सुन्य प्रमाणी स्था हिन प्रमाणी नर्भ मुद्रेयश्या हे प्रहुत्य | के द्रार्थ त्याय स्थय | कुर ह स्थय पह्ना **८**'च'भेव'भरा। रु'झेरे'झु'छन'पर्ने'वबार्श्वेन'न कॅव'लु'च'हेर। **झ'** हिन्ते न्यं नेते क्रून्युं न व्या प्यान क्र्या क्र्यान क्र्या गुरुन्य प्या इत्यान्त्रान्त्रान्त्रां तिहेण्यात्युत्तात्या चुर्देण्युत्तात्ये द्वार्ये द्वार्ये त्या ष्ट्र व्यात्र प्राप्त स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स षरः वि: चेत्रपरः ततुन हिन्दस्यात्र पर्दन्यः रतः वीदार्केणः पारे वा *য়৻*য়ড়ঀ৽ঀয়ৢ৾য়ৼ৽৴ৼ৽ঀৢঀৼ৽ড়ড়ঀ৽য়৽ঀ৽ৼঢ়ড়য়য়য়য়ৼ৽য়৽য়৸ড়ঀ৽৽৽৽ स्रायं क्षां विषयं हेपर्वक्रित्यक्ष। देवप्पन्य केन्यप्पन्ति विकासन **म्यास्त्रियानुपर्मा ग्राह्म या त्या त्या त्या ने दिः संक्रन् । नुः ग्री अवस्य या ।** वया धेन 'रंथावातुः माने 'वयाया गुर्ने 'ने 'ने 'ते 'ति ग्रा वया ब्रन' गुर्ने 'वि'र्चान मन्तरकेष्यम्त। हेमईद्यीक्षावया रशक्रम्मराम्यवास **क्रॅ**शन्नः ग्राह्म या यक्ष्रयम्बायन्नः मर्त्रनः क्रॅबबायान्तेनः विष्याहेनः ने श्रेव'रा'गृहेग'गुर'क्षे'त्रुग'तु ब'रावा। दें'व'नेर'र्नेर हेनैं व'क्युन्र हेन्' ह्या वे का गाय प्रमाण हो ना प्रमाण के का हिना प्रमाण के का है ने प्रमाण के का है ने प्रमाण के का के का का का क तुषायानवामान्ता स्वाग्वेदामायान्त्रश्चरार्वानामा ቒጚ इयरात्राच्यात्रे स्वाच्यात्रेत्र व्याचा क्षेत्र प्राचा के वित्रे प्राचा के वित्रे प्राचा के वित्रे प्राचा के वि प्रश्नात तृग्'राया हे नईव'शें व ताव यातु र या छन पा के वा व व व व न क्रॅंब'नविश्वायंत्रस्त्तुन विज्ञायदिँ ('५८' ब्रॅंच' क्रिन'नवुर्वा ५ सं**द** श्चराया देश श्री वा स्रिट्स वा ता स्वित स्व स्त् स्याधान जन्म **इ**बबर्ग्स्,कुट्रपदि<u>ष</u>्ट्रिक्स्स्र-५्र**ण्याने**'दर्ज्ञे'ग्रुपकाद्यराधन। <u>ট্রী'ব্রাব্রা নমান্ত্রণ'হা'ই মার মাই মার মাই মার মান্ত্রমার রিটেনেমা।</u> **এব'নবা ট্র**ন্'গ্রীঝ'ই'**ড়ে**ন। চর'ই'ৠ'গ্রীন'স্থানবান বরাস্ত্রন पश्चीप'यात्रहें अश्रम्बादी'त्वन्'प्रविन'क्तव'व्येते'र्र'षुर्पतते खुहे पर्वुन' ড়ৢ৾*য়*ৼৢৼয়ঢ়৾৽য়ৢৼ৻<mark>ঀ৽৾ঀঀ৻৻ৣয়ৢ৾ঢ়৽ৼ৽ৼৼৼৼৼৼয়৾ঀ৽ঽঀ৽ঀয়ৢৼয়৻৾৽৽য়৽</mark> नेर*ने*रिश्वेतःष्ट्रमञ्ज्वषा रग्रहतःपतिः स्टिश्चितः स्टिश्चिश्चे **৴য়ৢ৾য়য়য়ড়৴৸৸৴৻৸৸**য়ৼ৻ঢ়য়৾ঀয়৸ড়৾য়৻ড়৾য়ড়য়য়ৢয়য়৽ঢ় क्षे[,]हग्'झु'यदे'न्धे'हुग्'दर्ने'वगुरः**नु'ग्**श्चन्त्रःसं।।

मन्ग्'मरायामविद्रक्षं क्षंद्रव्यम् हुन्। विनःक्षेत्रवर्न्ग्वहण्य क्रीं में प्रस्ति । विषय मुत्र विषय मुत्र विषय है । विषय विषय है । कुमपाय | रमाहेरायाहेरासुपरिमाहेर । रमानेश्वायाह्य ন্ধ্রমের । ইন্দ্রমের শ্রমির্মির বিশ্বর বিশ্ব व्यापन् । द्विपत्रकेष्ट्रप्याप्याक्ष्या । विन्याप्ययादिवाक्ष्य बर ग्रुं र ग्रुं गवि। । तर ग्रिक्ष द द पर द र में शुरा । विवक्ष हें गुक्ष मन । शिह्ना निर्मिति हेतु त्रा । प्रविष्य स्थि स्र्राह्य स्था । रीयशामर्थन'साहेन'नयानसाहुन'या। । मन्य मरावसाहेन'हु'केंस इव्ययः हुन्। ।वनः न्युष्यश्चेषाः हः स्तिः वृषाः व्यवं ॥ । वनः स्य [षर्'रदेशेरखेरथे। |षर्र'ग्युअक्व'व्देरे'र्युग्य'र्रदा। ळें ८२ त्यां बेद् शुप्रदे र वेंद्र । वित्त शुप्त दे न सुष्य संस्ता हुन यय। । न्युग्यं बेह्ग्यः यरः भूरः वः युवः ५५ । वः युवः ययः वयः मन्य मरावर्षा वैराक्षे क्षार्व पार हुरा | रेवा वार वा की हे पर त्र्वावस्त्रीत्व्रः । । श्रीत्वाक्कित्व्याव्याच्यात्वाक्ष्याः । । त्राः क्षे ग्रॅंप्य ज्व व्यंत्र हिव्य बर्डे यत् ५ । तुः ने पायके ब्राप्य ने र वृंद्र। । त्त्रापतित्र्वाया हुरावश्याया । व्यावश्याया मॅत्र। । त्रव्यव्यवस्य प्रत्येष्यक्ष्र्ययने। । विदेयपर्येष

प्राचित्रकार्या विश्व व

न्'न्याहे'न्द्रंत्रात्त्रं व्याप्तां साने हे त्यान्त्वा व्याप्त्रं त्यां हे त्यान्त्रं व्याप्त्रं त्यां हे त्या व्याप्ते त्यां व्याप्ते त्यां हे त

पन्ग न्न सिंहु न् तुन् रं त्। । सर्च न न र सिंह न ति न स्या न न न स्या न स्य न स्या न स्य न स्या न

व। १८८४८८५ गर्से सुन्ति वयस्त्रिष्य । व्यवस्थितः ग्रीकान्द्रव्याक्षंत्रेयन्। । विनान्यर्क्षेय्वय्ययत्तुनार्वः व। । । । য়ৢয়য়৾৾ৢঢ়৾ড়ৢয়য়ঀয়৸ঀয়৸য়য়ৢয়৸য়য়ৢয়ৼ৾ঢ়ৢঢ়ঢ়য়৾য় मन्। [र्ञुग्राञेन्'कुराप्तवसारशेवसार्ख'रु| स्वार्ड्न्'च्न्'स छतै[,]वृश्रवादीयां प्राप्ता । तेयां त्राक्ष वादायं सेन् पार्हीं ते प्रार्वे । । दिव मते जन दाय विष्ठं वा विष्ठ तिन्। हेन हुँ न श्री काळा में काळा ते राम ने । । तिन्। हेन पति विन ने तिन न र्दं द। । ५६ सम्हु ५ ग्रन्थें भू द्वि न वस्य भेग भन। । ने ग सम्बंदरा बेन्पार्ह्यन्यन्। । न्न्प्यन्त्रव्यत्यान्यस्यन्यस्य पर्यार्ज्ञे रेपारी । क्वांपारीपाज्ञा अदिपागादारी वाय ग्राया । बेबाबा अ **ॻ**ॾॕॴय़ढ़ॎॸॖऀॱॺॸॹॹॹॹढ़ॸॖज़ॗॗॗॗॗऻॱऄॳढ़ॖॹय़ॺऻॗॗॗॗॗॗॗॗॗॗ॓ज़ॺॱ व्या ने इवयन जुलन्य अद्राज्य हायरे यग्र हे व द्वार ने बर्डरळे परायेग्बरर्तुगृष्ट्री व्यवने सामु परित्र वेग्नि में राप धेव हे अर पा तर् न्या कर्या व वाय सुराद दे न्या स्वार्य ।

त्रें विषय स्था विषय स्था

| तर् क्र स्वर प्रति के साह वसा गुव। | तर ज्ञां साक पार्की क्षां पा বা |नेबाग्रु ग्रेबायाचे प्रवादं ज् | ग्रुबायु ग्रामे ग्रामे प्रे <u>ব্রিব'লগ্রেব'ঘর্ম'ব্রাম্বরের।</u> निश्वरी |ペッコラスな क्षेत्रविद्या । स्टायुर्ने यापति यो ने वादि। । प्रताप्तार शे'र्यर है यपार हा । गुन प्रविक्त स्तुर है या उपार । क्रिपान वा हे र विद्युर्द्यन्। । इंपर्ट्यायस्य यहेशयात् । । दहेदायदेशयाया क्रन्'र्र'त्। |बाबळबबाब्रेन्'पत्रेपरार्नेने ।ब्रुवामबाग्रवापतिः बर्द्दायाद्वा । श्विद्दायाञ्चर दे द्वा । बेबबा द्वा व्यवद्दा यान्यस्य दे। । इत्यन् शुक्ष स्वयम् स्वर्भन्ते । | 찾드'ㅋ지자 **हॅ**ंप्ययायोपेक्ययया । प्रायापायायुवार्ग्यस्य व्या । श्चित्रः बेन्यावरायाने मन्दर्भ । ध्यान्न न्तर्में हं ग्यापन छेया । वेयव न्रासुर्भितकेरामग्कर्। विस्वयन्वयं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं क्रियं व इत्यत्र्वेरम्यान्धरवद्याग्न्त्। ।सृष्ट्रिन्त्यनेतर्राख्यन्यन्त्य।। र कुला अल्ले र अल्लेर या | विश्वापश्चर या या वर्षे स्टार या स्व क्केन्द्रन्य विषाद्धन्त्रम् । नेद्रबह्य चंद्रवर्षे विषाद्य । न्द्रिं क्रं यावा सुपाञ्चितवा है ग्रेग्स्य व वाक्षेत्रे ये न्युप्त सुप्त हैं न्युप्त सुप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप रहाकुर्यायान्यायुकारतातुनाकन्यान्तर्ज्ञात्वयान्त्रे प्रतीर न् में द प्पादेग रिश्वा हर्या में से दिस्य स्ट्रिंद। दशुत्र न् से असे र राजीतनुषालपावानुवाराय। हेरार्ड्द्राग्रीकार्क्रमञ्जेराद्रवानुन्द्राद्री म्बद्धाः महारूषाः केषाः कृषाः मान्यः । विद्यान्यः स्व

ব্ড'নুম্ব'ম'ন্ম'ন্ত্র শুরুষ জুবা । প্রক্ষান্ত্র শুরুম শুরুম শুরুম শুরুম দুব **ब्र**'अर्'ने श्रेयर ग्रीसर्क्षण । देश में श्राप्य स्त्रे श्रेर व हे गायिता । शुनिरं ८ हेव : इंशपक इंग विषय व अक्षेत्र का प्रतासक विष् **गु**प्ततुव्यव्यं सुंद्रप्पक्रक्ष । यने द्वेन्थाद्यस्य व्यव्यव्यव्यव्य ग्*डेर्'या* रहेत्पयग्'नठर्'मबाँचग् ।ग्रेग्'सु'क्षेळॅग्यर्संद्' **এ**ব। |হ্ল'নবি'ব্ল'মার্ট্রম'নমার্ট্রল |ব্ল'র্নমার্ল্রমান্ত্র त्रष्ठगर्यायेत्। । योग्यायाष्ट्रंतावेत्। यश्चेंबर्यायाळेन् । श्वाळेन्याळे । तह्मज्यसञ्चरम् । भिन्दासुन्यः हुन्दाने स्ट्रा । तन् म्बेन्द्रश्चेन्द्र्यम्पदित्यम् । म्बेन्द्रन्द्रक्षेत्रहेन्द्रम्य। । हिन् <u> र्रः खदः रेर यदः क्षेत्र्य। विर्'ग्वेद्रः पृच्वेदः व्रापः क्रेरः व्रापः क्राया।</u> मङ्ग्यस्यवाग्रुस्तृद्रयाथेत्। । तस्रिक्षवेग्यस्येग्याय। । ५५ र्रः श्रुवागुरः छन् भंकाभेषा । पर्भेषवान पिष्ठैः सर्भेग । वीपर्भेस ট্র্র'ন্ন'ঠ'নমমন্ট্রনা বিশ্বনাগ্রহকার্যান্নিব্রান্নমমর্ল্ন' यस। तसञ्चर यस्य यस्य वस्य हराहै। गुस्य सम्पर्ध से स्वाप्य मज्जून'ग्री'न्छ्रहरूत्रेत्रेत्र्यावे।।

न्वॅद्रप्रासुकाग्रैकार्र्डवास्ववसग्रनः । वृत्यकाञ्चापारिकाग्रनः

 न्वॅद्राः । अन्यक्षेत्रक्रवास्ववसग्रनः । वित्यग्रन्त्रवार्षः

 वैवाश्चनः । अञ्चलवित्रवास्ववसग्रेवाः । वित्यग्रन्त्रवार्षः

 गुन्न्वं । वृद्धवारिवसस्वविवानेन्षिन्। वित्यग्रन्त्रवार्षः

 गुन्न्वं । वृद्धवारिवसस्विवानेन्। वित्यग्रन्त्रवार्षः

<u>क्</u>र्यानः विवाधितः। ।र्मान्यः सीकाक्ष्यः प्राप्तान् । सिन्ध्रयः यन्तः कुर्राक्ष क्रमाया विमासुरा। । हिराय हेन् स्वराख्ये क्षा क्रमाया वा वा कुरा। तक्षेत्रासुर्वातक्षेत्रियागुन्द्रन्विय। [हु'यदि'सुर्वाचे स्वयाया हेत्। [- नेशकुर्'अ'र्क्ष्य'र'विषा'श्चर'। | विश्वार्य'गृहुस'र्वेशकेषाक्ष्य'यप्रायुर्र'। । र्ह्स इंदे भेराका वरायर 'र्वेष। । तस्या क्री वियाय शुष्यर ति विवा । रैक्ष'णुर'अ'र्क्रम्'रा'विमाञ्चर'। । मृत्रेद'र्रा द्वेस'र्यम्'यठर्'सम्बर ७८। विद्युत्र तह्र गृष्ठ्वे द्रारा ग्रायम प्रमार में या । ज्ञा विश्व साम सम्प्रम *बु:*यदर:भॅर्। |रेब:गुर:अ:र्ळग्य:वेग'द्युरः। |र्ग्र:य:र्जेय:पबः कृषामवाद्याच्या । श्रीम्यास्या भ्राचित्र सम्प्रमान्य । विष्यम् न्यान्य न्रया | देशकुर्धां विनासुर। | विनेन्राया हेना ৡ৾**৾৾ৢ**ঀ৾ৠয়৸ঀয়ড়ৣৼ৾৾ঀ৾৾৾৾৾ঀয়ড়ৢৼ৾ড়৾৸ৢঀয়৸য়য়৸ৼয়ৄ৻৴৸ ८६४ त्र्रिं द्वारायरात्रात् । देशकारायाः विवाहता । व्य बर्दे'हुन्'रु'तळवर्षापर'श्चेम। । गृन्'स्रर'गुर्दाशुन्दे हुन्दे। । तर्ज्ञेन रायन्यायितस्तिरायविद। त्रिःवियास्यातुः तर्धेवायस्तु। विद्या हे'यर्वन्क्रीक्षयाव्या दे'ॲन्'यश्चराव्यःन्'यविव्क्ष्याः প্রথমথা परत्तु व केष्परामकाञ्चलावाद्वरापावीवाकीकारामरत्त्व द्वरा रिषायुर्द्रा अन्योद्भाया अत्याप्त । त्रे विषार्श्वे यस्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप न्यं व श्वें पान वे व श्वा न्य र श्वें अ हैं । व व पान दि से अहन े 利斯大羊 1

西二、胡凯二、彭、河二

व'र्थे'ग्'दु। **हे**'नर्ड् द'शे'त'न्द्रश्राधनाश्रुवाने'म्डेवार्ड्राय ই্র'ট'র্র'ফ্রাম্ব'র্মম্বনমান'নমা নমাস্ত্র-'নমা নদ্শ'র্ম तर्रः तस्र'य्याचे व के प्रवास्त्र व का स्वरं व तु[ः] विषायरम् प्राप्तुः क्ष्रं प्रष्यं प्राप्त् प्राप्त् प्राप्त्र स्थान গ্রী'লেম'ব্রা पर्रे क्रेंयायातु प्रेक्टर एक्टेंग्य विराद क्रेंग्य विराद क्रिंग्य विराद क्रेंग्य विराद क्रेंग्य विराद क्रेंग्य बेर्न्स्यविष्ठुं व्रहे। यगःस्य ष्रे व्यव्याप्त्य रहें यहें देशें *ज़ॆॱ*॔ॹॱॾॕॸॱॸॖॖॱऄॻॹॱॺॕऻॎॗऄॱज़ॹॾ॓ॱॻड़ॖ॔ढ़ॱॹॖऀॱढ़ॺॱढ़ॺऻॗॸॹॾॸॱय़ॱ <u>ট্র্</u>ব'গ্রীঝ'স্ক'র্মানকার্মবা'হিবা'নকার্মাবা'র নেবার্মানা নকাঞ্জন'নাস্কু'ঐর'র' য়৲৾৾ৢ৻ড়৾৾৻ড়৻য়৻ঀৢ৾৻ৼড়ৣ৾৻ড়৻ড়ঀ৻ৼৢ৻য়৻৸য়৻৸ৢয়৻য়ঢ়৻৽য়৽ प्रिण्यातुः प्रिण्क्केषा अतुः नेः प्रकृष्यासतुः तेः ते क्केषा नेः न्यायापा तुः नैअप्परक्षे वाववाकुर्थं प्रकृत्यं प्रकृत्यं कुर्यं गुवं के न्वें देवें दिन्त्वां <mark>ग</mark> <u>न्यत्पन्नन्त्रेज्ञन्यस्य गुन्यायस्य स्याप्त्रायः स्वाप्त</u> *ढ़*ॖॸॱऄ॔ॱय़ॱऄॸॺॱय़ऄऀॱॸॸॱॺ। ॾॆॱॸढ़ॖ॔ॺॱॻॖऀॴऄॱॸढ़ॸॱॺॺॱॸॺॱढ़ॸॱय़ऄऀॱ **८रा**ञ्च'ग्रातातळेतानु'चन्दाचातुराकेन्'अवितात्त्र्त्तेते ळ्याता र्राग्याने'''' **নমূল্'ব'ব্দ্'মিলমাভৰ'থে'পৰ্'ইণ্ম'বাৰ্মমাৰ্মাৰ্মাম্মান্মান্মের্ম্ল'''''** इवराग्रैशञ्चग्रुप्तवेशनेग् अक्षेत्राग्रीप्तरकृष्यस्त्रात्राक्रिप्तस्त

য়৸৴৴৻ঀয়য়৻ঽঽ৻৸৻ঀ৾য়৴৻য়৻য়য়য়ড়য়৻য়ৣয়৻য়য়য়৻য়ৢয়৻ঀৼ৻ঀৣ৾৽৻য়৽৽৽৽ ॅब्न्'क्न्'न्युर्यद्याञ्चर'त्र्न्र्र्यर्थायायः वृत्ययायः विष्यायः विष्यायः विष् **७** श्चे बेन्'चरिन्न्'नेरा'र नर नेरा'र शहा शुन्य केरा चरेन रामेर हो। **रक्षकुर्**पदे प्रदेशका सूर्य के कुर् क्ष कर के प्रतास के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प्राप्त के प <u> नैका कुरःगुबःनेर्'व्यायम्</u>ठेष्'यज्ञ्यास्यार्थर<u>'यःन्र</u>'। रबःकुरःपदेः ष्ठुण्यत्मनःनेःर्रुयः विषाधेनदाः ततुषः नःयः श्चेनःनःहेः मर्जुनःश्चेनः मर्शेनःतः **इ**र-र्नेषश्रम्'प्रश्वश्रक्षर्'र्नुष्टेष्ट्रं व्ययश्र हेव्रिव्यक्षेत्रहर्'र्नुष्व्यन्त्र क्रीद्रै'अ'कैय'द्वुर'प'र्र'। ८८ै'र् थे'क'इ बलपश्चेष्वलस्य ऋयं ह्वेद' मन। नेतुःगुक्षाश्चीःशुननानेःकूनःक्षेतानेःतनुग्नापाननक्षेतान्त्रां तासूः **छ्**दै'रोबराबे'न्ब्द्रप्रदेप्त्र्य। यन्ब्'बे'न्ये'क्राह्मस्या ৾৾**ড়৾৾৲**৾৶য়৾ৼৢ৾৾৾ঀৢয়৻য়৾৾ঢ়ৢ৾৾৴য়৾ঀৢঢ়৾ঢ়য়য়ঀ৾৽ঢ়ড়৾৾ঀঢ়য়৻ঢ়ৢঀ ॕॗॿॕॖॸॱॸऀॱॱहै*ॸॱॸॺॱॸ्ऄॱ*ऋॱॺॱऄॸॱऄऀॾॕॸॱऄॸॱॸॖॵॗॕॗॾॱॴॗऄॸॱय़ॾख़ड़ॴॱॱॱॱॱ कुअन् में बाबेन 'ग्रीन् रोक इवबाबेकान हो नवा हिन के तात में र न्युत्यप्य। त्याकुर्प्यक्ष्यप्रकुर्य्यक्ष्य्यं प्रदेश्वर। न्युव्यक्ष्य **हण्याक्रायां माराया वर्षा हो। विस्योगाया मार्थाय क्रियाय प्राया ।** श्चरपर है 'सुरे हुर हु बूँग गुरा पर व हुताविश्वरात रहीं र ब्रांच हुता पर्वेप्रपं संपन्नवार्षेष्यपरिष्टम् । प्रारेष्याम् स्वाप्यस्य प्रारेष्य *नेॱबबायन्ग्'गैबाकुन्'खायकु'सुपकु'साक्षन्'कॅ'सु'द्वेन्'यब्नु-'पबादुन्'''''''* सन्ताः हेमर्जुवय्रमनिवान्वरः नदीः नवियः निवार्भेः निवार्भेः <u> नशुक्राक्चे:८स:तुन:७५'रु:पक्र५'क्रा</u> क्च:न्र-स:छैक्:स:५ॅक्:बे५:रु:कॅ**र:**

ग्रा रजुलावस्थातर्भें परातु चेरा र्रार्थेग्रा देश्ह्य <u> त्युरः वर 'तु 'ग्रेन 'र्वर 'त्रुग'रा'य। हे पर्वव ग्री 'वर्य वर्ष। तु रक्ष</u> छन्पन्त्रार्थेण्केन्ब्रा हिन्द्राक्ष्यं स्वरायेन्द्रप्रस्त्र् तुःदुन्'र्वे'त्र'न्नातःत्र'न्द्रायम्बद्गेतुरा'द्वेशंनेना'नशुनः। हेन्दुद्वन्नन्ते श्चिष्वर्वप्राप्त्रित्रवार्यिकेतिविध्यज्ञान्त्रे ज्ञाति विष्युक्ति विषयि वि <u> ने 'हेन' हें 'हे 'तळन' नन ने हे र बेन' नु'य शुण्या प्राथा व्यन'य दे 'ह्र' य श</u> श्चव'न्र'कृव'ग्यवा'ग्यव'ग्रेव'ग्रेश्चर'व्यक्षे'ञ्च'त्हरान ロダイロ'イベ! मन्दान्वेदान्द्राङ्गरायान्वे पर्यापाष्ट्रास्त्रीत्रेत्र्वेरावर्त्वाव द्व'रु'तर्थं'प'र्ट्'। श्वेव'सर्वस्याव'र्द्र्र'ग्री'सर्थ्र'द्र्र्'नेर'श्रेट्रंष् द्रिष्यः प्रमानः ।
 द्रिष्यः प्रमानः ।
 द्रिष्यः प्रमानः ।
 द्रिष्यः प्रमानः ।
 द्रिष्यः ।
 द्रिः ।
 द्रिष्यः ।
 द्रिः । र्स्य मिति होत्रा दिन् की ज्या के न्या मुन्ति हुन्य मित्र इयराञ्चरायरायगुर्दिंगहर्राया

तुः पर्रेण प्रांत प्रांत स्तार्य सहराय। या प्रांच के क्षेत्र व्या के प्रांच के प्रांच

क्षेप्र धिः इंग्वरिः हे 'क्षें यथ। विश्व हिर्मिष्य प्राप्त दे। विहर है द क्षुं द्वते : न्दाया प्रत्या । इत्या न्दाये विषय स्वया हिन्दे । दिन्दे । दिन्दे । दिन्दे । दिन्दे । दिन्दे । दिन ष्रायात्रयेतात्रीयायेन्याधेन । सुःषायळ्वाळे वातने छे स्ना कुर'क्र्र'बॅंके'अर'तुर्'दर्जेदेख। ।तु'अर'विवा'वार्वव'र्रः'रक्षकुर मा े । यन् गः ने द्वः भी सुः गः व। । दिन् चे रामः ने गः द्वः द्वः द्वे। । रेवः ळेद'सुन्'चदे'इय'च'ठव्। |ग्यन्'च'ह्य्यय'कुन्देंचे'वेन्। |श्रॅण् **४**ल'न्तुःबरःह्न्'च'ने। ब्रुन्'नें'हेते'चह्नब'घ'तर्केन्बपते'हण्या । *चु'ढ़;*ॸ्ॱॺॅंॱख़ॆॱॺॱॺॸऀॱख़ॆॱॺॕॸऻ<u>ॗऻॹ</u>ॸॱढ़;ॸॱॺॕॱख़ॆॱॺॸॱतॗॸॱढ़ज़ॕ॒ढ़ऀॱॿऻॗऻॗॎ व। । बह्द्रभुन्द्रस्टिश्राचायय। । द्रिन् चेर्स्ट्रस्टिन्द्रस्टिन् ५८। । ५१ अ८ इर नते नत्र ६१८। । यह या कुरा सुन्य हेरा नश्चतानिरंदिन्। । या बह्य व के व तिरे के बिन्। । मुन् व वे के यन हुन'लर्ज्ञेदेख। ।तु'यन'विषा'ग्रॉक'न्न'नर्यकुनय। ।नदेख्रीव! राञ्चानते ६ व व त्र त्र दे। । यज्ञानवर्मे (८ न पानकुन सा । है ज्ञालुः ैक्षेग्रु'क्षे'प्रवृत्रवा |क्षंचे'वाह्यर'क्षुंच्युंचा |वाह्यर'र्द्य नहें न् द्वार न न में हिन् मुक्स मिर के न के का मिर के न इवरान्द्रभीद्रम्थात्कन्। । यात्रव्यक्षेक्ष्वत्रहेक्षेव्यद्। । कुट् *६*न्'ॲ'के'यन'तुन्'दर्जेदेख। ।तुःणन'विषा'ग्रॉव,न्न'रवाहुन'य।। ्रते दें देख राग्ने श्रेन माना । देव के वान्यसमेतु सिन समस्य। भुभाष्यात्युर्यायवेत्याकृत्। ।कृत्कृत्कृत्कृत्वेत्वेत्वह्न्

प्रस्ति स्वराद्य स्वराद्य स्वराद्य स्वराद्य स्वराद्य स्वराद्य स्वराद्य स्वराद्य स्वराद स्वरा

तुः भर्ने कुर्या वृक्षां प्रत्या वृक्षां वृक्

त्रिर्सेद्। । अनुः अपारे क्षे चें वहार विषय । द्विरः या क्षु व सरस्या राषी । गहार ने से हिरे र ग्रीय र मिर पेता । श्रीव यह बरा र र न्गरत्रिर्वेदा । यरवा श्रुवार्वेत् प्रते क्षेष्ठेव वा राज्य । विष मैशरीगराकुर्देन'र्राप्या । गुर्वेरायेर'र्देरेर्राकेरायेर् नव्या शिर्पे परे किया नियम प्राप्त स्था नियम प्राप्त स्था नियम ळॅंग्रायलुग्या । ४:५८: ग्रुट: येयय:५ ग्रुट: येद: प्रते । प्रने प्रते वर ग्रायात्रीतावेन्'पान्देशसुप्तहर। विषयात्रस्यीपहरत्सुस त्र्या । तुः क्ष्रन् कॅं क्षेत्र तर्ने क्षेत्रं । तुः ननः यात्रं वाः नवाः सूनः ब्रुदा। देशम्बुदयप्यया त्रयद्धत्पावस्ये। हेप्पर्द्धव्यीःबुपः ह न राधाय संद रहे है। यन न न रो येन पर स्था हैं ये तिन या पान राधा । **र्धेग्वर्रायर्व्वेरप्रया** यर्हेग्वर्वय्येश्वर्यास्य न्रें रायें द्वयायार्थे प्रायेन प्रायेन प्रायेन प्रायेन विवाद व्यावा प्रायेन विवाद व्यावा प्रायेन विवाद व्यावा रान्त्। कुरे:विषायातर्वेदाविनायहष्यायान्ता सुर्यवासेत्रर विर्ः स्रियापार्यार्या अर्धुत्य राष्ट्रियाय वाष्ट्र राया प्राप्ता व्यायावतः वगुरः ८देः गहारुषार्था 🔰 📗

तुः धनः विवा वार्षवः प्राप्तः स्वा । प्राप्तः विवा वार्षः वार्यः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः वार्षः

दर्शकुर्यापारदी सियायार्चेनायह्यावुराधितःहर्याया ।ह्याया मत्रेन्क्षुंन्यत्री ।त्सुन्यतेष्वरेग्रुत्रदेश्यतेष्ह्रव्य। । । । । । स्य वे'त्रत्र स्डुत्विग्'त्री । वन्'यर है सर्वे वार्चे व्यते ह ग्या । 5'यरत्रेन'रेन'रुन'पत्री । ह्यापयत्र्वांन्व'तुवाददेःहग्या। व्यायायराष्ट्रीत्रायसञ्जीत्रायात्ति। जित्तार्थेयवात्तियसञ्चरायदी हर्ग्य। ।तुःक्षन्धाः कंत्रात्ने केस्यन्। ।कुनःक्षन्सं केप्यनःतुनः **৫ মুখ্য বিশ্বাল্প মান্ত্রীন্ বাইলেনে ইনা | ভিন্না বাইলেনেরা रश**कुर'र।'व'रे। हे'यर्ड्डव'ग्रीशुर'हणश्चीशपदे'डेर'बॅ'ड़्रर'द्युर' <u>ঌ</u>ৢয়ॱৢৢॱऄॕॖड़ॱय़ॱय़ॸऺऀॹॾॣॸॱय़ॱॹॖड़ॱय़ॱᡠक़ॱक़ॱज़॓ॕज़ॹॱफ़ॱख़ख़ड़ॱक़ऀॱऴ॓ॱय़*ॸ*ॱॱॱॱॱ ग्रा हें पर्वत्रं मुक्तियान्य। सुम्पयान्नायायायम् केन न्यायायात्रे प्रस् हुरावाद्मर श्रीनास्वयाकनान्ये। साववाद्मराज्या ষ্ক্রীন'ন'ম'বার্হাম'র ইন'উব্'বাগ্রন'। - ইর'গ্রীস্টন'ম'র মহাক্ক্র'নন্দিমম त्रद्भर⁻र्द्भारं विष्पॅर्पर्प्यते त्र ष्या क्ष्यं क्ष्यं के क्ष्यं विष्पॅर्पर्पः नेते विराय र्धेन'न्य। सप्टेंन'नेनन'स्रायकत्। सुक्राधन। तत्यस्रा महेरापित्यवरम्पॅनिनेखन परिकृशुनकेद्रांनेदिवन्तुःखुग्पा"" ग्रिग्'वैद्यात सेद्र'याद्ववययर्द्र'यदे'त्ररायावगुरादर् ग्रुट्यादा । तुःषरः विवा गुर्वत्रप्रः रक्षक्रः य। । वा ह्यं गुर्वा वया वस्रार्द्यरः र्वा र्मतर्नेत्। । क्षण्यक्रिस्पर्नेतः तुर्म्यकुन्य। । तर्नेश्वपरत्रेष् इयराग्री गुम्बर हुर दिव | यर दिवें इयराग्री गुम्बर हुर दिवें ।

सन्रत्भं म्बन्य प्राचक प्राचन विश्व व्यंत्रा । न् वत्रंद्रर गर्डे न् द्रादि स्र गर्डे न् । व्हाद्रर त्रु र द्रा तर्भेत्रा |त्राक्ष्या |त्राक्ष्याच्चे व्याप्ते क्ष्याच्चे | व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप्ता व्याप तमेव्यंत्रिक्रातमेव्। भिष्यात्त्राचाक्रुक्षेव्यंत्। वितर्दत् छेत्। । यात्र व्यव्यक्षेत्रपदि क्षेत्रं । । क्यतः सूत्रं के यातः तृतः य ज्ञीतेः ह। दिस्रान्यक्रियंत्रक्षित्रक्षित्रम्। विद्यानश्चरवायम्। रह्म इत्रायाक्री न्याक्षित्राक्ष्मित्राविष्ट्रात्स्वावर्द्ताः व्याप्ता हे'गर्ड्ड द'ग्रेश्वर'त्रवर'ताम्मिन्'रा'यहंद 'द्या वन्'त्यर'क्रें न्यर मे য়ৢঀ৻ঀ৻ঀয়৻য়৻৻৻৻৻৻৻য়ৼঢ়৾৻য়ৄ৾ঀ৻ড়ৼ৻ঢ়৻ঢ়৻ড়ৼ৻ঀঀৢঀ৻য়৻ঀৼ৻ ॺॖॕॴॱऄॸॱढ़ॎॿॖॴॱय़ॱॺॱॺॕॴॺॱय़ढ़ॱॿॖॕॖऻॸॱॺॴॾॣॱख़ॕॴॴॺऻड़॔ॸॱय़ॿॖऀड़ॱॴॶ*ॸ*ॱॱॱॱ तर्ने गुजुरकार्थ।।

त्यार् विवाग्वार्यन्तर्भः विद्यात्याः । व्याप्तार्थन्त्रः विद्याः विद

सु'यर'विनानर्सव'र्र'रस'कुर'र। । स्वारेश्वन'रवरर्धेग्यर्घः व। ऑन् र्नेव अन्य दे हुन वे हु। । अन् के व के न व न न न न ¥'ष्ठिष्'क्वे'बेर्'र्ह्सकीु'र्दीरया | १८**प**ण्'बेर्'र्र्'बर'प्रराधित्। | कुरः गृरुगृञ्चरः गिरः र्वरः यः धैय। । कुरः हुः नेरः द्रश्यः य न्यः ।। **ঈর্'য়ৼয়'ৼৼ**'য়ড়ৼ'ৼेग्'रा'ऄয়। ।য়ৢৼ'য়ৢ'गुब्'য়ৢৢ৾৽ঀ৾ৡ৾৾৽৻য়৾৾৾ঢ়ৢয়।। ग्रुम् दिर्देश्यार्थे प्रम्यापाये विष्या । श्रिया रश्यापि श्रुवारा भिषा । रहा हर में हे मुन्यायाया । क्षेर पॅरि में क्षेर प्राच्यायायाया । स्यान्यायाया रक्षप'नक्। |पर्मेन्'प'शुक्षकीुं हु'तह्युक्षका | दिंशसंर क्षेन् कें के के यत्। । कृतः अप्तक्षं तुः पक्कंतिः क्षुत्यः यात्। । व्यायकं वासूत् विकेषाः ने। । रशक्र स्र पंत्रवादि हवा । इति हलाया अहर तह वावी । ५'तुर-५,५'धरकी'त शुर-पदी । क्रिष्यातुषा५५'खे५'खुर्ह्मपाया । मसवामिव्यस्तात्र्र्ये स्टेशपरत्र्युत्। त्रुप्यस्तिग्गार्यव्यत्र् रबाक्कराया । शुभनते वैरापरा जुरानते दा । नगुवादा व्या न्दरलन्ब है। । तर वेबब कुर में बर्दे ल हुन दुब बेद। । तर

য়৾য়য়য়ৢৢৢয়ৼৢঢ়ৢঀ৸ঽঀ৾৽৴য়ড়ৣৼ৽য়৻ ८र्देन। । यहुलान् मुलार्च या गृत्रा सम्बाही । यन् गृत्र है गृज्य संदर्भाराष्ट्रवार्वेन। । यन्नादहेन देन्यायाषु सर्वेन राया छन | ग्राया के के प्राप्त है। [इबर्भेग्'बह्मस्यायक्रीस'नेबर्ज्यबेर्] [बह्मस्यायद्वरायका ह्य-वानिग्रन्थक्र-पा विवासिक्ष्य-न्रानवयासिक्ष्या । पश्चनशक्षेत्रार्थसम्बद्धाः विद्यालयाः विश्व । त्रार्थसम्बद्धाः विद्यालयाः विश्व । त्रार्थसम्बद्धाः विद्यालयाः वि नैसातुसाबेत्। |सेबसावेत्भेष्ठे व्यत्भेष्यसानेगात्साख्याः। । पद्रेः मतिःसंन्दः चुवकार्यते या । मञ्जूरः दःस्तृरः दंशः ग्रादःस्य व हे। । प्रेश्राम्ब्राम्ब्रास्य हिस्तुरावेत्। । प्रेश्राम्ब्राम्ब्राम्ब्राम्बर् कैग'रब'कुर'य। |स'अथवायर'र्र'वर'गेविंदा ।श्चरबावा त्यं दश्चं अपन्तः त्या शहे । भिन्तं न्यां तुषायेत्। विपत्'र्न्व'ग्वेर'र्श्वरयंत्रेग'रहास्त्रां । विस्तर्यंतिः कुन्दर्वस्यायदेश्व्राचा । ज्ञुन्त्यन्दर्यन्त्रस्याचा है। |यसपने देंप्तह्यपने सामस्य कर्म विष्युग् रंजुम र्शेटल'नेर'रशकुर'य। निर्देशेरेर्न्स्द्रेरदेशेवन तर्सेन्'र्रवान्त्रःसन्य है। विभेषान्न्द्रित्रः स्ट्रित्रावेन्।। रोबरा है द'ररावता दें राविषा र स्क्रा या । क्वारा देरे या गरा न मर्जुवाबेदिखन। विश्वावान्यदम् देवान्दारम्बाहि । दिक्वान्त्न ग्नैद्देत्रित्रवात्रवेत्। [तक्षेप्तवात्रत्र्वेत्रत्रवेग्रत्वहरा।]

र८ कुर्'र व'यदे'सूर' प'र्ह्चेग । क्विंर'यर व'यदे'हवा' त कुर'वेग । **घ**र्ग'तहेत्'तम्'र्वेते'र्ज्ञणयार्थेर्यः । विष्यर्विययर्ने यय । ग्रॅंब्'ग्रुम्'ब्रेम्' गृत्याने' (यश्रवेन्। াই'ছু হ'মের্মিমাউগ スタ(多力、な) वियागुष्ठान् विनाहे यहाँ भे स्वाहं भारती सहन प्रमास्तान **५८। रक्षक्रपात्र्युप्पाद्रग्रायप्प्रम्। ५५'यान्त्रव्यस्यायेवाया** विगाने या है। हें नई व 'यन 'पन तिव मान मन के निव है दुलात नारा ह्रें का का हिन्दा परि देवा भी का का का का है पर्द्ध का है पर्द्ध का है। दंशिक्षावादान्य स्थान्य स्था बहित्र हुँ न्'नु'त हुँ न्'न रात नु म स्मा स्मा कन्'न का नित्र हुँ न्'की नहीं न न्नाया बेर्पित रेपे हरा के प्रेत्। र न्या पर तर्रे ता हे तहा कुळा के प्राप्त ळे'रतरान्नसस्टन्'रु'हें'वर्ड्ड् न'ग्रें'तुर'रु'क्रेस'त्रसम्बर्धान्य मेन्' ग्रेग्'रु''" ८रेप्टर्म्यार्डग्रेंब्र्स्याद्वराया हाराही वेष्ट्याप्यं वदाय्याया वाप्ट्राय बर्ह्रम्यायम् अयपन्धुर्पप्रम्यक्षात्रम्यंष्वात्रस्यात्रेन् ष्रं क्रुं र हे पर्वं वर्र सुर परिशेषाया वुर पर्रा ग्रन्पित्युन्य <u>५८ ब्रे'ह्रप्राधिशर्रे ५८ केर्रायहर् ५ विटा</u> हेर्न्ड व्यक्तिस् परः पड्यक्षराया *विवाशीका* क्षया परः तात्र स्वरः सुपः उत्। मूर त्र्वांचारी वार्षिवाचवासुतिः श्रीनावार्वे वायानुनः हे छै। नावे वार्षे वायावा । अगाः <u>र्वरक्षित्र्र्त्वर्वर्वस्यस्यः वर्ष</u> न्न भीत्रा नेपान हे नर्दन भुष्य अनु हुन हो। न्न राय दे नव

त देग्रा ग्रामाण्यम् वृत्रा वृत्रा ग्री स्वास्त्रा । स्वास्त्रा व्याप्ता व्यापता व्

त्। विवशहेकानश्चरकान्त्रित्त्वसाय्यः विवश्वर्त्त्रास्यः विवश्वर्त्त्राः विवश्वर्त्त्राः विवश्वर्त्त्राः विवश्वर्त्तः विवश्वर्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्त्तः विवश्वर्तः विवश्वयः विवश्वर्तः विवश्वयः विवश्वर

म्या-पर्वा म्या-याव्याय्या-याव्या-याव्याय्याय्याय्

रमरामः श्रेषे वरातुः नव्हा । मर्डे अः स्वः श्रेष्ट्रे वितातुः सुता ग्वद'गुव'स'मद'मदारळेंदवा दि'वे'च्द' यक्टे'रू दुवा **६**ग'नर्मांशकुषियार्थयश्चरान्य**ग** । पट्ट्यायाय्यनः हूँने ने रूँना । イタ'&「ハク'が अयर राज्य राज्य मात्रान धिन प्रसाम नेतान राज्य मात्रा मात् ঀয়ঌ৾৾ঀ৾য়ঢ়৻৻য়ৣ৾৾ঀ৾৾৾ড়য়ৠৼ৻৻য়৾য়ঀয়ঢ়৾৾৽য়ড়ৢঀ৾য়৾ঀৼ৻য়ৼয় য়ঀৢ৻৸৻৻৴ঀ৾৽ড়৻য়য়য়৻৴য়৻ড়ৢ৾৾ৼ৻৸৻৴ৼ৻ঀ৾৻ড়ঀৢ৻ঢ়ৢ৻ঀঀয়৻য়ৢৼ৻ঀয়৻ ৾৾৾৾ঌ৾ৼৢ मरात्र्यपति'न्ग्राञ्चं'न्न्। श्चायायायन्यज्ञयान्देराजीत्रुःवेया **र्**निकेत्रवार्यात्रयुराहे। न्याय्रायाः स्वायित्वार्याहे वायाः तुः নষ্ক্রনম। ৴'ৢ৴'য়৸ৼয়ৣ৸'৴য়৾য়য়ৢয়য়ৢৢ'৴য়৸ঽয়ঀ৾৸ৼ৴য়৸ঽ৻৻ बबर पश्चितायधिदार्वे। ने दबाबकेन में ग्राह्म बकान्य विद्यास्य ताभून'यहरायय। गुवारतुयावयारवाकुन'यतित्वेव'श्वेयवाद्यांहेत्वा त्रिंरःवेषायहर्पतिष्यसत्। श्रेष्यवप्रसम्बद्धस्यम्। हेर् **ॻॱ**ज़॔ॸ॔ॖॖॕॖढ़ॱय़ॱय़ॱॾ॓ॱॸढ़॔ढ़ॱॼऀॱॶॸॱॸॾढ़ॱॼऀॱज़ॸॺॹॸज़ॱॸ॔ॸॱॸऀज़ॱय़ॱॱॱॱॱ गुरुराग्। चुर्रायं न्या क्रिया प्रस्ति। प्रस्ति। प्रस्ति। स्राप्ति। स्राप्ति <u>हेपर्वन्धित्रप्तक्रम्याष्ट्रप्ति</u>च्छित्रख्यावेन्वित्रत्तिः इर्तास्या अविवासिकान्या स्याक्त সুঁ ন: গ্রী স্থাব বা **घर्यक्र इंदर्भ हें गृथ्य वस्त्रे द्वन्य हु स्यां ।**

मिन्यश्वर्याकृत्वर्यं विषय्याकृत्यं स्वयं स्वयं में स्वयं स्ययं स्वयं स

सुन्न हुन्न परि से प्रेमिया । इस्मान स्थान स्था

出す、数型、イグ、これが、数十一

म्रवाश्चित्र है। देवर्ष्वयायायायायान् केन्यी सुन्यास्यायाया ছু গ্ৰহ্মন্দ্ৰন্থ, বৃহান্তা ব্ৰান্থ মুষ্ট্ৰাই হ'ড়'আই নি নু বু ব্ৰান্ত मलकेरत्त्राचित्रें व्यान्ताविष् । यहस्येन् क्रां मं पत्रें द पर्यादें दर्शक्षर प्रमुद्र श्री अगुरः गृह्यद्वाव्य । इबबाग्रीबाञ्च वर्द्रम्बाने पत्ववाययि तुबाबु प्रवासी वर्षा तुबाज्य वर्षा ज्ञान **धि**द'चदि'र्ङ्ग्रेय'केद'वेषा'हे'यर्ड्ड्न्'ग्री'ङ्ग्रद'चदाधीन्'दर्खेष्वराहे'वदा'यक्षर'''' **ॅ८ - अप्तान्य विषय्य विषयः विषय** कृतः ते प्रदेश्व प्रस्तः संक्षेत्रं स्वायाया व्यव्याप्तः प्रमुद्राप्तः स्वायः स्व মন্দানুদাঝামিইবাঝাট্টাস্ক্রারের্ণাইদানেদাঝা হুনাস্ত্রারে দানেশ ন্দাগ্রীঝার্ট্রান্ট্র্নান্ দ্বের্মার্ক্সমার্মাখন দ্রেরা শর্ক্সরাজ্য দ্রিন্ য়ৢ৾ৼ৻৸ঀয়৻ঀৢ৾৾৻
য়৾৻য়৻ঽয়৻৸য়য়ৢ৾৻ঢ়৸৻য়৻ৼ৻ঽয়য়য়ৢৼ৻য়ৢৼ৻য়৻৴ৼৼ৻ &দ। স্লামাট্রিদ্যীস্থরামার্মার্মার্মার্ট্রার্ট্রার্মিন্মামানার্মানার্

ॕॕॕॳॱॻऻॺ॔ॸॱॻॸॱॶॱॶॴॻऄॱॴॺॱॸॖॱॾॆॱॻॶ॔ॺॱॼऀॱॿॎॵॿॎॸॱॺॴ इयरातनेॱढ़ॖॹॱऄॖॺऻॱॷॸॱॻॱऄॺॱॺॖॴॱॺऻॖॶॸख़ॹॴॖॸॱढ़ॸऀॱॺऻॗॶॸॹॱॱॱॱॱ ॕॕऻऻ

न्नायान्यापत्रम्न्यराम्यान् । निर्म्भवानुम्ययान्यस्य र्शें संरहिष्यित्रायतः ने । पाने सारहिष्ठिष्या सुराया । हॅं प्रायम्ब प्रतिक्षाम् दे। । प्राव्यम् स्थान्य प्रायम् । प्राव्यम् । प्राव्यम् । प्राव्यम् । प्राव्यम् । प्र न्दै ग्राबेन्'मराबाग्व दाङ्ग्रीयापाने। । यळवाबतीत्र स्टाराया यह ग्रा |रॅॱक्रॅंबरा**डे**८'पदे'क्वॅ८'पदे| । मेर्केंबप्पव'पर'स क्रेंस त्या । शुः प्रत्रापति । वावव द्यात विपातुः स रेतव। । जुन्दरायात्वेयावयश्चिराने। । गृंध्याळपासूराय *क्षेत्रसम्* । रोबरा हेन् 'गृहुग्'याक्षेत्र' प'ने। । क्षिं 'सुरा गृहेका ग्रीका |ঽৡ৾৾৻৽য়৾য়৾য়৾ঀ৾৻ৼয়৾৻য়৾৾য়৾৻ঀৢ৾৾য়৾৾৻ঀৢ৾য়৾ অ'নপ্রুণ্'ন্মা नत्र्णीयां अष्टिरात्या | देशावाः अरेगां पश्चितात्रों तरत्रेश | हैं। बावदार्विरार्वेगविदानुप्रिया । विवागश्चरवायवा विदारी ष्ट्र-ने'न्द्रवे द'रून'चुन'स ग्रान्'ने'न्द्रवे द'अभेद'पते'न्नन' **न्न**'ग्नस्य न्वो क्रुं र क्रिंबा के के क्रिंबा क् न्याक् वित्रत्यापा हेपईन ग्रीसन् में न्यान्या अप्तार् निर्देश के स्

মের্ নির্কিন ইন শ্বন্ধর্ম। ই প্রিণ্ডিশ দুর্ন শ্রীমা প্রান্ধর্ম। বিশ্বমাপ্র মান্দিন নাম শ্রেমাপ্র বানের পানাম শ্রিণ শ্রন শ্রীমা প্রান্ধর বাংশা মার্মানের বিশ্বমার বিশ্বমার শ্রামানি শ

न्यपरेकुन्परहेन्पर्व । त्रुक्षन्नन्त्रुन्न्पः । <u> ५८। । इ.च. तुष्यश्र व्ययम् ५८। । १८२ ५ ग स्व व द्राय व द्राय व द्राय</u> ড়ৢঽ৻ ৻য়৸য়ৣড়৾৾৵ৼ৾৸ঽয়ৄয়৻৸৸৻ ৻য়ড়ঽ৻য়৻ৼ৾৻য়য়য়৻৻ৼ৾৻ঽ৻ र्में राष्ट्र वेर्। व्रिंश स्थाप्तर दर्भ पर प्राथा विश्व र स्थित प्राधित प्राध মমন্ত নিশ্বা বিশেষ বিশেষ বিশেষ বিশেষ বিশেষ বিশেষ াগ্ট্র <u> ५८ ऱ्या राज्ये स्वाह्म द्वार । व्रित्या स्वाह्म स्वाह्म द्वार । ३०</u>० कॅट-<u>र</u>-चे-र-बे-र-क्रॅग-तु-खुन्न। । इस हॅग-क्रॅ-र-व-वॅन-रे-बॅटन। तके'ष्टरत्युं ५'ने'बे'तके'तवा ।बे'हग'तके'न'<u>५</u>व'घ'धेवा ।ढ़ेंव' इत्यत्यान्याके इत्येवा विम्नुवानायन सामित्रा के यान्या । |तेवरायारे ने या पश्चाव | । अर हग्रहेश्वर्'दशेयानवे वर्त्। व्यमञ्चल पुरुष्य हेन प्रमान । प्रमान्य प्रमान । हिला শ্রমণেত্রত দ্বারা বিষক্ষী স্থলতে মীন বিষ্ণান্র বিষ্ণ **`**ह्रभाम् इत्रत्युषान् प्राचिषा । अमः अति वनसामयाया मञ्जनसामा । ढ़ॕज़ॱख़॔**ॸख़ॱॸॹॱॸॕॱक़ॖॖॣॣॣख़ऄज़ॱॺॸढ़ॎ**ऻड़ॺॱफ़ॗॱॸऀॱक़ॕॖॸॱॸऻॕक़ॱय़ॱढ़ॹऀॿॺऻॎ े ऍव'नव'नेवायरक्केंबाने'बढी । प्रात्यायवा अर्वन'यार्थ्य'केंहे मर्द्धवायन'क्रुवा प्रिन्'स्ट्र-देश्वॅन'त्यान्योतायेन'तुः मर्झेयरायका **हॅन्याय १९८७ म्या १५७० व्या १०० हे** पर्यं दे श्री हिन्द र है हे न्याय था स्थापन स

बहेशहै। वेष्यत्तिम्न्'त्रम्म् मुद्दार्थन्ति स्थलास्य स्थले स्थले । 5'न् में सम्बद्धे स्थला स्थले स्थले प्रमाणकार स्थले स्थले

तु'न्र-कुर्-अन्देंपश्चर'ग्श्य| |ने'ग्श्यद्यपद्रिंग्हेर्हेर् |क्रमायह्रन्द्रवश्यीशश्चर्त्त्रस्याया |स्यान्त्रायान **हुँ**८, फ्रिन्य, ट्रेम्ब, मश्चिम। । ५, मश्चिम, प्रत्ये, प्रत्ये, प्रत्ये, प्रत्ये, प्रत्ये, प्रत्ये, प्रत्ये, प्र इंबायह्र इयश्चित्र इत्रत्याया । यो के वर्ष स्तर्भ स्तर्य स्तर् শৃষ্ডবা । বি'শৃষ্ডবার্মানেইসংগ্রীনের্মানব্নমামির। ।ই মানার্ इयम्ध्रीमञ्चरात्रवसाया । वरान्दरात्मानुनान्नेनान्दरान् ने'गह्यअद्गत्रस्त्रें रक्कें केंस्संभेत्। ।कॅस्सर्न् द्रस्रिश्च्रार्त्त्रस्य | न न अप न मान प्राप्त के प्राप् শা म्योर्प्ताधित। विश्वास्त्रं इस्याधितासूत्रं तक्ताया। स्रायान्त्रं म् न्यस्यम् म् न्यम् ब्या । ने म् ब्या स्याप्त के म् बि हे व भेवा। क्रस्यह्रेनं च्या क्रीया प्रधिया प्रधान में स्वर्धिया हिना स्वर्धिया स्वर्या स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्धिया स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्या स्वर्धि तक्ष्यं न्युवा १२ म्युव्यद्गत्यत्र्वे रक्षेत्रम्रापेदा । क्रें यह र इत्या श्रीया प्रमुपात स्थाया । या से म्या स्थाप । दे ग्रुअद्मार्ट्यं रक्षेग्न हर्त्र्याय्येत्। ।क्रेंश्यस् (द्वयश्चीरापञ्चाप तहताया क्षिणपास्ववस्तरहत्तर्राच्या निपाश्यक्त त्र्रेर्शित्वेर्रेष्पेत्। ।ह्रायद्र्द्रम्याधियपञ्चापत्रेत्रां।। हण्याचेन् वृत्याचेन् वर्षे ह्रणराष्ट्रवा । इंद्रायह्रं द्वयाग्रीयानश्चरातकपाया । वेदा श्रुत्। तेलक्षा वेक्यत्रेक्षणः प्रतित्रेष्णः सम्राह्म । श्रुत्। तेलक्षां प्रतित्रक्षणः स्वायवा यदेश्वणः प्रवायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः

रराष्ट्रें ररावे याने यान यान वाया वाया या देन प्राप्त वाप दे द्वारा प्राप्त वाप दे द्वारा प्राप्त वाप दे वाप व ढ़ॎऄॗ॔ र दर्य भर पर्ने । । त्रुगाप ते हे बाबा त्रान्य द्या हुना प्रस्थे र क्चे<u>त्र'ग्रेत्र'यत्रेक्षंसप्त्रव्यप्पत्</u>षुण ।व्यप्तर्रेश्चरत्यायव्याद्वरात्रवुरः बेन्'रम्'बर्ग्न्ग्'पदि'इता'दर्धेर्ग्द्रवा'यम्'पन्। । धुन्'सेर्ग्नेवानुः <u> तत्र नक्ष इत्या व्यव्य प्रमान्य प्रमान्य विष्ट्र व्यापाल व्याप्य स्थल ।</u> ङ्गन्दाः के **राष्ट्र** त्र त्र त्र त्र त्र त्र देव देव है । केंद्र त्र के तृष्य देव के तृष्य है । के देव है ने देव है ने देव है । के देव है ने देव है । के देव है ने देव है ने देव है । के देव है ने देव है ने देव है । के देव है ने देव है ने देव है । के देव है ने देव है ने देव है । के देव है ने देव है ने देव है ने देव है । के देव है ने देव है ने देव है ने देव है । के देव है ने देव है ने देव है ने देव है ने देव है । के देव है ने देव है ने देव है ने देव है ने देव है । के देव है ने देव है । के देव है ने देव है ने देव है ने देव है ने देव है । के देव है ने देव है । के देव है ने देव है । के देव है ने देव है । के देव है ने देव है | হলথাত্র 'প্রথান্ত্র'প্রথাব্রান্তিম'রুল'র্গ্রা ন'ব্য'অন্পুৰ त्रिरानदे:इतादर्धेराव्यायम्।यन्। |श्रेकेंयम्यायम्।तृत्याव्यादकेः [मर्पर्केत्र्पाक्षे<mark>र्राप्तिरेक्षंत्रापात्रवायम् कृत् ।हेन्</mark>त्राव्यंत्र्विम् तुःकुन्यत्रा *শ্ব্যা*প্তাশ্বন্ধানীর্দারীর্মারেট্রন্বরাখনানী য়৾ড়ঀ৾ড়৻ৼ৻৻য়ৼ৻য়ড়৻য়ড়য়য়৻য়ৢৼ৻য়ৢঀ৻ড়ঀ৻য়ঀ৻৸৻য়ৢৼ৻য়য়**৽** पर्पत्र

इंश्रामायात्रामा । ४६०० हे वार्षामायहरा वर्षाक्षेत्र १८६व महत्र **ग**़55'इस'नदे:इस'दर्धे रव्हाथर'नरी <u>বি'র'ঝ'য়য়'ঢ়য়</u> **दश**नुन्थेन्'ग्रेव'त्रुव'र्सुन'म्ते'र्केश्य'द्यायन्'ह्रग् ।विव'य'दन वर्षार्भेग्'वर्षाम्यराखन्ध्रि'यराहेंग्राधिते द्राधार्ष्ठे राव्यायराचिते । न्येर नदी तथा नु 'तु ग्वा व वाख्यार ग्वा व व 'तु 'त्र मृता नदी हैं वादा व वा पर ' **। पर्सें व 'त शुक्ष ह 'या वें व 'व का चर्रा परि'का या या प्रांत् 'च वे' द या** तर्चे रवरायरायदे। । शिर्यते क्वेंग्रां हुं हुं द्वार विरायते गृहे र क् **ब्रेन्'प्रतिकें सपावयायमाञ्चन । इसामराययाञ्चार में नराकेन्'व्याक्ष्न** सं शेशवायाभ्रामित्रसार्धेरव्यापरम्। । विवायवाक्षयानुवादवा हुँ त्रायाञ्चेषा'याचेत्'प्रदेशक्रं स्पाद्य'प्या'ञ्चष । रेप्तेष्व संकेटियक्रिं क्रिं दशन्तुन्यासुन्दन्वेन्पदिःद्वयादर्जेन्द्वयापन्यदे। । सून्यन्वे <u> न्गु'कुच',तृ'चश्चरवद्याहग्'तृ'क्षे'कॅश्येन्'घिदेदयात्यॅं र वद्य यर'''''''</u> मन्। विवागशुरुरामव। युव् क्षें यात्राचेष वापति सुर्श्वे पाइ वदा ग्रीवा हुन्यक्रुन्द्वं प्रया न्न्य्यमु धैन्द्याने প্ৰথম্মাৰ্মা,প্ৰমা,শ্ৰী, <u> इयाच्या विषयत्य विषयत्य विषयायः विषय्य विषयः विषय</u> 別の教がとれていて、いん য়ৄৼ৻৴ঀ৾৻ঀ৻ঀয়ৢঀ৻৸৸ঀৠৢঀ৻ঀৼ৻য়ৢৼ৻৸ৢ৾ঀ मर्जुवायनः सुगवानेवानुः अनेवानेनः। नुगवारानेवाराकेतेयानः अकेनः অঁব'ন্ন'ৰ্শ্বনি'আৰ্ অক্টাইন্'অম্যুম'ন্'**এব'**ই।। मतेःश्रवाञ्चनः ईवान्यापते ईन्स्र

न्यायक्षयम् ।

इसार्वे रक्षेन्ना द्वापन् प्रमें हेने केन्के ব'র্ঝ'শ্য'ন্ত। য়ৢঀয়৾ড়ৢয়য়য়ড়৾ঀৢ৾৾৾ঢ়য়ৼ৾ঀয়য়৾ৼৼ৾৾ঀ৾ঀৢ৾৾ঀয়য়য়ৼৼ৾ড়ৢ৾য়ঀৢৼৼ৾ৼ क्षरा इत्र्र्वायायुग्ध्रावेर्याकेर्यायायाया वे माम्राम्यायाया য়ৢঽ৻ঢ়ৢ৽য়ৢ৾ঢ়৽য়য়য়ৠৢ৽য়ৼ৽য়য়৻৾৾৽ড়৽য়ঽ৽ৼৠয়৻য়ঢ়য়ৼ৽য়য়ঢ়৽৻ঢ়ৢ৽য়ৼ र्सग्राही श्रीरामेग्'याकेन्'र्सि'वर्से', अन्यरासुन् पश्चानिन्। ष्ट्रन्परक्षेत्र हे के द्रांग्यू प्रमू म्यांद्रश्या गुवान्य प्राप्त स्वर् व्यास्ट्रिं व्याची जन हिंगु वाकी हुन न् ने ब्रिन रहें हैन है वा [B]다| 漢句'회(회(대'대'왕이'다고(당다'日(대'다) 지도하() 정도하 बर मं त्रापक्षेत्रप्राप्ता न्वेपिते स्पापक्षेत्रपा स्वापित्वस्य रामक्रेन्या वेग्यकेन्यं स्पान्त्र्यायम्य विषया क्रेन्यम् संस मन्पंत्रापन्। वर्ष्या वर्षा वर्षा वर्षा न्यति के केन् प्रहेन या वेषा या केन् यं ते यह ष या या यह न या राकेन्संयर-र्ग्परर्रात्र्हेन्यानेग्रात्रुर्रा ৰ বা क्षेत्रवास्यस्यम् प्रतिश्वाद्यास्य स्व **अन्। यहावारा हाना** ८२ रःबर्डव 'नृ ग्वारॅ'ৠ'हे'वेवाश्चेन'रा'ग्रुख'व'त् ग्वाबिन'। ক্ব'

धतेपान्व'व्यंपा श्रायद्धते हें व्यापास्य वातुः वर्षन्य वेष्ट्र हित श्रेयश्रप्रारश्येयश्रप्रायः केव् संदे। **単てもすべてものでてばて** म्या केर्र द्राप्त द्रापत वैट. हे बे बाग्री श्रीपात बात से बे द बाद का के विट. में प्रवास है। **গ্রী'বম্বুর'ম'র্বুর'র্ম-'য়ৼ৾ৢর্বি-'ছিন'। মিরমান্তর'র্ব্বমান্ন'র'রার'** छ्प'तारमॅंत्'पर'वर्त्त्र'प्रदेश'पर्'वर्र्य'कु'वर्ळे हे'तु'तरहः हेग्रा" **२** त्तरः ज्ञुलार्ये । ध्यायरात्मात्राच्याच वृत्रः ज्ञुत्याच वृत्रः त्रास्याच वृत्रः <u> हुन नते गरेव रॉसे हे हैन छै यह व क्रूब पान रख ग्राप्य विवाद्य ग।</u> त्रहेग् हेद्र'क्के' तरुद्र'व्यायायायायाय दिहेर्या हुदिन प्रवादहेग् हेद्रकी तरुद्र भूषा गुन्य द्यापराय हिन्दा दे। प्रान्ति व्याप्त स्थाप स् ह्रण्याकेट्रायायाञ्चरायाचे रायाचे न्यया सम्बुन्यायारायाकेट्राया रें रु.ग्। न्याया। विवित्रे कुन्। हुन्या हे केन्यं रु.मा तर्देन्य दे कुन्या र्स्पाया हे 'हेन' यदि स्यार्स रयन र्नु'यहित् रेन्। रन्'गे यदि स्याञ्चन षव्यवात्रम् म्यात्रम् व्यव्यव्यक्तित्रम् न्गुन संकि शुक्ष मकिषामित्र स्थि। ध्याने क्षिन्य के मिसे हे न्में का बर-प्रस्त्रंद्रम्य प्रतिश्चित्रं स्वर्ध्यः प्रत्यः वृत्यः वृत्यः वृत्यः वृत्यः वृत्यः वृत्यः वृत्यः वृत्यः वृत्यः श्चाद्यम् श्रीमः बाद्वेद्यायाम् प्रद्यानाम् व विद्याद्याद्याने स्त्राम् भूने त्रवात्रवारं प्रश्चेत्रवार्यं स्वापवासुर्वे प्यत्तित्वात् नुवात्वा

देशम् दे:दे:दे:देश्यात्रात्रायद्यायद्यायत् । स्टार्स्य देन्।दे देहे तक्षे स्यात्रु ग्'गुन्। तक्षे रायः '''' हे ने कि न देव में के न के मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ मार्थ के न **८** र् र प दे स्थान। র্ম্বীন'অর্থ-(ইন'মন্তব্দানার'ন্তব্দান্ত্র'ম। ग'रे'गुन'बेन'दरी *खुन्ना तुम्ना त्रम्न प्रमाणुम् वी पक्षे* गप्तम् मुरेग्'यास्म ग्रायाधीव'या त्र- न् मृन्यव्या इं अं या त्रु या न्या स्थान নর রমগভর উঠে ই নক্ত্রম। নই ন ঐ দের দিন নে ই দ ই রা चैन'रा'इसवा वृंब्'रे'सॅनवा वे'राचे तासे'या'सु'सु'रा'यानुना वेसवा য়ৢৢ৾ঀ৾ৼয়য়ৢ৻য়য়য়৾৻য়য়য়৾৻ড়য়৾৻য়ৼৢ৾৽য়ৢয়৾ঢ়য়য়ঢ়৻য়য়ঢ়৻য়য়ঢ়৻য়য়ৢ৾৽য়ৼ৽৽৽৽ ৾ঢ়ৢৼ৻ঀৢয়৻ঀৢৼয়৻৸ৼ৾৽৸৾ঀ*ঀ*ৼয়ৼ৻ৢৼৼয়৾৻৸৾৳৽৸৻৸ৼ৾ৼঀড়ঀ৻৸ ष्ट्रिन्' द्वेते 'स्यायाः कष्या वा वा नामान ने ति न क्ये हे।' ळण्यायाधेवायात्र। **ন**র্গ্রথমনেল্য बर पीर्दे र सं ढ प्रावाद प्रोति हुव सं पश्चेत प्राप्त <u> न्दा क्षेत्रं त्रा क्षेत्रं व कृत्रं त्रा त्रा त्रा त्रा त्रा त्रा क्षा व त्रा क्षा व त्रा क्षा व त्रा क्षा व</u> सतम्बेन्। रॅ:क्रॅस्यम्बेन्यणम्र्डेन्यस्यिक्यः सबार ब'क्कीन यन में बाहिं न'त्याब' रू तने 'तू तु हु न'यवान हुँन'ता हॅन'रूर'ङ्ग'रा'सबाबी'रुतुन् सर्होन्'र्बेब'उर'ने'उर'र'कॅब'न्न्रर'वा वैवां क्षेत्रेन् प्रवेश्ववयाक्षेत्रतुवा वृद्धन्यायत। हें क्षेत्रे न्दे। न'न'क्षेत्रन तक्षेत्रत्ति वृष्टे स्वामा विद्यामा विद हेर्ष्ट्रिन्दरायां सम्बन्धाः । हिन्यान्ना सुन् सेन् कुं समका से तस्मा **८८ सु नॅबाग्रु८ क्रुल है। अर-८८ (वॅर-५८ व्रिस्ट्राप्ट) स्ट्री** स

स्'हें विन्दर्भित्र व्याह्म यान्तर्भित्र विना वहन देन देन मन। नेराहे छेन छैन संस्वाद स्वाद तुन छन प्रहा के तह दारी **ঀ৽**ৢৢৢৢৢৢৢৢ৴ৼ৽৺ৠ৾য়৽য়৽য়৽৻৸ঀঀ৽য়ৢ৽ড়৽য়ৢৢৢৢৢঀ৽ৼ৽ৼ৽য়য়য়৻৽ঢ়৽৽৽৽৽ মন্ত্রুরামেনা ই'র্মার্মী ট্রিন্'গ্রীরাশাবর'ন্সুরামান্ন पर्विनेरपर्रा वद्रक्षेत्रापरवर्ष्यम् प्रार्थिवन न्म्याचेरव्याष्याषु न्मायावर्षान्यान्यु न्या देव्या छे व्यो क्रीश्चेषयाययप्रार्मिष्पुपलिषावयाप्राप्ताः श्चर्यायय। हेर्ने व्याप्ता **इ**ंस्ट्रिं 'ग्रैंब'रू वान्तर्थं विना ग्रहारा ग्रह्म स्त्रित्र त्रात्र द्वारा है । स् मेर। धुनावदातह्रवावयारवायावनाः हेर्ने तक्षा। **ಇಪ್ಪಿಸ್ಪಸ್ಷಸ್ಟರ್ बिनाप्तेव'दबा**न्द्यन्यार्थन'अन्। ने'वयाहे'वेन'ग्रीयार्वे रक्तनशुक्रानु' नर्नेषाति। कान्डिन्'हें खेंदै-न्ने'झ'यानत्रः। सुनः संक्षेक्ष'यास्य। दुश्यायात्राळ्ळं न न्माक्ने वळॅ नाहे वानि न वानि वानि वानि वानि वाळे नाहे वानि वाले म्विष्यप्तुरुप्तान् भूष्यप्तान् विष्युर्प्यप्तान् । कः विश्वप्तान् वे क्रुक्त्या मर्जुन्य। क'न्डिन्'हे'न्द्र्न्स'क्रेन्ट्र-एनेबाक्रंबाजुन्यस्मान्नन्य। **४**ॱवॅति:हेराग्रीग्रु:प:इवराळर:पराष्ट्रग्रायने'पर:५'ॐरानेग्'ग्रे५'५वॅरा क्रुक्षकेष्वम् रक्षात्राचिन्।सुरायतुन्।सपिन्।यतिःस्। स्राप्तुःन्यतायस्नः क्षिप्रसम्भा रदेश्चर्यं हुनायाने ख्रासन् के सम्माने में प्राप्त मे रोयराञ्चेंग्नराधन्'क्रुयम्'कर'विषाचिरार्देरव्यव्य। द्वि'यर्कद्राष्ट्रिय ब्रेन्सं दिन रु दुराया भवा हेरे दल व व व व व हन स्तर्

मने अवया अन् व्यान्यम्या अपनु केवा मान हिवस है। ने तर्ह **क़॒ॸॱॴॕऻॖॖ॔ॸॱॻॖऀॴज़ॸॱढ़ॴॸॳॴॻॖॸॱऄॱक़ॆॸऻॱऻज़ॸॱॸॸॴॕॸॱॻॖऀॴॿॕॴ** व्यापः कर् ग्राम्प्रस्थान अस्यापः अस्यानः यार्षे राष्ट्रमः । नेराहे वैर्ध्वेशकः ष्टुंग्यहेन्'र्यं सर्व शंत्र अंड्र वृष्ट्य । विश्वन् अव त्र हे सम्प्रेन्य स् यग्राज्ञन्। नः इंबान्नेनः पन्नायायायायायाया गृह्यन्याया खातुःवारी कंर्रें। यदेवानायन्ति। यद्वी वार्ये सार्वेन ग्राम्हिकाकी र्वारा वर्ष्ट्र है। कं रें के वर्षीय ने ग्राम्य ध्याप ने विवादें राह्याया प्रकृषा परः शुर्दे नेर। दे 'वर्षा हे 'देव' संकेषा हे 'दि हो ता इयदा ग्रीषा का सिरा पर। तम्ब्रास्त्राक्चीन् मेंब्रायास्य हेन्। स्वाहेन्य देवा केव्य मेंब्रास्त्र केव्य मेंब्रास्त्र हेन्य देवा केव्य मेंब्रास्त्र हेन्य हैन्य हैन् बह्याने। न्नायानेन्यां क्रियान्यायायान्या क्रियाची व्यवसार्वे व्याप्त दॅंदरापंथवय। कॅश्रङ्गेरः ८ हवापंप्ट्रा रेविवावीकरागुरःश्चेर न्हें र पर तु खु य पय। सु र हें प्यति त्यावय। र त्या क या क्री र न हें र हु बेर्। हिर्'रर'अपॅर्'द्र'हिर'र्नेग'ळॅल'र्झेर'नदुग'वैद्य'नशुरुष्यपंथ। *ब्रुप्तवराम*क्षेराधित्वराज्ञा व्रायम्बन्धर्मित्रहेरा **पै**यारीयराउव'क्रीमें व'ग्रेम'री ने भराहण'रा'जुव'क्री सुप्याहे। रस **ञ्चन**्ध्रवराष्ट्रेष्ट्रवाह्य विश्वताह्य विश्वताह्य विश्वताह्य विश्वताह्य विश्वताह्य विश्वताह्य विश्वताह्य विश्वताह्य न्तुत्राचुति कुव न्त्रस्ति प्रतिष्ठ न्या हे है। हुन्य हे ने इवय न्त्र हेव मक्रारोबक्ष कव् की में व्यक्ति प्राप्त मुख्य कर है। हा व्यक्ति का कर है है है स्मार कर है। *८*तुग्'नबअर्**द्रेन्'**षणग्री८ञ्चेत्र'ने बेन्'म्याने देखकॅश्राम्स्यग्रूर हे।

रे'वैप'स्य'र्'प्र्य'द्रश्चाचेर्यर्भ्यः रहित्यं वैद्यंदर्भे द्वर्यः देख्यः क्ष्यं व्या নম্বৰার। বেশব্রেশেক্সপ্তবাধারীরাম্রানির ব্রাবান। षकेत्रापति दुरारुपरा दृष्टुरा दहापश्चेदाई गृहा की पूर्व केंद्रा सहीत है । । । । । बर्ळद्र'पर्स्त,'व्यश्रद्भवेद्र'दे,'वृद्धराया। ने'व्यान्वेपनेयानुःयः ब्रैन्प्पन्म। स्रुप्तनुष्पपारहेन्प्पान्तृश्यायय। सर्मेन्द्रेन्जुद्र। सर्मद्र हॅग्राज्ञुद्। बर्देद्रायां बर्देद्रायार्थे वृत्रायादि हें हा बद्रा दुः वृत्रव्या ष्ठायपार्त्ते ब्रब्द ने वारपार्यात् ग्रेका ईरा नवार तत्वा यार्वे नवार वि जुन ग्री "" मन्द्रान्द्रित्रम् व्यवस्यान्याः स्तुत्रः द्रवे मनेश्रंकृतः द्रअपः **८८. में १९ व ४५.८. व १४ ४.८. व ५५.५ व ५५.** व्या न्'श्चरा'रा'व्ययाशु'येव'न् में स्याक्च'ई'वया देरा राष्ट्रवया थे। नेपारहेरे केरा नेवारमान्या क्रेर हे नेवाह केया वेर हार् ते[,]वा,न्नःक्ष्रंत्रात्रयानेवास्यक्षरः प्रया केवान्यः प्राप्तात्रयाने स्वाप्तात्रयाने स्वाप्तात्रयाने स्वाप्तात्र त्यंवव् हव् छेप्यरः सर्दर् दिरः। सर्वव् सं र्श्वेरः पायस्य गृहवः प्रतः क्रेर नः त्यार्थे वृद्यः ने निष्यः स्त्राचार्यः वृद्ये त्यायः स्त्रे न् स्त्राच्यः स्त्रे वृद्यः स्त्रे वृद्यः स्त्र मे<u>|</u>श्रेव्।तुःबे।तन्तुन्।प्नात्व्।श्रुव्।र्चअन्ते।त्र्ञ्चन्यम्।स्यात्र्वात्रात्र्यम्।स्यात्र्वात्रा रावे बन रावेनःश्रुख्यायने प्रतित्वयान्नः <u>क्</u>रापन्नः। त्रेंत्र्भी मुन्या देवा त्याव वा सारा देवा वा सारा वा ह्माक्रिः। व्यवस्थायम् वर्षे ग्रीस्प्रिन् न्यापाव्याप्ति प्राप्ति वर्षे विपानित्राक्षित्राह्मवार्वितान्यात्रित्वत्त्र्त्ता । नेव्यत्याव्यविष्णे

क्रेंद्रप्यव्ययाय। इतार्युरारार्ध्रायरयाञ्चार्यरयाळेप। तन्तरङ्कार्यः स्वापायायाया इप्तिरः स्वाप्तः स्वयापा विवासूनः हेने हैन ग्रीन्तु या ध्रम प्रवाप विमाध यक्षेत्र नेप हम केन ही। रन्तातिवात्रात्री हिन्दे दे तहे व नवन राष्ट्र प्रति होन्द्रा स्ना अर्घेट ने देश ने राष्ट्री क्रु अप्टी द पर दर। व व वरा द न द प्यापा पर **५८। वेशपञ्चरोदपञ्चर है। ज्ञायळळळळो**५वे क्वॅप्टिवाळ५प्या ने'ल'क्षाने'क्रवयायनन्'यय। न्ने'ब्रॅन्'व'ने। ब्रिन'क्रॅबादन्ताय' सवारत'तृ'चुर'र्ख्य'विश्वश्वाह्य'र्ग'रशुर'राते'र्गेह्वेंर'स। तर्चे रर्प दर ब्रेंट प्राया वेष वा स्वाप विद्या पश्चनरः कन्त्र बुदः हेवार्षन्। अविवासिते हुदः नुः की वर्षः पान गरसितेः खनः लुरा र्ळेन्या सुनि ने तितुन्या महें रायते हीन क्रम्यालय। दे ढ़ॸॱॻॖॹज़ॱय़ॸॱ**क़ॸॱॻॎॾॕॖग़ॱऄॗॱ**ढ़ॕॸॱॿ॓ॸ। ॸ॓ॸॱॴॺॎज़ॱॻॕढ़ऀॱक़ॗॸॱॸ॔ॗऄॱॿ**ऴॱ** प'र्ग्रॉतिखर'लुय। र्नेपर्न्द्रवस्ययाम्हॅरस'पक्क'स'लुयाहे। मङ्गेद'र्य'मञ्जुल'नरा <u>इ</u>म्रेश्चेदल'दर्श्चेर'रा'ने'दश्चेर्य'दशुल'हे'स्राप्त र्वेट बुट हैं। तुरा ने कं का है। पर्वु का की तार का पाने के न विषा निवार वार **र्श्वे प्रश्चे प्रश्चा के अर्हे प्रन्य क्रान्ट्र हे ज्ञान या। विपार्द्र।** रोग्यद'रदाय। तडी'क्रीयरदाय। पद'हॅर'क्र्रेद'य'यार्राण्याने'प्रा तार्रणयायते वृष्या इयया ग्रीया पर्स्न स्वया पति प्रवासी । इतः र्नेन'न्न'नेश'र्नेन'क्केंक्रेंशक्तीयार्वेन'नेत्रेत्रेन्नेन'नेत्रेत्रे स्वाप्तेनेन्द्रा इर्ष्य ग्रीयाहे पर्दव तालु हार। निहे पर्दव सुप्यन परे हाप्तर नाया है 'वित्रामश्रवाना वर्त 'तु ना केना वर्ष या शुरू द्वारत ना कना रक्ष या इ स्वारण য়ৢৼ৻৽ৢঀ*য়৻য়ড়৻ঽৼ৻ৼৢঀড়৻ড়ৼঽ৻ড়ঽ৻য়ঀ৻ঽয়য়৻য়*য় न्र्यम्परिधाराञ्चा स्वाकिम्पर्मेश्वराज्या 利力があってい ह्र ग्राप्त प्रकेशया गुरुग्या ग्राप्त स्राया द्र स्राया स्राया प्रकार ग्राप्त स्राया प्रकार ग्राप्त स्राया व्यायन त्राव्याय संत्राप्त सत् भाषाय ने स्वार प्रवा की स्वा कुत्र **८२ भक्ष्र्यायाळ्या याज्ञुन्ये रागकी परायराय त्रायाय विद्यायय।** हे नर्ड्व ड्र न्यं यहे सप्तिवाय त्या प्रायति दाय का के रहे यह ता पतिःश्चॅपायाध्यन्दे। ने'ग्नाव'तत्ग्'नें'त्वा'न्याक्ष्यायाध्यन्त्राह्यान् ড়৸ৢঀয়ৢ৴য়। <u>ৢৢৢৢৢৢৢৢয়ৼঢ়য়ড়ৢ৸য়ৼঢ়৾ঢ়য়ড়য়ৼয়</u>ৼ इ*बबायात*्व्यार्थरःच्यात्र्ळेव्यान्वानुह्य। スタンプラフィダッズ गुद्र'तळ्यं यापायवा हे'यर्ड्व'क्के'व्यावया रते'यद्यव्यापादिंव ग्न बराम्ग् सुअपान् न्रें खेन्द्रेन्ति न्र ह्ना या हुन्य ঘরিক্টারারা मङ्रश्चेमात्रवाराक्रवात्त्रायायावारमात्त्व्यान्तेर्वे व्राप्ति । बैर ठव विवा हुर र्पेर पर र द द वा है। वर र र दि है अवा द। सु नेशनेयान् गराक्की तुर्याया क्रेंनाया महिना क्विरादवा स्तीन्त्यान् गराक्की युअप्पन्त्र देशप्न प्राप्ते वित्र युअप्य स्थित युक्त के प्राप्त वित्र के स्थाप मन्तरापरास्त्रेत्। यत्राज्ञराण्येत्रव्याकेत्र्याकेत्राचेत्रकेत्। মীঅমাতৰ'অহামেখামনি'ব্ৰাট্টব্'ব্ৰমানমনের্ণ্'ড়'ড়'ৰীমা মৰ্ব্' উল वगुरः दर्भग गुरुवार्था ।

तनेतल। । मरते हैं 'न् ग्रन्संदि'रें स'ने। । मञ्जन 'के 'न्न के 'न्न के बक्रेलाहे। ।यञ्जून्याग्रुम्यार्वेन्त्व्यंक्ष्यायेन्। ।श्चन्याग्रीहेन्त्याक्षे यदि । सिन्नर्यं नक्ष विद्युवेश ब्रास्य पित्। । द्वें क स्वाप्त **र्वेते**'बर्केट्यप'रे। |बर्केट्यपंक्ते'ट्रिकेपरक'बर्केल'हे। |बर्केट्य पायत ग्रव में प्रवास के क्रु बेर्। |त ग्रव क्रिकेट स्व के पारे | |हैं 'हे 'हे ' ऱुःगृःधिकेनवाराधिद। | तुनातशुर्त्वां कृष्ये बद्विवारादे। | बद्विवाता <u> ५८'(म'पर्रक' अक्रेश'हे। | अञ्चर्राभें ८'व'(म'क्रु'वेर्। | ग्रुट्राफ्री</u> हैनःयापानानी । शुप्तगरानेतिहेगार्थेकाग्चनकारा**धे**न। । द्वनः गुसुष <u>८ इंगः ४ॅद वॅर ४५ छ न | ४४ ० ४ छ ५ ८ ५ छ ५ ५ ५ १ | </u> ^{कू}पर्यायत्याव में प्राया के क्या थे द्वा । त्या व की हे प्राया के पा दे। । या प्र **द्ध**र् गराशुः न् गरात् श्रदायायायाया । भरायेन गेन गरावेन स्वादा । **क्रॅ**न्देब्केव्यवित्रक्षुव्ययासम्बद्धाः ।क्रॅन्ट्रक्षसम् क्षेत्र । व्रेन्प्रयानुः ज्ञुग्रायाय। । व्रेन्'गुन्प्रक्रणायायुन्'गुन् स्वा | हे द्वारं खे फेरिंग्न्ययाम्याप्ति । व्याप्तः वर्णाः वर्णाः ।

स्वा | वर्णाः वर्णाः वर्णाः ।

स्वा | वर्णाः वर्णाः |

स्वा | वर्णाः वर्णाः |

स्वा | वर्णाः वर्णाः |

सवि | वर्णाः वर्णाः |

सवि | वर्णाः वर्णाः |

सवि | वर्णाः वराः वर्णाः वराः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः वर्णाः बक्रियागुरा। |यान्स्रवयार्गेराक्ष्यनाक्षुवेर्। । अस्यग्रीहरायात्रवा पन्। । वर्ष्ययम्बद्धारयम्भव। । वित्ययसम्बद्धारम् <mark>দিব| | র</mark>ামনি:শ্ল্লানুরমার্টা | শ্রুব'র্'নের্ল্লান্ন:ড' बक्रियगुरा । इर्वित्रव्याया हेर्स्य विवा । इर्वि व्या हेर्या हेरपंभव। तिक्रवपंचित्वहेरपंभव। वैवापियवार

ग्राम्यार्थं। देते के हे देवारा के दे के देवा के के स्वार्थं के देवा के स्वार्थं के स्वार् नैतिर्देख्यसञ्जून राने राखानी केन् संविना सुनायर। का क्रीतिर्देन। ना बुनासं ष्ड्र अभिन् क्षेत्र होन् किन्तर तुष्य दि ष्षेत्र किष्य दे । न्या दे क्षु खुष्य दि प तर्भा कुं इन्यर्भः विष्यस्य परिन्ने ततुष्ये पत्रन्भे पत्रन्भे ने रैनःवन्यापरःगुव्रक्षंपःक्षाङ्गेवःपचनःग्रंतन्देवःपःग्रुनःपःग्रुव। ङ्गेवः बॅ'अञ्चंष्यदेशकेन्'प्रस**ॅ'ठ**ण्'गुर्द्धन्'प्रसञ्जयद्य। रन्देळेतेः न्नयानः इंबर्ग्हरायरा। विद्यासदासु 'रा'ङ्वेर्ग्हेग्'रा'झर*बादावाद्यवाद्यवादा*स्त्रे **८द्विराह्यःग्८५ ग्रद्धम् यद्वाञ्चग्रद्धाः स्वर्थन् व्यद्धम् यद्वा** ग्रिंग्'व'रे। ८'व्रिंन्'ग्रीने'नशगुर्त्तर्व'वग्'वे'न। संस्तिन्यस्रियरे <u>घ'ञ्चे'ग्राच्याञ्चर। ने'त्याग्रीरखयान्य। न्रायदे'त्रव्यार्थ्यः </u> ন্ত্ৰবা স্ত্ৰুপ্ৰ সন্ত্ৰীপ্ৰসাহৰ কৰা কৰিছে। ক্ৰিপ্ৰ কৰিছে। नद'राने'द'रे। क्रेबाराहिंगान्नाराहेंगबर्तरायबन्गन्धेगांगे सु ढ़ॕॖ*ण्यादुन*ॱहुन्'दु^{द्}नेर-नेप्दुःमध्येत्। जॅन्'ततुत्रक्के'गृन्यने'त<u>न्</u>य ग्रेंट्। र्गेब्रॅट्वेट्र्ग्यावेग्द्राक्रेट्रेक्ब्र्र्र्र्याव्यद्ध्य तत्वाय। ने'गुव ग्रीया वसव व संया है। केरा गुन क्रेंब के पार्ट न **हु**'य'दुर'ग्रु'प'भैद'पद्य| ४५'ग्**राय'क्रे**दे'ग्**र**'कुर्'ठ्रे'यबेर'प| मञ्चरपर्वाक्षेत्र ने बेद ब्राया द्वी प्राप्त के प्राप्त क्चिन्तर्भुग्रीलर्श्वर्यावेश्वर्या नश्नन्गत्रस्य प्राप्ति

য়ৢয়৻৻৺য়৻ বৢ৻য়য়৻৻য়য়ৢঢ়৻ঢ়য়৻য়য়৻৸য়৾৻৸ঀ৾ৼৢঢ়৻য়ৢয়৻৻৺য়৻ **ॲन्'यर'वत्व नेवे'ह्न'नु'रन'ळे'वनै'ह्रॅब'यहर'दरा'वॅन'यविद्राह्या'** राष्ट्रीत्वात्वात् ने विवासत्वात्रात्रे देश वर्षत्वात्रात्वात्राहे स्वक्षेत्रा वियावियात ह्याचाया न्यम् अन्यत्रिन्न्यां केव्यां क्रेक्ष्यं व्या व्या क्षेत्रायम् नुष्या यक्त्रायः <u> इव्पाकृत्पान्ताश्चव्यायत्यात्रात्र्यात्र</u> ব্ৰান্ত্ৰ্বাথাপ্তান্ত্ৰি मबेन्सवराहे मर्द्ध वामल्य यान दे हैं ग्राह्य हुण्य मार्म र संस्थित है । हे' पर्दुव हे' पर्दुव प्राप्त सहया गहिषा महोता वा विद्या महिला प्राप्त प्राप्त है । हि' वसर्धेवर्हेर्ने में ह्वेरक्षे नर्से में प्रवासना यह वर्षाय वर्षे प्रवास वर्षे प्रवास **यन्द्रिंब्स्रन्त्वेतर्नित्र्वर्गन्नित्रेत्र्य्तेत्त्र्यान्त्रेत्त्रेत्त्रेत्** त्रु'याहे'पर्दुव'ने'न्न'अहतात्रवात्रुयापत्रे'न्न'व्याव्यात्रवात्रात्रात्र् ब्रून्यं गहा अर्थे में शव बाजवान्त्रं प्राय राया राया विषय विष्ठं पा प्रजन्म संविष्ण रम्भीयम्'र्श्वेन्ययास्याम्याम्यकेवामम्बद्धाः हेदै'लय'वरा। रते'राञ्च ग्रैरा। रते'रा वाराग्रे'ने वा'रा वारे राज्य राज्य हु वा'र्धेन 'घरा हे न' ने'न्याद्वेन्'रन्'यन'कॅबाद्यबारमकॅवा'न्युन्यप्य। ট্রীন'শেস্থীন। ग्विंदाराग्वेद्रादारी देन्'याज्ञुद्रावेन्'याव्याचेन्। सदारादानेन्द्रा *৾*ৢৢয়৽৾ড়ঀ৽৾৾৾৾য়ৼয়য়৽৾৾ঀ৾৽য়ৢয়৽৾ঢ়ৢ৾য়৽য়৾ড়ঀ৽য়৽য়৾ড়ৼ৽য়৾য়৽য়৽৽৽৽

रग'तर'रेर'संविग'तुबाधदेःब्र्न'त्रैब ম দ্বাঘৰি অৰ্ভ্ৰশ্ৰজ্ব। त्र सं अपने से के स्वाप्त के स्वाप विवाय म्वाया त्रवाया द्वारा विवाय द्वारा पाया अन्मारीपुगरान्यग्राह्येन्'यावृद्धिरात्त्व स्वास्यात्र मते. तुन् खेन् 'हेण्' दाने खे' संदे कें त्या ह 'हुन का ति कें त्या ति कें त्या ति कें व्येत्रचे रत्वर्थे अर्थे नृष्ये राज्ञानिष्युत्। तने व्येत्रेन्तु ज्यातने कं अर्थे ब्रेन्'इब्ययबा क्वॅन'नन'त्रुन'नन'रे'नुव्यतने रखन्। हुग्'गे|तेबबाठन्'मबबाठन्'छिन्'ने'र्दर्'। र'दे'ने'यातुराहाँग्वासु त्र्यं वे र र्वर प्रते वर्ष व प्रवाद्वर दि। विवादे के दि विवाद वा द *ढ़ॖॱॿॕॣॸॱॸॸॱॹॱढ़ॺॱॺॱॺॵॸॵॗॺॱॿॗॕॸॱॸॱड़ॺॺॱॾॱॺॎॱॿॺॱ*ॻढ़ॎऀॹ॓ॱड़ॺॺॱॻ प्रणाद्यात्री मुंधाद्य वर्षा गुर्दे व के प्ररण्दा रे **5**1975 नुगराइयराप्तिः सेन्। त्रेन्। तर्भेन। तर्भेना हेन्। त्राश्ची क्षाने दे प्रत्योप ना सुन में । ने वस पि न प्रत्ये प्रत्ये का स्व यम। हे'ने'केन'नन'य'नन'वर्डक्रस्त्रुक्षक्षेपम। नते'न्न'स'नन'वस बह्याचेर। वयारबाब्धवाक्यां प्राची कंकवा प्रावरकी त्र्या पश्चेतायान्त्रीयर्शेत्राच्या अन्द्रिन् केशान् वरान्यन नुभेगनायम् ब्रुन्सन्देन्यत्रिस्तामस्याने न्यन्तियम्यानाया षर कुराविय संबेत। न्यं वर्य राष्ट्र प्राप्त केर केर राष्ट्र रा

র্মনের বিন্তু ব্রাধারী কার্মনার বিষ্ণার पदिःस्याप्तर्यार्धेरः। अरूदःस्याप्तयात्वयार्यात्राद्यार्यस्य য়ৢৼ^{ৼ৻}য়য়৾য়ৢড়য়ৢয়ড়য়৸ঢ়য়৸য়য়৸ঢ়য়ড়য় ম্বা म्बूब्यापितिवार्यम्याचेन। ह्यार्पित्वस्याधियाहेग्रह्याधियारा धिन'केबार्च। ने'वबादर्रे'विन्दर्धेव'यय। ग्रन्ट्सें प्राचें तराया क्रेन् मदिखें स्पायतार्मित्रास्त्राप्तार्द्रियासय। युव्रतायतार्मिळें सान्मित्रा ह्याप्यचर्द्राचेरपदिवाद्ये इतातर्धेर्द्ये प्रमाधितात्रा *ब्रिक्ष* मुः नः नेंद्र 'गृहक्ष स्वरूक्षे हिंद् 'ब्रुष्ट्वे 'क्षेत्र के 'नदि' ह्यु 'अ' ह्यु नः हिंदा दे । <u>श्चित्रं सुप्तराद्याय वृष्यवे राममा</u> ने सहिष्य द्वं द्वार् प्रस्तातुः यहसा क्ष्रअन्तेन्'रा'हुन'के। न्यत्रकेषाहे'ळेन'न्यं वाक्रीयणुतावरातहान्ने' ह्यवं क्रमः वर्षः दुः प्रश्नेत्र। दे वर्षात्र वर्षः देशहे देनः देते वर्षे वर्षा हो प्रश्ने प्रश्ने मर्केन्सं विवा वीर् ग्रीयान्य साहिवा वा नैवा तर्वा रा ने 5'55'| मञ्जेषायह्नेताया वियम्ब्यम्बयम्बर्गम्या इतरा श्रेयाकुर । त्यया प्रगृपा विवा वार्ष्या यस श्रुवा या प्रवा विवा वार्ष्या यस श्रुवा या प्रवा विवा रसङ्ग्रेग्राण्यान्यमञ्जा वयाञ्चन्त्रं व्याच्यान्त्रेन्। ह्यायान्त्रन য়ৢৢঀঀৢঀ৻ঽয়৸৻৸য়য়৸৸৸য়য়৸৸৸য় **केर**'य'रर'। ८ ५ व वित्रक्षेत्रवारा ताक्षक्षेत्रवाष्ट्रवायन यान्येन यान्येन विष्या विवासिका **२००९ मृज्य मृज्य स्ट**िक्षुं पाय दे रहे पर्वु द्रान्त अवस्य क्री हैन स्या **8्रेश्वाहे पर्द्धन् पृत्र पृत्र पृत्र पृत्र प्रत्य क्षेत्र पृत्र क्षेत्र पृत्र प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्रत्य प्र** हुत्रदेशपरास्याः देशञ्चर्यायान्तः। तर्वे वैप्यरास्यावायानुः रेश्वदे शुप्त हमार्थे।। ने'वबाहेव'न्डिन'गुःस्वायपिःहेंद्र'यापात्रात्रव्याया विषा हुन हो हिन पन र जुन ने वा सम्बद्ध न हा स्वरं स्वरं हुं वे का श्री हैं तर्श्व बेशू लप्तु, बेला तर्शे स्पर्धी तालुष्य हैं समस्यों हूं वे स्पर्धी. क्ष्यान्ते हिंत्र व्याप्त विवाद विवा पश्चरं गृति विषा विद्या सेवस्य राज्ये दावस्य से रावस्य । पर्या विद्यहा सेवा गुर्यन् । विषर्भ्यस्य होत् ग्रेस्ट्रिय हुन् न सुर्द्रित स्थान विन् मेवाकुष्यं र ग्रास्थिताय हमाव्याद्र र वाराया अः विवयाय ने या र्सरकेष्ट्रिंदर्दर्भ्यावयार्वेद्रव्या नेत्रिकेहेर्द्रव्यां पर्ने प्राप्त वैश्रञ्जरक्रंशनशुर्वारेहें। देशन्बेंट्ययायान्वनश् मन्द्रां बर्दर् हिर्द्र त्वाराया विवासि स्वाप्त वार्ष बर्द्र वार्ष बिराद्यः पायं वाय्यवाया विवायितः यानेय। हे पर्दुवाके वा वायु न वार से प्या रेशन्बॅन्यप्यायत्ववाय। रेशयवन्बॅयर्न्पान्। स्रयस्वाधी র্ম্বান্তানার্মনার ক্রিকার নার ক্রিকার করা স্থান ক্রিকার করে ক্রিকার করে ক্রিকার করে করে করে করে করে করে করে ক प्रमः ह्रमः क्रेश्यापा अद्विद्यापा वाष्ट्रम् प्रमाणका निकारमा हिन्द्र प्रमाणका विकारमा तार्श्वेदायेदान्त्रेद्रापान्यपायायार्थन्त्रवारा देवान्यद्वरापान्यपाया ह्यु अर्क व रे रे या व तु व राया । प्रति सु प्र सु व राया है हुँग्रागुः-त्यह्रेग्राविगागित्य्यायान्त्र्येनात्त्गाःहे। श्रम्बवस्य ५५ न बिन्नः संस्थाने पर्वत् व्यात्री व्यात्रे वर्ग्य के वर्ग्य विष्ट स्वात्र वर्ष्य विष्य वर्ण्य विष्य वर्ण्य विष्य तर्व वित्तत्व ने पश्चित्र हे पश्चित्र विवा कुत्त्व सर्वे प्रे पि से व कि स

<u> न्नात्र'प'वेना'ग्रन्सुन्देन्नेन्सध्येन'नाश्चरकाहेःपर्ड्न</u> यनः शुन् कतः प्रशेशः देनः तत्वा प्रायय। देन हे पर्वन शेन्द्र न द्वा व सेवसपरःग्रतःतुसपम्। सरःग्रतस्यःई्वप्यःश्चेतःसकैःग्युरः। ब्रायाच्यान् में नेति नित्र व्यास्त्र व्यास्त्र व्यास्त्र व्यास्त्र वित्र वित् तळें नरतरुष मेते यह ताचु शुश्च सारो परे के दासरपते प्रकाशुः रस्य दूरवायर त्रुवा वृद्धर्य। ने व्याहे के न न न न न न न इःध्यापः र्छेनः य, दुराक्षेन्राय स्थेनराव्य। व्यव्यन्य व्यव्या त्रवण्डेन'त्रुण'यसम्बद्धवर्ष्यम् राम्युष्य स्त्रेष्य स्त्रेष्य स्त्रेष्य स्त्रेष्य स्त्रेष्य स्त्रेष्य स्त्रेष तर्चे रक्षे प्रतर्ध्य प्रेशियार स्थाप विश्व स्वापत विषय विराम विश्व प्राप्त विश्व स्वापत विश्व स्वापत विश्व स् ग्रुन्यायय। पॅदायन्यार्थें दारी हिन्।यन्य वर्थेंदानेर। यन्याः ড়৾*৾ঌ*৽য়৾<u>৲ৢঀয়৾ৠৢ৾ড়ৢয়৾৸য়য়য়য়য়ৼ৾৸ড়ৢ৾ৼ৸ড়</u>ঢ়৸ড়৸ড়৸ড়৸ড়৸ড়৸ড়৸ড়৸ড়৸ড়৸ড়৸ড় मन। देन्पन्ग्नेबात्रं पात्र्र्त्वेवात्र्र्त्त्रं व्याप्त्र् ऍन'नर्गार्वेन'रो हिर्'त्र्डेन'राहे'नर्द्धनकेन्रॅसाख्यंन्रवाह्येन हे'अ'र्रेटराख्टायह्रव'ग्रुट्गायुट्य। मियट'व्यादेट'रेट्सु'पञ्चेताच **अर् प्रतिष्यं वर्षाहिर दर्षे वृश्चे वर्षे वर्** नैयायहराष्ट्रिन्धरातुः वेरावय। हेरीष्ठ्रग्यान्येहयाय। नेगा **৺**ব'ে'স্ক'ঝম'ট্টব'শ্ৰীঝ'ন<u>ক্</u>রনঝ'ঝমঝ'বী'ন'ব্র'। র'র্মির'ন'ঝান্ত্রীব্ ঀঀ৾ঀ৻য়ৢ৶৻৴৻৸৶ঽঽ৾য়ৣয়ৢ৾৾য়৻য়৻৸ঽ৻৸ৼ৸ঀ৾ঀ৾৻৸য়য়৻ঀ৾ঀ৾৻৸য়ড়৻৻৽৻

सन्'हेब'य'चे पर्वन्यीयन्य म्यावन्य मान्याया स्टिन्स्य वास्त्रीय स्टिन्ह्याया स्टिन्स्य वास्त्रीय स्टिन्ह्याया <u> छे</u>त्'ग्रेप्रस्थनसम्ब्रमसम्बद्धाः न्यस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य पशुःथादराञ्चग्क्षेत्रराभेग्रातुःगल्गवा ने'दराहेद'रन्ग्वेदेनुःद्वरा सहसाक्षु दुराहे। हे पर्दन् श्रेड्न पुर्हेन परा हे पर्दन् श्रेड्र परा <u>इत ए न्य विपार्व प्रवृत्र वे पाई या उत्तर प्रवृत्र यह वा वे व्याप</u> पहन्यतित्यापाय। तर्षेषेत्रचेरकासकेत्राचन। तकाकुराधकाचे मर्जुन् प्रस्थाय देविया यहां गुपरं ग्रामं। हे हे न प्रस्रे राजुर प्रमुख क्षायान्त्रेरात्र्राचकुःहुन्।नीय्रद्वेयःन्हादिः हुत्रान्हिन् स्प्रामः सुयः॥ हे पर्वुव रन्ति वे स्वाधन र विषा ग्रुन ष बुद्द तु व संयावु साध्या। केन्'सॅ'रे'विषाङ्क्षन्'नेक्ष'केप्पल्षप्रायदेष्यवर। यङ्गराष्ठीप्रतुरूप्रस् न्रेरचेन्'र्नेन्रिन्'द्रायापारायात्रभुरद्या सरपङ्ग्द्रन्'रायहर् केना नशुस्त्रायम। द्रस्यम् तरासम्बद्धाः न्सः सन्तर्भात्रायम् श्रीका क्षे हिन मा हुन में। निर्देश हे मई न्यां कर हिन में मा निमा स्वापत हैं। ८ तुग्'रा'तर्ने'त्रमु = स्वाग्रा = स्वाग्या न् को क्वॅन्'के'छ। या वा स्वाग्या वि मन्ता वित्रवर्त्तुत्वामकावेवावाव्यामा हेपहुवाहीव इय हैंग्'अवर'नर'रहिरयन्बुर्यर्गर्रर्'र्र'। हेव'रहेब ८हुन्*षञ्चिस*र्देन्*षव्यक्ष्*न्थयात्यस्य सम्मार्थस्य सम्मार्थस्य सम्मार्थस्य सम्मार्थस्य सम्मार्थस्य सम्मार्थस्य केना न्यवारग्यासायदेश्चेन्द्राह्यायस्याद्वाद्यायस्य ন্ম্ব্ৰেম্প্ৰ্কিব্ ইম্নেদ্ৰ্ম্ৰ্ গ্রীঝন বিক্তিমীর গ্রান্ত্রন।

हुंबं विष्यास्त्रम् स्थान्यस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य

द्रवा । क्रेंदिर्यत्वा जुराष्ट्रया थी । वार्यवार वा वार्य न्मॅशलुका । मःसन्कान्त्रकार्विन्नोलयान्यकागुन्। । क्रेंतरेन्त्रित्र नते ज्ञुन्य वेंन् परे । । अर्थेन म्राम्य सुन्ति यान्य सम्य । दुः **६५:विवश्र हेश्र प्र. ह्रं वश्चरः। । पर्वः र धरायश्चरः व्ररः यश्च हैशः** है। । ञ्चॅं नाशुक्षत्वन् च्यास्नायन् व्यवज्ञनः। । तुकानाशुक्षयञ्जेनः मते[,] हुन्य हे भेषा । यन् न ने झन प्रयाय हो द्वा पर है र । पर हे र मळेत् मॅस हेर प्रॉम्स द्या | मग्र मनसम्बे भेग्र स्यस्य प् इसमा भिग्नुन्स्माकन्यन्रम्मन्द्रम् ।न्तुःकुन्नविद्यन् न्दरःद्राष्ट्ररः। । ५५५वान् इद्राचि क्षेत्रावाया । द्वेतायर वेद् मुद्रायर प्रया । ब्रिंद ने बा द्वित प्रविश्व प्रयास स्थान । क्षु प्राप्त क्षेत्र धॅरऍटबरीव|वाहर| |टबर्झवरी:चग्रस्ट्रे**द्यव**यपसरेडीर| **।** तकः प्रवादिष्यायक्ष्याय प्रवाद्या । प्रस्तित्युवा<u>र्</u>यार्था पश्चित्रयादिः अनुत्र। १००० द्वास्य क्रिंग्यायादः दृष्टिग्य। १५०० । न्तुद्धर्भरायक्षरारेन्यापदिष्ठित् । भ्रुःन्तुद्धद्वन्तुपार्देवर्ष्ट्रप्यता । कृत्रायदेषुव्यक्षत्रवाहिष्या । अतास्वाहिष्यात्रवा नरिश्चेर। ।त्रमंत्रापित्यपित्यपित्ययरम्यास्यय। ।क्रूर्यपित् पार्केरः गश्राय् । विवयाश्चार्यर यात्राया हुव्याय्येत। । वेः हेते ख्राय्य बाने विवाल। विरोधित विवाल विवा इयमर देपविद्यम्या । ब्रेट वेदियक्य मिर् क्षेत्र । । ग्रेर **५८ के क्वें वे बहुद्। १६ क्वें यनदेश्यन करा यन्याय वेन। । छिन्।** नगत्त्व्रन्कुन्कुन्पत्रेन्द्रन्त्न्। ।नःकुन्द्र्रायान्यविन भूववा । शु ने ता द्वें दाय ते देशाय दाय हैन । के वा वा हिना वा हो लाक्ष्रायकाम्दराये व्यवेदायेदायेदायायाया हे नेदायेकाहा न क्षेत्र वरावरापर। वर्षेत्रावर्षेत्रावर्ष्ट्राप्तेत्राहे। रक्षकुरापाद्वराया **कृत**्यतिःहः सद्दारहरा प्रवाहः सुरा देवा गुड़ार सुरा दुरा ना द्वारा प्रवाहान द्राने त्यार्थ्र प्रमृत्या वृह्य हो प्रदेश विद्या के विद्या विद्य **८८** च्या त्राची स्थान त्राची हेब्दिर्भ्यन्दिन्द्वाम्ब्रान्ब्रान्यायम् यन्ग्यात्व्याक्युर्द्वेष्यन्येन्द्वेन नाय। हे नर्द्वाकी वया वया हिन् की वाया वया के अत्वेत् वेत्रः प्राप्तें क्षं प्राधित्। सर् प्राप्ते वेत्र प्रते चेत्रं व्याप्ते वेत्राः **ने**बाबेर्'चरि'न्यबद्याचीबाकेन्द्रेत्। नेपबाह्यर्'वरावेर सेंदर् नुष्ववेरायात्त्वामस्यस्यायराकन्थेन्यराष्ठ्रं वहारा हे:नेवेन् कुद्ववार्यन्व्राचा है पर्व्वाकुर्य है प्राप्त विद्या है । रेग्'य'तञ्जेअन्बॅबापर्यतन्ग्'ऋअय'न्रः। बन्बज्जबाकुतिन्'वेबा न्राचीत्रवान्यस्युराई। ।नेवाहेप्रद्वाधीव्यव्या न्त्रवाद्याः **४५ द**्राप्ट्रिंद् 'ग्रेशसूर'द्रार्घंदात्रयथ्यं द्राप्तु शुर्द्राप्ता स्र इसरायन् नन्निम्निर्यराम्यार्चिम्द्र्यस्यरान्ना नन्नी कुन्या **हे**न्दे तहें ब्रॉयन् ह्रियानुबाधवा हे पर्वं ब्राग्ने नियान बाहाना ફુ'ਕਾ नर्देर्राययस्य है सेप्रा धर्मा ग्रस्य र दि प्राचित्। 52

स्याप्त्राचित्रायर्थे विश्वायं विश्वाय

ब्यट् में क्षे हे क्षेत्राया । ज्ञायायितायर देशा क्षेत्रायर में येयवाया देश। ८५दिखनः ने सुः हे कुँ न पान। । ने शन् व सूनः न म सम्बन्धः स्तान के सम्बन्धः सम् बुःतनुबारान्यग्न्रिंअरागेक्षःहेःक्ष्र्याया। विवागग्रुरवायय। नेवा तुःयन्'कृष्केष्ठेन्'त्रवाचक्केन्'व्याचक्केंयवायायवा तुन'न्न'में'सुव्।'चदेः बर्नर ग्रेर गुर पङ्गबबायक पर्ने द्वें न 'रन' तपर तार्वें र । व्यायन क यम्बान्वेन्'नु'र्वन्'यम्'युब्दम्'र्वप्युन्द्रस्यम्'युव्य नर्भेयश्चर्यम् नर्भेद्र्यम् स्तर्भित्रम् स्तर्भेष्ठस्य स्तर्भेष्ठस्य विषयः """ बर्चरः। श्रुःबालुबायव। बेग्'न्द्ररःब्बान्द्रश्राचबाञ्चानान्द्रेवाखा बर्चर प्रदात स्त्रुर प्रस्ति हुर विकास भिता क्रिन्द भेरा प्र न्द्रभद्राचे व्यावाद्या स्वान्द्रवे व्यावाद्या क्राप्त्रवे व्यावाद्या क्राप्त्रवे व्यावाद्या व्यावा तश्चेश्वर्यायर्थ। श्चापंग्राध्यर्थरायदेष्ट्रंर्रत्याप्रकृषंश्चरंग्राध्यर्थः श्रृंतः केन्यंति तहेग हेन्छी प्रयानि दिन्यं मिन्यं प्रमेन्यं प्रमेन्य हिन्य हिन्यं हिन्यं त्त्व'यय। कृत'ञ्चव'यत्रं प्रच्यात्वेत्यत्यः ध्वत्रेत्रः वेव'यक्तात्रः युर। ने'वर्षाञ्चारातानुषायय। र मुन्पानेवर्णी हुन हु देरातहण श्चॅर्व्यवान्यन्यन्येव्य्र्वेवरागगुन्य। यन्यः र्हे न्वरेग् %ूर'प्रश्चन्यहेळेत्र'र्यसंचेठा'पेर'देठा'पेर'तु'प्रान्य'त। ह्यापिर'र्यंत त्रिंदरेदेद्वुः मृग्दर्द्वुः प्रायम्दा म्यायात्र्वारात् क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां क्रियां मन्'केव'ग्री'तिस्त्रं संवेग'ते 'तथेतामधिव। क्रुँव'र्थव'ग्राम्'ध्रव ষ্ট্ৰৰা বৃত্তনে। অন্সূৰ্'উব্'শেন্ গুণেন্ দ্বীব্'ব্ৰা'ৰ ষ্ট্ৰন্'নৰা ক্ট্ৰা'নুৰা <u> वराक्षेत्रभूत्र्तत्वत्याययक्षेत्रकुत्रम्य</u> व्यायात्वयायय। **য়**য়য়ঀৢঢ়ৢঢ়৻৸য়৻য়৻৸ড়ঢ়য়৻৸ড়ঀ৻ড়ৢঢ়৻য়ঢ়৻৸ঢ়৻ঀৢ৾য়ৢয়৻ ঢ়ৢ৾য়৻ঢ়ৢয় **हु**८: त्रेष्ठपरेषेष्ठ हे भ्रुंष्ठ पॅष्ठ प्राप्त स्थान ਰ੍ਹੇਵਾ विना'तर्न्न'स् २ न राहुना'ने'स्र' इयया न्यताच्याच्या वर्षन्यया निन्यया ऍग्यतान्तुन्देरिक्रातनेनरानेनात्तुग क्राह्मवराद्यवानेना केंबराव्यात्तुग्राय। यन्ग्नीयर्झेयशेरवके:बेन्द्रनुग्राबे**ग**् बर्चेरः। ब्रु'बायावुबायवा चतुन्'ई'त्ययप्याने'वर्ष्वेद्यार्वेदरार्वेदरार्बेद क्रित्रिर्स्सर्रिः कुर्ष् वृद्धिविष्ये स्वित्राद्धित्। सङ्ग्रियापने हुः दूरि मिस्र हेन् प्राधिव प्रवा तिष्ठुत्य विस्तर दिस् है है है हान् न वह है। त्रिंरः पर्वव्यव्यक्षियन्वारळेवा व्यव्यात्राचा केवा छरा प्रशा खर्रातसरचन्दरत्रचन्दा ह्युग्तर्देन्धाः हुत्वन्वन्थेन्धन्दाः रनःन्चनःबेन्धरःष्ठिशयनेचशयर्नन्धःचुनः। यद्गेःभैदःवस्रक्षञ्चः अत्यः वृषः प्रवा क्षेत्रः वा क्रंबित्रः विवायः *ढ़ऻ*ढ़ॕॸॱढ़ॾॕॱॺॱॺऻॕॕॸॖॱय़ॸॱढ़य़ॸॖॱख़ॱॾॕॣॺॺऻॎ ऄॗॗॕड़ॱऄ॔ड़ॱॺॸॱॵड़ॱ ष्युर्य। ने'वयामञ्ज्येरवे'न्म्यप्टुरा वेदावेषाचं व्यत्रुद् **श**ुंद्रश्रयापर हे ज्ञान हे या नाज्ञ या ज्ञान स्थान है या नाज्य या ज्ञान है या नाज्य य ह्यप्तत्व न्नायपात्यपाय। ह्वप्तेर्र्सन्त्रः मेन्द्रप्तंत्रपायेत्। ह्वे**व** ऍव्यान्यान्वेद। यर्थं क्रेन्य्राय्त्र्यान्वेस्यायव्यायुक्ष শৃত্যদ্রা দ্বার্থাদ্র্যাদ্র্যাদ্রা স্ত্রানাম্বর্ণার্থাদ্রা न्बर्धित्र्क्षेत्रविराम्किरम्कित्वर्धत्। स्वकान्देन्वस्य

क्रींस पर्नः त्रेयायः पर्ने या श्रेयाय या विषायय। श्रेयाया क्रेयायी प्रतिया प्रया প্রদেশমে সুষ্ম শ্বার্ডিশ। লদ্দে নিন্দ্র মুখ্য শ্বান্থ পুর্বিত্র প্র ब्दान्देश्यर्क्षण्युः भेष्यति गोद्दात्रका क्षेत्रात्र विद्याप्त विद्यापा विद्यापा विद्यापा विद्यापा विद्यापा वि द्वेप्त द्वायाय देपत्रिम विष्येष्ठ विष्येष्ठ विष्येष्ठ । यवि'र्सर'र्स'त्। सहत्व'नर'यर्ग'नेख्यातरे तस्यस्ति'त्वसार्धसः र् र्श्रन्द्रशत्रुष श्चेष्वर्षुण्द्रश्चन्त्रश्चरायव्ययव्यत्र्र्भातः देव्यद्वप्ये मत्रकेर दें अप्रचल विषात हुर वेदा রীঝহাস্তর স্কলহার দ্রী যোগ। ८५ुग सप्तराङ्गरयात्रयार्थे अपविद्याद्यादशुरागीदाद५्ग *ब्रा*ञ्चरःकःबेर्'पर्दे'तुरःदेरःवीञ्चःकेन्'र्मे'तुराज्ञुन्दःद्वेरःविरः ८८व ব্যান্দ্রাব্রাইরাহণ্'বর্লাব্রাবামার্ল্'বেরিইন্'| স্থারান্ত্রামারা ୡ୶ୢୖୠ*ଽ*ୄୖୡ୕୵ୣୣୣୣୣୣୣ୷୳ୣ୵୶୶ୢୖୠ୶ୡୄୠୣୣୄୠ୳୳ୖୡୣ୵ୣ୵ୄ୵୷୶ୢ୕_ୠ୵୕ଵ୕ୣ୶ୢଌୣ୕୶୷୷୷୷ कुर-दे'भे नेशकीकुर-दु'म्बुर-तळवानर-ग्रत দ্রিদ'ঘ'ঐব'দ। <u> বাগ্রন্থার্ক্র বার্ক্রানী বাদু রার্মা বার্নার স্থান স্থার্থানার।</u> *ব্ৰব*্যাইণা *व्*:युन्:पःस्यराञ्च,'तुन्'म्**रा**णन्'व्यायतुन् क्षे:र्न्न्र्सन्'व्रयायुव्'व्या' *पुः* बॅट.५२५ ं पत्रात्राङ्गेट,तर्म् प्रांत्रात्र्य,प्रंत्र्य,व्यंत्रात्रात्रात्र्य,व्यंत्रे व्यंत्र मु अदि वियाद रार्ड पार् की कूँ में दे स्ट्रिं पार में अरा रूम गाउन ষ্ট্ৰৰুণ্মকা है। हैन्योगेषयसीयानेषवन्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्य **╙**८-७,त-७१/८५/८५/५ ५१/५८/५८/१८८/१८८८

व्यात्तुग्पायवेंन्। स्यायात्वायया तुनाह्यावतायायेव। तह्य पर-<u>ग्री</u>श न्युर्ग ने दशर्त्रीन 'य'धे'न्यकी स्राप्त स्यान्तर । दय गुरः न्नां वर्षात्र द्वारात्र में वर्षात्र में नार्षात्र नायम द्वारा में निर्मा क्षेत्र नायम द्वारा में निर्मा क्षेत्र नायम द्वारा में निर्मा क्षेत्र नायम क्षेत्र नाय **ह**ियाची:कुरःपञ्जेयत। **भु**:रेरतान्यरं वाग्वेन्'सुवास्वारं स्विग्'स्र न्यत्व इरत्रेषाकुनग्रह्णयाय्वर्षात्रेर्पते द्वायर पुरुषाके सु नेरः बद्रत्यं बद्राप्त्रं प्राप्तः क्षे त्रायः दिन्दे व्यवादि वि र्नेर्याने हेंग्पा हुर विषा क्षेत्रा या या हु प्रारं ने र्या प्रारं মন। খন'ন্ন'ম'ই'মর্ব্ব'মনমাস্ত্রম'ঝর্মব'জ্ম'ম'মঝর্মভন্'ঝট্টর'ঝ' त्वव्यायात्रावुरामराकेषाः क्षुयाव्याकेषायात्रायाः वर्षे सामराज्ञायात्रायाः । चलेन्स्राज्यार्चे द्रायस। हे चर्ड्द्राह्यन्यराग्नी च्या द्राप्ताराग्या न्तु क्षरः गर्रेगया द्रवापत्र गर्म प्राप्ता स्राप्त द्रवा हे पर्द्रवाय वर्ष मन्नात्सर्नेन्न्सन्निन्द्विः निन्न्निन्द्रकेषा अन्निवस्यम् निन्द्यम् दाने'न'दन्दन्यन्ते'व्रवस्यम्नम् हुन्। न'वी'यने'पाके'र्यन्'दावुवानेगु ग्राम्याया श्रायाभ्याम् स्वार्थितार्थे त्या स्वार्थितार्थे व्याप्त्रे व्याप्त्रे व्याप्त्रे व्याप्त्रे व्याप्त ष्रताहै। नेद्रवरान्वेतवाकीन्वेत्रिक्रत्व्वालिकानुन्द्रव्यगुरानुः ধ্রথ'ন।

धिश्रदायर्श्ववायद्ववराष्ट्रय। १२ विश्वविद्धेष्टाश्चेत। १ मन्त्रम्य **ब्रिद**्ह्य'र्द्रम'द्रकार्क्रम्य। । शुकार्ळ मुनः भिन् 'या या नग्रीका है। । हमः सु रेट्र ग्राय प्रस्थित राष्ट्र द्वा । वित्त वा क्षेत्र प्रस्त वित्र क्षेत्र स्व ह। । (अक्ष:क्षेत्र प्रायान्य ने अर्थे न । वित्र क्षेत्र क्षेत्र कुरा न वित्र क्षेत्र कुरा न वित्र क्षेत्र कुरा न वित्र क्षेत्र कुरा न वित्र कुरा न व मन्या । निराह्मे वर्षे श्रम्भा मन्ति। । क्रियातस्य वर्षे द्रार्थः ब्रायाहेग्राक्रा | प्रायाः भेराञ्चर में ग्राय्या वर्षे मानु । साहे पर्दुवा रश्यान्तेन्द्रायहर्या विर्मितियम्बार्यस्य हेन्सुया विन्तुः <u>ष्ट्र</u> प्रतापाञ्च वर्षिय। |द्रेराञ्च अर्थः प्रतापायाय क्रेबाग्रुरः। ।गवे त्रिंस्पिति हें बाया बें व्याप्येन विद्या है। तही न हे बाया हिन विद्यापा वि भ्रम । तिरेग हे द दूर पार्ति भेरापहरा । श्रुप त्रं मेरिय निरादा क्रियापादी । हे हिन् की सुनाय हेरी इन या सुनाय सुनाय हुन। । ने की यहेन हिं **र्व**िरोबरातारहेग् । तमस्यातुः **देवः बहेरा यानुः** हो । वनुसः श्रेनः सधिन्यमञ्जेदपानग्रीय। |द्यागुनःहेलान्यस्यान हम। |नेहिस र्षुग्'र्रेलकुर'ल'रवर्। ।र्गुर'र्'व्रव्यक्नु'रेर्व्यव्यय। ।युवेर्' मते। । या व व व से प्रवाद दे इवरा हुए। । प्रहुर व प्रराही कार्या **5**ব্। | শ্ৰেল্ম মান্ত্ৰ বিষ্ণ্ডিম মানু ব্। 1ने'लर्जेन'की देय ८ पर्वं प्रा | विक्तिप्रियं सर्वे क्षा क्षेत्र है प्रा हिन मण्डव। |र गद्रत्ररवर्गकं सं प्र प्र । अवाप्तिकाकी सर

ळ प'यायहें या । इंग्राने 'तर्द्र' हुन' गुरुष' गुंज्र' पा है या । गुंधिन' प्र न्गरारमानुषा विनान्नरान्धराच्यायन्यरान्धा विस्तरान्ध **ই**ণ্'শ্ৰ'মেইঅ'ইঅ'কব্| |শ্ৰম'ই'মেই'গ্ৰম'ম'ট্ৰ'ম'ইন| |শ্ৰ**ন** इट.प्य.सिव.से.प्याया । अ.ध्य.संक्र्ययाच्या.पयाच्येया । अ. हिना'८ राश्ची छन् तछर श्रुवा । दे ति विराम् महाया क्षेत्र । **ख़ॖॱॾॕड़ॱॸऀढ़ॖॱॸ॒ॻॸॱॿॖऀॸॱॻॱॺऻ**ऻॻॾॕॱॸॣॸॱड़ॖॹॹॖॹॻॖॹॺऻऻऻॗॕॸॱ बद्द-न्द्रवाश्चिः व्यन्न ह्ना ।नेपा बद्धन हेन्द्रवाश्चित्रा । मह्म- विरामित्र मा अवा । निवा मा विराम बद्धव्य्व्य्द्रें हे गाप्ताया । यावेर्यं व्यापत्ति है ते पहुत् छैवा नग्रा विर्वेतिवर्षरमुञ्ज्यवर्ष विष्याराग्यवरुष्टिरन बैस। । बुअन्याम् पॅर्न्रम् केषानी। । दूर-तुः सञ्चर् ग्रास्यः । हैय। १२:५ वया है हुन्यवययायय। विकेर ५८ है र प्रति स *ज़ॺॹ*य़ऻॎ ।ढ़ॸऀॱॡऻॕॸॕॸऀॱॿॢॺॹॖॱॿॢॺऻ ।ख़॔ॻॱय़ॱॻफ़ॕॿॱॸॗॱय़ॻॺॎख़ क्षेत्र। _|ने हेबान्यसञ्ज्ञानर प्रकारत। | **गरोर क्रे**क्स प्रेस देखा पन्नत्य। |नेतुःसुन्यतःमंन्नर्ययानग्य। |मॅर्न्सःहुन्यहेःसुः क्षुयाह्मरा । विः हेरान्यं न्तुः र्तुर नक्ष्यं पर्याः । न्युरिः नेतुः वर हुन्। नुकाक्षेत्र। । नुनुकाको कृन्। केरायदि क्रीन । विकास तन्य

कुरा गरीर सर्ने ग 'ठरा । एइ ह्यार यर ये ग न व हिर है। । रीयया <u> न्यते श्रेलागुन परुराया श्रेला | बतुवानु खुर्वेना पर्नेलाया श्रेला | ज्ञिया</u> *ज्*रॅंद्र्'र्डेग्'र्राष्ट्रेय'च'बैय| । शुरु'यय'ये'द्रस्ट्र'र्राट्र'येय| । श्रेट्र' वानि ज्ञानर पार्रेय। । य वर्षन हो वया ने इवया हुर। । भूया प्रेये तया क्षे⁻८ के तक्ष्य के प्राप्त का स्वाप्त के प्राप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स्वाप्त के स हे'रार्ड्ब'ग्रे'व्यावया सु'झे हे'र्व्रेब्'रा'ह्यग्राठी ন্'বার্ষমে'ন'মবা। मने'क्षे'तळत्यनमनेबादा'ङ्गेन्'ग्रीमात्रॅन्'तालेन्'यहेन्। इयाहेन्'नेन् मरामन्वातहेर्यकेष्रमां स्ट्रां व्रा विश्वास्त्रकोष्ठवाःयाः श्रास्त्रहित्। यवाः स्ववारको ह्रास्त्रवाः श्राचारा नहें त्र विकार तुर्वे अवरा अप के का के विकार विकार मेव। हैं प्रयापहुरायायानेव। हैं प्रयाशेने कें वाहेन शेवाहरा तन्तराचति'गन्न'प्पन्'केन'। सर'नराही'स्याग्री'ने'विं'न्'वेन्'विंन्'नु **कुन्'राधित'राया। तुः हिन्'**श्चैयाञ्चयापातीय ळव्'कृषाने' इययानुयान्'रेया म'क्तक्र'न'षेश्राक्षेत्र'विदार्खत्रायाँ'नेश्राह्यु'तम् 'र्नेव्र'न्द्राह्युन्'ग्रीया য়৾৾৾৽৸য়৻ঀৢ৾৽ঀয়৸ৠ৾৾৾৾৾৾ৢঽয়৻৸৾৾ঀৢ৾য়য়ৢ৴ৼৢঢ়৾ঢ়ঀ৾য়ৼ৸

য়ु:देशयन् मत्यां स्रे हेय। १३३'ড়न्ने प्रार्थन्य स्राप्ति प्राप्ति प्राप्ति

5्रमग्राप्त्रवा ।ग्रयाप्याचन्यंते हेन्द्रहेन् बर्दा । ने'गुन्दि'संस्टर'के'स्रुस्ययम् । वि'सस्यन्त्व'व्यक्तरं हेन्'त्वस्य देशकेन्'र्'तवार केमेन्'गर्हन्या वि'ग्रव के करारवार हैं न सन्ता । वर्षे कुत् पङ्ग्पा क्षाया निकास्त्र वा । देवा स्वाया **डैक'य'वद्या । बै'यय'यम'र्ग'य'येद'हे। । ग्**रॅग'र्म'ग्रॅव'र्म'य' यान्त्र। ।क्षेत्रमांकेत्रहेशस्वाध्यान्यत्रा ।तेरवेद्रक्षः वदेर्त्रहे पश्चन्या |मॅन्न्न्यस्त्रिक्ष्यारःग्रह्न्या ।नेःन्न्ह्यय शुः अर्ह्वे न' वया । देव'ग्रुट' न' नेश' यह न' भूश' ने। । यद ट्राखट ट्रह् न स्वव्यक्ष । राष्ट्री तथात्र विष्याय ते स्वात विषया । विषय विषय तत्त्रवर्षायदेश्वम्। । कुर्वेदेश्वरःकग्वत्वरः। दे। । कॅब्बर्वेदः । विद्या स्'नर'नमृत् । शुःसुन'र्देनराकुं निर्देग'दे। । शुन'यमत'यदिरास र्सर गुरुषा । र्सेर् कुं छ र्षेर् 'बेरा रुदी । क्षुप्तरे प्यत्र हे । छुन् छ। । छुन बेन्'र्नेन्'बर्चन्'नदे'पन्। । शुब्राञ्चय तुन्'ग्रेन्'ग्रुंन्'रा'ने। । नेग्'रा' सुभ नवि विनाम दे हनाया । विनाय नविश्व मय नवाम दे नह र देवा । **ब्रॅग**'न्ह्त्यक्रे'अ'र्येन'न्यत्य'च'ने । ब्रॅुन्'चर्येनेत्य'य'ब्रन्यचर्यक्षेत्र। । यण'येन'रन'न्**ग**र'थे'ग्रु'यर| ।कुल'युरु'गविव'तुरी'र्सुल'यविव'त्। । यण्भॅन्'बर्देशपर**ार्बुन्'पदे'यम्। ।**न्रर्नगरत्यार्गु**र्ब्र्नप**्ने। र्र जुन् क्रिंत ज़ैलाका में लायहा | में ह में र प्रेर स्व पायह करें करें | | क्रि

यहे परादर्भे द्वाने रात्र पर्याप्त । । इस स्वर्भ प्राप्त अप प्राप्त का विकास त्रिरम्ब्रुअने न्थायके न्यापाने । कुन्क्यपान्यु अन्न न्द्रन्य दे **यह। । वे**१केंग'न्गर्येदे जुद्यसेख नैन। । शुक्री गुन्र गुवाञ्चल या दी । नञ्जन'स'गबुअ'ग्रैब'रन'न हुन'क्षेत्र। । गतुबाह्य'त्र'न ददेन' पति'यम्। । अ: स रंव'न्व'न् सुन्'याने। । तमः तम्ने सा से केन्यि यह । भैव के वास्रायह्व स्थाय में प्राप्त । देव है से प्राप्त हवास नहा । REF'म्बर'म्बर'ण्येरक्षे'इ'म्दी । ऋद'म्बुर'म्बर'क्षे'म्न्बर्यारण् बैया । म्रायाद्व हेबाबाद हैवायदे यहा । या या वायवा बाहि वाय या दे। । यने व सायने प्रस्थाय में प्रदेश । स्वर्थ कु सावित्र पुरा में प्रस् चतित्तम् । अदंब'स्व'र्हे हे'ग्'यु'स । सिं क्रेंस्'रा'अळेंब'पदे'तम् । मतुन् देवि यदुन् श्रीकाण्य पाने । विश्वकार्श्वन पाने पान हो । ष्रिरवर्षेष्रिर्द्राप्त्र्वर्यान्। । इस्ययं दिन्ष्वस्य सिंद्राप्तिन्। र्राष्ट्रियं राम्च अवार्ष । दे प्राध्य प्रकृष्टिय प्राय देव प्राय हैया । विष् राष्ट्रप्त्रपुष्ट्ररपद्री । विवयार्श्वरायम् विराधितम्। न्यात् रिं सहेरांपान्। विराष्ट्रराययान् श्रेरायदेग्यन्। दिरासेयया स्वायानग्यानान्। । हारायहवास्त्रवान्तानेवारताक्रिया । हेवाकेदा . सद्यानु'पर्त्रेन्'पर्दे'यम्। । त्रम्'नीरस्वरान्ग्रम्थाःने। । तम्'नीर्ह्य ब्रियास्य क्षेत्रया । भुः केपार कर्षि त्रुप्त व्याप्ति । दिर तर्द्ध व स्वराधिया Rकॅनदेन्द्र । अग्पर्वाद्विङ्गव्यव्यवस्ति । इत्यं से विद्यारे विद

बर्ळेन्परियम्। ।वर्षे'न्रस्यविक्षक्रवा । वुरक्तिवेवक कुं बिच, सूंत्रयानेता । व्यट, व्यट, त्यं किं प्रविष्य विषय प्रविष्य विषय विषय विषय विषय नव्यारोयानवे नन्। । त्राने हुन् चुः कुवायाने। । हुन् केन् केन् <u> न्छेर् बेर्पिते । हॅं नबर्प कुर्प कुर्प हें नदेग्न । ने हेबान्य वा क</u> सरपङ्गपन्। । ग्रेर ग्रेजून में स्यापन नि । वि वि वि **५न्' कुर्'। प्रित्'युग्' चर्'। विद्युग्' चर्'। विद्युग्' चर्'। विद्युग्' चर्'।** वित्सुमराग्रह्माधीय। । । सर्चे मदीने देन देन देन देन । । दत्त मैदाञ्च न सक्षेत्र केया । द्विन प्रमायम् दाये प्रमायम् व ह्यम्यहेर्यक्षेत्रम्यक्षेत्रपदेश्यम् । विःहेर्यम्प्यर्त्यन्त्रस्यम्यायय।। न्यः भेनेतुः वर्गनिरः अरी । वर्गनेर् हरः देवः कुन् क्वरायता । र्गत्रपर्देशे भेषा वर्षे रापदेश मही | विक्रिंग सुर्खेण वर्ष वर्ष दे। | <u> इंत्रह्मश्राञ्चेमश्राचेत्रात्रकर। । वृद्यश्रञ्जेनश्रञ्जेमश्रञ्जेनश्रञ्जेनश्रञ्जेनश्रञ्जेनश्रञ्जेनश्रञ्जेनश्र</u>ञ्जे नम् । सुन्थेन् अन् र्याच्या । स्टन्न मे स्वाद्या मते। हि.में र्यन्तु वर्षिय दे यहा । र्वक्षे के व्यव्ये के वर्षे दे क्रीन विवर्गने। १९८८ हेन्हेन्यरान्त्रक्तिला विवर्धिवरान्दर बसरमाम्जुन्यते। ।वापरायाञ्चेन्यतेवर्गेत्र्न्यत्। ।हिन् क्तित्रंतरपुर्वरेग्वरा विव्दुत्वर्यक्राय्येरयर्प्यव्य म्बः श्चर्ययदे ग्वर्वि पर्। विशयक श्चर्यक श्चर्या विश्व A द्या श्रीका व्या में का देवा । विकास के द्वा श्रीका व्या में का विकास । विकास विकास विकास विकास विकास विकास व न्मते श्रीय गुन्म रुषा प्यापा । श्रिन हेरा दे पार्वे पार्व

द्धरासेससान्यतान्वरातु सुरा । तर्जे हुनासेससा उत्रायर सुराय। ब्रुयाभुषात्में द्वार्चेन प्रतिपन्। । बतुन दुः स्वीग पहें तापाने। ^ॾॕॴफ़ॖऀॱॾॻॱॺॖॆऀॸॖॱॸॣॱॸक़ऀॱॸड़ऻॱऻॿॖॸॱॹॖॱऄ॔ॸॖॱऄऀॴॱढ़ढ़ॖॏॴॸऻॸॆऻ<u>ऻऄ॔ॸ</u>ॱ विवर्षात् गर्मेरः गुर्हे रामदी मा । शुक्षात्मा वे प्राप्त पर पर पर पर पर नने इंन्'न्तु यहित्यहेते भेरा केता किता हैना करा इस तह नहीं न क्षेत्रयाञ्चाचाप्तराचादे। । तज्ञांद्रराधेत्यवेद्वांत्रद्वां वार्ययाञ्ची । हराया हर्गानुष्यपदिग्नह। सिक्षेत्रभाक्षेत्रभाक्षान्यम्। ।तुषाक्षेत्र बरत्वुर्य्तर्थर्यस्व परि । दृष्यं न्वीयर यन्न्यं क्षां कीयह्। सर है 'सम्रावर्षन' हुम्रान्द्र' स्प्राच्या | वर्षन्यर प्रतुद्रन्द्र क्रा भैन। । हुः यर नेशन् पया नु त्युर। । हैः तय वै नेश तक न् वी नेश । पवर है राप्त देश है गापर पन्। है तथ हु तथ पवर व नुर वर्षा । नवः श्रेश्यम् मेर्यम् वीयरः यन् । । यर श्रुवः न् र वर्षः वर्षः न्दायपद्य । वर्ष्टन्द्रियद्देन्द्रन्यक्रिया । व्रिन्द्रने व्रित्र् ताने क्रेन्व्रा मुख्याव्या स्तिक्षे हे हैं व्यान रेवा हिन्या हुन निरंदेशन्, संवकाकाष्ट्रमानिरः कूर्नानाक्ष्यकिरामाकु निरंदे के विदेशा है। य'म्ब'र'धेय'एडर्'वेय'चय'ळेव'वेर्'खेन्यंश्रुप्तेंत्र्यहे। यह' ह्यान हन्यायाची वित्याप्त स्थापता स्थाप ठद'र'क्षेप्तइ'तायाभैद'रा'ग्रेचेग्'रे'तृत्राक्केषेत्। तु'ह्वेर्'त्राधार'तेवता ৠৢ৾ৼ৾৻ঢ়য়৻৸৽য়য়৸ৼয়য়৸৻৸য়৸৻৸ড়৸৻৸ড়৸৻৸ড়৸৻৸ড়৸৻৸ড়৸৻৸ড়৸৻

तकरामधिनाने। केंद्रियमाताने तके प्रेशमहाम्याने सके सम *सुॱॺॖॕॖॸॱक़ॕॕॺॱ*ळेवॱगमतॱॺॱढ़ॏग़ऄॖॸॱढ़ॱऄॱॺॺॱॹॖऀॱस*ॹ॔ॿॱढ़ॖॺ*ॱय़ॱॺॸॕॿॱऄ॒ड़ॱॱॱ अके विषापतुर'तहषापाधिवाद्या । व्राव्यतिष्युरार्ट्राट्रावी विराहन न्यत्रं न्यं न्यं न्यों म्र्यं न्या स्त्रं मर्डराम्बर्डरायाचेत्। ज्वत्युत्युत्रच्यायाद्यः वेदाप्रस्ट्रायः तस्त्रा चति'कु'भित्। सर'र्से ब्रॅस'न'कु'केु' तके'चर'र्ने'तिनेतात हुताचिरे ब्रून'च **८२ै** :शे 'यस है 'यम्' प्राधित। विन्या 'न 'हरू परि' प्रमाह मार है 'ह्या सें महिन्'त्'र्सन्'र्स्' इस्सिन्सिन्'ग्री'त्र्वातापात्रत्वुन्'राहे। पर'र्ने'ड्रु:अ'वेर'त्रह्वत्यचु'प'पेत्। पग'ह्यप्र'र्मेश्रर्थायंश्रहर धेत्र्यः Aश्र तरा न ने के न ने हिराह्य तत्र म के के न प्राप्त म में में मान के किया है जा की के मान के किया है जा की किया *वृद्यशा शुँ* स्पार्मे ने प्राप्त स्त्रेत्र स्थाप्त स्त्रे स्थाप्त स्त्रे स्थाप्त स्त्रे स्थाप्त स्त्रे स्थाप्त स् नते स्यायवर धेव दर्यानर में यंत्र का क्षुंत हैं ग्राम ते सुर रहिर तह्या नस्त्वस्युद्धारस्यार्भ्रस्यस्त्रित्रस्त्रित्रात्रात्रात्रे हेन्द्रेन्त्रीया परन्देन ह्यरायान्यराप्तान्यराप्तान्यरासुः ह्याप्तिने पात्तिनासुन्याहेराप्ति हरापार हु **बुरायय। हे पर्व्य में जैस यगुर पर्दे ग्**युट सर्दे।

खनसन्देन । स्निरियर में ने स्वर्धन । इस्मिन्य स्वर्धन सम् न्यर-न्रः। ।न्र्रेन्-तुःयेन्-पदेश्येयराष्ट्रेन्-पृत्तेय। ।न्धेरवेन्-पृत्त्वाः बरिप्रप्रुवित । इंसप्रियरिप्रप्रें प्रेयस्त् । इंस्विव्यक्ष्र्रप्रदे त्रितःङ्गरः न्रः। । तरः तेयसः क्रें पाये ने पाये ने विकास निर्मा । विकास निर् *६९* 'रेग'क्केश'यर'ग्रेग । क्वॅंर'पदे'यर'र्ने'दे'वाबहॅर्। 1975 षश्चारम् इत्राह्म के त्राह्म निवास के विकास के व हुं अः क्षुः द्विरे र र र तु । य विश्व । विश्व अधिय र दे रे दे । य व हिं र स्राम् द्रयास्पर्मा | निर्यापाक्तियारान्द्रयास्यास्य विद्या रेअर्र्, रु.वार्डव । तथान हुन् ह्वार्का नर्रोने तथा वर्षे । । वनका मया बुरान ते सं कुर् प्रा | भेरा र पा मया बुरा स कुर् मा है या | र पर न्शुक्षःक्ष्रं दिन् क्षेत्रं स्टरान् केन । न्दर् क्षेत्रं स्टर्ने देश्वर्षेत्। । रूप **र्नेंब**ॱळॅब्राञ्च,'तञ्चरःबेन्'न्न'| |षाबब'र्नेंब'पाञ्चपदाञ्च,'त्रपाप्येन्' **प्**रवेश । र्छेरवेर'प्रवृप्यते'र्र्र र्'प्रवेष । श्रु'प्रद्यक्षेप्रराहें ने'त्र'यहिन्। |य'न्य'हु'अर्राक्षेप्यत्रार्क्षे'न्त्र। |न्य'द्राक्षेर्वाह्रय रान्त्रेय। । पर्रेदिन्न्ययाग्रीर्ट्र्न्न्येन् । तत्र्याग्रदिपरःर्देने त्ययहेंत्। । देशपाद्यस्यहे। यहाने मर्द्धम् क्रीवियव्या न्युकारा क्षे'लब्राञ्चन्यान्यम् निमान्यम्यान्यम् निमान्यम् विद्यान्यम् विद्यान्यम् व नैर्रोबॅरके सथनक्षुम्बही व्यवस्य है। प्रवासिक वदाहे पर्ववातावर्गापन्नाता है तथा प्रमानम् पर्वे वाद्यवद्या

*७*ॱअर्<u>र</u>्चर्मं पृष्ठेण प्रस्त्र व्यायन्य विश्वेन् वीक्षेत्र वीन् क्री यानु विद्यास देखा वेत्र । रशः कुरः श[्]रो पर्वाया अरः पाकेवः में व्याया तुः क्षेत्रं व्यास्त्रात् केवः में ८व'लुर्रा'परा हे'पर्डव'क्के'वारावरा। क्षे'वायानन'८व'क्षे'वेरार्श्चेरा भग्नद्रभृग्'र्य'केर'ग्नद्र'तुर्य'प्रवा सु'क्रूँव'प'दु'वे'द्रक्ष्याया <u> इत्याप्तेया,यशित्यादयाई,पर्व्याभ्रेयाञ्चया,यथा,पश्चिताभ्रेया</u> रेश्ववरायामञ्जूरार्थे। । रोयराञ्च वयराञ्च (स्विराम्याध्यार्थेना **इ**ंदिला नेपान ने के प्रेर पान प्रतासन ना ने पान का प्रतास की की वार का क्रुकाक्ती प्रस्वापायान्य पानुकाराध्येव दें बाह्य रहा विपार दिक्ती है अधारी **८ शेर में भेवा ब्रिं**न्'ग्री'सेसरामश्चेन्'कु'दुन्'मरात्में स्वाकु'केव्'में'स इत्यान्द्वित्रर्द्द्र्यान्द्रिक्तित्र्युवित्रवित्राच्यान्द्रिक्ष्या त्युरायराष्ट्रपायुर्व। देववादेषवृत्रमाध्येदेवात्रुरायराप्टरेवा दा प्रवार्मिका स्वार्मिक विषय स्वर्मिक विषय स्वर्मिक विषय स्वर्मिक विषय स्वर्मिक विषय स्वर्मिक स्वरंभिक स्वरंभि वयायव्या विवासेत्याकुराचीतव्याद्वरास्त्रीत्राह्मण्यास्त्रुरा कुर महर्स् व प्यतार्थर है दें कुर् महर् र व व वर्ष र स्कृति विर मवस्य र पः

ब्रु'यदि'हेर'दे'दिहेद'याग्रहें र'क्रुयारे'हुग्य বঅ'র্ম্ব'র্ম্মন'রের্গ ग्रेंदिं भृगुः सुदापदानुदापायर्षे । द्यायम्दाद्यानु यदे हुनः तृः हु दा हे द्वर् नुस्य स्तर् नु व द्वर् स्तर्भ स्तर् । हे मई द ही व त्र स्तर् हे से न्याकृतिव्यायर्घनाकृषे यान्यामु मुलामु महेयान् राज्यायर्घना हात भ्र नःवार्चनःयानायम्यत्वावीय। यसमानवायम्यत्विनःद्वनःतुःर्यनः য়ৢ৾ঀ৻৸য়৻য়ৢ৻৸য়৻য়৻৸য়৻৸য়৻ राविषापर्देन'राधिव'है। न्मॅं वापरातन्त्रा प्रवानेर वारवाया में बवादीन हर की तहार हे स्वा **न**सत्यत्यस्य ५ वस्त्रस्य स्त्रस्य स्त्रस्य स्थन बह्बं नेशं नर र्दः दः झुतै : चुतै : चतुन् : त हु गृ : यः भैद : प्र य विदः पु ग्वर : पा ग्वर : छे। यन् न्या व्याप्त व्यापत व् र्से इं द'र्स जुरे केंप्रवार द'लाय 55' ग्री बाबी खंग बारा फेदा है। **B**5'05 चरत्त्रत्व'यथ। स्वाबदास्चित्रक्षेत्रवाद्वत्य।स्वाबद्यास्चित्वतिः व्यायन्यातुषापय। वेवयक्तिर्देशयर्गन्ताक्ष्याप्तान्त्राध्या हे विवा सुरासन् भुन्ति वे तर्ना तरे ते बका कु हैं दें सुवा विवाय है र नते हैं बहारा बहिषा कुन्य हो। नेते नुषा हुमा महाराया प्राप्त का कुषा न्र्रें राज्यवर्षन् निर्देशने वा नहवारी हु निष्ये वा प्रवाने पुरुष्टें वा वा पा "" ब्रुॅंट्रय| कुट'यग्'बॅर'य'ब्रुंट्'येक्ट'गे'यद्यट'ययाद्यर'येव'यबार्ब्ह्र्ट्' न्याक्ष्रिंगागुत्रन्य। ने'व्याक्ष्रें तिराक्षेत्र'तु'व्यापाश्चरवाव्याव्यायं रवें'ग हन्

इत्राचित्र्यायात्र्याः द्वाच्यायाय्याः व्याद्वाच्यायाय्याः व्याद्वाच्यायः व्याव्यायः व्याव्यायः व्यायः व्याव्यायः व्याव्यायः व्याव्यायः व्याव्यायः व्याव्यायः व्यावय

स्वार्यस्थित्राच्यात्व्या | द्रिय्क्रेक्ट्यास्याः व्या | द्रियः क्रियः क्रियः व्या | द्रियः क्रियः क्रियः व्या | द्रियः क्रियः क्रियः

तमन्यप्रायते द्वारा वित्र ह्वा वरने यार बह्री । हिराह्नराक्ष्यासुराव्यवात्युर्वेरवा । देवारग्राज्य क्रीक्रर'प'तहर। |ग्रॅंग्राक्रीक्रूर'प'न्र ४ व्। 一道点が続けて हुर्ले नेशकेव। । यर्जेषयंगुवक्कुं यरनेशपर्यस्त। बूर:कॅर्याभुर:वृत्रवाशुःवेरवा । देवारग्रान्वे वरी:बूर:पारकर। न्नायतिः सूर्राना भूरा संवा । त्रातायेत् क्वेनिरान् संतानार्येन। तरम्बर्यार्कत्'कु'यरमेशायर'यर्दि । प्रस्वर्यां प्रतर्केशिर्दे दे। । जुलारी नित्रायायल नहाराया । जुलारी निराम सुराया |बतुब्देन्देब्छेब्'झुटब्रम्पद्र| । हे : ब्रॅं न्देब के ब्र' झ्या लु R51 त्र । दिप्तुव्वं व्यंत्रुत्यंत्र । वित्वत्वरं प्रेरक्षे *৻*ঀয়ৢ৾৾ঀ৾৾৾ঀয়য়ৢয়ড়৾য়ড়য়য়ৢয়ড়ড়ঢ়৾৾ঀৠ৾ঢ়ঢ়ঢ়৾ঢ়য়ড়য়য়য়য়ড়ড়৾ঢ়৾য় [तुःब्रिंत्'ग्रैयत्में द्व'त्युतःक्नें बक्की । न्युत्यद्वां ब्रिंत्'ग्री ग्रीय। बिन'यन'न् ने श्चॅन'र्ने हे तिहें ब्र'यात हे अश्चिन' मुन्याया विवाद्याया पिकार्ते । " गुशुन्य। ने'व्यान्यन'न्न'व्येव'क्क्यवार्ये'यग्रादेव। कॅबाम्बयाउन् <u> </u> हॅन्यायर न्यूवर व्या अ.स.स.च्यूवर यहेन यहिन यहिन व्यक्तिया नुःर्यान्यास्म् वरानेगाम्बर्याः नेव्याहेन्द्रन्थनः पष्ट्रम् न्युवा शुपानेगान्यायास्य पर्वन्त्रीन्यात्रम् व्यायास्य स्तर्त्ते म् ् त्रअविनानी व्हेर पॅनिकाशुप्त <u>विनाना स्वाप्त स्वापाने विनानी</u>

नवन्धियामिनिस्यतियाम्यान्धित्याम्यान्धित्या त्रैराचेन्'मवा<u>वि</u>न्'तुर्'र्स्यग्'ताञ्चन्'र्रेग'ग्रुन्'रे। न्रुवारा'ङ्गेन्'रा विन्यः स्वःक्षित्राच्याचेत्राक्ष्या महिन्यः विवादिन्यः क्ष्याः स्व तरिते'ग्रॅंशमग्येर्'परादेते'सु'ग्रेश कॅशमयवाटर'ग्रेग्'सु'देख पावेबद्धाः पूर्या मः मेब्रारायाना मेथ्याना मेवियायानी मे ण्ड्यकुरापतिके न्रित्रिष्ण राष्ट्रिके दुर्हे। नेरि मेन्यस्य प्राधित्। रे'अर'न्राधेव'व। अर'न्त्रस्थत्वपदे'न्स्त्राक्ष्याप्तः য়ঀ৾৾ঀয়য়য়ঽ৻৻৻৻ৼয়৾য়ৢয়৻ৼৢৼ৻ঢ়য়ঀ৾৸ঢ়৻য়ঀ৾৻ড়ৼ৻ वरावे स्ट वे पविवासन स्वराधित पविवा नियस बाह्य सामा मिनाया र्वे चेत्। ज्ञतः सम्बन्धः ह्युयः सम्बन्धः व्यक्षः चार्चेत् सम्बन्धः प'न्न'बे' इवराहोन्'रैन'बूनराय'ग्रेण'ॲन्'प'ने'व्नन'वे'ब्नाळेव्'सं'" ॲं**५'पदे'हग्**राभेद्। व्र-'व'वे'श्र्-'ळेव'रॉॲं५'पराखें रंसच्यकाउ**्'** <u>र्गर्यस्यव्यव्यद्रात्र्राच्य</u> सर्यान्त्रव्याः स्थान्त्रव्याः स्थान्याः स्थान्त्रव्याः स्थान्त्याः स्थान्त्रव्याः स्थान्यः स्थान्त्रव्याः स्थान्त्याः स्थान्त्रव्याः स्थान्त्रव्याः स्थान्त्रव्याः स्थान्त्रवे स्यान्याः स्यान्याः स् वि'व'तुर'ग्नव'न्म्या द्ररस्येन्'व्'ळ्यस्येस्ना ळ्यायाम्यात्र षर्द्रर्न्ष्रवेरत्र्व्रिर्वेर् र्भेन्। नेते वर्षं वर्षेन् कण्यक्षं चित्रं वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे न्न्वन्।म्डेन्न्र्भ्याप्त्न्वाप्तिर्द्व्भ्रयपतिःतुव्यव्यवित्। क्रिन्स्व पर्झेयरायाव्यव्यक्षितासुर्वेश विषयात्त्रित्। विषयात्त्रित्। पर्झेयरायाव्यव्यक्षितास्यात्त्रेयाः वेरप्रभंत्। देवित्रप्रवृति शुग्शुव्यस्य विवस्य व्यभंत्रप्रभेत्।

क्रूब्र'य'शुध्येव'रूब्र'व्यापिव'र्नेम। ने'राग्नहेब'व्यापिं'ले'स्न्रप्रम्य। *ऍशद्राञ्चं*द्धरःनेप्रेशंदरीके अर्जान्ते । ज्ञान्यव्यञ्जानावेतः बुर्रायादे दे व्यवस्थित । बुर्गित विकास मान्या । विकास न्वत्कुन्त्राकृष्यायान्यस्यापान्यस्यापान्यस्य स्याप्तिक्षेप्तरः स्याप्तिक्षे उन्। वृद्धंशवनः नुःवगः ननुवःगवयः। सः नदेः न्वः सन्ने भैव। श्चीरःष्यरःत्रेःपृष्यः सस्य। सःयतिष्यं त्रणः संयक्षेत्रः सः वि वि वा तृत्यः पराञ्च। मर्दराञ्च नेवातुः केषाराञ्च। हिंगापानेवातुः कुरायराञ्च। पा ह'कर'न्र'कॅश'र्बुन'स'यामेन्यामर्'रे'यळययान्र'बु'नठन्'न्र'। हॅं **ग्राणुन:ब्राथा** हें 'हे श्रेप:न्यें दाबी:ब्रान:। प्राण्या ब्रान:रन्य:न्य: क्षित्रः स्वायास्त्रः त्रायास्य सयार स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्व हुर्-ह्-तात्रहेंब। बहुबान्वन् हेर्स्य प्येत् गुर्-सुद्र्यते दे द्रतादर्गुर कुब्र'के'२ळ८'पर'वृषयाह्य'त्तर'। य<u>्</u>चण्याव्य'यव्य'वेर्'रु'र्गे'अर' **ॐअ'८्ट: गट: चग'याञ्चु र: य:के' गट्टा गडुट राज्या । सु'क्वॅर' पॅक्षानुदीयें** *कृति*ॱञ्च'प्रति'ळेंख'परु'पति'ळुंब'स'रति'सरश्चेप'पर्यश्चेस'नेग्'ग्रुरख'''''' वगुरः ८२ गुजुरुवार्वे ।

ॅवन *१२*ॱमॅतअन् वुरुप्यः ङ्ग्रेद्रायः । । तुः नरः ग्लेयः द्वरः द्वरः स्टरः तुः हु। ।ळ्ट्'यदे'हुँद्र'यथातम्,'हेग ।र्द्र्यंबेट्'द्रयन्'ह्र्याहुराहेद्र्य **पॅ**न्। [तुः इस हॅग सेन् प्यते प्रतास है व म। विःरम्बेबबाङ्गम्बेन्द्रम्बन्द्रवा । न्वेन्द्रम्बन्द्रः त्रेत्रिं । क्रिप्यति क्रिंप्य राय हो हे द स्प्री । वि क्रिंप्य स्वित्य से ८८.प.चूर्य । ट्रे.यूपकार्वेशता.क्षेत्रताचा । वि.चेर्या.चे.कुर्य.सूत्रारी ह्या । शुरुष्ट्रम् प्रतेषे श्रुर्यः या सहित्रहेष । विः ह्रिम् त्रे स्वर्यः से क्ष्यं मा हुःअप र्डें श्रुण्यि रिप्ट र हु हिंग | ने में तअ न हु हा पा हूं हु पा या | हुः हन्यान्तातुनाम्बन्धुनार्चात्रा । न्यातार्क्षेत्राकेन्तान्यात्रीया नतुन्'कु'खन्'नङ्ग्रन्'तकुन्'वेब'र्षन्। ।तुःकेन्'तह्रेब'येन्'मदे'न्नन्तुः विष । ने विषय न स्वापा देवा । स्वाप्त स्वापा । स्वाप्त स्वापा स्वापा स्वापा । स्वाप्त स्वापा स्वापा स्वापा स्व नुषाश्च। । बर्नेद लेद पर्नेन प्राया क्षेत्र लेवा । न पर क्रें या प्रत्न है स त्षुरिक्ष्त्। तुरिक्ष्त्यक्षित्रः विष्यक्षित्रः विष्यक्षित्रः विष्यक्षित्रः विष्यक्षित्रः विष्यक्षित्रः विषयक्षित्रः विषयक्षः विषयक्षित्रः विषयक्षित्रः विषयक्षित्रः विषयक्षित्रः विषयक्षित्रः विषयक्षेत्रः विषयक **१४४ मा १ वियान्य प्रताय या हे** मर्जुब की विमया हे से प्रता हे ने प्राप्त विवास **धैर्व प्रता ५ ग्रायन श्रीक्ष भैग ने प्रताक्ष ५ ग्रायन अस्य म्हार व्या** खराइते'न् ग्रैल'त्रिंर'नु'द्वैन'ग्रैशक्तेंच। स्व्यान्चन्रन्यायम् व्यान्गास्यावासुनिवासुना क्रियान्यन्येववायायसुनाव्यायेववा ब्रे वेन क्ष्यं भूर रे ब्रेन व्यायत विषय क्षेत्रं राववण द्रार्म् व्याय विषय बेन्'रा'र्ने हेर्बेन'न्र्यंब्'नु'यर त'न्र्यंत'राधेब्'र्वे । न्युन्'हेन्दे

त्रेंद्रक्षेप्त्यत्प्त्रम् यर्द्रप्ते। त्प्त्तिः मृत्यस्त्रम् वरार्थेः स्तः मृद्धेम् द्यार्चेशहे (वृत्रशहर पुरेश्चेयाय प्रतः। गृत्यश्रम् गृत्यस्य उत्रिह्म *ब्रिक्टेन*्य,श्रीयाक्षेत्र,पत्राक्षेत्र,पालाच्य,त्य,त्यात्रा हि.क्षे.ह्रसियोयाञ्च, मविव्देर् व्याह्म हैन प्रांचा सम्मान स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान ট্র্ব্'শ্রীঝস্কুন্'ঝ'শৃঝৰ্'উণ্'ঝৰ্'দ্বা'মেন্ট্'শ্রীর'শৃঝুন্'। ব্'মন্তরে'র্জ্ব্ ब्राक्षरारा हेव प्रति प्राप्तर र्रापा ने प्रद्व ने । व्यत्र प्रापा से स्रापा स्र त्रपःयन्। दर्वाणुनःतर्धन्यातनैः प्रविवः सनः सनः पञ्जेषयापयापे**वः** 5व्रज्ञून्'लाक्षेत्र'पिव। विन्'ग्रून'क्षेत्र'त्राक्षेत्र'लाक्षेत्रायानेवा'वहानका मसहेक्ष्रहेनेनिनिष्यास्य विषय स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या स्वर्था स्वर्या द्भरःभरः धुँग्रायार्धुंदाद्या नृग्रायः अधार्यरः पङ्गदापान्रः येयवा ठव् क्ये: मॅव्रक्तुः केरः बर्द्रप्रदेशें कुराद्वयश्च अयम्पर्पा रम्पी द्वयवरः """ कुरायान्यवायाया । नेवराहेमार्ड्वास्त्रिम्यानुष्येतराने। म्यारास्य र्घेषायापराप्तर्गान्हे। बर्टान्देशकाया हते या व्यान केंद्रांस् ग्रेग्'न्तुक्ष'र्धुग्यातुप्तसुर्ह्रार्ट्रान्'रे'केद्रार्ट्रा विग्'गे'डे'याननकारा'''" मय। व्यवश्रव्यवस्य न्यान्य वित्रवित्य वित्य वित् *ब्राक्षं*क्र ग्रेक्षक्र, प्रत्र प्रत्र प्रत्र क्षेत्र क्षेत्र भ्रत्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्ष व्याक्षरायाम्याकर्परायाचारायाच्या विर्मात्वारायाचेवा

सं'क्र'न्ने'ल्ड्न'छे'स्रा

 पश्चिमावित्राञ्चा ।

पश्चिमावित्राञ्चा ।

पश्चिमावित्राञ्चा ।

पश्चिमावित्राञ्चा ।

पश्चिमावित्राञ्चा ।

प्राच्चा ।

प्राच्चा

हे'ज़ॖॱॴॹॺॴॴॶॻॱढ़ॼऺॴऒ॔ॎऻॿॖऀॸॣॱढ़ॕज़ॱॹॕॴॻढ़ॴऄॖॴढ़ॱॷॱ यहर्। वि.संपालर महिलक्षिक में नेया विष्या महिला स्थान तरी । गर्यस्परग्यस्तुरतहग्पर्यत्वरा । व केव्रप्रावः गृतेशाग्। नि:इतातर्धेरावीतारवादातरी वित्वाक्कवावर दत्र'ग्रेश'क्षुग'्यग्या । मः क्षेत्र'ग्यायाः कुत्रयः नः मं स्वरं अधितः *बि८। | ४८:५६५५८: चुरः च* : अधिवःय। । *५६ व* । विकासी पति स्व । मिंपा श्व बिरा र्वे व त्या यहरा । भेष व त्या यह व व्यव त्या व त्या व <u> ५.५ ज्ञ</u> । ८.७. म् च. ग्रीश प्रस्त ग्रीश प्रस्त प्रस्त । क्ष्रिं श्री प्रस्त प्रस्त । क्ष्रिं श्री प्रस्त विश्व मञ्जूषाव्यावार्म्भवयात्। |बावतायाक्युपतिःधीनुग्यायय। |कुन्धेतैः अद्वित्कुरिंभेशकेश । तिनायतिव्यक्तिकेनिनायां वित्राम्य [좌' ळन्द्रम्भ्रुत्वित्रम्न्य । बर्द्रन्तेशन्मःह्राद्ध्यावित्यार्षन्। । A質スロイスでは「大型」と「は、ストーロヨト」 「海道をえる」は「一種・美」 क्र्यंन्रन्भेयाव्यव्यव्यात्रां अन्तर्भेन्। व्याप्त्रां स्वयात्रे व्याप्तात्रे व्याप्त यम्। ।क्षेत्रंबर्ग्याः तहेन् ने ने ने ने ने ने ने निर्मा । निर्मात में निर्मा ने निर्मा ने निर्मात के निर्मा निर् यान्नन्'राया । व्रून्'हेन्'ब्रेन्'हेरो हो हो हो । । दिनिन्निति हु'यानम्या दुवाचेन्। द्विनानस्याञ्चानुष्यात्रवाचेन्। विवाद्यावानवान्तः वास्वः वैश्वकृतः। ।तन्यात्रद्येयायक्षेत्रश्चादिः इसि हिन्दी । नतः कुतः श्रेनः परि'शे'नेर'भेत। अर'ने'रर'र्श्चेन'रर'त्यभेग |ने'पर्यान्य'र्ह्य वृषयाभेदातस्य। भिः संयाञ्चन श्रेन्त्र दे भे। । द्राप्य र नियाया व। वि'र्राश्चर-ने'ननत्यम्दात्वत। विके वेन्'म् थीननुन्'रे' री क्षिक्षेत्र'क्रवरायायर'ॲन्'ग्रुन्'। । तनःगैवाञ्चन्'यन्यात्रवा पर्या । भुः वेन प्रताके र तुर्या देन प्रते । । तके वेन प्रतृत् है राजे ता मत्। । तुरावितातकः समामनातर्भे । प्रतुर् हैः ननः मैवातसुनः **यम्पर्यं । म्रायम् क्रियान्य विश्वरायम् । यार्थ्यः हिरायम् न्याः** बरफॅर्गुर्। |ररमेबात्रानरायातुबाराया |म्बेदाहेरायाकेर नग्रेस'व्यातकी । सिन्नस'यकेंग'नेस'के'यमव्। । नग्रेस'पदि'व्र'यस मरतर्द्र्व । विषयकेष्यंतर्विषयवत्यप्यत्तर्वता । विषयव्यव्य मसर्थिः इत्यम् वस्य हे मह्त श्रीमहार देन सम्बन्धः । दिस ने सा क्री ह हुगानीत्मना केनान्वरागरा वात्रान्तान्वराम् वात्रान्वराम् मुशुम्बार्या ।

ळण्रस्यादशयां भेषां भेरा। । यस्त्रस्य व्यादिस्य विदायाः

शैद। शिद्रायम्प्रानेशितुःयाद्यानम्। मिद्रायम्हित्रमुगायः ्गुन्।तन्त्र। । श्चिन्।याज्ञलायंतिः रूत्राक्षण्यावा । यद्गायाक्यापा **ब्रैन'परान्। ।यद्नेन'यम् क्षे त्रम्येश्चरार्थेन'प्रम्य। ।क्ष्य्याद्नेन,प्रयाम्भ** म्बेर्नित्रे हु। व्हिंति विवयम्य परिश्वेष्म विवा विरय हरा पहिन् पर'तुग्र'पभी ।क्कें'र्र्ज्'गुर्द'त्यंत्रेर्'च्रय्यंत्रेर्। ।यङ्ग्र्द्'य'तुर्द्र वैग'रिनेर'न्द्रुग्यंद्र्यय। |नर्झेन्'यं'र्ज्ञ्'र्ज्ञेन्'छ्रिन्'कॅब्रंधेद। ।युग्रु' व्यापति हेरात प्रत्या । ग्रान ग्रीय ग्रेंन पर प्राप्त ग्रीय । नर्भन्'पति'न्यान्'खन्यायेन्यान्'जुन्। । नर्भन्'त्र्यानर्'पति'ने' सम्भाष्य । १८४१ इस स्था । १८५८ स्था । १८५८ स्था । १८५८ स्था । तळत्। । मर्डेन्'तशुर्वाक्'त्य'व्यंत्र'य्यंतः। । इत्यामिने'र्वेतरी'त्र्याम्यंत् **धुँ पदामुः क्र्या । पदा या गुन्दः क्षेप या गुनेशालें। यक्ष्य या प्रेया । सा** बळवरान्गः दुः स्निः न्वें संयय। । नायेनः च सुनः न देशुनः च ते स्वयः। । ळॅनवान्त्रेवागुनावाञ्चरायरात्रक्षा । नेवारतारेवारादीर्द्वाक्रेक्या । ग्हेर। तिहेग् हेद्र तेवरा ठद्य खराया । शु र्या तत्या पर्र नते द्रा | शिविययमत प्राज्य न विश्व वियान ते स्वर्ण निश्चेत्रायराचेत्। विःनेत्राळॅग्यानेत्रेत्रकेत्वित्। नियाग्रेत्राष्ट्रतः परत्यम्यात्रः स्ता । ने ने में ने प्रते कुराय ने भेना । सम्मान के ना पर-५ मृत्यायानुवायातेन्। विकाम्यान्यस् क्रांपानुवायाः

पश्चित्रः ह्या ।

पश्चित्रः ह्या ।

पश्चित्रः ह्या व्याप्ते द्या प्राप्त प्रम्म व्याप्त व्याप

त्रः त्या विक्राय्य स्थात्य स्थात्य विक्राय्य विक्राय्य स्थात्य स्थात

विद्य । दिवस्यक्रीतकरतियस्यूषियस्य । दिवस्यक्रीतकरतियस् द्यान्या । वि.च.२ वाच स्थानीया इ.च.च्या । इ.च. हेच.च व द.५. घुरतकर। । प्रेंबाबेप्तहरार्ट्यं वृष्टुं चुरातकर। । व्रंवाबाबेप्तवया वापराक्षेत्रस्तकर। विवयाक्कीयहरूस्यवायाम्। विवया क्रिप्तर्रेश्वम्यश्वार्ये । भ्रुःशेरक्षेष्यस्परस्य । द्वः <u>क्रुपराळे'यमः ज</u>ुःबळेंदे'ममः। ।ऄं ब्रेव्यःस्युग्'ग्रुमःवसंस्विःममः। । <u> वैश्रयात्र सम्प्रकृशेदारम्। । देशायात्रम् दुःतह्यायाय। । इस्यवेशः</u> हुर वेंद'ग्रथारग'इरथ। । इस हॅन'कुद'रु'हुर'राथ। । कुद'स **देश**प्रहेब्रज्जन्बब्रप्तन्त्र्या |केब्रप्रख्या क्षेत्रप्ताया ।हःस्न न्वेरस्यतस्र न्यस्य म्या । हुँ न्यते हुन् मनसर्गि सन्य ऻॹॕॗॖॖ**ॸॱ**पतेॱॿॗॖॸॱॿॻॺॱॺॱॺॕॱढ़ऻ<u>ॗ</u>ऻऄॸॱऴ॓ॺॱढ़ॻॖऀॸॱॻॱॸढ़ऀॺॱॸॖॱ ব্যথা ह्यत्। । तत्राक्षेत्रायञ्च प्रविदातुः ह्यत्। । ह्यत्र छेदार्श्वेत्रायायविदातुः ब्रुन्। |नेल'र्नेन:बैराय'पविव'र्'ब्रुन्। |त्वरापुरीतकरपुणयानी त्यायाया । त्यायायतीत्रकरत्यायायायीत्। । श्रीहेषायायायस्य भुः तहुरः। । नरें नः हेर् भाषा सर्वासुः तहुरः। । गुर्वाना सवा दे हुता भु:तञ्चनः। । गतुगः अरुम्पिते हेन् ग्रीभा । विनः त्यायायस्य देशुः स्वी ष्र्या | इंश्रिक्तिक्री देवीनवासुन्य प्राप्त विद्या मुक्ति में व्यवस्थित न्युव। । नर्द्रश्चनरार्ष्ट्वर्गात्वरातुःहुन । इतार्व्हेरः द्रवरातान्र व्यञ्चरता । वित्युरि देरि व्यवस्य वित्राम् वित्राम् वित्राम् वित्राम् वित्राम्

ब्राह्म ने के का कि दे त्र क्षेत्र क्

म' ह्य' अ इ अरा त्य द्वाप' द के ता त्ये। । ह्ये ' त पा पा अ न ' प ते ' रो अ रा हे न ' ऍ८, चेशक्षकरी । इयनेशक्षक्षाः प्राप्ति । प्राप्ति । न्न स्वराप्त प्रतर्भित स्वराय स्वर्षा । क्षेत्र प्रतर्भिते के प्रतर्भित्र स्वर्मे द् पर्दे'सुत्राभवात्त्व। । वःकृत् च्चे तर्ने वृदा त्राप्तवा क्चें भें सुतायव ब्रुवायवात् । देवानेवाचयावात्रां वराववाक्रेवा । दूराया द्वे भा ह्वा तर्वावा र्कत्। । व्यवस्थाय हेन 'र्नेन की त्युय। । १३ न'य कुन्' ग्नेन बरा म्या 'र्ने' बर्करत्वे । वितराययात्रत्वे तर्ञ्जे बरायात्री । इत्यत्र्वे रत्ये हे गुरा र्वत् भेव। निः भूमः वयस्य हाः इत्यारा भेगमा । विद्यारा न्ता गवनः यनः हुँ व'य'य'ते बब्दा दनै हे व'वनः तायनः खान कत। क्वाँ व नः यन् खा न्नन हेंन्यन्यस्य क्ष्मा हन्य न्य प्राचन्य क्रान्य क्ष्मा न्ये न्द नैकागुर्व्यदेवारु बेर्। न्द्रिप्यान्ति भारार्वे नातृ के विया बेरा नित्र न म्नाया गुर्राक्षेत्र प्रतिर्दे व्यनिष्ठेत् हें न वा पर्रा नी न श्र स्वापा क्षेत्र। सं हॅ न'ग्रेन'ग्रन'रे'तान्येताबेन'र्' पर्झेयरापरा हेन्याप'र्नेतर्सेन'री <u> इश्रानबाबुद्धः म्र</u>ाप्ताक्क्ष्तः। पञ्चनश्चानव्यवसः ग्रेष्ट्रे पद्मन्याक्क्ष्यः प्र हॅं व'र्झें अप्तरक्षे श्रीकेर बे (A.इ.प) के पिरेश्र का बृहेवा हुए। पो **व**र्षे । । स्र

円高'等す'夏'茶エ!

रास्त्राची श्रास्त्र स्वास्त्र स्वस

बर्ह्र-'बेर'मदातलें नवा । है इंर प्राप्त नर्म र कर है में पारा न 1धे। वैशक्ते व र्यते हून व हुन । द्वार में ए के के वे होश । किर हूर हें राष्ट्री भु दुःम्। विषाव्यान्ये क'वेद'मदादङ्गत्य। । श्चिराविवयाम्बुद्यादिर मतिः सेवराक्त वाया । में केन ध्यन ने हें वा बार्कन वेन। । वान वरान वा चपः व्यायक्षयक्षय्राष्ट्रस्य । भि गशुव्यत्यव्याये ५ भिनः तह्रस्य न सन्। । व्यद्वव्यत्वे संदर्भेत्र । दिव्यवहुत्ययम् वितेषेत् यायहन् क्रुं अंशे क्षेत्रपरित्रात्में कुरः वय। ज्ञा अयायवया यत्वा जुर हे वा सु पर्वा चेर वृ प्रक्रित वहार प्रतार पुरा पहा है पर्द व प्री हा सह करा बर में द्वें न्याय दे तुषा न्देन प्रत्न प्रत्य स्र दर द्वा यदे प्राधा प्र <u> नशर्वे र स्थाय हेन स्वाय के नर वा नत् । हे नर्द्व रे पर के पर हेन पा</u> ने'पने'प'वन'वयाभरपर'गन्त। न'पन्ग'णुन'हे'पर्वन'पविव'रे' ğॅन्'Aয়য়'য়য়ড়ৢ ৠৢৢৢ৾न'য়ঀ'য়ৼ'য়ৢঢ়৻য়৾য়য়য়। हे'ঢ়৻৻য়ৢ৾য়ড়ৢয়ড়ৢ। ঽ৽ৣ৾য়৴৻৸য়ৢয়য়৻ঀ৻ঀৢয়৻ৼ৸৻ৼ৾ৠৢ৴৻ঽৼ৻ৠৢ৽য়৻৻৸য়৻য়৻ঢ়ঀ৽৸য়ৼৼঢ়৻ৼ৾৽**৻৻** त्रॱऍ८ॱप[्]षेव् ग्रुट्यव्यक्षित् प्राप्ते स्वरं यक्ष्य प्रकृत् ग्रीः व्याप्त स्वरं प्राप्त स्वरं स्वरं प्राप्त स्वरं गुडुन्सर्स।।

हे भिन् पति व व र र पुः श्वापादि श्वा । तिर सं पञ्च र ज्ञा से व सं हे। विरोध र प्राची व विरोध र स्वाप्त स्वाप तत्। । वन'न्यरक्षं'वर्षे'व्यायहराष्ट्रीया । वहरायक्षेत्रे स्वी तर्'नदेः बद्दा | बिक्त्या हुँ ना हुन स्वेषर। | न्वता हुँ दे वह हा है का शुः विगामेन। शिंश्रामेश इन श्रिंश महन उन्। । तर्र महन्य राष्ट्र श्चॅन'गर'व'पर'७। ।गदराधेंगरारेस'बेर'परेरे'बेर'परेरे। ।९२४ हिन'त्रहें ब्रंबुन'न्दे'लयायह्न व्येव। । श्वाने'न्न'ङ्ब'यदेके'ळन् न्म। । तर्भवान् वे व नर्भवापिको ते क्षेत्र । । विववा के न वारतः *ढ़*र-२ग'र'८२े'ऄ'अ'क़ॅ| |८ॻॗर'ऄ२'ऄॗॱ२२'र'२ड़[ं]व'ऄं'८२े| |ढ़ऻॕरर नःर्भूमः नतिः सम्राह्मः स्वाद्याः स्वत्याः स्वाद्याः स्व त्रिसतन्द्राप्तन्द्रायाचीयावतिः श्रेति । श्रुप्ति श्रेश्वयायार्षेतायातने *`*®ॱअॱज़ॕऻॎॡॕॎऺज़*ॹ*ड़ॗज़ॱॸॏॾॣॸॱॸॱय़ॖज़ॱख़ॸॱढ़ॸऺऻॎऻॗॿॗ॓क़ॱ॔ज़ख़ॸड़ॱॺॕॗ**ॸॱ** मतिः सञ्चायादनः भैत्। । सञ्चाने 'न्नः क्तान्य देशे भेनः नुवा । सर्ने नः श्लेनः *चन्'रारः* श्रुंत्यप्नतिके'ते'श्रुन्। । गृह्यन्दिद्द्रत्वेत्यचग्रहेन्'प्रतिनेके' arर्हा । कुन्'द्व'ग्रीन्न'कान्यपत्ति। । कानेग्'ह्व'पारोयानते सक्ष बारवःभवा । तथाने न्रान्य वा । व्रायाया । व्रायाया । व्रायायाया । महेव न दिवारे के ते के वा विवय के त न न में ने का पार है का या है। । जन <u>इॅं-बेन्'पदे'न्दर्श्वेद्यादरी । ग्नाम्यवित्'दश्चियपदेश्वययाद्यप्येदा ।</u> त्यसंने न्दरक्ष प्रतिकी स्पर्तिका । क्षं स्पर्ति से स्वाप्तिका से स्वाप्तिका से स्वाप्तिका से स्वाप्तिका से स ষ্ট্রীন্। । শূনকামাশুউমানুন্দামেন্ডির মান্ট্। । দারী দেই অপ্রমা ब्रुं र क्रें ग्रव्यार्ग्तरी । तरम्रितिहेग्यात्रस्वयायतेष्रयात्रः

<u>ষ্ট্রীব্য |ॐঝৡব্ণব্ট্রীবঅন্তাস্থ্রীবার্যাদেশী ঐত্যাস্থ্র | ব্যুক্রব্যক্সবৃত্তী প্রবাক্ষ</u> त्यस्य स्वरं तरी । त्रेयसन् र संक्षेत्र स्वरं प्रते त्यस्य हत् ध्येत्। । तसने न्दर्यं प्रतिके प्रतिन्त्र।
अस्ति स्वापित स्वाप स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापित स्वापि প্রীব। |য়ুঁবাঞ্জ্বানধার্ম গ্র্বিন্দ্রাধার ক্রিন্দ্রাল तर्वेदबाचते'इतातर्वेदाय। । मः ऋतः क्षेषाया नर्वेदायते तथा बादनः **धे**त्र| |शक्षने'न्न'ङ्व'यतेके'र्भन'न्य| |कॅ्नशङ्व'र|ॅक्र'ग्रीक' मर्झेरमिरेकेरेकेरि । विविस्तुः हुवासुः वतुरुपावदिः ले वार्षे। । वि क्रवाब्रां नाक्षेत्रायाध्येय। विश्ववाक्षीत् च्यात्राव्यक्षताक्षेत्रायायक्षता त्रीतः र्ह्यन्। अत्याप्त्राच्यान्यः वित्रः वित्र ন্ধ্ৰন্থ প্ৰবা । ने' অ'ন ইন্' দ্ব গ্ৰ'ণ ট্ৰ'ন' নু' ক্ৰ' শ্ৰান জন ক मर्या तमे द्वे देव त्यार्थे व राप दि दि वित्य हम सम्मान व तम सम त्रते द्वे त्वारी ने गुव भैव पुष्टिं बर्ळ र के प्रतः ग्राहा न प्रत्या र प्र *ড়*৻ড়৾৾৾ৠয়য়ৣ৾৾৾৾৴৻৺৺৶য়য়৸৵৻৸য়৸য়ৼ৴৻৸৻৸৻য়৴৸৻ড়ৢ৴৻৸৴৻৸৻৻ **রিণা**ন্ত : রসমে। ইবেনেই শ্বেমন্ত অমান্ত মিনের দীণা শান্ত নের বা वगुरादर्गमहारयार्थ।।

न्त्रंत्रस्य। विन्यंत्रं विन्यंत्रः क्ष्म् व्याप्ते। क्षित्रस्य विन्यंत्रः विन्यंत्रः विन्यंत्रः विन्यंत्रः विन्यं विन्यंत्रं विन्यं व

[सुप्प्प्प्येर्यातुम्ब्राव्यं दे] । मृत्रायाञ्चरपञ्चे ন্ত্রবু:ঘার্মব্য ण्त्रात्रंत्रा । इत्राराव्यश्रात्र्व्यात्रा । रम्प्त्वेवायम्बर् त्यायान्यत् । १९ वर्षाकु है भिषावाहेन पर। । व्रूप्यदि हैन याही हेन त्रक्षा |नेश्रचुःद्रूनःसूनःतुनःतह्रगृत्य। |तर्नेन्पःननःवत्रक्षेत्रकृनः तर्वता । मूर्रायविदामूराधरतिहेवायाधिया । वर्ववायाविदास क्षे'गर्हेन'तळल। |त्रग्'मरुश'मर्ने'मर्ने'त्र'तुं | हर्य'हॅग्'नग्रय'स' ह्रप'रा'भे। । मने मिरे रे ड्रा रे डी मी रे त हैं न हे न हैं न ह हा महत्रायाया । न्याया हेन्'तु वी महत्राय हा । क्विंन्'या से ह्रिया होन्' पात्। विवयः श्रेन विनावस्य प्राची । श्रून पानी वाज पञ्चनस यर। । ध्रस्थायने पर्यं प्रस्ता । अवस्य दे हिंग या व निर्धान ऍग'पते'पह्राविष्यक्षियां क्षेत्र विष्य | विषयक्षियां विषयक्ष त्वर्रातुः अर्देव 'तुः द्वेत 'पाव। | त्रार्थे वर्षा स्पाव वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे व्यायम्याज्ञयात्र्वयायाया । रेप्याययम्याज्ञयार् नहन्यस्भ नत्या उत्रिक्षात्या । यत्या क्षार्ट्यंत्रयः देव्यवेया । इस हैंग केंग क्षुर वैयापाया | पिंद पायगण पर वे यह दार वेया ऍवः हवः तर्रेवः सवाविदः विवयान्दः। । यो प्रेवः न्याः परिः रदः स्रूरः स देशनेशनहन्यं क्रेशन्य। देविन् नुः क्रेंश्यः धन्यत्रे द्यापाया प्रम् ताव्यवार्द्भन् इन् वाक्यियं न हन् छन् 'प्रमान्यन' सह नवार्'तहे 'हूँ न'प्रमान

●本は日本局があらららいでは、ままず、当日本ののでは、まままである。●本は日本のは、日本ので

かがればらいまながれ!

न्यां गुर् है पहुंन्थायान्यापे विषयु परिनेताया कर्पे प्राप्ता **धै**द'हेर'देद'तुःख्रन'मदेखे'न् बॅद'विषाधिन'धनिय। **तुःश्वॅन**'इबश'ग्री**रा** *ॿॖॱॸॱॸॖऀॱय़ॖॺॱॸॖॸॱॺॱॺॺढ़ॱय़ॸॱॾॕॺॺॱॺॸॱॺऀॱॾॕॗॸॱॼॖॕढ़ॱय़ॺ*। महाअर्थे हें गुन्द द्वार्य । हे पर्दन त्यायहे गृत्र हें गृवार में पुन **ঘ**রি'ঝল্ল। ব্র''র্'ট্রিব্'ব্র্খ'শ্'ব'ঝ'বঞ্জীব্খ'বর্ল্''থক। ষ্ট্রীশ'র্মীর' तत्वाराया धरामहेवातळॅवायरात्चुवामहरामवा वर्षरावरा े दर द'ब्रेच'तर्व'प'त्र| चनेव'त्रळेव'रु'घुरा'दुर'वॉर्पे'त्युताबेर'पर' [मरॅग'पर'पद्मन'ततुग'रा'हीर'सुन'पद्मत्मुत'पर'व'तुराप। *८,* त्र हे बर स्व न हर त्र स्व त्र स्व त्र स्व त्र स्व त्र स्व त्र स्व स्व त्र स्व त्र स्व त्र स्व त्र स्व त्र स्व मग्पान नग्या सामयय त्वावया तमेवा सामय मुनावया सुरा गुना सः पॅट्र क्रूर ग्रॅं दिशुवावा तु काप दे द्र राष्ट्र हिर द्वाका द्वा कु द्वा की प्रतर राष्ट्र प्रविषयाया प्रिंप्स्यकान्। स्वार्थिक स्वार्थिक स्वार्थिक स्वार्थिक स्वार्थिक स्वार्थिक स्वार्थिक स्वार्थिक स्व बेर। ययान्ये। व्रुप्तप्तुप्तन्युन्तुव्यान्य **ॲ**८ः। तसुर् असुरायातर् केषीय ने रायाया हे यर्ड्य मुकार कर स्थाप भैद'चद्यप्यप्रद'दुर'कर्। यहरवादुर'कर्। दर'रु'यहर'दर'कर्।

नेत्यं मृत्यं द्विः से स्वर्णात्व व त् त् । । गुन् त्यं भ्रे पास्य प्रस्ति । स्वर्णाय स्वर्ण

य: ५५ द्वराय: य द्वराय: ५५ । १९ यश श्री दे विषय दे विषय: वि

विश्वन्त्रस्य। स्टान्डिन्द्रो म्द्रात्न्त्रम् त्रात्रस्य स्वार्णिश्वन्त्रस्य। स्टान्डिन्द्रील्याद्य। म्द्रात्नित्रस्यात्रस्याः स्टान्नेरापय। हेर्प्ड्निक्ष्यद्य। म्ह्राह्मित्रस्याः स्टान्नेरापय। हेर्प्ड्निक्ष्यस्य म्ह्राह्मित्रस्य स्टान्डिर्

मन्यायां नेत्र्रं हैं ग्यार्थं द। | ने र्रा तहे त्रायां महेत्र हैं माना । बिब'क्षण्यारुब'ने'महेन्'गुन्'रुन्'। ।श्चिं'तन्याये'नेयार्हेणयार्च'व। । ग्रहराद हैवार हैवार देवारी प्रदेश माने हरा । इन्येन् छर्येन् हिन्या । व्यवस्य धुराना नहेन् ने'मल। ।तमेल'तमेन'ठन'ने'गहेन'गुन'तुन'। ।तु'ग्रुवर'नन करा हैं गरा रं दा | क्षु : धैन क्रे न दे दाने दिन ने स्ता **४**दि:र्केबाने'महेन'गुन:रुनः। । सनःग्वयात्मश्चार्यः कृषायां च । कृत्रच्कृत्भात्वरारम् । यञ्ज्ञवरारम् भेरा । यःकृत्रचन् । यःवित्र हॅंग्रारं दं | भिग्रं दग्रं न्ये क्ष्यहेन् ने मत्रा | वुन् हिते हें हा ने'महेन्'गुर्-दुर्'। वेशन्धरयम्य। यर्'न्'हेन्'व्'ने। यर्व कुशंक्ष मृतंकी तरानु में केंब्र न्रामें लाका प्रनास्त्र तका तथा है न म्बार्जन्तेरपदित्वपुर्वगुरत्रिग्युर्वा

त्वितान्त्रीयशासुर्मिनेशन्य। [मृतियेन्यन्तिन्तिन्तिन्दिन्।

तन्दर्स्यावयायन्त्वहुनः वेश्वेत्। | द्वात्वहुरूनः वेत्रादनः रेश्वे। । न्यश्यन्यस्त्रन्यकेन्द्रन्यस्त्र व। ।ह्रस्याञ्चर द्ररद्रञ्चर के श्रीत। । अर्थन'यम्यापंत्रययः सेत् नात। । तनान'येत् स्वान हेनाः हॅं प्रश्चं त्र। । त्रेयसायाने न्यं प्रस्तुन स्थानी াব্রুখন রশ माञ्चित्राच | विस्रहान् वृद्धस्य देनामाधिहात्वित्र | विद्यापाञ्च विस्त बर्ने वद्रां में रा । ८५५ में दावे दां बेर की दा की व 12KM परे'च'कुन्'व'पश्चपराहे। । शुप'यवत'घशरा ठन्'त्रॅं'पे कॅरा । ॅंबर्'र्सरकार्ज्जेग'ल'सब'बु'कुर'। |र'बुल'बुरकार्रर'र्द्देवरकेव'गुद्र। | *नेबा* चुरै:ननबार्टः त्रह्मयानः गड़िबा । हिंगबान देः तुबादः देः दें गडेग । त्रिरापायाञ्चरार् पृथ्वाद्यया । दूर पायापर्वेशास्रायस्वि । षद्यर'यन्'व्यायम्द्रमु'येशर्वे । यन्यमुख्न्व'न्व'नेन्न'न्वस बेबागहारवाराया न्योप्त्रव्यावार्यायाः स्ती **ऄ**ॖॺॱय़ॱऄॱॺऻॕॺऻॱऄॸॱग़ॖॖॖॖॖॺॱय़ॱॸॣॺॱॾॣॸॱऄॱय़ॸॱॷॖॸॱॸॕॗऻॎ ॸॗॺॏॱय़*ज़ॖॺॱॸॗ॓*ॱ इयराग्चे दर'द्यारेष्यायात्राप्ति'न्षेत्र्वात्राष्ट्रे क्रेंस्य रुप्त'वेदाग्च"""" म विषाञ्चषाञ्चित्रत्वम्याया। ५ मनः ५ मन् स्यान्यान्य मन् दस क्रॅंग'र्-पर्वाप्तव। ज्यवापत्रम्पं प्रव्याञ्च'या हे पर्वद्यां श्रीस्वाय हे'८८'व स'रा'तरी'ल। गुन'ब्वें८'क्वें५८'वहुन'रा'र्डवायरं५'व्। त्रिर्न् तुक्षान् र्वन्नीन् ने यने वानुन्दिने यका अन्यत्य (विन्न) नर्सन् न्नः क्षुवः ग्रामा वा ग्रीवा नक्षुवः पान्नः वेववा कवाता सवः समावा क्षेत्रानः हे'गईव'ग्रे'हर्र, हैव'वर्यन्त्रीयप्यवया ইন্ন'ন্ত্ৰান্ত্ৰীশ্বৰা

मु बुर बर परे दिव न राया त तुन। । सूर गुन रा चन र र है न रा राधिया । यह्न यानु व व र्षे द्वारा यान् व व व राधिया । यह या प्रति स्तु ता त्र्रूपंतर्वरापत्रः। । वि'ग्रव्याहे' क्षर्रे ग्रेस्य सेत्। । महादिर हु वर भेर के हा पहा | विषय परि महादे र पहे जहार न हा | बार्चियायायात् तुब्राया भेत्। । यद्येत् व्यव वाहे स्टान् ग्रेवान् ग्रेवा बहर्। ।दिविरागधेगाञ्चताराक्षरानेशास्त्रा ।धेँगरादश्चेता पति'विषयामर्ज्जन्य। | तेववातहेन'र्देशश्चरःरवासुन। । यु' राहि स्रात् ग्रेस त् ग्रेस यहें त् । यह सराहित ग्रे तरा पहिना । **ভবাধার্ম-ভৌবানর্শার্ক-ভৌবাধার্ম। । বিটি-প্রেথনেরানান্ত**র্শ वरायहरा । वे रु'हे हेरर् छेरार् छेरा वहेर्। । कॅरावेर् ब्रेस <u> ५८: इस्प्रायाया । ५६ इस्क्रम् इस्प्रायम् १ मुल्या</u> त्रेत्'ङ्ग्राञ्च्याप्त्रांताद्यापत्राः । श्रेत्'ए'हे क्षर्रत्येयात्येयाः बर्हित्। |सेवराकेत्परायविवादेत्पवस्य। |इसाहेवादीः स बाबर्धरायबा । हैंग्'न् धेन्'ग्वेन्'यावें रावबायहरा । माञ्चन्' हे स्ट्रिक् गुरुष्य हेन्। । देवा गुरु द्यापवा हे पर्व दाया र्ग'ने'ग्राक्षंक्र्ण'पर'ग्रात्रहे। पगत'पकुर्'छे पहेर्प'र्र'। रोबरा ठव'न् बद'य'क्रवयात्रायद'र्घेष्याक्षे:पत्रातिष्'क्ष्र्यावुद्यायात्रावादात्राः""

स्थल, केंद्र, केंद्र

र'तिरित्रत'तरे ताति वेषा द्रवाया वया । श्री श्रुरवरायते नगर देव ग्रीय। । न्य हरा रें यह वाय ग्रा श्रु र या । वि रें या सिपातार्ययवातह्यान्त्री । श्चि.श्चरःग्वानःग्वेदःयाश्चरःग्रनः। सिया रु:र्ङ् :श्चेरः नर्गः तर्जें दी । वनकात्रवार्जेरः दुः वार्ह्यः । नहत्वः लुन्या ब्रुंन्पा है सहिता है निर्मा विश्व में देश मन्य व्यापन में व्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन नगतः नजुन्। नङ्गानः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रः वित्रं वित्रः वित पतिव। । तर देव प्राक्षेत्र पर्ग हो । वर परि ग्रा ब्रुॅंन'क्ष्र्ब'शूप'रूरी । विंन्'नु'न्रप्यर'बिब्वेन'री । ब्रायाग्नर'याबनेबा राने । निष्मंत्रनिष्वराधीनश्चनि । विष्णाशुन्यप्या विश्वर ष्ठः रापायमाहे पर्ववाग्रीषु वाराहे वासूनापात गुराहे। हे पर्ववाग्रीषु वारा **५८। प्रति व्यन्ग्गैवागुर्म्गुन्यस्य युर्म्यक्षेत्र्यञ्च व्यवस्य प्रतिवर्षः ঐ**ন্'শ্রীঝ'ন্রা'নকমে<u>'র</u>ণ্'র্ম'শ্রুঝ'র্ঝানী'র্মিন'র্',শ্র<mark>ঝামাঝন'র'</mark> নর্ম্মারঝামঝা स्वाया कुन्याया त्राया व्याप्त मुक्ता स्वाय क्रिन् स्वाय के न नतेर्त्रकात्रेः क्रॅन्ड रहेन्द्रे स्ट्रान् स्ट्रान् स्ट्रान्ड स्ट्

भ्रु.धे के हॅग न् क के ग खुर या । ग खर में क्वें न प्राय हे क्वें र या । ह्युन्यक्तिः बळव्यं के द्रे हुं के दे दे हुं हैं । विषया हित्या पहार विषया हित्या पहार विषया है हैं मन् न्या न्या क्या के ने का यह है । स्था मन्या निष्य के यह है । 'इरप्राप्ता' । गुरुप्ते क्विप्ता हे प्राप्ता । हुन्दा क्विप्ता क्विप्ता क्विप्ता क्विप्ता क्विप्ता क्विप्ता क्विप वेन:हे:क्ष्मः पक्षा । वेवाववाधवा हे:पर्ववाधिया **क्षे** 'हॅंग'न् अळेंग'गडाय। । नश्चन'गडाय' केंय'प'वयरायेन 'शुन्य। । न्तुर्ने न्या द्वेन या नर्रे राष्ट्रेन्य। विन्यो के यद्वेन देश में स **ৡ৾য়।। ঀ৾য়৽ঀয়ৢ৸য়ৼ৸৸। ৴য়৽ৼৢ৸৾৸য়৲ৢঀ৾৸য়ঢ়৾য়৸৸য়ৢয়**৽ म। र्ह्यामु द्वर्डिग हुरा हुराया | वित्यामु हुरायान्तर वर्षाया | ह्यासुर्त्रा द्वर्पण्ये र्षेत्। । गृति वे देशत हुर् र्शेष्ट्राय। । Nबाद्री: चुन् : रोबबानञ्चन : चुने नश्चर्। । इंग्रन्जुर् छे तर्ते हें नहेंग्या । तर्र्रा प्रज्ञा र्या **बै**'र्श्चेद'रा'र्हें गृ'बेद'स। | रग'र्द'श्चि ग्रह्मरा'बे'श्च 'वेद्र'। | रोबहादी

तुःङ्र-ः लेद्राञ्चेन्। स्यात्यायम् हेः त्र्व्राङ्गाद्वायम् ने त्यायीयन् व्यापेयाद्यस्य स्याप्त्यस्य मुस्यस्य स्याप्त्यस्य ।

५.स.स.चेश्रतस्य श्रेष्ट्रया । व्य.स्यार्थः स्थार्थः स्थार्थः **र्या । यार्हे ग्रान्ध्रसार्येन मन्यात् ह्या । स्यार स्यार ह्या** तसुर वेर। । चुर वेयव्यवेर वायवित में दायेर। । यवर हायव बेन न में क्षेत्र बेन्। किंग मकुन कें तने ते न मान कें भेना । तन्न पा न्नेत्रह्म्ब्राचित्रः । न्नेत्रह्म्ब्र्वः । न्नेत्रहम्ब्र्वः । न्नेत्रहम्बर्वः । न्नेत्रहम्वः । न्वेत्रहम्बर्वः । न्वेत्वः । न्वेत्रहम्वः । न्वेत्रहम्वः । न्वेत्रहम्वः । न्वेत्रहम्वः । **हॅ**न'प'चुर'न्'न्डर ८६ॅन'भेन। ।श्चर'पराम'कुर'हेराओईर। हन्यं द्रार्विराचरारहेराचरे हु। । हुन्यं वेन्द्राचन्यं हर्षे व। र्यः ळेंगः येन् व्यमित्रं स्थित्। विः यसुत्रं न्यः स्वरं श्वेत्यः धित्। ण्विःसः द्वनः व्याद्याः विद्याः । क्षे पः द्वनः वन् ने व्यादाः विद्याप्ते व हॅं पार्यायोर व भेर क्रेंब्रियो । दिंदा क्रेंब्रिया व व व व विवा गुरुत्यार्थे । सन्देन'हेनईन'न्सुगुत्रयाद्यान्वग्यत्तुन्यता रक्षकुरःग्रेग्'गैराहेःपर्दुव्ग्वतेवरापःकेलग्रावुकामकावगुरःदर्नेः**""** गुबुद्द्यार्थे।।

 पर्व दःश्चेषा'रा'म्मर'अद्येशाँह्य'राव्यवायात्या स्याः स्या

प्या विपःकुस्युः पर्ग्रायाप्तिः स्रवः प्रमु स्यम् स्याप्तिः स्रवः स्याप्तिः स्यापतिः स्यापतिः

स्त्रीर्त्त्रं विद्वाल्यं । विद्वाल्यं विद्वालयं विद्

क्षा विश्व देश्व स्ट्रिय स्ट्रिय विश्व स्ट्रिय विश्व स्ट्रिय स्ट्रिय

बहुद्यम्पव्यव्या । यन् प्राप्तायने व्यविद्या हिन्द्र विद्या हिन्द्र विद्या है म्किल्ल्यार्म्ग्रेक्षेप्रतिः न्यव्यातहेवायायविवायाया । विवायित्यायाया <u> गशुवा । इत्यत्र्र्भे स्पर्ययम् वर्षः प्रमेगापति हु। । गृतुगायते ।</u> **षे**'नेशक्वॅंदरदर्द्द्र । द्वित्यंबेद्रष्ट्र्न्यहेद्रत्त्व्या नते हु। । गुरुग्स्र वृब्धा हु भेव । ५ में बुब्ध न पूर्वे व बेन्'बहिन्'यग्रा'वाया । बहु'न्न'हुब्र'य'र्घे'र्ड'ग्रुबा । इत्र तर्चे र र र र र्शेषा क्षेत्र प्रति हु। । र अ के श व म त र उ त र व र त र र र र व । त्र्स्यार्वेदे'ह्रयाद्यरः यष्ट्रिवादाच्याया । क्रिवादचादावेदारा हुः यत् वा मा । माने विद्यासी निर्माण निर्माण । विद्यासी न श्चरताराधिया । द्वीयम् चुरः द्वयः व्ययस्य स्वा देवा वहार व **बैटा न्मॅब्यकॅग्यम्बॅययन्न न्यायम् करकेव्यं**ननस *ঢ়*৾ৼৢ৾৾৾৴'য়য়য়ড়৴'৴ৼ৾ঀ৾৸য়ৼৼ৾৸ৢ <u>शैकाञ्चनाःकेन्।न्नःकेंबान्जनाःनीःनावनःकेःनः इवकान्चनाराहेवाःतिहेनःपनःनुः</u> <u> लुका पन्न।</u> व्यवस्थित स्थित विद्युति । द्याप्य तत्ति स्वका में व्युत्त प्रेका मक्षभेन्'त्र'ह्यान्यभेग्'ग्रुम्बाद्याद्यावगुरादन्भेग्रुम्बाह्याह्या ।

मः ग्रु-८व् १८ व्यापादे स्त्रीय प्रदेश । प्राप्त व्याप्त व्यापादे स्त्रीय । व्यापादे स्त्रीय स्त्रीय । व्यापादे स्त्रीय स्त्रीय । व्यापादे स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीय । व्यापादे स्त्रीय स्त्र

ॅॅंटं क्रेंब्र'रा'त'र्जन्य पति। स'म्रजन्य हेर्जन्य र तशुम्रा । **८**२ैर प्रतुष्य मृत्र स्व प्रुञ्जेप इयस्। । वृद्य स्तेष प्रव प्राप्त देश नदेः र्वा । गुरेकारा गुरु में शुं तरे केंद्रा । तहतः हें दानु गुरे **%**'भु'ल। ।हुन्'त्रहुण्नन्न्'त्वे ब्'क्रून्'र्प'ण्डेब। ানই'শ্ইব' रीयराग्रीकॅ'तसुताय। ।येन्'सून'श्चु'यर'नेसपान्टेय। <u> ইব'ळेव'ञ्च'यां हे'गर्ख्व'या । जुव'ळन्'येन'गर्देश्या गुवापहिया ।</u> Nरा तेन्'त्राकेन्'पति'द्यानाय। |ग्नॅरामग्'कॅन्'पति'त्तॅकॅन्'ग्रेख। | **इ**. श्रुम् प्रमृद्धिम् । अ. जेम्ब्रम् प्रमृद्धिम् । है। तथ है। तथा पर्याप्त विषय व्यवस्थित है स्वत्य का स्वाप्त का स्वत्य है स्वत्य है स्वत्य है स्वत्य है स्वत्य है स्व हॅं दॅं दॅ र 'गराय' हे ब्रायाया | म 'ग्रुर' दायान दे ' वृत्रयाये व ' गहेरा | इस्टिंगराञ्चरप्रेर्निन्ता ।ग्रेन्डिंगर्यरेग्नर्ययर्गाग्रेया । रा हें ग्रां रो या रा स्वाप्त कर मा अप कर मा विवया न मा के स्वाप्त कर है ते सुव मा विवया न मा के स्वाप्त कर से प्रदेश | ८८ तेवसक्षे वे८ क्ष्यं सु । । दे र्ष् प्रवादाय वि वे८ **ळे**स'म्डेस| | ५ॅव'रे'गुव'म्डेस'र्सेप्स'धेप्त| | रे'व्रवसंखु'र्सेट्स'रीग्' हुर्क्षेप'इयव। विवागहरवामवा हुर्क्षेप'इववायहुग्याक्षेत्रकेपर हुन्याधिव वृं। न्यवाहेयईव्यारवाहन्यवन्यारविवेधिवेव कुर्रार्थेन्'व्यापया कुरापर'ग्वन्प्तरीयवर्यम्'यगुरुवरीप्रहर्य ह्या ।

द्रवासंस्थान् ने द्रांची त्र चुन् प्रति हिं हैं स्वस्त स्था । न् वार प्रति हैं स

षे वेशमुन्यायातस्य। विद्यान्यस्यार्थे। यन्हेरार्ड्व्यायातस्य पाने केन चित्र की सु । सन् । ते का सु । न न में अ । सु । से का न न न । इस्रकान्दे। साने प्रान्धिन पाने क्षा हाम कुष्य ग्रामी प्राप्त कि गार्थे प देरः चतु ग्रां द रेन् ग्री शांद चरा हैं ग्रां होन प्रांधित है। यह द ने विकाग सुरायान्हेर्रात्रस्य नेराधुरायय। सुनायान्रात्राहे यहार्येर् नासुरस्य सुन'रा'श्चेन'र्रा'ॲन'ने ने न'न तुन्व व व व न' त दे 'ॲ'वेन'ने व व व NAI रम्ब्रा न्ष्रिन्धेशस्यान्तर्भार्षेष्यान्त्राच्या हेः दश्रदिः वियावार्यप्राचे रहेगारा वेत्रित्र हितारा सा विवया क्षेत्र हे নৰ্ব্বাহান্য শুল্ব ক্ৰাষ্ট্ৰ নে কৰ্ প্ৰিণ দে বুল বি না কৰ্মান্ত না **न्यग्'यन'र्में न्यां युन्'ब्रें रे पश्चेतायन्ना व्यां विवायम्'यार्म्यया** हे क्रिंद झुत्राञ्च र्श्वप्र क्षेत्र पुनु स्पारी से मई द है र र रे द है द है है र र र र र र र र र र तायनु ग्रां त्राञ्च ग्रां अर्थ हे न् 'पं न्नां त्रे त्रां न् स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स् देन'इयरात्म'ग्*रस'यत्म'न् मॅश्रमर'त*तुग्'छेन'र्न्*न'के'*ऋ'र्चे*न*'तुन'न्' ठ्वेन' रम्भी स्थार मुर्चेता बीत में निम्म वना अम्स में निम्म वना मिन् मी [Adlan@बार्च्चाचिर्द्राचेराचुरायबा हेपर्द्रवाचुबाक्केराहेकेवार्घदेशरा व्यायगुरादर्गगगुरवार्या ।

लबच्चान्द्रताच्या । विद्यात्रेयायायायाय्येता । त्रे संक्षेत्रवायाय्येता । त्रा वे विद्यायायायाय्येता । त्रा वे

मरायाम् वास्त्री विमानस्ति व्यस्तित्। । मानस्ति विमान हु निर्मेदा । क्विंग्राञ्चर केश्यक्षर निर्मेद । । दिल्ला स्त्रा मनाम्बर्धास्य । भिन्दः स्वरः मना स्वरः ८*५'*२२१*न्* १९६६', १९६५ । १९६५ । १९६५ । १९६५ **অন্দর্বরের ক্রিক্টারের্জানা । নার্বারের্জ্র ন্রির্ল্যান্ র্জ্বার** तर्न्। । कॅ'तशुक्षाह्यकीरामेका । नाह्यकार्ये निवस्तु हा ब्रीन:पॅन्:पं:बुक्:ग्रीक:ब्रेन्। । ग्वक्:विन्यःक्षेत्र:बेन्:वान:वॉन्यः। । मन्त्रिः सः मोन्द्रिः सः मन्त्रिः मन्त्राः वित्राः वा । म्बारा हेन्'रा'ने'हेन्'रा'भेव। । तन्ने'त्रने रार्केषवा प्रकेषा हा स्वारा केवा का মন । শ্ৰব'নেই'গ্ৰব্'ৰ্মন'ৰ্মন'ৰ্ম্প । উল্লাল্ডন্লান্ম। *ढ़*देते'गर्डेंबॅ'ने'ब'ने। ह्वेन'क्षेंन'वेन'क्षेन'हेते'मॅं'क'कुँब'स'वेग'ब'नेन' ট্রীঝাগ্রাণ অঞ্জীন্'নম'নে নৃণান্ত্রম। শূর্বান্ত্রীঝাপ্তণা নর্বনার্মীনাপ্তরম ব্রাথান দ্বাথা পরাস্ত্রাধর্মান্ত্রী ইরানন্দ্রমার্মার্শন্বার্মর क्रींबर क्रेंबर प्या ८ दे खिलाल वा बाबा खे प्रांचा पर्टे के खे बार खे व्यायगुरः दर्भगगुरुषार्थे।

 वैराक्ष र्राप्तुन । नदस्यान् ने पक्षेत्र स्राप्ता सुपरा । नित्र परा स्रीपरा मुँगवायकेन्धिय। ।नेप्तवियन्भिन्यायासुपर्मिन्या रैन:बन्:बेन:न्रॅश:शुन:घॅन।। ठेश:ग्रुन्तःमरा पॅव:नन्गः *प्राचेरः* प्रवृत्तवारायवा है: पें विनाप्त्पार्धे पाद्याप्त्राची सेवाय तामदाचतिः क्रिं विवा वदाः पराव विद्यापय। क्रिं प्रमू न दुरः वस्य प्रिंग्न्न्यात्र्याश्चित्रक्षात्री । भूग्निंग्ने निर्वे क्रायम्न [बेक्'रा'र्सेग्'रादे'क्षे'त्रे'तुर्'] |ळे'**र्से**रका**शु**'त्रन्'रादे'ञ्चग्' য়'য়| |য়য়ৄঀ'য়৾ৼ৾য়ঀৼ৾ঀৢয়'য়ঀঀয়'য়ৢৼ৾| |৻৽ঢ়য়ৼ৾য়ৼ৾য় बे[.]ते[.]तुरः। |८्यातर्धेरःबे'खश्चमंत्रत्याश्च। ।गृहव्दिवसाञ्चरः म'न् मॅब'र्सप्रयाम् । पञ्जेब'या वर्षा केब'रे'र्ड अ'शुन् प्रति से रे'लुन्। । बर्च देशकरपति सब्देश्वर्म वर्षे व यण्या ग्रम् । क्रेंबार्झ्म लुण्यापिकोने लुम्। । अव्यापक्र क्रिं ग्नवश्राद्रण्यत्यां । यद्रवार्वेष्वर्यं विद्रात्यां विद्रात्यां विद्रात्यां विद्रात्यां विद्रात्यां विद्रात्या वृत्रवाह्य सेव मार्थ के से से मार्थ के वास्ताह्य में के वास्ताहय में के वास्ताह्य में के वास्ताहय में के वास्ताहय में के वास्ताह्य में का वास्ताह्य में के वास्ताहय में के व बतेष्ठुनवन् मेंटवन्द्रिन्य। ।हन्यायरः ह्वायायह्विन्यवद्यायाः । श्चन'य'<u>चे</u>न्'यदे'के'रे'तुन'| |दु'र्रदे'न्ननश्लय'नन'र्से'ल| 图'

मञ्जे'बेर्'पर'पङ्गद्रभगवाग्रुर्। |र्ह्रेर्'हृगवार्वेद्र'पदिक्षेत्रे'तुर्।। ୖୖଞ୍ଚ'ମ୍ୟ'ନୈଅଂଶ'ଖ୍ୟ'**ନ୍ଦି**'୬ିଟ'ନା |ବ୍ୟ'ନ୍ୟ'ଟ୍ରିମ'ୟ'ଟ୍ରିଅଂନ୍ଦ୍ର୍ଗ୍ର विवागश्चरवायम। विरक्षेश्चेन्यदेन्न्यः विवायवा हेय्दर्वः छै छ्याः छैरः तज्ञ त्रापः त्राप्तार् परः प्राप्त व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व्यापः व हॅं प्रश्वप्यवरासंविषाञ्चरास्। । यराहे यर्ड्वयं वास्यर्थायाने हेता रेवरा रव की में वर्ष में वर्ष सामा में वर्ष में वाक्षेत्रायाद्मवद्यान्। जुलाईवान्या वन्तान्यार्द्रण्याद्रीः **३८-४:बर-मॅ:बे८-प-८।** छ८-बे८-इबब्राम्यकश्चाह्मान्यकेट् **केर**'ततुष्'पते'न्तुबांबुर्चेद'दबादळॅंच'न्बॅबाष्ड्रद्वपदा ग्विंद्र'तु 'ठा विषा'द्र'दे। त्र चा हो द्राया स्थापाय द्वित्र हा द्राया हो द्राया स्थापाय द्वित्र हा त्र हो द त्र्वेयःरॅग्राबेन्'रा'यग्राबयाचेर'रा'य। ने'इयर्वाक्षेत्र'क्ष्ण्'रा' विना'ॲन्'न्युहरुष'प्य**ा** वें'व्'ने'ॲन्'व'कॅश्च न्यान्वेव'ग्रीहाक्षेत्र'पा षित्। प्र-्रंड्लाइययाग्युन्यन्नः चेन्यायायागुन्दन्यम् ॥ सुलान्ने'गृन्यत्रन्यने'केन्षेन। । विन्ने'त्र्न्ययत्रन्यं धिव। । विरामक्रिमहेळिय्संधिव। । याळव्यून्ने प्रविष्य नेप्य मन्द्रभित्। । माञ्चन्द्रग्यानस्त्रीक्षायह्रम्भित्। । यपायेषाने सं बु रे पेव। । य वे घरवामी हुल में पेव। । या वे नेव राप राप रा र्क्षया | सुःर्ने: न्वाळेग् ग्वंनः स्थित्। | तुःर्ने नहें व्यत् शुका<u>र</u>्ना सं विवा । श्रीनः संन्द्रायः सुत्रायः विवा । नः नन्ननः सुनः संस्कृति विवा रन्दे ग्वयायग्य गर्भे ययम्भिव। । १ व्यन्त मेन् १ व्यन्त हुन्य

भवा वित्राणिकाक्षे न्दायहतायाभवा क्षित्रा क्षित्रा विद्याणिकाक्षे न्दायहतायाभवा क्षेत्र क्षित्र क्षित

हिन्केव्यवन्दर्भेक्षं हेन्द्री । त्रव्यक्ष्यं व्यक्षं व्यवक्षं व्

४८,त्रा । श्रूप्यञ्चलः स्पुरः न्यापाद्यवाद्यप्ति ।इ'वेर वर्षा धैयःचगःत्र। ।ह्यःगरःस्यःबःडेरःङ्गतरी **ান্ত্র**্ব'ক্টাইৰ্ষ' কৃ.ইং ষৰ্শ প্ৰম্প্ৰা | ने त्य'कृ न'र्वे' कृ'रा'द्रवय| | ने नृष्य क्षेत्र'कृ हुँग'रा'८२। |ेे'स'वि'हेंगब'८६स'रा'इयब। ।सग'वर्गेओ ल'डुग'रा'त्र । | ने'ल'तर्नेन'राजन्येन त'क्वम । द्रे'न कें हेन देवबाय'८५। । **वैबाग्युटबायबागुब**'८२'या**ङ्ग्रेब**'द**बा**द्यग्'८८'यङ्गेदा ন্যু সংখ্য হ'ব টুঝা ष्ठित्रपर'सु'ॲ'नेश'वर'तु'**ग्नव'र्ररश**'वश' *ढ़ॎ* २२११५ॅ १। सुब्राइस केंग्रस्य सुस्राच्या क्रिया न स्रोध्या स्थाप के । दिनः ।।। स्याञ्चः चेत्रायराञ्चरार्हे। । स्पराहेत्वर्ध्वर्धायारश्चराने केत्रराहेद्वर् कु क्रांतुः (या क्रिंच प्रायक्षेत्र प्रायक्षेत्र प्राविषा ची न तु सा वा क्रिया पर सराजेन्'डेन्'त्नुग्'यदे'स्य म्बेश्यः'य**्ष्वायायः। प्रद**्यन्यः'**सं** ष्टिग्वेशव्रत्रेक्ताद्वेरपाहित्र्त्यावर्ष्ट्र्यावस्य देत्रहेस्व ८देवःश्चे :दरेतेःश्चवःयांग्रीकाने रः छराः इवसायवा प्राप्ता प्राप्ता प्राप्ता মির'র্'ব্রহ'নথা ৾*য়৾৽ড়৽৴৽ড়৽৸৽৻য়ৣ৾ৼ৽*৻৸য়৾৽ঢ়ৣ৽ড়ৼ৽ঢ়ৢঢ়৽৾য়ৼঢ়৽ঢ়৾৽ঢ়ঢ়৾ড়৽ <u>चे र र्राटः। ने 'व बार्विन'स्टेने' च'याच'ब र पर्चे व'प्वबार सें पा'न में बाणाहान बा</u> ऍब्रप्पन्याः संदे व्यापे असन्यानु सम्बद्धाः स्वर [मःन्यानदेश्वः ज्ञॅम्बाकी**न्मॅब**ाचेनः नवा हिन्छे। वन्निप्याणनास्यानके च'वेव'वेब'वेब'व्यव्याविव'पवि'वाबुटवप्या ॲव'प्प्ना'द्रयस ब्दी हिन्हिन्हे तह विवाधीय विदास समिति सन्ति। न्यानस न्तानः श्रुच व्यवस्ति इवका ग्रीका वे यावे का वागु राति ।

हे:म्र'अ'इवर्गपाञ्चग्'तळताया ।भ्रॅंशपग्तर्दे व'ठव'ग्रेशपभुत्त **तृ**'ग्रॅंश| ।बे'हेर्'ग्रैस'मङ्ग्यस्य स्थार्यात्रा ।रारतां वेस **ଅନ୍ୟାପଶ୍ରିୟାରିୟାର୍ମ୍ବ | ୮୯୬୫**୯ଅଟ୍ୟୟୟ**ରିଅଟ୍ୟା**ମ୍ବ୍ର प्रवाच म्वाच प्रकृष्य देवा वा प्रवाच प्याच प्रवाच प <u> ইব্'অ'মিঝা |ឝ্রা'ৡব'ৡব'ঘর্ব'র্র্র'রর্নর্ন্র্র্র্র</u> मुद्रेशकेन् र्श्वेषक्षश्राह्य । न्युः र र तहेव् त मूनः र न तुतान तुता वर्ष। | नृष्युःस्ट्रायः तृत्यःपः नेरः नेरः यः सिंखा । त्रेयका हेरः न्ते व्यवेदः न्वावरः ध्यक्षः व्या । विश्वकारोवः ययाः अतः ययाः न्याः वाः वाः व **डिअर्थे** (ब्रें क्या ने र देन 'अंकिंब| | र द खुब कुवा परे न कुवा दें र [तु:रेग्'रादे'हितु:कुर्'ग्रॅंश'ग्रॅंश'व्या |तु:स्र्वश्यन्त्र 77 न्बेंच नेर देन अविवा । जुर विन गुन्न न वर र च । **इंबर्ग्ययार्ग्रन्द्रं रागर्यग्यायर्ग्ययायात्र्यः । दिराह्याग्रंग्रारारेर्** वार्षिय। विवासुप्तयुर्वेद्रित्। विरास्त्रपुर्वेद्रित्य **शै** तहेबापाय। । शुक्राशुपायकॅ ५ 'हे वापश्चित्रायशे प्रयाप्तरा कंकं दर्वायायर देर्'याविया । तुर ग्राया अर्रेर गेर सु है 'उ। रॅन्'न्यथालुब्'यर'पहेन्'पहेन्'ब्बा । झ्'लुन्य'रस्य'पर'रेन्' **রী**ররাট্রি**র্লাস্থা ।** রেগ্রনারীনার্মার্মার্মার্মার্ मर्केन्पातस्यापरादेन्याविया विस्वानित्यान्य स्वानित्या । **बिब**'बेन्'**यै'गे**'यह्म'यहमाज्या । चेब'ইআরই'यर'देन्'আইয়। । | ग्वेद्रप्रभाद्वग्रेयया उद्यम्भुत्या यभुत्या द्वा । वे प्रदेया **3**1 ষ্ট্রন'নননিদ্যানিষা বি'স্ল'ফ'ক্ষমন্সীপ্তর্ব'মু'ব্য বিদ্যান ८वाः ज्ञुन् त्यायाम्यायाम्याव्यवा । वाष्ट्रयाः ज्ञुन् त्यां व्या । णदशरेवित्प्तेव्यदेशसङ्ग्रहणा । श्रेन्सं उत्सङ्ग्रह्मा सङ्ग्रीतश वया । महे सुगमहे ५ ५ में या विस्तु र महि स्री 145 मृत्यायनायम् देन्'याविया । विवागशुम्यायय। विम्ह्यवा हून प'त्युर'हे। हे पर्दुव श्रीसरहाप'य ग्रायय हे राप'य। अतु वाने भीन पातु हत्याच्या वित्यम्भाया यत्र न ते रागुन भीना छ्या ५८ क्रॅ्रन्तः अन्-पु-तु-ता-क्रेक्न्त्नगु-न्युक्-तुअळॅन्यनः त<u>ञ</u>्चनयमदेश्यन्। धव्यत्वा संस्थान विश्वास्य स्थान विश्वस्य स्थान स् मान्दिन्द्री यन्न्द्रवयगुर्भ्यवरिद्धन्तुः क्रांत्रावर्भन् मन्धित। तक्ष्माश्चराष्ट्रां चेरमित्रवर्तु वगुरत्रे गृश्चर्या । सम्बाया इवकात्म खुन् तळताया । व्यन्य देवा वे न्यति दे विन् दे। ।इतार्ड्डरप्येन् मृत्यायन्य । ज्ञतायम्यापन्यः

इं संता । इतार् कुरार धार हें नारी । विवेर रे विंद र वें वर्ष | इतातर्त्रे र र्षे न 'त' त्र्रेत्र व्या कुवा | व्रि'वर्षा गृह्य न्या परि 175 ग्नबर्गरग्वरी विरव्हाञ्च परागुर्भाषा श्चित्र्रेत्रेव् न्रेरावराय है। तिहेन्यायान मेनायायाय राज्याय हैन। । ए न्द्यरम्बुद्धान्द्वाकुः द्वर्द्धान्द्राच्यान् । न्धेन्पबुद्धान्यरः ज्ञन बळवराव्यत्वे । क्रूब्यब्रुसर्ख्यराब्स्यतुप् ह्य वरिष्व स्वर्भ स खुश्ययत्यस्यत्रेतिःकृतः नश्चावदे। | यदे यदे यदे दहः दह्य यश्चीश्रयः सम्मान्। | ক্ট্রীন্'স্ক্রীন্'র'গুর'গুন'অইন্। উ**ঝ'ন্**গ্রন্ম**ন্**ম। छ्य'छ्रैर'तञ्जनया'ता'क्रॅ**ग**य'व्यक्ष'तञ्चर'र्य'विषा'द्युर'विरा। प्रविदाहराया **≍ॱৡॕয়য়**ৠऀॱॿॕॣॺऻय़ॖॱय़ॻॕॖॿॱढ़ऻ ॺॸॕॱॾॻऻॴऄॖॱऴॴॸऻॸॣॱॺॖ;८८। ऄॗऀॱ दॅं[.]सतांबॅं:ळे'ततुषायते'ळ८'रावेषा'तुःवेषषाने'तळेंच'न्बॅ्राप्युऽत्य'''''' पत्र। मुत्र'अर्ने'द्र'प्रदि'रूर्वाप'द्रवराग्रीकंष्ठ्र'प्रद्र'न्र्रिन्'न्र्निन् विते गर्डं में ने दर्भ इस्तर्हे र पहिन गन दर्भिता ব্ৰহাপ্ত হ্ৰমা तार दीन वापन विषा भेन पार्य स्थान विषय स्थान दे ने के ता स्थान के विषय स्थान स्यान स्थान स्य <u>चेरप्यत्रा</u> भेदप्पणभेदप्रे क्रंबप्यक्कप्रदेशेवे**बप्यत्र**क्रंबप्यदेश हुरकी र्स्ट्र परत्रुग्या वहारवायवा रेपरेवाहिर्की सारवाराधिवः

देश व्यक्तित्र अश्चेत्र प्रति स्थापित । स्था क्ष्य व्यक्ति । स्था व्यक्ति । स्यक्ति । स्था व्यक्ति । स्था व्यक

न्ना अवन्य अवन् मन् नित्र के विकास के नित्र मा स्वीत स्वापित के नित्र मा स्वीत स्वापित के नित्र मा स्वीत स्व गुन्तिरान के निर्देशन विद्या । निर्देश के नि यय। | ने'ग्रस'ग्रम'ग्र्य'यान्त्रस्यवयय। । न्यक्रेंसप्तन्त्रः नं तर्भायापरिवारे में त्यावायाया | ने त्याबुष्याप्त हा नं की बाद तर त्रम्या । इत्रम्यम्यात्रम्याः द्वारात्रम्याः । द्वारात्रम्यात्रम्याः । द्वारात्रम्याः । केव'ळॅब्रुव'र्घेग्'तृ'बे'ढ्रुंग्**रा**ग्न्र्राच्। । त्रुता'व्रेबर'रदेरे'रयर्'प न्दर्य । ग्रह्में स्वर्षेत्रं द्वर्षेत्रं स्वर्षे हिन् स्वर्धे हिन् स्वर्धे केव'ळॅज्र्'स्थ्रा'तशेयावेर'ग्राप्ता । परार्देरे'ग्रावायां केव' वया १७ वर्ष्म है प्रदूरिया वर्षा १ है वर्ष स्थान द्वयानेवाळे तथा । वाचे पाई वायाळे द्वयाळे द्वया ह्या निया निया निया । त्रॉकरतात्री कृतका क्षेत्र क्षेत्रका क्षेत्र क्षेत रेसक्षि म्या । कें है स्वते स्वतः दान तर तर दिन देश व्यवस्तर्ग्यं अं अञ्चे वस्य वे ज्वे निर्मा निर्मा । या ने न् ज्वर व्या छै । व

ガスガイス かんが ガナ

व्यं गु'द्र। हेपर्डव्ये सारकाराने के स्वावा क्षित्र हित्यं व्यं स्वर्थ के सारकाराने के स्वावा क्षित्र हित्य क्ष

मुक्षान्यक्षम् वायम्यः कृताम् विकेश्यास्य विकासम्बद्धाः । रेवर्ष्यविष्यवेरः सुन्तुव्यक्षयेरे यगुर्वा । व्यान्यवासी स्थिते । कॅंब् १८८ हुन्यं यह दायदे श्रेय हुन् केंब्ब हिन् हुन् हुन् हें रयातुर्श्वेषाद्वया । सामादीव्यवसम्बद्धाराम् ने । हेर्रारम् मने क्वेन प्रस्था माने का माने विदा [मःबैः ज्वस्युः ज्वस्विदः यान्। [मग्नः ज्वस्युः प्रव्यस्यः रसत् मेन | ने हेश रश्य सुप्त हैं व | मन्द मन्द व श्वर दे रशपां इयल। । गरल भरे हिर हिर हिल में स्थाने । । गरल भरे हिन् श्रीया अने साया । भी श्रीया भी सकें मेर भी या । मीन्या भव'क्द'ई बॅ'बर्घ। |हर'नशुक्र'तुन'नेपर्नेश'यवर'त्रा वनुत्रहु: ५६० के इ.च.व | वे.४५ ५ ६ ८ च नवर पर्या | वे.५५ मव्येत्राधी । इत्रुधिवान्याम् । वित्रुधिवान्याम् मायब्क्त्वाम्याविता वित्वक्रीः सुब्बुब्द्रित्वेयवा वित्वी <u>५व्याप्तरम् । त्रिह्तर्भ्याः । त्रिह्तर्भ्यः प्राप्तरम् ।</u> ने द्वन्यक्रीक्ष न्या स्टब्स्य विक्रम्य । दिन्द्रन्य या स्टिन्द्रन्य विविद्या । अर्हे गाञ्चर कुव्रे विविद्ये गया या। । श्वव विवास स्वास स्वया न लक्षे। |रेक्षःञ्चन्यर्वाकेक्ट्राइर्धिन। |क्षेर्राकेक्ष्रायान्य के म्यामिया । विन्द्रीयायायका स्वर्धाः । न्यान्यन् स्वर्धाः केब.स.पह्यानम्बा | चुबायशस्यत्या स्यान्द्रयस्त्रम्

पश्चार्या स्थाप्त व्याप्त विश्वा विश

पक्ष्याक्ष्रेया स्थिपाञ्च म्यार्ग्य ते स्थायाय मृत् । यत् मार्श्व स्थायाय मृत् । यत् मार्श्व स्थायाय स्थाय स्थाय

राक्षित्यायायवादि। विवयान्तःक्षेत्रहेर्द्यवयावयाग्वत्। ।रगः पतृत्। |<u>५.५५.५५, १५५१ ।</u> १५.५५, १५.५ ल'तर्जुन्। वि'द'शे'तहेन्यार्जुन्याङ्गेय। ।तनैरान्तुन्यन्नु पर्नार्ग्याद्यस्या | तक्षे'र्मेन्'क्रॅबराताक्षेत्रातुकावहेन्। । हेका गुशुन्द्रापद्म यन्'नद्मया'ह्मयद्मागुर्च। वी'न्न'वी'यापीत्'ह्रद्रद्रा **ॐ**अ'ग्रेन्'पदे'तुस'य'ग्न'पत्रर'। दशॅ'न्द्'ग्न'ळे'तुस'यर। पर्दुवाग्रीवतावता वेष्याधिवासवा वेष्ट्रभाग्री नरावाववानाची त्रङ्गवापात्रें वापात्राञ्चेनापाराधेराचरात्रुन राधराञ्चे हु।वदातुराने इद्यापश्चर् भ्रियाप वर्षा पश्चे वर्षा प्रशासका व्रिक्त वर्षा भ्रिक्त वर्षा भ्रिक्त वर्षा भ्रिक्त वर्षा प्रशासका ष्ट्रिन्'इयम्'गुन्'कॅम्'यज्ञन्'र्ह्मेय्रार्घन्म्यायाय्ययम्'न्'र्ह्मेयम् ঀ৾ঀ৾৾৽৽৾ঽয়য়য়ৢৼ৻ঽ৾৽ঀয়ৢঢ়য়য়৾৾৾৻৾৾৻

ষ্ট্রপা | নির্বাহ্রমানেইন্নের্বান্ত্র্বাপার্টিরার্ট্রমানেইন্নের্বা । প্রির্বাহ্রমানেইন্নের্বা । প্রবাহ্রমানেইন্নের্বা । বির্বাহর্মানের্বালা । ক্রমাইন্নের্বালা । বির্বাহর্মানের্বালা । বির্বাহর্মানের্বালার

मने क्षेत्र जुन स्म बुन । । ८ व व्यन स्व । **শব্দেন্দ্রিদ্রেন্র**রাধন। |ইট্রিদ্রের্রার্থিন প্রয়া স্ত্রু মুনৰা বিশ্বংইৰ ভৰ'গ্ৰীইৰ ক্লমন্ত্ৰীৰা বিনদৰ মুন वैबाह्येरचान् गुनान्ना अवसा । अवसाउ पर्नायकान् तुबाह्य हुन्। । त्वर्वासुयवस्यक्रेत्र्वेव । द्वद्वायत्त्र्वर्वेव । केश्यरा देन्यक्ष, प्रत्याचा । इत्यापक्ष सञ्चन प्राप्त । विश्वापक्ष सञ्चन । ब्रैन:दशवुरायकाब्रैन:हेन्द्रीय। । गुरुग्धरायम्नायकार्विरः ब्रूपः बर्। अव प्रकृ प्रञ्जी वर्षा प्रश्र है र प्रा | अ अ अ राप्तगत्रदेव क्वा श्चिति वर्जन हु जुव दुप्त व्यव । प्रति न्यक्रम्भग्न्यम्भव्। । तक्षेप्रयक्षेत्रम्यक्ष्रम्यक्ष्रम् । तर्नरत्वुग्यातुर्श्वेप'रवाप'क्षवा | विकेषित्वायायाञ्चेतापता | क्षेट्र-दुषायहॅर्पायाँ स्वायात् स्वारा । वेद्यान्य स्वाया हे पर्युद्रा न्यं व द्वारा विष्यं निर्मा विषयं । विषयं व द्वारा विषयं **উন্**ঘান্ট্র্বাথান্দ্র ব্যাথান্দ্রমান্ত্রী নামকুনাম্মর सर्रःक्रॅवराव्यमुत्रावर्ष्य। समाहेपर्वन्क्रीहुन्नुव्नेरपितु प रशकुर्यानजुर्वं वर्षाचुर्याया रशकुर्यं वर्षानुरहेरी छेव्य म्यन् हेपर्वं नामन्याप्य स्वयं कुल् प्रस्वा वर्षे स्वयं यावा ग्नस्यभेग्यवराचरावुष्यपद्या हेराईव्गीयागुरायव्यवेत् ञ्चअर्थरान्<u>न्</u>। रक्षक्रन्यात्राज्यवार्वेत्तुञ्चर्यात्र्या ग्रवस्थर हुग्दर्श्वंगुरर्ग्ग्युरस्था।

सुपाराव कु रुव की हैं व पा प्रा । क्षिर दुश रुव की रहा सुरा । न्दर्भाषा । द्याकेद्रानुस्य वर्षानुः स्थारा । द्वानेश्वर ऍिप्सॅंदर्ने:क्र्रन्'या | बिक्क् व्:चेरः वृव्यंव्यव्यस्य व्याप्त्रीय । हाः न्निन्द्रस्य १ व र्नु या केंद्र स्वावता । वि र केंद्र भेदर स्व रह्म होन षेव्। |८्यतःरूपः छेट्। हेव 'व 'रूपः श्रुंग'य हव। |टे' प्यव 'ट्ट्' हुव'र्न्ग'र्ने'पेश्चा ।र्'र्नेबर्नेव'बर्ने'अहुन्'र्ठ'व। ।हेब्र रहिन्यायक्षात्वस्य । हिन्यायक्षात्वस्य १६८८ मा बयर्वेद'यञ्जेग्र्नेन्नर्। |बयर्छेरदबर्देन्नर्। |बर र्षेय'ळेब'वि'द्यप्य'तर्रेन्' । महुन'ग्रीबाञ्चरतु'त्ह्रोस्यत्रेन्' धैव। । तुःमः भैकारक्षु र या दः यहं र या राधिव। । विश्वासः वृद् दः कुलर्स्सिद्। | बीरालाग्न्यश्रम्मार्स्राः । इराव्य स्या ब्संबिक्य । ब्रायहेन् क्षेत्र विन् विवास । विवास विन्तु । Ağ दर्शराधिया । य अर्थरेष प्रतिस्था क्षेत्र प्रति की रेग'रायम् हें ग्रांप। । यस्त्रीः श्रुग'श्रुर'अर्। । प्रायरे **ब्रिट्स हे के द**ॉर्य गुव 'राश्चाट या वया । भि. न्या गुराय या रात है ने नार हे व ' मुन्ना । पश्चव चित्रे हुँ द्व जनवारायते। । वसु ५८ ८ व १६ व व अःश्चराकरः। । । । अराक्षेश्चर यं रक्षे । हेर निरा । हिर ने यहा <u> বিন্ ব্ৰেষ্ট্ৰাৰ্থ এন। বিশ্বিদ্ধেশ এখি ই দেৱল এখা । বিহ্ব</u>

न्तर ब्रुय कुर न हुन रा न हुन र रा दि हुन रा र या प्रे हुन रा र या थे हुन रा र या त्रविन्यस्य स्थाने । भावायायत्रे तिष्ठ्या केवा मन्ता । न्युअ'स्द'यर्गन्यन्त्र' | दें'हे'सुद'र्मुन्य'अ'न्हेंन्यरा। । पर्। । अँथाव्यवाह्मण्यान्यन्त्राध्यान्त्राः । श्रुनः कुनः चेतः क्रवराययानेव गान्य। । नवाळेग क्रेन याया व ग्रापित। । वाययः ८ मुँदैः बर्डव 'हण्यां अनुनावन। । निराधित देन मुँदिर विश्व विष्या । ळ्यानु दु उन् ने श्चिम आया । अव नकु न न न अया मा आर्थे व ज्या । । *ঀয়য়*৸৾৾৻য়৾৾৾ঀ৾ঢ়৾য়৺য়৾ঀ৾৻ড়৾য়৾৽য়৾৾৾ঀয়৾ঀ৾৾৸৸য়৾৽৸৸য়৾৽ यते। विवन् ग्रॅन्पी वे त्रिक्त्। १८५ व्या हिन् हिन् विवस यते। । वत्रां ळॅगबक्तियाँ न्यां । पह्यानुग्राह्मन्याया द्येत् ज्यत्। भिन्ने देवे प्याना स्वा केवा निता । ज्यत् नुवा क्या बिन'शु'द्धर'दरी । श्वीर'र्करा बर्दर'र्परयाग्रीश्वीर र'पिन। । झॅरा तुःश्चॅन'इबराग्रेबेबराय'वेग। देश'गग्रुन्य'मब। हुन्य'ग्रुब' इयराकुं द्वेग्रां तारहण्यापरा युरापा सरा या परा रहापा इयहाकुं दरा दशन्वित 'रा'द्वन' है र स्नि 'ने र'रा' इबल ग्रैश र ५ 'क्रेनश दुस शु'र्सर' न्दरप्रया नद्गः त्रं द्यव 'इयराक्के त्रं द्रः त ह्यस्परि वयः न्द्यस विवागुरम्बद्रायस्तु 'लुबायदी'सद्र'तुः समुरादरी' बागुरता हाँ।

छिन्'न्'तुन्'न्त्रंत्र'न्न्'त्यंत्रंत्र्यंत्रंत्यंत्रेया ।विन्न्यदेन्त्यः क्रेन्यत्रात्रंत्रः ।क्रेन्'त्यांन्ययो ।विन्न्यदेन्त्यः

ব্নদ্ৰপ্তমাব্দাব্দাগ্ৰী ঈ্লা

द्रांगुःदु। हेयर्ड्द् शेयारयापादे नेद्रामुद्रद्र्या द्र्या द्रायल्यवाद्र्या हेयर्ड्द् हे इत्याद्र्येराययायद्द्राध्याद्र्या प्रदेश्यायहण्या हेर्यंद्र्या हेर्यंद्र्याय्य्यायहण्याय्यायहण्याय्यायहण्याय्यायहण्याय्यायहण्याय्यायहण्याय्यायहण्याय्यायहण्याय्यायहण्याय्यायहण्याय्यायहण्यायद्र्याय्यायहण्यसम् त्राच्या । त्राच्या व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्यापत व्याप्त व्यापत व्यापत

कृत्र-प्रज्ञान्द्र-प्रज्ञान्द्र-प्रच्नियांत्रेन्द्र-प्रक्रियांत्र्याः कृत्र-प्रक्रियं। कृत्र-प्रक्रियं। विवाधितः विवाध

मृश्चर्यम्यायान्। प्रायाच्यान्त्रः व्याप्त्रः व्याप्तः व्यापत्तः वयापत्तः व्यापत्तः व्यापत्तः व्यापत्तः व्यापत्तः व्यापत्तः व्यापत्तः व्यापत्तः व्यापत्तः वयापत्तः वयापत्त

्राच्यान्त्रवर्क्केश्चरम् । वित्यान्त्रवर्षः वित्यान्त्रवर्षः । वित्यान्त्रवर्षः वित्यान्त्रवर्षः । वित्यान्तः वित्यान्तः । वित्यान्तः । वित्यान्तः वित्यान्तः वित्यान्तः । वित्यान्तः वित्यान्तः वित्यान्तः वित्यान्तः वित्यान्तः । वित्यान्तः वित्यान्तः वित्यान्तः वित्यान्तः वित्यान्तः वित्यान्तः वित्यान्य

न्नेन म्न हो न्न तेन्य के त्र सा

दःशंगु'द्य। हेःपर्ड्व'श्रेयारस्याने'हेन्'यान्नः संवदायक्षण हुःन्न्यदेः व्यव्यान्यानेव'ह्र्यसंन्यस्य स्वेयान्यस्य स्वयः दशत है त्या व त

त्रंश्रम्पत्र्यां प्रतिन्त्रं वर्णः वर्णः

स्र्वायावयाद्यंत्र्यं । अत्याद्यंत्र्यं । श्रिम्यं व्यायावयाद्यं । श्रिम्यं व्यायावयाद्यं । श्रिम्यं व्यायाव्यं व्यायाव्यं । श्रिम्यं व्यायाव्यं व्यायाव्यं । श्रिम्यं व्यायाव्यं व्यायः व्यः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः व्यायः

स्या लट्च्यं स्याप्त्यं स्याप्यं स्याप्त्यं स्याप्यं स्याप्यं स्याप्त्यं स्याप्त्यं स्याप्त्यं स्याप्त्यं स्याप्त्यं स्याप्त्यं स्याप्यं स्

য়्वर्रात्वर् छे लट्ड्रिया । विषा स्रित्रं प्रकृत् विष्यं प्राप्त स्त्रा । स्रित् प्रकृत स्त्रा । स्रित् प्रकृत स्त्रा । स्रित् प्रकृत स्त्रा । स्वर् प्रकृत स्त्रा स्त्रा स्त्रा । स्वर् प्रकृत स्त्रा स्त्रा स्त्रा । स्त्रा प्रकृत स्तर स्त्रा । स्त्रा प्रकृत स्त्रा स्त्रा

 म्यात्रक्षः क्ष्याच्यात्र तम् । क्ष्याय्यात्र तक्ष्याः व्याप्ति व्यापति व्य

ऍ'व'ऍब'प्रन्ग'नेश'रसुर'ठव। । ८८: परी:सूग'पस्यांकें रे' | त्र देग'त के पंचु प्यति है। । ग्वेव देते मं १० रा हेव ন্ত্ৰ। ঘ'ব| ব্রিশ'র্মনি'র্মনীর্জানস্ত্র'ঝ'র ব্ | ব্রন্থের্মনমানস্ত্রণ रावेन् वर्मन्ययान्यु दीन्। व्यवस्य वर्षः न्यूं या स्थान । विष्या स्थान हॅं स' मुःबाबेर। । स्र र बबास ' प्रेंबा मुःबाबेर। । पाव ' साग' स ह बबा बन्दरः दश्यम् । यतः हुंद 'रे'र्मश्यद् द 'र'द्र । । ५०८' মুখুনাৰ্থআন্থৰাক্ৰিন্ন বিশ্বনি বিশ্বনাৰ্থ বি क्वेंप'तृत्रे'पदेशॅ'पॅब'प्र्या |पक्केव'ज्ञुप'ठुरू'पदेख'श्चर'पद। । यह प्राम्ह मान्यायाय व से से से से से प्राप्त के से से प्राप्त के से से प्राप्त के से से प्राप्त के से स्राप्त के से स्रोप के से से प्राप्त के से से से स्राप्त के से स वतर्। विवासिनिनिरेत्रे वाकन्य। दिन् के सूना वं याने वासर वहासून्। ।त्रातान् सत्न् स्त्रान् । त्रातासून निस्तार्दे *५८,*४५८। ।अ.ज.च.५८.व्.५८.क्.च.। ।४८.वे.व.५४.व.व.५८.व.५८ শ্রীরাস্ত্রব্য । বীঅবাদাই দাঅনাদান কিন্তু নর্মী। । গুলিব चन्द्रां भूर् 'गुर् सुव 'र्चे | विदेशपदे खेश स्बुध पह पानु व सुन में जन्दि प्रश्निर दर्शाच्या विर पर्शेष शहर पर्श्व प्रमें दर्द यञ्चर। वित्रपंचेदाकें विष्मण्केत्। तिष्मेत्रपरातत्वाप्य

ষ্ট্ৰীন'ৰ্ব্ব-স্থান্ত্ৰ'অন্। | নিন্দ্ৰ'ম'মৰ'ঘ'ঝ'নেনুদ্ৰাধ্য सब्दायाञ्चन् देन् ज्ञुना मनका बेन्। । मनका कन् त्रवाना वर्षे नः संवा । महे·न्तृरः ठवः क्रेंके होतः अरः। । ने ति इति तुवः न्केन हिनः कं व। **८यातपुःक्षे,क्रश्यायायायाया** | यट विदासब्दारा स्ट्रां दा बिदा तके.तृषाक्षेत्रकुंत्'चं याने'न् मृष्या ।तक्षे ।पन्यक्षेत्रकेन्य चंद्रान्य । ठेश'ग्युत्राम्या ग्नेद'र्नेर्ञ'ळ्य'ञ्चॅर'तुव्याम'या<u>त</u>ित्'नह्न'दया नर्ज्ञेबर्यामसारके विराधना सुन्ति स्वाप्तर युर्जि । नेति हे विषयि । त्राय हे पर्वे ब 'पपा' श्री श ह ना 'पुं की प्रवे न श उर्। वन 'प श है श' ग्रन्तिवेबर्न्यूक्षचेन्द्रवेश्चिक्षवे नास्त्रव्य। विवापत्वाय चति'चरायान्वतात्राच्यां क्षां यहां क्षेत्र वाक्षं क्षंत्र नेचन्नायाः विनाम्यद् 'याने' सुदः मन् वेष्याचे दाने हेन्द्रव्यमात्रुशकुनःकृत्वे त्यातर्हेन व्यवेत्। देन्'बे'तर्शे'ग्रान्यप्या दें'व्नेने'देन'न्ने स्र गन्तः रम्भेरीयक्रम्वम्मु वर्षम् तरेपरार्ज्ञेषरायहर्। रेयराक्त्रिं म्ब्रायवा पर्याची दुःख्र-'न्न-देखःखुन्'यत्र-'न् भेन्यः ज्ञन्यः सहिन्। विस्न-नः र्वेन-धुन् द्यरापतर्पन्दर्भेत्रवर्षन् र्जेष्यया संदिर् केष् चेर् संस्कृत् केंद्रायचर संस् প্ৰবাহাৰহাইনে। हे पर्वत्रपार्श्वाह्यम्बर्मात्रात्रव्यात्रव्या मन्द्रिया स्त्रीया स्त्रीय स

इ.सं.चंद्र,पद्र,दें, चंद्रव,क्षेत्र,व्यं वीक्ष्यक्ष्यक्ष्यं । इ.सं.चंद्र,पद्र,पद्र,दें, व्यं विक्र, विक्र,

म्याया विकास के व्या के स्वार्थ के व्याप्त के स्वार्थ के स्वार दार्नित्। । यिन, ऋषारानु देखन, भुषाया यु, परी श्री श्री स्थित । विवास न्राकृताहितेषात्राधिय। ।रेगायदेष्ठेतुः कुर्यमञ्जरवायश्चरवावय। । इत्रानन्यत्तुः क्षं श्रुन्ति तरे व्यान्यान्य । इत्रान्य न्यानुः के विषय মি'নেনুহাণ্ট্ৰীহাম্বা | দে'শ্বীহামী'নেনুহ'ণ্টি'ই'নি দ্ব'ণামা | হ্ৰ' मायेम्बार्येन्'श्रीकंकं न नृपान नृपान्य । तिहेरापतिःकं कं तिनेन्यः पति'र्लाट्याञ्चर। । तिने'तनितिकंकं कं तेष्वार्थते तत्रु अश्रीका वर्षे । स्चित्रिंग्क्ष्रिंन्क्षेत्रकेत्रिवस्ति। ।क्षेत्रकेत्रविवसक्षेत्रवस्त्रेत्रवस्त्रेत्रवस्त्रेत्रवस्त्रेत्रवस्त्रेत्रवस्त्रेत्रवस्त्रेत्रवस्त्रेत्रवस्त्रेत्रवस्त्रेत्रवस्त्रेत्रवस्तवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्तवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्तवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्त्रवस्तवस्त्तवस्त्तवस्त्रवस्त्रवस्त्तवस्त्रवस्त्रवस्तस्त्रवस्तिस्त्रवस् | नकान् ग्रन्थ्नेन तुः तहं वहाय दे 'वॅन' अ' हुन' । । नकान् ग्रन र्क्र-ति.एव वायु.पदीयाग्नीयार्क्षवाया । श्चि.यासीयाग्नीपटाञ्चिपाया । चन्। ऋ न्या श्रु न्या न्या स्त्र न्या चन्या स्त्र न्या स्त्र स्त्र न्या स्त्र न्या स्त्र न्या स्त्र न्या स्त्र अभुरः। ।[षर:नदे:खुण्यःनर्रः तेष्यःयः'तस्यः मुख्यःयःहर्। **!** ८[.]द्यु[.]ळॅग्बाब्र्न्र्न्पदे**.ज्**न्या । क्रु.बाद्रे.द्रसःक्रुट्चबाच्याव्या । *ष्ट्र-चेर-*तिष्ठ्र-पित्रेर्यनः अनुन्। । श्चन्यिते पत्रु 'पत्रे पत्रु 'पत्रे पत्रे 'पत्रे पत्रे 'पत्रे पत्रे प् त्रस्य भी व्यापा के व्यापा

सन्दर्भ स्त्रिम् हे द्रायदे प्रेनियायम् विष्ठ्रित् से न्यायम् विष्ठ्रा स्त्रिम् स्तिम् स्त्रिम् स्तिम् स्तिम्य

न्न'वर्ळन'श्रेन'हे'वेन'य'ने। हितु'र्राष्ट्र'र्यंवर्ळन'य'८५। यन्ग्'ग्वर'ग्वेशसुन'यानेक। |शेवशयक्षेन्'वेन्'पदिक्षंत्रंत्रुन्' दे। ब्रिन्दं सर्वे क्रिंग्स्र इ.च. १८६ १ । त्वर्यं वर्षात्रं विराधित्रं वर्षात्रं वर्षात्रं वर्षात्रं वर्षात्रं वर्षात्रं वर्षात्रं वर्षात्रं वर्षात्रं व **घरा**र्देरः पर्रथान् हर् पार्टी । तिष्ठुयान् वित्युरापार्यः रेखाः श्चिमः हे ये ५ 'प ते 'श्चेव' ग हें म दे | गा प्राप्त हो म त्या प्राप्त हा **८८. ब्रियाय, त्र. इ. १८८. ब्रियाय, व्य. १८८. ब्रियाय, व्य. १८८. ब्रियाय, व्य. १८८. ब्रियाय, व्य. १८८. ब्रियाय,** च्र'ग्रस्केर'यत्र। । ह्यु'त्रस्य ह्युर'ग्रॅर्'य'रे'क। ।गवर' रु'अर्थर क्रेंगर री इंद्रिय क्रिंग्रिट त्रुपकर रेत्र 145 सॅंचेन्'रा'म'रे'क। हिन्दिसंसम्पर्शेन्'रा'ने। श्रिंन्'यर्गर्स सुंतर्ह्य द्वारांतर् । । १६५५ श्रेन्प्रसेमानाया ने स्वा । इसाम् जुन् भ्रेषयपदे'न्यळेष'ने| | वि'ष्ठंन'न्र-तु'षत्वयप्यत्ता **マニュミスペロース・本** | エエ・スデース・カッカ・カッカ・カッカー | 世・ त्यभ्रे न हिन् या प्रमानिक विकास कर में किया हिन स्थाप के स्थाप कर स्याप कर स्थाप कर @N ब्रॅं तर्यु ५ 'रा हु रा है। जुर खें गुरे रा द रा गुरा ५ जुर 미 의 드 지 디 지 रागरेगास्त्राहेद्रिस्यव्या विद्वरहुर्याया हेर्द्र्येश्वर

रिग्वाते तत्यायम् हे छेण् म् स्यादि वर्गुर्नु ग्रुम्बर्स ।

च्यावियाक्रीयाक्षेत्रावियाः वियान्याः प्रम्याः प्रम्यः स्वर्णाः वियान्याः वियान्यः वियान्याः वियान्यः वियायः वियान्यः वियान्यः वियान्यः वियान्यः वियान्यः वियान्यः विया

प्रते | क्रिंग्ड्यन्ति स्वयंत्रवा | विकार्णायन्ति विरयंत्रवा विरयंत्रवा | विकार्णायन्ति विरयंत्रवा | विकार्णायन्ति विरयंत्रवा विरयंत्रवा | विकार्णायन्ति विरयंत्रवा विरयंत्रवा | विकार्णायन्ति विरयंत्रवा विरयं

ण्टर। प्रवस्परणः वेषस्येत्रः येषस्य स्वर्षः । विश्वस्य स्वर्षः ।

ঈর্বেন্সের্ব্বেন্থেল্বার্ক্তারের । চ্রিন্থের্গনাস্ক্রীন্রের্ন্ন্ ८५ग'याचा ।८५वाम देभा हे ब्रान्म मुर्वे वा । न र मुब मति'र्देर इवराक्षेद्व पर विरवा । इविदावेद विदेशेर पति पर स्ता । र्नाताञ्च तर्ने**न**'तत्नापात् । तिहेना हे**न'ठॅरा ग**जन' जुन' तुने रा ८.केषाप्रटायाच्चराष्ट्रीया । ८.केषात्रीरायाच्चरा । **র**অর্থ**ন্ত্র্ দৃণ্, রেণ্'শ্র্**। । কর্ম রাজ্ব ব্র্ণের প্রক্র ব্র্ণ রাজ্ব ক্র ন্ত্রন্থ বিদ্নেশ্রাপ্টিরার্ট্রারেইর্মন বির্মান ক্টিন্দ্ৰেস্থ্ব। ।বৃদ্ধুন্ইঅইন্দ্ৰেন্ত্ৰস্কুন্বা ।ব্'রুদ্গ্ল ह्युंतर्भग्ना विवयास्त्र्यं स्वयाताश्चेत् हे स्वया । नत्युया हुग्राहेळेद्रभ्राह्में बरा । श्रुप्तिर संप्ति श्रुप्त अवरा 「流力 रा है न 'या क्रें वा धव क्रें स्वा | हिबाया न हैं न ति क्रुं धिवार्ष न | ने म्। चरानुश्राताः संस्थायहर्। । देशान शुक्रायता 刻刻,如上, बर युर हैं। । प्नेद हर कें प्र तिप्र वे तर्य के कें के हिंदी ।

内部·萬丁·萬可利·英可利·田克·漢丁 |

व्यं गुःदा हेपईव्छोत्यन्यापने वेत्रम्वत्यं न्यं स्था व्यः प्रवृष्यं त्या सुष्यं स्थान्यं स्थानं केत्रायात्रे व्यः स्थानं स्थानं स्थानं स्थानं स्थानं स्थानं स्थानं स्थान क्री स्ट्रा स्ट

देन्याकुरान्याचित्रस्मित्। ।श्चित्रस्वान्यः सम्बा ষ্ট্রব্'ক্রীঝাঝার্সাঝার্রাঝানী | শির্ব' দ্রব্'র্ভেল্ব'ট্রিঝান্মান্স্রব্'দ্রি | म्भाप्यश्चित्रह्मेत्। विष्युत्रह्मित्र्वा ने श्रुम् अन्य न्म द्वं त्याय विवाप में या । या नय नम अव व्याप के विवाप । पर-देर-पर-तिहेग्-हेब्-कॅबाग्रीबाह्येत्। । त्रबायगुर-हेः ज्ञानवापतेः [मराचर'गुर'] |के'यान्रीन'खन्य'न्र'सुंयापविद'न्नेया **ने'यम'वियायात्रम्म र्'न्ग्रा । प्रमनेम'यम'त्रेग'हेब'ॐब'ग्रैब'** |कॅक्रनेतु'सुन्'क्रूनक्ष्यंचेत्र'ग्रुन्' |ळेळाहुन'खन्य **५८:इंतरप्रेवर्ग्म्या । ने यम् इंतर्ययम् वर्ग्ना** र्रायात्त्रिय् हेर् इंग्रिय्येय्येय्। विष्यः विष्यः स्त्रायः देश्यः |चैन्यः हन्यायुन्यः न्रः स्थायः विदः न्र्या विन् छेन् श्रम्यायदे विन छन् यन्। |संव्यायम् न न छितायविन न्म्या विष्तुन्यम्भयन्यन्यत्। ।वर्न्न्यप्तिहेग् ब्रियः स्वार्धिकार्थ्यः । विद्यायाः स्वार्थः स्वार्धः स्वार्धः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वार्थः स्वार्यः स्वार्थः स्वर्थः स्वार्थः स्वार्थः स्वर्थः स्वर्यः स्

स्तिन्यं स्थान् विश्वस्ति । व

मरावियायां मार्नि में भी हिंदी मार्मित में ॲंन्प्तर्नेन्'न्न्य'न्न्'र्स्ना । तिम्न्यन्'र्स्यात्र्र्य्त्रत्न्'ह्रंत्र्जुन्' महन्द्रवात्त्रात्त्रात्यार्भेयत्। |र्भेयात्त्रवादात्रेयवात्राक्ष्णेयापात्रस्य। | अनु रुष्यान्यम् १ प्रियं परिष्मुण्या । **एव** प्रेरेन्स् अर्थेन्स् अर्थेन्स् अर्थेन्स् अर्थेन्स् अर्थेन्स् अर्थेन् परा जिस्तावेन भ्रें याया प्रेंच पर मुन्न । भ्रें के राम्स देश वा ग्रः भरः पर्ने । । तरः ग्रेगः सुरः पङ्गः पः देशः ग्रुनः द्रग सन्त्रभ्व । देशवाद्यात्रात्या ह्राया व्याप्त । विद्याया विद्याया विद्याया विद्याया । विद्याया विद्याया । विद्यायाया । विद्याया । बर्ळर में ब्राया अपुरा नवा तरी त्यारे वा त्युर की बात श्रुता तरे नवा ने वा राज्या न् में रापर त्रुवा न् में न्यापायया वाष्ट्र त्रा हिन त्रुवा हु न्यर हु 'नते'ळॅन' ए' अन' रु' चुन' नते'ळे| नशकुन' ए' नन' न्यें द'र्श्वेन' गृहेश र्मा तर्रा द्वारा स्टिश्च मार्थ वर्षे वर्षा वर्षे देश हो । इत्या राग्याराम्यक्यानुपाया ह्यायायळ्याकीयाने। येवयाकवा ग्रॅं र् क्वुं यर सं प्रकृर ताप्रकुरापि र तुराव वर्षे व्यान वर्षे त्या न्या विवामिकाग्रुम्। स्वाद्यामाकेवामाविवाकार्यम्याप्तम् सा विम्। ८५२ विश्वे प्रदेश्मा स्विष्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व <u>ञ्चन्द्रसञ्जाक्षेत्रपुर्वाचेन्यदेशम्यस्य।</u> हे'यर्द्वन्धेशञ्चद्राह्मप्यम्

र्में प्रक्षियं विद्युष्यं या यहं प्रवादियं के स्वाद्या के स्वाद्या के स्वाद्या विद्युप्त स्वाद्या विद्युप्त स्वाद्य स्वाद स्व क्षे<u>न: इ</u>.क्रव:प्रंश्चे:पञ्चरंत्रां प्रंति:प्रंत्रः व कां अ गुरः तर्ने: न शुर्द्र व श्री | 31 জী'অ'ন বিশ্বনিষ্ঠান ভব' ক্রমা । বশ্বনি নিমানামশ ভূঁলা **५८।** ।यार्च'यार्चेना'ठव'श्रेर'रेहे। ।यत्रारेर्झेर्यार्थिशक्तीः র্মিন্দ্রামা বিদ্দানমারী করা করা ক্রী পার্মান্ থে বা বা মা रेळेप्रमः अर्वेदेश्वॅमः शुन्यं य। । जुन रेप्रन प्यायः अर्थे दिने सुन्यं य। क्रेस्यक्षिवयन्धेनःखन्यया । ग्रान्त्रयानययश्चरानदेशस्त्रात युग्राया । वैग्नेरिकेश्वेर हेरी बेर् खुग्राया । केर्द्य पश्चित्रय इंटबारा देगा है : शुग 'या । के ते छे द मेगारा दे चेंग या या । 121. भैक्षार्श्वेन् तर्भन् प्रकान हुन युन्याया । न्यानीवा द्ववा खुंबा खुन्या *ষ্ট্রা*-বে'ম'মা <u>ভিব</u>'স'র্ম'র্ম্ব মমিক্ট্র'গুবার'মা ভি'মনট্রন'ই্মা' তব্'ক্টাইামান্তব্বমা | শ্ভী'আমান্তব্বী ইব্তামান্তব্বী । শ্ভী'নহ' बर्धर व र रे दिवाया । भेग र्धेन दब्ध र दिवा सूर र र दिवा । रशकुर राष्ट्र केशिवाओ प्रवाला । प्रवाश है स्वारी है र নশ্বংইৰ'ৰ্মন্ত্ৰ বিই'ৰ'্ইণ্ট্ৰ'্ক'ৰ্ম্ইন্ ব্যাইন্ বি वैदाद् के के के ताम क्रिया विद्यापा हुन सम्बद्ध राया स्वाक्ष स्वाक्ष स्वाक्ष स्वाक्ष स्वाक्ष स्वाक्ष स्वाक्ष स्व ୢୖୢୠ୕୳୶୳<u>୵</u>୵ୖ୵୶୵ୣୠ୵ୢୠ୳ୖ୵୕୳ଵୖୄ୵୶ଵୄୠୄ୶ୖୄ୵ୣୠ୶୕ଌ୕୳୶୵ୖ୴୷ୡ୷୴୴

विन्। श्रायम्बर्धः । विन्। श्रायम्बर्धः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्यानः स्थानः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान्यः स्थान

ঐ'অ'বের্নিশ্ববি'রীঝয়'ভব্'রঝঝ| |ঝয়'বর্'গ্রীয়'৸য়ৢীয়য়' पराशुक्पावन । दया हैंगानी सुवायाय पार्सिन्। । पराया न हवा छै। र्ने र पु: त कें र भारा है। | भेर च बे र ग्री बे या है ही र रे र द। **૱ૄૈ**ગૄ'સ્ત્ર'ત્ય'ત્ર & 'વાંબેંન સુસાગ્રેન્| | દેન્'ત્રન'ત્રજ્ઞસ્'વૅફેર'ત્ય'&ું' न्द्रातान्नेन्त्रा | द्रिंदर्गतिः कुन्दै (सक्षात्र स्ट्री । द्रिनी षे वेशक्रिक्षेत्रायात्रहेंताने न्द्रा । विष्ट्रेग रुद्रातात्रके पर्पर क्रुया वेत्। । रम्द्रित्राह्यम् वृद्धाराष्ट्री वाम्यायाया विषया । अत्रित्राही में प्रम्या रे'बर्च| विद्वास्त्राक्ची हेद्राया वित्रे ते विद्वारी हेर्ने त्वा ष्राह्म । प्रमानिष्यव्यायाय विष्युपारव्या न्देन्य। श्रुःस्युराग्रीन्द्रःह्याय। ।वन्द्रः वर्देःहरन ननवा |सॅन्न्'ब्रुं'नदेवेषयम्बन्ह्र्या ।श्चुं'बदे'विन्'हुस तहेन'भगके। तिकें र्वेन् की हेन संस्नाय होन् रेन्द्रा विस्नेन कव'लात क्रे.पार्सर'श्रुडा बेर्। । ररारेररबाकुर'ग्वेराला ही ग्रहाला व्यवेग्या । द्विरावदेश्चायक्षवितारात्राच्या । देगापदेश्वेतः कुरः मुलरेर्द्रवा । तह्नुत्रप्तरे दः त्यम्येरः तम्रहे। াশ্রীহাঐ্ব' क्री ब्रेट्र द्र्य दें तेर्द्र | विष्युग् उद्याय दक्के प्यंप्र क्रुय बेर्। रन्देर्राह्न पृत्रेयायष्ठे गन्याया नेग्या । तिप्रेग्रह्म वर्षाकुरेदेतुः वर'यरवाराके| क्वियंवराक्चित्राह्मराष्ट्रिर'नेन्। तमुन्ने मुन्दे मुन्दे स्थाय है। विराधि दे के वार्य है ।बी য়ৄ৾ঀৢ৾৽ঽ৾ঀ৾৽য়৻ড়ড়ৢ৾৽য়৾ড়ৼ৾ৠয়৻য়৾ঀৢ৾৾৽য়৾৾৻ৼয়৾ৼয়৾ৼয়ড়ঢ়৾৽ঀৢ৾৾ঀয়৻য়৻ৠৢ৾৽ঀঢ়য়৻ लाननेनल। । हेन् न्य द् क्रि सू र्यानाम र स के। ার্ন্ন ব্যব্দ্র |रेवराह्यावीवपरायाह्यरायदाह्य **ট্রিখ্যান্ত্রট্র**দ'র্মদা। वैवा'रुव'स'तक्के'प'र्सर'क्रुस'बेर्। । ८८'रे'रबाक्कर'वादेव'याद्वी'वादवा त्यंग्नेग्रा। वेशंग्रुत्रंव्यंत्रंद्रंत्रंत्रंत्रंत्रंत्रंत्रं हैंद्रंप्या हित् त्र्याश्चिष्विश्चेशश्चिवे स्था केरायमा देवा स्था है। तर्बुव्'यातः <u>श्रेष्यातः श्रेष्यात् त्र</u>्यातः स्त्रियः त्रितः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः स्त्रियः मसन्दर्भिन हे ब्रह्मस्य कुन् दुर्भित्य मा शुर्मि व्याय स्था मिला स्था स्था स न्द्रात्र हुँ देशे । दक्के हुँ देशेन शक्न शवर अरे क्रें र है।

あち、近代・茶丁

म्बन्य म्झें विवादे देन्। यद्ध देश देश विवाद स्था । वित्र के प्रति प्रति देने देन देन विवाद स्था के वित्र स्था के वित्य स्था के वित्र स्था के वित्र स्था के वित्र स्था के वित्र स्था के

हे मु अ इयस्य या प्रविताय । विवास स्वाप नुवा हु तः वि परानेद्रानेद्रान्त्रेद्राह्य । सिंद्राधिन्द्रवाहान्नेहा । तिने संदिन्सवाहिता परारे केंद्रया । ष्टिन् पराया पर्वा निवासी । यो असा তব্উন্অ'ঝ'৫ঐ'ঘ্ন'৫ব্বা ।প্'ব্ন'দ্ৰুণ'ঝ'হ্ৰ'৫ব্ব্'ঘ্ৰা ।গ্ৰহ্ৰ गुरुन्'न्दुग्रायेद'नेद'हु'मून्। । असन्द'येन्ग्रायन्न्दुक्षेत्र।। **ए**शन्वाञ्चन्दिन्न् अतानसङ्खे । वर्गमिक्ष्यं व्याप्त्राच्या । वर व्यवस्थित्रमञ्जून्त्रे | निःकून्त्रेन्द्रिः हेत्रम्बन्यस्य पत्यस्य । ह्र'तह्रवाख्याक्षेचार्मेन्'रा'वा । व्रिन्'रह्रोस्ड् हेन्'व्नन्नवायां वेत्। ह्य-दिवारीयरामु:श्रेन्द्रस्य। १८५े यन्द्रां संगयान्द्रने परान्यता । *ब्रिकाचा शुरूका क्राचे* पर्श्वव <mark>यो अ</mark>स्तर्पार स्कृति हिन्दे पर्श्वव स्थाय हुआपर न्रक्षां व्याक्षं त्रेते न्या ख्राप्त या क्षा ঘৰ্ষায়থা ह्यत्रभू। ने द्वाराकी वर्ष वरासन् येन ति है गरा सुनि निर्मान दे। ॉ॰ज्'रे'नेर'प्रया गुडेज्'वैब्'ब्'र्सर्ड्'दर्नेदे'व्द्र्'द्र्रद्र्यं नेर्द्रेतुं 'पश्रगुव'तहेवारावरार्चेरार्चर्। यर्भ्यून'वर्गके'त्सुतासूक्रवार यङ्गर्गुन्-ञ्चन्वत्र्याङ्गेन्-प्रान्नः। हि'तन्ने द्रवर्ष्यन्ने-ने-नि-ने-द्रवर्ष त्रत्वराष्ट्रीयाचेरपया हेपर्वत्रुष्टियाह्यप्रदेशेन्द्रित्र्व

वगुरः ८दै वयु द्यारा ।

हुँ नृतिष्यान न केंद्र न न केंक्षिया । हिन्यय न दात हे पी न यण् <u> ५६५-२। । त्रार्वस्थिण्यायस्याश्चन । सञ्चरश्चित्रः ह्यास्यस</u> प्रपाया । तर्ने धैन्यम् न्स्र ज्ञुन्नु के। । न्ये म्याय स्ट ज्ञुन ইগ্ৰাপ্ত দেই ক্লেকা १ष्ट्रिं ५ १ में ब्रायकेंग म युकाय हुन या तकेंया वा ग्रस्याच्या अन्या । भ्रम्या । भ्रम्या । भ्रम्या । भ्रम्या । बर्धे देशचरपार्वेदायाधेत्। [८र्जे लातळे वाञ्चरवायात्। [उत् इत'मश्र द्वु सर्, भेव। । श्रे प्रोहेग'रा श्रें स्तु सव। । यदय कुरायक्षरायाज्यसम्भेता । ५ वे न न स्वास्त्र स्वास्त्र । अवस्य ग्नवश्रम्यार्मेप्रभेदा । क्रेंग्रुख्यद्युग्राप्रभेद्रकादा । देग् ८ हें व मुताया र्ह्न पा धिव। । प्रयाय उत्स्थाया थे व । व । 12 र्बेल' तहबु'या तकयापा**धे**व। । व्यापान्याकेन' शुराह्याद। 154 वियागगुरयाराय। स्ट्रिस्यया <u>५५'स्राष्ट्रस्यमें 'तर्स्यरापायमें तार्यापायमें प्रत्यापायमें प्रत्यापायमें त्राप्त</u> पश्चित्। पश्च क्रेंश्यव्याप्तरः प्रत्यः विस्याप्तः विस्यः विस्यः विस्यः विस्यः विस्यः विस्यः विस्यः विस्यः विस इययायाञ्चनवारम् येयवानश्चेत्रीत्रित्रान्ता भयाद्वारव्यानी ह्या ্ শুর্'গ্রীঝার্ম্রীণ'ঞ্চীন'ন্ন'ন্ম'নতনে'ন্ধেনে'র্মার্মন'র্ম'। *ने व श हे : पर्दु व ग्रै बा न्या*रहर पाया अन्त होने । या हे : हे तु विवा ह्यू ना ग्रु न का **२५वालाहर्षेत्रवाह्याले स्ट्रिंड्र्स्स्याले स्ट्र्स्स्याले स्ट्रिंड्र्स्स्याले स्ट्र्स्स्याले स्ट्रिंड्र्स्स्याले स्ट्रिंड्र्स्स्स्याले स्ट्रिंड्** अन्म हे पर्द्व प्री महिन्य सम्मार प्राप्त का मिन्न हे तु विमाप सुर राम प्राप्त ता

या भयाश्वास्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम्यस्त्रम्यस्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त्रम् स्वास्त

देश्यवाक्ष्रंतर्देन्'तुर्श्चेत्रंक्ष्यवा ।त्रहेन्'क्ष्यन्त्रतेशवार्देन्'ग्याताः हत्याः ।ग्रुन्'नेत्रेशि'क्ष्रन्ग्चेशक्ष्याः ।तकेन्'न्ड्'वर्त्न् पश्चर्यां व्याप्ति त्यां व्याप्ति त्यापति त्यां व्याप्ति त्यां व्यापति व्यापति त्यापति व्यापति व्

भ्रम् मार्थित स्थानिया विषया विषया

वे 'नेश' के व्'र्येते' के 'वेष' ख्रुर| | अघत' ५ गुरुके ५ 'पर' क्र व्'र्' पर्डण | अव्यापावित्'क्रिक्त'त्वीयात्। | पत्रे'पाकेव्याँते'ख्र'प्रत्यम्य। ग्नब्बारग्न्यपरिभवनानुग्वन्। । व्दन्वेन्पविभे स्थानु व्रत्य । १५ अर्रे मुर्चम अर्थ । १८५ छेन स्थित दिन १५ श्चित्रा । व्यवस्त्रेशन्त्रेशस्य । वे ने संस्था करानु पर्मा । तर्मेन् प्रमुद्दानि से अविदास्य । विष्येन् पत्र'डेरे'कर'परंग्याया | क्रु'याह्य'र्ग'र्ने'रांग | क्रेन्य'र्क्स न्दीन्यने राग । वर्गायाई ने राग । र याई हे ने राग। करत्वरक्षे । न्रंसंह्रवासुराव्यवायात्व । विवेशरायें न्य सुराह्में वार्यार्या वार्याः व्याप्तात्रीयाः सुरायाः स्त्रा विक्रा हर्ने वेर्पि हे स्वर्धित । अस्य स्वर्प कर्ति हेर्प सहर हे अही । भ्रम्याचेत्रत्वुत्व्यावन्धुत्र्न्ष्वव्यवेत्। । यत्त्विष्त्रवृत्त्वदेत्येः मन्द्रा । ब्रिन्तिह्र्यान्यान्यते करास्त्रिन्ते । क्रियानेन्द्रान्ति चरी⊏याव्यादी |गुशुअ'स्व'स्थाययम्याक्यायक्रीः |श्राच्या न्यास्य प्रदेश हिन्दार्भे । । न्यास्य प्रत्य प्रत्य वा । <u>र्गुलात्विरःक्षेःस्ववायवेश्यारःगुर्या</u> । वर्ष्ठव्यम् वर्षे श्रेन्यारंति । वस्यार्थेन्यन्त्रमुन्यान्यायुन्। । तन्यावनः गुन्कीतर्न्यमञ्जय। ।न्यहेर्यम्ड्यमेकरःक्वेन्यखा । अन् च बुन् न् व्यवे स्वर्षेत् न् । । सन् ने त्र स्वर्षात् व्यने ।

न्यार्थन्यान्यम् स्वाधनायते स्रूर्

व्यक्तः मुन्तः व्यक्तः व

 ळॅंगराडुग'रर'रार'र्ग'रा'या | ४'क्रॅंबराग्री हुॅर'रा'बे'नेर'रय। | तुराळॅन्'न्नात्रेयान'विषाकुन्नुके । नन्'ह्रेन्'वे व्यराकुन्हेर रा'ल। । कुन्'च बुन्'कु'ग्नवरा'रग'वी' नेर'रव। । न्यन'य दी र्न्द्रियाना विषा कुर्दु के। । कूँ न कि प्राचिता के प्राचिता के कि प्राचिता के कि प्राचिता के कि प्राचिता के कि रायराक्षी देशपा शे नेरप्या | यस हग्या प्रात्तियाप विगाकुर्पु के। । तर्त्रेयरा सत् राज्य स्थिता वा । के निरुप ने यह राज्य स्था बेरप्रवा भ्राप्तिप्रप्रवेशपाविषाकुर्तुको । अप्रियेष हे र्राया विषाकुर्तु के १८ १५ व के राया । विर् ्रव्यक्तिः स्वाचा । विद्यान्य । विद्यान्य स्वाचान्य स्वाचान्य स्वाचान्य स्वाचान्य स्वाचान्य स्वाचान्य स्वाचान्य स्वाचीन्य स्वाचान्य মেশরিবশহাণ্ডু'নবাণ উদ্'দ'মিব। | বর্ষাস্ত্র'নর্স্নীরবাদকানি**ব** राभेद। ब्रिंदायस्यवरादादर्द्दायभेदा । सर्देद्रासु निहे म्रेन्'य'भेवा । तत्रकातु'वेशवाह्यु'वर्नेन्'य'भेव। । मश्रवाहरू' न्दिन् मृहं न्याराधिव। विश्वा शुर्याराया गुद्र गुरा श्री तर्ने गुरा क्रन्यर बुर हैं। । यन हे पर्द म बुरार राखन प्राय के राखेन द राखेन व्यत्रिः न्याः न्ये व्यय् ह्यान्यः व्यव्ययः सुरः स्रीः यहारवः स्रीः ।

देग्'तहेंद्र'तुर्श्चेंप'ढ्रंर'ठ्रंद्र'त्र' । क्रिंश'व्ययश्च्यंतिद्र'व्र'तिरें र्ग'र्न्नया । क्ष्यं'तृद्र्ययशस्त्र'यश्चेत्र'र्नया । तृत्र'ग्रुखं यत्याञ्चराञ्चयते । क्ष्याश्च'रत्र'तृष्टित्र'केव्य'र्न्नया । श्चिंत्यादेव्यं वैवाह्यं, 'र्यारवाद्धर'रा । वृत्यंद्रव्यं गृह्यस्तिः गृह्यव्यर्गं, दे । हुनाक्षात्रह्मात्राच्यात्राञ्चात्राच्य न्मेंबा वित्यनेवार्स्न्रप्त्यान्यास्त्रप्ता वित्यतिवर् ষ্ট্র্ব'রুঝ'হুম'গ্রী | অইব'গ্রুব'রেইবি'মেম'স্কুম'ম'নী | ব্রুম'স্কু' मन्द्रिक्ष्यंदर्भवा । श्रुंत्यंदेशं मेशं द्वंद्र्यंद्रया । रेयकार्यात्युः न् गुः त्युतिः इन्हेंगः तरी । क्विकायुरः क्वेः येन् प्विस [इब्रायोपेटबायेन्'पेन्'केब्रान्म्या | क्वांत्रानेब्राक्नुन्' न्यन्यक्रत्य। विन्यं स्यानुग्यक्षतिः क्रम्यति। विन् मग से भेरा हैं ग दा न विद्या विद्या विद्या विद्या न विद्य त्रांतारेकानेकार्ञुन्।न्यानकार्ञुन्। । तन्नि।वयकार्भुःभेः यने।पापन। । व्यञ्च नुवानवितित्व व्यन्भिगानवित्। । तिवित्तानने वेत्नु वेत् केवा न्बेबा । ज्ञांसन्बन्बल्द्नान्यन्बल्दाः । । सरत्बन्धन ইৰাস্থ্যমাহ্যমাহন্'বী | বি'দ্বা'ব্যাম্মিব'র্মুবা'ন্ন'ন্ম্ৰা | दयम'कु'न्र'दे'र्श्वाकु'यदिवा । कें'दर्ने'य्र-'येन'देन'केवान् विवा । व्याप्तरामेश्रार्श्वन्यत्रार्श्वस्य। । निराधन्यत्रम्यव्यार्थन्यः तक्षे | मुदेग्'गुन्'केर्स्न्'तके' नक्षत्र| | तके'वेन्'क्रुन्यकेत् केश'न् ग्रेंग | क्रिंग'ने स'नेश'र्ह्न'न्द्रा'न स'क्रुन'रा| | वेश'ग्रुन्स ष्ट्राच्य इयश्यीश्यानश्चर्याया कर्त्राच्या वयाता श्चर्यत्र देव प्राप्ता स्थापति । स्थापति स्थापति । स्थापति स् नर्द्धन् ग्रीका ग्रुम् ह्वाम होन् ग्रीप्यस्य ग्रायम् वर्षः वर्षाः विद्याः स्वादाः स ग्वर्द्वरागुराष्ट्रयतुत्रार्वराचित्रतात्। वहेरारी-न्रापुः हुग्ला मुद्दर्शन्त्र्यात्र्यं न्यात्वे न्यात्

चला | द्रिन्त्वला क्रिंग्चला क्रिंग्चला व्राप्त क्रिंग्चला | क्रिंग्चला क्रिंग्चला क्रिंग्चला क्रिंग्चला व्राप्त क्रिंग्चला | क्रिंग्चला व्राप्त क्रिंग्चला | क्रिंग्वला | क्रिंग्वला | क्रिंग्वला | क्रिंग्चला | क

प्राचित् प्रवास्त्र विश्व विष

हैट.ब्यायधीर.पट्नी शिट्यायूं। ।

हेट.ब्यायधीर.पट्नी शिट्यायूं। ।

हेट.ब्यायधीर.पट्नी शिट्यायूं। ।

हेट.ब्यायधीर.पट्नी शिट्यायूं। ।

हें चर्यायुंचेंं व्याप्त क्षेत्र हें चर्या क्षेत्र हें चर्या हैं चर्या हैं। ।

हें चर्या हैं चर्या हैं

वेवयायया गृवव 'पदे रामका जुला वे न । यहा स नम् हुमायव **छुराप बेरा** । सुपदार्गेद अर्छन न सुद्याप राज ने द पा बेरा। व्ययान्ते सूर्यं वेश्वाययान्य न्या थेत्। विद्यत्याया हे यर हे त बेर्। [रे'तर्जे'प'ॲरयांक्रिक्षेर्यराष्ट्र। |स'र्वराग्रवस्यांवस्या हु'पॅंट्य| |देश'वेशकुट्'श्रेक्षेश्य'धिव| |हॅग्राक्षक्'रट्'श्रहा क्रेन्'र्च'व। ।जुन्'राने'ग्नव्ययाम्य मेनवायाध्येव। ।नम्पीया शेवराचन'ळ्ट'द्रा । भेर्'छेराट्र्र'ह्रन्रारात्र्रतातात्र्रह्रा B্রমন্যাস্কুন্'নাস্ট্রমার্ড'ব্। |মিরমাতব্'ফ্ট্রনাইমান্রব্'যোমির্| व्यायम्याकुराशुःवर्षम् स्त्रा । वित्रक्षम्यम्मम् वीवायह्रणःमध्या हुन्चेनवाकुः छेन्। मृन्दरम्दर्ग्य । मृन्दर्गं प्रवायवावावाक्रं श्चिम् वर्षायने त्राच्या । स्य म्यान्यने व्यविष्टान्यने व *बिराम् स्ट्रान्याम् वस*र्झे श्रेष्ट्री वर्तुः होनायान्ता नानेस यगुरः ५२ ग्रह्म रूप्या ।

बतिःह्यः दुः क्रेंब्राह्यः ह्या । व्हें व हा व हिंवा व व हिंवा हिंवा है व हिंवा है व है व है व इवाबाब्रुनार्वान्यगान्ध्रात्व्युग । तसुनार्वात्रामहेनात्या | महं र देशकी महंग्वाद हिंग्। अद्भारत हिंग्। <u> २ इत्यं र २ ज्ञ</u> । जेत्राबेन्'कु' नवस्य मृत्र' क्रें सत्य हु। । ज्ञें मृत्र र्गाराष्ट्रपाक्तीक्षेत्रपुर्वेत्रपुर्वेत्रपुर्वे । पि.कर्मीवियाक्षें यानुबर्वेष । <u>রব'ব'ঊ'র্বাঝস্টি'বারঝন্ত্রি</u>। ।ৡব'নস্তুন্'স্ট্রারনঝন্মর্স্রমন্ত্র | বিশ্বের্ন্-স্টার্স্ক্রনাশ্*র নভা*র্ন্-স্কর্ন্ন ব্রাক্রনানির নাম **S**11 5'तहण | निवायते रेला रून 'तुका छ। । तर्जे तर्ने न छ राया द्वा ଟି୩ |<u>ମ</u>୍ବ୍ୟୁପ୍ରମ୍ୟ ନ୍ୟାନ୍ୟ ନ୍ୟାନ୍ୟ ନ୍ୟାନ୍ୟ ଅଧ୍ୟ ଅଧିକ । यम् त्र्म्य । द्रिग क्षु र ग्रीश द्रिग र तरि हुग र त्र्य क्षेत्र । । ब्रें द त्यस्त्रीक्षत्रहेलानदेरसुर्श्वनःत। ।मःधिक्षत्रयः क्रे.ननः**नेग** ।सूनः श्चैर'कॅराञ्चरीकॅर्गवारायरी । यु:धैवववायाधेनवायर'र्मेन । देवा ग्रुट्यापय। रबाह्यरापदेश्वर्यास्याः व्याप्तयाः विराविरावः न्द्यत्रत्रिस्त्राया ।

न्यार स्यान्तर त्या विकास वि

माञ्चर-पानेषान्-उत्तर्ग । सहस्य दे श्रुपः स्वर्णः स्वर्णः श्रुपः स्वर्णः स्वर

エヤモニーコランコローカーガーガース

ह्रम्यद्व्यक्षास्यस्यप्ने कृत्स्यम्ब्रस्यः व्याप्त्व्यः स्वयः स्

म्बर्मास्ययाहे पर्वत्यी दुर्नि, पर्यापाय **ভ্র**েঘর'র্ড্র-'র্ড'রর্জা त्रावयाविषाषीळी हे'नई व'यान'श्र वाग्री हुन' हु' व' द्वा द्वा वा ना हे वा ロッススのN'5'の下'10'NA रशकुर'रायापश्चेन'गगुर'पनर'री हे नर्द्ध व त्या न क्षेत्र न ता प्रस्तु स्वतः सन् त्या स्वर्धः न ति स्वे। **कुर्**पते'त्रुषायान् में रचाया प्रायमित चंद्राप्ते रचा ये प्रायमित चंद्राप्ते प्रायमित चंद्राप्ते या चीया नर्ड्_{र'स'}दर्'नश्युप्पन्नर'न'द्युर्'ॲर्'नशयश् 単口後ず遊気で हे पर्ववासन् यने प्रतामक्षेत्रप्र गुरापन् मार्थे मुनासन्य 5'ইব'দ। र्देश्रेय'न्चेंब्'ब्रॅन'क्रुंनब्रुंब'चगुर्रकींचेंग्'वबारबाय'इबबा বাঝা सतर र्रेष्यायात्रिर विषा ग्रह्म य प्राप्त या या व्याप्त व्यापता ८२:अवानाम्बद्धार्थः व्याप्तः व पःरित्वाद्यां विवास्त्रः श्रुरःगुः तः वादाः स्रादाः स्रादा इयश्रत्मारम् रयाद्धरापाररानीनिवयगद्धनाः दुर्देवाने। हुन्यानसम्भा कृ सान्दे इयमा ग्रीम ग्रेन् खन्या स्थान स्थान स्या *ॼॖॹॱढ़ॖ*ॱतुॱत्देते'चॱॿॖॖढ़ऀॱतुॱवृॱव्रकेव्। कुदःद्वाके दें दुदः तक्केद्राचगु रात्रवृः**ः** रण्गुवर्ह्रेष्यप्रप्र्त्राव्यव्यक्षित्राक्षेत्राक्षेत्राक्षेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राचेत्राच ने। न्'नब्न्'ख्व'देन'ब्'ब्र'बर्दे'व्नक्ष'क्रें गृ'कुवे'दर्शे व्यवाददेव'तु त्रोंपरत्तुग्पर्या वु'प'त्रवत्रानु'त्रों'क्रुअव्'अरप्वेद्रयद्वा <u> भूब्रायम् इत्यर्थ्यान्यायम् भूष्यात्रम्यायम्</u> <u> রঞ্জ্বের্ণ্ণেরর। কর্মন্তর্ণের্গুল্বার্ন্নরাম। দেই দ্রাক্র</u>

सर्'रर'र्द्रानु'र्क्षश्रमु'यद्द्रानु'युर'गुर'। ग्वतःद्ररम्युःस्र'र्ह्याः ह्र्याः ह्र्याः व्याप्ताः व्यापताः व्यापत्यः व्यापत्यः व्यापत्यः व्यापत्यः व्यापत्यः व्यापत्यः व्यापत्यः व्यापत

तुः वृंद्र'न्नः ग्रॅव्'न्नः रशः द्वनः य। । यः ज्वंशेयारशयः रशः । रेशप्रग्राहमानेन्द्रमानेन्द्रमान् । वृत्यानेन्द्रमानेन्द्रमाने म्हे अगर्देन् म्बर्यन् तकरमदे मन्बर्धां म्हा । बिन्य स्पर्नेन्ने ग्वरात्रवेत्। ।गुरुणुरादरेख्राधेत्वर्ग्रात्रात्। ।साम्ब **के**'त'रक्षप'रुष। |नेक्ष'त्रपत'त्र:बेट्-'त्रं'बेट-'क्स्र्रंथ। |त्र:बेट्-'त्र' विनः क्रिंवा चं त्र । । प्रज्ञतः प्रतृनः रूषे वार्षा देशे विवास देशे विवास देशे विवास देशे । ष्ट्रा बिरायार्ष्यरानेगुन्यानेन्। ।गुन्यग्रम्यरीक्रम् न्गतःपाय। । मान्यावायायायायाया । देवारगतायावीनः त्र्वेलिन् झ्रेंबा । त्र्रेलिन् त्र्वेलिन् झ्रेंबर् व्या । त्र्रेलिन् झ्रेंबर् चर्नेश्रप्तिन्वरारम्थित्। शिर्म्यर्भित्ते नव्यत्यवेत्। गुव्युप्रस्ति द्रार्थेन् व्यून्यायाया । या मृव्येयान्यान्या । नेश्वत्यत्यातः ह्युन् केन् য়ৢৄ৾৾ঀ৾৻৸য়ড়য়৻ঀৢঀ৾৻ঀৣ৾য়৾৸৻৸ঽ৻৸ঀয়য়ৼয়<mark>৻য়৻</mark>৸৾ঀ৸ড়ৼ৻ঢ়৻য়৾য়৻ संबेत्। ।गुब्गुन्पर्नेक्त्रस्त्व्त्व्त्त्व्तामा ।तुःरबाद्धन् पर-ने·हेर-वेश्वश्रांप्रत्य। विश्वभूश्रपर-प्रत्यतार्श्वेः कः भूत। 1 ब्रियाम् शुरुषां स्याद्धराधयात् नुसर्धे ग्रायात्र्यां नदे नु । नहीं बर्धव्यन्तरावक्षवत्तर्भुत्यमत्रेववरायत्व्यगुरतन्त्रेषुत्राया ।

व्या | न्यायायायाद्वेद्ध्याययं | व्रित्राय्यायायाद्वेद्ध्याययं | व्रित्राय्यायायाद्वेद्ध्याययं | व्रित्राय्यायाय्वेद्ध्याययं | व्रित्राय्यायाय्वेद्ध्याययं | व्रित्राय्यायाय्वेद्धयाययं | व्रित्राय्यायाय्वेद्धयाययं | व्रित्राय्यायाय्वेद्धयाययं | व्रित्राययं व्रित्राययं | व्रित्राययं व्याययं व्याययं

नेशिट्यःस् । नेशिट्यःस्य । स्ट्रान्यःस्य । स्ट्रियःस्य । स्ट्रान्यःस्य । विषयः नेशिट्यःस्य । प्रतित्यःस्य । स्ट्रियःस्य । स्ट्रियःस्य । विषयः स्याः क्षेत्रःस्य । प्रतित्यःस्य । स्ट्रियःस्य । स्ट्रियःस्य । विषयः स्याः क्षेत्रःस्य । । यहःस्य । । यहःस्य । । यहःस्य य

न्द्राकृत्रित्नोर्नार्म्ह्त्। द्रिर्र्ड्रित् ब्रन्य। |पक्र'ल'र्रन्'र्पनयापान। |ब्रथ्र'रत्नवयाग्रीवाया स्रात्यम् व्याकृत् वित्या विद्यास्त्री प्रमुन्। <u> ५ देशम् अदे प्रमृद्ध । विष्य मूर् छैश्रम् प्राप्त म्</u> श्यमरस्यत्रात्राच्यायार्षेत् वित्य। । यक्कार्यस्यम् रागस्याप्य। । ম্বরের বর্ষা শ্রীকারা ব্রাধারার বিশ্বরাধারী বিশ্বরাধার हिन्या ।न्'नेसम्भयते'चग्रादासम्बद्धाः । वर्ष्ट्रभूनमुः व स्वर् श्चां वित्। विक्रमार्या म्यान्य स्वर्थन्य वित्र । विक्रमाय स्वर्भन्य स्वर्थन्य । सम्तः प्रभूतः प्रमान्ति । द्वारात्र सुवरा ग्रीयाया देवायाया । प्रवेतः क्षेत्र स्वतः वितः वर्षेत्र द्वीतः त्वत्व। । १८ देशस्य वरि प्राप्तः त्वा । गुरः मर्नो रथङ्ग इरम् ग्रम् विद्रा । जुन्म विवयस्य सम्बर्भ सित्र ब्रिन्य| |पकुष्पकुष्पप्रयानभेवयायाय| |प्रयाह्नेप्रविपय मुस्यादे प्रायम १ व्ययम् प्रायम् । । विश्वयम् । । विश्वयम् प्रायम् । । विश्वयम् प्रायम् । । विश्वयम् प्रायम् । । विश्वयम् । विश्वय

स'ञ्च'राहे'तर्दुव'ञ्चव'ग्राव'र्रा'। ।ग्रयाष्ट्रेंत्'क्रीरोरानेर्गर श्रान्। विन्यकून्यन्यायकात्वुः द्वाः विद्यान्याये वयां नग्रःगदरः । वगः इर् छे छ छल कें र घें र। वहार सर बर्च बर्च की पहिन्तु। । गर्ने गृहिन कि वारों कु बर्दि के विदा रशकुर श्रेष्ट्र प्रवासार्ग्। | ५ देश त्रां समाना प्रवास निवास वनवान्त्रीयक्षेत्रम् नुः रेन्य्याः । वनवाष्ट्रर्षेत्रात्रात्रीयस् उ। । म् तर्द्वातेन्वार्ये कुरुत्वाये । त्राकुर्त्वार्येन्। । न्देशञ्च'यराचन्द्रम्त् । | यक्टन्युवाक्येष्ठ व्याप्तिक्येष्ट्रम् ब्रक्क्षंब्रहर्स्स्यायाश्चाः <u>|गरोन्:श्रेग'श्रेगरामें:जुरु:त्राथेन| |</u> रशकुर शेर्स् र 'र् छ शकु' र ज्ञां । र 'रेश हा यश र ग र 'ग द र खा। । ग्रन्तरात्रक्रम् म्राग्यायाम्। जिलाप्ययाम्मरायाकारस्य । প্রকার্কৃথ্যমন্ত্রমানুকারী। । বর্মন্তর্নারী র্ম্বর্ণন্ত্রমান্ত্রা। । न्देशश्चाययायायायाया हेरार्ड्वश्चेया रशकुराराष्ट्रवस्पराङ्ग्वास्यायम्रस्याद्वेत्रक्षेपरानुः व्यास्या

तमग्रिग्रेक्षयगुरः तरे गुरुद्वार्थं।

क्रश्म्र्याच्याच्चर्'राष्ट्रस्यापंत्री रियाखराम् हे ने ग्राप्याप **ॅ**व्हा अिंक् में दे केंग 'दरे में 'चर ग्रेबा व्हिन केंब 'दर्म प्रिन्त' प'अ'क्केश'यर। ।त'तर्नेन'क्केष्ट्रें अ'तु'अ'क्केन्'केन ।निनेन्नेस्रियेते' न्द्राखन्यास्त्रम् । भूनिति। मिद्विरास्त्रम् देवापित स्वार्श्वित्या द्वारा प्राप्त । विश्विष्य विद्वार्श्वेया सहित् हेवा। न्न वार्यात्वा वीत्र क्षेत्रुत्र क्षेत्रे वारात्। विवादवा वीत्रवा केंद्र आहेतः डेन । इंस्वाचन इंदि क्रूं व खन्य के ने सम्मा र्भयः भ्रॅंगर्छन् । नर्भन् व्यवाग्रीः श्रेषाश्चन्य विषयः। । विष्यं र त्र'कृप'न्'अ'द्वेन्'केन | वेद'प'द्र-'द्रांअ'र्येग्'पन्। । ५५'हरा त्राप्त्रव्यं च्या व्यव्यं च्या व्यव्यं व्यव्यं च्या व्यव्यं व्यव्यं च्या व्यव्यं व्यव्यं व्यव्यं व्यव्यं व्यव्यं **छ**न्'ग्रे'यर्द्रक्षियातकन्'हेग । श्चायेन्'यर्द्रक्'तु'यायुर्रायत्। । ऍब्'न्न्ग्'न्ने'बळॅन्'न्न्ब्स'अ'च्चेन्'केन् । न्नोच्चेन्रकेंग्'क्च'क्चे'क्चेन्'क्च'क्चे'क्चेन् धन्। ञ्चित्रेत्त्र्त्त्र्व्यायात्मन्द्रिन् ।सुन्न्याद्धन्यात्त्र्त्तेत्रः र्स्ता । डेकान्य युत्रका गुना वु पा द द में में कार्य ता पत्र ने संयानु प्राथा ते त्रापा स्वाधान स्व वित् 'त्रुक्ष'कु'के'वाहें न्यदे स्वव्द प्रमुख'र्येत्'दे व्यव्द 'गुद्रके 'यय য়ৢৢৢৢৢয়ড়ঽ৻৸য়৸৸৻ঀঽ৸৸য়ড়৸৴৻ঽয়ৣ৾য়৸ঽয়য়ৢয়৻ঀ৸৻৸য়ৢ৸য়৻৸ यय। रशक्राचान्नारकेयाः इ.व्यावेगाव्याः है। वगारगरान्ताः हर्याञ्चन्'त्रक्ष्य्'मञ्चन्'क्षेत्र'मन्ययान्यः । इत्यायान्यः । नि कःयायानः

विवादवादर्वेदायदिळे सवाप्त्वदिवेदा कुरेन कुरेन न्या स्टार्स् ने'ग्'ग्रॅंबा ग्रंच'हुर'ग्रुब'न्र'य'बेन्कुं'अ:रुने'कुन'रु'्नग्रा ॱॠढ़ॱॻॹॖॖॸॱॹॖऀॱवेतुॱय़ॖॺॱॺक़ढ़ॱॺॖॖॸॱॸॖॱॻढ़ॸॺॱढ़ॺॱॾ॓ॱॻड़ॖ॔ढ़ॱॿॖऀॱॸॗॸॱॸॗॱय़ॗऀ*ढ़*ॱ ङ्ग्याल्याल्या हे पर्वन्त्रीहिष्यायायायाल्यात्रा <u> वृंदर्यस्थादरनेवस्यप्ट्टा</u> हेवदुद्धीद्याद्या ५ हिंद्रस् खन्यहे केर प्रम्या बिर्यायया प्रमुख ब्रायर रे रिवेट बाबी स्थापी । र प्राक्ष्य द्वापार चेर प्रत्या । सूर द्विर विर विर विश्व बिदः त्र्या । हम् कर् कथला त्रेयबा वैदः त्र्या । त्युरः वेदः सम्भार् ह्रा हिन्द ह्या । स्मान्य विद समार निर्धा हिन्द हिन् क्ष्यं पं न् ये र प्रत्या प्रते गुरुषा हुर वित्र ही अवि र त्र्ह्या क्षॅंअप्पालव'प्पर'राक्षेत्रज्ञेत्। |त्अकॅबाक्केत्रप्तिरप्तियावण'व्यां | मह्त्यः लुग्यः तुर्मायः वेद्यः वेद्यः विद्यः त्र्ज्ञ विविधेन्ययन्त्र्र्ज्ञन्विन्यत्र्ज्ञ । श्चन्यविव्यत्र्र्ज्ञन्विन्यत्र्ज्ञाः त्युर्। । र्याक्रवार्याक्षेत्रार्येन्यत्वत्यः । इयार्वाः वर नित्रीयविद्यम् । गुर्भे श्चि क्यायात नेप्य विद्यम् । इत्य बेर्'लबर्'रु'ब्रॅर'बेर्'त्र्ज्ञ् । र्याह्मेग्'लब्'षर'र्राक्षेत्र्जुर्। त्राँ दिन्ग्रांक्यतात्रेप्यां नित्रां भ्राप्तित्यातुः श्रीतः

विद्रात्र्या । । तम्बन्धातु वव व्यव्यान्य के वर्षे द् । हे पर्ववयाय **र्वेरप्रविष्ठा । अव्यक्त र्वराव्यक्त विर्व्य वि** श्चन्'कर्यायत्रेपर्यं नैनःत्र्णे । वन्ययन्यं वर्षः श्वेनःविनःत्र्णे । र्ह्मायसञ्जित्वन्यम्पर्यासम्बद्धाः । ज्ञान्यस्थायम् सेरम्यवग्यस्य । ब्रिट-तुरानुर-पित्रीयविद्यत्या । विव्यव्यव्यविवयनिद्यत्या । मर्डेन'त्र शुरुष्यमः दुः श्रूर विदार श्री । नर्डेन त्र शुरुष्व प्याप्त से तर्भुत्। ।र.पर.प्रश्रह्मत्रेरप्रविष्।वश् ।श्रव्यक्ष्यम् त्रीयवित्तर्त्री | प्रिंग्'क्रेंग्'क्र**यत्यत्रेग्य**पीत्तर्त्रे| गुरामयानु ब्रॅन्विन्त्र्या । गर्समार नेन्यान्य प्यन्न सेत्युंना । देशवुरामय। त्राँखन्यवेन्यद्वनः वरस्यत्यं वर् नर्न् न् होन् हो इं न्यि देन्य पर्दे राज्य देन हो विदेश हुन्द्रम्भाराधिन्द्रम् केष्ट्रव्यर्गरत्त्रम्भारत्त्रम्भारत् **इन्ये न्या अत्र म्या इन्या विन्यम्य वर्षा वर्य** पर्या रहास्तरा राज्यु द स्वयं प्रश्नेत्व प्राप्त प्राप्त व व व न्द्रंशीतन्तेशव्यव्यक्त्रंभित्रं स्त्रं व्यापारेश्वे स्त्रं व्यापारेश्वे स् मल बेर्। र्'तर्यस्य ज्ञयार्चर क्रियर देरे यहे मर्डव्याय बेर्' तर् है प्रस्रेंगुक्के क्षुप्रयाद्य है अया **व वेयत** देंब करे **८३८४४४४४४**।

म्याक्षेयस्त्र वहर्षे | स्याप्तियस्त्र वहर्षे | मन्याप्त वहर

भुराशंबरावर्ता । धुँग्बरीकाहग्यास्त्रीत्पर्रा तह्रव्याक्ष्रें न्याक्षेत्रां विद्या | यान्त्र्याह्रें वृद्यायात्रात्यात्रात्वे वृत्यन् | तुःताञ्चेतायायाद्यंत्रचित्रादेश्याञ्चेता । तिहेन्यायाञ्चेताचिनाञ्चतायतिःभु। र्बेद्यायते'त्यात्यत्वर्षे प्रवासम्बद्धाः । विद्यानेत्रित्यत्वरः याप्तः । न्बेग्राग्नन्त्रात्यन्त्रात्यात्न्त्। । इस्राह्न्ग्यम्यात्रात्तेन्। प्राधेरा । हुं वेद्'ब्रॅंश्वयावराययाध्यापार। ।तुयाहुयायावर्दिद्'रेग्'रेक् मॅं के। |तहे न वर्ष र्श्वेम रहेन श्वाम प्रतिश्वा । श्विन प्रति तर्दा तर् त्र्रें'प्रवश्यवा | विद्यपत्र्रेष्वाध्यद्भेत्रप्त्र् रातस्र देन देन प्राप्त । वि क्षेत्र हन प्राप्त । वि न क त्रमुत्तः विवायेत्। त्रम्तः त्राया क्षेत्रं प्रता । त्रिः त्रा क्षेत्रं या या स्ति । देवा र्भक्षे । तहेनाययां र्झेया हेना श्रुयाप देने श्री । प्राक्षेना यात्राया र **ই**ণ'নমম'নম। |ইম'নই'র্ন'ক্ত'স্ক্র-'ন'ন্ন'। |শ্রিক'ন্নই' ॅब्लाक्टिंग न्यत्याप्ताप्ता । हिं क्रिया ही क्रुया के ना भिया । हि के ता **र्**ग्'यरे'र्द्रपर्याष्ट्रीरायार्द्रियःपर। |तु'त्र'क्केत्रायायर्ह्रप्'रेग्'येर् ଛି| |ନ୍ମିଶ୍ୟ ଶଞ୍ଜିନ ତିମ୍ମ ଶୁନ୍ୟ ନିମ୍ନା |ନ୍ୟଶ୍ୟ ପ୍ରନିଞ୍ଜିମ୍ ତିମ୍ୟ विवायसम्बद्धाः । तिर्वित्तरम् स्वाधुताः चन्। देनः पान्नः। । शुनः तन्सः **प्रमण्डी वियान्य श्री हिंदान्य श्री वियान्य विया** के। १८६ गरा राष्ट्रिय रिग हिलाच रिशे । राष्ट्र हिला प्रवार দেরীরানমরামন। । খ্র'ওমান্ত্রীদাদের্দি (ॐ'ন'দ্দা। । নিদ্'র্'দ্দা

म्बिड्ड-प्रान्ता । विकासिक्षेत्रायां मेन्यायां विकासिक्षेत्रायां विकासिक्षेत्रायां

रते'कुन्'रा'ग्न'भेन'चेर'र्ठ'व। ।कुन्'रा'के'रन'कुन्'रा' <u> ঐত্যা, পৃথাধুৰ বি:১৯।ঞ্জন, নাম, বিগ্রাধুৰ বি:১৯। এই সাম, পুরু, ক্রি, বি</u> बेर उं'त्। । म्रु'ठा'ठी'८ द'म्रु'ठा'यन न ५ । म्रु'ठा'वर देंग' द्र्या ग्रेजा षेत्। । ह्रायानन् माने प्राप्तान्याः विष्या विश्वम् । न्याक्ष्याग्राधिवः चेराउं व। । न्याक्ष्याक्षेः नवः न्या ӂ*ॹ*ॱय़ॿॸॱऻॖऻॗॎ॔॔॔य़ॐॺॱय़ॖॻॱक़ॗॱऄढ़ॱॲॱऄढ़ऻॎऻॸॎॺॱक़ॕॺॱय़ॿॸॱ**ऄ**ॱ <u>ने:भिन्ना:वेशक्ष ।तु:रश्कुन:य:यान्ना:वेशक्ष</u> ।भिन्**य** ग्राचित्रचेरार्ड'त्। । भिर्माभी राष्ट्रियान्यान्तरं। । भिर्माईं ৾৾**ৼ৾৾৾**ৼয়ঀ৾৾৽য়৾ড়ঀৄ৾ ৄড়৾৸য়য়৸য়ৼয়৾ৼ৾ড়৸য়য়ৢ৾৾৽য়য়য়ড় क्र्रायात्रात्राप्त्रीविश्वास्त्र । इंबाक्क्रिंग्नाप्तिवानेराखंदा । इंबाक्क्रिंग श्चारम् इत्राञ्चीत्राच्यात् । इत्याञ्चीत्राच्यात्रम् व्याप्तम् विष् इराबुन्यन्यं ने के या विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विष्यां क्षेत्रायां क्षेत्रायां क्षेत्रायां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषयां विषय विष । प्रिन्दायान्दात्वसत्यातुः पृष्ठवा । तुः दर्याञ्चनाया

य'राग्र'केश'र्नेग । इ'र्'र'क्रूर'र्'र केग'शे'गहुबा 157.イダ इन्द्रायायाया निवासन । यने न्द्रान्यवा निवासन सु'नराकुर'प'ताय्या'नेरान्य । यरवाकुरायनेन्या हरा गुर |ने'मबैब'न्बे'ततुब'मनेब'य'भेषा |मग्र'वैद्याचे'तशुर महत्रपर र्नेग | ८.४८. वर्ष वर्षेत्र चेर रं त् । | ८.४८. व्याप राषेत्। विषये नग् नेवातु सर्मे । तुः वायवा स्वापिते नग् **नै**श्चम् । देशमहात्रामित्यं वद्यात्राम् व्यापात्यस्य। র্জ্র্ **ल**न्तुकाशुः द्वि व्यानिकान्त्र नाव्यात् इ'न्रस्त्रुण्यवा <u>ने'</u>न्य' श्चार्यान्तान्वयाये वाद्याय हेन्याय श्चीया गुरुषा हेय दुवाने स्याल्याया *য়ৢ৾য়ৢঀৢয়৻*ৢঀ৾ৢ৻ঽয়৻৸ঢ়৾ৼ৻৸৻ঀৢ৾৾৽য়৾ঀৢ৽ঽয়ৢ৸ড়ৼড়ৼ৽ৼ৾৸ৼ৾ঀ৸য়য়৸য়ৼৼ৽য়ঢ়৾৽৽ क्षेन्वसम्बद्धाः न्रस्वैवासम्बद्धाः न्रस्य व्यवस्थाः पर्राष्ट्रे'वेग् वि'क्षंपर्राचर वर्षर पर्राप्त हैं पर्यु क् की हुन बाता विकासी विना **উণ্' ক্র**ম্মার স্থান মার্ক্তির বা ক্রমার মার্ক্তির বার্ক্তির স্থান স্থান মার্ক্তির স্থান ক্রীকামার্থীব'ব্রা क्रयन्त्रकुन्याद्ययाग्यन्विन्त्रम् निर्मे **এ**ব'ন্ম্ন্যব্ধা স্কুন্ধ্রশ্ব ক্র্বান্ত্রন্ত্র্বান্ত্র্বান্ত্র্ ন্থ্য' बेर गे. त्युर पात्र पात्र वा के बार्च वा कि का कि **ভ**্লেমের কুমরামন্ ট্রিল মন্ত্রিশ ক্রিণ দ্বান <mark>ক্রিমর ক্রমন্ত্র স্থান স্থান স্থান স্থান স্থান স্থান স্থান স্থান স</mark> ग्बुद्बर्स्।

प्तः। विकर्षश्चितः प्रत्येकः प्रत्यं विकर्णश्चितः विकर्णश्चि

मिश्चर्यात्तार्याक्ष्यां मिल्यं मिल्

|मिंन्दर्भिकेर्थय तुःगडेबंध्यतेःरबंड्र-'न्तुबंखुःच्य [শ্ৰহ'শ্ৰী'মি'মানি'ঐ'নুহা 一百、日本、天山、山上京、京、京、大 ন্ম'ৰ। |गवय:५८:बॅर्ड्स्डेर| **া**৴ নমন্ত্রীন গল নাধা শুর্ম 别51 12人人山原山山山 当べ |美型内域大學"到學院"第5| [इंप्यें झं अप्यें **वं** प्रश् |ই'র্মপুগ্রহান্ত'শেব| **5**41 रे वित्र ने ब्रायात श्रीयातुषा श्री । । बर हे गांग त्वाय की त्याय द्या कृत्पकुत्'ग्राययापाकृत्त्याह्य। ।गृकृत्यप्तार्थे संख्येत्यायत्। *ড়ৢ৲*য়৾৾৾য়য়য়য়ড়ৢ৾ৢয়য়ৢৢয়ৢ (製) 744

चला विकार्भेत्रस्य विकार्णेत्रस्य विकार्णेत्रस्य विकार्य विकार्

दंश्याम्यात्रेयाप्त्रेत्त्वर्ष्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य म्पः नेर्द्याप्त्र्यात्र्यात्रेयायात्रेयायात्र्यात्र

किंग्र्वायान्त्रस्थित्रम्द्रित्र्यान्त्रम्या । न्वत्रश्चेश्रं तातरुप्तत्रतार्षेत्। ।रशकुरार्जेग्रायातरुपत्रतायेत्। ।रराकुरा षे के श जू व व व के व ' ८ ८ । च ' ८ व के द र र व व र व जू व व व व व । मिंह प्रज्ञ संविषायाविष वर्षाचय। । प्रवर्ष के स्थाप्य रहिष्य **ष**र्। । त्रश्रुरः ह 'त्रान्यात् व्रुत्र ये रा । इस्मे श्रुरः वी ह 'ये' N ।तुःरशकुरःयःविन्द्रश्चरा ।विंन्न्श्रद्द्र्यःवेनाःगुरःकुन् ব্ৰাহ্মা ।শ্ৰুব্জীশ্ৰামান্ত্ৰ্স্ত্ৰ্ বিশ্ব । ব্ৰাক্ত্ৰ্ৰ্ শ্ৰামান্ত্ৰ্ बेद। । बहुअअं बे तरार क्रीर सर्वे सदी । सुरस्य कुर सधीस क्रुंद व्यामत। । स्थानस्यां विषागुरस्य विष्यता । प्वत्यविष्यते स्था मावै यायर राषेत्। । र बाक्षर त्रायमि वायर र येत्। । हेर ति हेव् रं बर्डण प्रज्ञन से १ । पुरुष दुन्य किन ज विन जा । दिन मन्द्रं विषा गुरु हो र व राष्ट्रया | प्वतः ग्री रूर य र न् गु सुरू पेर् | | रशकुर दॅराय प्रामुन बेर्। । कुन पकुर भेर पाने न देर सु न्ता । तुःरबाद्धनः तर्ज्ञेषावाद्यान् द्यान् द्यान् द्यान् । वेदा पृद्धान्या है। **ढुरःचन्द्रगश्रञ्जानने क्यापः स्रम्या चन्द्रगण म्याप्या** इवर्गार्वर रतास्रवस्य सम्बद्धिर प्रस्ति स्वर्गा है पर्द्धा सहित्य सयक्षेयहं न्द्रिया न्द्रित्र स्या वित्त स्त्रित्त स्या वित्त स्त्रित्त स्या स्वित्त स्या स्वित्त स्या स्वित्त स्या स्वित्त स्या स्वित्त स्या स्वत्त स्वत्त

गुन्मानी गुन्न हरा रहारा ना विदेव खन गेन्द हर चने च हुँ च | व में च मू ते ते च द च म ने व त च म हुन व ते त है। क्षां श्रीरात्रा क्षिराक्षेराप्तायद्वापति विषेत्। । तरस्य <u> ८ हॅन बर्ग व्यक्त क्रिक्त व्यक्त व्यक्त</u> **४**वा म कृत् ग्रीका न म कारा परि देश पर्ने। वित् देश पर्ने पर्ने परि देश विवा । गहार तहेव गवेर पार्श्वर परवा । विवश हे गहेव हि हिन्यायत्वेत्रेत्रेत्त्रः । ज्ञात्यायत्त्रेत्यायत्वे । वित इंबर्यान्य क्रांक्ष्य । विक्रमान्य द्वारान्य । रोबराग्द्र'रु'पहुद्रपदिके रे.हुर्'। । क्वॅं हेद् श्रेप छेर्'पदि हुँर्'प ने। विरः क्वॅन्'यः चुरः चुरः चेत्रायः भिन्। व्रिंगः यज्ञन् चेत्रः चुरः चित्रः चित् घ'तवा । कॅबाबम्बर द'म्ब न्यदेश्वरे देश्वर । म्र भ्रेग र्र र यह वायदे न्यः क्षेत्रः ने। वित्तन्यः क्षेत्रः चुनः चुनः संभिन्। । विनः ह्यत्यः न्यायकत्याव्यवापात्य। । तम्बेययान्यम् संस्कृप्यदेवीते तृत्। । तर्न्द्रायसम्बद्धान्तः । वित्तवस्य सुन् कुर्वम् अर्थेन। ।ह्यानेर्द्रं द्रम्यसुग्यात्वा ।त्यास्त्रेन् ८५'यर' नेब' देश पेव। । गर' त्रग' श्रेर' रु श' रु र' प्राया। बुन्यर स्वायते से रे लुन्। । हे तिरे श्य के त्यापते स्वापते स्वापते स्वापते दे। । बैर-ब्रॅव'न्सॅब'गुर्रागुर-बेल'ब्रॅब'धेव। । गर-वग'ॐ'बॅरा गुराकुरायत्व। ।वळव्यव्याञ्चायायहेवायतेशिरेखरा ।वेगः **बैअ'ब्रेन्'पदे'बॅब'गुब'ने। ।बैन'बॅब'गुब'बेन'पन'न्र**-हेग<mark>'पेद। ।</mark> सबादव क्षेत्र : व्यव : धिवा | ग्राम्या क्षें ग्रेर प्राचे । ग्राम्य हिन्द में अर पतेके'रे'तुर्'। । नगत'ग्रवराग्री'नर्ड्र'कुर'सुर'र्हे'वर्षे । वेर पर्वत्रद्धन: गुनः गुनः खया पश्चनः भेता । गुनः सन् । के क्षेतः दुनः द्धनः प तव। । ततुत्राविवयास्रात्रेश्चरामदेशेरेश्वरा । मृत्रदादरांगेलाख त्रुं र वर्षे थ। विर भेंद्र पर्ग प्रुं श्रु प्रदे दे प्रवृ थेदा । युन् । बेन् क्षेत्रेन् स्याद्धन् प्राप्तव। प्रक्षेत्रप्रमुक्षेत्रप्रे न्हेन् परिवेर्ने खुन्। । श्चिम् अर्मे द्रम् मिन्द्र प्राप्त स्थित्। । श्चित् कृ स्थ स्थिति प्राप्त तर्में बर्ग्यम् । निक्तां तर्ज्ञे स्क्रीं न्द्रां प्रे के स्वर्षेत्। । संस्त म्बर्पः नेवापः कववा । वर्ष्यः कराम्बर्धः वर्षे न्यः यसः। । हिंबः नैन'क्राराञ्चार्यं चनाया । रे.विन'क्राराञ्चभीन'चन्। । इतार्विन ন্থান'ৰ্থপাৰ্ট্ৰাপ্ৰেম্বা বি'প্ৰান্থান্ন'ন্ন'নালা বি'প্ৰান্ত্ৰ' हाप्तार त्राच व्यास्त्र व शेला १९'अ'म'नव'न्न'त्र'मेत्र'मेत्र'खग'श्रून्। । ह्येन्'ब्र'अर्क्षंत्र्ज्ञें

प्रणी स्थान क्षेत्र स्थान स्य

ढ़्रव्यान्य व्यान्य व्याव्य व्याव्य व्याव्य व्यावय व्याव्य व्यावय व्यावय

महार्यास् ।

स्ट्रियायस्त्रे स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियाः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियाः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियायः स्ट्रियाः स्ट्रियायः स्ट्रियः स्ट्

 पतिःपञ्जेद्र'पगुर्विषश्रेष्'त्रप्तरात्र्यां हें प्रदेश्यात्र्यार तर्दर्भाद्यदेश्यात्र्यात्र्यां हित्ष्व्यक्ष्यां श्रृंष्यात्र्याः स्त्रां स्

वर्षे त्यापत्वापति न् गुन् व्वाप्ता गृहेन । ने त्यात्र विस्वति है ज्ञा ह्यर प्रेम प्राप्त विष्या । त्रा हिंद प्रम्म प्राप्त हिंदा प्रम्प स्थित <u> नुपन्ता । नुगुन्ध्व छिन् भ्रु विवयः छै पने स्पत्वाया । विः ज्ञा</u> देन्'ब्रेन्'यवे'यक्षें र्न्'दर्शे विश्वराग्रन्गु'रे'वुरु'य'यग्या मह्मान्यक्षेत्राहे। | विवायम्यम् प्रमानिक्षेत्र्यायम् । न्य भेराक्र्यास्य प्रमुद्र प्रस्तान देश्चे दास्य तरे न्या । वर्षे तास्य व मदेख्याकृत्र्रान्यक्ष । ने त्यात्रियन ते सु कुल के न्या । तुर्वा ळॅन् व्यवस्था नव्यक्तीय विश्वापा यान्य प्यन् पुन्त्र । विष् हिन् मु विश्वराके निर्मात्विष्या । मु मु सि दे द्यात समा प्रें प्राप्त । ॱस्' सर्वा कुर्रा गु 'रे', बुर्वा स' स्वा वा । स्वा 'र्ह्ने र 'हिन् 'र्ह्मव' में वा स्वा स्वा स्वा तुःबह्यानितः र्र्वेन्यया । नग् नैयाक्रं यायष्ठ्रन्तुः यहता नते क्रेंब्र्याया तरेन्या । अभी वर्षर क्रमावति र देरा प्राप्ति । ने त्यात्रिक्तित्व ते व्याप्त विकास क्षित्रदेतान्यम् । वर्षम् करा हिन् भुः विवर्षि निर्म

चल्नमा । व संदेर् न् जूरिक्य तारार्जी । मृं समाग्रम् ग्रेलिया मन्या । नर्दरक्त हिन्धर तुः स्ट्राह्म द्याप हिंगा । वृः सं देन देस ୣ୲୶୶**୕୴**୵ୄ୕୳୶ଽ୶୳ୖ୵ୢୢୣୣୣୢ୕୕ୣୣୢ୕୶୶୶ পরের রহান ট্রার্থা तन्त्रमा । नग्रंभिमार्क्रमायसुन्द्रायहत्मानते श्रेंन्ययात नेनमा । हुअरदे दर वे अर्फे व फ से ने पर विका । ने सदि विर पदे हुए पर हुन म्बेग'न्र'म्बेया । तुरार्द्धन'म्ब्राम्म्यराष्ट्रेपद्वेत्र'यापन्धन्द्र म्बर्देशहेंग्यक्रेंन्। सिंखबागुन्ग् नेल्बायायाया । शहेंग् ট্রি ্ব্র্ শ্রেষ্ট্র শ্রেষ্ট্র ব্য |ସ୍ଟ୍ରମ'ମ'ଟ୍ରି'ଧିଷ'ଷ'ମଧ୍ୟୁମ୍'ସ'ପ୍ରଷ' **इ**श्चर्यस्थित्रः श्वर्याच्यात्रः स्थान्यात्रः स्थान्यात्रः स्थान्यस्थितः स्थान्यस्थितः स्थान्यस्थान्तः स्थान्यस् *ষাদ্দ'নেনুষাদ্দ*'শৃউগ্ *्रियात्रविरामदेश्चरातर्धेराक्षेत्रा*न् न्द्रेया । तुरार्ट्धन् न्वयाञ्चन्याची तहीतान यन् स्पन् न्त्नन्ता ष्ठ'वाह्येन'श्चु'विवयां के'यनेर'यत् गया । इतात् ह्येंन्र'न'गवन्यति ने |मॅं सराग्रम्ग्याः ने क्षार्यायम्याः । व्रिम् क स्वर्धः सम्बर्धः ब्रायम्यम्प्राप्तः व्यवस्यानिक्षेत्रं व्यवस्य त्रेत्रायाः । प्रापः वैद्यार्के व्यवस्य तुःयहतानतेः श्रुंदावयातनेनवा विवाग्यानवानवा द्रायद्यवया *ষ্টাব্*দাৰ্থই দৰ্ভৰ'গ্ৰীপ্ত'নেৰিৰ'নেন্ন'দাখন'নেশ্ন'ভূদ'নিদা শ্ৰ্ৰ इयराग्रन्त्राप्त्राप्त्रविष्ट्येन्याक्षेत्रवर्ष्यन्त्री । नेवर्षान्यक्रन

ガリ・エル・ガト

ब'र्बे'गु'रु। द्याविगार्च रत्याग्री है। स्ट्रिस् स्रीय स्रीय ন্ত্ৰ্বাস্ত্ৰা ण्द्रायाः ठवादे व्यद्भार्त् श्रुवाद्भा श्रीतार्वाचा विदायात् विदायात् विदायात् विदायात् विदायात् विदायात् विदाय ૹૄ૽ૺૢૢૢૢઌૹૻઌૻૹઌૹૹૢૹઌૹ૽ૢૼ૱ૡ૽ૺઌઌઌૢઌૢ૽ૡ૽ૢૺૡૢ૿ૢ૽ૡ૾ૢૻઌૹઌ૽૱ઌ<u>૽ૻઌ</u>ૹ૽૽૱ઌ૽ૻઌૹ૽૱ઌ૽ૻૺઌૹ૽૽૱ઌ૽ૻૺઌ हुन्नाया हेम्वर्ष्वाश्चित्रायाम्यायाम् निर्माणायाम् **মিন্'য়ৢঢ়'য়ঢ়'৸ঀ'৸য়'য়ৼ৸'ঢ়'৸য়ৣ৾ঀ'য়৾ঢ়'য়য় ५ गॅ अंधे ५ ५ ५ ग है।** <u>রু</u>দ'ধুৰ্'শৃউণ্'ন<u>রু</u>দ'ঝ্টু'শৃ*র*ে'ব্দ'র্ঘন'ঝ'ঝ'র্ঠ্র্'৸ঝ| बरळें त्रांत्र नृत्र त्रां च्रां प्रांची कु नृत्र क्री त्राया चरा कर कर वित्र वितः तर्वा नवा नवा त्याया नया या या विवास विवास ধ্য'র্ড' रः_मदःराज्ञेषाः श्रृं ह्विषाः को सन्दः सर्ज्ञेद्राष्ट्रः **द**्वत्यः सनुपाः नेदा **ዳ**ጓ इयराग्रीरास्यानेराधरात्त्र्गान्मॅररायात्ररावेरराव्यान्तेष्याः """ प्रवा न्यापायन वापतः तर्में वारीना विष्युर्मेन रुवा के वारीना विषये वि बहतानरान्सुताने। क्रेन्द्रियम्बन्तिन्तुन्तिन्तुन्तिन्त स्तुन्यं महिन्यं महिन्यं स्वयं क्षेत्रं स्वयं क्षेत्यं स्वयं क्षेत्रं स्वयं क्षे

सम्प्राचित्रं प्रिंगं प्रकृति । विश्वरं क्षेत्रं प्रकृतं प्रवित्रं प्रकृतं विष्णं । विश्वरं क्षेत्रं प्रकृतं विष्णं । विश्वरं क्षेत्रं प्रकृतं विष्णं विष्ण

तर्ध। १२ दतातर्धे रायाराधिर्धे रायायान्या । क्षेत्रायायान्यारा **८ॐ'র'র্ম্বা** ।ঀे'বরাদ্রন্থরি'এয়'য়'য়য়ৢ। ।৴৴'য়য়য়৻৴৸৴' নর্বাবাট্টি মূলা সাঁনা । বাৰ্ব 'দ্বাস্ত্ৰৰ' শ্বুন'ট্টা ই' শ্ল' ন্মা । আন্স र्म्याः विन्यत्याः विष्याः विन्याः विन्या **৲**অউল্'অ্চব্'ন্'রউন্' ।ঀ 'ব্বাহ্ন্ন্ন্ন্ন্ন্ন্ হুন'ন'ন্ শ্ন'ন্ অন' ট্টা'ৰ্ন্ শ্ব'ঝ। । বিশ্'ন' বিঅআট্টামীশী বিবা मृद्धिक्षाः व्याप्तिक्षाः विद्या । निः इत्यात् वित्याः विद्याः विद्याः विद्याः শ্বিশ্ । ব্যাই শাষ্দ্ৰ দেব দেব ই ব ই ব । শী ব ব শ্বন্থ নি মান त्र्या ।त्यु'न्द्रश्यद्यात्रिह्द्रहेव्'मा ।व्यवस्त्रिंगहेव क्चैं न्म्न क्चें कुरा १८५वां याद्यवाक्चें वात्रतायाद्यत्। १२ द्रता तर्वे रायानायी तत्र वात्र ते निन्दा । तत्र वात्र वात्र तात्र वार्षेत्। । विवयम्बर्धियययात्र्या । वियम्बर्धियय। न्यम्बर्धिवय वर्षा विन्'क्रेने'तर्भायकु'यह व के यन शेषत्व व वितेन्द्र सम्प्रान्येन नम्निंद्रम्थाः वित्रह्मार्येद्रम्यात्रम् रा'तरी' ता' सन्।'कॅर'केन्।'र्नेक्रारा'भित'न्शुरक्षरा'त। हे'राईक्'ग्रैक्क्रें मने मन् कॅन्'हुन्'ने स**नु**रस्ने न्ड्रस्यां ।

ब्रायतः तर्शे शुन्या श्रीयात् देव म्या व्याप्तः वर्षे । व्याप्तः वर्षे वर्षे

तर्न् न'न्यप'र्र्र्पप्र'यहँन्। ।क्रॅंथ'क्रॅंथ'येन्'क्रेप्र'र्य्यापर्यायेन्य त्र्वा विव्यहेराक्षेत्रव्यत्र्यस्यः स्वर्षेत्रवा । भ्रव्यदिः स्वर्षं कर्षं র্ন্ন'বিন্দু'বিন্দু'ব্দু'ব্দু'ব্দু'ব্দু'ব্দু'ব্দু'বা सुन्यत्वुन् नीन्न्द्रव्यत्न्ना वेन्त्र्यं । इत्यत्र्र्व्यायीयं व्या रत्यर्भेषा । भूतिमारी मन् कित् भूति । यदी पदी पदी प्र **५** अप्राप्तर्थन्थस्त्र । ५००५ तसुर्वे प्रीप्तरं वर्षे वर्षे प्राये ५ র্ন্তরি । বন্দিন্দির ব'ন্ধান্দেন্দের ইন্। । ন্ধা^{স্ত}ল্ ह्यन् वेन् ग्रीन्न व्यान्वयावेन् तहीं । ह्यन् व्यानि वास्त्रा या ฐัล| **| รุล:๕๓:จิ:ฮฺจ**:๕ๅ:ลั:दे:ฉฺริ| | กรุ:กรุ:ล:รุล:รุล:นฺ र्राया अर्थेत्। । तम्र शतुः रे ये द क्री प्राया विकास स्थान रे'र्नेष्राष्ट्रीयहंत्र्यरम्'यर्ज्या । तज्ञ्यानुदे'मण्केन्'र्ज्ञं रे'यन्। । मने'मने'त्र व'न्यारा'रर'यर'वर्षि । देवान्यर्मकान्यापति त्याद्यादयादे द्वायार्थे व 'तु' गुरुष स्या स्व प्रेत्' गुरुष स्या । या पर्व स्थी स्व प्रेत स्व स्व स्व स्व स्व न्बॅलपाष्ट्रन्युन्। हुःग्राव्यप्राष्ट्रन्त्र्यारेनेर्द्यायवायेन्। <u>न्रात्रायानाकुन्श्चिन्व्याकुन्ययमान्यः श्चित्रायान्यत्वापाश्चन्यवेश्व</u> वद्यार्थेग्'तर्ज्ञेन'ग्रागरायां न्'रेन'तर्गुग'रा'त्या हे'गर्जुन'ग्रीरा'न्यापदी' न्। न्यामा हिन्। न्यामा हिन्। यान्या हिन्। यान्या हिन्। यान्या हिन्। यान्या हिन्। यान्या हिन्। **छ**'त'वि'वर' र्'र्पेष्'वरुप र्र्भेयर्थायय। यत्राज्ञराजी र् बॅटराय' देष्' *ठ र हु 'हॅ ग्रथ प'ॲन्' चे रूपाने 'यग्रर नु ग्रुप्' परा*तु 'तु*र्यपय*। 72

चारित्वतात्रमञ्चरः मृतुन्ये व्याप्त्या व्याप्त्या । प्राप्तयाया । प्राप्तयाया । प्राप्तयाया । प्राप्तयाया । प्राप्तयाया । प्राप्तयाया ।

न्यार्क्षराञ्चना नम्याये निष्ठेन प्रते । । नाम्याये नामें तत्तार्च व । वह्रसञ्जादात्रात्र्वात्रात्रात्रात्रा ब्रस्स्युर्र्स् व। १५५८ व्यानिक्षाम्य विष्युः । इस्य ह्रिंग् ख्र क्षं क्षेत्रं चंत्र १ वृत्रं व्यायायत् स्य स्वर्णम् हेन् राम्भेत्। १ मुर्चिम् सुरः क्र्रेग् 'हु'व्रत्मर्च'व्र । देग्'यं हेव्यरः तह्रग्याधिव। । वरः यंतिः শ্ৰীন'দু'য়ৄ৾ন'র্ব'রা ।শ্বন'শ্বনাঞ্জ'ন'মবা ।শ্ভীন'ব'শ্ব।গ্রীঝা न्बेर न्यं भेता । तर्थे न्यं स्पान्यं न्यं भेता । में र न्यं ने हिर्या स् तह्नाराधिव। विकाराधाराद्वीरातन्तरं व। निवित्राराधाराद्वीरातन्तरं धिव। । न्याकॅस्युना प्रस्ता बेहीन तरी । द्रमा न्या नुना नामा । इस हिंग दि: क्षेर न् ग्रेस न् ग्रेस स्ट्रिंग । न' कं स्ट्रिंग 5'ৰবা र्मग्राशुत्र्वा तिश्चरायाहिष्ट्ररात्श्रेश्यात्श्रेश्याहित्। तिकेषा हुर्व्यात्र्र्त्र्र्त्। विक्वेत्र्य्याः स्टिन्र्र्त्येश्वर्षेत्र्य न्यः इंश्वर्गः तम्यावे चेनः तरी । त्रा ग्रुधः कुतानते न्यं न्यापः लग्य। १६ हे तकर मे ग्यर छे ग खेरा । यापर तर्मे हे रावे दे न्द्रव्यात्त्राधित। ।कृत्र'त्रज्ञुत्'न्द्रत्'ग्री'व्यत्र'त्रा'धित। ।व्यत्र'त्या ছনকান্ত্ৰী কু'ইবা'মিব। বিষ'ৰ্ক্তমান্ত্ৰৰ'বি'ট্ৰব'মেবাবা বিশ नुश्रम्याया हेर्पर्व्यायवेराक्ष्मिराक्ष्यायायाविष्यायाया

र्भायदेश्वयाव्याख्यायाञ्च कु'ग्रेण्यत्त्व'ग्रेशञ्चेर'यराञ्चेत्रायाः होन्यस्त्र्व्यायायाः विद्यस्त्र्व्याच्यायाः विद्यस्त्र्याः विद्यस्त्रं विद्यस्ति विद्यस्

हे स्रायद्मयदात्मयुग्तस्त्रतात्म् । प्रमृत्रेन्रव्नातासुन्यासु मर्द्रन्य। |इतार्द्र्यंत्रियारयायाय। ।ग्वन्यम्ब्रुंत्यर्श्वेत्य मेर् ।रन्यन्र्बुत्यक्ष्यप्रह्मा ।ब्रुंग्नित्र्बुंखन्यन्न्रंदं म् । मार्श्वे राश्वे राष्ट्र राप्ते । वा निर्मा में हे तक मारे हे ने यत्व्याद्वे स्वित्वत्वत्व्या विश्वाद्वं स्वावः केव्र्वे । यामन् हेद'री अिंग्विं इंद मुच मर्द्द मुक्त हुं। । यह से का है से मेर यत्रर'री । खन् कु के द'र्सि न् द न कु श हैं। । वे क'र्स दू 'र्स 'रा ह' के द' री दिन्दारायहत्यलन्यम्ब्जीयाश्ची विक्तव्यर्धात्रं दूरी। इन्चेंपिविधीग्र्वाचीवाडी । निप्ताकीयाप्ति । किन रोयरा गुरेरा की गुरेरा चीरा ही। । উष्परा नेरा ये ए पिरा है। । न्वेग्राबेन्'रन्'ग्राक्ष्यपंश्ची | तिस्त्वेन्'रन्'ग्राक्षुंन्'य र्षे। |रेर्स्न्यवेन्'यरे'तन्यस्युर्षे। |स्यार्स्न्यवेन्'यरे'न्यस्य ह्या । ह्युं प्रमाने स्तर्भ स्त्रा । स्वाम् द्रा स्वाम् द्रा स्वाम् द्रा स्वाम् द्रा स्वाम स्वाम स्वाम स्वाम स म्यान्यहर्। । व्यान्यहर्भ्यात्रात्र्यत्यहर्भ्यान्यहर्। । व्यान्यहर्भ प्रतित्वेत् संस्वायस्य त्वाया । हेन्या स्वयक्षेत्र दे स्वयक्ष्य त्वाया ।

तर् गर्नव्यीवाक्षेत्रं चर्वा । इत्याक्षेत्रं व्याप्ते व्यापते व्याप्ते व्यापते व <u> </u> ह्रेन्याराक्रेन्यंत्रायतुन्यत्राग्नेन। ।क्रुन्त्ययाक्रान्यांकुः ग्रह्नः बीयानेवा । १६५ व भे प्री केर प्रकारी ने प्राप्त प्रवासिक श्चीज्ञरायाच। । परावायाचे भूरावीळाज्ञरायम् । । पावयावायया रवा, सिवा, क्षेत्र, श्चिम । इ.क. कुर, क्युं चर्न, प्रवासित, प्रिवा, पश्चिम । वर नराशिक्षर्भत्रहे पर्भत्रहे । भिन्नित्रिक्ष्यर्भ्यत्रहे । अस्य मत्रें विन्द्रिक्षेत्रेत्रिक्षे । क्षेत्रिम्देश्वरिक्ष्यतिक्षेत्रिक्षे त्वराचित्रें स्रिन्देन् रादकी | न्याक्ष्मा क्ष्मां स्रिन्दिन दिन्नी | भुः ग्रुवारर पुःद्वार हुँ र तकी । इतार हुँ र वे परे वर्षपर दे। । रूअतुः चुर्-मुर्-अलग्रायते। । विः सूर्-पः विः अतिः रं विअर्धरः। । इ.र्थायपुरम्यात्मयात्मया श्चित्र स्त्र हिन्दे निन्दा स्त्र क्रिन स्वयानम्यानुः सं यायव्यायते। ।नुः रेवापतिः हितुः स्टः यारानि द्य षा विषात्रें स्त्रे परे सं तरे विरा विषय सु में सं स्वाप मदे। । व्यन् छन् छन् संदेशस्य सामुन् । मायहन् यहितः दर्शेष् मवेबागुरा |र सरामगरम्ब मुन्या |ग्यार रेज् ই:অ'লএপরান্ত্র বিশ্বর্থ বিশ্বরথ বিশ্বর स श्वर्यायम् वर्षात्र । वर्षात्र में वर्षात् हेर कर मी पुर पुर्वेया वियम् शुर यायया न्याय मेन पुर वहेया वयास्तात्र्र्यः पाष्ट्रित्रकेश्वे अवयाने तेवया स्तावात्रा माना हे पर्वत् क्वित्याव्यार् भ्रेयाद्यात्र्य्यात्र्यात्र्यम्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या

ই'ব'ট্র্বণ *चॅन्'न्वे अप्र-: तर्न्प्रस्तरः कु'न्-:प्*यळे*न्*यदर्दिनः वृधदानेन्'''''''' <u>ই'নর্ব'শ্রীঝ'ন্ন্'র্'র্'ন্'ন্ন'ন্ডঝ'ন'ইল্'</u> सुकार्के मानेकान्त्यहिन प्रति क्षेत्र सुति विराम गायापाया ही। ब्रागृत्यवंदिः अञ्चरः प्रश्नात्राप्ति (चेराष्ट्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते प् न्यायश्रतहन्यायन्त्रं भी होत्रं नुस्य मान्याय **हे**'चर्नेद'ब**रा**दह्य'अप्तर्व'श्चे'ब्रेट्र'सु'चर्*व*'चर्नेद'ब्राव्टेंग्व'र्छे'''''' तिर्मर ते हें अपा दुवा व्या र्वा वर्ष राम देव हो। हे मई वर्षी तह वा स्वरा **६**८:चर्'अर्गे'गुग'८5ग'र'ल। हे:पर्वुद'ग्रेश'रअर'ल। ष्रे बाह्य न्या व्यापा कर् । यह प्राप्त क्षेत्र व्यापा कर्षे । यह प्राप्त विषय व्यापा व्यापा विषय । মল্বাল্ডান্যাম্যা ন্মান্ত্রিক্ষাক্র ইভেল্ডান্ত্রেক্ট্রারাট্র ऍन् हन्याष्ट्रपंशेयत्वाक्षे हिन् ऍन् र्क्षुव्ययदेष्ट्रन् र्वा **प्रॅ**ल'न हे रा'सु हुँ न् 'न के न' प्रन्त त्न' प्रश् । अर्थे न राप दे हुँ प्राक्त न इयलगुराक्षेत्रुं न् विवासर सर्मायर तत्वा वात्रुर वात्री। ने द्वाहर त्रुत्मग्रीस्रर्भरम्पन्पेगव्सः सुग्निन्यः स्। । क्रम्यादे क्रिंस्य

শ্লীর'র্বরশ্রশমাইনি'গুশ্ম'ঞ্র'ব্র'র্ম্ন'র্ম' ঐ'চ'গুর্ভরেল'নেশ্বশ্বশ্বনি'র্মুন্

न् वां गुरु। हे पर्द्धन् वी तार्रापाने के नाम करान् में नाम करान् में नाम करान्यान

त्म'विन'वेश'मु'न'व्'र्मेव'र्मेते'क्रे'केव'र्म'विग'स्प्'ने**दे** মনুগ্রাহানুহা र्वेद्रार्यः क्षुत्रार्थः केंद्रायः न्द्रायः देवा ব্দ'ব্বা ण्वतःग्रीशयार्ळेरःपराहेरपर्द्वप्पङ्गेव्यगुरःग्रस्प्रस्पर्मान्यसः"" **८व**'वुब'द्रवामञ्जयपाविवाधित्पान्। ८क्के'द्रत्'ग्रीबाचेनबाधितेह्रा मिं ननः ने हे 'त हो सागु द प्ययम् य वया मिळे वया सामि से सम्मानन ॲंन्'हे'यर्ड्व'न्यॅव'म्ऑग्'अ'सुस'स'ग्वस्पत्रेव'लुस्। 第57天 इयरागुराळे तरिते पॅवार्ये पराष्ट्री खारव पति क्रियागुराविषा चेरापाया <u> वित्र इयका वृद्ध भेषा का क्षु की तत् वा पा प्रत्या</u> **로**'고성이'씨다'짓지'할이'**의** इत्राक्तीर्व्यव्या सुर्वे गुर्वे गुर् **चुरायरा रे.चेन्'राचेना न्यायन'परीपायकी'वृत्र'हेन्प्र'हेन्य** व्यातके प्राधिव। हिन्द्र यहायत्र म न्या प्रवासिक विवास प्राधित हिन्द्र यहाय प्राधित विवास प्राधित विवास विवा यय। विनः इयरान् दे। देन ब्विन्दन्त ने स्वाप्ति । विनायिक विनाय ৾ ৻৻ঽ৾৻৻ঽ৾৶৾৻য়য়৻য়৻য়য়য়৻য়য়ৢ৽য়৻৻য়য়য়৻৴ঢ়য়য়য়য়য়৻য়য়য়য়য়৻৻য় त्त्वाप्यता हेप्तर्द्वाप्त्वपूर्वाचेप्त्वेर्यः विपान्तरः शुरुष्ते । नेप्त्वा चॅबॱचॅदि'|व'ळेबबाचबेबाहे:पर्ड्व'न्चॅब'**बॅ्प'तग्दा**बुव'५८चाहे'हेर' ''**''** परः विगातः प्रवासा संवासः इयस ग्रीसार्स्य एक कंपा ग्रीसः प्राप्ति । प्रशेसः त्रिरश्चित्रव्यस्य स्विप्तिव्यस्य देश्वर्ष्य स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स ८५ग'रा'ये' नृष्यव्यन्त्राप्ता ये'नु'यार्येद्रायं इवरा'द्रे रक्षारा'न्या'देन्'ळेलात्रवा'हे। देन्'क्कें क्षायाविव'र्या'वर्द्रन्'ह्रावार्तु' ष्टुण्यप्रति, ५५ किं त्यंत्रेर चे रायक्र यक्ष रायक्ष रायक्ष रायक्ष रायक्ष रायक्ष रायक्ष रायक्ष रायक्ष रायक्ष र

<u> न्याहे पर्वास्यव्यापया</u> ने प्रिवासिक वाने प्रविवासिक विकास पति'ष्ठिन'ॲन'पदावि'च'दॅन'ॲनसाय। विते'र्हेन'यम'द्रश्चनसाय। ৳ৢ৴৻য়৻ৼৢ৾৻য়৻৻য়৻য়৻য়৻য়৻য়৻য়৻য়য়৸৻য়ৢ৸৻য়ৢ৻৸য়ৼ৻য়য়ৢ৸৻য়য়৻ঢ়৻য়য়৸য়ৼ৻ बद्धवानेकिष्पेवाचीकार्मेगाकेगामसुनामान्या वितारिताहैवाससा विवा <u>हे</u>ॱतर्दुव्'ग्रे'तुष्य सहेते'त्रेत्र'यात्रात्रीत्'पर'वे|प'रेत्'कश्रप'र्रथ'य'त्रे ज्ञा रॱ**वॅब**ॱचॅबिॱब्रुॱबष्किरवाः ब्रङ्ग्द सुत्राग्रीःचनुन्दः राक्षेत्र सु र्मे ब'र्मेरि'र्स्रक्षायाम् ५५'र्से'बे'२८५म्'म्यल्डब्'ट्रब्'हेन्'र्सेटलारा'प्रेब'ने रा য়ৢৼঢ়ৼ৾৻য়ৢ৻য়ৼৠৣ৾৻ঀৣ৻য়৻য়৻য়৾৻য়ৼ৻ঢ়৻ঀ৾ৼৢঀয়৻য়৻য়য়ৢৼ৻৸ৢৼঢ়ৢয়৽ **र्सरः ब्रन्। ने पनिव**ासं बैबायरा गुक्त ग्रीका भेरा के बाया रहा। हे पर्वा <u> चुैक्ष'र्स्य क्रां' इसकात्माहिन' ळेंक्ष' गमेन 'अ'त्यात्म अ'हें व'पर' तर्गा है।</u> षदिवःसंत्रात्यवाद्वेवःयाधेवःषशुन्दायय। नेवःसंतरे हे पाद्ववरावः दे। है',पर्वुद'ग्रीक्ष'ग्रिन्'र्स'ग्रेग्रांभावायायय। सम्मिन्यन'यसिःस्र ইুব'লুঝ'মঝ। দেঅ'ইন'্ন'ইুব'গ্রী'মঅ'ন্মন'স্তুন'সন্'ঠিণ'গীঝ'ন্**গ**' इतर् याशुप्पराखर पति सु । या वी वा के राशेरा स्रवादा विवा वी देव वा । ततुः व तारेन पा वेषा दुः क्षेत्रात तुषा हो। नत्रान १ द्वान १ द গ্রুঞ্জীবানান্ধর'বাগ্রদথানারা ॅरॅ.व्'प्प्प्वा'स्बर्याय'भे**न्'**केश'्य दे' मुैक्षार्से ब'तर्देन:बिषा'गुह्यन्। नेरातनुषाचतिन्नी इयसान्नामकराक्षे च য়ৼয়ৢয়য়য়৾৻য়য়য়ৼৣ৾৾য়ৢ৾ঀৼয়য়ৼৼঢ়য়৾ঢ়৽ঀয়ৼয়য়য়য়ঢ়। ৼ

्रावरः स्वाद्धान्य स्वाद्धान

स्वर्धम् श्वायि विश्वयाप्त श्वाया । स्वर्धम स्वर्ध स्वर्य स्वर्य

स्थाप्तर् क्षित् विद्वा विद्व

 परः सुग्यं हेरा हुर्य। | रयाया या या या श्री श्री या पुर्ने । सा ये या <u> इत्र क्षेत्र या प्रमाण । क्ष</u>ा स्रते खर्या स्ट्रा स्त्र क्षा । इत्र मे स्ट्रा स् रोबबायायहोय। |सेबबाई८'कुरानदेखुगयायानहेबय। ।हुग्य ह्यातहराहर्वन्विन्वयान्न। । अराष्ट्रन्ष्ट्रं भे भे तान्देवया । **ढ़्र**ॱरत्:बुत्रर्,वुत्रप्रदर्भ्यवस्त्रहे । ।८ग्।युग्'कूर्,पह्र्र्न्'वेर्'ह्र्य् ह्युप्तर्रेय। |स्वायान्मानमञ्जूष्त्रीयामानस्यक्षेत्रकी ।वेययानम र्रःत्व्रव्यव्यापंत्रेरःत्रेष्वंश्वेषायगुग । ग्राव्याकृतःत्रेष्यापार्यःत्रः ष्ट्रन्। |सेवसन्दर्भः हेन्यस्तिष्ठ्यानः वेन्। ।तस्तिः तशुरः वेन्रम स्वद्धरः हो । श्रिप्तर्ग्'मैशः श्चित्रपानेर्'पतिः देरः । । नुवरुप्तः क्रिन् हेरी प्रमास्मा । विदायन विदायन क्रिन्य विदाय क्रिन्य विदाय क्रिन्य विदाय क्रिन्य विदाय क्रिन्य विदाय विदाय रेग्राड्ग्'त्रिंरतिहें कें नरुत्। । मने वित्त्त्र्ण्यते हें ग्रायते हें ग्रायते मञ्जीग्रा । नगर विनः अने साम दे सिन्या हुन प्रमेया । मने मान्य प्र में क्षेत्रकी न में कारी में कारी | विकाग्यानकाराया दें न स्विकर के के म्'हे'सूर'यहंद्'लु'तिरे त्यत्'त्यमुरतदे महादयस् ।

हे' तर्जें पर्वः वर्षेत्र त्या गृर्वेत्यापाद नेपय। । मा वरि द्वेत्र यत्र त्रिरपर चैन चैन के त्रा । । दर्य पर्ने केन प्रति संसे न प्रीता हिन | रर:रेग्'ग्रायानदे:स्र'ळॅग्रायमॅर्| कुर'खर:रर:अ**न** 51 ८वा बी ख्राचा द्वा । स्वर हे व द्वा वी ख्राक्र च ख्रु **ववा । वेर झ** त्वा हे दे ষ্ট্রীন'ম'ষ্ট্রুদ্রা | নুশ্রমের নুদ্রামের দের ভিন্ন বিশ্বাদ্রমা रोबरायान्तरायितसुर। |हॅग्यायस्ययक्षेत्रस्य हस्य। । <u>न्द्रेरबेन्'यने'य'केद'र्घर पश्र्व। भ्रि'ग्रुबर्घनेर बेन्'ग्रैकंकं</u> न न । । विष्यं वेद प्रति प्रतु द के प्रश्चिषा । दिष्यं वेदा विषये तुरासक्रिया । महेन्यं तन्नरायं देशस्रित्य हिन्या । स्वाक्तिक्रेन् र्घेदै:पर्श्वा । ररःप्रवेदःह्यः एष्:बीर्ट्सेद्वःययः प्रवा । पर्वाः দ্দাশ অবিষ্ণাত্র বিশ্ব বিষ্ণাত্র বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব বিশ न्नायदे प्रमृत्य देव प्रमृत्य प्रमा । स्थायदे देव प्रमृत्य प्रम् बेबान्यस्य प्या देवानेबाद्रवृत्तं क्षेत्रेबाद द्ववापाया इयावा व्यव सेन्'स'नमुस'नदे'यगुर'दर्, ग्राहरूक्ष्। ।

 口場点、口部
 「近点」は、口部
 日間
 日

मजुर्'अर्घेन'पर्या । विमन्दर्'न्नुअर्थेशकेयायत्। । तराशेत्रज्ञ र्र्स्यभेषात्। । बर्धान्यम्यस्य कियायत्। । श्रुः बेर्पराय राचेत्र'परा । [प'क्षे:श्रवार्यवाक्षेत्र'प्र'नार्थम । वृत्रवराष्ट्रीटः व्रटः व्रवाधाः नरम्या । द्वारातक्षायायन्विनात्र्वन्यायनः। । हेन्द्रवेयः हनः ब्रॅं'अ'अ'ब्रॅन्'नव्य| |हे'ऋँअ'ब्रह्मद्वेषि"रन'हेब'ळे| |ठुन'रोअक्र श्चेर.इ.श.श्चेशतथा । द्राप्त्रगः समित्रं ह्रीग्राग्वरः ह्यु सरः। । यरवा क्च राजे में प्राची प्राचार । के राज्य विश्व विष्य विश्व विष কর্টেরেনেঝিলব্দেরা বিজ্ঞান্তর্মান্তর্মনির্দিরেরিক্স । ইর **न्**र्वह्र्यप्रकेश्चित्र्व । वे न भेष्यु प्यन्य प्रेर्म्य । वेष्य *श्चितः स्वाञ्चन वा स्वाञ्चन वा स्वाञ्चन स्वाञ्चन स्वाञ्चन स्वाञ्चन स्वाञ्चन स्वाञ्चन स्वाञ्चन स्वाञ्चन स्वाञ्चन* **এ**ব। হি:নৰ্'ই'নৰ্ৰ'্'ৱা'শ্বীন'নথা |মূঁএখনখন:মূ<mark>ন্</mark>ইৰ'ফুন'ৰ্ तर्जुन्यन्। । अञ्चरस्यानस्याधिस्यानेय। । विन्देन्येन्येयः श्चीयः न्याः न्याः स्त्राः । विश्वायश्चन्यः स्वयः स्वयः न्यः स्वयः स्वयः हेय्यः मतिःसगुरःसर्ने गुशुरुषःह्या ।

वित्रित्तित्ति वित्रित्ति । वित्रित्ति वित्रित्ति । वित्रिति । वित्रि । वित्रिति । वित्रिति । वित्रिति । वित्रिति । वित्रिति । वित्रित

<u>क्र</u>ीत्राधित। । तदावर्षेत्रात् क्रुतायाक्केत्रात्ता । गहाग्यातवरा धेन्'द्रम:व्यापाधेन। |येबयावेन्'रमःग्नेयार्श्वेम:वृत्यान। |यमया मुर्यासुरान् मियापापीय। | यहं यरान्ता श्रु नरुन् न्यापाय। । यापरा त्र्तिः चैत्रक्रतस्यत्र्ष्णायः भेत्। । सेवस्यतः क्रेन्यने प्यान्। । इयाब्रेबाब्रेनाचेनापाना । क्रियाध्यानिन हें यया त्या । । । । कुल न् गुन न् न स्व अपा धिव। सिवसाम देंगा दिवस वे गन् त द्वा । न्यत्रिं न्यत्र्र्वश्चर्यं प्यत्ये । भ्रेन् क्रिं न्रः पस्य नेश्य । क्रमाञ्चर-र्मर्स्यम्यश्चर्या । ह्या आहे सम्मार्थसम् न्ना स् चैब'क्रपश'न्द्रशाश्चाप'तचुन'प'षेद। ।विन'नेश'पर'ग्रीश'प'न्यशाशु ऑन्या । त्या गुर्दा स्ट्रा न देश महान्या स्था । देश महान्या या भे· कृष्यद्भः भेत्र्वा विष्यः द्वा विष्यः द्वा विष्यः विषयः विष पर उन् के अद्याप्त का प्रकार वा का की हो दि । पा पर प्रकार प्रकार की की दि । दे'त्राक्रीर्वेद्रायं द्रवयाग्रन् क्षे क्षेत्रायदे त्राय विवाय र गुर्रे हैं। न्वैश्रॅद्युन्यंहेरिः इन्यायः वार्त्रः श्रेर्वे ये कृष्ठ्रः स्वायः यान्यं र्परेः ダベギ!!

मिल्दान्द्रस्ति ज्या इसस्य स्वर्

ब्रांस्युत्रा है: पर्युत्राधायययम् ने ने ने ना निष्युत्राधाययम् । विष्युत्राधाययम् । विषयुत्राधाययम् । विषयप्रवाययम् । विषयप्रवाययम्यम् । विषयप्रवाययम् । विषयप्रवायय

हिन्यम्पद्रिः हिर्छारम्हेश्यय। ।रम्प्राइन्विन्छिर्म् व। | वी:यात्री:विर:रर:वीवायेव। । वुवाय:र्वर:हुवावी वरः त्यः वा । धिन्'त्र'व्विं'तर्भन्'श्चेष्ववन्'र्म्म्या । त्रम्सुन्'ने'स्चन्। वुन्'येन्' षेत्। । धुत्राश्चे द्र 'पाययां द्ये प्रवा । धुत्रा प्रवा द्या प्रवा । वातरी विरायारेन्वराचराळेष्यरात्तुन ।हेन्यांसंर्वेन्वेवरायरा त्तृत्र ।दे'तहेग्'हेद्राम्ययाम्ब्रुग्'गेह्युद्राप्येदा ।गवंद्र'तु |न्द्रां कें ग्रं हु अहेर रराय **८**ष्ट्रिग्'रा'अ'ग्रे**र्'र्र्र**'हर्ग विवा | विवासिर के वार्ष के वार के वार्ष तमगः इन् वित्रमः गुरु है। । ने व्याध्ययः मन् ग् में इस्रामे वियाना निर र्र'र'रुद'विषाभर्पर्पर्षाचेश्रद्याच्युद्राच्युत्राचिः हेष्याचि इस्रवेशवृत्राय। हेर्प्वंद्रिन्द्रां हेर्प्ते द्रिन्द्र्या बरः तुरः के र्वं गर्त। रे क्वका ग्री वरः वका ग्रुपः विषः नुः र्वं वक्षे वियापय। हे पर्व्य के वियायय। विष्णियययाय दे तर्ने पातस्य प ने संवर्ध र है। प्रायम्पर त्र्रिते खुर प्रमुद्दर ने प्रदेश प्रित् हैरा त्र्यं द्वत्रीत्र्यं श्रुवायाध्येव विषयगुरत्री गृह्यस्य ॥

র্রসম্মনের সুঁরি ই গ্রামাগ্রামানের নম। । নের্সার্র রাজ্ব গ্রীমাগ্রামানের বিশ্বীমার্ক্রমার । মান্দরে সুঁরাজ্বানির বিশ্ব यद्म अगुर्पर्दे निश्च त्या ।

यद्म अगुर्प्दे निश्च त्या ।

यद्म प्रस्ति ।

यद्म प्रस्ति

तः प्रमुखक्रित् ह्राक्ष्रस्यः । | द्विस्यमुख्याप्ते द्विस्यक्ष्रस्यः । | द्विस्यमुख्याप्ते । विषे विस्यम् क्ष्रस्य । । श्वित् विस्यम् क्ष्रस्य । । श्वित् विस्यम् विस्यम् । । विषे विस्यम् विद्यम् । । विषे विस्यम् विद्यम् । । विषे विद्यम् विस्यम् विद्यम् विष्यम् विद्यम् विस्यम् विद्यम् विद्यम् विस्यम् विद्यम् विद्यम्यम् विद्यम्यम् विद्यम् विद्यम् विद्यम् विद्यम् विद्य

ଛ୍ଛି ব'ए'८राप'એबरुग्छे'दी। । गुरु'८८'ऍ ग्रु८'ऋव'२५ँ५ ग्री। र्द्धे प्रशासुय प्रतिष्य अपन्य । विष्य द्वार्य **व्या**स्त्र स्वास्त्र प्रशासी केन्-नु-सन्याकुराधियः । स्ट्रीयः । साधियः यस-नु-यन्या-न्यो सन्या मेग के द ज्ञाय प हे द द र दे। | व्याप गुरुय गुरुय गुरुय प द र प दे । व्याप है । धिन्'य'८र्नेन्'य'गुब्'शुच'डेन्'। ।स्व'ह्रंब'धे्ग्'ग्बॅग्'बे'ग्वेन्'स्न् । तर्नरः धरः न् बो द्धरः पञ्चनः वयवा श्रीय। । क्षे: नरः पञ्चनः वयवा स्वरं वयवा स्वरं वयवा स्वरं वयवा स्वरं वयवा क्वॅर'न्रा । तिर्वरान्रान्ते क्वेंप्रायार्यवायायते। । सुन्युवयार्वे वाया राम्बर्यास्त्र ग्रीया । वरायते श्रीयाः सम्बर्धन प्रामी । यरा नुः वर्षेन प्रा রি'স্তুম'উল |উল'ল্যুমক'মমা ব্যাঝাদেৰেকামন্ত্ৰ'মস্তুম'স্তুম' तिहुँ व्याम्बंबाव्या पङ्गेवायगुरापन्यार्थासुयाने प्रविषयाराया प'च प्रच'प'याया हे'पर्ड्द'क्के'व्याद्या प'हर'स्य'र्ख्याव्यादिर सुद्रद्राह्मात्य। द्रद्राचन्याः इवराग्रुम् हुद्र्यम् स्यक्षे। मारके त्र'त्रञ्जुण'तु'ग्वत्र'तु'त्रज्ञा अप्ते'त्'स्त्। ने'त्रत्य'त्रने'त्रवे राग्रेज ग्रुप्ताव्यायगुरातर्भग्रुप्तार्था ।

हे यह व स्व हा अरे व प्राप्त ति । विषय हे प्राप्त है प

प्रस्ति क्षेत्र स्वा क्षेत्र स्व क्

दर्भेग्यायातु पति वर्तु पत्रमापत्र मार्गे । क्रेन् प्रापि हेन प्रापि हेन प्रापि हेन त्यत्र देतः तत्त्व । स्वत्राभ्यत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वतः कें या पति व र पु र से व र या ग्रामा । स्या कि प र प र पति व र पु र त ही पा कि प ळें न रा ग्री : प्रेन : प्रत्या : विष्या : विष्या : विष्या : विषया : व ळे देर र्पे पब्र पार्व देर जीव। विश्वास्त्रं त्रान्यं स्थ्यं त्र धिव।। विद्याग्राह्मराया। विद्यास्त्राह्मरायाः यन्य। हेपर्ड्वाकार्यम्यम्बन्द्रम्क्रान्त्रकार्यन्यस्तिन् बुर बुर परा देविया जैर ख्या रुपा हुपा हु महामा अर्द र पारी अहर सुग्पति'यम् द्रार्थात्र विष्यं प्रान्थित पान्य विषय विष्य विष्य विषय विषय ग्वर्द्दर्भाद्यवातीं व्यवाती व्यवाती हेव्ती वा ग्वर्द्ध व्यव्याती वा बाळ्यान्यार्ह्म् वार्च । नव्याव्याप्तिःवाद्यव्यायावह्णानीवया ग्न्ययाग्युम्यप्तिः र्र्त्रम्म

명'로'되써도'극라'됐도!

त्यं गुउ । हे पर्वत्ये सम्मानि हे न प्राचि स्वापि स्वाप स्वापि स्वाप स्वापि स्वापि स्वापि स्वापि स्वापि स्वापि स्वापि स्वापि स्वाप स्वापि स्वाप स्वापि स्वाप स्वाप

प्राच्यांत्रा हेर्प्त व्याप्ता हेर्प्त व्याप्त व्यापत व्य

यहव्यव्यात्र्यतिव्यव्यात्रात्तुन्। । यात्रीन्यत्य्वास्रास्य व। ।तन्त्रन्नभून हत्रान्नभूञ्चेव। प्रिन् र्रोववा वापनामायायाया है। विंध्वायर्भप्यस्य वर्षायर्भवाष्याय्यस्य स्थित्। हिन्यः इंटय:बुब:अंप:इव:बीव। ।त्र:बी:८श्चिप:विश्वश्चर्य:व्यः वर्ध:वी। बर्ळेन'न'सु'नकुन'न'न'सु'र्राया । विंक्ष'लयानन्नन्न्य'यावाराहे। । के र्षेत्र'र्खेग'म्कॅर'घुरु'रादेश्चरा श्चेत'प्रेत्। ।र्खेग'म्कॅर'र्खेररु'र्न्ट्रन्नस *६व'गुव। । ह*'ने भेन्या अध्याने न व। । हिं न हे संयुक्त न हें कुँ वेया । प्रिंटः ग्रॅंट् 'पाळे पाया या वी । के ह्रें वाया राष्ट्रीया प्रिं इयाञ्चेन'भेन। ।रोराञ्चेर्चेर्यानेन'त्रसाद्न'गुन्। ।हियाग्चेहेर' छत्रै अपेन्य। निवादर्भन्य हित्य विष्य । वाद हे देवा विषय पतिः श्चन्यक्रम् प्रिन्। । श्चनः र्त्ताः नेत्रः । श्चनः श्चनः । श्चनः श्चनः । श्वनः श्वनः । श्वनः श्वनः । श्वनः र्ट्रें के के इंदर्श । यद रण ग्वर के दे भेग प्राप्त । कें गहेका तम्नेन्द्राक्षेतम् म्विन्द्रान्त्रा विकामहान्यास्य हर्षाः समका बर्ह्मण्डू-प्न्राप्तरमुद्राते। प्रविश्वस्त्र्यण्यह्मश्राप्त्रम्यात्र्रम्या **छे**न्पतिन्द्रानकत्सुत। ग्रेग्'झग्'झै'तात्त्र द्रापक् हॅं ग्राङ्ग्

मल्यां गर्डगः सुनः मध्या द्वा ने नहा हे पर्व न न स्व हैं पा इवका दिनः त्रेः श्वः न्य न्यं य न्येनया है। स्याः हेः विषायास्य स्यान्यः की क्रेस्वः न्यन्याः इन्पारिक्षेत्रप्तित्र्व्यास्य इन्द्रिन्यास्य इन्द्रिन्या ५५'रा'ळे'प'विषा'र्भ५'तेर। देराईव'रासकी सरासंविषा पे ५ तुस्व क्षा हेरद्रगप्राया हें पर्वन गुरुष्ट न प्रमाष्ट्र प्रमा में विवायिन हेर देन्'इयरा'य'न्'व्रवाणीकंन'र्ह्मून'वृद्धन्ययम् विव्नेन् অ'ব ইন্ট'ধ্যম'কুম'ক'ঝ'ম'ম**র**'ম। 機大・動力・イン・イン・マッカック पर्वयम्बर्धस्य द्वार हो स्पति । स्वयः कर्षाः । स्वयः कर्षाः । **ॅइं**। क्षेत्र व क्षेत्र ग्रीवाया अर तितृष्ठी तात्र वारा तर वह वाव विराय हेंग्''''' त्रवायाप्तित्ते । देन्'रम्'इवशन्म'यहत्यप्तिः श्रूतापाकीत्तुगानित **Ĕ**'口ਫ਼ੑਫ਼'ਸ਼ੵੑਫ਼ੑਫ਼ੑਸ਼ਸ਼੶ਸ਼ਜ਼੶ਸ਼ਜ਼੶ਜ਼ਫ਼ੑਜ਼ਖ਼ਫ਼ੑਜ਼੶ਫ਼ੑਜ਼ਖ਼ਫ਼ੑਜ਼੶ਫ਼ੑਜ਼ ग्रुम्पायाय। मिन्दाने। सिन्दोन्देन्द्रीयान्द्रापाने सून्पान्द्रव्यायान <u>न्ये र तुन्त्राक्रकार्क्रका गहुन प्रावेश विष्ट्रिन पर तृश्यका</u> हेर्न्यून्पित्रवर्न्द्रेपर्द्वर्ग्युवर्श्वरम् स्वास्त्र्रेष्वर्ग्यत्रेष्व 211

য়्यत्याम्ब्यायाम्याम्ब्राचित्रायास्त्रम् । व्रियातित्र स्वायाक्षेत्रम्परः स्वायाञ्चर् । व्रियाः स्वायाः स्वायः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायः स्वयः स वदात्रीं पक्षित्र वित्र प्रा । महाराष्ट्र त्या । पहिनाता क्षे^{क्}र्'नेश्रप'भेव। । सग्रन्व'ग्रॅन्'र्र्न्'त्रन्न'कु'त्र्ज् । ग्रेव'स র্ভুল'ঘ'দরামামার্লিদ। । খ্রীল'ঘ'ডর'নুল'লী'র্ভুদ'র্ল'র বু। । শুদ'দর্ভুর' यहेव'प'इवकायक्रग'प'भेव। । ५वाववबाद्यव'वाचन'होराद्र।। न्यान्यवान्यवार्याः स्प्रान्यवागन्त। । कॅवाज्ञन्विनायतेः संवया त्र। । गून् रेक्ष रेक्ष पाइवलकुल वद्या गून्त। । व्राक्ष ज्ञव न्न यतुर् छे पद्म । वार पहे व पहे व पा इ व श कु ता व व पा व नि । प्रा **छैन्'र्रो'नदे'अपर-'८८८। । न-'मशुन्रा'नशुन्राप'**द्रबरा'कुल' वसान्त। । सम्नेश्रीन्यतित्रिंदस्तित्। । व्यातक्ता बारवाइबबारवावदान्ता विवित्रातातुनानीळेत्यात् । । नाता ब्रेलब्रेलप्रह्मकार्बेट्रविट्रव्यत्र । । तक्षेप्यत्याकेष्वरेशेयार्केष्ट्य।। यग्वाप्यसिव्ययः प्रस्थास्य स्था । दिः तद्भते तुर्वा वृहेवा श्रुप्त स्था । न्यापतिक्रं भीगायायग्वाय। विक्तं सुत्र सुत्र सेन् व्यापतायायः बेर्। । शुरुषिं पञ्चलापार्यापति केंद्रा । प्रापदि केंद्रातात रूर् बाह्य से १ । विवित्र निर्देश हिया स्वा स्वा । स्वा स्वा स्वा से साम इनार्चनाचेत्। । इंबामायायात्वाक्षेत्राक्षेत्राचे । द्वायास्यात्वा तुना तुना नहन्ना । प्रन्पन्न नामक स्था के द्वार्थ है। । देवा

म्ब्राह्म स्वाद्य विक्रिय विक

चतुन् डेदिः कर। । त्र्में इवर्गं चने केन त्या तात्र में न वर्ष न प्रति। । हे भिन्पतिकार्वे रासुष्ठिन्यान्हेन्। । नेवानेयान्नेयानेयाहेन्या षर्द्र। । क्षेत्रापर्देश्यापर्देश्याप्त्रीयात्राच्या न्यन्दिन्रस्थेत्। । मन्यप्रायन् अध्यक्षे मन्द्राक्षे । मन्यप्रायम् त् तुत्रे हुता तुः व्यन् विनः ग्रत। । देश ग्री वा देश ग्री वा व्यन् विनः ग्रत। । हेना हुंता रु व्यान वित्तान्त । । यहंन मनमा यहंन मनमा सु व्यान वित्त ग्रत। । कें तरे तारून प्रत्यक्ष रंदा । तके न स्र क्रिय स्र है। । तक्षेपार्वण ननवारी स्वार् प्राप्ताविमान्ता । व्राप्तम् वीमान चलेन पुन्य वस्य प्रता । प्रस्कर में हेया यर र प्रसंकी । रहे मन्यात्मितिः संप्रति व्यञ्चय । क्षेत्रनि न्नः क्षेष्याननः मृत्यावा । क्षात्रन मविद्रातु मुताताम भेषा । सम्त्र स्वेद 'ग्री' वर्षे द्रा गृह्य स्वेद 'ग्री वर्षे द्रा गृह्य स्वेद 'ग्री वर्षे द ग्रा । विर्भेग्पदेश्वयाययेत्रम्यया । न्युताराधिन्यय त्रिंत्र्भंग शुवा । र्मण के व शिवर्त्र मिव व तस्ति व तस्ति व व त्युर्वेन्'त्र्र्न्'वृह्यत्व्त्वि । विन्'स्र्येष्ट्रव्वाप्त्वेष प्रत्में स्ट्रेस्त्वा | प्राक्ष्यां हैं हे हैं व. प्राश्चर्या | वर्ष्ट्रेस्त्यां व्याप्त्रा | वर्ष्ट्रेस्यां वर्ट्रेस्यां वर्ष्ट्रेस्यां वर्ट्यां वर्षेत्रेस्यां वर्ट्यां वर्ट्रेस्यां वर्ट्यां वर्यां वर्ट्यां वर्यां वर्ट्यां वर्यां

| 一世元代の | 1900年 | 1

154'461'8'A'A'

व्यां गुंद्रं हे त्रहेव के सार्रा ने के स्थान है न के स्वर्ण के

हे न्दर्भ म्रत्भे अपरी द्वारा है राय। । विस्रापने पा कुरा चत्रेन् ग्रीयायमित्र मुर्या । त्रुषा श्रूषा दे प्रवास ये विद्या प्रवास विद्या । वा मन्'यायकैरामन्'वॅरमुन्। । तिनु'तहें 'वेदामते'ग्येनम् ज्ञाता। न्देग्स्रर्र्त्र्र्त्र्र्य्य्य्य्य्य्य्य्ये । द्व्रुःह्वंन्य्य्येय्य्ये व्या । श्री श्रेन खुन प्रान् में ब्राप्य प्रान् । ति है ग है ब्राह्म ग गे हि अ व्याञ्चरवा ।तस्तानु'न्वंन'तह्न्'वेन्'यक्तन्। ।वाव्यातर्न्न र्भेक्ष्यमञ्चनसम्बद्धाः । विवसम्बद्धाः पदिन्वेवस्कृत् मन्। । हु वितालियां के के सामन | निव्हान स्ति हेन सेन प्रकार ने । मून स ८ दॅर देवया दर्दर अर प्राधिय। । विषय द्रारी विस्तर प्राधिय। न्दरान्- वुन्किन्धरान् न्यान् न्यान् निहान् विद्यान् विद्यान्य के व्यापन्। । व्यापानः व्याक्षणं ध्यापानः वृतः पन्। । व्यानः दे त्या इयराक्षाः हुपान्। । सुन्दराख्याः प्रतिन्दर्भागः प्रया । विद्या नुब्रम्यान्यान् भू अने व्यक्षेत् अनुस्य म् या गुन्ता र्या पुन्ता रामा रश्रापा गुरुषा व्यन्ते हे पर्व व्याप्त या व्याप्त व्याप्त व्यापा या त्यापा या त्यापा या त्यापा या त्यापा या त्य

च्छन्याम् भिन्दंन्यास्य स्वरायस्य स्वरायस्य

स्याह्म न्याह्म न्या । प्राप्ताहम स्था । प्राप्ताहम स्य । प्राप्ताहम स्था । प्राप्ताहम स्था । प्राप्ताहम स्था । प्राप्त

स्ति । विकानश्चराया । श्वानश्चराया । विकानश्चराया । विकानश्चराया

प्रमास्त्रम् । विमाणक्षाम्याण्यान्त्रम्यान्त्रम् मेणक्ष्रम् । ने प्रमाणक्ष्याः । ने प्रमाणक्ष्यः । ने प्रमाणक्षयः । ने प्रमा

रक्षकुद्दः यक्षञ्चायदे यम् त्याद्वायम् विद्यायक्ष्यम् विद्यायक्षयम् विद्यायक्षयम्यविद्यायक्षयम् विद्यायक्षयम् विद्यायक्यम् विद्यायक्षयम् विद्यायक्ययक्षयम् विद्यायक्षयम् विद्यायक्षयम् विद्यायक्षयम् विद्यायक्षयम् विद्यायक्षयम्

ष्ठे दे ज्ञेषयर् रः स्वारा स्वे। । ज्ञुनः दे रायाययात ह्यारा पेदा । धैने'म्भून्'न्द्रन्थयायय। । १८४४'ग्रॅन्र्'न्द्र्येन् चर्यं चर्च ५ १६ चर्च ५ १६ ६ १ । विद्या यह ५ १ । यह ५ ५ १ न्दिन्'ने'क्रे'भय'र्'ने सञ्चर्'द्रसङ्क्ष्याय्युय। छु'वेन'र्'कुर'द्रद्रात्युर हे.वैट्विर्वरावयश्वश्वश्चित्यात्र्याच्यश्चित्राच्या इव्याच्या तरेते'मॅबाचनुबाववा । वार्ववादा'त्रे'वेर'कु'धेबातव्हर्। । gaबा न्म्क्रेम् हिते शुक्ष व्यापा । व्यापा विवादा या हे वा स्वापा या निवादा या है वा स्वापा स्वापा स्वापा स्वापा स्व त्सुर। । नगर्यापानुनाञ्चनानिनाचेरानगर्य। । क्षेप्यनायात्रात्राती नम् क्षेत्र हुन्। । वेदाना बुन्कर्से । यन दुन निर्मा नी है । यस दुन ॅॅंट्-तु'ढ़्रेष'त्य'त्र'ह्रेद'र्दे'येग',तृ'ढ़ॅ्व'द्रश'टे'नदे'बॅ्श'क्रुंद्रप'झेर'प'हे''''''' मेगाळेव में र स्ति ह वें वाया । ति विराम र गाया মর্ব্র মানু রা মহা। क्रपार्श्वप्रवाही । अस्पर्यायत्वर्त्पराध्यायराष्ट्रीता । तेपारावराष्ट्री रेगदराय। वियागहारवार्य। यमहायान्यकेग्नी के यस मुद्देर सुवर्गिर्मेग्र,म्मल्य रहार्द्रे वायेन्यां सुरायार्गुं क्येर्सेन्य्यायः न्यायः विवायायक्ष स्वायायकार्से हेन्द्राव्यायकार्ये प्रायायकारीकारावाद्या

क्षेत्रः भेष्ठा स्यान्यः व्यान्यं त्राप्तः भेष्ठा स्यान् । व्यान्यः व्यायः व्यायः व्याव्यः व्यायः व्या

क्ष्रीं स्वर्क्ष क्ष्रीं स्वर्क्ष विश्व क्ष्रीं स्वर्क्ष क्ष्रीं स्वर्व क्ष्रिं क्ष्रीं स्वर्क्ष क्ष्रीं स्वर्वे क्ष्रीं स्वर्क्ष क्ष्रीं स्वर्क्ष क्ष्रीं स्वर्क्ष क्ष्रीं स्वर्क्ष क्ष्रीं स्वर्वे क्ष्रीं स्वर्वे क्ष्रीं स्वर्क्ष क्ष्रीं स्वर्वे क्ष्रिते क्ष्रीं स्वर्वे क्ष्रिते क्ष्रीं स्वर्वे क्ष्रिते क्ष्रिते क्ष्रीं क्ष्रिते क्ष्रीं क्ष्रिते क्ष्रिते क्ष्रिते क्ष्रिते

तुः गृडेगः गृश्चर् प्रतः प्रतः छुनः य। वितः वित्रति स्वतः स्वेतः स्व रगः प्रयासय। विष्यान् यसः सङ्गेत्रं स्वातः । विस्तः स्वेनः गृत्ययसः शुन्यत्यत्यत्व हुन्। तिः नहिन् नहिन् नहिन् नहिन् नहिन् स्तर वाक्षणवारोवायाञ्चरवादवादी । रे.सिंन्'न् मेंद्रपातहीत व्हरादा। **६**म.श्र-्रद्यायुप्-६वादायवात सुन्। । तयम् वात हेवाये संप ठत्। विरायः व वार्यस्य श्रम्यावयाग्रम्। विवायायेन् विवा **ब**र्भेर्भुत्रवा । यर्ने केव भग्ने सुग्रास्य त्युरः। । यः ग्रिगः न्र्संद्र'त्र'रक्षकुर'य। ।त्रिंदरयरक्कि'पदिसंघाठव। ।तुःह्रदे RATITATO (A শ ব) | সেন্ট্র্'ব্রিব'র প্র শ ব) **प**्रवश्चरात्वासुवस्यस्य द्वाता । तुःविष्यत्यात्वास्य द्वातास्य म। । ५ भुः ५ सः हसः ५ र त्या वा ग्रुपः। । इसा त ५ से वा सार्वे वा ना से वा ना मञ्जर हुरा । ब्रां अर्थे मार्र में ब्रां के विष्य । विष्य वार में राज कर ह्र न व्ययस्य हु। । कुन् 'द्यायस्य कुं 'द्र ने व्यय ने ने पाय थि। । वि. न के ना ग्रॅव'र्र'रराखराय। ।क्रेर'व्यार्याक्रंयवर्र'र्वेर्यादा। <u> इश्चेत्र्यत्यानवेद्र'र्यत्र्यं न्र्ययाया । ।त्यन् न्रीः संभ्रायकेः</u> यर। वि'द्धन्यक्षे क्षेत्र'तर्मन'त्रवयायान् केषा । तु'नकेन'न्यं व पर्ेश्चेर्'यामस्यस्यरा | रर्श्येयस्य न'सर्नेरपर। । क्वेंयप कुन्'त्र'हेब्'डेव्'अर्'।। वेश्व'व्युट्याद्यार्याद्यार्ट्याद्यार् **र्युन**'ग्रुब'ग्रुन'र्स्के विन्तरम् । सर्वे ब'न्'र्सन्य'या । न्युन्यप्य'र्सदेः ग्रयप्रस्थित्ग्य। संस्थितं भेत्रध्यस्य स्थान् स्थान्य ब्रीयानेगान्द्रयायगुरादर्भ गहारवार्थ। ।

ह्यान्तराही त्रंद्रात्रें प्राप्त ह्यान्तराहिता विद्रार्थ प्राप्त । विद्रार्थ प्राप्त विद्रार्थ प्राप्त विद्रार्थ प्राप्त विद्रार्थ । विद्रार्थ प्राप्त विद्रार्थ वि

सन्त्रत्रत्रे हिन्द्रत्या । विस्त्रत्या । विस्त्राचे विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या विद्या । विस्त्राचे विद्या विद्य

बियालुका प्रया हे पर्वत्युवा ग्रीका म्याख्य प्रयासि हिं म्याख्य प्रयासि हिं में हा खुँ न प्रयो वर्ग म्यान स्थापन हो पर्वत्य ग्रीका म्याख्य प्रयासि हिं में हा खुँ न प्रयोध

शुक्षांत्री ।

शुक्षांत्राकृत्वा श्रुव्यात्रीव्यावृत्त्राव्याः श्रुव्याः ।

शुक्षांत्राकृत्रां श्रुव्याः स्वार्णेन् स्वार्णेन्नेन् स्वार्णेन् स्वार्णेन् स्वार्णेन् स्वार्णेन् स्वार्णेन् स्वार्णेन् स्वार्णेन्यं स्वार्णेन्यं

त्त्रियहेत्यहा | विद्याहेत्यहा | विद्याहेत्यह

श्रुवायक्ष्माश्रीतिवय्यात् व्याप्तात् त्रायात् त्र्या । प्राप्त व्याप्त व्यापत व्याप्त व्याप्त व्यापत व्यापत

प्रवाद्या । नेश्वर्षण्या । क्ष्यं प्रवाद्या । व्यक्षण्या । व्यव्यक्षण्या । व्यक्षण्या । व्यवक्षण्या । व्यक्षण्या । व्यक्ष

नग्र'निश'नहेनश'क्रे'त्रूर।

ब्रांगुंड। हेन्द्वयंश्यान्त्राहेन्द्वयंश्याः वित्राहेन्द्वयंश्याः वित्राहेन्द्वयंश्याः वित्राहेन्द्वयंश्याः वित्राहेन्द्वयंश्याः वित्राहेन्द्वयंश्याः वित्राहेन्द्वयंश्याः वित्राहेन्द्वयंश्याः वित्राहेन्द्वयंश्याः वित्राहेन्द्वयं वित्राहे

मरायान् में ययान्त्रिंदि हैं सार्त्रिंदि हुता हित्। । यान्त्राहेत् **घर्त्र**पुर्न्या**स्ट**प्र<u>दे</u>भिद्या । सल्बर्न्धे दुस्य विश्वराष्ट्रस्य दे। **८**८ : बेर् प्राप्त के कर के राज्य विकास के का का का कि का ह्रवः पंत्रः यन् गृतुः श्चॅराञ्चः रूक्षाग्रीय। । वित्ययेनः वियाधिनः तहेत् य **छे**न'यन। विश्ववेन'क्रॅबल'क्रन'भेगनेव'ळेग'न्नन'र्मर हुँवा। वेश ग्रुत्यव्या नेयपरक्ष्यन्ति।व्ययर्थेपन्न्ययायः ५२.ठेग'यवग'व'सव्। श्वापंबर'व'र्मेर'बल'र्पेग'अ'पश्चेपलवराधेर' वाबी नेव पर तेव वा नेव वा सर में वा वा में ति विर नु'त हुव ति वे हेव' **८**२ त्याबेब्पा केबाब केबाग्रसा गुनाम कंबाधेव। यन कंबापा त्याय वार्यन वा हुर्-इं-रे-ल-पन्ने वायकार्यव- हव-रे-रे-ल। विस्वारीयवापक्रीन् वदान्य **ष**द्रतेवयत्त्वत्त्व्यत्त्वेद्रप्रम् निव्यत्त्वेद्रा दर-र्'प्रक्ष्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यक्ति। प्रम्राञ्च्याप्रवेश्वव्यक्ति। **अ**.मील.व.त्रस्त्रं प्रत्यायः विश्वत्यायः व्रेश्वत्यः व्रेश्वर्यः व्रेश Bति:यम्रत्याक्ष्त्रंत्त्यम्। यर इ.मू.क्ष्याञ्च व.मू.व.मू.मू.मू.मू.मू.मू.मू **प्रसाद क्षेत्र में सारा गरिंग गुरा केर 'री गर् करार ग्राम गरें यर व गरा** चर्चवर्षात् सात्रुचानुसावेन्'ध्या स्थान्डेन्'र्स्रेन'रेन्'साने'र्स्न्नेरापा महेन्वराष्ट्रियापरित्यण्येशिक्षण्यापरात्रा वेयाप्याप्याप्या

८दे ग्रुट्यार्थे ।

षदः बुंब दर प्रंब यद्याद्द राम अवा । समाय देव यदे द्वेयका ने'क्षे'केरायेर। विग'रुव'रार्रायं प्र'हेरी विंहां लग'र्सर'या से तर न्वत् । श्रिक्वेर्प्यत्वः स्राप्तात्वा । दश्चात्राशे प्रवर्षाः प्रवर बेरा । बिळें सॅरप्य बिलेशया । ब्रुव में बिषे दय र छें र पिता हिन्देशपरान्याक्रं श्रायहेन्द्र्ग्नियात्। । अकॅन्पावित्रायान्यात्या सुत्र। भुगरा नद्या न् मंद्र सक्रमा नहुसाय वुत्र। विनदा हें ने हु स हे'यागुरा |वे'राम'रागवेरायागुरा । श्चिर्पपाय रॉ'येन'यामें त्या । দর নেই র'ঝার্ঝামাঝাঝীঝা । নহ'কুর্'ঠঝার্হ'মস্কুর'মার্কুর্। । উষা वस्याभिन होन व सन्धि न मेंबा । प्रवाभिन सन्धि हुन संधिन। ।ने प्रवेद:कुन्'स'ओ ८र्चें न'क्रेंश | विरागश्चरवायवा धर'प्रिन'इवया ब् रेने इंबर्ग्ने श्रु त्ये बेबर्भन त्य विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र विद्यास्त्र ५'तुर'न्न्ग'रुग'रुवर्गेक्षराश्चित्रंहिं,'न्र'खुर'व्याग्न'विष्याश्चिर्य न्नःवयान्तः ववनः प्रमातुः विषयाया है। पर्ववः श्रीवयावया हिन् इयरायान्यायेष्यार्थान्यायम्नायाय्वत्यायम् ব্যাশ্বাদেশ্যনা উনাগ্রন্ত্র্মেরাশ্বাদ্রন্দের্ভ্রন্দেরা মের <u> ब्रिन्'रन'क्यरातारने ब्रि'गुव-ज़्म्यर मर्यादने क्षूर्य वर्गाव विष्णाः</u> सगुरः दर्भः गहारशः स।।

 तकी |ने'छैर'न्य'रूयायर्न'व'तेनया | हु'यते'र्नेर'र्स्य'पर्यन्य युन्ध्या निः धैरः श्चेत्रः यान हत्त्वः सेन्या । तहेनाः हेवः न हेवः त्त्व त्रन कुर त्र त्र । दे हिर प्रेश केर प्रेश कर क्र लेप । हु स्रोत्रास्त्रम्यक्षेत्रम्यक्षेत्रम्यक्षेत्रम्यक्षेत्रम्यक्षेत्रम्यः । [मयरां की प्रस्तां प इ.सेन्या । तिर्माष्ठ्यां स्यासित् रायेन्। । ने हैन सुन न न न विन्या वि:सदि:नाम्यायान्यायान्। ।देःपराञ्चापायस्त्राया ग्नवरारग्रायवराराश्चराञ्चरात्र्रा । ज्ञायायायाराष्ट्रवेदादायेगा। *७ वरा* श्रॅन्'श्रवःप'ञ्च'पन्'रुज्ञ। |र्ह्यंदे'श्रूवःपवेवःपञ्चेवरावः विन्या | विन्यायान्द्र श्रीवर्षः द्वापात्वः । इत्यावर्धे सार्वादि ह्वाया । श्रेव रा सं सं ते सं स्वा स्वा सं स्वा । देश ग्रा र या स्वा प्र मन्ग् सं सं स्वरातासुम्बातात्रीतेववामक्रिन्न् न्यस् मार्श्वर् भवाग्वरः नसम्बन्धराउन्'कॅरायासून'पाय शुराहे। नेनिवन'वराईवानेन'यावन' लट्यट्यू विट्यवाविषया श्रेया मालट्यि में विट्यू । प्रण विषय हे नय 砂瀬マギ」

ବିକ୍'ଶ୍ରି'ଡ଼'ଆଧ୍ରିଦି'ঈ୍କ୍

ব্ স্কাঁ না বা ইং নর্ব কা না ন কা না কা কা কা কা না কা না কা না কা কা কা না ক

तिर्म्हेन्थग्त्रयान्यां पर्नेपितिः ह्यानेन्यान्यान्यान्याः विवासात्रा विवास

म. इव : बळ्या बरायबाडीव : ग्रीबार्डे पया । ५५ ' त. द्वारी स्राप्त लार्करानिग प्रमेवा वि रता इसराय केराये प्रमा वि प्रमा हा कुल र्मेन्'र्यंत्र हा । व्यन्'राव्यव्यं यानः नेत्रं में खना । व्यः त्रीनः ने त्यः व्यापिता न्त्रा । व. पडीट. ने. पाळ्याचेट. दा । प्र. ट. क. केव. वि. ट. व. <u> न्यायास्याकेष्यत्त्र्व्यांकृतः। । संभायानेयाकंश्विनान्यंवा</u> र्थे : म अने 'त्यार्के बाबेन' द्या | विं न् नार्केन 'पति नें न क्वा तहा द्येग'ळे'अर'र्देव'र्गे'**छर'। ।**ॲ'रप'इयराय'र्क्र राष्ट्रिग'र्न्गेय। ।ॲ'रप ने'ल'र्क्र राबेन्'वा ।बें'न्न्'क्रु'वन्'यंग्रा देशत्रा ।ग्राप्ताया उन्' विव्यागुन्द्र में हुन्। । ब्रें दर्शन्दे त्या क्र स्विव्द में ब्र ने तार्क संयेन् वा विंन्न ही ना श्रुवा छन तहा । वार्यवा श्रुव यावल बेन्'वा बिंन्न्'ल' डे'स बें'त्र् । इंशंड्यं ब्यं यह सम्प्रें व में कुन । । ब्रिन्न सार्मिष्य इयसाय ह्या भेषा | म्यार्मिष्य इयसाय ळ्याचेर्'व। |ॲूर'ट्रॉफॅर'व्याउताय'धेव। |सूग्'न्र हवयायाळ्या वैना-(न्या क्षिना-मन्द्रवयात्मक्ष्यवे (-वा । श्वनःत्मविनः नशुक्र न न प्राची । प्रवास स्वयाय के समिप प्राची । प्रवास

स्यारात्रहरूक्षेत्रवा । प्राप्त राष्ट्राय प्रमाण विकास कर्या । विकास क्ष्य कर्या प्रमाण विकास कर्या । विकास क्ष्य कर्या कर्या । विकास क्ष्य कर्या क्ष्य क्ष्य कर्या । विकास क्ष्य कर्या क्ष्य क्ष्य कर्या । विकास क्ष्य कर्या क्ष्य क्ष्य कर्या । विकास क्ष्य क् क्ष्य क्ष्य

चित्रक्तःश्चित्राच्युं व्यव्यान्त्रः वित्रक्ष्याव्याः वित्रक्ष्याव्याः वित्रक्ष्याव्याः वित्रक्ष्याव्याः वित्रक्ष्याव्याः वित्रक्ष्याव्याः वित्रक्ष्याव्याः वित्रक्षयाः वित्

व्यायया । त्रःक्ष्णंत्रः व्यायः व्यः व्यायः व्यः व्यायः व

₹·देःतळरःळेव'यव'कर'वषा ।ञ्च'ञ्चरयर'रा'यव छर्'छै। । त्रुपार्चपाकुन्।पतिन्त्रायाया । गर्वस्यापात नेपर्यार्थ होत् गर्के साह्रे पर्या म्बीगईग्'के'त्रित्रेप्त्व'क्रेम्'क्। ।त्रुप'क्र्म'अ'यल्प्राच्ये। 13 बराप्त्रेव प्रज्ञत्याञ्चारेप्यते। ।८.क्रयाहेव ५ गाव वर्षमा गुश्यायाप्त्रया । हुन्रह्रियोपत्रायेन् क्विंन्यानी । न्येर्यं देश्वर्यमधीराजं न् तु परिराधन व तर्के पात्र । । क्वांपायेन पार्श्व ने पार्श्व ने पार्श्व । पार्श्व व ব'দ্মন্মের্মান্তীব'নক্রনম্মা |ঐঅপ্র'ক্র'রঅমারীমান'ন্। | न्येर्न्त हित्र प्रश्चित्र हेत्। विक्रंत हेत् यून प्राप्त में रापार हा त्वात्रानेत्रः केन्'रानेत्रं नेपन्। । वाष्यंत्रः त्रान्यतः क्षानेत्रः पक्षत्रः निक्रानेत्रः या। । र्देशश्चराद्वराष्ट्रियाक्षेत्रप्ते । । र्येरव हितर्प्यश्चर्यं व। 12 श्चिराञ्चयशयश्चर्त्रस्यात्रह्य । प्रमृत्यात्रस्यात्रह्यायाः 15 অনুব ব রু কার্মু <u>ন'ন্</u>ম'নের। |गर्स्यानरे'सबाइयबाशुप'य'ने | | न्येरव हैरद्रायग्रीकार्च वा । इद म्प्यायकातात ग्रेन् पात्रा । दे न्यस्यत्युत्रपार्श्वेरेन्। ।८.क्र्याकृत्कृत्रस्यान्यसर्मन्या

मिन्'न्सद्'हेल'ग्रीक्'न्स्द्र'यादेव । १२३८ द'हे'तर् प्रमीकार्य द। श्रन्ते, बार्यायाय हुं. य. प्रदा । विद्यार खेर पा हूं रे परी **| 취외'디** व्यवानियान्त्रिं स्वा क्वा । क्वा हेन् व्यविताता हैन पानी । न्ये र द €'तर्'प्रग्रेशर्'त्। |र्केन्'र्गेष्य्यत्मरःकेन्'र्गत्रा ।हुनःन्ष्य श्रेन्यां क्षेंत्रेन्यते । नार्क्वेन्यां श्रेयव्यायान्त्रात्नेव्या । विनाह्यप्र शियानदि मु 'तर्ह्य कुरा । द्वेर द हे 'तर् 'न के कि के 国, 岛山, इन्रास्त्रं व्याप्तः । तहन्यास्त्रम् व्याप्तः 15'RANTO भु'ग्रुअ'वद्द्,तु'युर। व्रुव'भुरु'दम् र्चेन्'य'ने। ।न्येर'व' **र**ित्र प्रश्रीकार्यः व। १९ गरीकारी मुंलारी मुंलारी । बुंलारी रां त्रें रें पर्ने | राम्नेपर्वाशुं हें ग्रायदे र ग्रुट्यं कुट्ये द्वा | रूट्यं हिलागुरुष्प्रदेव प्रादी । द्येर् दं हे तह प्रगुरु रं द। । वाष्ट्र तह वा ब्रायत्याञ्च ञ्चेग'त्र । विद्यापाचेन्'याञ्चेत्र'वने। ।इतात्र्वेरःशे'ता रक्षराना दिवित् छेष्यकेत्रत्वेषरानी । त्रेर्व् देवहार्षेष र्छ'त्। दिलाग्न्यम् देर्भन्त्रम् १८६ । १८६ न्यम् वर्षः Rदी विस्त्रमें ते. प्रतिविद्यां प्रतिक्षे श्रेष्ठी विविद्यां प्रेट राष्ट्रेव छे र्यन्त्रं गहें रा । यस्य सर्वे रन्ति वे स्वरं वे तमूर्'र्स्य'विग'यहर्। । तम् 'विशक्ष्यवित' श्रेंत 'तय'त रेतय। । विवान्त्रीत्वांत्रवान्त्र्यंत्र्वेत् वित्वाद्याद्यान्त्रीतात्रात्रहेत् तत्त्युरहेत्। ने द्रवर्षकी वर्ष्वराम् विव्यापालम् स्राप्तवर के किया है रात्र प्राप्ता

न्नर्न्त्वा । यहस्य त्राच्य स्वाधित स्व

ମ୍ବର୍ଗ ନାୟ କ୍ଷିୟ ନାର୍ମ୍ବର ବିଶ୍ୱର କ

क्षांत्र प्राया होत्यं द्राया स्वाया होत् । होत्यं क्षां या व्याया होत् । होत्यं क्षां या व्याया होत्यं व्याया होत्यं क्षां या व्याया होत्यं व्याया होत्यं क्षां व्याया होत्यं व्यायाया होत्याया होत्यं व्याया होत्यं व्यायाया होत्यं व्यायाया होत्यं व्याय

स्तिर के कि स्टर्स्स के वाह्न स्था विद्याल के स्था विद्याल क

श्रीर्प्तर्ने पश्चर्या ।

इस्त्राश्री श्री र्यं स्वर्या ।

इस्त्राण्या ।

इस्त्राण्

मुख्या । विश्वस्था । स्टाल्य स्त्रिया स्त्रिया

इसातर्चे राख्यारी के क्वां प्रदेश । व्यां प्रति स्वरायण न वराणिन यांभी । यत्र प्रस्वाय प्रत्ये व्याप्य स्वाप्य तिष्ठिरः श्रुवाचेन्। । देशांग्रुन्सार्था। ने'व्यार्श्वन'वाह्यसाहे' पर्दुत्र ह्य ग है ताय। वायम तार्द्धेत्र य। अ. मेन वी यासुवा या इस या छी वा शुर्ह्भेदः राक्षिमाया विद्यासय। स्वर्तः स्वराह्मायाः स्वर्ता कृदः स्वर्या षे वे राज्य गुर। अभ्रेगपर वे रापश्चीत है पर मग्रे हैं। के राप हुन् <u>कृत्रायानभुत्रानयानत्त्रानिवेषिक्षेत्रयाशुन्यसुगाधित्रम्यायीन्।गुर्हा</u> ऍ'व परु र पति 'समा मुस्याय'सम्बन्धारम् । धेव'रु तर र उर दिया <u>५:हैद'रते'कुन्'रा'पद्य'ग्राक्षंद्र'लापन्५'रिकाक्षेत्रं</u>ज्रारा'मेव'ग्रारका स्। । ने'वयाई-पर्वयः क्रेडिट-2,-पेवयाञ्चयायाक्रीक्रयायाः प्रेयाः यह ता.यु हुन्यम नेपानेपन्यस्य दे। हिन्दीन्यस्य ष्ट्रपट्टि'त<u>र</u>'ॲन्'नेर'पर्या शैंक्षित्'ग्रीक्ष्वपर्या हेंग्'ग्रेन्'यार्पन्'नेर বয়৾ৼ৾৾৾৾৾বর্ত্ত শ্রীলেশব্রা দিনে দীরা শ্রুব দিনে দুঠা ৫ সাঁ দায়ুন দেশ शे.चब.चे.चे। इ.चब्ब.जालन्जून्यवीच्यायाधियातया स्वायर्न्यस् **प**र्-पाद्यन्त्र-सगुर-सर्-पाद्यन्त्रात्रा ।

श्चित्रवावात्रवाद्यंत्रवा । वित्ते त्रेत्रे की गाँप क्रिया

च्यार्थः व्याप्तः व्य स्याप्तः त्री ज्ञान्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्तः व्याप्त च्याः । प्राप्तः व्याप्तः व्य

विवानीका अस्तर मां भवाका कुका मका का न्या ने विद्या की ।

स्वा विवान के का विद्या की निष्य की निष्य के निष्य का का कि निष्य की निष्य की का कि निष्य का का का कि निष्य का का का कि निष्य का का कि निष्य का का कि निष्य का का कि निष्य का का कि निष्य का का का कि निष्य का का का कि निष्य का कि निष्य का का कि निष्य का का कि निष्य का का कि निष्य का क

व वालाता है। पर्वत वालान समाने विन खुन्यत्व पर्वण सपति रुषा हु। हे नर्जुर विषाप बादाया देवाया ग्रीकाकी वर्षे न निर्मा **য়** अवस्ति उत्तः स्राधी द्यापार्ये वाषा स्राधित । स्रीता क्षेत्र । स्रीता स्री यम् गुरु श्री शहे पर्वत देशप्त सुध्याने स्थापत् न देम ति गाया श्रव्याचित्रः विष्यः दिन् श्रेशहे पर्युव् । पिष्यनः वश्रव्यव्याचितः यान्यव्यव्या मामा अर्थे मामा है माने त्रीय हिंद त्या मालु व रापा शुमार त्रा है। मामा मा कैयहर्। ५ देशप्रयम्भारेशप्तर्पापत्री कुं यह के सम्मार्थ कुरापया म्यापायम्वयाङ्कान्वयाम्यानम् विवाञ्चम्याधिवान्। ने स्वयाधि यने प्रवास मिन केर केर केर किया किया स्वाप्त केर प्रवास केर केर केर प्रवास केर केर केर केर केर केर केर केर केर र्देव अङ्ग्रेय हैन द्वार हैन न होता । अङ्ग्रेय द्वार व व व प्राप्त । त्राप्त प्राप्त । त्राप्त प्राप्त । इस्र भेषा राहुण गुव त्राकें स्राय न् न पुरी वर्ष भव है। क्षे के रिपाने पान न न्नेतिक्षित्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रस्थात्रः वित्तित्रः वित्रस्थाः
 न्नेतिक्षाः
 न्नेतिकितिक्षाः
 न ह्रगायहरादराहेगायाग्रांगायाव्याद्वाद्वारायाहराद्वाद् स्टापिद् निश्चर्यात्य। द्र्यं र्व्या श्वीतात्मार्यं तार्रः द्विता तस्याहः स्वित्यक्रिया ष्ट्रन्पर'स्'त्र'नने'प'हे'सु'तु'बहैकातुकायम् स्ति'पने'प'त्रत्र'पेन्'अ हेय। यत्रग्र्न्प्रस्रिस्त्र्र्ग्ये गुड्रस्य द्याय स्रायस्य म्रायस्य

हेप्रमादर्देव उद्यासम्बद्धायात देववा । वित्र क्रमका वेयक उद्य स्रायाष्ट्रयायरम्ब ।यह्नाहेन्द्रः न्राक्षेयन् प्यापा । न्येन हि: इं विषय प्रविद रिक्ट विस्तर्ग । अत् दे वस् तहुव प्रविद रिक्टर मञ्जूष्यग्रुन्। |नेपाक्षेन्संश्रीत्रुष्ट्रे ।ष्ट्रष्येन्केन् श्च.पध्युं । पत्रर्टर्य स्त्रिं प्रश्चर्य हरा । पर्य में या स स्र राय वेत्। । नेर यर त्यर संयुक्षय प्य वेदा । पत्र या वर र्सरः गुरुषः प्रदेशः गुरु। अतः हैवा दशक्षितः अहेव वस्ति। निः क्षेट. स्. ज. य. व. छ्या । क्षिट. ये य. यथार व. क्षेत्र. यथा क्षेट्र. । । ने. ज क्ष कुर्वात्राधिवार्ये। किंग्सिमिसिअयर्यास्या न्यस्य मे न्या त्र प्रत्य क्षा व्याप्त र्स्यायात्रकुर्याहेराताया । व्यात्रयात्र्र्याव्ययात्रम् । दे.कु.कु.व.इयाब्रेब.लटा व्रिंग्य.क.क्य.कु.ट्नेप.रटा ८९ प्रश्चर कर की संघा केर प्रमा । किया महा प्रमाण स्थाप केर सहिता है प्रमाण स्थाप कर स्थाप केर स्थाप कर स्याप कर स्थाप न्य। । धन्द्रन्स्द्रे च्यायार्न्द्रेषा । प्रयाद्रव्हेषानु चर्रा-'वयराचन्। ।चर्रा-'वयराचन्'।यराञ्चर-प्रास्ट्रिन्। ।विन्छेन् हुं चित्रुग् प्रस्तामा । विपः दुः प्रम् ५ द्रम् प्रमः प्रस्ता । दे में प्रमः वहितः पदिन्द्र व्या स्यापिव क्री स्यापिव क्री स्यापित प्राप्त प्राप्त विद्याल्य धदेः सर् दुः यगुरः दर् गगुरुषा स्।

श्चायायायत्त्र्वेत्रेळेषायायाष्ट्रयाया । व्याप्तेयया अ **୷ୖୢ**ୠ୕୲୕୷୷୕ୢୠ୕୶ୢ୕ୠ୕୶ୢୢ୕ୠ୕୕୷୶୲ୄ୴ୡୄ୷ୡ୶ୄୡ୕ୣ୷୷ୠୄଊୖ୵୲ 1म्य शेवरात्व्वव्ययवस्य विवाधिक्य । वेवरावेदात्वव्ययवस्य बर्गे'त्रित् । व्रिंत्रपात्र्रपात्रात्र प्रिंगेत्रात्र ग्राप्त । ग्राप्त्र प्राप्त प्राप्त । **ঐব্'ঘ'ম| |মই':ঘ'য়ৢঢ়'উ৾৾য়'ॲঢ়'য়য়য়৾য়ঢ়| |৸য়**ঢ়য়ৢঢ়'ৼঢ়৾য়ৢয়ৢ **8**)'सद्यापत्। । गृष्ठ'ता'सङ्खेयया**ह्ने**'च'र्ग्ता। । ४५'दा'सया ग्रैया ABप्रां ABप्रां १५ दिन विकास के कि स्टा १ दे की की की की मन्द्रायम्। । तम्पन्दे न्वत्र स्वाप्तम्द्राप्तम्। । वाकेदात्राह्यव्य वैर'न्ग्'त'स्र'। |र'कुल'रर'वर्धर'र्छुन्'र'इवव। |ववाग्री'न्यर' **गै**स'र्येग'परक्षेत्र। । सस्य ह्या ह्या सम्बन्धा । इस ह्येन रव्यवात्र्यां त्रास्टा | भिवायावीवा हे छ स्ववश्राद्र ग्रात् । हिदाब दे रा ळॅगराञ्जॅयाध्यन्भै:८८:ॐसरा। वेदाग्रुटराधरा देट्:८८:ठी इयराक्षेष्ट्रम् प्रस्ताधाराम् ज्ञारा पुरम् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान् विद्यान শৃত্যুদ্রার্থা

स्थिता प्रत्या विकाद कर्या विकाद कर कर्या विकाद कर्या विकाद कर्या विकाद कर्या विकाद कर्या विकाद कर्या

बर-संपन्तराज्याक्ष्यां । धुन्याचेरानुवायाचावावा ब्रॅाव्यः न्दः तत्रदः अर्केद्रः प्रायः सद्येव। । न्दः सः न्दः स्वे वे व्यापदे। । ब्रेड्रपरेप्ररम् गृज्यसुरम्बिष्येत्। । गृहस्यम्बर्भेक्ययात्। । वायश्रायश् हुव्युश्यन्ते प्राप्तेव । प्राया हुविन ने रापाव । विषयप्रि इंत्रान् हरागुत्रायावेंद्र | द्वीपायेययायाप्तराव्य । सार्देश्रे वैरः न् वे प्रते हु। । यर प्रयास के बादी स्वयं प्रयास न । वा स् न् न विः त्या क्ष्माया प्रवेत्। वित्यवेत् व्यान् व्याप्येत्। ्_{स्}न मॅं मसक ठन पॅन 'सुन पेदा | न्तुतामॅं मसक ठन 'सेन 'सुन पेदा | ऍर'ऄर्'ग्रेज्'<mark>ग्'ॡग्'नस्याधेन। ।सु'न्स</mark>क्रंसन्रह्मन्न्नस्य व्याप्रना |नेगाप्रम्यह्निर्भाष्यम् र् क्षेत्रम् । विश्वाम् स्याप्य यर:तु:र्श्चराक्षवादादो वीताहुन्।प्रहुत्।प्रेतु:प्रान्ता हे:पर्वुन् *बुैरः वार्ट्र्यापायवुवापरा* ८५व *रार्व्या*रा वाह्य क्रिया यस्याय प्र व्याह्म म् व्याह्म स्वाहित स्व यय। न्युतानरक्के नदेकु न्दायक्षापान्य न्तुन नुपार्वे विद्यालया यगुरादर् गुसुरकार्य।

<u> বিশ্বের্থ</u> বৃদ্ধের বিষয় বি त्त्व ।कॅस्रायाय्याय्याक्षेत्रात्। । वरायते व्यवस्थात्र नरायस्य । वरायस्य वर्षा R तुन् । नृज्ञेन् व्यक्ष्या धीनः त्यः इन् श्चीनः ता । वयः इन शुन् वः नः सन्धः तुन् मझ्या । तस्य म्यम् अन् अन् । स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा स्वा सम्मान्यन मेश । तनः केन्यने प्रस्तिन्य विश्वेता । स्वार्श्वेता । स्वार्श्वेताः <u> न्यं व'व्यंत्र 'ग्रेन्' ३२'। । न्यं व'यळ्व'न्यं न्यं न्यं त्यं वाग्रेन्'न्न'। ।</u> सुराय सेंग्यि हे छेग् हे ह्या | कॅरायाय ने द्याये ने से रामा | यदर बेर'न्डुयप्यरक्षेग्पर'हेर्। । १८२ यहरत्यन्गदस्य ग्रह्म। षु'नश्रवश्वितःश्चेतःश्चरः स्ट्रां । ।श्चें क्रंश्याग्वेर् न्'यात नुद्रात्र मार्झेयवा । वेदान्य ग्रन्तायवा यन्न रहारा इयवा ग्रेवा वृत्ताया ने ही **छ**ते'ङ्ग'नङ्ग'र्स्यार्स्यारस्य हेन्याद्। क्वॅंन्य्याहे'ङ्ग्रत्युर। देव'कुन् सेयल ठव क्रेनें व दुः धे द्वा व काक्री क्ष्या प्रदूष धरः व ह्या हिंद दुः व हाँ या । वैषानुषामदीत्यव्यनुमादर्भे गुरुम्यार्थे ।

म्बान्त्र में बाब को सेन्। | मान्य त्यक्षेत्र पक्षेत्र पक्षेत्र पक्षेत्र के के के वा प्राप्त का स्वाप्त के वा वा प्राप्त का स्वाप्त का स्वाप्त

लट्न ने से स्ट्रा क्षित्र में स्ट्रा मे स्ट्रा में स्ट्र में स्ट्रा में स्ट्रा में स्ट्रा में स्ट्रा में स्ट्रा में स्ट्

हुन्। र ज्रेते इस क्रेन्य सम्मान । प्रमृन्ध सम्मान | सर्वे दि ति व त्य श्रे शहा हत्य हुँ त्य | विश्व व श्रु त्य य य । रश्रायाञ्च सर्वा ग्रीसाहे पार्श्व वा ग्रीसारे वा वा तु वा ता क्षेत्र साव के वा तु पारा पार ব্রাণান্ত্রনেথ্যা ইনিন্ট্র্ব্র্ব্ব্র্ব্র্র্ন্ত্র্র্ব্র্ব্র্র্ **二公(刘孝)動** बरररारराने स्रायाप्त प्रायम् वर्षा देशा स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त पर्वः इंबायम् ने प्राचित्रं विश्वाय वि **२७%'यते'ॐब'७३'गु३'तोॅर'२'५८'५८'देंर'गे'धुग'२ध्य' य' तहे १४** है। न्यानदिक्रंबाबाञ्चनानात्र्यान्यम्। भेगार्श्वनानामाना मर्डें व'पर' ग्रुर' हैं। । ने'व वा'या प्यवादी ग' में कें। हे' मर्ड्व' व अ बावरार्डे ब्रावया भ्रु.रु.बराञ्चरायार्दा गुरुगारु हुर्नायार्दा भ्रु **8**, र्रंट पप्तः बंशिटः झैलू व श्रीशक्षा बश्चरः वश्चरः तः दर्। हि. ५ शिपः र तवाः वेन् प्रस्वप्रति के ते प्रवास्त्राध्या शुन् हुन प्रस्ति व्यायात्र तसुरः पर्याम् पर्याययारेषा परः तर्षे पार्चयायया द्वारापय। हे पर्वुव त्मक्षेर् हे। बक्रेर् ज्रेवरायर्ग दूर्। व्यवायेद्याय संवाद सुव इयश्या गुर्गा महत्र तर् से न् कि शुन ह न स्तर दे सरे सह न। न न न न यारातुः श्रूषाद्मबद्याक्कुर् ने।यातर् १९६७ अप्तरामकात् श्रवास्तरे वर्षे १०० वर्षा ॅंदर्ने'अ'ने'अर्द्धेन'केशअ**गुर**'दर्ने'ग्**श्र**दक्षा

स्यात्र्र्यः न्दः क्रेन्'तुः यात्र्यं यात्रते । अं प्रेन् पेन् प्रान्तः छ्वा स्दे यात्रे याद्वे । स्टः क्रें क्रं यात्राये प्रेन् प्रान्तः । स्ट्रान्यः वात्रायः ८६ँ वर्ष ८६ँ अते सहित्। । तर जुन् क्विं वस्त के प्रक्षुत प्रत्। । ष्ववरक्षेश्चित्र'र्में द'दर्ने' अन्ते'अर्देन्। । तर्ने ज्ञांत्रर्ने वेश्वेष्ट्रवायर। म्बर्के म्राम्बर्के स्वाप्त स्वापत यते। । शुपाःहण्यान्द्रशाशुपायन्ति अत्रायाद्वा । अस्याशुपाद्वा यस अ'मङ्क'पर। भिन'र्क्केन'क्के'ह्नन'ङ्ग'परने'अ'रे'अहिन। ।रन'वेब' त्रेंद्रकींद्रकेट प्राप्त स्थायन । विषये विषये दे कि विषये दे कि विषये दे कि विषये दे कि विषये के कि विषये के बर्हित्। । तृह्यातह्य विश्वीति हिन्दा प्रत्राया वार्या । वार्याया वार्याया । क्षुप्तांतरी असे ता । वितायविता वित्रे क्षेत्र की बार ता पर । दिवा हःतं बह्य हात्व दि चारे वाह्य । दि चारी वाह्य कारी विद्यापा । र्झें अं कु व र क न ' ये न दि ' या दि ' या दे र या दे दि । । वि ही ' या व द र व द्या या कें न ' या न । । ळवारा हुवा क्षवा राप्त दे सारे स्वर्षेत्। । व्यवा वेदा वहेव में प्राप्त स्वर्मा इन्। वियान्याकेम्यान्द्रिक्रियान्या हिन्दारा ।तन्त्रातुःभुःग्रुयातनैःयानेःवर्दि। । ह्युतन्त्रान्तरा षरके हैं मदी । गवर्ष स्नम्य ग्री मने तह्य बदी कारे वह दि। क्रुरादर्भायारे वार्षेत्। विश्वास्ति वार्यादाविष्ठी विश्वासि । विकेत् क्षं वेर्'तरे वेर्'तरे वारेषा | व्रर'न्नर्न र्'वार त्रापते | ब्रुन्'नाबुद्धः चेलान् इंद्रादन्दिः अस्त्। १८८-ब्रुन्'मः स्रतालबद्ध तमन्त्रायते। । तम् न्ने क्ने ने ने ने ने सम्

त्रेंब्राचित्रक्ष्वाच्यायां । त्रन्तियवान्ग्रह्मायेन्यत्रेन्यत्रेन्यत्रेन्यत्रेन्या व्यल हें गल दें ५ कं ५ के भेश पति। । श्रम स्व गण तार दे पल रहे स रे'बहॅन्। । गन्यसम्ग गिष्ठम्सम् । गन्सम्म ग्रीस ॅॅन्न्'ने'ब्रॅब'यय'दिने'य'रे'यद्दिन्। ।**५यक्रेन्'न्दर्य**शे'न**श्चन्यत्।।** वापत्रत्में क्र्यां क्रून्य वेश्वापत्ने याने याने वार्ष रग्'श्'स्व'परि। वि'क्रुन्'स्'यायानन्यायहेन्। विहेंब्'मेश्र्रिन्त क्षे[.] ह्य प्रति । प्राष्ट्रीय प्रस्थित प्रति । प्राप्ति । प्रति । ्र स्रेट्राश्चेत्'यराकाकृष्यम् । रराजुत्'यसपराक्ष'यहरावर्ष्त्।। देशनशुक्तार्थ। यमायद्विग्निक्षे। हेम्ब्द्राक्षेत्रम्भित्रम् ह्यैत्र गुरु सुर दर्श श्रे सूर प्रतर । यभियय वस तुर्भ स्य स्तर् । सम्ब बर वे। यामबत्हत रहेत्। यामबह्य यामबन्तेर हुआ छ। या यश्रक्ताः वृद्धः वृद्धः व यायविष्यत् वे सूनः तः इवसः हुनः तथ। नरायः वे पार्दिन् श्रीकाने भूरार्धेन प्रति हु यहं व रहे स्वव व रिया व व राज्य । व रिया भूर धेव'ग्रुट्यव्यथ्यगुरः हर्ने ग्रुट्यः या ।

हें श्रां अवस्य स्थान विश्व स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

. श्रें अर्घे र वे र | वे ग्रें य स्वर्ष ग्रें य स्वर्ष हुर य स्वर्ष | य र व हुर स्वर्ष **पे**राबे सब्भावा । द्वित् इयस क्रें सामान ग्रान्त सेवा छन्। । न्याने यन् गुर्म् हुवायां शेर् । । जार्ड संस्वा उत्रह्म स्रोही यम्बुन्यविष्ठरः अवतः वेष्मन्तः । द्वमः प्रवास्यवे स्टायक्षेतः हुन्। त्रा |देन्'रून्'र्ह्हार्स्य सुन्धेन्य भेग्'लन्। |हें'रून्र्रेन्रहे ট্রি-রে'নগ্রথ'নন্ । **্রি.মার্থা, সুর্বা, সুর্বা, বি** तुःश्चॅनःइययः न् न् त्रञ्चे 'न् भन् 'तुःयेन्' भाषे नः भः न् न्। यम्या श्रु राष्ट्रिय पा हे वा अर्थ स्वर् पा हे वा अर्थ स्वर् पा वर्ष भ्रम्याप्तः। अवरात्रुग्'गेपने'मायामम्नु'याधन'र्दे।। इत्यादर्हेर <u> গ্রী'ন্মন'প্রবা'রী'মানকাদা'ন্'রিন'গ্রীবা।</u> অর্মাইবা<u>ন্ন'মুন'র</u>ীরকারে<u>ন্র</u>র है। रोबरा ठव की में ब रु मून ह न या प्रमुब विम्य गुरा न हाम्या हुन य श्रश्चयश्चिश्वीयहेन्'पति'ग्रन्थां प्रतास्य वित्ये वे त्यां के प्रतास्य के प्रतास्य के प्रतास्य के प्रतास्य के प ख्यान्'ॲन्बाबु'ग्रुग्बादा'स्याकेर'त**्रेर'त त्वारा'धेन**'विन्'| **অহে**ব' न्यादीयहूनप्रमान्यभवादी । पुश्चित्रह्मायाम्भित्री हुं तहाता नहाना विश्वें रहे। वितर्धर द्वाळी विवर्धी क्रें रही। ने सर भूरः इ. च शियात्रियाश्चिपः किर्ते ति से से ति ति से स्वता पते'वर्द्र'य'मज्जूर्'प'जुरुपर'हे'मतें।।।।

न्तुःमा न्तुन्यभुःह्यान्तुन्यानु

दे'सु'तुति'यर्द्र'रा'यद्यत्'र्याहेंग्रायि'यद्या देव'देर्राय'वा स्वित्रां ते त्राया वर्षे न्यति वर्षे न्या वरत्या वर्षे न्या वर्या वर्षे न्या वर्षे न्या वर्षे न्या वर्षे न्या गुराक्षर ग्रेन् स्टिम्। सुन्यस्य म्नियानियानकुत्रामराहे पर्वन त्याप्य न्न् ग्यन् संति ई अ सर् न् यतः न् न्यायते भ्रत्याया स्तान् ग्रायः लु न्यः हु र नुस्त्राद्वीर्नायन्यां नुन्यां विषायन्याया विन्यं स्वा निर्मे स्वा निर्मे स्वा विव नु कर वाके व सं विवा नी वार हे पर्द्व माया प्राप्त ロス・ボハ・ロル・酸| न्द्राप्तरम् देर्प्रन्तियम्बर्ष्यास्यास्य स्वर्ष्या ष्ठ्रम् सुतात्र दाश्चे वारः संस्कृत दारा स्थानः त्र विषाः प्रदः तुः रे रा त्या मर्ख्य स्टर्म व वाञ्च वाया महें मुना शुन्न स्तर स्थ्या न मार्ख्य स्तर स्वर्ग स्तर हो। षर्न्'राया वर्रतेययाक्रम् ख्रम्'यव्ययम्न्'राया দিন্দিরমহাথানা मेक्याति ह्यत्या विवाशास्त्रवात्रस्य विवाशास्त्र विवाशास्य विवाशास्त्र विवाशास्त्य विवाशास्त्र विवाशास्त्र विवाशास्त्र विवाशास्त्र विवाशास्त्र विवाशास्त्र विवाशास्त्र विवाशास्त्र विवाशास विवाशास्त्र विवाशास्त्य विगानुरि श्रुवावया कन्यते गृत्तः विगानि व्यवया हे नहिन्ति 甘蔗如闭山如河湖上,致, चन्ग'में न्ग्राराशेयाचरित्र मुन्निन्ना विगवर्देर'र्रानेराहुर'राश्

हे पड्राक्की विषया विषया विषया के विषया

ष्ठित्। त्र विश्व विष्व विश्व विश्व



व्याक्षेत्तिक्षात्त्रत्त्व्याच्याः स्वार्ण्यत्त्राः स्वार्ण्यत्तः स्वार्ण्यतः स्वार्ण्यः स्वार्ण्यतः स्वार्ण्यः स्वर्ण्यः स्वार्ण्यः स्वार्ण्यः स्वार्णतः स्वर्यः स्

विंदाते। बह्दानेश्वर्यन्दाहेन् स्र्राहेन् स्र्राहेन् स्वाहिन् स्ताहिन् स्ताहिन् स्ताहिन् स्ताहिन् स्ताहिन् स्ताहिन् स्ताहिन् स्ताहिन् स्वाहिन् स्ताहिन् स्वाहिन् स्व

र्शें द'त्रे। श्रुष्यायाष्ट्रेद'यरत्पर्यात्र्येत्रेष्येत्'केशाचेत्'केशाचेत्'केरान्येत्' र्हत्'वत्त्राः श्रुष्यायाष्ट्रेद'यरत्पर्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात् য়्र र् र्रे प्रस्ति व्यवस्य म्ह विषय स्वर् स्वर्यार्ये स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर् स्वर

वित्रांत्री केत्रवाराः इवकावारं व विवादाः वित्रां वित

म्नात्र्व्यात्र्व्याय्याः स्त्राय्याः स्त्राय्याः स्त्राय्याः स्त्राय्याः स्त्राय्याः स्त्राय्याः स्त्राय्याः स्त्राय्याः स्त्रायः स्त्रा

संनिश्चेत्यामित्रत्यास्य स्वाप्त स्वाप स्टित्र वित्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स् मिलेक्षापर केप्पर प्रदापि सुर से यर्ग पर त्या गुरू पर पर तु त्वा परा

ब्रॅन्'रु'ब्रेन्'रा'भेव'ग्रुन्यम्या स्यन्व'रुव'रु'रन् हे पर्वन्धे विषय्या श्रीराम्या में **८**घट. प्रत्येश विश्वापश त्रमुत्रः धैरः ग्रॅन्'राक्षेत्रः हे'त्रागुत्रः वी'यर्भन्'रा'त्रनुग्'र्कतः । सुत्रः रोगवा क्विनश्चनम् दर्भवास्त्रेम्। इन्द्रम् दर्वन् प्रथेद। छन् परम् रस् षीतित्राञ्चरान्त्वे वन् पाक्रिया हिष्य राज्या वित्रायया ग्राव्य राज्या **मर्दे: तुष्काराययायाँ या विद्वार्श्वा चार्या चार्या विद्यारा हो जा विद्यारा विद्या** न्सन्तेश्चित्तान्तरत्न्यात्रस्यत्वत्यात्र्यः न्यस्यात्र त्रम् प्राप्ते व व त्राप्ते प्राप्ते व व त्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते प्राप्ते प्राप्त **मॅश्रबायन मॅं।** क्रेन्फिन्फिन् स्वाप्ति क्षेत्र क खन्ययनम् में तकन् केन मन् राहे। यने व्या क्षेत्र मकिन् गुन् केन् सक् **६**८:बॅरः पृत्रेबःग्'त्यूंद्रप्द्रप्'र्यक्ने प्तरे:तुब्दिप्'व्हर्प् देते:ब्हेंद्र्युद् **#**८कालारपार्से ५८ हुनामा हुँववा देशहर्ष वर्ष ५ विष्ठ । यपः तुरः श्रेणः परिभव केवायरी 'कृत्या सेन्या सेन्या स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप **ब्रि**ः सग्राप्तवान् व्यापार्यस्य देन ब्रिन् न् वेशन्न् नुवाहन् पुरिक्षेन् केन बिट्राञ्चन् केंप्पन्न केंद्रायत् न्या है। दायदा श्री केना पायत् दे ह्या यह न भेदिन्द्वापित्। न्द्विन्द्रन्थवादन्दिन् न्व्यन्यानेदेन्द्रन्तुः सुर्वदन् बारकर्। हैन बॅन्युन् ग्रीबान्देश प्राचीत्रा विज्ञान के ज्ञान प्राचीत्रा विज्ञान के ज्ञान प्राचीत्रा

. ष्टरः र्ह्रेशप्पति गानुश्च इयश्यनि द्यापर श्रेण गीलाश्च सहितः इ प्यश्च श्चे स्यापति । दुत्र। त्याय श्चे तिने प्रति प्रति । स्थित श्चे स्थाय स्थित । स्थाय स्थाय स्थाय स्थाय । विष्या अर्थे प्रति द्वा स्थाय स्थाय स्थाय ।

न्'द्रश्र्व्रश्र'न्ने'प्नेश्रस्य हिंद्राध्याय श्रुम्य न्'द्र्य स्थाने विदेश्य स्थाने हिंदि विद्र द्रांत्री वेर कंत् श्रेपनेद्रा कें कंत् श्रेपन्द्रा मास्य ने विदेश्य स्थाने हिंदि विद्र द्रान्य मार्केष न्'विरंपा स्थाने स्थान श्री स्थाने स्थाने हिंदि विद्रा

न् यस् हो पर्व यक्ति विषय वर्षा महत्त्र प्रस्ति वर्षा क्रियं क्रियं वर्षा क्रयं वर्षा क्रियं वर्षा क्रियं वर्षा क्रियं वर्षा वर्षा क्रियं वर्षा वर्षा क्रियं वर्षा वर्षा क्रियं वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा क्रियं वर्षा वर्ष

शुक्षःगुन् क्री अर्वे र क्रूर रु देशा हु र प्र र उन द वा यातर न पर र न पर राया । तहत्त्रं नृष्णु सुरू नृहा । व र् न् व स्था हु स्था हु न हु न हु न स कु त्य अ अ द र तर **ॾ**रः तरायायान्दा भेदात्र्य्यायते देशायते श्रुवायता संस्थायान्दा हर द्वर अर्थेर पर दे , वेश में द्वर वेद निया के स्व के दे थे तर हो र में के स पन्न में कुब्र श्राय प्रमान स्वराधिशहे पर्दु व त्या देन् स्वराधि कुब्र व **या**ग्रस्य सम्बद्धाः स्ट्राक्षेत्रे क्षां वृत्राष्ट्री राग्ना प्रेन् 'क्रुसाप ते'वृत्रका """ ह्यु: यहंबर के लग या नुसामय। हे पर्व द ही न लाद या हि प्रेरे के साव द इत्यत्र व्युं रापाश्चित्राया ५८ । वृष्या श्रीता स्वापित्र रात तुत्रा प्रकार सराया अन्तर्भवत्यसः संक्षेत्रज्ञ न्ग्रः ध्वेत्रक्षेत्रः अत्रव्ये क्षेत्रः अत्रव्ये क्षेत्रः अत्रव्ये क्षेत्रः अत्रव्य ग्रापाततुषाततुग्राद्वयराष्ठिषाराताञ्च स्राष्ट्रीतर्त्राध्य स्राष्ट्री त्रवादीन होन् के इवरायतन होन् के कि कि ता विकास के कि *षानु सदान्द्र सिंद् शुक्ष श्री स्वापन्द्र सिंद्र प्रति श्री सिंद्र सिं ই'ব্'ন*্ন্ৰ্'ভন্'ক্অহাগ্ৰীহাতীঅইন্'নই ক্ৰু'অৰ্ভব্'উ'ম**ন্**ৰ শু গুদু বা वियापन। क्षां दवयाप्री दर्भ वाष्ट्री रही र्स्या द्या रहा। वार्षे पारा वरा र्से रहा ८, दुव ने ' इवश्यव्याद्यां प्राप्त दतराळें नवा ने द्वाया तत्वा प्राप्त न वा में प्राप्त के वा में हे का में के का में किया में क य्यापाविषाक्रिराक्षराप्त्रां विष्याची स्रित्रेष्ठां राष्ट्रियापाद्रवरावर्षरा व्यात्रिरः द्वराव्यावराया भीत्राया क्षावर्षेरः प्रस्ति व्या

द्यग्राञ्चर्तायत्वर्त्त्रत्याः देष्ट्रात्यर्व्यक्तेर्त्यायाय्यर्त्येययाः सर्वेर्त्ताःभिन्नागृष्ठ्रत्याः क्षांविषायव्यत्येत्राच्येयगुर्त्तर्देःग्रुत्याः स्

<u> इत्रास्त्राच्यायात् व्यायात् वृत्रा</u> र्शेन्यः स्वाप्त्रं । द्राप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः स्वाप्तः । स्विन्यः बळवराञे ५ 'पर' १ ६ । श्चिर्यः स्र्यं पायायायाया । विषयाया র্মর্ভির্বাণ্মেম্র্রন্। |নেরাব্দির্মার্ডন্'রামিন্মর্রন্। |র্ক্র गुरःगुन्भुःसुन्यर्मःतु। विभागन्याःस्राध्येवस्त्रं प्रतिस्य। । व्यावायतः त्रत्र्त्र्रं श्रीकाष्ट्रा । क्षु'स्काओ हें षा'करायायवा । दे 'वेद्य <u> इंश्कुर्यं व्या । गुर्वाया न्याङ्गरायने विवयम्या । नेप्याया</u> पञ्चन्'ञ्च'वारि'ञ्च प्रवाहे भैद्। <u>| ह्य प्रवेदि ने भे क्षु प्रवाहित् व्या</u> । ह्य म्मायावित्त्र्र्त्रेतिः इयाक्ष्वागुत्। । यद्यम्मायात्रेत्। । ष्ट्रिन् इं व्यवस्थान व । या स्य के व्यवस्थान व । या स्य के व्यवस्थान । या स्य के व्यवस्थान व व न्नत्। । विश्वकुनः न्ने पञ्चे तर्ने । विश्वकुनः प्रवासाधिः न्ने चया । तथाकुद्भवाञ्चर्ञ्चर् इंस्टिश्यया । द्वेग् चन्न्वराध्यक्षे तर्ग् चस्रवस्याच्याः । नृषीयः इद्यन्तन्याः पर्यदा । सर्वस्यस्यन्ते स षर्ग्यर तर्जे के ने रापते। | गृत्व के त्या सुनि रापते। । रूर्ग्यव र मृत्रेक्षत्यम् वृद्द्रायम् । देक्ष्यरः हुम् नह्यक्षेत्र देद् । । मृत्व にはは、これは、
 にはは、
 にはは、
 にはは、
 には、
 <li

न्रः ह्रेन्यायि दे विराष्ट्र या स्वर्णात् विष्ट्र या स्वर्णात् विराय स्वर्णात् स्वर्ण

ने'न्याहे'न्द्रं न्याहे न्याह

भ्राप्त्रम्य देश्याच्या स्त्रम्य स्त्र

ष्ठतः दर्भेष्ठ स्वया श्रेयहे पर्व द्ये श्रे भ्या श्राम्य द्ये स्या भ्या प्रत्य प्रत्य

न्। यहिन्दिन्दिन्देन्द्रेन्द्र्याः स्वाद्यं क्राव्यं क्र

हें पर्वन् के नियान्त्र। दें निवित् द्वा के निवित् देव के कि निवित्त के निवित

मः ब्रॅब्राययायवर व्रेब्रायम् निर्मायम् व । श्रिः श्रुरायरापतिः विवस व्यत्तर्। । तर्नरः र्ह्णवान् व्यव्यक्षिण्तुः श्रूप्तान्तु । व्रिन् द्रवया नन्ग्यानग्राहेब्दे। । यन्ग्युनहिन्यानग्राहेक्दे। । यग्रा **র্বণ** । দেই শন্ প্রবাধ বিশ্ব ন্বাপ্ত নার্কার বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব ব द्या ह्या प्राप्त । प्रायमा प्राप्त । विश्व । विश्व । विश्व । प्रायम मत्त्रात्परम्य । ध्रत्युं वस्तर् र पर्वा वस्ति । विदर् त्रुव्यायाचेत्रयात्ता । व्यायेष्यायाच्यायाचे क्रीत्रत्या । गुन् मुक्तियातार्श्वेत्रप्रारम्ब । पर्वाचील्यायवित्रच्यात्राः। । इस वरभेर्'त्र्द्रद्र्स'र्र्र' । वर्ष्ठद्रव्यक्र्यं वर्रावेद्रव्यव्या बर्देव'न्गतिवेन'नु'बहतापरस्मि । गन्वेग'यन्ग'ने'इयावराय।। **हुँ**न्'केन'ञ्चन'य'केन'य'न्न'। । तर्दे'वेन'तकन्'व्वकेन'य'न्न'। । ब्रॅग'न्न्'द्वप'यकॅन्'त्व्यान'न्न्। । इयाध्यद्धयानवेश्रुंन्न इयरा । वर्ष्य प्रवित्त वित्त व्यवस्य प्रत्मेष । व्यवस्य प्रवित्र वित्र व मबबारुन्'ता । नाताने'क्वॅबारा'मुबाधैन'वा । बीवॅिं वॅबान्नाताना

श्चराश्चरात्त्रश्चरात्त्रा । विश्वराविद्यत्या । विश्वराव्या । विश्वराव्

ने'न्याह्मेन'म्'इययाष्ट्रियान्याद्मेन

म्या विकास मिन्न स्वर्णि विकास मिन्न स्वर्णि स्वर्ण स्वर्

न्वस्यविष्यः व्याद्यस्य स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वयः स्वर्यः स्वर्यः स्वयः स्वर्यः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्व

ॸॺॕॴय़ॸॱक़ॖॆ॓॔ड़ॱ॔॓ॻऀॱॸज़ॱऀ॓॔ॱऄॗॸॱऒऀॱज़ॕॖॴॳॶॱढ़ॖॎॴॴय़क़क़ॖॆढ़ॱॴॸऀॴज़ॕऄॱॱॱॱॱ ह्यून्'न्न्'ह'पहुन्बायान् मेंबाप्राध्यान्व'हवाह्य हेंवाची'वार्द्रवा तर्भेद्रभगद्गम्य पति श्रुपाप दे स्ट्राश्चित्र नु श्रुर **ঠী**'ন্দ'ল্**শ'মম্বুৰ**'ব্যা मसन्दर्भिर्मेशे न्यूया मन्दर्भिया सन्दर्भिया स्वर्मेश मन्त्रिं स्ति द्राये ने संस्ति मने प्रमान स्ति है स्ति प्रमान स्ति है स्ति प्रमान है त्यायाननायवायुवानक्षेत्रात्रेत्राच्चेत्रायाः स्वित्रायाः क्वीप्रमान् में व्यापने विषय के तर्नः श्रेनः पञ्चनः न्धनः नेशर्ते ग्रुनः उत्तः पञ्चितः प्रवासन् वेनः ने। ग्रुनः र्मितः नगरा नगरानि इस। सहसासि मानुगया हुग्यें ने देना श्च 'अविश्रक्तित्वारा भारत्या या प्रति स्वत्या वि क्रिया निरा 梨木(本人)カナリ <u>まずずであずのであるででれていずずられていばててずずられている。</u> हुग्'यह्रयायात्रहेग्यां नैर'यर्ने'यात्र्र्न्'व्'हेश्रुण्'यह्रयंश्चेंर'वेर'] हृग्रन्'न्दे'नरत्युरनदे'वनसदिश्वनसदिश्चेत्रक्ष्यं चनक्षं विण्दासर्भेद्दे ग्राह्म ने ज्यान प्रस्तु व्यापय। दे व्यापित परिष्ठ प्राप्त प्रमाण गर्डबाद्र'तहेन तर्ज्ञाद'त्रवामा क्रेडिबाद'तक्रे'ग'र्थ्याक्रीहेन'गर्द्रत स्त्रिक्षयात्रम् द्वार्यम् विवाय विवाय विवाय तरी त्रा विवाय क्षेत्रहरू वितर्पत्रम्भवन्यम्भवतित्रम् মি'শাইবি है। मदिव। क्वे वे दार्गुः म्वाप्त्रवाराष्ट्रविवारा स्वर्णाचनवार् प्रमानिकार्ये वर्ष्या भिता नेविवायकेयवाय्वाप्य प्रतिम्पन् हेन् र्वरत्त्वन् प्रवायहेन्

ন-শূরীকাশার্দ্রন্থানা

रशराहितास्त्रित्र्र्स्तार्थाङ्ग्रिश्चित्राध्याः विद्याः सुर्राप्तव्यः स्वार्थाः विद्याः सुर्राप्तव्यः स्वार्थाः स्वर्थाः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्याः स्वर्यः स्वर्याः स्वर्यः स्

हे'नई ब'ग्रे'व्यादयान पुरायायान प्राप्ति । प्रोदेश हेरान प्राप्ति व पुरापराक्षेत देशेदानावदायदारीयरापक्षेत् ग्रीसाय नेदाप दे ररा ने के **८२** दिकेन्'त्। गुरुष्ट्रग्राच्चा व्याचित्रक्षं'ग्'मुन्'रा'पे'नेवाकु'द्रवया **कुलाराँ** विति केराव्यास्य प्राप्त रामी श्रामा वित्र केराया क्षेत्र । यम् हिन्द्रमण्डन्रर्द्रवेदे दिन्दि वरे हिन्द्रप्रमण्डन **इ**.ज.ज.चेटी <u>अ.जूप्तु.च्</u>रस्थयाजा.चेट.जुटी स्यागुत्राच्या. **७**८५'की'र्नेबर्ता गुर्शन्द्रग्यानेवर्कीकेंग्यान्नेबर्ग्यवर्श्युक्त्वर्त्र्त्त्रस्य पदारेशम् नेपदार्भे नेपदार प्राप्त निवाद प्राप्त नेवाद प्राप्त निवाद निवा ग्नर। बर्धिश्चर्न्छन्'छैबानुग्'स्ते'व्राख्याव्यावन्तिन् ब्रन्द्यन्युन्द्रन्त्रेष्य्यं क्रिन्स्यः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व्यवस्थाः व तुःबैःयंन्त्रावःकेंत्रायभेवःयःन्नावावे केंग्ययः त्राःस्याननःयन *चेदाचेदाच्दा*द्धनः ब्रुनः प्रदेशेष्य दाशुस्य दाशुदान् **धनः न्यान् व्यान्** गुन्'बे'ब्रुंब् বেশ্রমান্ত কুর্ব हेब्'द्रवेदा कुक्केप्य क्ष्ण केन्द्र क्ष्य हुब्द

स्यायाः सम्बद्धाः स्थायः स्यायः स्थायः स्यायः स्थायः स्यायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्थायः स्था

दशक्रियामार्चित। व्यवस्थित्चेत्र्युष्ययन्त्र्वात्र्रित्न्त्र्वेत्र्वेत्व दा'त्रवेत्र'चतेः भूषाशाशुर्तभू विद्याचेषा कवा त्रापा वेता वात्र वे निर्मा करा है । **य**रःर्श्वरया तुगःश्वरेःग्वेव'यं रत्रेंविरःशेवशास्व'तासव्व'त्रस्यारा **बै्ग**'सर'ब्रून'यन'ट्रॅन्'न्य'सते'क्रंत्रियंप्रत्यस्या व्यवाश्वर्भात्रेत्रात्रेन्त्रात्त्र्व्यत्त्र्य्यत्यः क्षात्रात्त्र्यः क्षात्रात्त्रे व्यव्यविष् **धरात्वार्यताव हिनान्या मु वाह नायरा के सुनाव यात के काये न शु क्रें याया** रन्षिक्षभेषापतिन्षेष्याः इयसः श्रुपाः नन्यस्थायः तन्ने स्थितः <u>ब्रैक। दॅब के लाबी का दे लाया लाय सामाय सम्माय स्वियाय विवाप विवाप विवास के का स</u> त्नायः दुर्। कुयः पः र्नेरः अतः प्रें रवारा प्राः विश्वाया वा म्बर्यान्द्र भीत्र विद्याप तर्ने सत्त्राप धिन विद्या विद्य रा'स्र-'तर्ने'ग्राहें वर्षारा'सेन'र्ने। । रते'त्रवरारा'हें वृष्यन'होन्'ह्रवरा *ক্ট্*'ব|র্মিন্দের্মান্ট্রানালমহাত্র্ব'র্রমানামির'র্মী । বি'রীর'দেইল্'র র न्राम् द्वारा दे प्रत्याया स्वारा स्वारा स्वारा माना विद्या माना स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्वारा स्व द्ररमित्रप्रहारकेत्यस्यकीयगुरति प्रहर्षा ।

म्नुत्रस्यया । प्रित्मन्नन्न् स्त्रस्त्राच्याः । प्रित्मन्नयाः । प्रित्मन्नयः । प्रित्मन्ययः । प्रित्मनयः । प्रित्मन्ययः । प्रित्मनयः । प्रित्मन्ययः । प्रित्मन्ययः । प्रित्मनयः । प्रित्मन्ययः । प्रित्मयः । प्रित्मन्ययः । प्रित्मयः । प्

अभी विनयन्नेत्यह्नवाद्यस्यत्वा । र्द्रव के व के तर्रस्त्युनःसंभेत्। |नेवित्युःनःमगरुन्ते। |रनःग्वतःद्वः र् के.प.मू.पया |मू.स्प.पयाताकाह्म वराहे। । ब्रि.स्प.कु.म.क्य महेन्'पते। १८०८' पश्चर बुरायरा के त्यायम्। १८८' हुन्' ईरा ५८' क्षे'नर्थे । कुन्'व्ये'नर्रान्य रिस्पार्य । तिहेन्'हेर्युःन्य पत्रत्ते । ग्न्यश्रद्गापञ्चेयश्मर्थाकेःश्मव्य । क्षंग्राह्यस्य न्र वे न हुन् परे । किं न नुका पक्ष के ता पन् । किं न पन् न ने न र्मश्री चेत्र'यते। । पर्चन्'य'नर्ज्ञ्चयायक्रके'यायत्। । **छन्**यरेषा स्पाराष्ट्रतायाती । विक्रिपार्यसम्बद्धाः 155 तर्नेन्'स'प'अञ्चनकायते। ब्रिन्'य'य हन्यकारीकायन्। तिर्शेह्ना मः बर् अने संयति । ग्रिव्यायहरू पर्या के सम्य । विवयासर्गः बूर्या हुत्रापते। विकॅर् हे ब्रायबेर वायक है तायवा विवाय वितेर इतार्व्वर्त्वर्त्वर्त्वर्त्ताराये। विकंतिन्त्राराक्षकामन् । ग्रह्मान्य श्चित्रवर्षात्रीयनेवरायते। । तुरायकॅन्'सुतावरा ठेलामदे। । गन्यरा रगः इ'चरः क्षेत्र हॅग्पते। श्रिणः पहला छेन्। पत्र केलानव। । गर्वेदः क्रें ५५'गुराअश्चेरायदे। [ग्रुप्लयमध्यप्यकेषायद। ĮŽ, न्यानेयात् हुन्या हुवायते। । सून् न्या हुवायत् हेलायव। । यन्या मरान्वत् न्देवावी पर्वेयापते। । मिन्यन हिराहेवायव। । हेन इत्यातर्न्प्याञ्चन्यायते। |व्यायाक्ष्याचेन्यायया ।के गुर्जन हिन्दा स्थान विश्व विश्

ने'न्याहे'नद्वं व्र'केर'नहुन्।नदेखं त्रां न्याहे व्रायदेखं नित्रे व्याहे न्याहे न्याह

हें नई व्यवस्त हं अवहं न्य्या न्या व्यव न्या है न्या व्यवस्त व्यवस्त

वितिः प्रवास्तात् त्वां वी देवा वारा पे दारा त्वा वारा विवास वारा वारा विवास वारा वारा विवास वारा

মিনিজিন্মের্ন র্রাপ্তরামনি<u>র্র্ন</u> শ্রীন্দেন রেগ্ শ্লু আর্কা উলাল্যন ন্লামের্ মানন রেগ বিলাব বালী আর্কানবা

য়ৼ৾ঢ়য়৾ড়৾ঀ৾৽য়য়ঀ৽য়য়য়ড়য়ৼ৾য়য়ৼয়ঢ়৽ঢ়ৼঢ়৽য়৽ য়৾৽ঢ়ৼ৻ঀৢ৽ঀৢয়৽য়য়

दं व्यन्तियम्बद्धाः स्वन् द्व्याः भेव्यत्यः स्वन् द्वर्यः भेव्यत्यः स्वन् द्वर्यः स्वन् स्वन्यन् स्वन्यन्यः स्वन् स्वन्यः स्वन्यस्यः स्वन्यस्यः स्वन्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्यस्य

विं स्वा हिं त्य क्रिया क्रिया है त्य क्रिया क्रिय

म्न्यत्त्रम् स्वर्णान्यत्त्र्यान्य।

म्न्यत्त्रम् स्वर्णान्यत्याः स्वर्णान्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्यस्य स्

हें नहं व्याप्त हिना व्याप्त है व्यापत ह

मर्थं । विश्व महाराय देव प्रस्ता । विश्व महाराय दिन । विश्व महाराय । विश्व महाराय दिन । विश्व महाराय । विश्व महा

न्ने प्रवेशस्य स्थाप्त स्थापा स्थापा है सक्षेत्र हैं स्थाप हराय है स्थापा """ न्नार संविष् हुराय विवासी [

न्द्रसह प्रदेश की विषय क्राया व स्वर ने राय स्वर प्रति न् में स्वर प्रदेश में स्वर में स्वर

&ব্'র্লুন'**ড্**ম'র্'র& 'ব'রুম'র্ম'ন্মন্ম ট্রিমার্'র& 'ব'ব্নির'বম্বা ব'স্কু'ন্নন'র্'রন'মার্কুণ্'র্'রের্ম'ণাগ্রন'ন'ম।

राव्यंभेवर्द्ररायदेरेवायायार्थेत्। तक्षेपितेरेवायायार्थेत् दे। व्यक्तायदेरायम्ब्रा तक्षेर्ख्याभ्रव्यत्त्र्यंत्र्यं देश्यायाय्याय्येत्वा तद्रंभेरेवेर्व्याय्ये

म्या गुन्न नेन प्राप्त स्ति हो म्याप्त स्ति हो स्ति है स्ति ह

ন্বশই'নর্ব্রেন্ড্রেন্স্রন্ত্র্রার্ড্রান্ড্রান্ড্রান্ড্রন্ত্র্বার্ব্রর্বাশা ন্ত্রব্রাক্ত্রা

देते'ळें'য়ूर'ळॅब्पव्यावित्'त्राचुत्त्वति कुब्रत्त्वत्यंत्र्व्याव्यायाः इब्रह्मकु'त्वर'कुं'व्यावित्त्त्त्रे'हे'खुत्त्व'गुब्र्व्यत्व्याचुत्त्रें।

न्'न्याहे'न्यईव'वित्त्वयान्वत्र्त्र्यं वित्त्वयान्वत्र्त्र्यं वित्त्वयान्वत्र्त्र्यं वित्त्वयान्वत्त्र्यं वित्त्वयान्वत्त्र्यं वित्त्वयान्वत्त्र्यं वित्त्वयान्वत्त्र्यं वित्त्वयान्त्रं वित्त्वयान्त्रं वित्त्वयान्तः वित्त्वययान्तः वित्त्वययः वित्वययः वित्त्वययः वित्त्वययः वित्त्वययः वित्त्वयः वित्त्वययः वित्त्वयः वित्त्ययः वित्त्वयः वित्त्वयः वित्त्वयः वित्त्वयः वित्त्वयः वित्त्वयः वित्त्वयः वित्वयः वित्त्वयः वित्त्वयः वित्त्वयः वित्त्वयः वित्तयः वित्त्वयः वित्त्ययः वित्त्वयः वित्त

ब्रेन:४८:*नर:५५ग:५४वें*न्थ**ड्व**न्। क्र-भ्रम्भारिके मार्ग्यम्पर्य रशकुरःस'अञ्चेत'परःतु'रदि'र्र'श'अ'रेग'परः**ॅ्ग** मन्ग्बे हे पदिन्तु दुर्दन्ता अग्य उदय मेंदे दिष्ट राय दि ला मालाडेबाग्रनात्र्मन्।यनाग्रीबा नेनाम्नरतन्ति।यामन्।मन्। बर्ने त्वार्ट्सन द्वेंदाया होता । **शे**खन्यत्विती त्वात्त्वाया होता त्वायदी हरयत्रित्वे क्रिंयरवाराष्ट्रेत्। ग्वतः वित्पान्तपारे तुः क्रिंपा द्रवया रक्षक्षित्रीत्यात्र में ब्रिया होता व र के व में बे व है हे व त होता हारे **ध**न्दां भित्र न्या वर्षे प्रतिवा हेवा व्या मुद्रा वीत्र प्रति सूर्य ही स्व **अ**न्दः चठलपः गुत्रः श्रीः स्वाचरः तश्चेत् कुं त। प्रश्नेतः रख्यस्य कें ग्रः 5 मर्सेन्स्यदिग्नोर्सेन्स्यस्य ठ८्ग्नोर्डन्'हुद्देत्यद्रस्य रेग्नेट्'खन्सकुं व्ये ने'''' **र्रायक्या**हे। मरामार्दितीर्देषाचाञ्चराधेन्'यय। रामिप्यतिहेराह्य **इ**स्याधिने दिन्दर प्रतिवाधीय। हिन्द्रययाधिन यस्य स्थित्। **न्भुक्ष्मयान्वरार्धराष्ट्रेयापदिशेषायाँन्भववरार्ग्यत्याराय्याराळे** " मनेव्यवयक्ष्मात्रव्यवस्यक्षिक्षेत्रवार्षेत्रप्ता वे नेवाश्वव उत् इवराष्ट्रगयनियाद्य-'देववर्य-वारा'वाक्षे 'दवराग्नियाक्षेत्र' व्याक्षे ''' **८६६ छ त्यार् प्राची न में पाय पर्स् व पर्स् व व व व प्राप्त प्राप्त के व प्राप्त के व व व व व व व व व व व व व** वित्यायस्य स्वयायन पर्यो पर्वत्य पुण्या प्रमाणे का स्वयाय प्रमाणे का स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय स्वयाय राष्ट्रेर् इवया में तर्र यह व्याप्याय दिन् पति त्या हाया तहार पता

ह्यक्ष उन् क्षेत्र स्वास न्त्रे क्ष्य त्त्र क्षेत्र स्वास क्ष्य प्राप्त स्वास क्ष्य स्वास क्ष्य स्वास क्ष्य स् इसका उन् क्षेत्र स्वास न्त्रे क्ष्य स्वास क्ष्य स्वास क्ष्य स्वास क्ष्य स्वास क्ष्य स्वास क्ष्य स्वास क्ष्य स

৴ঝ'৻৻য়য়য়য়ৢয়৸ঀঀঽ'ৼ৾ঽ৻ঀৢ৻৻য়ৢ৴৻ঽ৻য়ৢয়৻৻য়ৢৼ৻য়ঀ৻ঽ৻য়ঢ়ৢয়৸ য়য়৻ৼয়৻৸ঀয়৻য়য়৾ঀৢয়৻য়৸

हे पर्द्र भ्रीवित्य दय। स्मार में प्रीविध्य में बेर व्यक्ष मुह्ने ने'ग्'न्ग्रद्शेंधेदा रन्'बेळे'दरेदेददर्ग्पान्न्ख्यपया RT' <u>इंप्यबंद्राक्ष्यां वेर्ययक्ष्यां वेर्ययं वेर्ययं द्राययं वि</u> न्दराद्वन्यसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यस्य स्टब्स् म् द्विन् स्पन्तः तद्विनः रतः तद्विन् पुन्तः विद्वार्थेन् द्वि । व्यवायत्य चन्। यर नुः तेवरा ठव्। चन्। यावी विवस्ति वावा विवस्ति वावा विवस्ति वावा विवस्ति वावा विवस्ति वावा विवस्ति वावा महार्क्षण्यते तुराविषा देन् वैद्या हे प्रमाहित प्रमाह्य वापायायायाय प्रमा ঘরাণ্প্র'ণ্টিরারীয়রাডব'য়য়য়'ঽ৲'য়ৢ৾ৼ৾৾ব'৻ৢ'য়৸য়য়ৢয়য়৾৸৻৸৸৴ ग्रीया क्षुंत्रपान्यव्यपित्यात्तरया ज्ञूलार्येती क्ष्यांगुवा कुंताकृं मेल न नुवान शुक्राता वेदाता न शुक्राता निवास हो ने वेदाता हिर न गुरात রুষকার্য্রাইনের বিশ্ব বীষকাতব্ ক্রী দ্বাদী পাদীব বি।। দ্বাদা রুষকা तेव्यत्वः तुःग्रॅन् न्यात्यत्दन्युव्यित्यात्वन्यः मेग्यात्रुत्यायगुरः दन्ते "" ग्युट्यर्थे ।

हे भ्रे श्रुर्यस्य | विविद्यस्य विविद्यस्य

ग्रन् चैत्रज्ञवराख्ना । ५वन वसुराववार्थे थालु रापते। । चुन् चन **`&**ग'मेरारम'हेन्'तकेम। ।कुन्'ब्रे'न्यम'र्यस्यामलग'यते। ।यग' <u> এব'ররখন্থ-'র্মাখনি'র। বির্মেশ্রম'র্মার্মার্মীর্মামারী বির্মা</u> महर नेर र र सुग पिता । वृत्यं र स ग वृत्यं स स से स दे । F यन्द्रभ्यायं कृतः **भ्राम्यत्।** । व्याव्यत्रिम्मयस्य स्थाये ने स्यापे। मस्यात्रायाच्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्रा श्रेन:दुराष्ट्रराणुन:सम्राध्यदानेनः। । नर्सन्द्रमयामन:नुःमः नर्मप्य मते। । तर नें ब गडि ग द्वार मिरा न ति हु। । न ब ग बारा हि बाता ख निहरानदी | निर्मेशकागुराधेन हिन्दुः । किना नेका वरा वरा **अक्षु**रायते। । अरः संग्रांग्रायन् अग्यादर्भात्रेन्। । वरः गेपाने क्षेत्राया न्रायते। वि'योपने क्षिन् स्वाप्यस्य । वि'तर्ने देवस ह्यानि । प्रवासित्रित्र प्रमासुन्य स्थिते हेत्। विवासित्र न् **१**४४:अन्यानुगृञ्जत्वुन । नन्देशतन्देन् द्विययप्यते पूर्वयद्वत् । रक्षितेर्वापर्वरविरक्षा । । सर्वेषायत् प्रवास्त्रविष्य **बे**स्बर्श्वस्बर्दर्वेद्रस्व विराधनात्र्यः । विष्ठेवासुरुर्वेद्रप्दरः बह्य। | न्वव्रवाह्यन्दावह व्यन्तेत। | वात्वे क्रुन्न बर्गुन्ययराञ्चेन। । मुप्तानहराज्यं क्षेत्र त्युन। । वनायय **इ**टलार्ट् इरामधातशुमा । क्रेंट हेर् हें न्यार क्रेंट हे ही। । क्रेंट हे **८ग्रॅ**'दॅद'त् शुप'द'र्'प्रस्थ। |र'प्र'वहत्थ'पद्यं कुद्यं

র্মনা । নিশ্বাদ্দার্থনের ক্রমন্ত্রের বিশ্বর্মনা । বিশ্বর্মনার । বিশ্বরামনার । বিশ্বর্মনার । বিশ্বর

क्ष्याष्ट्र-त्तर्भ्यक्ष्याः भियाक्ष्यः भियाक्ष्यः भियाक्ष्यः भियाक्ष्यः भियाक्ष्यः भियाक्ष्यः भियाक्ष्यः भियाक्षयः भियावित्यः भियावित

देते'ळे' **गृहत'त्र**'गे|ॲंड्'पर्ग'क्र्यशंग्रील'हे'पर्श्व**'सू**'पताप' वॅल' ब्या कु'न्यर'नु'हैब'वर्याष्ट्रवार्यात्र्यातु'केब' इययान्ना **ऍव**'पन्ग' इवरात्राधुराग्वत्रत्वरानु ग्नित्व'त देव'न् ग्रेंशपतित्रां कुरा' ''' **छरायरा** भ्रदाराह्मकाग्रीकाग्द्रवाद्रवाद्वाराह्यायरावतु विते हुः **मॅ्ब**'गुरुप्राय। ग्रहत्य्वरायाः इयवाग्रीवार्देवारेन् ग्रहत्य वरायोध्या मन्ग्द्रवराध्रात्वयाक्षुरु 'र्दरामर्ग्ने मर्वाम् व विग्वरा क्षुरारु वेग् ब्बा न्यग्न्रस्यार्द्रस्याते। सुरायार्र्ह्रन्पानुयायया **र्धे**भैव'वतरः। **भुः**भभाषाञ्च'न् चरः नुः चुनः चरासुरः गृत्रतः दः नुः गन् वः त्रेव'रा'बै'रैग्वा ग्वत'वर'रा' इववाग्रुर'स्र रावु वरार्ब्र्र'या न्तुम् अत्यवत्रवार्यम् ह्येम् वस्य तस्य वस्य प्रायत् मानु त्य वर्ष राद्यकान्यम्न्स्निःकेनदेःश्रेयकाग्रैकात्रम्।सन्सन्निन्मानकाग्रकाधवा **ब्रथ अहरायहरार्वेन ग्रीन् ग्रथ अही ने ज्ञान क्रिय क्रिया व्याप्त क्रिय क्रिया व्याप्त क्रिया व्याप्त क्रिया व** विग्रह्मराया रहम्बद्धराम्

मृतः भ्राम्यापार त्र्या । मिर्ग्य प्राप्त प्रापत प्राप्त प्रापत प्रापत

प्रवाके स्वाक्ष्या स्वया श्री प्राचित प्रवाक्ष्य प्राची स्वया स्य

प्रायांत्रे प्रायंत्रे प्रायांत्रे प्राया

मातर्तेत। विभाविययान्दरायते में यां केंद्रायय। विश्वनानियान क्रवारा-ना'रा'ता । ने'नेन' व्रिकास्य शुःतातकता । तुन'रादे श्चेत्रं विवा <u>র্বীঝ'রীঝ'বান'| বিন্মুন'অর্চ্ছন'ঘরি'নৃত্তীঝ'র বিন্যন্তুর।</u> न्त्र मुर्शेक्ष हो न हा विषय दे में प्रतिकार के प्रतिक मे वेबाह नेबाबक राया सम्बाध । दे दिराक वाहि हर महिंदा । दिवा **८** ইব্'শূৰ'খ্ৰী'নমিশখ্ৰীৰা'নম্মিন। । দ্যনে বিজ্ঞান বিষয় দ্বীৰা'ন বিষয় দ্বীৰা <u> छेत्। ।ने'नेर्रस्यरत्यनेष्'नॅब्'बेत्। ।ने'वेर्'क्रॅंष्यप्यते'क्वेश्वरि</u> ধুন| |নভধানউবাধী'নুৰ্বাধানৰ্বা'ন্যক্ষিৰ [ঝু'ঝি'গুৰ্ফী'মউন্' हेन'या । पन्यां में शेन में सन्यां हुं रायहिन। । क्षेन राज्ञा सदीन्या **উ**ল্লা ।মিদ্রীদ্র্মান্ত্র্বার্থন্মার্ক্তুর্বার্দ্রমার্ক্তর্বার্দ্রমার্ক্তির্বার্দ্রমান্ত্রমান্ত্রমার্ক্তির্বার্দ্রমার্ক্তির্বার্দ্রমান্ত্যমান্ত্রমান্তরমান্তরমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্তরমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্তরমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্তরমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্তরমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্তরমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্তরমান্তরমান্ত্রমান্ত্রমান্ত্রমান্তরমান্ত্রমান্ত্রমান্তরমান্তরমান্তরমান্তরমান্তরমান্তরমান্তরমান্তরমান্তরমান্তরম म् प्राप्त । मार्याची प्राप्त स्वाप्त । स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त ळेवात्वा । मन्दर्दर्वा अस्त ख्राचित्रं वर्षेत्। । मन्वर्यात्याः हे गरिग्'ह्यर'पदि'क्य'गर'य। | द्रग्याक्तेव'यर'पयागरा-'ह्यर' बह्री । भाषक्ष्याम् स्थापयायायाय। । न्रेर्याश्चरायश्चरायश **बे**:ळॅब:कॅर्। ।ञ्ज'ब:हे'पर्वुब'हवाघराय। ।ञ्जव'रा'छेर्'पञ्चेग' श्चित्र्या विभिन्नविषयात्रत्व्रित्युः न्द्यन्या । विन्युक्तव्यत्युनः स्र्रां श्रीयां श्रीता विषानयां प्रति श्री विषानयां स्रियां विषानयां स्रियां स्य'गुव। । स्ययः स्वायात्र दे स्वीके स्वायाता । वर्षाया व्यवस्य रे में स्वा क्षें इयम् । ने नेन ति ने स्टें प्रायमिक सम्म **্রান্থ্য বিদ্যালী**

त्राह्मर हेर्याय स्था हेर्म हेर्या हेर्म हेर्या हेर्म हेर्

द्वास्त्रं स्वाकुत्त्वास्त्रं स्वाकुत्त्व्याः व्याव्याः व्याकुत्त्व्याः व्याव्याः व्यावः व्याव्याः व्याव्यः व्याव्याः व्याव्यायः व्याव्याः व्याव्यः व्याव्याः व्याव्याः व्याव्याः व्याव्याः व्याव्याः व्याव्यः व्याः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः व्याव्यः

छ'वर'वसहे'पर्व'प्रसुक्तेन्द्वर'हे। सु'रसक्रर'य'हेर्'स्याद्वराधदेः तुरा यात्राञ्चेत्ररा तुरा । सातुः च्राप्यति सेवर्वाञ्च। प्राप्ता सेवर हापड़ियायरायराओ।तस्र की नेयायबार में बादि तर् नेया केरायोदाण **৪**ন'৴ঝৡ৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸৸ **ब्र**.गुरु भेग गण्ड रहा मैबरहर्ने बच्चते तर् ने बची बाहर वा के बचते **অ**টুঝ'অইন'ম'ঝা ५५'रा है स'रा देवा पर रा । देव सम्बद्धा सर्पा ५८ वृद्धा वहुद ह्रयशहेरानु १५वर। ह्राया ब्रांचा व्याप्त दावी देव वया श्रुवा पान्या मर्चन् भ्रम्याचेन् याने व्यक्षामुं सामान्य क्षाम्य विकास **ब**्ह्येयस्य दुनः क्षुनः तुः यहत्यायात्यात् क्षुं न् क्षेत्राञ्चयः प्यतः हो । ব্য' मायर सुन् बेन् प्रेक्ष हुन है। तक हमारा हुन तु हा वा ना वह मानु वा ह्राअ न्नामायात्राह्र न्नु न्नु न्नु न्या व काळे तर् रखे वह ষ্ট্ৰব'ব। मरः तत्वावा नास्तरः र्यम्याविषा वेरामाना वया वापतः तहतः रूप क्षेत्रजन्मान्य न्या के स्वानेत्रा प्रमुत्रा वर्षा व्या प्रवानु प्रमाले हो । प्रमुत्रा वर्षा वरम वर्षा रत्त्र्त्रं कुयानित्राहे द्वाराया स्रिं द्वाकी सुन्द्र्य क्रिके पायात्त्व नवाद्धनाधवायुनाव्यवायुकाद्वावादे द्यार्ट्ये न्योतान्व कुर्-र्यण्केव्रश्चेत्रव्यर्त्रत्रव्यर्यायात्रद्रायात्वेष्यायत्रराष्ट्रे स्वावः र्रः""" मह्रानु कुँ व्यापन् महर्ति व्यापनि हाम वा निहे वा ही त्या है निहेना त्या इन्नि निर्म्नित्रीवाकीस्ववययस्य मिन्नित्रे स्त्रित्रे वारे वेनवा नेर-खर-चर-केग'नव्यवस्या वयःयायर-पर-पर-चर पर्यापा ने सामु न सामें पान न से साम न यत्रम्याशिके व्यत्रहरादेन श्रेव श्रीश्री माना साम हेव प्रति हिते सुन्त सुण बॅं'न्यगृ'क़ु'ऄ२'य'२२ँन्'ऍब्'ॡऄ'बॐन्'**ৼ्य'न्यगृ'क़ॗ'ऄ२'**य'**य़ॅग्यर्प'ने'** য়য়য়য়ৢৼৢৢৢঢ়য়ৼ৾য়ৢয়ৢয়৻ঀৢয়৻ঀৢয়৻ঀৢয়৻ঀৢয়৻ঀৢয়৻ঀৢয়৻ঀৢয়৻ रा.मु.स्ट्रंब.स्थ.स्। 35' परः हिन् दस्य शक्ति सर्केन् प्रांत्र ने सुर्यात तुत्रायः **भेत् ग्राह्म राग्या** नेदे दमः दराक्षः संतर्भादिष्याद्रात्रे। क्रेस्यात् हिन् ग्रीस्यस्यान् द्राप्तान्या ব্ৰান্থ্ৰ্'ম'্মৰ'ব্ৰা क्षातरी, र्वाश्वरी केर विक्षेत्र श्री श्री विश्वी अकेर्° <u>বিশ্বমাধ্যমের্থ্র ব্রামান্দ্র শ্বমের্থি ব্রাম্থ্রী ক্রমান্ত্রী ক্রমের্থর স্থানির নার্মার্থা স্থানির ক্রমের নার্মার্থা স্থানির ক্রমের নার্মার্থা স্থানির ক্রমের ক্রমের নার্মার্থা স্থানির ক্রমের ক্রম</u> ঌ৾৽*ৼয়য়*৽য়ৢৼ৾৻ড়ৢ৾৽ৢঢ়ঢ়ৼ৾৻ড়৾৾ঀয়৾৻য়য়য়ঢ়৾ঢ়৽ঢ়৾৻ঢ়৻ঢ়ঢ়৻ঢ়ঢ়ঢ় बेर-प[.]र्हेशद्यस्य वर्षे वर्षे वर्षे प्रकृति है। **हर्-रृ: हैंद प्रक्रा** ৻য়ৢ৽৻য়য়ৣ৽ঀৢ৽৻ঢ়ৄয়ৼয়ৣ৸য়৽৻৸য়৻য়৻য়ৼয়ৼ৻ৼৢঀ৻য়ৣ৽৸৶য়৻৸ৼ৾৻৸৻ৠ৸ ॲन्'रा'नेते'ब्रेन्'वहे'पर्ड्व'येवरा'ततुग्'ब्रे| नते'सु'नशकुन्'रा'र्त्रन्ता राधिन वय ग्रान है तय स्राचित यहे साय हे साय है साय है राय है राय है नर्ड्व'क्षु अत्यन्दिंशनन्द्रिपनः ततुष्वा कुष्यः नष्व रहें न्यण् पुरवेन्पा विषाः हिट. कें 'वे पंदा की पूर शिर्य। শ্রমণেন দ্বামরাশ্রমণ্ট্রাগ্রমরা म्यक्षाक्र प्राव्याप्तर वर्ष

ङ्ग त्यां हुन् शे इं ग्यान्या हुन् तं त्र मे या मुद्रा हुन्या से न्या हुन्या से न्या हुन्या हुन्या

विश्वादिश्चे ह्वावश्चे वश्चर्त्र स्वायत् रत्यः स्वायत् स्वायत

नेरारकाक्ष्यां प्रतिन्त्रकात् विद्याक्षरकात् श्रीत्राक्षरकात् निर्मार्थन्। निर्मार

्र्रें द्र'प'दे। त्रापाण्वंद्रपाइययय। वित्रं ॐ वृर्के हे ने अत्या क्रित्र्त्रा त्राच्या स्वाक्ष्यया वित्राचे द्राप्या क्रित्र्य क्रित्रा क्रिया क्

में बर्ग राष्ट्रमाया है। । ।

में बर्ग राष्ट्रमाया है। वर्ग राष्ट्रमाया

24. त्री | पट्चा.क्रेच.डा.च.च्यचेव.प्याड्ट.ता | क्रि.य.स्य.क्रि.च.च्य इवा | क्रि.च्याक्री.खेच.ता.चश्चितवाचश्चितवाचथा | पट्चा.क्रेच.च.च्य इवा | पिचवा.विवय.पश्चित्याचश्चितवाचथा | क्रि.तयाक्रिय.प्र.क्येव.प्र. इवा | पिचवा.विवय.पश्चित्याचश्चितवाचथा | क्रि.तयाक्रिय.प्र.क्येव.प्र.

बॅ्र ह्वेर द्। । रन सेरहान्देश सेन सेन सिंहे। । शुरान हिन ने हेराशु'तञ्जनसात्र**ात्रा । क्रिंगानेन्'न्दाराहेरा**सेन्। । য়৾য়য়৽ঀৢ৾ঀ৾৽ঢ়ৼৼ৻ঀ৽ড়ৼ৽ড়ঀ৽ৼয়৻ড়ৼ৽য়৻ बहवराव। । नराधुराधे नेराधे गाराह। । श्रें खराधे हे वापर शेवरा . दश्चेयरावरा । श्ले. येन 'ग्लेम्स्य प्राप्त क्षा विषय । श्ले. येन प्राप्त क्षा विषय । श्ले. येन प्राप्त क्षा व ह्य राजीया नया सुराया । क्रिंस र्री क्षेत्र विश्व क्षेत्र क्षेत्र यह यह यह न्दराखन्य द्रायाक्ष्रवादा व्याची । न्दराखन्य न्द्रायां द्राया केना रशकुराय। ।रेण्याद्वणातिष्ठारावरे जॅराष्ट्रेरादा ।सयार्वर्श्वणाञ्चेता इव्यं के विषया वर्ष हरा है या शुप्त हर या तहा र या वर्षा वा वर्षा या है न लाहें नवार् का बेर्। विनवा चरा र्शेरवा केना रका छरा या विनवा कर व्यायमिति न्दी नवा नेपाया । स्प्राय ते यान्या कुरावता सुद्रायम् व। । इर्द्धिक्कित्रुं विर्वाश्वर्यवाद्यात्र्या । देशपरीद्वाराक्ष्वय रुवाबेर्। । चः श्रुर् र्वेरवार्वेषा रवाद्धराय। । व्रावाधीरवाबाददार व्रॉ শৃধ্যুঝা ।শৃত্বশৃদ্ধের্ট্রশেশেশ্র্র্রাশেনার্ট্রনা 「B'ロ'数ない。 型し、 मञ्ज्या । मञ्जिप्तुः द्वित्यात्म तृब्बहाह्यः विरुद्धः त्राचनः दे न्युवा । न्रेन्, तृदेशयात देशहास्त्र । ने न्रवरा म्या ग्रव्ही मा व्यपित्। । विकेशरागुन् श्रीयहण्यपित्। । में दाने प्रश्रेयने में रूपा क्षराया । नि'न बका सुर्ये र का निवास थी है। ।

बियान्यस्याद्या यम्द्रिन्न्ययानुः वैयायान्

सहत्वार्यात्वे विद्यात्वार्यात्वे विद्यात्वे विद्यात्व

नेति कें सुन्।वन् केन की व्यावावताता स्ति सुनि न स्वावाव स्ति सुनि स्ति सुनि स्वावाव स्ति सुनि स्वावाव स्वाव स्वाव स्वावाव स्वावाव स्वाव स्वावाव स्वावाव स्वावाव स्वावाव स्वाव स्वाव स्वाव स्वाव स्वा

न्तिः सं यु 'पानु श्वॅन' क सन्नान्य त्यापानु ग्री अर्थन स्नान्य पानु व्यापान्त स्वापान्त स्वापान्त स्वापान्त स् विनः पान्त त्यापान्त स्वापान्त स्वापान स्वापान

हेथेन प्रवेग रूपा गरेग रामा । त्या ह विष्या त्या में गा म्बुल'हे' खु: ८ ब' चे दे 'तुषा' ८ दे दा । ८ द 'चु द के' वे' र द ' द र द खु द । **ब्रे**'क्षे'यन्'ब्र'तन्त्र'यकुन्'न्न' | प्रमा विश्व वहुन्'न्न'नेव'केव' मतुत्र । भिन्दंरन्यक्रन्द्रश्रुवारमन । भिन्नुत्रन्नक्षरः ५८। ११.स८. श्रेट. १८८. १८८. १८८. १८८. १८८. श्रेड. त्र्वा । वे द्वा मन्य त्रात्र्रं वादा तया । वे द्वा न्या नि दे द्वा सर्युर। । पर्मेर् सेन्स सर्हर्य केन्स स्त्रीय। । नुप्त स्तर र्देन्'अर्केन्'ब्रेब्'दिष्वया । गृतु ग्रान्न्'कुरायस्वयान् वान्ना । म्या नेशन्यताचेतु न्यान हुन त्रिया । यीन प्रन वापत त्र्री नुवा भैक्ष। सिन्द्रश्चनवानुन्देश्यनेनवान्यव्याह्नेन। सिन्द्रां स्वाक्षेत्रां स्वाक्षेत्रं स्वाक्षेत्रं स्वाक्षेत्रं राता । वित्रस्ययाग्तरातात् श्चरयायद्या । वायां क्यासुति द्या बार्यराया वित्यासुः श्रेंदायया क्राह्मीदार होना वितासुः तहीवा भवको हें वा कर। । कुद्र कर् केर् पर तरारा पेता । वार्त का है ते सॅ हॅ ग ब्रेड प्रतर सर्दि । ग्राम्य प्रतेष्ठ प्रायेष्ठ । स्टर हिन हे । बेर् क्रूंन्य हेर्। क्र्रिंप हेर् त्य हेर त्य हेर विराय हेर मतर रूर हिर ररा। धिन हिर में केंब बंब है है र वा।

वियापते'न्छन्यनेतिह्याशुक्ते'अन् मृनःस्तर्यन्नन्नः श्रे त्यर्यतेह्यापने'यन्वित्याधुर्यान्छे म्यययद्गन्यययगुत्रक्छेयः स्वययेद्र्यापने'यन्वित्याधुर्यान्छे म्यययद्गन्यययगुत्रक्छेयः स्वययेद्र्यायक्ष्ययय। श्रुर्यान्छः यय्यय्यक्ष्यागुत्रक्छेयः स्वययेद्र्यायक्ष्ययय। स्वय्वत्यक्ष्ययम् न्त्रसम् पात्र्र्याम् व्याप्त्रम् व्याप्त्यम्यः व्याप्त्रम्

क्रिस्तान्त्रियः स्वराधान्त्रस्य स्वराधान्यस्य स्वराधान्त्रस्य स्वराधान्त्य स्वराधान्त्रस्य स्वराधान्त्रस्य स्वराधान्यस्य स्वराधान्त्रस्य स्वराधान्त्रस्य स्वराधान्त्रस्य स्वराधान्त्रस्य स्वराधान्त्रस्य स्वराधान्त्रस्य स्वराधान्यस्य स्वराधान्यस्य स्वराधान्यस्य स्वराधान्यस्य स्वराधान्यस्य स्वराधान्यस्य स्वराधान्यस्य स्वराधान्यस्य स्व

चन्द्रः हेन्। |दिन् रः छन्या स्वास्त्रः स्वास्तः स्वासः स्वतः स्वासः स्वासः

बिश्रहः तर्ने न् 'ग्री' गहुन् 'न् गुन्य ग्री स ग्रीस्य न राम ग्री त्र्तित्यग्नेदन्नेदिवन्द्र्य। दन्नेद्र्याः द्र्याः व्याप्तित्र्यः व्याप्तिः विद्रान्तिः विद्रान्तिः विद्रानिः वि <u>पश्चेत्रानुः व्यत्रेश्चे र उद्यान् केन् सुर पर जो केर र दूर्वर वेर दर्वर वृह र प्राप्त</u> सुळेव'इयम'ग्रेम'सुग'रुप'यर्द्र्प'वया ८ते'प्रेव'ग्रुद्रित ग्नव्यत्रेव्रुः श्रेव्रापाया देनामञ्ज्याने श्वरायनाव्यायायर हेवाव्या बाह्रत्यत् क्रॅंति सुना नी दें द 'दे 'ता में आप सार्द द 'दे 'क'न है सा सु हो सा है। म्डिन्'रोर'नेदि'सि'सन्'राजे'त्त्र'न्र्न्'य्रक्षपदे'मन्द्र'युर्र्पदे'हेर'रु **ङ**'न्डेन'नेत'र्न्रर्'हुदीरे'अर्डेर्'हेर्डे'न्यलाव्रर'न्यलाहु'न्रर्'र्थ''' **ढ़ॴढ़॔॔॔ॱ**ॿ॓ॸॱॺॎॱॸॕॖ॔ॻॱख़ॱढ़ख़ॕॱॸढ़ऀॱॺॿढ़ॱॺॸॺॱॼॖॺॱॸॗॕॸॱॹॱॻऀॺॱॻऄॗ॔ॸ यर-नेअद्रवयाद-नेअप:पविद:कुर-के.पविदेख:ळेग्राह्मवया**यः** Nova भाषायान्त्रिष्, श्रुरापति वर्ष वर्ष है पर्द्व अर्थे । यह स्वादिष्या । मितिरत्में इयमाधिमादिकतायकॅन्पात्मितानिमानीन्या तनेपाया बर्क्ष ५ हे द देरे ५ में द व हे र के इंतर ५ ५ ५ व व पर ते व हे व हे व है व **ग्रियान्य अन्य सम्भाग्य सम्भाग्य ।**

सुयने य ब्रेंटर्न वियार्दित्। | दब्हेंदर्व्यायार्वेषययदे। | न्नसम्बद्धान्यसम्बद्धान्यसम्बद्धाः । विकासुकान्तराम् निकाः । हेव। |रोबराक्व'ॲटरायाग्वर'न् ग्राविय। |ग्रायापाक्षेर'व्या नयात्रिंग्नरकी कृत्स्वे। । ५५'म' ग्रुवाद्यं देश वाया नया का । क्रिका भुःचेनाःभः वृनाःन्डिनाःस। । नैनः चञ्चेत्राद्यः इतिः इतिः इतिः दव। । तर्जे न **पॅररा**कुं ब्रंश्य दे हे द। । न्या वी राष्ट्र रामस्र के में परिता । सम नते स्यार् ग्यास्त्। दिव गुन् ग्रें याना न न गुन्द्र। हिन् व हे **छ**र'र्'के'तर्में न । यरमा मुन्ने के सिन्य के न' सिन्। । से न्या नरे' बङ्ग'णय'एअल। ।त्र'ब्रिंन'तुब्र'यति'जुब्जीश्रवहेरा। ।द्रय विष्यात्रीयात्रिक्स्याव्याता | न्यत्रित्यत्र्रित्वक्ष्त्रिक्ष त्विनया । तित्यक्ष्य-द्विनयायते ते अस् । । नगनः प्रभूत- नद्व श्रुपाञ्चरतु'त्रचुर्ता । तरी'ता'व्रांतापातनेवर्वात्रां व्या । विवाह्मवर्षा छन्द्रिके त्र्रा वा विष्यत्यक्षे ही भेन्य केषा भिष्या विषया हिनाया केषा भुतिरत्वेद्राययाप्त्रया । श्वायाभुः श्रृष्टं नय द्वराया हिताभुः बर्ह्र १ हे ब्राह्म यहारा । बर्ने धियात्वा इवार्ष्ट्र १ स्टान् । इतारे पविष्यं पन्तक्षे । न्दं शंखु द्वें द्यं दें वर्ष दे हो । स्योद वर्ष वर्ष पत्रनेमकानुकान्। तिस्नेन्। तस्त्रम्, क्रिंत्रम् । क्रिकार्स्नेनः क्रिके र्याच्यापेन्। व्रायाभुगाश्चरार्वेरायेर्ने। व्रायाभूगाश्चरार्य

&মঅম'ঈুবা <u>| ক্র</u>ম'ম'র্ম্ব'মর্ম্বর্মকবা 155 NOTES पन्त्रवर्ध्यः । व्यवागुवाग्तुनःपन्त्रग्रांभवा াষ্ট্র-'ব্র'ণ্র্ম प'तरेनशतुरा'त्। । ५६ राशुन'कुर'तु'वी'तर्शन। |মুন'ইন'র্ম্বর कुः न्याक्ष्या भित्रा । न्याक्ष्या न्द्रसाद्या शुरापात्रा । न्यास्त्रसाद्या <u> चैदान्द्राचानः कृता । प्रिनास्तरः वित्वत्यादा । वान्दः वात्रः ।</u> त्र्यान्त्रवीद्यात्र्या ।क्रब्यस्य भ्रम् यास्य |ৠৢয়ৼৢৢৢয়ৢয়য়ঢ় पम्मेना । नन्गःन्नःन्देश्यं रक्षेत्रहेन्त्रा । तद्रे नहनः वरः वरः र्ह्मन् पर्ध्वेदा । ईवियान् मार्ट्स्या सुर्वेदिन प्रमुख्या । भूति पर्वेद्या सुर्वेद्या । राषित्। । तिर्मिरति न सिंहित सम्बद्ध स्तु स्वा । सिंहिस सिंहित सम्बद्ध न्यापाभेदा । पहुत्यत्यायाँ मान्यायाँ । श्रुप्पाप्य व्या <u> न्यापामित्रा । श्रासदी सम्प्रम्य मित्राक्ष</u> । न्याळे या प्रम्य स्था न्गाराधिद। शिवकारुवागुवाकी में वाबुयाद। १८ माना वाहिकासुधिम्बाह्य न्ग्यं मेवा । न्यं ब्राह्मच हु ग्रामेन् य देवया । विदेशय स्व ह्युन्ग्राधिव। ।हण्यान्नान्द्रसायुवावर्धनाव। ।इनानाधिन सुन्नाराधित। । न्यकेना नवसर्बेन् र्न्नन्यकेव। । होन् त्रुर्त्रा

है। विन्यवस्थान्यः व्याप्तः व्यापतः व

ळ्। रशपावितार्दर्क्षेप्रयायाया स्वात्रत्र्वेतिः स्वा वीस्र द्रिक् स्रि देर् सेरि सुर्श्वेतः इस्र वर्ष्ण्ये वास्य प्रति हे द्र पु. वु. र वीस सुस्य द्रायाः महरूर् प्रति स्वारी वाष्येयायाय स्रि स्वाप्य कृताया ।

म प्वत्र में मुन्नारिकी प्रत्य क्षा । सिन्ना क्षेत्र में प्रत्य कि इत्यत्र्व्यस्य। । वीयस्यः इत्यन् वीत्यम्बर्या उत्। कुंभु त्यम् इत्याना दिन्दा । वाष्ट्रात्या । वाष्ट्रात्या । देन्'तु'र्ह्चेन'इवर्यायाग्वर'पर**्व। ।हे**'शुप'र्षेन'इवरान्न'यहत्यतु**रा** व। दिवळव ग्रेरकी ब्रॅंगरित्र। हि देव वर बेर परि इस तर्चेरमा । श्वरयम ठवाया विषय देवया । वाप्तर क्रिंडिया **गै**|अकॅ८्'हे*ब्*'दे| |दे५'तु'र्श्चय'द्रवय'ल'ग्व८'पर'तु| |हे'त्रु'वद**र**' ब्नर्क्षकृष्ट्वेत्र्व्या । म्यम्प्रम्यस्यम् मेष्नयः न्राः । गु**न्** वासवादित्रकार्वेराम । हिन्द्रिक्तान्वितायात्रे निवा । हे तिम् ने व्याप्तायन मानदि है। | द्वार्सिम् देवापति कुत्रामा तहा | র খুন্ম র বিষ্ণার ট্রন্ম। । ৡন স্ট্রন্থ ভর্মণ ব্রাধা**ন** तर्वता हिम्मवरिष्वत्वरारम् क्रिंग्रं व । स्वास्त्रं साम तन्त्रया |हेक्केंब्र-्युन्यात्येक्षरंत्र | । द्वन्यक्रियंन्युन्य बेन्'त्रा । त्युर'यं बेन्'पर्ये इस्पर्धे रय। । यर्डे बाया श्रूप्यास न्र्रायायात्रेन्या । हे हन्यायान्य के त्रुताक्ष्रियाचे वा । याया के व न्रतेर:न्ग्राव्यंत्र। ।व्यारवेन्'यतिः द्यात्युँरः। ।तहेन्य

पाञ्चलातान्व्यातात्रेत्वया ।हे व्ययान्तः द्वा । मर्ड रिते ज्ञाम १ कुराय हा । तर्स्य ज्ञाम विमाय में स्ताय कुराया । ग्टेरातहेंद्रअत्याग्रॅयापायतेचय। हिम्मयाव्यञ्जितसञ्जित्सं द्व। कें'अ'भेषाद्यन्'पत्रा । शुरुः विषय हेन्'पते द्वार हुँ राया मग्रदित्रं ठव्रताय्वर्रातायात देवया हि चर चेर वेर दर प्राप्त रं व। । १६ ल'कु'राल कुराच तर्हा । दे 'यराय में बाह तरहीं राया। *नेश* श्रुं व'ये ८' त्या ग्रॅं त्याचात ने चर्या | हि' यर चॅते टें ज्वा राष्ट्रं तर दा हु तर्रअति के अपन्यात्त्र । । शुक्षा सेता पति इता तर्हे राया । अहे का महें रुव्याया विवादा ति ने प्रवा | हें तह वा क्री म वी प्रवाद ता रं वा | अ: न्रः तुःष्वेशः स्न्रः य: त्र्। । केष्य द्या स्नुः प्रते द्रत्यः दर्धे रः य। । मुस्राप्त स्वरं त्राच स्वरं प्राप्त स्वरं विषय । हे स्वरं के स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स र्सः व। । १ देशः श्रुपः माहे राज्ञीः सुक्षाः पद्म। । १ में बाद ५५ दि । इसार्धेराम । दिवहरास्त्राम्यामारा रिवह । हे वर्षेत्रा खन्निव्यक्ष्यं वर्ष् IR & TY बेन्'पदे'इत्यत्र हुँ राया । तुरा गृह्या बहु द्राय गृह्या राया । हेर्द्रश्चात्राञ्चर्रुग्वद्रार्ज्य । । सः धेश्चर्यस्त्रं रत्रवेष्यत्रा मन्यापंत्रेन्'पति'क्रापत्र्वेराय। विषयहे'ठर्'राष्य्रेरापातनेयय।। मात्रतः त्र्तिः स्वा वी वार्कन् हे दान्। विन् रहार्त्रा सवराता गवनः यर 611

विश्वान्यस्यान्य नृत्यस्य। यद्यात्रस्य निश्वान्य विश्वान्यस्य

देखाः स्थाय'विषादेद'ग्रीय'व्यापादी'यद्र'तु'दर्वेद'र्वेद्र'र्वेद्र'येद्र'य्याय'म् स्द्र्र्प्यदे सगुर्द्रदर्दे'म् श्रुट्यास् ।

ऍ'व'श्नेय'स्व'८८'रा'ठव। । ३८८'३८'गतुर:चरागॅर्स'८ देवदा या । । । यः अर्थवः नवापविः तुः श्रूषाः वृव । । विः विश्वेषायन् वापाः । इ.स.भे.पीयापाला । हिंदारा हुटाला प्रमान हा । वेश्वीया हुटा । वेश्वीया <u>भु</u> - ५ द्वी - राज्य हो अप पाजेश । शु व हिंच या तुन - ५ न - १ न न से साम । तर्ने तर्जे प्रच्नित्रकी सेवार की वित्। | प्रत्वार व्यवस्व प्रदेशेतर दुः <u> चेत्। । नृभूच वेद्र बाप पत्त्र्य में स्टा चेत्। । ख्रुग वर्क्र स्ट्र स्टर</u> बारतार में बार दाया । बी खारा यह वा गुराया व बार में। । ब्रिट् नु ह्यें त इयशक्रिश्नयाताय। । नार्तर्ययग्रह्मसुरार्ध्यनुराराय। । गतुर न्त रैर'मध्रेस'न्**अप'र्भेन्। |**ने'वृबबा**बु**'तेब्र'पदे'सबानुबाबु। |८**र**' **बैब्**कॅस्बर्स्टिस्ट्र्रस्युन्। |ब्राम्हेन्'तुन्यसर्बेन्सेन्युव। |स् सक्षत्र ख्वाञ्च या न हे वापा | शिया श्री - व यश कवा भाग हे वापा गुड़ेया । तम्प्रान्यायम् स्प्रान्यायम् । विक्रियायम् स प'न्न' क्षिक्रं क्षेत्रे भेरा पर्वे रापा गड़िया । तर्नि निर्मा स्थापा से र र्मेष राजार्थन्। । क्रिंजान तुना स्वति स्वति स्वति स्वति । वि न्यत् सा के त्यात्र सुरूपा प्रकृति । ति इप्तार ति स्वार विकास सित्। । । ति इप्तार ति स्वार विकास सित्। । । ति इप्तार ति हुन'क्षुग'परि'रन'नर-५न'। । वर्षेन वर्षेन वर्षेते हुन्यां गृहेश। ८इ'८८'८इ'ल'र्देर्स्युव'यहँद्। |श्रेयक्षकेद'ई वेद'युकेरवर्षर

५८। विरायमान्यसम्बन्धम् विष्या विद्याप्तरम् इंस्र म्याया वर्षेत्। । नृत्याया वर्षेत्र स्वीत्य प्रस्तान्तः। । वर्षेत्र बर्धिते नर्सन् व्यवानिकेश । तर्मन्ति तर्सिन् न्वा वर्षित्। बान्नावित्त्वर्त्त्रेते स्तान्त्रव्यन्ता । वाञ्चात्रव्यन्त्रेत् पहेरा । तर्भन्तर्भार्षे सर्वे प्रश्चिम् । वाष्ट्रत्म् श्चा मते । वर्षे वर्षका न्ता । वर्षे । वर्षे वर्षका वर्षे वर करा वर्षे वर वर्षे वर वर्षे वर वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे न्मात्रामार्चेमार्चेषाव्यवस्ति । इस्यामुः देखेनार्चमात्रामा । यस्य अहराशिरेन्या । तर्न्यत्या विकास ह्यार न्डिरवाकु के क्यान्ता । तर्नि प्रवस्त के के के क्या के वा ८इ:५८:८इ:८४:इंर.५म्थयद्रिः । ग्रेंद्रायस्त्रेश्वर्देश्वर्द्धः न्ना वियापासः भेवळन् हेन्याहेना विदान्न तदायाद्र मन्बर बह्न १ १ इन श्रेन तह दार्देन शुरु विन्दन । विश्वन व के दार्श तहरादेन्'गड़ेश तिहान्नातहासादेन्द्र्यायासेन्। विवाकी संविषकीन्नायाविषा । तर्नन्नत्रायार्वेरन्षायायहेन्। । श्रेन वराञ्चनपान्नेन्पान्ना वित्रीञ्चयते स्थनगर्वेया । तद्यन्त तर्भवेरर्गेष्यवहिं। । नर्यानेवलग्रुत्वेलचन्ना । वि अन्त्यापतात्र्रिते सक्त् हे नात्री । त्याग्राया सत्यक्रिके प्या

प्राचित्रं स्था

प्राचित्रं स्या

प्राचित्रं स्था

प्राचित्रं स्था

प्राचित्रं स्था

प्राचित्रं स्था

स्था

प्राचित्रं स्था

स्था

प्राचित्रं स्था

स्था

प्राचेत्रं स्था

क्षेत्त्व विराह्मात्त्त्त्व व्या विराह्मात्त्व व्या विराह्मात्त्र विरा

मलन् निन् मेन रा लेना स्ट्रा

म् । निर्मालस्थान्य विद्यास्त्र । विद्यास्त्र विद्यास्त्र । विद्यास्त्र प्रमाणका । विद्यास्त प्रमाणका । विद्यास प्रमाणका । विद

र्मात्रे स्वार्मा स्वर्णा स्व

म्केन,म्नेन्य्याप्त्राचन्यम् अस्यत्त्र्यम् अस्याय्याप्तः न्यान्त्रित्तः न्यानेवयान्त्रियम् स्यान्यस्यान्त्रस्यान्तिः स्तान्तिःक्रुशातुःवयः अतितः भ्रम्यानुः सुन्ताः । श्रम्यान्तिः भ्रम्यानुः सुन्ताः । श्रम्यान्तिः भ्रम्यानुः स्वयः स्वयः

राज्यवा विक्रिया विक्रिया विक्रिया के हिवानुता त्वे क्रूंब्र्या विश्वत्र हे हे नते श्रवाय हु व श्रवा ह्वय <u>श्रमपुणवार्यानेवार्याक्केप्राप्ता</u> ने प्रतिःश्रवार्धः वास्याने स्वार्ये वास्य **४**८। गुडुन् ग्रीन्ययन्यत्युवा इत्याव्ये । हः वर्षे दःश्चेन । इत्याव **१** शुरु इयर कुरी - प्रतिहे। । शयम यह रहिन परि इया रहिर व सें है में नदायात्मर्रम्या है ज्ञान्य वाहा स्ती मुद्र वाह्य स्तान स्तान वाह्य स्तान स्तान वाह्य स्तान स्ता **ॻ**য়ॸॱऄ॔ॱढ़ॹॖॖॸॹय़ॱॺॕॣॸॱढ़ऄख़ॸॖॱॹॗॸॱऄऀॸॱॺॵख़ॱड़ॕॸॣॱॺॕॻॱय़ढ़ऀॱऄॗॖ॓॔॔॔॑ॵढ़ चकु'स'नकुर्। तहेगाहेद'तरितेषुःन'नहरःनदेःहंद्र'र्रायसुद्र'रेदा क्षेत्रं असे व्याचे स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप **र्ह्मर में त्यस कुर्व कर पर दे ग्**रिया सुन्न कुर स्वर कुरे पें स्वर पर है रा त्या द र्वा प राष्ट्रे विति तुर्त्वा द्ववा दूरा के दिन विते न्या दूरा विताय वा हिंदी **य**र्स्यवाने'न्ग्रस्थ्येत्वर्श्चेत्रस्थ्येत्रस्थित्रस्थित्रः श्चीतुः श्चेत्रः श्चेत्रस्यान्या इत्रश्चित्रप्रम्थेत्रव्।।

द्वश्चराण्यं द्वश्चित्राच्चर्याः क्षेत्राच्याः कष्टाच्याः कष्याः कष्टाच्याः कष्याः कष्टाच्याः कष्याः कष्टाच्याः कष्याः कष्टाच्याः कष्टाच्याः कष्टाच्याः कष्टाच्याः कष्याः कष्टाच्याः कष्टाच्याः कष्टाच्याः कष्टाचः कष्टाच्याः कष्टाच्याः कष्टाच्याः

क्ष्याच्यात्र स्वयाद्य त्यायाः म्याद्य त्यायाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्वयः

ने क्ष्रस्त्र व्यास्त्रीत् पाति विष्या हे व्यापि व्यास्त् पाणा श्रुव्यात् । व्यास्त्र श्रुर्व्यात् व्यास्त्र स्वया स्वया विषया स्वया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया विषया म् अवस्य प्रति अवस्य प्रति प्

न्गतः क्रॅब्रांत च्रान्य व्यवस्य स्वतः क्र्यां व्यवस्य स्वतः क्र्यां व्यवस्य स्वतः क्र्यां व्यवस्य स्वतः स्वयः स्वयः स्वतः स्वयः स्य

임'대'자자'다다'등라'라인가

€থ,বাড়, শ্বীৰ, হৰ, শ্বীৰ, শহৰথ, ব

*

ন্ন বিশ্ব বিশ্র বিশ্ব ব

米拉日巴传及其道歌

(藏 丈)

乳毕坚述著 青海民族出版社校**订** 背海民族出版社出版

(西宁市西关大街88号) 宏任编辑:扎密拉旦 史学礼 封面插图:白 峰

21%省新华书店发行 背海民族印刷厂排版制型

中国人民解放军第七二一九工厂印装

开本: 787×1092毫米1/32 印张: 28 插页: (精)12 (平)10

1981年4月第一版 1981年4月第一次印刷

印数: 1-70,000

统一书号: M10181·14 定价: 精莹3.90元 平装2.90元